श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक ५३

ॐ अर्हं महावीरदेवायनम.

श्रीमद् देवचन्द्र भाग २ बीजो

संशोधक,

योगनिष्ठ शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि

प्रगटकर्त्ता,

श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ

हा वकील मोहनलाल हिमचन्द, पादरा.

प्रति-५००

वीर संवत् २४४५ विक्रम संवत् १९७५

किम्मत ३-८-०

आ ग्रंथ मळवानु ठेकाणु :—

वकील मोहनलाल हिमचंद—पादरा (गुजरात)

वडोदरा—शियापुरामा, लहाणामित्र स्टीम प्रेसमा, विठ्ठलभाइ आशाराम ए
ता १—१०—१९१९ ना रोज प्रगटकर्ता माटे छापी प्रसिद्ध कर्यु

निवेदन

श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी ग्रथमाळाना जोगणपचाशमा
गका तरीके श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग छपाया पछी दोढ वर्षे
। श्रीमद् देवचन्द्र बीजो भाग बहार पडे छे श्रीमद् देवचन्द्रजी
हाराजना तमाम ग्रथो एकत्र करी छपावानी योजना जैनाचार्य
ीमद् बुद्धिसागर सूरिजीनी प्रेरणाथी अने उपदेशथी क्यारे
ने केवी रीते थई, तेमज क्या ग्रथो क्याथी केवी रीते मळ्या
सर्वे हकीकत श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी प्रस्तावनामा
गतवार जणावेली होवाथी ते फरीथी अत्रे जणावेल नथी
ीम भागनी ५०० नकलो छपावी हती तेमाथी जैन पुस्तक
ालो तथा साहाय्य करनार विगेरेने भेट आपवमा १५०
ो तेमज वेचाणमा २०० नकलो मळी एकदर ३५०
ो खपी छे जो के मागणीओ घणीज आवे छे छता
ो थोडी होवाथी उपयोग प्रमाणे आपवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागना एकदर पृष्ट १२०० ना
ारे छे अने तेनी पण ५०० नकलो छपावी छे, ग्रथनु
भारे थवाथी त्रणसो नकलो बे कटके बाधवामा आवी छे
थकी पहेला कडकामा विचारसार ग्रथ अने बाकीना ग्रथो
ा कटकामा आ्या छे बाकीनी २०० नकलो आखी
ामा अ.. जे पुस्तकालयो वगेरेने आपवामा उपयो-
ग्ये

श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागमा जे जे ग्रथो छपाया छे

तेनी वीगतवार यादी अनुक्रमणिका उपरथी वाचको जोई शकशे श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी पेठे आ बीजो भाग पण जैनो तेमज जैनेतरोने अत्यन उपयोगी थई पडे तेम छे युरोपीय विग्रहना समयमा आ ग्रथ छपावनामा आवेलो होवाथी सख्त मोघवारीना लीधे कागळो-छपामणी-बधाई वगेरेनो एटले घणो खर्च थयो छे के एक नकलनी पडतर की रु ६-०-० ना आशरे थाय छे तेमज कद वधी जवाथी बे कटके बाधेल छे छता तेनी कीमत मात्र रु ३-८-० राखी छे बे कटका साथेज आपवामा आवशे.

श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग तथा बीजा भागमा मदद करनार जैन ग्रहस्थोना नाम नीचे प्रमाणे —

रु ५०१ शा म्होलाल नाथाभाई-पादरा
२०० शा म्होलाल नरोतमदास-रणु (पादरा)
२०० शा झवेरभाई भगवानदास-कावीठा (जोरसद)
१०१ श्रीयुत श्रेष्ठी अमरचदजी बोथरा बालुचर (मुर्शिदाबाद)
३१ श्रीयुत श्रेष्ठी बुधसिंहजी बोथरा „ „
६१ „ „ जगतपतिसिंहजी डुगड „ „
५१ „ „ हरखचदजी नाहटा „ „
२५ „ „ गुलाबचदजी भूरा „ „
१८६ शा हीरालाल छोटालाल-पादरा
२५० बाइ रतन शा चुनीलाल कहानदासनी विधवा इटोला (वडोदरा)
१०१ वकील मोहनलाल हीमचद-पादरा
२५ सो बाइ जमना वकील मोहनलाल हीमचदना पत्नी „

१०० शा लक्ष्मीचद लालचद–वडु (पादरा)
१०० बाइ चचल शा दामोदर कल्याणदासनी विधवा „
८९ बेन मणी शा प्रेमचद दलसुखभाइनी भाणेज पादरा
८० शा केशवलाल लालचद वडोदरा–मामानी पोळ
७५ शा केशवलाल नरोतमदास वडु (पादरा)
७५ बाइ आधार शा गोरधनभाइ हीराचदनी विधवा अगुठण (डभोइ)
५० शा रतनचद लाधाजी कावीठा (नोरसद)
४१ शा भाइलाल चुनीलाल पादरा
२५ वकील नदलाल लल्लुभाइ पादरा
२५ बाइ साकळी ते शा मणीलाल चुनीलालनी विधवा पादरा
२० एक गृहस्थ तरफथी पादरा
१० शा नीकमलाल मजलाल राजळी (डभोइ)
३५ शा मुलजी पीताबरदास मुजपुर (पादरा)
५ बाइ रुक्मणी शा दलसुखभाइ प्राणजीवनदासनी दीकरी पादरा
५ बाइ डाही ते शा छोटालाल छगनलालनी विधवा पादरा
२०० बाइ आदीत शा मथुरभइ ईश्वरदासना विधवा मुजपुर
१६ शा माणेकलाल वरजीवनदास पादरा
१५० गाम वेजलपुरना जैनशाळाना ज्ञान खातेथी हा शा छगनलाल लक्ष्मीदास
७५ दाहोदना शा हेमचद हरजीवनदास
५० शेठ वीरचदभाइ कृष्णाजी माणसावाळा
१२५ गाम गभीरना ज्ञानखातेथी
७५ शा रवचद आशाराम गंभीरा

५१	शा हीराचद केशवजी	गभीरा
२५	शा अबालाल आशाराम	„
२५	शा माणेकलाल केशवजी	„
१०	शा जेचद केशवजी	„
११	शा प्रेमचद दलसुखभाइ	पादरा
१०	शा नगीनलाल मोतीलाल	„
१०	शा हीरालाल लल्लुभाइ	„
१०	बाइ परसन ते वकील दलपतभाइ लल्लुभाइनी विधवा पत्नी	
१०	बाइ समरत ते शा कस्तुर दीपचदना सो पत्नी	
३३२०		

उपर प्रमाणे बन्ने भाग छपावामा मदद आपनाराओन.. उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथोथी जैन कोमने अत्यत लाभ थयो छे, थाय छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिजीए श्रीमद्ना पुस्तको सुधारवामा-प्रस्तावना लखवामा-तेमज बने भागनु काम पुरु थता सुधी दरेक प्रसगे उपयोगी सूचनाओ आपवामा जे आत्मभोग आपेलो छे ते उपकारनो बदलो कोई रीते वळी शके तेम नथी एटलुज नहीं पण आ कार्य तेओश्रीना खास उपदेश अने प्रेरणाथीज उपस्थित थयु होवाथी आ कार्यथी जैन समाजने तथा मने पोताने जे लाभ थयो छे ते सर्वना निमितभूत तेओश्रीज छे तेथी तेओश्रीनो जेटलो उपकार मानीए तेटलो ओछो छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको मेळवी आपवामा जे जे मुनि महाराजाओए तथा अन्य ग्रहस्थोए मदद करेली छे तेमज जे जे ग्रहस्थोए द्रव्य स्हाय करी छे तेमनो अने मारा सहाव्यायी बधु माणेकलाल परजीवनदास, मगलभाइ लक्ष्मीचद (वडु) प्रेमचद दलसुखभाइ तथा भाइलाल चुनीलाल वगेरे जेमणे आ कार्यमा घणी मदद करी छे ते सर्वनो प्रथम भागमा उपकार मानवामा आवेलो छे तेमज आ बीजो भाग छपावी पूर्ण करती वखते पण फरीथी उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथो बहार पाडनार अमो तेमज आ कार्यना मुख्य उत्पादक श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी महाराज ए सर्वे मोटा भागे तपगच्छना छैए छता श्रीमद्ना गुणानुरागथी तेमना ग्रथो छपाववामा अहोभाग्य मानीए छीए तेज प्रमाणे खरतर गच्छना मुनिराजो तथा श्रावको श्री तपागच्छना मुनिओ उपर गुणानुरागी बनी तेमना बनावेला उत्तम ग्रथो बहार पाडी बने गच्छवाळा परस्पर सहकार्यथी प्रयत्न करशे तो जैन कोमने घणो लाभ थशे

स १९७५ ना वैशाख सुदि ६ ना दीवसे पादरामा श्री शातिनाथजी महाराजना देराशरना ध्वजा दडारोपण महोत्सवना वरघोडामा जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी महाराजना उपदेशथी श्री कल्पसूत्र, महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजना ग्रथो तथा श्रीमद् देवचन्द्र भाग पहेलो तथा श्री आनदघनपद भावार्थ सग्रह ए ग्रथोने लेइ बहुमान पुर्वक खास

एक हाथी उपर बेसवानो चढावो बोल्ता वडुना शा मणीलाल लक्ष्मीचंदे भारे रकमनो चढावो बोली श्रीमद् देवचन्द्र पहेलो भाग लेइ हाथीपर बेठेला आ उपरथी श्रीमद्‌ना ग्रथो प्रत्येनो अपूर्व भक्तिभाव जणाइ आव छे जैन कोममा प्रज्ञा चार्योना ग्रथो खरखर आगमोनी पेठे मनाय छे श्रीमद्‌ना बन्ने भागो छपावीने बहार पडवाथी अमोने घणोज आनद थयो छे. आ ग्रथोमा शुद्धि कर्या छता जे भुलो रही गएली जणाशे ते बीजी आवृतिमा सुधारी लेवामा आवशे

श्रीअध्यात्म ज्ञान प्रसारक मडळ तरफथी घणा पुस्तको पटनर किंमते अने केटलाक पटतरथी पण ओछी किंमते बहार पाडवामा आवे छे माटे आ सस्थानी कदर करनार सरसी ग्रहस्थो मडळ तरफथी पुस्तको छपावामा सहाय करशे तो मडळ वधार उत्साहथी एवी पण वधारे उपयोगी कार्य बजावशे

बीजी आवृत्ति छपावता पहेला आ ग्रथो सबधी जे जे महाशयो योग्य सूचनाओ करशे तो बीजा प्रसगे ते उपर पूरतु ध्यान आपवामा आवशे

इत्येव ॐ अर्हं शान्ति ३

मु० पादरा–आश्विन शुक्ल २ स १९७५ } वकील मोहनलाल हीमचद

श्रीमद् देवचंद्र भाग २.

(विभाग पहेलो.)

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
विचारसार ग्रंथ	
पीठिका	१
गुणस्थानोमा मूळ प्रकृतिबंध स्थान	१६
„ उत्तर प्रकृतिबंध	१८
कइ प्रकृतिनो केटला गुणस्थान सुधी बंध (अथवा भिन्नभिन्न प्रकृतियोमा गुणस्थानावतार)	२५
गुणस्थानोमा मूळ प्रकृत्युदय	३३
„ उत्तर प्रकृति उदय	३४
„ मूळ प्रकृति उदीरणा स्थान	४९
„ मूळ प्रकृति सत्ता स्थान	५२
„ उत्तर प्रकृति सत्ता	५३
„ १४ जीवभेद	६३
„ गुणस्थान	६५
„ १५ योग	६७
„ १२ उपयोग	७१
„ ६ लेश्या	७३
„ ४ मूळबंध हेतु	७५
„ ५७ उत्तरबंध हेतु	७६

,,	२५ कषाय	७९
,,	अल्प बहुत्व	८१
,,	५ मूळ भाव	८६
,,	५६ उत्तर भाव	८८
,,	२६ सान्निपातिक भावना भागा	९९
,,	५६३ जीवभेद	१०१
,,	७ समुद्घात	१०७
,,	१६ ध्यान	१०९
,,	२४ दंडक	११५
,,	३ वेद	११५
,,	५ चारित्र	११६
,,	८४ लाख जीवयोनि	१२०
,,	कुल कोडि	१२२
,,	४७ ध्रुवबंधि प्रकृति	१२२
,,	७३ अध्रुवबंधि प्रकृति	१२४
,,	ध्रुवोदयिने अध्रुवोदयि प्रकृति	१२५
,,	ध्रुवसत्ताक ने अध्रुवसत्ताक प्रकृतियो	१२८
,,	सर्वघाति-देशघाति-ने अघातिप्रकृतियो	१३०
,,	पुण्य-पाप-परावर्त्तमान-अने अपरा-व० प्रकृतियो	१३५
,,	क्षेत्रविपाकादि प्रकृतियो	१४१
,,	आठ कर्मना बंधादि स्थान अने भागा	१४९
,,	४२ आस्रव भेद	१८३
,,	५७ संवर भेद	१९०
,,	१२ निर्जरा भेद	१९८

„	४ बध भेद	१९९
„	ग्रथकर्तानी प्रशस्ति	२००

२ विचारसार प्रकरण

चासठ मार्गणाना नाम तथा स्वरुप		२०४
६२ मार्गणामा गुण स्थान		२०७
„	मूळ प्रकृति बध	२१३
„	उत्तर प्रकृति बध (ओघत)	२१५
„	कया मूळ कर्मनी केटली प्रकृति-योनो बध ?	२२२
„	मूळ प्रकृति उदय स्थान	२३१
„	उत्तर प्रकृति उदय (ओघत)	२३२
„	मूळ प्रकृत्युदीरणा	२६१
„	उत्तर प्रकृत्युदीरणा (ओघत)	२६२
„	८४ लाख जीवयोनि	२६३
„	कुल कोडीनी सख्या	२६४
„	जीवयोनि विभजना कुलकोडि विभजना	२६५
„	मूळ प्रकृति सत्ता स्थान	२६७
„	उत्तर प्रकृति सत्ता (ओघत)	२६८
„	१४ जीव भेद १४ गुण स्थान	२७५
—	१५ योगनु स्वरुप,	२८२
६२ मार्गणामा १५ योग		२८७
„	१२ उपयोग	२९२
„	६ लेश्या	२९८

"	४ मूळबंध हेतु } बंध तत्त्व	२९९
"	५७ उत्तरबंध हेतु }	३००
"	४२ आश्रव तत्त्वना भेद	३०७
"	५७ संवर तत्त्वना भेद	३१४
"	१२ निर्जरा तत्त्वना भेद	३१८
"	अल्प बहुत्व	३१९
"	५ मूळ भाव	३३०
"	५३ उत्तर भाव	३३१
"	२६ सान्निपातिक भागा (भावना)	३४३
"	५६३ जीव भेद	३४५
"	७ समुद्घात	३४८
"	१६ चार ध्याननां पाया	३४९
"	२४ दंडक	३५३
"	३ वेद	३५७
"	४७ ध्रुवबंधि प्रकृतियो	३५८
"	७३ अध्रुवबंधि प्रकृतियो	३६०
"	२७ ध्रुवोदयि प्रकृतियो	३६१
"	९५ अध्रुवोदयि प्रकृतियो	३६२
"	१३० ध्रुव सत्ताक प्रकृतियो	३६३
"	२८ अध्रुव सत्ताक प्रकृतियो	३६३
"	५ चारित्र	३६५
"	२० सर्वघाति प्रकृतिबंध	३६६
"	२५ देशघाति प्रकृतिबंध	३६७
"	७५ अघाति प्रकृतिबंध	३६८
"	४२ पुण्य प्रकृतिबंध	३६९

„	८२ पाप प्रकृतिबंध	३७४
„	२९ अपरावर्त्तमान प्रकृतिबंध ९१ परावर्त्तमान प्रकृतिबंध	३७५
„	क्षेत्र विपाकादि (४) प्रकृतियोनो उदय	३७६
कर्मप्रकृतियोना बंधादि भागानी विधि		३८०
६२ मार्गणामा कर्मप्रकृतियोना बंधादि भागा		३८७
विचारसार प्रकरणनो उपसंहार		४२४

विचारसार ग्रन्थमा गुणस्थान उपर अवतारेल ९६ द्वारनी विगत

१० बंधद्वार (मूळ प्र० बं०–उत्तर प्र०बं०–८ भिन्न कर्माष्टकबंध)
१० उदयद्वार (१० संख्या बंधवत्)
२ उदीरणाद्वार (मूळ–उत्तर)
१० सत्ताद्वार (१० संख्या बंधवत्)
१ जीवभेद (१४)
१ गुणस्थान (१४)
१ योग (१५)
१ उपयोग (१२)
१ लेश्या (६)
२ मूळबंध हेतु–उत्तरबंध हेतु
४ भिन्नबंध हेतु चतुष्क (४)
१ अल्प बहुत्व
८ मूळभाव–उत्तरभाव–भिन्न-भाव ५–सान्निपातिक भाव
२ ५६३ जीवभेद (मूळभेद–उत्तरभेद)
४ उत्तरमिलने
१ समुद्घात (८)
४ ध्यान (४)
१ दंडक (२४)
१ वेद (३)
१ योनि (८४)
१ कुल कोटि
६ ध्रुवबंधि-अध्रुवबंधि-ध्रुवोदयि-अध्रुवोदयि–ध्रुवसत्ताक–अने अध्रुव सत्ताक प्रकृतियो
३ सर्वघाति–देशघाति–अघाति प्रकृतियो

४ पुण्य०पाप–परावर्त्तमान–ने अपरावर्त्तमान प्रकृतियो
४ क्षेत्रविपाकादि प्रकृतिभेद ४
८ आठकर्मना भागा

४ आस्रव–संवर– निर्जरा–ब-धतत्वना भेद
९६ द्वार

ॐ अर्हंनमः

प्रस्तावना.

महोपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रमहाराज अने तत्कृत पुस्तको.

ज्ञानदर्शनचारित्र-व्यक्तरूपाय योगिने
श्रीमते देवचन्द्राय, सयताय नमोनम ॥ १ ॥

द्रव्यानुयोगगीतार्थो, व्रताचारप्रपालक
देवचन्द्रसम साधु, र्वाचीनो न दृश्यते ॥ २ ॥

वाचकस्य महारागी, सर्वजैनोपकारक
सप्रति यस्य सद्ग्रन्थै, स्तत्त्वबोध प्रजायते ॥३॥

आत्मोद्गारामृत यस्य, स्तवनेषु प्रदृश्यते
त्रिविधतापतप्ताना, पूर्णशान्तिप्रदायकम् ॥ ४ ॥

आनन्दघनगीतार्थ-पदस्तवनपूजक
गच्छेखरतरेतस्य, सम कोऽपिनयोगिराट् ॥ ५ ॥

आत्मशमामृतस्वादी, शास्त्रोद्यानविहारवान्
यत्कृतशास्त्रपाथोधा, स्नानकुर्वन्ति सज्जना ॥६॥

सिद्धान्तपारदृश्वा यो, गुणानुरागिशेखर
माध्यस्थ्ययस्यसच्चित्ते, तस्मै नित्य नमोनम ॥७॥

गुर्जरोर्व्याच सौराष्ट्रे, मेदपाटेच मालवे
लाटदेशेच पञ्जाबे, मरुदेशे स्वपादत ॥ ८ ॥

विहाराश्चकृतानेके, लोकाना बोधहेतवे
ज्ञानिने देवचन्द्राय, पूर्णप्रेम्णा नमोनम ॥ ९ ॥

समत अन्तरात्मा य, आत्मानुभववेदक
अप्रमत्तदशायोगी, जिनेन्द्राणाप्रसेवक ॥ १० ॥

श्रुतागमप्रलीनाय, भक्तायब्रह्मरागिणे
चिदानन्दस्वरूपाय, सर्वसत्यस्यरागिणे ॥ ११ ॥

ध्यानसमाधिरक्ताय, विश्ववन्द्यायसाधवे
श्रीमते देवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १२ ॥

जैनसघस्यसेवायै, सर्वस्वार्पणकारिणे
श्रीमते देवचन्द्राय, शुद्धात्मने नमोनम ॥ १३ ॥

भारत जैनसघे य, प्रादुर्भूतो महामुनि
मोहतमोविनाशेन, देवचन्द्रोहिभास्कर ॥ १४ ॥

शीतल सर्वलोकाना-मान्तरशान्तिकारक
क्षमापृथ्वीसमा यस्य, गाभीर्ये सागरोपमम् ॥ १५ ॥

धैर्ये मेरुसम यस्य, गगावत्निर्मल मन
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १६ ॥

कायोवर्ममयोपम्य, वचश्चत्रिश्वपावकम्
मनआत्मनिसंलग्न मात्मालीन प्रभोसदा ॥ १७ ॥

तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, त्यागिने धर्मरागिणे
नम श्रीत्रिश्वपूज्याय, विश्वकल्याणकारिणे ॥ १८ ॥

भावमेघस्वरूपाय विश्वोपग्रहकारिणे
नम श्रीदेवचन्द्राय सिद्धातपारगामिने ॥ १९ ॥

सर्वगच्छेषु माध्यस्थ्य, यस्य सत्य प्रतिष्ठित
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ २० ॥

स्वपरगच्छ मार्व्यस्थ्य, यस्य ज्ञानेन शोभते
सर्व गच्छसम। श्रीमद्। देवचन्द्र नमोऽस्तुते ॥२१॥
तपागच्छीय साधुमि सार्वे मनी प्रवर्तक
आदर्शो देवचन्द्रोऽभूत् सर्व साधु शिरोमणि ॥२२॥
देवचन्द्रकृत ग्रन्थान्, स्तुवेऽह भक्तिभावत
अमृतसागरा यत्र, विद्यन्ते सुखकारका ॥ २३ ॥
गुणानुरागयोगेन, देवचन्द्रमहामुने
स्तुति कृता तपागच्छे, बुद्धिसागरसूरिणा ॥ २४ ॥
गुणिनां गुणरागेण, व्यक्ताभवन्ति सद्गुणा
दोषास्त्याज्या गुणाग्राह्या भाषते बुद्धिसागर ॥२५॥

श्रीमद् देवचन्द्र मुनिराज.

श्रीमद् देवचद्र मुनिराने खरतरगच्छना श्री दीपचन्द्रजी साधु पासे दीक्षा लीधी हती तेओ श्री जैनश्वेताबर कोममा अतिप्रसिद्ध महात्मा तरीके वखणाय छे. तपागच्छीय विश्ववद्य सर्वगीतार्थ शिरोमणि श्री यशोविजयजी उपाध्याय (वाचक) ना तेओ पूर्ण रागी हता, अने तेथी तेमणे श्री ज्ञानसार ग्रन्थपर ज्ञानमजरी नामनी टीका करी छे श्वेताबर जैनधर्ममा पूर्वे चोराशी गच्छो हता हाल तो पाच छ गच्छो विद्यमान जणाय छे जे गच्छमा जे दीक्षा ले ते गच्छना ते मुनि कहेवाय छे अने पछी ते मुनि ते गच्छना आचारोने पाळे छे अने ते समाचारीने तथा पोताना पूर्वजोने प्रसशे छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराजने खरतरगच्छने खरतर गच्छ

जिनआणारगी वगेरे शब्दोथी वखाण्यो छे तेनी साथे कहेवु पडे छे के तेमणे तपागच्छ वगेरे गच्छोनी कोइ पण ग्रन्थमा निन्दा करी नथी उपोद्घात कर्ता लेखकने श्रीमद्‌ना पुस्तको पैकी आगमसारनो परिचय थयो मेहसाणामा स. १९५४ नी सालमा श्रीमद् रविसागर गुरुमहाराज साहेबनी सेवामा रहेवानु थयु हतु ते वखते आगमसारनु प्रथम वाचन थयु अने त्यारथी द्रव्यानुयोगनी रुचि वधी तथा आत्मज्ञाननी रुचि वधी. लगभग सोवार आगमसार ग्रन्थ वाच्यो, तथा नयचक्रसार वाच्यो, तेमज चोवीशी वाची तेथी जैनतत्त्वज्ञाननी पूर्ण श्रद्धा थइ अध्यात्म-ज्ञाननी श्रद्धामा आनदघनजी चोवीशी तथा श्रीमद् आनदघनना पदो उपयोगी थया, तेवी रीते द्रव्यानुयोगना ज्ञानमा श्रीमद् देवचद्रजीना पुस्तको उपयोगी थया तेथी तेमना पुस्तको वाचवानी जिज्ञासा वधी अने तेथी साधु जीवनमा शोधखोळ करी घणाखरा पुस्तको वाच्या घाळ जीवोने जैन तत्त्वज्ञान थवामा श्रीमद्‌ना पुस्तको अत्यत उपयोगी छे एम जणायु, तेमज तेमनां पुस्तकोने वाचवानी जिज्ञासा धारण करनारा जैनकोममा घणा जैनो मालुम पड्या तेथी छेवटे स १९६८ नी सालमा पा-दरामा वैशाख मासमा वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेनी समक्ष तेमना सर्व पुस्तको छपाववानो निश्चय कर्यो अने ते निश्चयने वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेए झीली लीधो-सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचदे उपाडी लीधो तेमणे देश परदेशमा अनेक साधुओ, साध्वीओ, श्रावक अने श्राविकाओपर अनेक पत्रो लखी तथा जाते जइ पुस्तकोनी शोध करीने छपावना प्रयत्न कर्यो छे श्रीमद् देवचद्रनो प्रथम भाग जहार पड्यो तेना पर जैनोए तूटानुट करी मूकी अने

वे लगभग खलास थवा आव्यो छे, आ उपरथी श्रीमद् देवचद्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोनी महत्ता सर्व लोको जाणी शकशे. श्रीमद् देवचद्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोथी सकळ जैनकोमने एक सरखो लाभ मळे छे तेमज जैनेतर प्रजाओने पण एक सरखो लाभ मळे छे अतएव श्रीमद् देवचद्रजी विश्वमा पोताना सद्विचारो वडे व्यापक छे श्रीमद् देवचद्रजीए खास खरतर गच्छनी भिन्न मान्यताओने स्थापन करवा कोइ ठेकाणे उल्लेख कर्यो नथी तेनु कारण ए छे के तेमने आत्मज्ञान थयु हतु अध्यात्मज्ञानी महात्माओ अमुक गच्छनी अमुक क्रियाचारनी भेदताने वळगी रहेता नथी अने तेथीज खास मुक्ति छे, एम मानता नथी तेथी तेओ मुख्य आत्मानी मुक्तिना उद्देश माटे लखे छे अने बोले छे. ए प्रमाणे श्रीमद्नी आत्मदृष्टि होवाथी तेओ खरतर गच्छना छता निश्चयनयनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमा रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार हता तेथी आपी जैनकोमने ते प्रिय थइ पडे एमा कइ आश्चर्य नथी खरतर गच्छमा आज सुधीमा जे जे आचार्यो मुनियो थया छे तेओए घणा ग्रन्थो लख्या छे छता श्रीमद् देवचद्रजीनी पेठे द्रव्यानुयोगना ज्ञान माटे तथा अध्यात्मज्ञान माटे आटला पुस्तको लख्या होय एवी व्यक्ति जणाती नथी तेथी खरतर गच्छमा सर्वथी प्रथम नजरे श्रीमद् देवचद्रजी आवे छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म सबधी उद्गारो निकाळ्या नथी तेथी देवचद्रजीए जे काम कर्यु छे अने जैनकोमनी आगळ जे वारसो मूक्यो छे तेथी जैनकोम तेमनी अनृणी छे एम कह्या विना चालतु नथी आवा महापुरुषना आत्मानी केटली बधी उन्नति

थइ छे तेनो ख्याल ते दशाने प्राप्त करनारने आवी शके तेम छे तेमना जेवी जेओनी दशा न होय तेओ भले पिस्तालीश आगमना ज्ञाता होय तोपण तेओ तेमने पिछाणी शके नहीं. आवा महान् महात्मानु जीवनचरित्र जाणवानी जरुर छे

श्रीमद् देवचद्रना बाह्यजीवन चरित माटे देशपरदेशमां अनेक पत्रो लखावी घणी शोधो करावी परतु हजु सुधी तेमनु जीवनचरित्र प्राप्त थयु नथी एटले हवे तेमना सबधी किंवदन्तीओ वगेरेथी तेमना जीवन पर अजवाळु पाडवा नीचे प्रमाणे प्रयत्न करवामा आवे छे

श्रीमद् देवचद्रमहाराजनी जन्मभूमि, गृहस्थावास

केटलाक वृद्ध पुरुषोना कहेवा प्रमाणे श्रीमद् देवचद्रजीनी 'जन्मभूमि गुर्जरत्रा (गुजरात) छे एम जणाय छे ' श्रीमद् देवचद्रजीनी प्रथममा प्रथम कृति स १७४३ नी सालमा बनेली अष्टप्रकारी पूजा अने एकवीश प्रकारी पूजा 'ए बे छे ए बे 'कृतियो ते वखतनी गळगथु गुजराती भाषामा छे गुर्जर 'भाषाना साक्षरो जो बराबर लक्ष्य राखीने वाचशे तो तेमने गळगथु शब्दवाळी गुजराती भाषा समजाया विना रहेशे नहीं श्रीमद् महात्मा देवचद्रजीनो ब्राह्मणना कुळमा अगर वणिकमा उच्च कुळमा जन्म थएलो होवो जोइए अष्टप्रकारी अने एकवीश प्रकारी पूजा गुजरातमा रचेली जणाय छे अतएव श्रीमद्नो जन्म गुजरातमा छे तेमणे गुजरातमा 'श्रीमद् ज्ञानसागरजी उपाध्याय पासे अभ्यास करेलो हतो 'श्री ज्ञानसागरजी प्राय अचलगच्छमा थया होय एम जणाय छे तेमणे स १७४३ नी सालमां प्रथम अष्टप्रकारी पूजा

रही ते वखते तेमनी ओछामा ओछी वीश बावीश वर्षनी उमर होवी जोइए, एटले तेमनो जन्म स १७२० नी साल लगभग होवो जोइए, अने दीक्षा स १७३२ लगभगमा होवी जोइए, ए प्रमाणे होय तो ते जमानामा ते दीक्षा लीधा बाद अगियार वर्षे अने जन्मथी त्रेवीश वर्षे ग्रन्थ रचवाने समर्थ थएला होवा जोइए, तेमनो गृहस्थावास लगभग बार वर्षनो होवो जोइए

श्रीमद् देवचद्रजीमहाराजनी दीक्षा.

श्रीमद् देवचद्रजीने दीक्षा आपनार खरतर गच्छीय श्री दीपचद्रजी उपाध्याय हता खरतर गच्छमा जिनचद्रसूरि थया तेमना पुण्यप्रधानोपाध्याय थया तेमना श्री सुमतिसागरोपाध्याय थया तेमना राजसागर उपाध्याय थया तेमना ज्ञान धर्मपाठक थया तेमना शिष्य राजहस अने दीपचद्र बने शिष्य पाठक थया तेमा श्रीमद् दीपचद्रना शिष्य श्रीमद् देवचद्र पाठक थया दीक्षा लीधा बाद तेओ लगभग गुजरातमा, काठियावाडमा अने छेवटे मारवाडमा विचर्या होय एम जणाय छे तेथी तेमनो गुजराती भाषा पर सारो काबु जाम्यो हतो स १७६६ नी सालमा तेओए पजाबमा मुलतानमा ध्यान चतुष्पदी बनावी, तोपण तेने गुजराती भाषामा बनावी, तेज तेमनी गुजरातनी जन्मभूमिने माटे अने गुजरातमा ३० वर्ष लगभग रह्या ए पूरवार करी आपे छे

विहार-गुजरात, मारवाड, पजाब

गुजरातथी विहार करी मारवाडमा तेओए चोमासा कर्या अने त्यांथी जेसलमेर थइ पजाबदेश तरफ विहार करेलो जणाय छे पजाबदेशमा ते वखते जैनवणिकोनी घणी सख्या होवी जोइए, पाछळथी त्या जैन ढुढक साधुओनो प्रवेश थयेलो

होवो जोइए तेमणे स १७६६ ना वैशाखमां ध्यानदीपिका चतुष्पदी (मुल्तानमा) अने १७६७ ना पोष मासमा हिन्दी भाषामा द्रव्यप्रकाश सवैया छंदमा (बिकानेरमा) बनाव्यो ते उपरथी तेमनो विहार पंजाब अने सरहद सुधी थएलो होवो जोइए पंजाब तरफथी विहार करी सिंध वगेरे थइ मोटाकोट मरोटमा तेओए चातुर्मास करेलु जणाय छे मोटाकोटमा तेमणे स १७७६ माना फागण मासमा तेमना सहायक मित्र दुर्गादासने माटे आगमसारनी रचना करेली छे श्रीमद् देवचंद्रना मोटाकोटमा दुर्गादास केवी रीते मित्र हता तेपर अनेक कल्पनाओ थाय छे जे श्रावको साधुओने मित्र तरीके मानी वर्ते छे ते अपेक्षाए कदापि मित्र लख्या होय वा अन्य कारणथी, तेनो निर्णय हाल थइ शके तेम नथी. मारवाडमाथी तेओ विहार करीने अनुक्रमे गुजरात तरफ आवेला जणाय छे स १७९६ मा जामनगरमा (नवानगरमा) कार्तिक सुदि एकमे विचारसार अने कार्तिक सुदि पंचमीए ज्ञानमंजरी पूर्ण करी छे एटले स १७७६ थी पछी १७९६ मा गुजरात तरफ आवेला अने गुजरातमा रहेला सिद्ध थाय छे स. १७७० पछीथी तेओश्री प जिनविजयजीने भणाववा पाटण आव्या बाद स १७७५ पश्चात् मोटाकोट मरोटमा गया हता

श्रीदेवचंद्रजीए तपागच्छना प जिनविजयजीने तथा उत्तमविजयजीने अभ्यास कराव्यो

श्रीमद् देवचंद्रजी महाराज सिद्धांतना ज्ञाता हता. श्रीसीमाविजयजीए पोताना शिष्य जिनविजयजीने विशेषावश्यक भणावा माटे पाटणमा बोलाव्या हता (स. १७७० थी १७७५ सुधीमा) तेनी साक्षी नीचे प्रमाणे—

श्रीज्ञानविमलसूरिजी कन्हे वाची भगवती खास,
महाभाष्य अमृत लह्यो देवचन्द्रगणि पास ॥

जिनविजयजीना शिष्य उत्तमविजयजीए दीक्षा लीधा बाद गुरुनी साथे स १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्युं हतु स १७९९ ना श्रावण सुदि १० दशमे पादरामा तेमना गुरु जिनविजयजी देवगत थया, त्यार बाद ग्रामानुग्राम विहार करता तेमणे भावनगरमा चोमासु कर्युं त्या श्रीमद् देवचंद्रजीने अभ्यास करवा माटे बोलाव्या हता ते सबंधी प उत्तमविजयजीना निर्वाणरासमा नीचे प्रमाणे लखेल छे—

इम अनुक्रमे वधता थका रे लोल, हुवा अष्टादश वर्ष रे
खरतर गच्छमाहि थया रे नामे श्री देवचंद्र रे ॥
जैनसिद्धात शिरोमणि रे लोल, धैर्यादिक गुणवृन्द रे ॥ ८ ॥

देशना जास स्वरूपनी रे लोल, ते गुरुना पदपद्म रे
वंदे अमदावादमा रे लोल, पूजाशा नि छद्म रे ॥ ९ ॥

ते गुरुनी वाणी सुणी, हरख्यो चित्त कुमार
ज्ञानाभ्यास करु हवे, तुम्ह पासे निर्धार ॥ १ ॥

इंगित आकारे करी, जाणी तेह सुपात्र
ज्ञानाभ्यास करावव्या, कीधो तेहने छात्र ॥ २ ॥

श्राविका रामकुंवर तिहा, धर्मी अति गुणवंत
गुरुवचने ते कुंवरने, अतिशय सहाय करत ॥ ३ ॥

हवे कुंवर नित्य २ भणे, प्रकरण जैनना सार, लल्ना,
दंडक ने नवतत्त्वजी, जाण्या जीवविचार, लल्ना ॥१॥

त्रणलोकनी दीपिका, सग्रहणी सुविचार, ललना
भाष्य चैत्य गुरु वदना, वली पच्चखाण प्रकार, ललना ॥२॥
क्षेत्रसमास सोहामणो, सिद्ध पचाशिका नाम, ललना
सिद्धदडिका तिम वली, चउसरण अति अभिराम, ललना ॥३॥
कर्मग्रन्थ अर्थे कर्या, कम्मपयडी मुखपाठ, ललना
पचसग्रह मुख ग्रन्थमा, विवर्यो कर्म जे आठ, ललना ॥४॥
कालविचार अगुल वली, वनस्पति तिम जाण, ललना
दर्शनपासी सित्तरी, कर्त्ता एहनु नाण, ललना ॥५॥
खड पद्दल तिम वली, निगोद छत्रीशी जेह, ललना
वलिय विचार पचाशिका, निज अभिप्रापरे तेह, ललना ॥६॥
वृत्ति सहित वाचे सवे, ते गुरुने उपकार, ललना
भगजाल मुख बहु भणे, रहस्य ते आगम अपार, ललना ॥७॥
सप्तभगी नय सात जे, वलिय निखेपनी वात, ललना
तिनभगीपणे ग्रहे, केना कहु अवदात, ललना ॥ ८ ॥
इम करता हवे अन्यदा, गुरुजी करे विहार, ललना
सुरतबदर आविया, साथे तेह कुमार, ललना ॥ ९ ॥
शब्दशास्त्र ते शहेरमा, भणिया यत्न अपार, ललना ॥

पाटण शहेरना वाणिया, कचरा कीका नाम
आवी सुरतमा रह्या, सुदर जेहनु धाम ॥ १ ॥
पुण्य प्राकृत जोरो थयो, त्हीं क्षेत्रातर योग
मनचिंते सफलो करु, लक्ष्मीनो सयोग ॥ २ ॥
आवी गुरुने विनवे, कहु तीरथ जान
पठिन पुस्प जो कोइ दियो, तो होय सफली वात ॥३॥
गुरु पण तेह कुमारने, जाणी चतुर सुजाण
तस आग्रहथी आपियो, लक्षणरूप निधान ॥ ४ ॥

श्री उत्तमविजयीजीए भावनगरमा चोमासु कर्युं ते वखते तेमणे श्रीमद् देवचन्द्रजीने बोलावीने अभ्यास कर्यो तेनी साक्षी रासमा नीचे प्रमाणे छे—

भावनगर आदेशे रह्या भविहित करे मारा लाल
तेडाव्या देवचद्रजीने हवे आदर मारा लाल
वाचे श्री देवचद्रजी पासे भगवती मारा लाल
पन्नवणा अनुयोगद्वार, वली शुभमति मारा लाल
सर्व आगमनी आज्ञा दीधी देवचदजी मारा लाल
जाणी योग्य तथा गुणगणना वृन्दजी मारा लाल
तिहा कुवरजी लाभा भक्ति घणी करे मारा लाल
कचराकीका सब लेइ इण अवसर मारा लाल
श्री सिद्धाचल यात्रा करवा आविया मारा लाल
गुरुजी पण सिद्धाचल साथे सिद्धाविया मारा लाल ॥

श्रीमद् श्रीदेवचद्रजी पाटणमा १७७५ सुधी हता पश्चात् ते मोटाकोट मरोट (मारवाड) मा चोमासु रह्या पश्चात् ते स १७७८ मा पाछा गुजरातमा अमदावादमा आव्या हता ते वखते उत्तमविजयजी निर्वाणरासना आधारे—श्री उत्तमविजयजीए ससारीपणामा अढार वर्षनी उमरे एटले जन्म १७६० अने १७७८ नी सालमा अमदावादमा उपर प्रमाणे—रासमा गणाव्या प्रमाणे ग्रन्थोनो अभ्यास कर्यो हतो अमदावादमा १७७८–७९–८० लगभग चोमासा थया होय एम समजे छे श्री देवचद्रजी पासे पूजाशाने भणावता रामकुवर श्राविकाए सारी सहाय करी हती श्रीमद् देवचद्रजीए अमदावादथी विहार करी खभात, वडोदरा, पादरा, भरुच थइ सुरत

विहार कर्यो अने ते साथे कुवर पुजाशा हता सुरतमा श्रीमद् देवचद्रजीनी पासे पुजाशाए व्याकरणादि अभ्यास कर्यो अने ते वखते पाटणथी व्यापार करवा आवेला सवजी कचरा कीकाए सुरतथी सघ काढ्यो त्यारे श्रीमद् देवचद्रजीनी आज्ञायी पुजाशाने साथे लीधा श्रीमद् देवचद्रजीए सुरतमा चार पाच चोमासा कर्या होय एम जणाय छे पुजाशाहे स १७९८ मा श्री जिनविजयजीनी पासे अमदावादमा दीक्षा लीधी अने तेमनु नाम उत्तमविजयजी पाडयु त्यारी गुरु शिष्ये प्रेमापुरमा चोमासु कर्यु त्यारी सुरत जइ स १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्यु स १७९९ नी सालमा पादरामा भगवतीसूत्र वाचता प जिनविजयजीए श्रावण सुदि दशमे देहोत्सर्ग कर्यो ज्या तेमना शरीरने अग्निदाह देवामा आव्यो छे त्या तळावना काठे देरी करवाभा आवी छे श्री उत्तमविजयजीए स १८०३ मा भावनगरमा चोमासु कर्यु त्या श्रीमद् देवचद्रजी पासे भगवती पन्नवणा अनुयोगद्वार वगेरे सूत्रो धार्यां अने श्री देवचद्रजीए सकलागमो वाचवानी तेमने आज्ञा करी स. १८०३ मा श्रीमद् देवचद्रजी भावनगरमा हता, पश्चात् सुरत गया अने कचरा कीकाना सघनी साथे शत्रुजयनी यात्रा करवा माटे आव्या, ते वखते भावनगरथी उत्तमविजयजी पण सिद्धाचलनी यात्राए एक सघमा भेळा गया स १८०४ मा श्री देवचद्रजीए सिद्धाचलनी यात्रा करी ते सबधीना स्तवनमा नीचे प्रमाणे लखाण छे

सवत अढार चिटोतर वरसे, सित मृगसिर तेरसिये
श्री सुरतथी भक्ति हरखथी, सघ सहित उल्लसिये ॥

कचरा कीका जिनवर भक्ति, रुपचद गुणवतजीए
श्री सघने प्रभुजी भेटाया, जगपति प्रथम जिणद ॥
ज्ञानानन्दित त्रिभुवन वदित, परमेश्वर गुणमीना
देवचद्र पद पामे अद्भुत, परम मगल लयलीना ॥

उपर प्रमाणे श्रीमद् कये क्ये स्थानके विहार कर्या अने क्या क्या चोमासा कर्या ते जणाय्यु श्रीमद्नो विहार गुजरात, काठियावाड, लाट, मारवाड, सिन्ध, पजाब वगेर देशोमा थएलो छे तेमणे तपागच्छना साधुओने अभ्यास कराव्यो एम श्री जिनविजयजी अने श्री उत्तमविजयजी पन्यासना निर्वाणथी सिद्ध थाय छे

यात्राओ

श्रीमद् देवचद्रजीए अनेक तीर्थोनी यात्राओ करी छे एम तेमना ग्रन्थो अने स्तवनो परथी जणाय छे द्रव्यानुयोगी आत्मज्ञानी श्रीमद् देवचद्रजी व्यवहार अने निश्चयनी श्रद्धा वाळा अने ते प्रमाणे वर्तवावाळा हता तेमणे सिद्धाचल तीर्थ के जे सर्व तीर्थ शिरोमणि कहेवाय छे ते तीर्थनी घणीवार यात्रा करी हती तेओ स १८०४ मा सुरतना सघवी कचरा कीकाना सघमा गया हता त्यार बाद तेमणे विहार वा यात्रा करी एवा उल्लेखो मळी आवता नथी तेमणे गिरनार पर्वत पर रहेल श्री नेमिनाथनी यात्रा करी हती एम गिरनारनी स्तुतिपरथी जणाय छे गुजरातथी मारवाड तरफ जता तारगाजी, कुभारीया, आबुजी, देलवाडा वगेरे तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओ सिंधनी सरहद पर मोटाकोट मरोट सुधी गया हता तेथी मारवाड, कच्छ अने सिन्धनी आजुबाजुना जिन-

मंदिरोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओश्रीए मुलतानमा चोमासु कर्युं हतु तेथी त्याना तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए स १७६६ नु चोमासु बिकानेरमा कर्युं हतु गुजरातमा पाटण, अमदावाद, खंभात, सुरत, भावनगर, लींबडी, पालीताणा वगेरे स्थळे चोमासा कर्यां हता ते ते स्थळोनी प्रतिमाओनी अने आजुबाजुना गामो शहेरोनी जिनप्रतिमाओना दर्शन करेला होवा जोइए

उपदेश-प्रतिष्ठा

श्रीमद् देवचंद्रजीनो दीक्षा पर्याय लगभग ७५ पोणोसो वर्षनो होवो जोइए १७३२ लगभगमा दीक्षा अने स १८१० लगभगमा निर्वाण अने बार वर्षनो गृहवास, एम आशरे गणता उमर लगभग नेवु वर्षनी होय तेम अनुमान थाय छे, तेथी तेमनो दीक्षा पर्याय पोणोसो वर्ष लगभगनो गणता तेटला वर्षमा तेमणे अनेक गाम शहेरोमा उपदेश आपेलो जणाय छे तेओ उपदेश देवामा एक्का होवा जोइए, एम तेमना ग्रन्थो उपरथी अवबोधाय छे मारवाड, पंजाब वगेरे देशोमा उग्र विहार करीने तेमणे ते समयमा जे बोध आपीने आत्मभोग आप्यो छे तेथी जैनकोमनी जे सरक्षा थइ छे तेनो हाल रखाल आवबो मुश्केल छे तेमणे स १७९४ मा शत्रुंजय पर्वत पर प्रतिष्ठा करी छे एम शिलालेखथी जणाय छे एम श्रीयुत मोहनलाल दलिचंद जणावे छे तेमज तेमना गुरुनी साथे स १७८८ मा शत्रुंजय पर कुंथुनाथजीनी प्रतिष्ठा वखते तेओ हाजर हता तथा सिद्धाचल पर समवसरणनी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा अमदावादमा सह-

स्त्रफणानी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा लींबडीमा देरासरना मूळ नायकनी बे बाजुए बे देरीओनी पोते प्रतिष्ठा करावी हती

श्रीमद् देवचद्रजीनी महत्ता-विद्वत्ता

श्रीमद् देवचद्रजी महाराज जेनागमोना पारगामी हता तेमणे अनेक गामना श्रावकोए पुछेला प्रश्नोना उत्तरो आप्या हता प्रश्नोत्तर नामनो ग्रन्थ ते बाबतनी साक्षी पूरे छे ते समयना विद्वानोमा तेमनी प्रतिष्ठा अने विद्वत्ता सारी रीते वृद्धि पामी हती खरतर गच्छमा ते वखते तेमना समान कोइ विद्वान् होय एम ते समयना ग्रन्थोथी अवलोकना अवबोधातु नथी' तपागच्छना सवेगी साधुओमा तेमनी महत्ता हती पोतानी महत्ता बधे एवा गुणो तेमनामा हता तपागच्छना सवेगी मुनिओ पैकी महान् श्री जिनविजयजी अने प श्री उत्तमविजयजी जेवाना तेओ धर्मशास्त्र पाठक गुरु हता सवेगी पक्ष ते समयमा चारित्रमार्ग सुधारक हतो तेमना हृदयमा श्रीमद् देवचद्रजीना गुणो स्फुया अने तेमना गुणो श्रीमद् देवचद्रजीना हृदयमा स्फुया अने तेथी सवेगी क्रियोद्धारक साधुओनी पुष्टि थइ तेथी श्रीमद् देवचद्रजी महाराजनी घणी प्रतीष्ठा वधी तेमना समयमाज तेमनी महत्ता-प्रतिष्ठानी आखा भारतमा ख्याति प्रसरी तेमनी सर्व गच्छोमां महत्ता वधवा लागी श्रीमान् पन्न्यास पद्मविजयजी के जेओ पिस्तालीश हजार गाथाओना रचनार पद्मद्रह तरीके प्रसिद्ध थया छे तेमणे श्री उत्तमविजयजीना निर्वाण रासमा तेमना समानकालमा

खरतर गच्छ माहे थया रे नामे श्री देवचद्र रे

जैनसिद्धांत शिरोमणि रे लोल
धैर्यादिक गुणवृन्द रे, देशना जास स्वरूपनी रे लोल ॥

इत्यादि शब्दोथी श्रीमद् देवचंद्रनी विद्वत्तानी अने साधु तरीकेनी महत्तानी स्तुति करी छे तपागच्छमा सत्रेगी पछमा श्री पद्मविजयजी पन्यासनी घणी प्रतिष्ठा छे श्रीमद् देवचंद्र महाराजनो श्री पद्मविजयजीए संसारीपणामा तथा साधुपणामा समागम करेलो हतो अने ते समयमा ते महा विद्वान् गणाता हता तेनो जाति अनुभव कर्यो हतो तेथी तेमणे श्रीमद् देवचंद्रने जैनसिद्धांत शिरोमणि एवा पदथी निवाज्या छे, तथा धैर्यादिक गुणना वृन्द तरीके प्रशंसया छे, तथा जेनी देशनास्वरूपनी अर्थात् आत्मस्वरूपने प्रकाशनारी छे, एम प्रतिपादन कर्यु छे ते खरेखर अनुभव करीने कह्य छे सत्रेग पण गुणिशेखर श्रीमद् प पद्मविजयजी जेवा महा विद्वान् अने गुणानुरागीए श्रीमद् देवचंद्रजीनी प्रतिष्ठा, महत्ता अने विद्वत्तानी ख्याति करी छे उपाध्याय श्री देवचंद्रजीने एक पूर्व ज्ञान हतु, एम श्री ज्ञानसारजीए आ ग्रन्थना पा १०४३ मा जणाव्यु छे, तथा ते आत्मज्ञानी वक्ता हता एम स्पष्ट जणाव्यु छे इत्यादि अनेक रीत्या श्रीमद् देवचंद्रजीनी महत्तानी सिद्धि थाय छे तेथी हवे तत्संबंधी विशेष लखवानी जरुर जणाती नथी

समकालीन जैन साधुओनु अने श्रीमद् देवचंद्रनु परस्पर मिलन

अढारमा सैकाना मध्यभागमा आखी जैन कोममा अने भारतदेशमा महाप्रखर विद्वान् तरीके श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी तपागच्छीय प्रसिद्ध छे अर्वाचीन कालमा तेमना

लेवा कवि, भक्त, ज्ञानी, कर्मयोगी महात्मा अल्प थया हशे वा नहि तेओ जैनकोममा सर्वमान्य धर्मधुरंधर गीतार्थ हता सर्व अनुयोगोना ते गीतार्थ हता तेमना समागममा श्रीमद् देवचन्द्रजी आवया होय एम जणाय छे उपाध्यायजी स १७४५ लगभग सुधी जीवता हता उपाध्यायना समागममा आवयाथी तेमनु आत्मज्ञान तरफ लक्ष्य गयु होय एम अनुमान थाय छे अने तेथी तेमणे ज्ञानसारपर ज्ञानमंजरी टीका लखी श्रीमद् यशोविजयजीनी विचारमाळानी पुष्टि करी जणाय छे पाटणमा श्रीमद् ज्ञानविमलसूरि साथे श्रीमद् देवचन्द्रनो समागम थयेलो प्रतीत थाय छे प जिनविजयजीने श्रीज्ञानविमलसूरिए भगवती वचायु हतु अने ते साल लगभग श्रीजिनविजयजीने श्रीमद् देवचद्रजीए विशेषावश्यक वचायु हतु तेथी पाटणमा बने विद्वानोनो समागम थएलो होवो जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी अने श्री ज्ञानविमलसूरि बनेए मळी आनन्दघन चोवीशीना छेल्ला बे स्तवनो रच्या हता श्रीमान् आनन्दघनजीना समयमा तेओश्री विद्यमान हता परतु आनन्दघनजीनी साथे समागम थयो होय एम मानवाने सबळ कारणो मळ्या नथी श्रीमद् यशोविजयजीने श्रीआनदघनजीनो समागम थयो हतो अने तेथी उपाध्यायजीनी दृष्टि पश्चात् आत्मज्ञान तरफ वळी हती श्री उदयरत्नजी वगेरे मुनिराजो श्रीमान्ना समानकालीन हता

भिन्न भिन्न गच्छना साधुओनु परस्पर मिलन तथा तेओनुं पठनपाठन

ते कालमां तपागच्छना मुनियो अने खरतरगच्छना मुनियो तथा अचलगच्छना मुनियो परस्पर एक बीजा गच्छना विद्वान्

साधुओ पासे अभ्यास करता हता सोळमा सैका कर्ता अढारमा सैकाना मध्यकालमा परस्पर भिन्न गच्छीय साधुओमा गुणानुराग वृद्धि पाम्यो हतो अढारमा सैकाना मध्यकालमा खरतर गच्छ अने तपागच्छना मुख्यपणे सम्मेलित ज्यारे सिद्धाचल यात्रा करवा जता हता त्यारे तेओ वडनगरमा (श्रीमद् कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्रनी जन्मभूमिमा) मळ्या त्यारे बे गच्छना आचार्योमा घणो राग थयो अने बे गच्छना आचार्योनां श्रावकोए हठणा कर्या तेमा बे लाख रुपैयानी उपज थई बे गच्छमा ते वखते पटनपाटन अरसपरस चालतु हतु

श्री देवचंद्रजीए अनेक पुस्तको रच्या छे तेनी नीचे प्रमाणे यादी आपवामा आवे छे—

श्रीमद् देवचंद्रजीकृत कृतियो

पुस्तकनु नाम.	रच्यानो संवत्	क्या गाममा
१ अष्टप्रकारी पूजा	१७४३	"
२ एकवीशप्रकारी पूजा	"	
३ ध्यानदीपिका चतुष्पदी	१७६६ वै व १३	मुल्तान पंजाब
४ द्रव्यप्रकाश	१७६७ पो व १३	बिकानेर, चोमासु स १७६६ नु कर्यां बाद
५ आगमसार	१७७६ फा सु ३	मोटाकोट मरोट
६ नयचक्र		
७ विचारसार	१७९६ मा सु १	नवानगर (जामनगर)
८ ज्ञानमंजरी टीका	" " ५	"
९ विंशविहरमानवीशी		पालीताणा
१० सिद्धाचल स्तवन.	१८०४ मा सु १३	"

११ गुरुगुणषत्रिंशिनो टबो
१२ पाच कर्मग्रन्थनो टबो
१३ विचाररत्नसार[illegible] तरूप)
१४ प्रश्नोत्तर
१५ कर्मसवेव
१६ प्रतिमा पुष्पपूजासिद्धि
१७ गुणस्थानक अधिकार
१८ अध्यात्मगीता (प्राय १७४३)मा लींबडी वृद्धोना कहेवा प्रमाणे
१९ वर्तमान चोवीशी
२० अतीत चोवीशी पेकी एकवीशी
२१ स्नानपूजा
२२ नवपदपूजा उठाळा
२३ वीरनिर्वाणना स्तवननी ढाळो भावनगरमा
२४ चाडुजिनस्तवन अने तेनो टबो
२५ भावीचोवीशी पेकी पद्मनाभनु स्तवन
२६ सीमधरजिन स्तवन
२७ दीवालीनु स्तवन लघु
२८ नवानगर आदि जिनस्तवन
२९ ध्रु० पद स्तवन
३० समवसरण स्तवन
३१ कुभस्थापना
३२ सहस्रकूट स्तवन
३३ अजितनाथजिन होरी.
३४ प्रभु स्तुति
३५ सिद्धाचल स्तुति.

३६ गिरनार स्तुति
३७ वीशस्थानक स्तुति
३८ ज्ञानबहुमान स्तुति
३९ } सिद्धाचल स्तवन
४० }
४१ }
४२ बडी साधु वन्दना
४३ अष्टप्रवचन माताती सज्झाय — जामनगर
४४ प्रभजनानी सज्झाय — रीवडीमा
४५ दडणक्षपिनी सज्झाय
४६ समकितनी सज्झाय
४७ गजसुकुमालनी सज्झाय
४८ पचेन्द्रियविषय त्याग पद
४९ } त्रण कागल–लखेल पत्रो
५० }
५१ }
५२ साधुस्वाध्याय तेनापर ज्ञानसारनो टबो
५३ सज्झाय
५४ साधुनी पचभावना — जेसलमेरमा
५५ (आनदघनजीनी चोवीशीमा ज्ञानविमलजी अने देवचदजी बने भेगा थइ बनावेला २३–२४ बे स्तवनो)
५६ आजको लाहो लीजीए रे काल कोने दीठी छे (प्राय देवचद्रजीकृत जणाय छे)

परस्परना ग्रन्थोमा साक्षीओ

श्रीमद् देवचद्रजीकृत जे जे ग्रन्थो-कृतियो उपलब्ध थइ छे ते उपर प्रमाणे जणावी छे भविष्यमा जे जे उपलब्ध थशे ते ते जणाववामा आवशे श्रीमद् देवचद्रजीए पोताना ग्रन्थोमा वाचक यशोविजयजीना ग्रन्थनी साक्षी आपी छे तेथी तेओ गुणानुरागी हता एम सहेजे सिद्ध थाय छे तेमज तेमणे श्रीमद् आनन्दघनजी के जे अर्वाचीनकालना अध्यात्मज्ञानोद्धारक हता, तेमना वचनोनी पण पोताना ग्रन्थमा साक्षी आपी छे तेथी ते कालमा तपागच्छीय श्रीमद् आनदघनजीना विचारो आपी जैनकोममा जलदी प्रसरी गया हता एम सिद्ध थाय छे श्रीमद् देवचद्रजीना ग्रन्थोना पूर्णरागी श्री अमीविजयजी (अमीकुवजी) हता तेमणे नवतत्त्व प्रश्नोत्तरमा श्रीमद् देवजद्रजीकृत ग्रन्थनी साक्षी आपी छे परस्पर गच्छना आचार्यो अने साधुओ पोतपोताना ग्रन्थोमा एक बीजाना सद्विचारोनी साक्षीओ आप्या विना रहेता नहोता

त्रण मुनिओनी एक पूजा

आ वखते तपागच्छ अने खरतरगच्छना आचार्योमा सप हतो स्थानकवासीओ सामे बने गच्छवाळा कुसपने मूळी क्षुल्लक मान्यताओना भेदोने उपशमावी एक थया हता प्रतिमाना उत्थापको सामे प्रतिमा सिद्धिना विचारो आपवामा एक सरखी रीते युरोपी मित्रराज्योनी पेठे सर्पाने वर्त्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायकृत नवपद स्तुति तथा ज्ञानविमळसूरिकृत नवपद स्तुति अने श्रीमद् देवचद्रकृत नवपदनी

तेमा अहंममत्व बुद्धि नष्ट थाय छे अने अप्रमत्त दशामा प्रवेश थाय छे श्रीमद् देवचंद्रजीने एवी उत्तम आत्मज्ञान दशा प्रगट थइ हती, अने एवी दशामा अवधूत बनेला हता तेथी ते प्रसंगे जे उद्गार बहार पडेला छे तेमा आत्मदशानी खुमारी नीतरी छे ते तेमना उद्गारवाळा स्तवनोथी वाचको सहेजे समजी शके तेम छे नामरूपनो अहंभाव टळ्यो हतो देह छता तेमणे विदेह दशानो अनुभव कर्यो हतो लींबडीना उपाश्रय पासे देरासरमा एक भोंयरामा तेओश्री ध्यान धरता हता एम त्याना वृद्ध श्रावको जणावे छे मोटाकोट मरोटमा तेओश्री वने त्रण त्रण वा कलाकोना कलाको पर्यंत आत्माना शुद्धोपयोगमा तल्लीन थइ आत्मसमाधिमा मग्न रहेता हता तेमणे सविकल्पध्यान समाधि उपरांत निर्विकल्पक समाधिनो रस लीधो हतो अने तेओ देह छता देहातीत दशामा अखंड उपयोग पणे रह्या हता तेथी तेओए शुद्धोपयोगना तानमा स्तवनोमा आत्मदशानो रस रेड्यो छे जेटला प्रमाणमा आत्म-दशा प्रगटी होय छे तेटला प्रमाणमा उद्गारो प्रकटे छे जेटलु आत्मामा प्रगट्यु छे तेटली झांखी शब्दोद्वारा बहार प्रकाशे छे दरेकना पोताना शब्दोमा तेना विचारो होय छे श्रीमद् देवचंद्रजीना पुस्तको एज तेमनु आन्तरजीवन छे बाह्यजीवननी चेष्टामा तो प्रारब्ध योगे विचित्रता होय छे छता आन्तरजीवननो तेथी जुदा प्रकारनु होय छे बाह्यजीवन ते शरीर, वाणी अने कर्मना भोगथी मिश्रित होय छे आध्यात्मिक जीवनतो उपयोग रूप होय छे शुष्क नाळियेरना जेवु बाह्यमा राग द्वेषथी हतु एम तेमना स्तवनोथी जणाइ

श्रीमद्‌ना प्रभुना स्तवनोमा आत्मदशाना उद्गारो छे तेमाथी संक्षेपथी केटलाक नीचे प्रमाणे जणावामा आवे छे—

आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अ यावाध
समर्यो अभिलाषीपणो रे, कर्ता साधन साध्य ॥अ०॥
ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव
कारणता कारजदशा रे, सकल ग्रथु निज भाव ॥अ०॥

प्रभु दरिसण महामेहतणे प्रवेशमें रे
परमानन्द सुभक्ष थयो मुज देशमें रे ॥ १ ॥
तिन भुवन नायक शुद्धातम तत्त्वामृतरस वृष्टि रे
सकल भविक लीलाणी मारु मन पण तुष्टि रे ॥आ० २॥
मनमोहन जिनवरजी मुजने, अनुभव प्याले दीधो रे
पूर्णानन्द अक्षय अविचलरस, भक्ति पवित्र थइ पी ओरे॥आ० ३॥
ज्ञानसुधा लालीनी लहेरे, अनादि विभाव विसार्यो रे
सम्यग्ज्ञान सहज अनुभवरस, शुचि निजगोत्र समार्यो रे॥आ ४॥

जिनगुण रागपरागथी रे, नासित मुज परिणाम रे
तजशे दुष्ट विभावना रे, सरशे आतम काम रे ॥
जिन भक्तिरत चित्तने रे, वेधकरस गुण प्रेम रे
सेवक जिनपद पामशे रे, रसवेधित अय जेम रे ॥
नाथ भक्तिरस भावथी रे, तृण जाणुं पर देव रे
चिन्तामणि सुरतरुथकी रे, अधिकी अरिहंत सेव रे ॥
परमातम गुण स्मृतिथकी रे, फरश्यो आतमराम रे
नियमा कचनता लहे रे, लोह ज्यु पारस पाम रे ॥

सहेजे प्रगट्यो निज परभाव विवेकजो,
अन्तर आतम ठहर्यो साधन साधवे रे लोल,
साध्यालबी थइ ज्ञायकता छेकजो,
निज परिणति थिर निज धर्मरसे ठवे रे लोल ॥
त्यागीने सवि परपरिणतिरस रीजजो,
जागी छे निज आतम अनुभव इष्टता रे लोल ॥
सहजे छूटी आस्रवभावनी चाल जो,
जालम ए प्रगटी सवर शिष्टता रे लोल ॥
बधना हेतु जे छे पापस्थान जो,
ते तुज भक्ते पाम्या पुष्ट प्रशस्ता रे लोल ॥
ध्येयगुणे वलग्यो पूरण उपयोग जो,
तेहथी पामे ध्याता ध्येय समस्तता रे लोल ॥
जे अति दुस्तर जलधि समो ससार जो,
ते गोपद सम कीधो प्रभु अवलबने रे लोल ॥
जाण्यो पूर्णानन्द ते आतमपास जो,
अवलम्यो निर्विकल्प परमातम तत्त्वने रे लोल ॥

भास्यो आत्मस्वरूप अनादिनो विसर्यो हो लाल
सकल विभाव उपाधिथकी मन ओसर्यो हो लाल
सत्ता साधन मार्गभणी ए सचर्यो हो लाल
दानादिक निज भाव हता जे परवशा हो लाल
ते निज सन्मुख भाव थई लही तुज दशा हो लाल
क्षायोपशमिक गुण सर्व थया तुज गुणरसी हो लाल
सत्ता साधन शक्ति व्यक्तता उल्लसी हो लाल
हवे सपूरण सिद्धतणी शी वार छे हो लाल
देवचन्द्र जिनराज जगत आधार छे हो लाल

श्रीमद्नी भक्त दशा.

श्रीमान् देवचद्रजी परमात्माना ज्ञानी भक्त हता तेमणे चोवीश तीर्थंकरोनी पूर्ण प्रेमथी स्तवना करी छे तेमणे हृदयना पूर्ण भावथी वास्तविक परमात्माना गुणोनु वर्णन कर्युं छे तेमनी भक्तिमा लघुता अने परमात्मानी प्रभुतानु दृश्य छे. परमात्मानी भक्ति-प्रार्थना करती वखते पोते हृदयने जरा मात्र छद्मस्थ राखता नथी प्रभुनी भक्तिमा नामरुपनी अहता विसरी जाय छे तेमज प्रभुने मळवा माटे अनेक आशामय सुरम्य भावनाओने हृदय आगळ खडी करे छे पोतानी मोहदशा न होवा छता तेने मोटी करीने दास भावे प्रभुने पोताने दोषी तरीके जणावे छे पोताना बनावेला स्तुति पदोमाथी सक्षेपथी नीचे प्रमाणे आपवामा आवे छे —

तार हो तार प्रभु मुज सेवक गणी
जगतमा एटलु सुजस लीजे
दास अवगुण भर्यो जाणी पोतातणो
दयानिधि दिनपर दया कीजे तार० ॥ १ ॥
रागद्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो,
मोहनी रीतिमा घणुए रातो
क्रोधवश धमधम्यो शुद्धगुण नवीरम्यो
भम्यो भवमाहि हु विषय भातो तार० ॥ २ ॥
आदर्यु आचरण लोक उपचारथी
शास्त्र अभ्यास पण काइ कीधो
शुद्ध श्रद्धानवण आत्म अवलब विणु
तेहथो कार्य, तेणे को न सिद्धयो तार० ॥ ३ ॥

स्वामी गुण ओलखी स्वामीने जे भजे
दर्शन शुद्धता तेह पामे
ज्ञानचारित्र तप वीर्य उल्लासथी
कर्म जीती वशे मुक्ति वामे तार० ॥ ५ ॥
जगत् वत्सल महावीर जिनवर सुणी
चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो
तारजो बापजी विरुद निज राखवा
दासनी सेवना रखे जोशो तार० ॥ ६ ॥

होवत जो तनु पारखडी, आवत नाथ हजूर लाल्रे
जो होती चित्त आखडी, देखत नित्य प्रभुनूर लाल्रे
देव जशा दर्शन करो ॥
शासन भक्त जे सुरवरा, विनवु शीष नमाय लाल्रे
कृपा करो मुज उपर, तो जिन वन्दन थाय लाल्रे (देव)
पूछु पूर्व विराधना, शी कीधी एणे जीव लाल्रे
अविरति मोह टळे नहीं, दीठे आगम दीव लाल्रे (देव)
इत्यादि

ते समयनी स्थिति अने सुधारणानो बोध

श्रीमद् देवचन्द्रना समयमा पण गाडरीया प्रवाह प्रमाणे जेनो वर्तता हता तळावमा पाणी होय छे तो लील होय छे तेम कोइ जमानो एवो नथी होतो के जेमा सर्व लोको ज्ञानीओ होय वा सर्व लोको अज्ञानीओज होय ज्ञानीओनी साथे अज्ञानीओ होय छे अने अज्ञानीओनी साथे

ज्ञानीओ होय छे भक्तो होय छे त्या अभक्तो पण होय छे दुनियाना जीवो रजोगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण युक्त होय छे जीवोने कर्मप्रकृति नचावे छे केटलाक जीवो एकात क्रियावादी होय छे केटलाक शुष्क ज्ञानवादी होय छे, ज्ञान क्रियाभ्यामोक्ष ज्ञान अने क्रिया ए बेथी मुक्ति छे एम माननारा दुनियामा रत्ननी पेठे अल्प मनुष्यो होय छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराज उपदेशक हता तेमज जैनोनी धर्म दशाना निरीक्षक हता जैनोने बोध पमाडीने धर्मना स्थिर करनार हता ते वखतना जैनोमा ते वखते बाहुल्य क्रियाजडदशानु हतु तेथी क्रियाजडमनुष्यो गाडरिया प्रवाहे समज्या विना प्रतिक्रमणादि क्रियाओने मानी पश्चात् आत्मज्ञान तरफ रुचि धरावता नहोता अने आत्मज्ञानी मुनिराजोनी महत्ता अवबोधवा शक्तिमान् थया नहोता सर्व काळमा ए प्रमाणे बने छे श्रीमद् देवचद्रजी जैनशासन प्रवर्तक हता आखी दुनियाना मनुष्यो जैनतत्त्वज्ञान प्राप्त करी ले तो बहु सारु एवी भावनावाळा हता ते वखतमा अज्ञानी व्यवहारवादीओनी बाहुल्यता हती आत्मज्ञान रसिक अल्प मनुष्यो ते वखतमा हता तेथी तेओ चद्रबाहु जिनना स्तवनमा नीचे प्रमाणे उद्गारो काढे छे

द्रव्य क्रिया रुचि जीवडा रे, भाव धर्म रुचि हीन,
उपदेशक पण तेहवा रे, शु करे जीव नवीन रे
चन्द्राननजिन, ३

तत्त्वागम जाणग तजी रे, बहु जन सम्मत जेह,
मूढ हठीजन आदर्यो रे, सुगुरु न्हाने तेह रे चन्द्रानन० ४

आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे धर्म,
दंशणनाण चरीत्तनो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे चन्द्रानन० ५
गच्छकदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्ध,
आतमगुण अकषायता रे, धर्म न जाणे शुद्ध रे चन्द्रानन० ४
तत्त्व रसिकजन थोडला रे, बहुलो जन संवाद,
जाणो छो जिनराजजी रे, सघळो एह विवाद रे चन्द्रानन० ७

इत्यादि

ए प्रमाणे तत्कालीन धर्मीओनी दशानु वर्णन कर्यु छे लोकोने श्रीयशोविजयजी उपाध्याये ते वखतमा शिखामण रूप सख्त चाबखा लगाव्या छे ते प्रमाणे श्रीमद् वाचक देवचंद्रजीए सख्त चाबखा लगाव्या नथी तेमणे तो जे कह्यु छे ते घणु मर्यादामा शिखामणरुपे कह्यु छे परतु लोको पर तेनी घणी सारी असर थइ छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् कर्मयोगी महात्मा

आजकाल जे आत्मज्ञानीओ देखाय छे तेमानो मोटो भाग शुष्क ज्ञानीओनो बनेलो होय छे आत्मानु सम्यग्-ज्ञान प्राप्त कर्या विना शुष्कज्ञानीपणु प्राप्त थाय छे अने तेथी वाचकज्ञानी तरीके उपहासने पात्र थाय छे कोटाबु-दीना भावना भाववावाळा शेठनी पेठे बनीने जेओ कहेवा प्रमाणे वर्तता नथी तेओ पोते तरी शकता नथी अने अ-न्योने तारी शकता नथी क्रिया विनानु शुष्कज्ञान कइ करी शकतु नथी. लौकिक शास्त्रो पैकी भगवद्गीतामा श्रीकृष्णे अर्जुनने कर्मयोगी थवा माटे सारी रीते उपदेश आप्यो हतो

कइ करवु नहीं अने वेसी रहेवु लानी लानी वातो कर्या करवी स्वपरनु श्रेय थाय एवा कार्यो करवा नहीं एवी स्वपरनु कल्याण थतु नथी व्यवहारमा रहीने स्वाधिकारे योग्य धर्मप्रवृत्ति कर्या विना आत्मज्ञान, इडानी पेठे काचु रहे छे वा काचा पाराना जेवु रहे छे शुभ प्रवृति, सेवा, परमार्थ कार्यो वगेरे कार्यो कर्या विना कोइने आत्मज्ञाननी पक्वता थइ नथी अने थशे नथी वातो कर्यायी वडा थता नथी तेम शास्त्रोमायी आत्मज्ञाननु स्वरूप वाच्यु एटला मात्रथी आत्मज्ञानी थवातु नथी देव, गुरु, धर्मनी भक्ति करवायी अने स्वाधिकार प्रवृत्तियी प्रवृत्त थता आत्मज्ञान परिणाम पाम्यु के नहीं तेनो अनुभव आवे छे सेवा कर्या विना आत्मज्ञान जे छे ते आत्मामा परिणमतु नथी देश सेवा, कुटुब सेवा, गुरुजन सेवा, प्रभु गुरु भक्ति, समाज सेवा, जाहेर उपदेश प्रवृति, अनेक ग्रन्थोनी रचना, वगेरे शुभ कर्मो करवायी अध्यात्मशास्त्रोद्वारा वाचेलु आत्मज्ञान खरेखर आत्मज्ञानरूपे परिणाम पामे छे श्रीमद् देवचद्रजीए दीक्षित थया बाद पोताना गुरु श्री दीपचद महाराजनी मन वाणी कायायी सेवा उठावी हती धर्मविद्या गुरु श्री ज्ञानसागरजीनी पूर्ण प्रेमथी सेवा करी हती तेओ गुरुकुळमायी छुटा पड्या नहोता, गुरुकुळवासमा रहीने तेमणे परपरा सहित ज्ञान प्राप्त कर्युं हतु शास्त्रज्ञाता थता पोतानी मानता पूजा वधारवा माटे गुरुथी जूदा पड्या नहोता धर्मव्यवहारनी शुभाचरणाओनो तिरस्कार कर्या नहोतो निश्चयज्ञानमा परिपूर्ण थया उना शुष्कज्ञानी बन्या नहोता प्रतिमा स्थापनरूपभावपूजा, तीर्थयात्रा, विहार, प्रतिक्रमणादि शुभ

धर्म क्रियाओनो त्याग कर्यो नहोतो गामोगाम फरीने तथा देशोदेश फरीने धर्मोपदेश आपीने तथा ग्रन्थो लखीने कर्मयोगीनी पदवीने तेमणे शोभावी छे साधुओ, साध्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने धर्मशास्त्रोनो अभ्यास करावी धर्म प्रवृत्तिमा जीवन गाळी आदर्श कर्मयोगीनु जीवन पाळवनी दुनिया माटे मूकी गया छे लगभग ७०-७५ वर्ष सुधी ज्ञानी कर्मयोगीनु साधु जीवन गाळी तेओए जैन धर्मनी पूर्ण सेवा करीने जैन कोमनी अपूर्व सेवा बजावी छे ते तेमना ग्रन्थो रहेशे त्यासुधी जैनोने उपकार कर्या करशे श्रीमद् जेवा कर्मयोगीओथी जगतमा धर्मनी जाहोजलाली वर्ते छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय अने श्री देवचद्रजी महाराज जेवा ज्ञानी कर्मयोगीओए अढारमा सैकानी जाहोजलाली दीपावी छे अने हाल पण तेमना शास्त्ररूप अक्षर देहोथी जैन कोममा जाहोजलाली वर्ती रही छे अने भविष्यमा वर्तो

श्रीमद्नो शिष्य समुदाय

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शिष्यभूत साधुओ अने साध्वीओ हती के नहीं तेनो हजु सुधी चोक्कस निश्चय जणायो नथी महा प्रख्यात पुरुषोनी पाछळनी सतति तेवा प्रकारनी होती नथी कातो देवतानी पाछळ कोयला जेवु थाय छे श्रीमद् हेमचद्र महाराजनी पाछळ तेमनी सतति परपरा वही नथी श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायना शिष्य साधुओ हता पण तेमनी परपरा वही नथी श्रीमद् आनन्दघनजीनी पाछळ साधु शिष्यो नहोता तेओनी पासे उपदेश

श्रवण करनारा श्रावक शिष्यो तो थया होय छे श्रीमद् देवचद्रजी प्रति बोधित श्रावक समुदाय अनेक देशोमा हतो तेमना श्रावकोए तेमनी बनावेली अध्यात्मगीताने सुवर्णना अक्षरे लखावी हती तेमना रागी श्रावकोए तेमना ग्रन्थोनो सर्व देशमा प्रचार करी दीधो हतो ए तेमनी गुरुभक्तिनी उत्तमता हती श्रीमद्ना श्रावको सिद्धातोना श्रोताओ हता अने तेथी तेओ अनभवी बन्या हता श्रीमद् देवचन्द्रना साधु शिष्य थया होत तो तेओ कोइ ठेकाणे कइ पण लख्या विना रह्या न होत कदापि तथा प्रकारना थया नहीं होय अथवा तेमनी दशाए कोइ शिष्य कर्यो तेमने लायक देखायो नहीं होय इत्यादि अनेक कल्पनाओथी चोक्स निश्चय करी शकाय नहीं

श्रीमद्नु निर्वाण अने निर्वाणस्थान पालीताणा

सवत् १८०४ सुधी तो तओ हयात हता एवु तेमना बनावेला सिद्धाचलना स्तवन परथी माल्म पडे छे ते वखते तेओ लगभग ८४ वर्षनी उमर लगभगना होवा जोइए पछीथी स्थिरवासनी आवश्यकता जणाइ होय एम अनुमान थाय छे स १८०४ बाद सिद्धाचल पालीताणामा स्थिरवास करेलो होवो जोइए पालीताणामा स्थिरवास करीने तीर्थस्थानमा समाधिमरण करवाने एवा महापुरुष इच्छे तेमा कइ आश्चर्य नथी सिद्धाचल पवत पर अनेक मुनियोए अनशण कर्यां छे, वृद्धावस्थामा जरा बलक्षीण थाय छे पाचे इन्द्रिओनु ज्ञान बळ घटे छे, मननी विचारशक्ति क्षीण थती जाय छे अने विहार थइ शकतो नथी, युवा-

वस्थानी पेठे उपदेश आपी शकातो नथी अने ग्रन्थ रचना वगेरनी प्रवृत्ति मन्द पडी जाय छे श्रीमद्नी वृद्धावस्थामां पूर्वोक्त स्थिति थाय ए संभविन छे वृद्धावस्थामा छेवटे परमात्मानु स्मरण अने आत्माना शुद्धोपयोगनु स्मरणज थइ शके छे श्रीमदे सिद्धक्षेत्रमा परमात्मानु ध्यान ग्रन्थामा लक्ष्य राख्यु हतु तेओ शरीर, नाम, जाति, आदि सर्व बाह्य पदार्थोमा आसक्ति विनाना थया हता आत्माना शुद्धोपयोगना तारोतारमा लयलीन रहेता हता अते समाधि मरण अभव्यजीवा न पावति ॥ अभव्यजीवोने मरणकाले समाधिमरण प्राप्त थतु नथी जेमणे पोणोसो वर्ष लगभग आत्म ज्ञानोपयोग, आत्मध्यान, आत्मानु चिन्तवन, मनन, अने आत्म समाधिमा गाळ्या होय तेने मरण वखते निवृत्तिदशामा समाधिमरण (पडित मरण) थाय एमा कइ आश्चर्य नथी श्रीमदे अनादि अनन्त ज्ञानरूप आत्मजीवनमा मनने लीन कर्यु हतु अने बाह्य दृश्य पदार्थोमा रागद्वेषपरिणामथी मुक्त थया हता आत्मा अने परमात्माना उपयोग विना तेओ हृदयमा अन्य कशो विचार प्रगटावता नहोता कर्मयोगी हता तेथी मरण वखते शारीरिक दु ख सहेवामा जरामात्र कायर बनता नहोता तेओ गुरुकुळ वासमेवी हता अने तेओए अनेक मुनियोनो आशीर्वाद लीधो हतो तेथी तेओने आत्मभान भूलावे एवी पीडा थती नहोती श्रीमद् बाळ ब्रह्मचारी हता तेथी तेमने आत्म शुद्धोपयोगनी रमणतामा शून्यता आवती नहोती शुभ परिणाम अने अशुभ परिणाम पण औदयिकभावज नित छे एम जाणी तेओ फक्त आत्माना शुद्धोपयोगमा रहेता हता तेओए मरणकालनी पहेला धार्मिक प्रवृत्तियोनी

घणी मन्दता करी हती आत्माना शुद्ध परिणाममा रहेता अने आत्माने भावता छता तथा अरिहतशरण, सिद्धशरण, साधुशरण अने केवलि प्रज्ञप्त धर्मशरण ए शरणने अतरमा परिणमावी परमेष्टि महामत्रनु ध्यान धरता छता बाह्य प्राणोनो त्याग करी तेओ शुभगति भजनारा थया आत्माना अनुभवमा रहीने शरीरनो सयोग दूर कर्यो धन्य छे एवा आत्मज्ञानी महापुरुषने धन्य छे, तेमना जीवनने धन्य छे, तेमना शरीरने श्रावकोए विधिपूर्वक अग्नि सस्कार कर्यो तेमना मरणना समाचारथी आखा भारतमा जैनकोममा घणो खेद प्रगट्यो पण भाविभाव आगळ कोइनु कइ चालतु नथी एम जाणी अते जैनो तेमना गुणोनु स्मरण करवा लाग्या अने तेमनी पाछळ तेमना चिरजीव अक्षर देहरुप ग्रन्थोनु अवलबन लेवा लाग्या ससारमा धर्मज शरणभूत छे पोतानी साथे दुनियानी कोइ वस्तु आवती नथी मोहथी जीवो आत्म-भान भूलीने अते जन्म हारी जाय छे श्रीमद् श्वेत वस्त्र-धारी हता ज्ञान वैराग्य भावना भाववामा एक्का हता खडन, मडन, वादविवाद, विकथा वगेर जेथी आत्म कल्याण वा सघ कल्याण न थाय तेनाथी दूर रहेता हता तपश्चर्या आदिथी श्रीमदे आत्मज्ञाननी परिपक्वता करी हती तेथी तेमनु समाधिमरण थयु हतु तेओ कोइनी कदापि निन्दा करता नहोता कोइना अवर्णवाद बोलता नहोता तेमने स्वगच्छ वा परगच्छ सबधी माध्यस्थ दशा हती तेमणे साधु दशानु अनुभव गम्य वर्णन कर्युं छे तेमाथी केटलाक उद्गारो नीचे प्रमाणे आपवामा आवे छे—

जगतमे सदा सुखी मुनिराज परविभाव परिणति के त्यागी,

जागे आत्म स्वभाव निजगुण अनुभव के उपयोगी
जोगी ध्यान जहाज ॥

निर्भय निर्मल चित्त निराकुल, विलगे ध्यान अभ्यास
देहादिक ममता सवि वारी, विचर सदा उदास ॥ अ ॥

भावे साधन जे एक चित्तथी र, भाव साधन निजभाव
भावसिद्ध सामग्री हेतु त रे, निरागी मुनिभाव ॥ साधक ॥

हेय त्यागथी ग्रहण स्वधर्मनो रे, कर भोगवे साध्य
स्वस्वभावरसिया ते अनुभवे र, निजगुण अव्याबाध ॥ साधक ॥

नि स्पृह निर्भय निर्मम निर्मला रे, करता निज साम्राज
देवचन्द्र आणाये विचरता र, नमिये ते मुनिराज ॥ साधक ॥

हवे वाचको श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शरीरने देखी शके तेम नथी परंतु हाल तो तेमना आत्माना प्रतिबिंबरुप तेमना सद्विचारोना दर्शन स्पर्शन करी शके तेम छे तेमनी संगतमा रहेला मनुष्योने धन्य छे तेवा अध्यात्मज्ञानी वैरागी गीतार्थनो एक घडीनो वा अर्ध घडीनो समागम खरेखर कोटि अपराधोनो नाश करी शके छे पुस्तको करता संत महात्मानो प्रत्यक्ष समागम खरेखर अनंतगुण लाभकारी छे एवा ज्ञानी साधुओने तेमना जीवनकालमा पूर्वभवना संस्कारी अल्प मनुष्यो ओळखी शके छे कारण के ते समयना केटलाक दुर्जनो तेमना समागममा आवनाराओन दोष दृष्टिथी विपर्यय दशावाळा करी मूके छे हवे तो तेमना अभावे तेमना पुस्तको तेमना आत्मानी ज्ञान वैराग्य सुगंधिथी वाचकोने लाभ आपे छे

श्रीमद् देवचंद्रजीना महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके अवतार

श्रीमद् अध्यात्मज्ञानी, आत्मशुद्धोपयोगी देवचंद्रजी महाराज हाल्मा महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे एम अनेक मनुष्योना मुखे किंवदन्ती तरीके श्रवण कर्यु छे साभळवा प्रमाणे श्रीमद्ना रागी अध्यात्मज्ञानी श्रावके पाटणमा महान् तप कर्यु हतु ते तपना प्रभावे भुवनपति देवे तेमने साक्षात् दर्शन आप्यु ते वखते ते श्रावके भुवनपति देवने श्रीमद् कइ गतिमा गया एवु प्रश्न कर्यु तेना उत्तरमा देवे कह्यु के श्रीदेवचंद्रजी महाविदेह क्षेत्रमा जन्म्या छे अने हाल केवलज्ञानी तरीके विचरे छे अने अनेक भव्य जीवोने देशना देइ तारे छे अमदावादमा सारंगपुर तळीयानी पोळमा आत्मज्ञानी ध्यानी परम वैरागी श्री मणिचंद्रजी नामना यति–साधु हता तेमणे आतमरामेरे मुनिरमे वगेरे अपूर्व वैराग्यमय सझझाओ, पद रच्या छे तेओ महातपस्वी ध्यानी हता तेमना तप प्रभावे तेमनी पासे धरणेंद्रे साक्षात् दर्शन दीधु अने मणिचंद्रजीने शाता पुछी मणिचंद्रजीने कोढ, रक्तपीतनो महाभयंकर रोग हतो, ते दर्दथी पीडाता हता देवे मणिचंद्रजिने वरदान मागवानु कह्यु परतु श्रीमणिचंद्रजीए कइ मागयु नहीं तेमनो रोग टाळवा विनति करी पण तेमणे ना कह्यु अने कह्यु के ते रोग भोग्या विना छुटको नथी, कर्यां कर्म उदयमा आवे छे, तेनु रहेणु रोग भोगवीने आपवु जोइए प्रारब्धकर्म तो तीर्थंकर भगवानने पण भोगववु पडे छे तो मार पण भोगववु जोइए के जेथी परभवमा कर्मनु लेणदेणु रहे नहीं श्रीमणि

चद्रजीए प्रेणेन्द्रदेवने श्रीमद् देवचद्रजीनी गति विषे पुच्छ्य त्यार धरणेन्द्रे कह्य के श्रीमान् देवचद्रजी हाल्मा विदेहक्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे श्रीमद् आनन्दघननी गति विषे पुच्छ्यु त्यारे कह्यु के तेओ एकावतारी छे एम श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय सबधी पुछ्यु हतु, तेनो उत्तर एकावतारी तरीके आप्यो हतो एक वृद्ध श्रोता श्रावके अमने ए प्रमाणे किंवदन्ती परपरानी चाल्ती आवेली कही हती आ प्रमाणे किंवदन्तीओ अत्र जणावी छे कलकत्तामा रहनार अध्यात्मज्ञानी सुश्रावक हीरजीभाइए पण उपरना भाव वाळी एक किंवदन्ती कही हती पण तेनो विस्तार थाय तेवी अत्र लखी नथी

श्रीमद्‌ना चमत्कारो

श्रीमद् देवचद्रजीना चमत्कार सबधी अनेक किंवदन्तीओ साभळवामा आवे छे काशीवाळा मडलाचार्य श्रीपालचन्द्रसूरि महाविद्वान थइ गया छे तेमना समयमा तेमनी साथे विचरनार ऐंशी वर्षना एक वृद्ध यतिजी अमने ससारीपणामा विजापुर ताळुके आजोल गाममा मळ्या हता तेमणे अनेक वातो करी हती ते कहेता के मारा गुरु नेवु वर्षना हता ते वखते में बाल्यावस्थामा श्रीमद् देवचद्र सबधी वातो साभळी हती स १९५२ नी सालमा अमारु ने वर्ष सुधी आजोलमा धार्मिक अभ्यास करावा माटे सघना आग्रहथी रहेवानु थयु हतु ते प्रसगे श्रीमद्‌नी चोवीशी वगेरे कठाग्र करी हती वृद्ध यतिजी वगेरेए आजसुधी कहेली किंवदन्तीओ नीचे प्रमाणे लखवामा आवे छे श्रीमदे ज्यारे दीक्षा

लीधी हती त्यारे ते बाल्यावस्थामा हता ते एक वखते काउसग्गमा हता त्यारे एक भयकर सप आव्यो अने श्रीमद् ना शरीरपर चढवा लाग्यो शरीर पर चढीने ते श्रीमद्ना खोळामा बेठो ते वखते आजुबाजुना साधुओ गभरावा लाग्या तो पण श्रीमद् जरामात्र चलायमान थया नहीं, श्रीमदे काउसग्ग पार्यो त्यारे ते सर्प फुत्कार करतो खोळामाथी उतर्यो अने सामो बेठो श्रीमदे तेने समता भावना वचनो कह्या ते तेणे मस्तक डोलवीने साभळ्या आवी स्थितिने देखीने बीजा साधुओ खरा हृदयथी श्रीमद्ना धैर्यनी प्रसशा करवा लाग्या अने कहेवा लाग्या के श्रीमद्मा आत्मानी निर्भयदशा प्रगट थइ छे तेओ बाल्यावस्थामा एक दिवसमा वसे श्लोको मुखे करता हता अने ते विसरी जता नहोता

धरणेन्द्रनु व्याख्यान साभळवा माटे ब्राह्मणना रूपे आवागमन

श्रीमद् मारवाडमा मोटाकोट मरोटमा चोमासु रहेला हता तेमनी देशना आत्मस्वरूपनी हती दररोज व्याख्यानमा सर्व दर्शनना लोको आवता हता अने आत्मज्ञान प्राप्त करता हता तेमना व्याख्यानमा एक वृद्ध ब्राह्मण जेवो मनुष्य आवतो हतो तेनी कोइने खबर पडती नहोती श्रीमद् महोपाध्याय यशोविजयजी कृत ज्ञानसारनु दररोज व्याख्यान करवामा आवतु हतु श्रीदेवचद्रजी महाराज तेनु अनुभव पूर्वक उडा उतरीन व्याख्यान करता हता तेथी श्रोताओना आत्माओमा ज्ञानरस उल्लाइ जतो हतो पेलो वृद्ध ब्राह्मण पण आनदथी उल्लसित थइ जतो हतो ते बोलतो नहोतो

तमज व्याख्यान पूर्ण थया बाद त्या जतो हतो तेनी कोइने समजण पडती नहोती, एक वखते रात्रीए ते ब्राह्मण उपाश्रयमा आव्यो अने श्रीमद्‌ने वन्दना करी बेठो ते वखते अन्य साधुओ पण जागता हता वृद्ध ब्राह्मणे जणाव्यु के हु धरणेन्द्र छु तमारी आत्मस्वरूपनी देशना में चार मास सुधी साभळी आ वखते भरतक्षेत्रमा तीर्थंकरनी पेठे आत्मस्वरुप व्याख्या करो जो तेथी हु घणो प्रसन्न थयो छु धरणेन्द्रे श्रीमद्‌ने कइ मागवानु कह्यु त्यारे श्रीमदे कह्यु के अनत दु खनो नाश करनार अने अनत सुखने प्रगटावनार आत्माना शुद्धोपयोग विना मारे अन्य कोइ वस्तुनी चाहना रही नथी धरणेन्द्रे आवु साभळीने तेमने धन्यवाद आप्यो धरणेन्द्रे सर्व साधुओने पोतानी प्रतीत थवा माटे एकदम उत्तर वैक्रिय शरीर प्रगट करी देखाड्यु तेथी सर्वेनी आखो अजाइ गइ अने उपाश्रयमा अजवाळु अजवाळु थइ गयु आथी साधुओने श्रीमद् देवचद्र महापुरुष छे अने तेमना वचन आराध्य छे एवो निश्चय थयो महात्माओ देवताओने आराधता नथी तो पण देवताओ तेमनी पासे आवे छे अध्यात्म ज्ञानी महात्माओमा अनेक प्रकारनी लब्धिओ प्रकटे छे तेमा कइ आश्चर्य नथी

सिंह शात थइ पगे लाग्या

श्रीमद् एक वखत पजाब तरफ विहार करता हता पर्वतनी पासे थइ जवानो रस्तो हतो, पर्वतनी नीचे एक सिंह बेठेलो हतो घणी वखत त्या थइ जनार मनुष्योने ते खाइ जतो हतो, श्रीमद् त्या विहार करवा लाग्या तेमने केटलाक लोकोए वार्या तो पण तेओ पाछा वळ्या नहीं,

अने कहेवा लाग्या के मारे सर्व जीवोनी साथे मैत्री भाव थयो छे माटे भय नथी, तेओ ज्या सिंह बेठो त्या थइ जवा लाग्या आ वखते साथे आवो प्रसग देखी गृहस्थो पण आ्या हता पेला सिंह पासे श्रीमान् आवी पहोंच्या श्रीमद्ने देखी सिंह बराटा पाडी उठ्यो अने श्रीमद्नी पासे आ्यो अने तेमना पगे पडी सामो उभो रह्यो श्रीमदे तेने शात कर्यो पछी ते चाल्यो गयो पाछळ आवनारा गृहस्थो तो आवु देखी आश्चर्य पाम्या **अहिंसाया प्रतिष्ठाया वैरत्याग** आ महान् सूत्र वचन खरु पडयु

जामनगरमा जैन देरासरना ताळा तोड्या.

एक वखत जामनगरमा मुसल्मानोनु साम्राज्य वधी गयु हतु एक जैन देरासर हतु तेनी मूर्तियोने भोंयरामा सनाटवामा आवी हती, मुसल्मानोए जबराइथी तेनो कबजो लेइ मस्जीद तरीके तेनो उपयोग कर्यो हतो केटलाक वर्ष सुधी जैनोए आ बाबत सहन करी लीधी पण पाछु तेमनु जोर ओछु थता अने हिन्दु राज्यनु जोर वधता जैनोए राजा आगळ फरियाद करी, पण जैनोनु कइ वळ्यु नहीं बाह्यथी अने अनरथी ते जैन देरासर हतु एम त्यानी अढार वर्ण कबुल करती हती पण चमत्कार विना नमस्कार थाय नहीं एवी स्थिति थइ पडी एवामा श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज विहार करता करता त्या आवी पहोंच्या तेमणे राजानी समक्ष जैन देरासर सिद्ध करवा प्रयत्न कर्यो अने मुसल्मानोए मस्जीद सिद्ध करवा प्रयत्न कर्यो छेवटे राजाए एवो ठराव कर्यो के देरासरने ताळा लगाववामा आवे अने जे पोताना

प्रभुना नामे प्रार्थना करी उघाडे अने उघडे तेने तेनो कब्जो सोंपवामा आवशे, आ प्रमाणे ठराव करीने फकीरोने पहेली तक आपी, फकीरोए खुदाना नामे कुरान वाची प्रार्थना करी पण मूळ जैन देरासर हतु तेथी ताळा तूट्या नहीं पछीथी श्रीमद् देवचद्रजीनो वारो आव्यो तेमणे जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुति करीके तटाक देइने ताळा तूटीने हेटा पड्या पश्चात् वृद्ध श्रावकोए राजाने भोंयरु जे गुप्त हतु ते देखाड्यु अने तेना द्वारना ताळा पण जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुतिथी तूटी गया अने तेमाथी घणी मूर्तियो नीकळी ते पाछी विधिपूर्वक देरासरमा स्थापन करवामा आवी श्रीमद्‌ना चमत्कारो देखीने जामनगरनो राजा अने प्रजा खुश थइ गइ अने जैन धर्मनी प्रसशा सर्वत्र प्रसरी श्री कृपाचद्रसूरिजी वगेरे साधुओ अने वृद्ध श्रावकोना मुखथी आवी वात साभळी हती ते अत्र लखी छे ज्ञानीध्यानी महात्माओ स्वय चमत्कार रूप छे आत्मानी अनत शक्ति छे आत्मानी जेओ उपासना करे छे तेओ परमात्मानी पेठे शक्तिओ फोरवी बतावे छे ॥ अहो अनन्तवीर्योऽयमात्माविश्वप्रकाशकः त्रैलोक्यचालयत्येव ध्यानशक्तिप्रभावतः ॥ (ज्ञानार्णव) अनत वीर्यरूप आत्मा छे अने विश्वनो प्रकाशक छे ते ध्यानशक्ति प्रभावे त्रण लोकने चलाववा शक्तिमान् छे

सिद्धाचलपर कागटा आवता वध कर्या

श्रीमद् देवचन्द्रजी घणी वखत सर्व तीर्थ शिरोमणि सिद्धाचल तीर्थनी यात्रा करवा जता हता सिद्धाचलमा तेमणे विहरमान विशी रची हती तेमणे सिद्धाचलनी अनेक यात्राओ

करी हती ऋषभजिणदशु प्रीतडी ए स्तवन तेमणे किंवदन्ती प्रमाणे सिद्धाचल आदीश्वर भगवान् आगळ रच्यु हतु श्री दीपचदजी महाराजनी साथे घणी यात्राओ करी हती दुषमकालना योगे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आववा लाग्या जेओ महाप्रभावक हता तेओ वारवार शातिस्नात्र भणावीने कागडाओनु आवागमन बध करता हता सैके सके कोइ प्रभावक महात्मा जैन कोममा प्रगटी नीकळे छे अने जैन धर्मनी प्रभावना करे छे श्रीमद् देवचद्रजीना कालमा सिद्धाचलपर कागडाओ आववा लाग्या हता तेथी जैन कोममा अने अन्य कोममा अनीष्टनो भय लाग्यो राज्य बदलवानो प्रसग आववानो होय छे, वा दुष्काल पडवानो होय छे त्यारे तथा महारोग फाटी नीकळवानो होय छे त्यारे तथा धर्म्मराज्यनी पडती थवानो प्रसग आवे छे त्यारे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आवे छे जे भावीभाव बनवानो होय तेना निमित्त चिन्हो प्रगट्या करे छे जे काळे जे बनवानु होय छे ते बन्या करे छे अनिष्ट निमित्तोथी अनिष्ट थाय छे स १९७५ ना माह मासमा विजापुर पासे वरसोडा गामना जैन देरासर पर विजळी पडी अने प्रतिमा पर पण विजळी पडी तेथी एक मासमा त्याना ठाकोर राओळश्री सुरजमल्लजी मृत्यु पाम्या आवा अनिष्टसूचक चिन्होथी लोको भय पामे छे निमित्तशास्त्र सत्य पडे छे जैन कोममा सिद्धाचलपर कागडाओना आवागमनना उत्पादथी सघमा क्लेश, भेद, जैनोनी हानि, आगेवानोनी पडती वगेरे शकाओ थवा लागी श्रीमद् देवचद्रजी महाराज सुरतनां कचरा कीकाकाना सघमा स १८०४ मा सिद्धाचल आव्या प्रसग पामीने जैन सघनी

विनतियी तेमणे सिद्धाचल पर्वतपर आदीश्वर भगवाननी हुकमा शातिस्नात्र भणाव्यु अने पर्वतनी चारे तरफ शाति जलनी धारा देवरावी तेथी कागडाओ आवता बध थया तेथी जैन कोममा आनद शाति प्रसरी अने अनीष्ट उपद्रवनो नाश थयो श्रीमद् यशोविजयजीए तथा ज्ञानविमळसूरिए प्रसगोपात्त अनेक चमत्कारो बताव्या छे प्रसग विना अमुक महात्मामा अमुक शक्ति छे ते मालूम पडती नथी महात्माओ कइ जाडुगरनी पेठे वादीनी पेठे खेल करी बतावता नथी तेमना आत्मामा जे कइ सिद्धियो उत्पन्न थाय छे तेनी तेओने पण मालुम पडती नथी परतु प्रसग प्राप्त थाय छे त्यारे तेओ पण जाणी शके छे

तेमणे मारवाडमा सघ जमण प्रसगे गौतम स्वामिना ध्यानथी एक हजार श्रावको जमे तेटला जमणमा आठ हजार श्रावकोने जमाडवानी मत्रशक्ति वापरी हती तेमने सिद्धातोनो तीक्ष्ण उपयोग हतो अनेक प्रकारनी अवधान शक्तिओ तेमनामा खीली हती परतु तेओ ते कोइनी आगळ प्रसग विना जणावता नहोता हालनी पेठे ते प्रसगे महात्माओ अवधानोना खेलो करता नहोता जैनोमा वा हिन्दुओमा जेटली अवधान शक्ति खीले छे तेटली पाश्चात्य लोकोमा खीलती नथी तेओ ज्या चोमासु करता अगर पधारता त्या लोकोमा शाति प्रसरती हती तेमनामा वचनसिद्धि प्रगटी हती तेओ घरी मनुष्योना वैरनो, सहजमा उपदेश आपी नाश करता हता गच्छोना खडनमडनमा तेओ पडता नहोता तेथी सर्व गच्छवाळाओने तेओ प्रिय थइ

पड्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय अने श्रीमद् आनदघनजी महाराजनी आध्यात्मिक विचार श्रेणिनु तेमणे अनुकरण करी तेओ वस्तुत बन्नेना आत्मिक अनुयायी बन्या हता तेथी जैन कोममा तेओ तत्त्वज्ञाननो प्रचार करवाने शक्ति मान् थया हता तेमना पूर्वभवना धार्मिक सस्कारो घणा तीव्र होवा जोइए पूर्वभवना सस्कार विना श्रुतधर्म अने चारित्र धर्मपर रग लागतो नथी, तेमज अध्यात्मज्ञान पर रग लागवो एतो अत्यन्त दुर्लभ वात छे तेओने सर्वनी प्राप्ति थइ माटे तेमना आत्माने नमस्कार थाओ

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना रचित ग्रन्थोनो सार

श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्याये आगमोमायी सारमासार तत्त्व के जे द्रव्यानुयोग कहेवाय छे तेनो सार भाग खेंचीने ग्रन्थोनी रचना करी छे द्रव्यानुयोगज्ञान, अध्यात्मज्ञान, शान्त रस अने वैराग्यरस तो तेओना ग्रन्थोमायी ज्या त्या नीतर्या करे छे तेमना ग्रन्थोरूपी सरोवरो खरेखर तत्त्वज्ञानथी छलकाइ जाय छे तेमना बनावेला ग्रन्थो पैकी आगमसार, नयचक्र अने विचारसार ए त्रण ग्रन्थो तो खास तत्त्वज्ञानथी भरेला छे ए त्रण ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवाथी सर्व आगमोमा प्रवेश थाय छे अने सर्व आगमोनो सार पामी शकाय छे अनतज्ञानसागरनो पार नथी परतु तेमा प्रवेश थवा माटे ए त्रण ग्रन्थो घणा उपयोगी छे प्रश्नोत्तर नामनो तेमनो ग्रन्थ खरेखर अनुभवज्ञानथी भरपूर छे तेथी मननीय छे अनेक जैनशास्त्रो वाच्या बाद प्रश्नोत्तर ग्रन्थमा करेला प्रश्नोना उत्तरार्थनो अनुभव थइ शके तेम छे श्रीमद्ना गच्छोनी

क्रिया बावननी तकगरो सबधी प्रश्न के उत्तर नयी तेयी सर्व गच्छना जैनो माटे प्रश्नोत्तर ग्रन्थनी उपयोगिता एक-सरखी रीते सिद्ध टरे छे वाचको जो स्थिर चित्तथी प्रश्नोत्तर ग्रन्थनो अभ्यास करशे तो तेओ तत्त्वज्ञानमा उडा उतरी शकशे अध्यात्मज्ञानमा उडा उतरवा माटे श्री ज्ञानसार ग्रन्थ पर लखेली ज्ञानमजरी टीका अपूर्व छे आत्मज्ञान सबधी जैनोमा भगवद्गीतायी पण कोइ महान् सत्यथी भरेलो ग्रन्थ होय तो ज्ञानसार ग्रन्थ छे तेना पर श्रीमदे टीका रचीने पोताना अध्यात्मज्ञान सबधी विचारोने जीवना मूकी गया छे अर्वाचीनकालमा ज्ञानसारनी महत्ता, उपयोगिता सर्वत्र प्रचार पामी छे जैनोना सर्व फीरकाओमा ज्ञानसार ग्रन्थ वचाय छे अध्यात्मज्ञानीओनु ज्ञानसारग्रन्थ खरेखर आनन्दमय हृदय छे तेना पर टीका रचीने श्रीमदे ज्ञानसारनी महत्तामा वृद्धिनो प्रकाश पाड्यो छे श्रीमद् उपाध्याय शिरोमणि यशोविजयजी उपाध्यायना छेल्लामा छेल्लो अध्यात्म जीवनरसनो झरो जेमा वह्यो छे ते ग्रन्थ खरेखर ज्ञानसार छे अने श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजनी छेल्ली जींदगीनो अध्यात्म ज्ञानरसनो जीवनो झरो जेमा वह्यो छे ते टीका खरेखर ज्ञानसार परनी ज्ञानमजरी टीका छे पछी तेमा अध्यात्मानन्दरस मीठाश सबधी शु पुच्छवु सर्व फीरकाना जैनो एकी अवाजे ज्ञानसार अने ज्ञानमजरीनी सुगधी माटे माथु धुणावी प्रशशा करी नाचे कुदे छे सस्कृत भाषामां ज्ञानमजरी टीका छे तेमा शब्द पाडित्य करता भाव घणो भरेलो छे ते वाचकोने सहेजे समजाशे श्रीमद्नी रचित चोवीशीमा ज्ञान अने भक्तिनो रस उल्काइ जाय छे

तेमना स्तवनोने दरेक गच्छवाळा मुखे करे छे अने प्रभुनी प्रतिमा आगळ गाय छे वीशमी सदीमा गच्छकदाग्रहोनुं ममत्व धीमे धीमे विलय थतु जाय छे अने जे कोई गच्छनी मारामारी करे छे तेना तरफ जैनो दयानी लागणीथी देखे छे देवचन्द्र चोवीशीनो जैनो अभ्यास करे छे तेमना सर्व ग्रन्थोनो अभ्यास करनार कोई पण मनुष्य पक्को जैन बनी शके छे अने ते गाडरीया प्रवाहमाथी मुक्त थई ज्ञानप्रवाह तरफ वळे छे तेमना ग्रन्थोमा षड्द्रव्य, नवतत्त्व, कर्मव्याख्या, सातनय, सप्तभंगी, अनेकपक्ष, आगम व्याख्यान, आत्मतत्त्व-स्वरूप, वगेरे सर्व बाबतोनु विवेचन करवामा आव्यु छे एक-दर रीते कहीए तो तेमना ग्रन्थोमा ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, उपासनायोग, वगेरे सर्व योगोनु स्वरुप आव्यु छे अने तेथी तेमना ग्रन्थो खरेखर वाचकोपर सारी असर कर्या विना रहेता नथी तेओ सनातन जैन मार्गोपासक हता तेमना ग्रन्थो एकदर रीतिए आगमो, प्रकरणो अने पूर्वा-चार्योना ग्रन्थोने अनुसरीने रचायला छे तेथी तेओ पूर्व पर-पराना मार्गे गति करीने जैनधर्म प्रवर्तक हता तेमणे जिने-श्वर प्रतिमाने पुष्प चढाववाना पाठोने आगमना आधारे दर्शाव्या छे तेमा खूबी ए छे के तेमणे मगजनी समतोलता खोइ नथी तेमना शब्दोमा मधुरता, स्नेहता अने आकर्षता छे तेमणे पोताना ग्रन्थोमा असभ्य शब्दो वगेरेथी कठोरता आववा दीधी नथी तेमना हृदयमा शु चारित्र हतु ते तेमना ग्रन्थो बतावी आपे छे तेमणे ग्रन्थो रचवामा पाडित्यनु अभिमान देखाय एवो एके शब्द वापर्यो नथी - लोकोने जैन-धर्मना तत्त्वोने केम सरल रीते बोध थाय एज दृष्टि, ध्यानमा

राखीने ग्रन्थो लख्या छे तेथी तेमा तेमणे शब्दलालित्य पाण्डित्य के प्रौढता तरफ लक्ष्य ज दीधु नथी जैनधर्मनु तत्त्वज्ञान शु छे तेनी दिशा देखवी होय वा तेनी झाखी करवी होय तो तेमना ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवानी जरूर छे तेमना बनावेला विचारसार ग्रन्थमा आगमोमा आवेली सर्व बाबतोने अनुक्रमे गोठवी वर्णवी छे तेथी ते कर्मग्रन्थ वगेरेमा आवेला विषयो उपरात घणा विषयोथी भरपूर छे पाकेली केरीनो कोई रस काढी ले तेवी रीते तेमणे जैन-शास्त्रोमाथी रस काढीने आगमसार, नयचक्र, विचारसार वगेरे ग्रन्थो रच्या छे पहेला भागमा अने द्वितीय भागमा आवेला ग्रन्थोने वाचको जो साद्यत वाची जशे तो पछी अमारु लखवु ध्याजबी छे एम गुणानुरागी सज्जनोने बराबर समजाशे जैनधर्म तत्त्वज्ञानथी भरेला तेमना ग्रन्थोनी जेटली प्रशंसा करीए तेटली न्यून छे तेमा एकदर रीते जैनशास्त्रोनो प्राय घणो सार आवी गयो छे

श्रीमद् देवचन्द्रजीनी संस्कृत भाषा तथा गुर्जर भाषानी विद्वत्ता

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजे संस्कृत भाषामा अने गुर्जर भाषामा जे जे ग्रन्थो लख्या छे तेथी तेमनी भाषा विद्वत्ता केवा प्रकारनी हती तेनो वाचकोने-विद्वानोने सहेजे ख्याल आवी शके तेम छे बाळ जीवोने समजाववा माटे तेमणे संस्कृत भाषामा बहु सरलताए लखाण कर्युं छे जेम बने तेम भाषानी क्लिष्टता, प्रौढता दुरवगाहता थवा दीधी नथी द्रव्यानुयोगना विषयमा सामान्य संस्कृत भाषा जाणनाराओ

पण रस लेइ शके तेवो प्रयत्न करेलो देखाय छे द्रव्यानु योगना ग्रन्थो रचवामा पूर्वाचार्योए पण क्लिष्टता वापरी नथी तेथी तेओना ग्रन्थोमा बाळ जीवोने पण सहेजे प्रवेश थइ शके छे तेथी तेमणे द्रव्यानुयोगना ग्रन्थोमा तेओनी शैलीन अनुकरण कर्यु छे ज्ञानमंजरी टीका विचारसार टीकादिथी तेमणे संस्कृत भाषामा ग्रन्थो रचवा माटे शुभे यथा शक्ति यतनीयनी प्रवृत्ति करी जैनकोमनी भारे सेवा उठावी छे, अने संस्कृत साहित्यनी वृद्धि करी छे अठारमा सैकामा थएल वाचक शिरोमणि गीतार्थ यशोविजयजी उपाध्याय तथा श्रीमान् विनय विजयजी उपाध्याय, श्रीमान् मानविजयजी उपाध्याय, वगेरे संस्कृत भाषाना महान् पंडितोनु अनुकरण करीने तेमणे यथाशक्ति प्रवृत्ति करी छे केटलाक आधुनिक संस्कृत भाषाज्ञमुनिवरोनो एवो मत छे के श्रीमद् देवचन्द्रजी संस्कृत भाषाना प्रौढ विद्वान नहोता जमो तेमना विचारोमा सुधारो एटलो मूकीए छीए के–श्रीमदे द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने सादी संस्कृत भाषामा बालजीवोने समजाववा पर खास लक्ष्य दीधु छे तेथी तेओए प्रौढ संस्कृत भाषा वापरी नथी, तेमज भाषाद्वारा विद्वत्ता देखाडवा तरफ तेमनु बिल्कुल लक्ष्य नहोतु आत्मज्ञानिमहात्माओ भाषाने शणगार सजाववा तरफ लक्ष्य देता नथी, तेओ तो भाषा द्वारा हृदयनो आत्मिक भाव जणावे छे कविमा अने ज्ञानीभक्तमा भाषाना शणगार परत्वे तफावत रह्या करे छे कवि भाषाने शणगार सजाववानी उपासना करे छे अने ज्ञानी भावरसनो भोगी होवाथी ते पोतानु वक्तव्य सादी भाषामा जणावी शके छे पोताना विचारोने बाळको पण समजे

एवी सादी भाषामा अवतारवा तरफ भक्तोनु स्वाभाविक लक्ष्य रहे छे श्रीमद् देवचद्र महाराज ज्ञानी भक्त हता, तेथी तेमनी पासेथी सस्कृत प्रौढ भाषामा केटलाक आधुनिक विद्वानोनी दृष्टि प्रमाणे बनेला ग्रन्थोनी आशा राखी शकाय नहीं ते बनवा योग्य छे तेमना ग्रन्थोने पाछळथी शोधवामा नहीं आवेला होवाथी तथा अशुद्धिमा वृद्धि करनार लहियाओ पासे लखावेला होवाथी तेनी शुद्धि करवामा प्रयास पडे ते स्वाभाविक छे अने तेवो प्रयास थता पण जे जे अशुद्धिओ रही होय ते बीजी वखते सुधारीने उपाववानी जरुर छे सस्कृत भाषाना ग्रन्थोनी पेठे तेमणे प्राकृत भाषामा पण विचारसारादि ग्रन्थो रच्या छे तेमनी प्राकृत भाषा पण सरल अने सुगम अवबोधाया पछी वाचको अनुभव करता सहेजे समजी शकशे सस्कृत अने प्राकृतनी पेठे गुर्जर भाषामा तेमणे ग्रन्थो रच्या छे गुर्जर भाषापर तेमनो सारो काबु हतो द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने तेमणे चोवीशी, बीशी वगेरे पद्य ग्रन्थोमा सारी रीते गुथ्या छे के जे विषयो पहेला गुर्जर भाषामा कोइए गुथ्या नहोता श्रीमदे चोवीशीपर जाते टबो भर्यो छे अने तेथी तेमणे जैनकोम पर द्रव्यानुयोगना ज्ञाननो सरलतायी लाभ आपवा माटे घणो उपकार कर्यो छे गति करता स्खलन थाय ए स्वाभाविक नियम छे ते न्याये श्रीमद्ना सस्कृत ग्रन्थोमा भाषा दोष रही गयो होय तो तेमना आशयो अने उपकारोने ध्यानमा लेइ विद्वानो क्षतव्य गणे एमा कइ आश्चर्य नथी दोष दृष्टिथी जोता ज्या त्या दोषो देखाय छे अने गुणदृष्टिथी देखता ज्या त्या गुणो नजरे आवे छे सज्जनो गुणोने देखे

छे ज्ञानियोनी प्रवृत्ति खरेखर सज्जनोना लाभार्थे होय छे ते प्रमाणे श्रीमद्नी ग्रन्थ रचनानी प्रवृत्तिपर लक्ष्य राखीने तेमनी भाषा विद्वत्ता सबधी लक्ष्य धारवु जोइए आत्मार्थीओ स्वाभाविक धर्म पर लक्ष्य राखे छे श्रीमदे गुर्जर भाषामा गद्यपद्य ग्रन्थो रचीने भाषा ज्ञाननी विद्वत्तानी पण महत्ता खरेखर जनसमाज आगळ धरावी आपी छे वाचको भाषानी दृष्टिए पण तेओना ग्रन्थोमाथी घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत, प्राकृत अने गुर्जरभाषामा रचायला तेओना ग्रन्थोमाथी सज्जनो घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत प्राकृत अने गुर्जरभाषामा ग्रन्थो रचीने विश्वनी भाषा साहित्यनी वृद्धि करवामा पोतानी तरफथी तेमणे सारो फाळो आप्यो छे, तेथी तेमनी सेवा प्रवृत्ति तरफ माननी लागणीथी जैनेतर कोम पण देखे एमा कइ आश्चर्य नथी अने जेनो तेमने पूज्य उपकार दृष्टिथी देखे अने मध्यस्थ मनुष्यो तथा जिज्ञासुओ तेमना ग्रन्थोमाथी घणो सार खेंची शके ए जनवा योग्य छे

श्रीमद् देवचन्द्रजीनी कवित्वशक्ति

श्रीमदे कवित्वशक्तिनो भक्तिमा व्यय कर्यो छे भक्त लोको कवित्वशक्तिने भक्तिना रूपमा परिणमावे छे तेओ अनेक रुपकोथी प्रभुनु वर्णन करे छे श्रीमदे उपमालकारोने प्रभुभक्तिना रुपकोमा परिणमाव्या छे तेमणे आध्यात्मिक दृष्टिए मेवने प्रभुनी रुपकभक्तिमा परिणमाव्यो छे ते नीचे मुजब—

श्रीनमिजिनवर सेव, घनावन उनम्यो रे ॥ घ० ॥
दीठा सिद्धा रोख, भविक चित्तथी गम्यो रे ॥ भ० ॥

शुचि आचरणा रीति ते, अग्र वधे वडा रे ॥ अ० ॥
आतम परिणति शुद्ध, ते बीज झबूकडा रे ॥ बी० ॥१॥
वाजे वायु, सुवायु, ते पावन भावना रे ॥ पा० ॥
इन्द्र धनुष्य त्रिकयोग, ते भक्ति एकमना रे ॥ भ० ॥
निमल प्रभुस्तव घोष, ज्यु ध्वनि घन गर्जना रे ॥ ध्व० ॥
तृष्णा ग्रीष्मकाल, ते तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥२॥
शुभ लेश्यानी आलि, ते बग पंक्ति बनी रे ॥ ब० ॥
श्रेणि सरोवर हंस, वसे शुचि गुणमुनि रे ॥ व० ॥
चउगति मारग बन्ध, भविक निजघर रह्या रे ॥ भ० ॥
चेतन समता संग, रंगमें उमट्या रे ॥ र० ॥३॥
सम्यग्दृष्टि मोर, तिहां हरखे घणु रे ॥ ति० ॥
देखी अद्भुत रूप, परम जिनवरतणु रे ॥ प० ॥
प्रभु गुणनो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ज० ॥
प्रमरुचि चित्त भूमि, माहे निश्चल रही रे ॥ मा० ॥४॥
चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥
अनुभव रस आस्वाद, सकल दु ख वारणो रे ॥ स० ॥
अशुभाचार निवारण, तृण अंकूरता रे ॥ तृण० ॥
विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ बी० ॥५॥
पंच महाव्रत धान्य-तणा कर्षण वव्या रे ॥ त० ॥
साध्यभाव निज थापी, साधनताए सव्या रे ॥ सा० ॥
क्षायिक दर्शन ज्ञान, चरण गुण उपन्या रे ॥ च० ॥
आदिक बहुगुण शस्य, आतम घर नीपन्या रे ॥ आ० ॥६॥
प्रभु दर्शन महामेह-तणे प्रवेशमें रे ॥ ता० ॥
परमानन्द सुभक्ष, थयो भुज देशमें रे ॥ थ० ॥

देवचन्द्र जिनचन्द्र-तणो अनुभव कगे रे ॥ त० ॥
सादि अनन्तोकाल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आ० ॥७॥

श्रीमद्नी उपमा आपवानी आध्यात्मिक काव्यशक्ति बहु सरस छे बाह्य भावोने आध्यात्मिक रूपमा गोठवीने जन समाजने ते तरफ वाळवा तेमणे काव्यशक्तिनो धर्ममार्गमा सदुपयोग कर्यो छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय वगेरेनी काव्यशक्ति अत्यन्त प्रशस्य छे श्रीमदे पण आलंकारिक काव्यशक्तिनो आध्यात्मिक भाव प्रगट करी दर्शाव्यो छे तेमनो द्रव्यानुयोगनो विषय होवाथी आलंकारिक काव्यशक्तिनो घणो उपयोग थएलो जणातो नथी, तोपण जैन समाज आगळ भक्ति स्तवनरूपे जेटली प्रसादी मळी छे तेथी पूर्ण संतोष मळी शके तेम छे तेमणे आ स्तवनमा हार्दिक विषयने सारी रीते घटावीने अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश कर्यो छे माटे तेमनी जेटली स्तवना करीए तेटली न्यून छे श्रीमद् देवचन्द्रजीना आत्मामा गुणोनो सुमिश्र-काळ थयो हतो ते तेमणे सहजोद्गारथी आ स्तवनमा जणावी दीधु छे श्रीमद् द्रव्यानयोगना सर्व विषयोमा कुशळ हता आत्मा अने परमात्माना गुणोमा आध्यात्मिक रूपकोथी अन्तरमा परिणाम पामता हता अने तेथी आन्तर शुद्धजीवन अप्रमत्त दशारूप हतु ते तेमना आध्यात्मिक भावथी स्पष्ट जणाय छे

ते समयनी अने हालना समयनी परिस्थितिनो विवेक

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना समयमा जैनतत्त्वज्ञान प्रचा-रनी न्यूनता हती यतियोमा वैराग्य त्यागमा शैथिल्य प्रचार

पामतु हतु सवेगी साधुओ पण श्रीपूज्य आचार्योनी आज्ञा प्रमाणे चोमासु करवु वगेरे प्रवृत्ति करीने तेमनी आज्ञामा रहेता हता ते समयमा ज्ञान मार्ग करता क्रिया मार्गमा गाडरीया प्रवाहनु ज्या त्या जैनोमा प्राधान्य प्रवर्तनु हतु अध्यात्मज्ञान, तत्त्वज्ञान जेवा विषयोमा साधुओ पण विशेष ज्ञानी नहोता तथा बहु जन सम्मत केटलाक आचार्यो वगेरने जैनो जेटला प्रमाणमा मानता हता तेटला प्रमाणमा श्रीमद् देवचद्रजीने ओळखवा माटे जैनो लायक नहोता खरतर गच्छना आचार्यो, यतियो वगेरेनी साथे श्रीमद् देवचद्रजीनी विचार मान्यता मळती आवती होय तेम सर्वांशे जणातु नथी, छता तेओ उदार विचाराचारथी स्वपरगच्छीय साधुओनी साथे वर्तता हता तेओ श्वेत वस्त्रधारी हता ते जमानाना ते सुधारक सवेगी पक्षी साधुओने उत्तेजन आपनारा हता सर्व जैनोमा ऐक्यनु वातावरण फेलावना तेमणे यथाशक्ति प्रयत्न कर्यो हतो परस्पर गच्छोनी क्रियामत भेदोथी उत्पन्न थती क्लेशनी उदीरणाने शमावनार हता जैनोमा अनेक मतभेदथी थता क्लेशोथी जेनोनी पडती थाय छे, एवी दीर्घ दृष्टिथी तेमणे पोताना उद्गारो प्रगट कर्या छे श्रीमद् देवचद्र महाराजना समय करता हालना समय कइ विशेष सारो नथी ते वखतना तेमणे काढेला उद्गारो हालनी सदीने पण लागु पडे छे, छता हाल आजुबाजुना शुभ प्रगतिप्रद सयोगो घणा अनुकुल छे, फक्त ते प्रमाणे वर्तवनारा मुनियो विशेष प्रमाणमा प्रगटवानी जरुर छे श्रीमद् देवचद्र महाराजे पोताना ग्रन्थोमा अमुक खरतर गच्छना आचार्यना साम्राज्यमा ग्रन्थो लख्या एवु लखु नथी तेथी

तेओ ते वखतना खरतर गच्छीय पट्टधर आचार्य साथे पूर्ण सबधी हता के नहीं ते विचारवा योग्य छे तेमणे आत्मानो शात रस अनुभव्यो हतो, धर्मप्रवृत्ति वाळा अने ससारप्रवृत्तियी विरुद्ध होवाथी तेओ निवृत्ति मार्गना योगी हता तेमना पण विरोधीओ हता छता पण तेमना उत्तम विचारो जैनसमाजमा जल्दी प्रसर्या हता

श्रीमान् देवचद्रजी महाराजना ग्रन्थो परथी अने तेमना जीवनपरथी ग्रहवा योग्य शिक्षण

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना ग्रन्थो अने तेमना चरित्र परथी प्रत्येक मनुष्ये शिक्षण ग्रहण करवु जोइए, एज आ लेखनो मूळ उद्देश छे तेमना ग्रन्थो अने चरित्र परथी आध्यात्मिक शक्तियो खीलववानी जरुर छे समानभाव अने तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति करवा माटे तेमनु जीवन घणु उपयोगी छे जैन कोमे आत्मज्ञान तरफ वळवु जोइए अने व्यक्ति स्वातन्त्र्य तथा सवस्वातन्त्र्य प्रगट करवु जोइए अध्यात्म ज्ञाननी प्राप्ति विना विशाल विचारो अने मतसहिष्णुता प्रगटवानी नथी तेमनी पेठे व्यवहारनयनु अवलम्बन ग्रही प्रवृत्तिधर्म याने सेवाधर्म स्वीकारी कर्मयोगी बनवु जोइए श्राविकाओनी प्रगति करनार धार्मिक केळवणीनो प्रचार करवो जोइए जड क्रियावादी अने शुष्कज्ञानी न बनवु जोइए तेमनी पेठे पूर्व पुरुषोना विचाराचारोने मान आपी वर्तवु जोइए अने जे असत्य लागे तेनो त्याग करवो जोइए पण कदाग्रही न बनवु जोइए कर्मयोग अने ज्ञानयोग ए बनेने स्वीकारी स्याद्वादी बनवु जोइए साधुओए अने साध्वीओए वीशमी

सदीमा तेमनी पेठे प्रगति करवी जोइए गच्छना नामे नकामा क्लेशनी उदीरणा करनारा विवादो अने झघडाओ करीने जैन कोमनी शक्तियोनो नाश न करवो जोइए तेमनी पेठे उग्रविहारी बनवु जोइए अन्य गच्छीयोनी साथे मैत्री, प्रमोद, माध्यस्थ वगेरे भावनाओने आचारमा मूकी वर्तवु जोइए ज्ञानरुचि धारण करीने गाडरिया प्रवाहमा तणाता नव थवु जोइए भिन्न भिन्न गच्छीय साधुओमा परस्पर गच्छक्रियादि मतभेद छता जैन कोमना सार्वजनिक प्रगतिकर कार्योमा एक्य धारण करवु जोइए समदृष्टिनी साथे परस्पर समवर्ती बनवु जोइए गमे ते गच्छना साधु पासेथी ज्ञान ग्रहण करवु अने सत्य ते ते मारु एवो निश्चय करी प्रवर्तवु जोइए सर्व गच्छना साधुओनो सघ एक स्थाने भेगो करीने जैन कोमनी अस्तिता रहे एवा उपायो हस्तमा धरवा जोइए आतरजीवन विकसाववामा आत्मभोग आपवानु शिक्षण ग्रहवु जोइए तेमनी पेठे वक्ता, लेखक अने ज्ञानी बनवु जोइए जैन कोमना कोइ पण फिरकानी निन्दा न करवी जोइए अने सर्व फिरकाओनी साथे मैत्रीभाव धारण करी मळती बाबतोमा ऐक्य धारी कर्तव्य कार्यो करवा जोइए हवे तो गृहस्थ जैनोए दृष्टिरागनो त्याग करीने जैनोनी सख्या वधे अने जैन धर्मनो फेलावो थाय तेवा उपायोमा भोग आपवो जोइए जैन तत्त्वज्ञाननो फेलावो थाय एवा उपायो लेवानो समय जो चकवामा आवशे तो जैन कोमनी अस्तितामा हरकत आववानो सभव छे माटे सकल सघे समयनी किंमत आकी सयोगोने अनुकूल करी लेवा जोइए

उपसहार

प्रमाणे श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्यायना ग्रन्थो अने
रेत सबधी यत्किंचित् प्रस्तावना यथाशक्ति जैन
गळ रजु करीने जैन सघनी सेवा करता छद्मस्थ
कइ दोष वगेरे थया होय तेनी जैन सघ आगळ
छु मिथ्या दुष्कृत दउ छु जैन सघनी सेवा
कइ स्खलन थाय ते जैन सघे क्षमवु जोइए
गच्छीय होवा छता आत्मभावे—जैनधर्म समान
द् देवचन्द्रजीना ग्रन्थोनी प्रस्तावना लखी छे गमे
मनुष्य पोते जैन होवाथी जैनधर्मनी समान
ना करीने मुक्तिपद पामे छे डाळा, पाखडा,
गवाना जुदा जुदा मतभेदोमा मध्यस्थ बनी दृष्टमा
वहता सद्भावनरस भणी लक्ष्य आपवानी जरुर छे सर्व जैनोना
हृदयमा जैनदेव एक छे तो पछी भेदभावथी क्लेश करवानी
कइ जरुर नथी लेखकने (म्हने बुद्धिसागरने) व्यवहारथी
तपागच्छीयमान्यतानी श्रद्धा छे अने तपागच्छनी समाचारी
मान्य छे परतु तेथी अन्य गच्छोनी समाचारी पर द्वेष नथी
हु मारी तपागच्छनी साधु क्रियादिनी समाचारीमा व्यवहारे वर्ती
अने निश्चयनयथी समभावे शुद्धात्ममा रमी एकाग्रतायी लीनता
पामी मोक्ष पामु तेम अन्य गच्छीय जैनो पण तेमना गच्छनी
समाचारीने मननी एकाग्रता, लीनता करवा साथे निश्चयनयथी
समगावे रमे तो मोक्ष पामे एवी मारी सापेक्षनययुक्त मान्यता
छे जैनागमो, प्रकरणो, पूर्वाचार्योना ग्रन्थो, परपरा अने
समाचारी वगेरेमा सापेक्षपणे म्हने पूर्ण श्रद्धा छे अस-

रयपयोगो खरखर मुक्ति पामवाने माटे हेतुओ छे सापेक्षपणे गमे ते योगनी आराधना करता मुक्ति छे एवी मारी श्रद्धा छे अने ए प्रमाणे उपदेश छे, लेखकने सम्यग्दृष्टिथी जैनागमो अने मिथ्याशास्त्रो, सम्यक्त्वरूपे परिणमे छे एवी नन्दिसूत्रनी मान्यता प्रमाणे विचारप्रवृत्ति छे जैनागमोनु ज्ञान प्राप्त करीने व्यवहारनयथी वतवामा आवे अने निश्चयने हृदयमा धारवामा आवे तोज मुक्तिनी प्राप्ति थाय छे एवो उपदेश सत्य छे व्यवहारनयनो उच्छेद करता जैन सत्र अने धर्मनो उच्छेद थशे माटे कोइए धर्म व्यवहारनी उत्थापना न करवी जोइए साध्यबिंदु लक्ष्यमा राखीने सापेक्षपणे साधनोवडे धर्मनी आराधना करवी जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो सुधारता घणी शुद्ध प्रतियो मळी नथी विचारसार माटे तो बीजी प्रतियो मळी नथी, तेथी हजी तेमा घणी अशुद्धिओ रही गइ छे ते साधन सामग्री मळतां बीजी आवृत्तिमा सुधारो करी शकाशे, यथा शक्ति भलेने सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे, छता जे कइ स्खलना रही गइ होय तेने अन्य पंडितो प्रसंगोपात्त सुधारशे एवी प्रार्थना छे जैन ग्रन्थो खरेखर जैन संघनी मीलकत छे तेमा सुधारवा यथाशक्ति मे भाग लीधो छे अने अन्य सज्जनो पण सुधारवा भाग लेशे एवी प्रार्थना छे श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको छपाववामा पादरावासी सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचंदे तनमनधनथी प्रयत्न कर्यो छे, तेमणे सर्व ग्रन्थो भेगा करवामा अनेक पत्रो लख्या, तथा अनेक स्थळे गमन करी अनेक महाशयो पासेथी ग्रन्थो मेळव्या, भंडारोना मालीको पासे जाते जइ ग्रन्थो मेळव्या, अनेक मुनियो अने श्रावको साथे पत्र व्यवहार कर्यो, श्रीमद्नु

जीवनचरित शोधवा तेमणे साधुओ साध्वीओ पर अनेक पत्रो लख्या श्रीमद्‌ना ग्रन्थो छपाववामा छ सात वर्ष सुधी अखंड अथाग प्रयत्न सेव्यो तेथी तेमने धर्मलाभपूर्वक अनेकश धन्यवाद आपवामा आवे छे श्रीमद्‌ना बे भागो उपाडीने तेमणे जैनशासननी अने जैनोनी सारी सेवा बजावी छे श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना बे भागो छपाववामा मुख्यपणे तेमनो भाग छे एम जैन कोमने जणाववा माटे बे शब्दो अत्र लखवामा आव्या छे डहेलाना उपाश्रयमायी श्रीमद् देवचन्द्र-जीना पुस्तकोने काढी आपनार झवेरी भोगीलाल ताराचंदने धन्यवाद घटे छे बालुचर (मुर्शिदाबाद निवासी) झवेरी अमरचन्द्रजी बोथरा श्रीमद्‌ना पुस्तकोनी यादी आपवामा तथा अन्य पुस्तको मोकली आपवामा घणी साहाय्य करी छे पादरा निवासी सुश्रावक माणेकलाल, तथा प्रेमचंदभाइ तथा मगलभाइ लक्ष्मीचंद वगेरेए पुस्तको छपाववामा साहाय्य करी छे माटे तेओने धन्यवाद घटे छे प्रवर्तक कान्तिविजयजी प लाभविजयजी प दानविजयजी वगेरेने पुस्तको आपवा माटे धन्यवाद घटे छे श्रीमद्‌ना ग्रन्थो जैन सघना कल्याण माटे थाओ, एम इच्छी प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे अर्हं ॐ शान्ति मु पादरा-नवपरी जैन उपाश्रय ज्ञानमंदिर सवत १९७५ आश्विन शुक्ल द्वितीया

तपागच्छीय सागरशाखीय जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरिणा
प्रस्तावना लिखिता

जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि ग्रन्थमाळामा प्रकट थयेला ग्रन्थो तथा तेमना अन्यत्र प्रकट थयेला ग्रन्थानी यादी.

		पृष्ठ संख्या	किंमत
१	भजन संग्रह भाग १ लो	२००	०– ८
१	क अध्यात्म व्याख्यानमाला	२०६	०– ४
२	भजन संग्रह भाग २ जो	३३६	०– ८
३	भजन संग्रह भाग ३ जो	२१९	०– ८
४	समाधिशतक (अमदावादवाळा शेठ जगाभाई दलपतभाई)	३४०	०– ८
५	अनुभव पच्चिशी	२४८	०– ८
६	आत्मप्रदीप	३१५	०– ८
७	भजन संग्रह भाग ४ थो	३०४	०– ८
८	परमात्म दर्शन	४३२	०–१२
९	परमात्म ज्योति	५००	०–१२
१०	तत्त्वबिन्दु	२३०	०– ४
११	गुणानुरागकुलक विवेचन (आ २)	२४	०– १
१२	भजन संग्रह भाग ५ मो	१९०	०– ६
१३	तीर्थयात्रानु विमान (आ २)	६४	०– १
१४	अध्यात्म भजन संग्रह	१९०	०– ६
१५	गुरु बोध	१७२	०– ४
१६	तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०– ६
१७	गहुलीसंग्रह	११२	०– ३
१८	श्रावक धर्मस्वरूप भाग १ लो (आ ३)	४०	०– १
१९	श्रावक धर्मस्वरूप भाग २ जो (आ ३)	४०	०– १
२०	भजनपदसंग्रह भाग ६ ठो	२०८	०–१२

२१	वचनामृत (लघु) वकील मोहनलाल हिमचद तरफथी भेट		
२२	वचनामृत (मोटु)	३०८	०–१४
२३	योगदीपक	२६८	०–१४
२४	जैन ऐतिहासिक रासमाळा	४०८	१–०
२५	आनन्दघनपद भावार्थसग्रह	८०८	२–०
२६	अध्यात्मशान्ति (आ २)	१३२	०– ३
२७	भजनपद काव्यसग्रह भाग ७ मो	१५६	०– ८
२८	जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति	९६	०– २
२९	कुमारपाल चरित (हिन्दी)	२८७	०– ६
३०–३४	सुखसागर गुरु गीता श्री मयासागरजी चरित श्री नेमिसागरजी चरित रवि-सागरजी च० सुखसागरजी च०	३००	०– ४
३५	षड्द्रव्यविचार (द्वितीयावृत्ति) [वकील मो हि पादरा]	२४०	०– ४
३६	विजापुर वृत्तात	९०	०– ४
३७	साबरमती काव्य (गुजराती)	१९६	०– ६
३८	प्रतिज्ञापालन	११०	०– ५
३९–४०–४१	जैनगच्छमतप्रबन्ध सघप्रगति जैनगीता	६१५	१– ०
४२	जैन धातुप्रतिमा लेखसग्रह	३२४	१– ०
४३	मित्रमैत्री	१६४	०– ८
४४	शिष्योपनिषद्	५७	०– २
४५	जैनोपनिषद्	४८	०– ८
४६–४७	धार्मिक गद्यसग्रह तथा पत्रसदुपदेश भाग १ लो	९७६	३–०
४८	भजन सग्रह भाग ८ मो पद्यसग्रह	९०४	३–०

४९	देवचन्द्र प्रथम भाग	१०२८	२–०
५०	कर्मयोग	१०१२	३–०
५१	आत्मतत्त्वदर्शन	११२	०– ८
५२	भारतसहकारशिक्षण	१६८	०–१०
५३	श्रीमद् देवचन्द्र भाग बीजो	१२००	३– ८
५४	कर्मप्रकृति (भाषांतर छपाय छे)		
५५	एकदर		

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिकृत अन्यत्र छपायला पुस्तको

१ श्री रविसागरजी चरित्र अने शोकविनाशक ग्रन्थ (वडोदरा केशवलाल लालचंद, मामानीपोळ)
२ आत्मशक्तिप्रकाश (गुजराती) समाधिशतकना भेगो बनायो छे
३ आत्मदर्शन गीता (संस्कृत मूळ श्लोक १८२) आत्मप्रदीप भेगो छपायो छे
४ ज्ञानदीपिका (गुजराती) भजनसंग्रह पांचमा भाग भेगो बनायो छे–छपायो छे
५ पूजासंग्रह (अष्टप्रकारी अने वास्तुक पूजा) साणंद–बुद्धिसागर समाज ०–२–०
६ श्री यशोविजय निबंध (साहित्य परिषत्–वडोदरा) ०–४–०
७ ध्यानविचार (भावनगर–आत्मानन्द सभा)
८ जैन धर्म अने ख्रीस्ति धर्मनो मुकाबलो (धी जैन फ्रेंडली सोसाइटी मुंबाइ)
९ चिंतामणि (साणंद)
१० कन्याविक्रय निषेध (साणंद)
११ तत्त्वविचार } ज्ञानप्रसारक मंडळ मुंबाई–झवेरी बजार
१२ सत्यस्वरूप }
१३ आत्मप्रकाश (माणसावाळा शेठ वीरचंदभाइ कृष्णाजी) भेट मळे छे
१४ चेतनशक्ति (भजन भाग त्रीजामां छपायो छे)

१५ वर्तमानकाल सुधारो (भजन भाग त्रीजामा छपायो छे)
१६ परमब्रह्म निराकरण (भजनसंग्रह भाग ४ मा)
१७ बुद्धिप्रकाश गायनसंग्रह भाग १ लो (मणिलाल वाडीलाल साणद)
१८ बुद्धिप्रकाश गायन संग्रह भाग २ जो (अमदावाद सभव जिन मडळ)
१९ श्रीमन्त सरकार सयाजीराव गायकवाडनी आगळ आपेलु भाषण
२० आनन्दमौक्तिक प्रस्तावना (शत्रुजय रासनी प्रस्तावना) [सु दे ला फ पु उ]
२१ षोडशक प्रकरणनी प्रस्तावना (देवचद ला पुस्तोद्धार फड)
२२ गुरुगीता (सस्कृत) [छपाइ गइ छे]
२३ श्रीमद् देवचन्द्र प्रस्तावना (श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागमा)
२४ चोवीशी (साणद बुद्धिसागर समाज)
२५ अध्यात्मगीता
२६ आत्मस्वरुप (विजापुर भ)
२७ तत्त्वपरीक्षा विचार
२८ गुरु माहात्म्य (अमदावाद आबलीपोळ ज्ञानभडारमा)
} नहीं छपायला

उपरना ग्रन्थो मळवाना ठेकाणा :—

पादरा—वकील मोहनलाल हिमचदभाइ
मुबाइ—अध्यात्मज्ञानप्रसारक मडळ चपागली हा शेठ लल्लुभाई करमचद दलाल
„ मेघजी हीरजी बुकसेलर—पायधुनी
पुना—शेठ वीरचदभाइ कृष्णाजी
विजापुर (गुजरात)—जैन मित्रमडळ हा शा मोहनभाइ जेशींगभाइ
साणद (गुजरात)—शा आत्माराम खेमचद

श्रीदेवचन्द्रकृत विचारसारग्रन्थस्य ॥

। टीका स्तवकश्च ।

नमियजिण गुणठाणे, मूलुत्तरबंधुदयदीरणया।
सता जियगुणजोगो-, वओगलेसादुविहहेउ ॥१॥

टीका—श्रीनाभेयजिन नत्वा, शुद्धसिद्धाद्रिमंडनम् ।
कल्याणमंगलानाच, मूल सद्भावदेशकम् ॥ १ ॥
वर्धमान जिनाधीश, शुद्धस्याद्वादवादकम् ।
निर्विकल्पमहानंद-रसानुभवभूधरम् ॥ २ ॥
वाचस्वशसमुद्भव, मुक्ताफलसन्निभान् ।
गुरून् स्मृत्वा गुणस्थानशतकाख्यस्य, वृत्तिरेषा विनन्यते ३॥

अथ शिष्टाचारपरिपालनाय प्रथममंगलाभिधेयप्रतिपादनरूपा ॥गाथामाह॥ नमिअजिणइति, नत्वायोगोपयोगबहुमानपरिणत्या जिनवीतराग गुणस्थाने द्वारशतक वक्ष्ये, गुणा चेतनक्षयोपशमादिरूपास्तेषा स्थानानि गुणस्थानानि। तेषु एकवचन प्रत्येकत्वख्यापनार्थं मिथ्यात्वस्य दोषरूपत्वेपिगुणस्थानत्वतुविपर्यस्तचेतनागुणाशस्यसर्वजघन्याशत प्रारम्य ज्ञेय गुणस्थानकाभिधायिका गाथामाह ॥ १ मिच्छे, २ सासण, ३ मीसे, ४ अविरय, ५ देसे, ६ पमत्त, ७ अपमत्ते, ८ नियट्टि, ९ अनियट्टि, १० सुहुम, ११ वसम, १२ खीण, १३ सजोगि, १४ अजोगि, १६

गुणा । १ । गुणस्थानानि तत्र सूचनात्सूत्रमिति न्यायात्पदैकदेशे-पदसमुदायोपचाराद्वा इहैव गुणस्थानकनिर्देशोद्रष्टव्य १ तत्राद्यमि-थ्यादृष्टिगुणस्थान, २ सास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ३ सम्यग्-मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ४ अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ५ देश-विरतिगुणस्थान, ६ प्रमत्तसयतगुणस्थान, ७ अप्रमत्तसयतगु-णस्थान, ८ अपूर्वकरणगुणस्थान, ९ अनिवृत्तिबादरसपरायगुण-स्थान, १० सूक्ष्मसपरायगुणस्थान, ११ उपशान्तकषायवीतराग-छद्मस्थगुणस्थान, १२ क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थान, १३ सयोगिकेवलिगुणस्थान १४ अयोगिकेवलिगुणस्थान, तत्रगुणा ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा जीवस्वभावविशेषा स्थानपुनरमतेषाशुद्धशु-द्धिप्रकर्षकृत स्वरूपभेद तिष्ठत्यस्मिन्गुणाइतिकृत्वागुणानास्थान-गुणस्थान, मिथ्या विपर्यस्तादृष्टिरर्हत्प्रणीतजीवाजीवादिवस्तुप्रतिप-त्तिर्यस्य भक्षितहृत्पूरपुरुषस्य सितेपीतप्रतिपत्तिवत्, स मिथ्यादृष्टिस्तस्य गुणस्थान ज्ञानादिगुणानामविशुद्धिप्रकर्षविशुद्धप्रकर्षकृत स्वरूपवि-शेष मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ननुमिथ्यादृष्टिस्तत्कथगुणस्थान तन्नि-गोदावस्थायामपितथाप्रतीत्यक्तरपर्शमात्रप्रतिपत्तिसद्भावात् अन्यथा-जीवत्वप्रसगात्, यदागम सव्वजीवाणपि अण अरकस्साअणतमो-भागो निच्चुग्घाडिओचिट्ठइ जइपुण सेसोवि आवरिज्जा तोणजीवोअ-जीवत्तणपावीज्जत्ति" तथाहि समुत्ताप्रबहुलजीमूतपटलेन दिनकर-जनीकरनिरस्कारेऽपिनैकातेन तत्प्रभानाश सपद्यते, प्राणिप्रसिद्ध-दिनरजनीविभागाभावप्रसगात्, उक्तच सुट्ठविमेहसमुदये होइपहा-चदसूराणमिति एवमिहापिप्रचलमिथ्यात्वोदयेपिकाचिद्विपर्यस्तादृष्टि-र्भवतीतितदपेक्षयामिथ्यादृष्टेरपिगुणस्थानसभव । यद्येवकथमसौमि-थ्यादृष्टिरेवाशरयाविपर्यस्तत्वात्, नैवयतोभगवदर्हत्प्रणीत सकलमपि-द्वादशागार्थमभिरोचयमानो यदि तद्वदितमेकमप्यक्षर न रोचयति तदा-

नीमप्येषमिथ्यादृष्टिरेवोच्यते तस्य भगवति सर्वज्ञमतपरायणनाशात्॥यदुक्तं॥ पयमरकरपिइक्क, जो न रोएइ सुत्तनिद्दिठ, सेसरोयतोविहु, मिच्छ दिट्ठीजमालिव्वेति॥ किंपुनर्भगवदर्हदभिहितसकलजीवाजीवादिवस्तु-तत्त्वविकल्पइति, अयमुपशमसम्यक्त्वलाभलक्षणसादयति अपनय-तीत्यासादन, अननानुबन्धिकषायवेदन, अत्रप्रपोदरादित्वात्रशब्दलोप "कृद्बहुल" मितिकर्तरिल्युट् सतिह्यस्मिन् परमानन्दरूपाननसुखफलदोनि-श्रेयसतरुबीजभूतऔपशमिकसम्यक्त्वलाभो जघन्यत समयमात्रेणो-त्कर्षत षड्भिरावलिकाभिरपगच्छतीतिनन्सहस्वादनेनवर्तनइतिसा-स्वादन सम्यगजीवियस्मादृष्टिर्जिनप्रणीतवस्तुप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग् दृष्टि सासादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चसासादनसम्यग्दृष्टिस्तस्यगुणस्थान सासादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान। तत्रसम्यक्त्वलक्षणरसास्वादनेनवर्तत-इतिसास्वादन यथाहि भुक्तक्षीरान्नविषयवलीकचित्त पुरुषस्तद्व-मनकाले क्षीरान्नरसमास्वादयति तथैषोपिमिथ्यात्वाभिमुखतयासम्य-क्त्वस्योपरिव्यलीकचित्त सम्यक्त्वमुद्वमन् तद्रसमास्वादयति तत स-चासौसम्यग्दृष्टिश्च तस्यगुणस्थानन सास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान। एतच्चयभवति इहगभीरापारससारसमुद्रमध्यासीनोजन्तुर्मिथ्यात्वमस्य-यमनन्तान् पुद्गलपरावर्त्तान् अननद्य खलक्षणाननुभूयकथमपि तथा भव्यत्वपरिपाकवशात् गिरिसरिदुपलघोलनारूपेनानाभोगनिर्वर्त्ति-तयथाप्रवृत्तिकरणेन क्षणपरिणामोऽनेतिवचनाद्ध्यवसायविशेषरूपे-णायुर्वर्जानिज्ञानावरणीयादिकर्माणि सर्वाण्यपिपल्योपमासंख्येयभा-गन्यूनैकसागरकोटिस्थितिकानि करोति अवातरे जीवस्यकर्मजनितो-घनरागद्वेषपरिणाम कर्कशनिबिडचिरप्ररूढगुपिलग्रन्थिवद्दुर्भे-दोऽभिनपूर्वोग्रन्थिर्भवति, तदुक्तं, तीणि थोवमित्तो, खवीथेइत्यतर मिजीवस्स, हवइहुअभिनपुव्वो, गठीएवजिणानिति॥१॥ गठित्तिसुदु-ब्भेओ, कक्खडघणरूढगूढगठिव्व, जीवस्सकम्मजणिओ, घणरागदोस-

थंयावदभ्या अपियथाप्रवृत्तकरणेन क्र-
च्छन्ति, उक्तचावश्यकटीकायां ॥ अभ
करणतोग्रथिमासाद्य अर्हदादिरिमनिदर्श-
र्नमानस्य द्रव्यश्रुतसामायिकलाभोभव-
नरकश्चिदेवमहात्मासत्परमनिवृत्तिसुख
मसरोनिशितकुठारधारयेवपरमविशुद्ध्या
ाय मिथ्यात्वस्थितेरन्तर्मुहूर्तमुदयक्षणा-
त्तिकरणलक्षणविशुद्धिजनितसामर्थ्यात्
देशवेद्यदलिकाभावरूपमतरकरणकरोति ।
ानिवृत्तिकरणानामयक्रम । जागठीताप-
य । अनिपट्टिकरणपुण । सम्मत्तपुरक्कडे-
ोत्ति ॥ ग्रथिंसमतिक्रामतोभिदानस्येति,
ुरस्कृतयेनतस्मिन्नासन्नसम्यक्त्वेजीवेऽनि-
श्चातरकरणेकृतेसति तस्यमिथ्यात्वकर्मण
ादयस्तनीमथमास्थितिरन्तर्मुहूर्तमाणा।
ोशेषाद्वितीयास्थापना । । तत्रप्रथमस्थि-
ोमिथ्यादृष्टिरेव, अन्तर्मुहूर्तेन पुनस्तस्याम-
यएवौपशमिकसम्यक्त्वमाप्नोति । मिथ्या-
ाहि वनदवालन पूर्वदग्धेंधनमूषरवादेश-
मिथ्यात्ववेदनवनदवोप्यन्तरकरणमवाप्य-
त्यौपशमिकसम्यक्त्वलाभ ॥ उक्तच ॥
ताइवणदवोपप्प इयमिछत्तअणुदये, उव-
अत्रसिद्धाताशये अनिवृत्तिकरणातेकृतमि-
मसम्यक्त्वलाभोभवति तथापिप्रायोमहु-
ात् कार्मग्रथिकानाउपशमसम्यक्त्वस्यम-

यमलाभ यारया कर्मग्रयेपि न क्षयोपशमनिपेधइति औपशमिकस्यच अन्तर्मुहूर्त्तस्यामुपशाताद्धायापरमनिधिलाभकल्पाया जघन्यन समय-शेपायामुत्कृष्टत पटावलिकाशेपायासत्याकस्यचि महाविमिपेको-त्थानकल्पोऽनन्तानुबन्ध्युदयोभवति तदुदयेचासौसारवादनसम्यग्दृष्टि-गुणस्थानेवर्तते उपशमश्रेणिप्रतिपनिनोवाकश्चित्सासादनत्व यानि त-दुत्तरकालचावश्यमिथ्यात्वोदयादसौमिथ्यादृष्टिर्भवति तथा सम्यक्त्व-मिथ्यादृष्टिर्यस्यासौसम्यग मिथ्यादृष्टिस्तस्यगुणस्थानसम्यगमिथ्यादृष्टि-गुणस्थान, इहानतराभिहितविधिनालब्धौपशमिकत्वेनमदनकोद्रव-स्थानीयमिथ्यात्वमोहनीयकर्मशोधयित्वानिधाकरोति ॥ तद्यथा ॥ शुद्धमर्धविशुद्धमशुद्धचेतिस्थापना ० ० ० तत्रत्रयाणापुजानामध्येय-दार्धविशुद्ध पुजउदेति तदातदुदयात्यावज्जीवस्यार्द्धविशुद्धजिनप्र-णीततत्त्वश्रद्धान मिश्रत्वेमध्यस्थेनानिर्द्धारस्पभवति तेननदासौसम्य-गमिथ्यादृष्टिगुणस्थानमतर्मुहूर्त्तकाल स्पशति तत्रऊर्द्धअवश्यसम्य-क्त्वमिथ्यात्वभावगच्छति ३ तथा विरतिविरतक्लीवेक्तमत्ययस्तत्पुन सावद्ययोगप्रत्याख्यानतत्रजानातिनाभ्युपगच्छति न तत्पालनाय यतते

इतित्रयाणापदानाअष्टौभगा ऽऽऽ ऽऽ। ऽ। ऽ। ऽ॥ एतेपुचतुर्षुभगेषुमिथ्यादृष्टिर-ज्ञानित्वात्शेषेषु ॥ ऽऽ। सम्यग्दृष्टिज्ञानित्वात्सप्तत्य-सुभगेषु नास्य विरतसमरती- विरताऽप्रादित्यप्रत्यय चर-

भभगेतुविरतिरस्तीतिपद्धाविरमतिस्मसावद्ययोगेभ्योनिवर्त्ततेस्मेतिविर-त कर्त्तरिक्तप्रत्ययेनविरतोऽविरत सचासौसम्यग्दृष्टिश्चअविरतसम्य-ग्दृष्टिरिदमुक्तभवतिय पूर्ववर्णितोपशमिकसम्यग्दृष्टि शुद्धदर्शनमो-हपुजोदयवर्तीक्षयोपशमिकसम्यग्दृष्टिर्वाक्षीणदर्शनसप्तकक्षायिकस-म्यग्दृष्टिर्वापरममुनिप्रणीतासावद्ययोगविरतिसिद्धिसौधाव्यारोहणनि-श्रेणिकल्पाजानप्रत्याख्यानकषायोदयविघ्नतत्त्वान्नाभ्युपगच्छति न-चनत्पालनाययनतइत्यासाविरतिसम्यग्दृष्टिरुच्यते तस्यगुणस्थान

अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान ॥ उक्तच ॥ बधअविरइहेउ, जाणनो-
रागदोसदुरकच विरइसुह इछतो, विरइकाउअ असमत्थो ॥ १ ॥

एसअसजयसम्मो, निंदितोपावकम्मकरणच ॥
अहिगयजीवाजीवो, अचलियदिठीचलियमोहो ॥

तथासर्वसावद्ययोगस्यदेशेएकव्रतविषयेस्थूलसावद्ययोगादौ सर्वविषयानुमतिवर्जसावद्ययोगातेविरतविरतिर्यस्यासौदेशविरत सर्व-सावद्यविरति पुनरस्यनास्ति प्रत्याख्यानावरणकषायोदयात् सर्वविर-तिरूपप्रत्याख्यानआवृण्वतीतिप्रत्याख्यानावरणा ॥ उक्तच ॥

सम्मद्दसणसहिओ, गिण्हतोविरइमप्पसत्तीए ॥
एगवयाइचरमो, अणुवयमित्तत्तिदेसजई ॥ १ ॥

देशविरतस्यगुणस्थान देशविरतगुणस्थान ५ तथासच्छ्रयतिस्म सम्यगुपरमतिस्म सयत 'गत्यर्थात्कर्मेति' क्त प्रमाद्यतिस्म सयमयो-गेषुसीदतिस्म क्तप्रत्ययेप्रमत्त यद्वाप्रमदन–प्रमत्त ॥ प्रमाद सचमदि-राविषयकषायनिद्राविकथानामन्यतम सर्वेषाप्रमत्तमस्यास्तीतिप्रमाद-वान् अग्रादिभ्यइत्यअप्रत्यय प्रमत्तश्चासौसयतश्चप्रमत्तसयतस्तस्यगुण-स्थानप्रमत्तसयतगुणस्थान विशुद्ध्यविशुद्धिप्रकर्षापकर्षकृत स्वरूप-भेद ॥तथाहि॥ देशविरतिगुणापेक्षया एतद्गुणानाविशुद्धिप्रकर्षोऽ-विशुद्धप्रकर्षश्चअप्रमत्तसयतापेक्षयातुविपर्यय एवमन्येष्वपिगुणस्था-नेषुपूर्वोत्तरापेक्षया विशुद्धविशुद्धिप्रकर्षापकर्षयोजना द्रष्टव्या ६ न प्रम-त्तोऽप्रमत्त यद्वानास्तिप्रमत्तमस्यासावप्रमत्त सचासौसयतश्चतस्यगुण-स्थान अप्रमत्तसयतगुणस्थान ७ अपूर्वमभिनवप्रथममित्यर्थ कर-ण, स्थितिघात १ रसघात २ गुणश्रेणि ३ गुणसक्रम ४ स्थि-तिबधानां ५ पचानामर्थानानिवर्त्तनयस्यासौऽपूर्वकरण तथाहि

बृहत्प्रमाणा या ज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिस्तस्याअपवर्त्तनाकरणेन-खण्डनमल्पीकरणं स्थितिघातउच्यते, रसस्यापिप्रचूरीभूतस्यसतोऽपवर्त्त-नाकरणेनखण्डनमल्पीकरणरसघातउच्यते, एतौद्वावपिपूर्वगुणस्थानेषु-विशुद्धेरल्पत्वादल्पावेवकृतवान्, अत्रपुनर्विशुद्धे प्रकृष्टत्वात् बृहत्प्र-माणतया अपूर्वावेवीकरोति, तथाऽपरितनस्थितेर्विशुद्धिवशादपवर्त-नाकरणेनावतारिस्यदलिकस्यातर्मुहूर्तप्रमाणमुदयक्षणादुपरिक्षिप्तस्य क्षपणाय प्रतिक्षणमसंख्येयगुणश्रेण्याविरचनगुणश्रेणि स्थापना एतां च पूर्वगुणस्थानेषु अविशुद्धत्वात्कालतोद्राघीयसीं दलिकरचनामाश्रित्य-द्राघीयसीं च दलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचितवान् ॥ इहतुनाम च विशु-द्धत्वादपूर्वांकालतोह्रस्वतरादलिकस्यविरचनामाश्रित्यपुन पृथुतरांबहु-तरदलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचयतीति तथाबध्यमानशुभप्रकृतिष्वबध्य-मानाशुभप्रकृतिदलिकस्यप्रतिक्षणमसंख्येयगुणश्रेण्याविशुद्धिवशात्पत्न गुणसंक्रमस्तमप्यसावित्रापूर्वकरोति, तथास्थितिकर्मणामशुद्धत्वात्प्रा-गद्राघीयसींकरोति इहतुनामपूर्वाविशुद्धत्वादेवह्रस्वीयसींकरोति, अ यचापूर्वकरणोद्रिक्तो क्षपकस्तूपशमकश्चक्षपणोपशमतार्हत्वाच्चैवमुच्यते-राज्यार्हकुमारराजवत्तपनरसौक्षपयति, उपशमयतिघातस्यगुणस्थान अपूर्वकरणगुणस्थान एतच्चगुणस्थानप्रपन्नानतरवर्तिनोनानाजीवान-पेक्ष्यसामान्यतोऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा यव्यवसायस्थाना-निभवन्ति, कथपुनस्तानिभवन्ति ? इतिविनेयजनानुग्रहार्थंविशेष-तोपिप्ररूप्यते, इहतावदिदंगुणस्थानकमन्तर्मुहूर्तकालप्रमाणभवति तत्रचप्रथमसमयेप्रपन्ना प्रपद्यते, प्रपत्स्यते च तदपेक्षयाजघन्यादी-न्युत्कृष्टान्यसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा यव्यवसायस्थानानिल-भ्यते प्रतिपत्तृणांबहुत्वादध्यवसायानांचविचित्रत्वादितिभावनीय ननुपदिकालत्रयापेक्षाक्रियते तदेवगुणस्थानक प्रतिपन्नानामनंता-ध्यवसायस्थानानिकस्मान्नभवति ? अनन्तजीवैरस्यप्रतिपन्नत्वादन-

तरेवप्रतिपद्यमानत्वादिति, सत्य स्यादेव यदि तत्प्रतिपद्यमानास्तेषां पाप्रथगपृथगभिन्नान्येवाध्यवसायस्थानानिस्युस्तच्चनास्ति, बहूनामेकाध्यवसायस्थानप्रतिपत्तेरपीति ततोद्वितीयसमयेतदन्यान्यधिकतराण्यध्यवसायस्थानानिलभ्यते, तृतीयेसमयेतदन्यान्यधिकतराणि चतुर्थेसमयेतदन्यान्यधिकतराणीत्येव तावन्नेययावच्चरमसमय एतानिएतानिचस्थाप्यमानानिविषमचतुरस्रक्षेत्रमभिव्याप्नुवन्ति तद्यथा . अथप्रथमसमयजघन्यात्तदुत्कृष्टमनन्तगुणविशुद्ध, तस्माच्चतृतीयसमयजघन्यमनन्तगुणविशुद्ध, ततोपितदुत्कृष्टमनन्तगुणविशुद्धमिति एवंसमयगतानिचामूनि अध्यवसायस्थानानियस्परमनन्तभागवृद्धासंख्यातभागवृद्धसंख्यातभागवृद्धसंख्येयगुणवृद्धाऽसंख्येयगुणवृद्ध्यानन्तगुणवृद्धरूपषट्स्थानपतितानियुगपदेतद्गुणस्थानमविष्ठानाच्चपरस्परमध्यवसायस्थानान्यावृत्तिलक्षणानि, वृत्तिरस्यास्तीतिनिवृत्तिगुणस्थानकमप्येतदुच्यते अतएवोक्तसूत्रेनियट्टीमनियट्टीत्यादि८ तथा युगपदेतद्गुणस्थानकप्रतिपन्नाना बहूनामपि जीवानामयोऽन्यमध्यवसायस्थानस्य यावृत्तिर्निवृत्तिवानास्त्यस्येति अनिवृत्ति समकालमेतद्गुणस्थानकमारूढस्यापरस्ययद्यध्यवसायस्थान विवक्षितोऽन्योपिकश्चित्तद्वर्त्येवेत्यर्थ सपरैनिपर्यटतिसमारमनेनेतिसपराय कषायोदय बादर सूक्ष्मकिट्टीकृत सपरायापेक्षयास्थूर सपरायोपरय स बादरसपराय अनिवृत्तिश्चासौबादरसपरायश्चतस्यगुणस्थानमनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थान इदमप्यन्तर्मुहूर्तप्रमाणमेव तत्रयान्तर्मुहूर्त्तेयावत समयास्तत्प्रविष्टानातावत्येवाध्यवसायस्थानानि भवन्त्येकसमयप्रविष्टाना एकरूपैवाध्यवसायस्थानस्यानुवर्त्तनादिति स्थापना प्रथमसमयादारभ्यप्रतिसमयानन्तगुणविशुद्धयथोत्तरमध्यवसावस्थानभवतीतिवेदितव्य, सचानिवृत्तिबादरोद्विधाक्षपकउपशमकश्च ॥९॥ तथा सपराय किट्टीकृतलोभकषायो-

दयरूपो यस्य सोऽयसूक्ष्मसपराय । सोपि द्विधाक्षपकउपशमकश्च क्षपयति उपशमयति वा लोभमेकमपीतिक्रत्वानस्य गुणस्थान सूक्ष्मसपरायगुणस्थान ॥ १० ॥ तथाऽऽद्यतेकेवलज्ञान केवलदर्शनचात्मनोऽनेनेतिऽघ्नज्ञानावरणदर्शनावरणमोहनीयानरायकर्मोदय । सतितस्मिन्केवलस्यानुत्पादात् । तदपगमानतरचोत्पादात् ऽघ्ननितिष्ठतीतिऽघ्नस्य । सचसरागोपिभवतीत्यतस्तद्व्यवच्छेदार्थवीतरागग्रहण वीतो विगतो रागोमायालोभकषायोदयरूपोयस्यसवीतराग सचासाऽघ्नस्थश्चवीतरागऽघ्नस्थ सचक्षीणकषायोपिभवति । तस्यापियथोत्तररागोपरमात्। अतस्तद्व्यवच्छेदार्थंउपशातकषायग्रहण कषशिपेत्यादिदृष्टकषातुर्हिसार्थ । कषति कष्यति च परस्परमस्मिन् प्राणिनइतिकष ससार कषमयतेगन्तव्येभिर्जंतवइतिकषाया क्रोधादय उपशाता उपशमिता विद्यमानाण्वसक्रमणोद्वर्तनादिकरणोदयायोग्यत्वेन व्यवस्थापिता कषाया येन सउपशातकषाय सचासोवीतरागऽघ्नस्थश्चेतिउपशातकषायवीतरागऽघ्नस्थ तस्यगुणस्थानमितिप्राग्वत् । तत्राविरतसम्यग्दृष्टे प्रभृत्यननानुबधिन कषाया उपशाता सभवति उपशमश्रेण्यारमेह्यनतानुबधिकषायानऽविरतोदेशविरत प्रमत्तोऽप्रमत्तोवासन्नुपशमय्य दर्शनमोहत्रितयमुपशमयति । तदुपशमानतरप्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानकपरिऽनिशतानिकृत्वा ततोऽपूर्वकरणगुणस्थानोत्तरकालमनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थाने चारित्रमोहनीयस्य प्रथमनपुसकवेदमुपशमयति तत स्त्रीवेद ततोहास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सारूपयुगपद्षट्क तत पुरुषवेदततोयुगपदप्रत्याख्यानावरणप्रत्याख्यानावरणौक्रोधौतत सज्वलनक्रोध । ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयमानौतत सज्वलनमानततोयुगपद्द्वितीयतृतीयमायेतत [illegible] या ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयौलो-

भातत सूक्ष्मसपरायगुणस्थानेसज्वलनलोभमुपशमयति इत्युपशमश्रेणि ॥ तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानकेषुक्तापिक्रियतामपिकषायाणामुपशातत्वसभवात् उपशातकषाय यपदेश सभवत्यतस्तद्व्यवच्छेदार्थंवीतरागग्रहणवीतरागइत्येतावतापीष्टसिद्धौछद्मस्थग्रहणस्वरूपकथनार्थंव्यवच्छेद्याभावात्नछद्मस्थउपशातकषायवीतराग सभवति यस्यछद्मस्थग्रहणेन यवच्छेद स्यादिति। अस्मिन्गुणस्थानकेअष्टाविंशतिरपिमोहनीयप्रकृतय उपशाता ज्ञातव्या ॥ उपशातकषायश्चजघन्येनैकसमय भवति । उत्कर्षेणतुअतर्मुहूर्त्तकालतन ऊर्ध्वंनियमादसौप्रतिपतति । प्रतिपातश्चद्वेधा भवक्षयेण अद्धाक्षयेणच । तत्रभवक्षयोम्रियमाणस्य अद्धाक्षय उपशाताद्धायासमस्ताया यतीताया अद्धाक्षयेणचप्रतिपतन् यथैवारूढस्तथैवप्रतिपतति। यत्रयत्रचोदयोदीरणाव्यवच्छिन्नास्तत्रप्रतिपतता सता तेआरभ्यते। इतियावत् प्रतिपातश्चतावत्प्रतिपतति यावत् प्रमत्तगुणस्थान कश्चित्ततोप्यवस्तनगुणस्थानाद्विक्रयाति । कोपिमासादनभावमवाप्यमिथ्यात्वगच्छति य पुनर्भवक्षयेणप्रतिपतति। स प्रथमसमयएवसर्वाण्यपिबादीनिकरणानिप्रवर्त्तयतीतिविशेष । उत्कर्षतश्चैकस्मिन्भवेद्वौ(वारान्)वाराउपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते तस्यक्षपकश्रेणिर्नभवेदपीति ॥उक्तच॥ सप्ततिकाचूर्णौ "जोदुवारेउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सनियमातम्मिभवेखवगसेढीनत्थि जोइक्कसिंउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सकस्सविखवगसेढीविहुजत्ति " एष कार्मग्रथिकाभिप्रायेण, आगमाभिप्रायेणत्वेकस्मिन्भवेएकामेवश्रेणिंप्रतिपद्यते ॥ यदुक्त कल्पभाष्ये " एवअपरिवडीए सम्मत्ते देवमणूआइजम्मेसु अन्नयरसेढिवज्झ " अन्यत्राप्युक्त, मोहोपशमएकस्मिन्भवे द्विस्यात्सतत यस्मिन्भवेत्पशम क्षयो मोहस्यतत्रनेति अत्राशय उपशमश्रेणिक प्रतिपतितो बाहुल्येनाशुद्धपरिणामत्वात्पुनर्विशुद्धा-

ध्यवसायधारा नारोहति तेन बाहुल्येन एकामेवश्रेणिं करोतिक-
श्चित् प्रतिपतितोऽपि तीव्रवीर्यैर्विशुद्धोपयोगान् पुन श्रेणिमारो
हतितेन अल्पत्वात्कल्पभाष्येनाधिकृतमिति ॥ ११ ॥ तथा-
क्षीणा अभावमापन्ना कषाया यस्य स क्षीणकषाय तत्रानतानुबधि-
कषायान् प्रथममविरतिसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तांतगुणस्थानेषुक्षपयितु-
मारभते ततोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्व ततोऽप्रत्याख्यानावरणान्क-
षायानष्टौक्षपयितुमारभते तेषुचार्द्धक्षपितेष्वेवानिविशुद्धिवशादतराल
एवस्त्यानर्द्धिनिक, नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, जातिचतुष्क, आतप,
उद्योत, स्थावर, साधारणमितिप्रकृतिषोडशकक्षपयति । तस्मिंश्चक्षीणे-
कषायाष्टकस्यक्षपितशेषक्षपयति । ततोनपुसकवेद, स्त्रीवेद, हास्या
दिषट्क, पुवेद, ततोसज्वलनक्रोधमानमाया क्षपयति एताश्चप्रकृती-
रनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायगुणस्थानेक्षपयति । सज्वलनलोभसूक्ष्म-
सपरायगुणस्थाने इतिक्षपकश्रेणि । तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानेषुक्षी-
णकषायव्यपदेश सभवति । क्वापिक्रियतामपिकषायाणाक्षीणत्वाद-
तस्तद्व्यवच्छेदार्थंवीतरागग्रहण। क्षीणकषायवीतरागत्वचकेवलिनो
प्यस्ति। तद्व्यवच्छेदार्थंछद्मस्थग्रहणं। छद्मस्थे च ग्रहणेकृतेसराग य
वच्छेदार्थंवीतरागग्रहण सचोपशातकषायोप्यस्तितद्व्यवच्छेदार्थंक्षी-
णकषायग्रहण । इत्यनेनक्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थानमिति
॥ १२ ॥ तथायोगोवीर्यशक्तिरुत्साह पराक्रमइतिपर्याया सच-
मनोवाक्कायलक्षणकरणभेदात्तिस्र सज्ञा लभते । मनोयोगोवचनयो-
ग काययोगश्चेति तथाचोक्त कर्मप्रकृतौ" परिणामालंबणगहणसाह-
णतेणलद्धनामतिग । कज्जाभ्मामाणुनप्प वेसविसमाकयपएस
॥१॥ तत्रभगवतोमनोयोगोमन पर्यायज्ञानिभिरुत्तरसुरादिभिर्वा-
मनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनाते हि भगवत्प्रयुक्तानि मनोद्रव्याणि-
मन पर्यायज्ञानेनावधिज्ञानेनवापश्यनि दृष्ट्वा च ते विवक्षितवस्त्वाका-

रान्यथानुपपत्त्यालोकस्वरूपादिमात्रमर्थमभिगच्छति। वाग्योगोवर्म-देशनादौ काययोगोनिमेषोन्मेषचक्रमणादौ। ततोऽनेनयोगत्रयेणस-हवर्त्तते इतिसयोगी सपादेरिन्द्रियप्रत्यक्षं केवलज्ञानकेवलदर्शनचवित्र-तेयस्य स केवली सयोगी चासौकेवलीचसयोगीकेवलीतस्यगुणस्था-नसयोगीकेवलीगुणस्थान ॥१३॥ न विद्यते योगा पूर्वोक्ता य-स्यासावयोगी। कथमयोगित्वमसावुपगच्छतीतिचेदुच्यते, स भग-वान्सयोगीकेवलीजघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कृष्टतोदेशोनापूर्वकोटिंविहृत्यक-श्चित्कर्मणासमीकरणार्थंसमुद्घातंकरोति यस्यवेदनीयादिकमायुष सकाशादधिकभवति सकरोतिसमुद्घात अन्यस्तुनकरोति यदाह श्रीमदार्यश्यामपादा पन्नवणाया। सव्वेविणभंतेकेवलीसमुग्घायगच्छइ गोयमा नो तिणठेसमट्ठे जस्साआऊणंतुल्लाइ नामणेहिंठिईइयम-वोवगाहिकम्माइ से न समुग्घायगच्छइ ॥ १ ॥

अगतूणसमुग्घाय, मणनाकेवलीजिणा।
जरमरणविप्पमुक्का, सिद्धिंवरगइंगया ॥ २ ॥

समुद्घातानाधिकारेवक्ष्यामः भवोपग्राहिकर्मक्षपणायलेश्यातीतशुक्लध्यानमत्यन्ताप्रकंपपरमनिर्जराकारणं यानप्रतिपित्सुर्योगनिरोधायमुपक्रमते। तत्रपूर्वंबादरकाययोगेन बादरमनोयोगं निरुणद्धि ततोवाग्योगं ततः सूक्ष्मकाययोगेन बादरकाययोगं तेनैवसूक्ष्म-मनोयोगं सूक्ष्मवाग्योगं च सूक्ष्मकाययोगंतु सूक्ष्मक्रियमनिवृत्तिशुक्ल-ध्यानं ध्याययन्स्वावष्टभेनैवनिरुणद्धि अन्यस्यावष्टभनीयस्य योगांतर-स्यतदासत्वात् तद्ध्यानसामर्थ्याच्चवदनोदरादिविवरपूरणेनसंकुचित-देहत्रिभागवर्त्तिप्रदेशोभवति। तदनंतरंसमुच्छिन्नक्रियमप्रतिपातिशुक्ल-ध्यानध्याययन् मध्यमप्रतिपत्त्याह्रस्वपंचाक्षरोच्चारणमात्रकालंशैलेशी-करणं प्रविशति। तत्रशैलेशोमेरुस्तस्येवस्थिरता साम्यावस्थाशैलेशी

यद्वासर्वसंवर शीलस्येश शैलेश तस्येययोगनिरोधावस्थाशैलेशी-
तस्या करणपूर्वविरचितशैलेशीसमयसमानगुणश्रेणिकस्य वेदनीयना-
मगोत्रायायातिकर्मत्रितयस्यासंख्येयगुण्याश्रेण्याआयु शेषस्यतुयथा-
स्वरूपस्थितयाश्रेण्यानिर्जरणशैलेशीकरण तच्चासौप्रविष्टोऽयोगी सचा-
सौकेवलीच अयोगीकेवली शैलेशीकरणचरमसमयानतरमुच्छिन्नचतु-
र्विधकर्मबन्धनत्वादप्मृत्तिकालेपलिप्तायोनिमग्नत्रापनीतमृत्तिकालेप-
जलतलमयादोर्ध्वगामी तथाविधालाबुवदूर्ध्वलोकातगच्छति न पर-
तोपिम स्यजलकरपगत्युपष्टभत्रमाभिकायाभावात्। सचोर्ध्वगच्छद्
ऋजुश्रेण्यायावत् स्वाकाशप्रदेशेष्विहावगाढस्तावत् एवप्रदेशान्तर्त्वम-
प्यवगाहमानेविवक्षितसमयाच्चसमयातरमसस्पशन्गच्छति ॥ तदुक्त
मावश्यकचूर्णौ । जत्तीएजीवोअवगाढोभवई । आएओगाहणाए-
उड्ढेउज्झगगच्छइ। नवकर्मीयचसमयनफुसइत्ति। दु खमावकारनिम-
त्तजिनवचनभद्रापमनिमा श्रीजिनभद्रगणिपूज्याअप्याहु ॥ पज्झ-
त्तमित्तसन्निस्स। जित्तियाइजहन्नयोगिस्स हुतिमणोदव्वाइ तेथोवयरो-
यजम्मित्तो।१। तदसखगुणठाण, समए समए निरुभमाणोसो मणसो-
सव्वनिरोह। कुणइ असखिज्झसमएहिं ॥२॥ पज्झत्तमित्तबिंदीय ।
जहन्नवइयोगपज्झयाजेउ, तदसखगुणविहीणो, समए समए निरु-
भतो ॥ ३ ॥ सव्वनई योगरोह, सखाइएहिंकुणइसमएहिं ।
तत्तोयसुहुमपणयस्स, पढमसमयोवन्नस्स ॥ ४ ॥ जोकिर जहन्न
जोगो, तदसखिज्झगुणहीणमिक्किक्के, समएनिरुभमाणो देहतिभा-
गचमुचतो ॥ ५ ॥ रुभइसकाययोग, सखाइएहिं चेव समएहिं,
तोकायजोगोरोहो, सेलेसीभावणामेइ ॥ ६ ॥ हस्सखराइमझेण,
जेणकालेणपचभन्नति। अच्छइमेलेसिगओ, निसीयमेत्तत्तओकाल
॥ ७ ॥ तणुरोहारभाओ, ज्झायइसुहुमकिरियानियट्टिसो, विछि-
न्नकिरीय मप्पडि-वाईसेलेसिकालमि ॥ ८ ॥ तदसखेज्झगुणाए,

गुणसेढीए रइयपुराकम्म । समएसमएखविउ । कमेणसव्वतिहिंकम्म ॥ ९ ॥ उज्जुसेढीपडिवन्नो, समइपएसतरअफुसमाणो । एगसमएणसिज्झइ । अट्ठसागारोवउत्तोसो ॥१०॥ इतिनस्य गुणस्थानमयोगिकेवलिगुणस्थानमिति याख्या ॥ तानि सभावनानि चतुर्दशगुणस्थानानि । एतेषुगुणस्थानेषुबधादीनिकर्मभगातानिद्वाराणि आगमानुसारत लिख्यते । तत्रप्रथमबधद्वार तस्यातरद्वाराणिमूलबधोत्तरबधगुणस्थानेषुभिन्नभिन्नकर्मप्रकृतिबधलक्षणानि दश एवमुदयस्यापि दश उदीरणाया निर्विशेषत्वात्तद्वएवद्वारेएवसत्ताया दश एवद्वाविंशद्वाराणितथागुणस्थानेषुजीवभेदानि १ तथागुणस्थानानि २ तथागुणस्थानेयोगद्वार ३ उपयोगद्वार ४ लेश्याद्वार ५ एवसप्तत्रिंशद्द्वाराणि तत द्विविधहेतुरूपमूलहेतुद्वामुत्तरहेतुद्वार भिन्नहेतुद्वारकचतुष्क एवषट्द्वाराणिमिलनेनिचत्वारिंशद्द्वाराणि ॥ १ ॥

टबार्थ —प्रणम्यशासनाधीश, वीर स्याद्वाददेशक
विचारसारग्रथस्य, टबार्थ सप्रतन्यते ॥ १ ॥

नमस्कार करीने जिन क० वीतराग प्रत्ये गुणठाणा १४ ने विषे इतला द्वार कहीस । मूलबध ८।७।६।१ ए च्यार स्थानक छे। उत्तरबध १२० एकसोवीस तेहनी आठ कर्मनी जूदी जूदी ८ द्वार एनले दशद्वारबधना । इम मूलउदय १ उत्तरउदय २ वली आठ कर्मनो उदय । एव १० इम मूलउदीरणा १ उत्तरउदीरणा २ इम सत्ताना दश द्वार । मूलसत्ता १ उत्तरसत्ता १ आठ कर्मनी सत्ताएव ३४ द्वार पछे गुणठाणे जीवभेद ३५ पछे गुणठाणे गुणठाणा ३६ पछे गुणठाणे योग १५ द्वार ३७ पछे गुणठाणे उपयोग १२ कहेवा ३८ द्वार पछे गुणठाणे लेश्या ६ कहेवा, ३९ पछे गुणठाणे मूलहेतु ४ कहेवा पछे

उत्तरहेतुसमुच्चय पछे च्यार हेतु तेहनामि ६ द्वार एव ८५ द्वार ॥ १ ॥

अप्पबहुभावजीवभेय, समुग्घायाझाणदडगा
वेआजोणीकुलकोडीओ, बधुदयसतधुवअधुवा ॥२॥

टीका—ततोऽल्पबहुत्वगुणस्थानेषु एव चतुश्चत्वारिंशत्तन मूलभावोत्तरभावभिन्नभावसान्निपातिकभावलक्षणानि द्वाराणि अष्टौमिलनेद्विपचाशद्द्वाराणि तत पचशतत्रिषष्टिर्जीवभेदद्वाराणिमूलतोउत्तररूपेद्वेद्वारेमिलनेचतु पचाशत्चत्वारिउत्तरमिलने ५८ द्वाराणि तत गुणस्थानेसमुद्घातलक्षणएकोनषष्टितमद्वार। ततोध्यानद्वार। मूलोत्तरत एव त्रिषष्टितन, गुणस्थानेषुदडकाभिधायकद्वारचतुषष्टितम ततोवेदद्वारपचषष्टितम। ततोयोनिद्वारषट्षष्टितम तत कुलकोटिरूपसप्तषष्टितम तत ध्रुवबधोऽध्रुवबधो ध्रुवोदयोऽध्रुवोदयो ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्तालक्षणानिषट्द्वाराणि एवगाथाद्वयेनत्रिसप्ततिद्वाराणि ॥२॥

टबार्थ —पछे गुणठाणानो अल्पबहुत्व ४६ पछे गुणठाणे मूलभाव १ उत्तरभाव ५ भावभिन्नपणे पछे सान्निपातिकभावना भागा एव ८ द्वार ५४ पछे जीवभेद पाचसोत्रेसठ तेहना द्वार ६ एव साठ ६० द्वार पछे समुद्घात ७ एव द्वार ६१ पछे ध्यान ४ मूल तेहना पाया १६ कहीस्यू एव द्वार ६२ पछे गुणठाणे दडक २४ द्वार ६४ पछे गुणठाणे वेद एव द्वार ६५ पछे गुणठाणे योनि लाख८४ एव द्वार ६६ पछे गुणठाणे कुलकोडी एक कोडी साडासत्ताणुलाख एव द्वार ६७ पछे ध्रुवबधी १ अध्रुवबधी १ ध्रुवउदयी १ अध्रुवउदयी १ ध्रुवसत्ता १ अध्रुवसत्ता १ एव द्वार ६ द्वार ७३ ॥ २ ॥

सव्वदरघाईअघाई, पुन्नपरावत्तइयरसित्ताइ
चउरोविवागभगा, कम्माण चेव दाराइ ॥ ३ ॥

टीका—सव्वेति सर्वघाति १ देशघाति २ अघाति लक्षणानि द्वाराणि त्रीणितत पुण्यप्रकृति १ पापप्रकृति २ परावर्त्तमान ३ इतर शब्देन अपरावर्त्तमानलक्षणानि सप्तद्वाराणि मिलनेअशीतिद्वाराणि तत क्षेत्रादिविपाकचतुष्टयरूपाणि चत्वारिद्वाराणितत कर्माष्टकस्यगुणस्थानेभगप्रतिपादकानि अष्टौद्वाराणि एवमिलनेद्विनवतिद्वाराणि ॥ ३ ॥

टबार्थ—पछे सर्वघाति एकद्वार ७४ पछे देशघाति एकद्वार ७५ पछे अघाति एकद्वार ७६ पछे पुण्यप्रकृति ७७ इतरशब्दे पापप्रकृति ७८ पछे परावर्त्त ७९ पछे अपरावर्त्त एकद्वार ८० पछे क्षेत्रविपाक ८१ भवविपाक ८२ जीवविपाक ८३ पुद्गलविपाक एकद्वार ८४ पछे गुणठाणे कर्मनाभागा एकद्वार ८ एकद्वार ९० चेवशब्दे गुणठाणे आस्रवभेद ९१ संवरभेद ९२ निर्जरभेद ९३ बंधरचना भेद ९४ एव चोराणुद्वार गुणठाणे कहीस्यू ॥ ३ ॥

अपमत्तत्तासत्तठ, मीस अपुव्वायरे सत्त,
बधइछसुहुमोइग, सुवरिमाअवधगअयोगी ॥ ४ ॥

टीका—चेति चकारेणगुणस्थानेआस्रवभेदा संवरभेदा निर्जराभेदा बंधभेदाभिधानलक्षणानिचत्वारिद्वाराणि। एवसर्वमिलनेपण्णवतिद्वाराणि गुणस्थानवक्तव्यानि। तत्प्रतिपादकगुणस्थानशतकाख्यप्रथमाधिकारमुच्यते। द्वारशब्दार्थ प्रतिद्वारमेववक्तव्य तत्तएवज्ञेया तत्प्रथमत्व प्रतिपादकद्वारमुच्यते। तत्रात्मनअभिमुख्येन सन् मुखत्वेनमिथ्यात्वादिभिर्हेतुभिर्नवस्य नूतनस्य कर्मणोज्ञानावा-

रणादेर्ग्रहणमुपादानलोलीभावकरण बन्धस्त्युच्यते । तत्रमूलतो बन्ध-स्थानानिचत्वारि तानि गुणस्थानकेषु निवेद्यते। तत्रमूलत कर्मण-अष्टका तत्रायुर्बन्धकोजीवअष्टविधबन्धक आयुषस्त्वेकस्मिन्भवे एक-वारमेवान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणकालबन्धनात्, शेषकालतुसप्तविधबन्धकएवजीव तथासूक्ष्म सपरायगुणस्थानकेध्यानविशुद्ध्यामोहनीयायुषीनबन्नाति, तेनषड्विधबन्धकएवसच अकषायीजीवउपशान्तादिगुणस्थानत्रिके वेदनीयस्यएकस्यैवबन्धक । अतोबन्धस्थानानिमूलतश्चत्वारि । तत्रच मिथ्यादृष्टिप्रमत्तयोऽप्रमत्ताता । सप्तानामकर्माणिबन्नाति आयुर्बन्ध-कालेऽष्टशेषकालतुसप्त । मीसअपुव्वबायरेइति, मिश्रापूर्वकरणा-निवृत्तिबादरा सप्तबन्नन्तिषामायुर्बन्धाभावात्, तत्रमिश्रस्यतथास्वा-भावात् इतरयो पुनरतिविशुद्धित्वादायुर्बन्धस्यच घोलनापरिणाम निबन्धनत्वात् बन्धको बन्नाति। सुहुमंति सूक्ष्मसपरायोमोहनीयायुर्ब-र्जानिषट्कमाणिबन्नाति । मोहनीयबन्धस्यबादरकषायोदयनिमित्त-त्वात् । तत्रचतदभावात् आयुर्बन्धाभावस्त्वतिविशुद्धित्वादवसेय । एगमुवरिमत्ति । एकसातवेदनीयकर्मोपरितना सूक्ष्मसपरायादुपरि-वृद्धर्तिनउपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगीकेवलिनोबन्नाति। न शेषकर्मा-णिनद्बन्धहेतुत्वाभावात् । अबन्धक सर्वकर्मप्रपचबन्धरहितोऽयोगी-चरमगुणस्थानवर्त्तीसर्वबन्धहेतुत्वाभावादिति ॥ ४ ॥

टबार्थ —कर्म आठ छे ते एक समे एक जीव आठ कर्म बांधे अथवा आउषो न बांधे तो सात कर्म बांधे ते वली आऊषो मोहनीए बे न बांधे तो ६ बन्धाइ पछे एकसाता बांधे इम च्यार बंधना थानक छे ते मिथ्यात्व १ सास्वादन २ अविरतिसमकित १ देशविरति १ प्रमत्त १ अप्रमत्त १ ए ७ गुणठाणे सीम सात बांधे अने आऊखो बांधे तेवारे आठ बांधे तथा त्रीजे मिश्रगु-

णठाणे तथा आठमु अपूर्वकरणगुणठाणे तथा नवमु अनिवृत्तिगुणठाणे आऊखो न बांधे। तिणे सातकर्म बांधे तथा दशमा सूक्ष्मसपराय गुणठाणे आऊखो १ मोहनीय विना शेष छ कर्म बांधे बे न बांधे उपरत्यो इग्यारमो बारमो तेरमो ए तिन गुणठाणे एक वेदनी कर्म बांधे तथा अयोगी गुणठाणे कोई कर्म बांधे नहीं अबंधक छे सही ॥ ४ ॥

वीसहियसयबंधे, ओहेमिच्छेसत्तरससयं तु ।
सासाणेइगहियसय, मीसे चउसत्तरीबंधो ॥ ५ ॥

टीका— उक्तागुणस्थानेषमूलप्रकृतिबंधनिरूपकद्वारमुच्यते । वीसहियत्ति ५ बंधे-ओघत सामान्यत विंशत्यधिकशतबंध्यते, तत्रज्ञानावरणीयपंचक, दर्शनावरणीयनवक । वेदनीयद्विविध । मोहनीयषड्विंशतिभेद । मिश्रमोहनीसम्यक्तमोहनीयस्यबंधाभावात् । बंधे तुमिथ्यात्वमोहनीयस्यैवबंधात् । मिथ्यात्वदलिकानामेवविशुद्ध्याशोधितानामिश्रमोहसम्यक्त्वमोहरूपपुञ्जभवनात्। तथाचोदयात् तेनोदयेएवभवनात् न बंधे, तेन । षड्विंशतिरेवबंधाति। आयुश्चतुर्भेदनामकर्मण अधिकशतप्रकृतिप्रमाणस्यबंधनपंचदशकमबंधनपंचकस्यबंधाभावात् । शरीरनामकर्मबंधेएवग्रहणात् । वर्णादिविंशते वर्णगंधरसस्पर्शस्य एकैकग्रहणेचत्वार्येवबंधाति । तेनषोडशकाग्रहणेशेषानाम्न सप्तषष्टिरेवबंध्यते । एकजीवस्यैकसमयेएकमेवेदवाम्य । कालांतरेजीवांतरवर्णादिविंशतिरेव बंधसंभवात् ओघेचवर्णादीनाचतुर्णांग्रहणत्वंयामोहार्थमिनिगोदस्यद्वौ। अंतरायस्यपंचएवसर्वमिलनेओघतोविंशत्यधिकमेकशत च बंधेभवति। तदेवविंशतितीर्थंकराहारकद्विकवर्जं मिच्छे मिथ्यात्वे, सत्तरससयंति, सप्तदशाधिकशत सप्तदशशतबंधे-

भवतीति।अयमत्राभिप्राय तीर्थंकरनामतावत्सम्यक्त्वगुणानुगयोग-कषायप्रवृत्तिनिमित्तमेवबध्यते । आहारकशरीरागोपागलक्षणद्विक-अप्रमत्तयतिसबधिसयमानुयायियोगकषायप्रवृत्त्या बध्यते ॥यदुक्त॥ शिवशर्मसूरिपाद गतके। समत्तगुणनिमित्त तित्थयरसनमेणआहार-मितिमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेउभयाभावात् । एतत्प्रकृतिपयवर्जनक्र-तशेषपुन सप्तदशशतमिथ्यात्वादिभिहेतुभिर्बध्यते। तत्रहेतुचतुष्ट-यसद्भावात् मिथ्यात्वेनद्वय नन्वना सप्तदशशतसख्यासर्वाअपिमि-थ्यादृष्टिप्रायोग्या कितुमिथ्यात्वप्रायोग्या षोडशतानाश्चमिथ्यात्ववि-गमेगच्छतिताश्चेमा १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ इति नरक-त्रिक १ एकेंद्रिय, २ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय चतुरिन्द्रियजातिचतुष्कल-क्षणजातिचतुष्क। १ स्थावर, २ सूक्ष्म, ३ अपर्याप्त, ४ साधारण, लक्षणस्थावरचतुष्क । आतपहुडछेदपृष्ट नपुसकवेद मिथ्यात्वमिति-एता षोडशप्रकृतय मिथ्यादृष्टिगुणस्थाने एवमवमायानि मिथ्यात्व-प्रत्ययत्वादेतासानोत्तरत्र। सास्वादनादिषुमिथ्यात्वहेत्वभावात्। प्रा-योनरकाद्यायताशुभत्वाच्चमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । तेनसप्तदशशतात् पूर्वोक्तषोडशापगमेशेषमेकोत्तरप्रकृतिशतमेवसास्वादनेवमायानि। सासाणे,सास्वादने,एगहियसय एकाधिकशतमवप्रकृतीनाअस्ति,मी-सेत्ति। मिश्रामिधानगुणस्थानके चतुर्गतिकासप्रतिपक्षबधत्वेनअस्ति १ तिर्यग्गति, २ तिर्यगानुपूर्वी, ३ तिर्यगायु, लक्षणतिर्यक्त्रिक १ निद्रानिद्रा, २ प्रचलाप्रचला, ३ स्त्यानर्द्धिलक्षणस्त्यानर्द्धि-त्रिक। १ दुर्भग, २ दुस्वर, अनादेयलक्षणदौर्भाग्यत्रिक ३ अनतानु-बधिक्रोध १ मान, २ माया, ३ लोभ, ४ लक्षणअनतानुबधिच-तुष्टय । १ न्यग्रोध, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ लक्षण-मध्यसस्थानचतुष्क १ ऋषभनाराच, २ नाराच, ३ अर्धनाराच, ४ कीलिका, लक्षणमध्यसहननचतुष्क, नीचैर्गोत्र । १ उद्योत, २

अप्रशस्तविहायोगति ३ स्त्रीवेद, ४ इत्येता पचविंशति सास्वादनाताबध्यते नोत्तरत्र, यतोऽनतानुबधिप्रत्ययोद्यस्सौनत्र । सचोत्तरत्रनास्ति तेनंनतासाबध सम्मामिच्छदिठी आउअबधपिनकरेइत्ति वचनात् शेषनरायुदेवायुर्द्वयमपिनबध्नाति अत एकोत्तरशतात् सप्तविंशतिरपगमेमिश्रगुणस्थानकेचतु सप्ततिर्बध्नाति ॥५॥

टबार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिबध कहे छे ओघेएकसोवीसनो बध छे, ते कहे छे ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ९, वेदनी२, मोहनी २६, समकित मोहनी तथा मिश्रमोहनी ए बे बधमे नही तिणे २६ छे तथा आउखो ४ नामकर्मनी १०३ प्रकृति छे ते मध्ये १५ बधन ५ सघातन ए शरीर मध्ये गण्या छे अने वर्णादिक २० छे तेमाथी वर्ण १ गध १ रस १ फरस १ ए च्यार बाधे बीजा १६ बाधे नहीं, एटले नामकर्मनी सडसठ बाधे गोत्रनी २ अतराय ५ एव एकसोवीस बाधे एकसोवीसमाथी १ आहारक २ जिननाम काढीये तेवारे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसोसत्तर बाधे तेमाथी नरक ३ जाति ३ थावर ४ हुडक १ छेवटो १ आतप १ नपुसकवेद १ मिथ्यात्व १ ए सोल काढीइ तेवारे सास्वादन गुणठाणे एकसोएक बधाय ए सोल प्रकृति मिथ्यात्व छताज बाधे मिथ्यात्व गयेज जाय तेवारे एकसोएक बधाय तथा तेमाथी तिर्यंच ३ थीणद्धी ३ दुर्भग ३ अनतानुबधी ४ मध्यसघयण ४ मध्यसस्थान ४ अशुभविहायोगति १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ स्त्रीवेद १ देवायु १ मनुष्यायु १ ए २७ काढीये तेवारे मिश्र गुणठाणे चमोत्तरनो बध छे ॥ ५ ॥

सम्मे सगसयरिदेसे, सगट्ठितेवट्ठिपमत्ति अपमत्ते।
नवअडवन्नापुव्वे, अडछप्पन्नाछवीसाय ॥ ६ ॥

टीका—सम्मेत्ति ६ सम्यक्त्वाभिधानेचतुर्थेगुणस्थानेआयुर्बन्धात् मनुष्यायु १ देवायु २ एतद्द्विकसम्यक्त्वानुगप्रवृत्याच तीर्थकरनाम बध्नाति, इत्यनेनपूर्वोक्तचतु सप्ततितीर्थकरनामआयुर्द्वयमेलनात् सम्यग्दृष्टिगुणस्थानेसप्तसप्ततिप्रकृतीना बन्धोभवति तत्रतिर्यग्मनुष्या सम्यग्दृष्टय देवायुरेवबध्नन्ति। नारकादेवाश्चससम्यग्दृष्टय मनुष्यायुरेवबध्नन्ति। देसेत्ति, देशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानके वज्रर्षभनाराचसहनन १ नरगति १ नरानुपूर्वी २ नरायु ३ लक्षणनरकि द्वितीयेकषाये अप्रत्याख्यानक्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ चतुष्क ४ औदारिकशरीरागोपागलक्षणऔदारिकद्विक एतासादशप्रकृतीनामविरतिसम्यग्दृष्टेअनोभवति। अत्रबध्यतेनोत्तरेत्यर्थ अयमत्राभिप्राय द्वितीयकषायास्तावत्तदुदयाभावान्नबध्नाति। कषायाद्यनतानुबधिवजावेद्यमानाएवबध्यते। जेवेएइतेनवइ इतिवचनात्। अनतानुबधिनस्तुचतुर्विंशतिसत्कर्मानतवियोजकोमिथ्यात्वगनोऽत्रावलिकामात्रकालअनुदितान्बध्नाति॥यदाहु॥ सप्ततिटीकाया श्रीमलयगिरिपादा इहसम्यग्दृष्टिनासनाकेनचित्प्रथमतोऽनतानुबधिनोविसयोजिता एतावतेवसविश्रातो न मिथ्यात्वादिक्षयायसउद्युक्तवान् तथाविधसामग्र्यभावात्। तत कालातरेणमिथ्यात्वगत सन्मिथ्यात्वप्रत्ययनोम्योप्यनतानुबधिनोबध्नाति। ततोबधावलिकाया यावन्नाद्याप्यतिक्रामति तावत्तेषामुदयविनाबध्नति। नरकिमनुष्यवेद्य प्रथमसहनन ओदारिकद्विक मनुष्यतिर्यग्वेद्यदेशविरतात्मादिषुदेवगतिवेद्यमेवबध्नाति नान्यत्तेनासादशप्रकृतीनामविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थाने अत्र। तत्रएतत्प्रकृतिदशकपूर्वोक्तसप्तसप्ततेरपनीयते। ततोदेशविरतेअनोदेशेसप्तषष्टिर्बध्यते। ततस्तृतीयकषायाणाप्रत्याख्यानावरणक्रोध १ मान २ माया ३ ४ लोभाना देशविरतेअनस्तदुत्तरेतेषामुदयाभावात्। अनुदितानाः

चाबधात् एतच्चप्रकृतिचतुष्कपूर्वोक्तसप्तषष्टेरपनीयते । तत तेषाठिपमत्ते, इतिप्रमत्तेप्रमत्तसाधुलक्षणेषष्टेगुणस्थानकेविषष्टिर्भव्यते । इतिनत शोक अरति अस्थिरअशुभअयश असातमित्येता षट्प्रकृतय प्रमत्तातेउच्छिद्यते तत कश्चिज्जीव पूर्वबद्धायु अथायुषोऽबधकोदेवायुरपिनबध्नाति । तेनसप्तापगमे आहारकद्विकस्यअबधोभवति । अप्रमत्तपरिणामेनैवाहारकस्यबधात् तेन य प्रमत्तेदेवायुर्बध्नमारभते सअप्रमत्तेगतोपिदेवायुर्बध्नाति आयुष्कस्यतुबोलनापरिणामेनैवबधनात्।सबद्धमानायु अप्रमत्तेयागछेत् सदेवायुर्बध्नन्प्रकृतिपट्कमेवोच्छेदयति।तस्यशेषा सप्तपचाशत्भवति। योदेवायुर्नबध्नातिससप्तकमुच्छेदयति । तस्यषट्कपञ्चाशत्भवति । अस्याहारकद्विकबधेभवति अयमभिप्राय अप्रमत्तयतिमबधिनासयमविशेषेणाहारकद्विकबध्यते । तद्वेहलभ्यते । इतिपूर्वापनीतमप्यत्रक्षिप्यते । तत सप्तपचाशत् पुनराहारकद्विक क्षेपेएकोनषष्ठि षट्पचाशत् आहारकक्षेपे अष्टपचाशद्भवति । सप्तमेऽप्रमत्ताख्येगुणस्थानकेइति । अपूर्वे, अपूर्वकरणाभिधानेऽष्टमेगुणस्थानकेभागसप्तक तत्रप्रथमभागेअष्टपचाशत् बध्नाति । तत निद्राद्विकस्यनिद्राप्रचलालक्षणस्यातोभवत्यत्रनोबध्यते नोत्तरत्रापिउत्तरत्रबधाध्यवसायस्थानाभावात् । उत्तरेष्वप्ययमेवहेतुरनुसरणीय । तत परषट्पचाशत्भवति । पचसुभागेष्वित्यर्थ । तत्रपचभागाना समत्वेनात्रैकभागोविवक्षित । तत त्रिंशत्प्रकृतीनामतोभवतिइत्याह । देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वीलक्षण । पचेंद्रियजाति ३ प्रशस्तविहायोगति ४ त्रसनवकत्रस १ बादर २ पर्याप्त ३ प्रत्येक ४ स्थिर ५ शुभ ६ सुभग ७ सुस्वर ८ आदेयलक्षण ९ वैक्रियाहारकतेजसकार्मणलक्षणशरीरचतुष्टय ४ वैक्रियाहारकागोपागलक्षणउपागद्वयसमचतुरस्रसस्थान १ निर्माण १ जिननाम २ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ श्वासोच्छ्वास १

लक्षण वर्ण १ गन्ध १ रस १ स्पर्श १ लक्षणमित्येनासाविंशत्प्रकृतीनामपगमेअपूर्वकरणस्यचरमेभागेशेषा षड्विंशतिप्रकृतयोबधेलभ्यते ॥ ६ ॥

टबार्थ—तथा देवायु १ नरायु १ जिननाम १ ए तिन मेलिइ तेवारे सत्तोतेर बाधे । तेमायी मनुष्य ३ त्रीजी चोकडी कषायनी ४ वज्ररुषभनाराचसघेण १ औदारिक २ काढीए तेवारे देशविरति गुणठाणे सडसठ बाधे, तेमायी त्रीजी चोकडी कषायनी काढीए तेवारे प्रमत्तगुणठाणे तेसठ बाधे तेमायी सोगमोहनी १ अविरति १ असाता १ अथिर १ अशुभ १ अजस १ ए छ काढीइ अने आहारक मेलीइ तेवार अप्रमत्त गुणठाणे ए गुणठाणे एगुणसठि बाधे अने देवताना आऊखानो बन्ध न बाधे इहा आहारक २ मेलीये त्यारे अठावन थाये ॥ तथा अपूर्वकरणगुणठाणाना भाग सात छे ॥ ते पहेले भागे अठावन बाधे पछे निद्रा १ प्रचला १ एव ने काढीये तेवारे बीजे तीजे चोथे पाचमे छठे भागे छप्पन छप्पन बाधे ॥ तेमायी देवदुग १ पचेद्रीजात १ शुभ विहायोगति १ समचउरस १ त्रसनाम १ वैक्रिय १ आहारक तेजस १ कार्मण १ वक्रिय उपाग १ आहारक उपाग १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ उपघात १ उसास १ परावात १ जिननाम निर्माण १ ए तीस बाधे नही तेवार आठमा गुणठाणाने सातमे भागे वीस बाधे ॥ ६ ॥

अनियट्टीबावीस, इगेगहीण च सतरसुहुमम्मि ।
तिसुसायमयोगम्मि, बधाभावो अणतो य ॥ ७ ॥

टीका—अपूर्वकरणस्यचरमसमयेहास्य १ रति २ भय १ जुगुप्सा ४ एतत्प्रकृतिचतुष्टयपूर्वोक्तषड्विंशतेरपनीयते । शेषा

द्वाविंशति सचानिवृत्तिबादरप्रथमभागेभवति। अनियट्टीति । अनिवृत्तिकरणाख्यनवमगुणस्थानकस्य प्रथमभागे पूर्वोक्तद्वाविंशतिबंध एकैकहीनोबाध्य तत्रप्रथमभागातेपुरुषवेदस्यछेद ततोद्वितीयभागे एकविंशतेर्बंध द्वितीयभागातेसज्वलनक्रोधस्यछेद ततस्तृतीयभागे-विंशतेर्बंध चतुर्थभागातेसज्वलनमायाया छेद तत पचमभागे-ऽष्टादशानाबंध तदतेचअनिवृत्तिबादरस्याप्यत ॥ अनिवृत्तिबादर-चरमसमयेसज्वलनलोभस्याप्यत । तत दशमेसूक्ष्मसपरायकेगुण-स्थानके सप्तदशप्रकृतीनाबंधोभवति। सूक्ष्मसपरायस्यातेज्ञानावरण-पचक । दर्शनावरणचतुष्क । यशोनामउच्चैर्गोत्रण्ता षोडशप्रकृ-तय छिद्यते । तत । तिसु । त्रिषु, उपशातमोह १ क्षीणमोह २ सयोगिकेवलीलक्षणेषुत्रिषुगुणस्थानेषुएकमातवेदनीयप्रकृतिबंधाति। प्रकृतिप्रदेशरूपाएकसायहेत्वभावात् । नस्थितिरसयोर्बंध । इति-सातस्यकेवलयोगप्रत्ययस्यद्विसामायिकरयतृतीयेऽवस्थानाभावात् । इतिभाव । आहचभाष्यसुधाभोनिधि । उवसतखीणमोहा । के-वलिणोएगविहबधते। पुणदुसमठियस्स। बधगा न उणसपरायस्सत्ति, अजोगम्मि, अयोगि केवलिगुणस्थानेयोगाभावात् । ततोऽबधका-अयोगिकेवलिन ॥ उक्तच ॥ सेलेसीपडिवन्ना । अबधगा हुतिना-यव्वा। अयोगिगुणस्थानेबधस्याभाव " अणनोयत्ति। अनतस्यबधा-भावस्यनअनोनक्षयइतिबधाभाव । अतरहितइतिउत्तरप्रकृतिबध-उक्तोगुणस्थानेषु ॥ ७ ॥

टबार्थ—तेमाथी हास्य १ रति १ भय १ दुगछा १ ए च्यार काढीइ तेवारे अनिवृत्तिबादर नवमु गुणठाणु तेहने पेहले भागे बावीस बाधे पछे पुरुषवेद काढीए तेवारे बीजे भागे २१ बाधे पछे सज्वलनोक्रोध काढीए तेवारे त्रीजे भागे २० बाधे.

पछे सज्वलनोमान काटीइ तेवारे चोथे भागे १९ बाधे पछे सज्वलनीमाया काटीइ तेवारे पाचमे भागे १८ बाधे तेमायी सज्वलनोलोभ काढीइ तेवार दशमा सूक्ष्मसपरायगुणठाणे सत्तरप्रकृतिनोबध छे तेमायी ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ उच्चगोत्र १ जसनामकर्म १ ए सोल काढीए तेवारे इग्यारमे उपशातमोह गुणठाणे एकसातावेदनीज बाधे बारमे खीणमोहे एकसातावेदनी बाधे तेरमे सयोगीकेवलीगुणठाणे एकसातावेदनी बाधे ए तीन गुणठाणे साता एकज बाधे चउदमे अयोगी केवलीगुणठाणे बधनो अभाव छे ते अबध छे ए अबधपणानो जघ छेहटो नथी, ए जीव सदा अबध होवे हेतुने अभावे बधनो अभाव छे ॥७॥

नाणतरायदसग, उच्चागोयचसायजसनाम ।
दसणचउसुहुम जा, बधइतिव्वायमदाय ॥ ८ ॥

टीका—अथ ज्ञानावरणादीना कर्मणा भिन्नभिन्नगुणस्थानेषु बध सद्भावदर्शयन्नाह । नाणतरायेत्ति । ८ ज्ञानावरणीयपचक अतरायपचकमिलनेदशक । उच्चगोत्र च पुन यशोनाम । दसणचउत्ति । दर्शनावरणीयचतुष्क। एता प्रकृतय । सुहुमजत्ति। सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकयावद्बध्नाति । तत्रकिमर्वनतुत्पण्बध इतिशकापनोदार्थमाह॥ तिव्वायमदायत्ति तद्बधकाध्यवसायाना तीव्रत्वे एतासातीव्रण्बध । पुनस्तद्बधकाध्यवसायानामदत्वे मदएवबध । तत्रभावना प्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानअशुभाध्यवसायानातीव्रत्वात्ज्ञानावरणीयाद्यशुभप्रकृतीनातीव्रबध । सम्यग्दर्शनादिगुणेषुमदमदतरमदतमा • शुभाध्यवसायात् मदमदतरमदतमएवबध । सातादीनातुशुभानाप्रकृतीनामिथ्यात्वेशुभाध्यवसायस्यमदत्वात्मदएवरसबध । ततस्ती-

व्रतीव्रतरतीव्रतमशुभाध्यवसायात् शुभप्रकृतीनातीव्रतीव्रतरतीव्रतम-एवबधोभवति। एवसर्वत्रसर्वप्रकृतीनाम्यथायथाध्यवसायानातीव्रत्वे-तीव्रोबध मदेमदोभवतिइत्यूह्यम। प्रकृतिबधाभावश्चतद्बधकाध्यव-सायाभावतो ज्ञेय ॥ ८ ॥

टबार्थ —हवे कर्म सर्वनो बध गुणठाणे कहे छे ॥ ज्ञाना-वरणी ५ अतराय ५ एमिल्या दश १० उच गोत्र १ सातावेदनी १ इहा सकषायवेदनी बार मुहूर्त स्थितिवाली लीधी छे। अक-षायी सातावेदनीनो तेरमा सधी बध छे। तथा यशनाम १ दर्श-नावरणी ४ ए प्रकृति सूक्ष्मसपराय गुणठाणा सुधी बधाय छे ए १७ मध्ये १४ अशुभ छे। ते प्रथमगुणठाणे तीव्ररसे बाधे छे पछे दशमा सीम मन्दतर मन्दतम बाधे छे अने तीन शुभ छे। तेह पछे गुणठाणे मदरसे बाधे। पछे तीव्र तीव्र रसे बाधे इम सर्वत्र तिव्रताये मदताये बध कहेवो ॥ ८ ॥

थीणतिग आइदुगे, निद्दुग जा अपुव्वपढमसे।
नोय सासाण जा, असायबधो पमत्त जा ॥ ९ ॥

टीका—थीणत्ति। दर्शनावरणीयस्य नवप्रकृतयस्तत्रस्त्यान-द्धित्रिक निद्रा निद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानर्द्धिलक्षण १ आइदुगेत्ति आदिप्रथमतो द्विके मिथ्यात्वसास्वादनप्रथमगुण-स्थानद्वयेबध नोत्तरत्र अत्यतसक्लेशपरिणामप्रत्ययात् अत्यतसक्ले-शश्चानतानुबध्युदयतोभवति तदुत्थश्चगुणस्थानद्वये एवभवति तेनसास्वादनयावदेवस्त्यानर्द्धित्रिकबध निद्दुगति—निद्राद्विकनिद्रा-प्रचलालक्षण तस्यबध अपूर्वकरणप्रथमाशायावत् नोत्तरत्र घोल्ना-परिणामस्यतावदेव सद्भावात्। दर्शनावरणचतुष्टयस्य बध सूक्ष्म

सपराययावत् पूर्वमुक्तएवकषायनमित्तकत्वात् । गोत्रकर्मणिनीचै-र्गोत्रसास्वादनयावदेवबन्नाति नोत्तरत, जननानुबन्धुदयाशुद्धसक्लेश-जन्यत्वात् । उच्चैर्गोत्रतुसूक्ष्मसपराययावत् पूर्वमुक्तमेववेदनीयद्वये असातवेदनीयमिथ्यात्वत प्रमत्तयावद्बध्नाति । प्रमादप्रत्ययत्वात् तत परप्रमादाभावात् सातवेदनीयतुकषाय सूक्ष्मसपराययावद्बध्नाति। अकषायवेदनीयतु सयोगिकेवलिचरमसमयातबध्नाति योगास्रव वात् इति ॥ ९ ॥

टबार्थ —दर्शनावरणी कर्मनी नव प्रकृति छे ते मध्ये थीणद्धी तीन (त्रिक) पहिल बीजे ए आदिद्विक कहेता बे गुणठाणे बाधे। निद्रा १ प्रचला १ ए बे प्रकृति पहिलाथी आठमा पर्यंत। आठमाना पहिला भाग सूधी बाधे । शेष दर्शनावरणा च्यार दशमाना अत सूधी बाधे । ते पहिली गाथा मध्ये कह्यो छे गोत्रकर्मनी प्रकृति २ ते मध्ये नीचगोत्रसास्वादन जा कहेता मिथ्यात्वसास्वादन ए बे गुणठाणे बाधे पछी न बाधे उचगोत्र दशमा सूधी बाधे, तथा वेदनीनी २ प्रकृति ते मध्ये असातावेदनी पहिलाथी माडी छट्ठा प्रमत्तगुणठाणा सूधी बाधे पछे न बाधे, सातावेदनीकसकषायदशमा सूधी बाधे, अकषायीसाता तेरमा सूधी बाधे ॥ ९ ॥

मिच्छेआउचउग, सासाणे निरयहीणतिगबधो ।
मीसे न आऊबधो, समत्ते देवनरबधो ॥ १० ॥

टीका—आयु कर्मणिचतुष्प्रकारे तत्र मिथ्यात्वआयुषश्चतु-ष्कबन्नाति एव, जीवएकस्मिन्समयेएकमेवायुर्बन्नाति । तथापि बहु-जीवापेक्षयातुआयुश्चतुष्टयबन्धसद्भावएवनरदेवायुष शुभत्वेपिमिथ्या-त्वेद्रव्यक्रियाप्रशस्तलेश्यावशाद्बध मिथ्यात्वाननानुबधिविपाकान् ट्र-

व्यक्रियाअत्यतसमग्राएवकरोति। तस्यग्रहीतेअमिग्रहीतत्वात् सास्वादने नरकायु र्नबध्नाति। मिथ्यात्वप्रत्ययत्वात्। तदभावेचनद्वधाभावात्। मिश्रेमिश्रारयेगुणस्थानेआयुष बधएवनभवति,मिश्रेमरणाभावात्। सम्यक्त्वेदेवायुषोमनुष्यायुषश्चबध प्रशस्तपरिणतेर्मुख्यत्वात् उत्सूत्र स्यतिर्यगादिगतिहेतुत्वात् सम्यक्त्वेप्राप्तेच आस्रवानामाद्यत्वान्नाशु-भायुर्बध्नाति ॥ उक्तच॥ सम्मदिट्ठीजीवो जइविहुपावसमायरेकिंचि, अप्पोसिहोइबधो जेणननिंद्धंधस कुणई ॥ १० ॥

टबार्थ —मिथ्यात्वगुणठाणे च्यार आऊखानो बध छे जेवा परिणाम होय तेवा बधाये, अने सास्वादनगुणठाणाने विषे एक नरकनो आऊखो न बधाइ, अने बीजा तिन आऊखा ते किहा तिर्यचनो मनुष्यनो अने देवतानो ए बधाये मिश्रगुणठाणे कोइ आऊखो न बाधे मिश्रमध्येमरवो नथी मध्यस्थपरिणाममाटे अथवा मिश्रनो स्थितिकाल अतर्मुहूर्त्तनो छे तेहथी आऊखानो बधकालनोमुहूर्त्त मोटो छे ते माटे हवे समकितगुणठाणे देवतानो तथा मनुष्यनो आऊखो बाधे बीजा २ आयु न बाधे ते मध्ये देवता तथा नारकी समकिती मनुष्यायु बाधे। तिर्यच तथा मनुष्य समकिती देवतानो आऊखो बाधे ॥ १० ॥

देसाइतिग देवाउ, बधई सेसया न बधति।
मोहे छवीस मिच्छे, नपुमिच्छविहीणसासाणे ॥११॥

टीका—देशविरतित समारभ्यअप्रमत्तयावत् देवायुषएवबध प्रशस्तपरिणामस्यप्राबल्यात् । अपूर्वकरणादिषु शुद्धपरिणामप्राबल्येननायुष बधइति तेनशेषका अपूर्वकरणतोऽयोगिकेवलिपर्यन्ता आयुर्कर्मबधका न भवन्ति । मोहनीयकर्मणिप्रकृत्यष्टाविंशतिलक्षणे मिश्रमोहनीय सम्यक्त्वमोहनीय बधेनास्ति। यत मिथ्यात्वदलि-

काएवविपुजीकरणपरिणामेन विभक्ता शुद्धपुजमिश्रपुजरूपा सम्यक्त्वमोहमिश्रमोहलक्षणप्रकृतिद्वयविपाककालेभवति तेनषड्विंशतेरेवबन्ध तत्रमिथ्यात्वेषड्विंशतिरधिक विंश पड्विंशएवबन्ध नपुसकवेदमिथ्यात्वमोहनीयविनासास्वादनेमोहनीयस्यचतुर्विंशतिप्रकृतयोबन्धते। कर्मस्तवे सोलतोइगहियगयसासणि । इतिवचनात् ॥ ११ ॥

टबार्थ —देशविरतिआदि देई तिन गुणठाणे एक देवनानो आऊखो बाधे शेषअपूर्वकरण गुणठाणेथी माटी ऊपरला सर्व गुणठाणे आऊखो कोइ बाधे नहीं, स्वरूपालबनी माटे, परालबने आयुर्बंध छे मोहनीकर्मनी २८ प्रकृति छे ते मध्ये समकितमोहनी मिश्रमोहनी न बाधे एटले छवीसनोबन्ध मिथ्यात्व गुणठाणे छे सास्वादनगुणठाणे नपुसकवेद १ तथा मिथ्यात्वमोहनी न बाधे एटले सास्वादनगुणठाणे मोहिनीना चोवीस प्रकृति बाधे छे ॥ ११ ॥

अणचउत्थीवेय विणा, मीसदुगे देसवीयकसायविणा,
अतीयकसायपमत्ते, अपमत्ते दुगे दुसोगविणा ॥१२॥

टीका—अणत्ति मिसदुगे मिश्राविरतसम्यगदर्शनलक्षणेगुणस्थानद्वयेअनतानुबधिचतुष्कस्त्रीवेद विना अभावेनमोहनीयकर्मण एकोनविंशतेरेवबन्ध तत्रकस्यजीवस्यैकसमये सप्तदशानामेवबन्ध मूलत सप्त न बध्यते देशविरतेद्वितीयकषायस्य अप्रत्याख्यानवरणस्यक्रोधमानमायालोभलक्षणस्य देशविरतौबन्धो न भवति। वयरनरतियवियकसाया उरलदुगतोदेस इतिवचनात्, मूलत एकादश न बध्यते। शेषा कषायाष्टकहास्यषट्कपुरुषवेदरूपा पचदश बध्यते। एकजीवस्यबयोदश बध्यते, प्रमत्ते अतीयकसायत्ति। तृतीयकषायस्यप्रत्याख्यानावरणक्रोधमानमायालोभरूपस्याभाव शे-

पाएकादशबध्यते पचदश न बध्यते अपमत्तदुगत्ति–अप्रमत्तेअपूर्वकरणे दुसोगत्ति–अरतिशोकद्विकतेनविनानवप्रकृतीनाबधोभवति । शेषानवप्रकृतय बध्यते । सज्वलनचतुष्क ४ हास्यचतुष्क ४ पुरुषवेदएवनव ॥ १२ ॥

टबार्थ—तथा मीसदुगे कहेता मिश्रगुणठाणे समकित गुणठाणे अनतानुबधी ४ स्त्रीवेद न बाधे एटले चार कषाय, हास्यादि ६ पुरुषवेद ए ओगणीस बाधे मोहनीकर्मनी सात नबाधे देशविरतिगुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे एटले ने चोकडीनी आठ हास्यादि ६ पुरुषवेद १ ए पनर बाधे मोहनीनी प्रमत्त गुणठाणे तीजी चोकडी प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे मोहनीकर्मनी तथा अपमत्तदुगे कहेता अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण एवे गुणठाणे शोक १ अरति १ एबे विना सज्वलना ४ हास्य १ रति २ भय ३ दुगछा ४ पुरुषवेद १ ए नव बाधे बे गुणठाणे ॥ १२ ॥

हासचउहीणनवमे, सुहुमाओ अवधगा उ मोहस्स ।
नामेमिच्छेचउसट्ठि, सासाणे एगपन्नासा ॥ १३ ॥

टीका—हासत्ति हास्यचतुष्क ४ हास्यरति २ भयजुगुप्सा २ लक्षणा प्रकृतय हीयते इतिहास्यचतुष्कहीनेनवमेअनिवृत्तिबादरगुणस्थानेशेषा सज्वलनचतुष्कपुरुषवेदश्चएते पच बध्यते। अनिवृत्तिबादरस्यअतोसज्वलनचतुष्कपुरुषवेदाभावेसूक्ष्मसपरायस्यपरत मोहनीयस्यबधो न भवति । बधइ उ सुहुमो एग इति षटसितिवचनात् । नामेत्ति नामकर्मण मिथ्यात्वेचतु षष्टिप्रकृतयोबन्यते। ती-

र्थंकरनामाहारकशरीराहारकांगोपांगत्रयवर्जएतत्प्रकृतित्रयसम्यग्दर्शनचारित्रानुगचेतनावीर्यस्यप्रशम्नकषाययोगपरिणामेन बन्धात् । तदभावेचात्र न बन्ध सासाणे–सास्वादनेद्वितीयगुणस्थानेनरकगति १ नरकानुपूर्वी २ एकेंद्रियजाति १ द्वीद्रिय २ त्रींद्रिय ३ चतुरींद्रियजातिचतुष्टय ४ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्तरूप १ स्थावरचतुष्क ४ सेवार्त्त १ हुंडक १ आतप १ एतत्त्रयोदशप्रकृतीनामास्वादनेबन्धो न भवति । शेषाण्कपचाशत्नामप्रकृतयो उच्यते ॥ १३ ॥

टबार्थ —हास्यादि च्यार विना नवमे गुणठाणे पाच प्रकृति सज्वलना च्यार ४ पुरुषवेद १ ए पाच बावे सूक्ष्मसपरायथी माडी उपरला सर्व गुणठाणा मोहनीकर्मना अबन्धक छे दशमाथी उपरान मोहनीकर्म न बावे हवे गुणठाणे नामकर्मनी प्रकृति कहेछे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारकद्विक २ जिननामविना चोसट्ठनो बन्ध छे सास्वादनगुणठाणे तेर नामकर्मनी निकली एटले एकावन रही गति ३ जाति पचेन्द्रिय १ शरीर ४ उपाग २ सघयण ५ छेवठविना सस्थान ५ हुंडकविना, वर्णादि ४ आनुपूर्वी ३ नरकविना, विहायोगति २ पराघातादिक ६ त्रसादिक १० अस्थिर ६ ए एकावन बावे ॥ १३ ॥

छसगदुगदुगइगइग, अहीयातीसाअपुव्वकरणज्झा ।
इगइगनवमेदसमे, सेसा नाम न बधति ॥ १६ ॥

टीका—छ सगत्ति १४ मिश्रनाम्न षट्त्रिंशत्प्रकृतयो बध्यते । तिर्यग्द्विक २ दुर्भगत्रिक ३ मध्यसहननचतुष्टय ४ मध्यसस्थान चतुष्टय ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ एता पचदशप्रकृतय सास्वादनातेअतनीता तेनशेषा षट्त्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते ।

ता पट्टविंशत् जिननामसयुक्ता सम्यक्त्वेसप्तविंशत् बन्ध्यते । तथा देशविरतौमनुष्यद्विक औदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचसंहननवर्जा-नाम्न द्वात्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते । प्रमत्तेऽपिताएवद्वात्रिंशद्बध्यते । अप्रमत्तेचअस्थिरद्विकअयश एतेत्रय प्रसज्यते आहारकद्विकमि-ल्नेएकत्रिंशद्बध्यते । अपूर्वकरणेपिएकत्रिंशत्बध्यते । ठइत्ति षट् सगइत्ति सप्तदुगइतिद्विकपुनर्द्विक इगत्ति एक पुन इगत्ति एक । एमि अधिकात्रिंशत् अपूर्वकरणयावत्बन्ध्यते । तद्यथा मिश्रेषट्-त्रिंशत् सम्यक्त्वेसप्तत्रिंशत् । देशविरतोद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेद्वात्रिं-शत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत्, अपूर्वकरणेएकत्रिंशत् प्रकृतयोबध्यते । अपूर्वकरणातेत्रिंशत्यपगमे नवमे अनिवृत्तिबादरसंपरायेगुणस्थाने एका यशोनामकर्मरूपाप्रकृतिर्बध्नाति । दशमे सूक्ष्मसंपराये-प्येकाएवबन्धेभवति । शेषाउपशांतमोहाद्या नामकर्म न बन्ध्यते । एकस्यसातवेदनीयस्यबन्धनसंभवात् ॥ १४ ॥

टबार्थ—मिश्रगुणठाणे नामकर्मनी ठत्तीस बाधे पन्नर नीक-ली ते केही तिरिदुग २ दुर्भग ३ मध्यसंघयण ४ मध्यसंस्थान ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ ए पन्नर न बाधे । तथा समकि-तगुणठाणे जिननाम बाधे सडतीस बाधे देशविरति गुणठाणे बत्तीस बाधे मनुष्यदुग २ ओदारिकद्विक २ वज्रऋषभनाराच १ ए पाच नीकली तथा प्रमत्तगुणठाणे पण बत्तीस नामकर्मनी बाधे तथा सातमे गुणठाणे अस्थिर १ अशुभ २ अजस ३ ए तीन काढीइ आहारकद्विक २ मेलीइ एटले एकतीस प्रकृति बाधे आठमे गुणठाणे इकतीस नामकर्मनी बाधे पछे तीस नीकली तेवारे नवमे दशमे गुणठाणे एक जसनाम बाधे । शेष इग्यारमे, बारमे, तेरमे, चउदमे गुणठाणे नामकर्मनी प्रकृति बाधे नही हेतु अभाव माटे ॥ १४ ॥

आसुहुम अठण्ह, उवसमखीणम्मि सत्तमोहविणा।
चउचरिमदुगवेइई, अघाइकम्माइ नियआइ ॥१५॥

टीका—इति देवचद्रगणि विरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीकायामवाधिकार अघाधिकारमेनविवृण्वता यन्मयार्जितपुण्यदृहकर्मबधमुक्तोलोक सर्वोपितेनास्तु । साप्रतमुदयाधिकारस्तत्रमूलत उदयस्थानानि त्रीणि अष्टौ सप्त चत्वारि तानिगुणस्थानेसभाप्यते । आसुहुमति । सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकमभि याप्यउदयेअष्टानेकर्मप्रकृतयोभवति । अयमय मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकमारभ्य सूक्ष्मसपराययावदुदयेअष्टावपिकर्माणिप्राप्यते, उवसम उपशानमोहलक्षणे । खीणति क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थाद्वयेमोहविनामोहनीयवजयित्वा सप्तकर्माणि उदयेभवति मोहनीयस्योपशानत्वात्क्षीणत्वाद्वा, चरमद्विकेसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिरूपे गुणस्थानद्वये उदये चनस्तोऽघातिकर्मप्रकृतय प्राप्यते घातिकर्मचतुष्टयस्यक्षीणत्वात्, निअयाइत्ति, निजकानिस्वकृतानिनान्यकृतकर्म अन्येनभुज्यते ॥ उक्तच ॥ पचमागे से नूणभतेते अत्तकटाइकम्माइवेयति ? । परकटाइकम्माइवेयति ? गो, अत्तकटाइवेयति नोपरकडाइवेयति ॥ १५ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसपराय दशमा गुणठाणा सुधी आठकर्म्मनो उदय छे उपशानमोहगुणठाणे क्षीणमोहगुणठाणे सातकर्म्मनो उदय छे मोहनीकर्म्मनो उदय नथी चरीम छेहछे तेरमे चउदमे गुणठाणे च्यार कर्म अघाती वेदनी १, आउखो २, नाम ३, गोत्र ४, ए च्यार वदे अघातिनेस्युकहिइ जे आत्माना ज्ञानादिक गुण ते कारणकाय वे धर्मे छे ते माट ते गुणने घात करे ते घाती कर्म कहीइ अने अव्याबाधादिक च्यार गुण ते कार्यरूप छे तेहने आवरे ते अघाती कहीइ ॥ १५ ॥

ओहेमिच्छेवीए, दुवीससत्तरइगारअहीयसय ।
मीसेसयचसम्मे, चउसयसगसोइ देसम्मि ॥१६॥

टीका—अथोत्तरोदयप्रकृतयोगुणस्थानेषुचिंयते,(उच्यन्ते)ओहेमिच्छेइत्यादितत्रकर्मपुद्गलानायथास्वस्थितिप्राप्तानाउदयसमयप्राप्तानां यद्विपाकेनानुभवनेनवेदन स उदय उच्यते । ओघे सामान्येमिथ्यात्वे बीजेत्तिद्वितीयेसास्वादनेद्विविंशत्यधिकशत मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतसास्वादने एकाधिकशतउदयेप्राप्यते तत्रत्रोक्तमेकशतविंशत्यधिकप्रकृतीनासम्यक्त्वमोहमिश्रमोहमिलनेद्वाविंशत्यधिकशतमुदयेप्राप्यते । सम्यक्त्वमोहविपाकस्तुसम्यक्त्वशुद्धतत्त्वश्रद्धानलक्षणमोहयतिशंकाद्यतिचारेण मोहयति ईषन्मलिनकरोतीति सम्यक्त्वमोह मिश्रमोह मिश्रमिथ्यात्वसम्यक्त्वोभयरहित च मोह मिश्रमोहइतिमिथ्यात्वेसप्तदशशतउदयेभवति । मिश्रमोहनीय १ सम्यक्त्वमोहनीय १ जिननाम १ आहारकद्विक २ एतासापचानाउदयोमिथ्यात्वेनास्ति । इदमत्रहृदयमिश्रोदयस्तावत्तसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानेएवभवति । सम्यक्त्वोदयस्तुअविरतसम्यग्दृष्ट्यादौउदयोभवति । आहारकद्विकोदय प्रमत्तादौ, जिननामोदय सयोगिकेवल्यादौभवति । तदिदप्रकृतिपचकद्वाविंशतिशतादपनीयते ततोमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेसप्तदशशतभवतीतिसूक्ष्मत्रिकसूक्ष्मअपर्याप्तसाधारणरूपअत पचमिथ्यात्व च एतत्प्रकृतिपचकस्यमिथ्यात्वेअतोभवति । अयमत्राशय सूक्ष्मनाम्नउदय सूक्ष्मैकेंद्रियेषु अपर्याप्तनाम्न सर्वेष्वपिअपर्याप्तेषु साधारणनाम्नोऽनतवनस्पतिषु आतपनामोदयस्तु बादर पृथिवीकायिपुण्यपर्याप्तेषुएवनचैतेषुस्थितोजीव सास्वादनत्वलभते। नापिपूर्वंप्रतिपन्नस्तेषूत्पद्यते । तथापिनतस्यातपनामोदयस्तत्रोत्पन्नमात्रस्यासमाप्तशरीरस्यैवसास्वादनत्वत्रमनात् समाप्ते च शरीरे तत्रा-

तपनामोदयोभवति । मिथ्यात्वोदय पुन मिथ्यादृष्टावेवतेनैतासाप-चप्रकृतीना मिथ्यादृष्टावुदयस्यानस्तनडदप्रकृतिपचकेपूर्वोक्तसप्तदश शतादपनीयते। नरकानुपूर्व्यपनयने च एकादशशतभवतीत्येतदेवाह " सासाणेइगारसय नरयाणुपुव्विणुदयति " नरकानुपूर्व्युदयोहि नर-के वक्रेणगच्छतोजावस्यभवति न च सास्वादनोनरकगच्छतीति ॥ यदुक्त ॥ बृहत्कर्मस्तवभाष्ये, नरयाणुपुव्विआए, सासणसम्म-मि होइनहुउदयो । नरयम्मि जनगच्छइ । अवणिज्जइ तेनसातस्स ॥ १ ॥ ततोनरकानुपूर्वीमुद्रमनिकालपमिथ्यात्वलक्षणप्रकृतिप-दक सप्तदशशतादपनीयतेशेषसास्वादनेएकादशशतभवतीति । मी-सत्ति मिश्रलक्षणेतृतीयगुणस्थानेशतमेकशतप्रकृतीनामुदय अन-तानुबधिनश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा स्थावरनामएकेंद्रियविक-ला पचेंद्रियजात्यपेक्षयाअसपूर्णा द्वींद्रियजातिर्त्रींद्रियजातिचतुरिंद्रि-यजातयएतासानवानाप्रकृतीनासास्वादनातेउदयात मिश्रेउदयोना-स्ति । इयमत्रभावना । अनतानुबधिनामुदयेहिसम्यक्त्वलाभएवन-भवति ॥ यदाहु ॥ श्रीभद्रबाहुस्वामिपादा पढमिल्लूयाणउदये, नियमासजोयणाकसायाण । सम्मद्दसणलाभ, भवसिद्धियावि न ल-हति ॥ १ ॥ नापिसम्यग्मिथ्यात्वकोप्यनतानुबन्धुदयेगच्छतियो-पिपूर्वप्रतिपन्नसम्यक्त्वोऽनतानुबधिनामुदयकरोति सोपिसास्वादनए-वभवतीत्युत्तरेष्वासामुदयाभावात् । स्थावरेकेंद्रियजातिविकलेंद्रियजा-तयस्तुयथास्वमेकेंद्रियविकलेंद्रियपर्याप्त उत्तरगुणस्थानानितुसज्ञि-पचेंद्रियएवप्रतिपद्यते। पूर्वप्रतिपन्नोपिपचेंद्रियेष्वेवगच्छतिउत्तरेष्वासा-मुदयाभाव । तिर्यगानुपूर्वीमनुष्यानुपूर्वीदेवानुपूर्वीणनदानुपूर्वीउदय मिश्रे न भवति मिश्रेमरणाभावात् । न सम्ममीसो कुणइ कालमितिव-चनात् । सास्वादनवेद्यैकादशाधिकशतात् द्वादशप्रकृतयोऽपनीयते। मिश्रमोहोदयश्चात्रभवति । तेन शतमिश्रेउदये अस्ति । सम्मेत्ति ।

सम्यक्त्वेअविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानेमिश्रमोहोदयोनभवति। तेनशेषा नवनवति तत्र सम्यक्त्वमोहनीयचानुपूर्वीचतुष्टय अत्रउदयेप्राप्यते तत सर्वजीवापेक्षयासम्यक्त्वेचतुरधिकशतउदयेप्राप्यते। तत्रउपशमक्षायिकसम्यक्त्वेसम्यक्त्वमोहनीयस्योदयोनभवति। सम्यक्त्वमोहस्यातिचारहेतुत्वात् एतयोश्चनिरतिचारत्वात् न सम्यक्त्वेमोहोदय। क्षयोपशमसम्यक्त्वत्रतासम्यक्त्वमोहनीयोदयोभवति प्रतिपन्नसम्यक्त्व पूर्वबद्धायु अभिनव वा नध्याकाल कृत्वाचतुर्गतिषुगच्छति तस्यानुपूर्वीउदयोअन्तरालेभवति। तेनचतुरधिकशतचतुर्थेगुणस्थानेउदयेप्राप्यते। सगसीइति अप्रत्याख्यानावरणाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा मनुजापूर्वीतिर्यगानुपूर्वी वैक्रियशरीरवैक्रियागोपागदेवगतिदेवानुपूर्वीदेवायु नरकगतिनरकानुपूर्वीनरकायु दुर्भगअनादेयअयशइत्येतासासप्तदशप्रकृतीनाअविरतिसम्यग्दृष्टयातात्उदयप्रतीत्यछेदोभवति। तत्र इमा सप्तदशप्रकृतय पूर्वोक्तचतु शतादपनीयते शेषासप्ताशीतिर्देशविरतेउदये भवति इदमत्रतात्पर्य द्वितीयकषायोदयेहिदेशविरतिलाभएवनिषिद्ध यदागम। बीयकसायाणुदये, अपच्चक्खाणनामधेज्जाण। सम्मदसणलाभ, विरयाविरयनहुलहति॥ १॥ नामिपूर्वप्रतिपन्नस्यापिआनुपूर्वीउदयस्तुपरभवादिसमयेषुनिष्वपातरालगतावुदयसभव सचयथायोगमनुजतिरश्चावर्पाष्टकादुपरिष्टात्सभविषुदेशविरत्यादिगुणस्थानेषुनसभवति। देवद्विकनरकद्विकचदेवनारकत्रेद्यमेत्रनचतेषुदेशविरत्यादे सभव। वैक्रियशरीरवैक्रियागोपागनाम्नस्तुदेवनारकेषूदयस्तिरयग्मनुष्येतुप्राचुर्येणाविरतिसम्यग्दृष्टयतेषु यस्तुउत्तरगुणस्थानेष्वपिकेषाचिदागमेविष्णुकुमारस्थूलभद्रादीना वैक्रियद्विकस्योदय श्रूयते। सचोत्तरवैक्रियत्वादत्रनविवक्षित गुणस्थानेयोगगणनाया हेतुगणनायातुविवक्षित-

एवदुर्भगमनादेयद्विकमित्येतस्तुनिस्र प्रकृतयोदेशविरत्यादौगुणप्र-
त्ययात्रोदयनइत्येताअविरतेव्यवच्छिद्यतेइतिइगासित्ति ॥ १६ ॥

टबार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिनो उदय चउदमे गुणठाणे कहे छे ते मव्ये ओवे एकसोबावीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आऊखा ४ नामकर्मनीसडसट्टी ६७ गोत्र २ अनराय ५ ए एकसोबावीसनो उदय छे मिथ्यात्वगुणठाणे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ जिननामकर्म १ आहारक २ ए पाच काढीइ तेवार मिथ्यात्वे एकसो सत्तरनो उदय छे अने सास्वादनगुणठाणे सुपम तीन आतप १ मिथ्यात्व १ नरकानुपूर्वि १ ए ६ काढीइ तेवारे एकसो इग्यारनो उदय छे मिश्रगुणठाणेअनतानुबधी ४ स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वि ३ ए बार काढीइ मिश्रमोहनीमेळीइ तेवारे एकसोनोउदय छे, तथा समकितगुणठाणेमिश्रमोहनी १ काढिये अने समकितमोहनी १ आनुपूर्वि ४ ते मेळीइ तेवारे एकसो च्यारनो उदय छे ते मव्येथी देवत्रिक ३ नरकत्रीक ३ वैक्रिययुग २ मनुष्यानुपूर्वि तिर्यचानुपूर्वि १ बीजी चोकडि ४ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ ए सत्तर काढीइ तेवारे देशविरति गुणठाणे सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे ॥ १६ ॥

इगसीछगदुगसयरी, छसठिसठीयइगुणसठीअ
उवसततखीणे, सगपणपन्नाउ वेयति ॥ १७ ॥

टीका—प्रमत्तात् उपशातमोहयावत् एकाशीति प्रमत्ते छगसयरित्ति पन्नसप्तति अपमत्तेदुगसयरित्ति द्वासप्तति अपूर्वकरणेछसठित्तिपट्षष्टि । अनिवृत्तौसठियत्तिषष्टि । सूक्ष्मसपरायेएकोन-

पष्टि । उपशातमोहेएवयोजनीय । इयमत्रभावना । निर्यग्गति निर्यगायु नीचैर्गोत्रउद्योतच तृतीया कषाया प्रत्याख्यानावरणाश्च चार क्रोधमानमायालोभा एत अष्टौसप्ताशीतेर्मध्यादपनीयते । तदाप्रमत्ते आहारकशरीरआहारकांगोपांगलक्षणयुगलप्रक्षेपात् एकाशीतिरुदयेभवति । इदमत्रहृदय । निर्यग्गतिनिर्यगायुर्पीतिर्यग्वेद्येएतेषुचदेशविरताताएवगुणस्थानानिवर्तते नोत्तराणीत्युत्तरेषु तदुदयाभाव । नीचैर्गोत्रतुनिर्यगतिस्वाभाव्यात् । ध्रुवोदयित्वनपरावर्त्तते । ततश्चदेशविरतस्यापिनिरश्चोनीचैर्गोत्रोदयोऽस्त्येवमनुजेषुपुनर्सर्वस्यदेशविरतादेर्गुणिनोगुणप्रत्ययादुच्चैर्गोत्रमेवोदेति । उत्तरत्रनीचैर्गोत्रोदयाभाव उद्योतनामस्वभावस्तिर्यग्वेद्यतेषुचदेशविरताताएवगुणस्थानानिनोत्तराणि । उत्तरेषुनतदुदयाभाव यद्यपियतिर्वैक्रियेप्युद्योतनामोदेति । उत्तरदेहेचदेवजइतिवचनात् तथापिस्वल्पत्वादिना केनापिकारणेनपूर्वाचार्यैर्नविवक्षित इत्यस्माभिरपिनविवक्षितभगाधिकारेविवक्षितमपितृतीयकषायोदयेहिचारित्रलाभएवनभवति । उक्तच ॥ श्रीपूज्यै । तइयकसायाणुदए । पच्चक्खाणावरणनामधेज्जाण । देसिक्कदेसविरइ । चरित्तलभनउल्लहति ॥१॥ इत्येताअष्टौप्रकृतय पूर्वोक्तसप्ताशीतेरपनीयतेशेषाएकोनाशीति । तत आहारकयुगलक्षिप्यतेयतप्रमत्तयतेराहारकयुगलस्योदयोभवति इति एकाशीति । तत निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला २ स्त्यानर्द्धिरूपत्रिक आहारकयुगल एकाशीतेरिदपचकमपनीयते शेषा षट्सप्ततिरप्रमत्तेउदयेभवति । अयमाशयश्चस्त्यानर्द्धित्रिकोदय प्रमादायत्वात् अप्रमत्तेनसभवति । आहारकद्विकचविकुर्वणामाश्रित्यप्रमत्तेएवविकुर्वणअप्रमत्तेपिआहारकोदयीएवनजानि तथापिकेनापिकारणेनऔदारिकोदयमुख्यत्वेननागीकृतमिति आहारकापचयौदारिकोपचयौचाप्रमत्तइतिवचनात् । क्रियमाणकृतमितिसूत्रोक्तत्वा-

नाधिकृतयोगाधिकारेत्वधिकृतमेव । सम्यक्त्वमोहनीय अर्द्धनाराच-
कीलिकासेवार्त्तलक्षणसहननत्रिक पूर्वोक्ताया पदसप्ततेरपनीयते-
शेषाद्वासप्तति अपूर्वकरणेउदयेभवति । भावार्थस्तुसम्यक्त्वमोहे-
क्षपितएवश्रेणिद्वयमारुह्यते इति अपूर्वकरणादौ तदुदयाभाव ।
आदिमसहननत्रयोदयेतुश्रेणिमारोढुमेवनशक्यते । तथाविधविशुद्धे-
रभावात् परिणामविशुद्धिश्चवीर्यबाहुल्याद्भवतिवीर्यबाहुल्यचसहन-
नकारणेनतस्मात् आदिमसहननानामाद्यानूननाटकवीर्योल्लासइति ।
हास्यादिषट्कोदयमाश्रित्यापूर्वकरणेएवभवति । तेनापूर्वकरणाते
एवात तेनानिवृत्तिकरणेहास्यादिषट्कहीनभवति । तेनषट्षष्टि-
रनिवृत्तिबादरेउदयेभवति । वेदत्रिकस्त्रीवेदनपुंसकवेदपुरुषवेद-
लक्षणसज्वलनत्रिक क्रोध १ मान २ मायालक्षण ३ एतासा-
षण्णामनिवृत्तिबादरेछेदोभवति । तत्रस्त्रिया श्रेणिमारोहत्या स्त्री-
वेदस्यप्रथममुच्छेद तत क्रमेणपुवेदस्यनपुसकस्यसज्वलनत्रय-
स्यच, पुसस्तुश्रेणिमारोहत प्रथमपुवेदस्योच्छेद तत क्रमेण स्त्रीवेद
षडेव य सज्वलनत्रयस्योच्छेद षडस्यतुश्रेणिमारोहत प्रथम षड-
वेदोच्छेद तत स्त्रीनेपुवेदस्यसज्वलनत्रयस्योच्छेद एतत्प्रकृति-
षट्कपूर्वोक्तषट्षष्टेरपनीयते शेषा षष्टि सूक्ष्मसपरायेउदयेभवति अत्र
चतुर्थलोभात इयमेकाप्रकृतिषष्टेरपनीयते शेषाउपशातमोहेएकोन-
षष्टिरुदयेभवति। तत ऋषभनाराच १ नाराच २ सहननद्वयउपशात-
मोहेभवति। प्रथमसहननेनैवक्षपकश्रेण्यारोहात् तेनमूलतएवस-
हननद्वयाभावेक्षीणमोहस्यसप्तपचाशत्उदयेभवति तत निद्रा १
प्रचलालक्षणनिद्राद्वयाभावे २ क्षीणमोहस्यचरमसमयेपचपचाशत्
उदयेभवति । अपरेपुनराहु उपशातमोहेनिद्राप्रचलयोरुच्छेद ।
पचानामपिनिद्राणाचोलनापरिणामेभवत्युदय क्षपकाणात्वतिविशुद्ध-
त्वान्नतिद्रोदयसभव उपशमकानापुनरनतिविशुद्धत्वात्स्यादपीति १७

टबार्थ—प्रमत्तगुणठाणे तिर्यग्गति १ तिर्यगायु १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ तीजी चोकडी इए आठ काढीइ अने आहारकद्विकमेळिये तेवारे प्रमत्ते ईक्यासीनो उदय छे अप्रमत्तगुणठाणेथी एहवी ३ आहारक २ नो उदय काढीइ तेवारे छहत्तरनो उदय छे तिहा सातमे गुणठाणे हेतु अधिकारे योगाधिकारे आहारक शरीर कह्यो छे, अने उदयमे ना कह्यो छे ते नवो आहारक लब्धि प्रमत्ते करे अप्रमत्ते न करे, तिणे व्यवहारनये करवाने अभावना छे परक्रजूसूत्रनये आहारक शरीर उदय छे अपूर्वकरणे समकितमोहीनी तीन सवयण काढीये तेवारे बहुत्तरनो उदय छे नवमे गुणठाणे हास्यादिक ७ काढिये तेवारे छासठीनो उदय छे तेमाथी सज्वल ३ वेद ३ ए ६ काढीये तेवारे सूक्ष्मसपराये साठनो उदय छे तेमाथी सज्वलनो लोभ काढीइ तेवारे उपशातमोहगुणठाणेइगुणसाठनो उदय छे बारमे गुणठाणे ऋषभनाराच १ नाराच २ ए काढीये तेवारे पहिले भागे सत्तावननो उदय छे पछे नीद्रा २ काढीइ तेवारे बीजे भागे पचावननो उदय छे ॥ १७ ॥

बायालसयोगम्मि, बारसपयडी अयोगीचरमंते।
वेयईउईरणाय, अयोगीविणुसवगुणठाणे ॥ १८ ॥

टीका—तथाक्षीणमोहातेज्ञानावरण ५ दर्शनावरणचतुष्टय ४ अतरायपचक ५ मपनीयतेनदाशेषकचत्वारिंशत्तीर्थकरनामोदयाच्च तत्प्रक्षेपेद्विचत्वारिंशत् सयोगिकेवलिनिभवति तत सयोगिकेवल्यतेऔदारिकद्विक २ अस्थिरद्विक २ खगतिद्विक २ प्रत्येकत्रिक ३ षट्सस्थानानि अगुरुलघुचतुष्क अगुरुलघु १ उपघात २ परा-

घात २ उच्छ्वास ४ लक्षण वर्णचतुष्क वर्ण १ गन्ध २ रस ३ स्पर्श ४ लक्षण निर्म्माण १ तैजसशरीर १ कार्मणशरीर १ वज्रऋषभनाराचसंहनन १ दुःस्वर १ सुस्वर १ सातासातयोरेकतरत् कस्यचित्सातोच्छेदेऽसातातिष्ठति कस्यचित्असातोच्छेदेसात च तिष्ठति इति विंशतिप्रकृतीना छेदे तत अयोगिकेवलिनि द्वादशप्रकृतय उदयेभवति, त्रसत्रिक ३ मनुष्यद्विक २ पचेन्द्रियजाति १ जिननाम १ उच्चैर्गोत्र १ सुभगत्रिक ३ एकावेदनीयप्रकृति १ एव द्वादश अयोगिचरमाते व्यवच्छिद्यते। इत्युदयाभावे निष्कर्मतेति प्रसगागतमुदीरणास्वरूप लिख्यते। उदयावस्थाऽप्राप्तानां सत्तागतानां चलीभूतानां वीर्यकरणेनाकृष्य उदयत्वेन नीयते सा उदीरणा॥ उक्तच कर्मप्रकृतौ "जकरणेणुक्कड्डीय। उदये दिज्जइ उईरणाएसा" इतिवचनात्, सा च ओघतोद्वाविंशत्यधिकशतभवति। तत्रमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशत सास्वादने एकादशाधिकशत। मिश्रे शतसम्यक्त्वे चतुरधिकशत देशे सप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति तत्राप्रमत्ते उदये(स्त्यानर्द्धि)वीणर्द्धित्रिक ३ आहारकर्द्धिक २ छिद्यते, उदीरणायातु एतत्पचक वेदनीयद्विक मनुजायु, उदीरणा तु सक्लेशे न भवति तत पर सक्लेशाभावात् प्रकृतिपय नोदीर्यति तेन त्रिसप्तत्युदीरणाभवति। तत सहननत्रिक सम्यक्त्वमोहनीय एतच्चतुष्कापगमे एकोनसप्ततिरेवप्रकृत्यपहार सयोगिकेवलिनि एकोनचत्वारिंशदुदीरणाभवति। सयोगिचरमाते सर्वग्रासोदीरितत्वात्। अयोगिगुणे उदयएव नोदीरणा एव अयोगिनविनासर्वगुणस्थाने उदीरणाज्ञातव्या। अनपचशीतिसत्कर्मापि स्तिबुकसक्रमेण सक्रमप्यक्षपयति इतिशेष ॥ १८ ॥

इत्यार्थ—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ ए चउद काढीये तीर्थंकरनामभेलिये तेवारे सयोगीकेवलीगुणठाणे

वेनाडीसनो उदय छे ते वेनाडीस मध्येथी औदारिक २ अस्थि २ विहायोगति २ प्रत्येक १ संस्थान ६ वर्ण ४ अगुरुलघु ४ निर्माण १ तैजस १ कार्मण १ प्रथम संघयण १ दुःस्वर १ सुस्वर १ एक वेदनी ये तीस काढीये तेवारे अयोगीगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे अयोगीचरमसमये तेहनो अंत थाय ए उदय, तीसडीज उदीरणा एटलो विशेष जे प्रमत्तगुणठाणे वेदनी २ आउखो १ मनुष्यनो ए तीणनी उदीरणा सातमेगुणठाणे नीकले एटले उदये ५ नीकले उदीरणाए आठनीकले एटलो भेद छे तेरमे गुणठाणे ओगुणत्रीसनो उदय छे तेरमानें अंते उदीरणा टले अयोगीगुणठाणे उदीरणा नथी सर्वथा उदय थुओ छे बार प्रकृतिना दल सत्ता विद्यमान छे पण वेद्यसत्तागत नथी अवेद्यसत्तागतने आश्रयिने उदय कह्यो ते इहां नथी ते माटे अयोगी ॥ १८ ॥

जा खीणता पणपण, उदओ नाणतरायकम्माण ।
थीए नवयपमत्ते, छ चउ खीणमि वेयति ॥१९॥

टीका—जाखीणति १९ अथप्रतिकर्मप्रतिगुणस्थानस्थितिमजाह। यावत्क्षीणस्य पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात्क्षीणमोहाना पंचज्ञानावरणप्रकृतय पंचांतरायप्रकृतय तासामुदयोभवति अनेन ज्ञानावरणपंचकांतरायपंचकाना क्षीणमोहयावत् उदयोऽस्ति अत यथाक्रमप्रमत्तादिगुणस्थानेषु ज्ञानावरणीयांतरायप्रकृतीना दलिका सरसा प्रतिसमय परिणामविशुद्धानिर्जीर्यमाणाअपिसर्वथाप्रकृत्यभावोक्षीणमोहातविना न भवति। तेनसर्वप्रकृतिपंचकपंचकउदयेसत्ताया भवत्येव। ज्ञानावरणीयांतराययो क्षयोपशम प्राग्दृष्ट। क्षयस्तुक्षी-

णमोहाते एव क्षायिकचारित्रविशुद्धाएवानयो क्षयोदृष्ट । बीयेत्ति द्वितीये दर्शनावरणीयाख्ये कर्मणि प्रकृतिनवक प्रमत्ते प्रमत्तगुणस्थानकयावत्उदयेभवति। अनेकजीवापेक्ष सूत्र तुएकजीवमाश्रित्यदर्शनावरणीयेचतुष्पचएवमुदयस्थानद्वय एव प्रमत्तातयावत्स्त्यानर्द्धित्रिक उदयेसभवति। यत्रपिस्त्यानद्वयुदयेपरिणामाशुद्धत्वतथापिनगुणस्थानाभाव पारतन्त्यात्करिदष्ट्रोत्पाटकशिष्यस्यसयान्निष्कासन । नतुगुणस्थानकाभावे किंतु स्त्यानद्वयुदयेकदाचित्पूर्वधरादिश्रुतवता पाघातायभवति तदर्थमपनयइति । अप्रमत्तप्रथमसमयत क्षीणमोहस्य द्विचरमसमययावत् स्त्यानर्द्धित्रिकहीन निद्रा १ प्रचला २ द्वयदर्शनचतुष्क च एवपट्प्रकृ युदयोभवति। चउत्ति, दर्शनावरणचतुष्क क्षीणमोहस्यचरमसमयेउदयोभवति। भावनाचपूर्वभावितैव ॥१९॥

टबार्थ—गुणठाणे उदीरणा नथी, सत्ता पच्यासी छे तेस्तिबुकसक्रमे नार मध्ये सक्रमी खपे छे, हवे आठकर्मनो भिन्न उदय विहचे छे खीणमोहगुणठाणा सुधी पाच पाचनो उदय छे ज्ञानावरणी तथा अतरायनो बारमागुणठाणा सुधी उदय छे बीजा दर्शनावरणी कर्मनो प्रमत्तगुणठाणा सुधी नवप्रकृतिनो उदय छे अप्रत्तथी माडी बारमागुणठाणाना प्रथमभाग सुधी दर्शनावरणी छ प्रकृतिनो उदय छे, थीणद्धीनीन नथी बारमाने छेहले भागे दर्शनावरणी च्यारनो उदय छे तेरमे चउदमे दर्शनावरणीनो उदय नथी ॥ १९ ॥

छपणदुगदुगअहिया, वीसाअठारचउदस दुगम्मि ।
तेरससगइगउदयो, सुहमजा मोहणीजस्स ॥ २० ॥

अथमोहनीयप्रकृतीना उदयो गुणस्थानेदिशन्नाह, छपणत्ति

छइति,षडअधिकाविंशतिमिथ्यात्वेमोहनीयस्योदयस्तत्रसम्यक्त्वमोह-मिश्रमोहोदय स्वस्वस्थानेएवभवतितेन मिथ्यात्वेकषायषोडशकनो-कषायनवक मिथ्यात्वमोहश्चएवषड्विंशतिप्रकृत्युदयोऽनेकजीवापेक्ष-यामवति । एकजीवापेक्षयाऽत्कर्षेन प्रकृतिदशकमेवोदेति । षण्णति, पचाधिकाविंशति पचविंशति सास्वादनेउदयेभवति । मिथ्यात्वो-दयश्चमिथ्यात्वेएव नोत्तरत्र, दुगदुगत्ति-द्विकद्विकअधिकाविंशति । इत्यनेनद्वाविंशतिर्मिश्रेद्वाविंशतिरेवअविरतसम्यक्त्वेउदयेभवति । तत्रअनतानुबधिचतुष्टय सम्यक्त्वमोह मिथ्यामोहविनाद्वाविंशतिरुद-येमिश्रेभवति । अनतानुबधिचतुष्कमिथ्यात्वमोहमिश्रमोहोदयवि-नाशेषाद्वाविंशति सम्यक्त्वेउदयेभवति । अष्टारत्ति-देशविरतौ अ-प्रत्याख्यानचतुष्टयमतरेण शेषाअष्टादशमोहनीयप्रकृतय उदयेभवति। प्रत्याख्यानसज्वलनाष्टक नोकषायनवक सम्यक्त्वमोहनीय च एता उदयेभवति। प्रमत्ते प्रत्याख्यानावरणचतुष्टयहीन प्रकृतिचतुर्दशकमु-दयेभवति।अपूर्वकरणाख्ये गुणस्थाने सम्यक्त्वमोहविना त्रयोदशप्र-कृतयउदयेभवति। अनिवृत्तिबादरे हास्यषट्कोदयाभावे शेषा सप्तउ-दयेभवति । अपूर्वकरणातेहास्योदयसभवस्तुनिमित्ताल्पत्वात्स-निमित्तैकाग्रतायाहर्षोदय प्रशस्तोपिहास्यसद्भावेएवभवति । एव षट्कमपिभावनीय अनिवृत्तिबादरेतुशुक्लध्यानव्यापकत्वात्स्वरू-पावलबनमुख्यत्वेननदैकाग्रतायामहानदएव नतु हर्ष । आनदहर्ष-यो क प्रतिविशेषस्तत्राह, आत्मोपयोगयोगोल्लासरूप हर्ष । आ-त्मोपयोगस्वभावविश्रातिसुखानुभवलक्षणआनदइति, हर्ष हास्य-रत्युदयसहाय्यात्, पश्चात्तापश्चअरतिशोकोदयसहायात् । दोषात्स-कोच भयोदयसहायात्भयोद्वेग । प्रशस्तजुगुप्सासाहायात् अत्रप्र-शस्तेप्रशस्त अप्रशस्तेऽप्रशस्त एवसर्वत्रभावनीय, इगत्ति-सू-क्ष्मसपरायाख्येदशमेगुणस्थाने, इगेत्ति-सज्वलनलोभाख्यमेकत्र-

पिष्टसमुदयेभवति । इयमत्रभावना सूक्ष्मसपराये किट्टीकृतानतभागसूक्ष्मलोभदलिकानामुदयोऽस्तिनद्विपाकाध्यवसायानामत्यतसूक्ष्मत्वात् नत्र च नगोचरीभवति । अनुभवगम्याएवश्रुतज्ञानाधारध्यानावलनकत्वात् श्रुतज्ञानस्यद्रव्यश्रुताधीनत्वात्द्रव्यश्रुतासिमुखत्वचऔदयिकाधीनइतिमोहनीयस्योदय सूक्ष्मसपराययावदेवनपरत उपशातमोहादिषुमोहोदयाभावात् ॥ २० ॥

टबार्थ —मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो, मिथ्यात्वगुणठाणे वीसनो उदय छे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनीनो उदय नथी सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्वमोहनी विना पचवीसनो उदय छे मिश्रगुणठाणे अनतानुबधी ४ समकितमोहिनी १ मिथ्यात्वमोहिनी ६ ए छ विना बावीसनो उदय छे समकितगुणठाणे बावीसनो उदय छे देशविरतिगुणठाणे अप्रत्याख्यानी च्यार विना अढारनो उदय छे प्रमत्तगुणठाणे प्रत्याख्यानी चोकडी विना १४ नो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे पण १४ नो उदय छे आठमे गुणठाणे समकितमोहिनी विना तेरनो उदय छे अने नवमे अनिवृत्तिबादरगुणठाणे हास्य छ विना सातनो उदय छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एक लोभसज्वलननो उदय छे इग्यारमे बारमे तेरमे मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो काइ उदय नथी अमोही छे ॥२०॥

चउ उदओआइचउगे, देसेदुगसेसयम्मि (सेसएसु) इगउदओ ॥
आउस्सपेयणीस्सय उदओ दुणतुसवत्थ ॥ २१ ॥

टीका—उदओत्ति—आयुष्कर्मणि आदिचतुष्के मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रऔपशमिकसम्यक्त्वलक्षणे प्रथमगुणस्थानचतुष्के चउ-

उदओ चतुर्णांआयुष्कर्मणा उदयोभवति चतुर्ष्वपिगतिषुगुणस्थान-कचतुष्कसभवात्। देशे देशविरताख्ये पचमे गुणस्थाने दुर्गतिरा-युस्तिर्यगायुर्लक्षणद्वयउदयेभवति । सेसएसुत्ति–शेषकेषु प्रमत्तात् अयोगिकेवलिपर्यंतेषु गुणस्थानेषु एकोदय एकमेवनरायुरुदयेभवति। सद्विवेकवत सयम सभवति तेन सयमवद्गुस्थानानिमनुष्यस्यैवभ-वति । आउस्सत्ति इतिआयुष उदयोनिवेदित वेदनीयस्योदय द्वयोरपिसर्वत्रसर्वगुणस्थानेषुभवति । यद्यपिअयोगिकेवलिनि एक-वेदनीयोदयस्तथापिभिन्नजीवापेक्षयाकस्यचित्सातस्यकस्यचिदसात-स्य एवसर्वजीवापेक्षयाअयोगिचरमातपाद्दुभयवेदनीयोदय ॥२१॥

टचार्थ —देशविरतिगुणठाणेतिर्यचनोआउखो तथा मनुष्यनो आउखो उदय छे शेष उट्टागुणठाणाथी माडी चउदमागुणठाणा सुधी आउखाकर्म आश्रयीमिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ समकितएच्यारगुणठाणेच्यारआउखानो उदय छे, वेदनीकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय सर्वचउदगुणठाणे उदय छे, एक जीवने एक समय एक वेदनी उदय होय, परअनेक जीव आश्रयी इम छे ॥ २१ ॥

चउसठी गुणसठी, इगपणपन्नाचोयालदुगठाणे ॥
बायाला अपमाये, नवहीयतीसचउगुणेसु ॥ २२ ॥

टीका—अथनामकर्मप्रकृतीर्गुणस्थानेषुविभजन्नाह चउसठीत्ति तत्रमिथ्यात्वेआहारकद्विकजिननामविना [illegible] षष्टिर्नामप्रकृत्युदये भवति जिननामोदय सयोगिकेवलिनिआहा[illegible] प्रमत्ताप्र-मत्तेषु तेन न मिथ्यात्वेउदय एकोनषष्टि सास्वादनीय, भवति सूक्ष्म-निकातापनरकानुपूर्व्वीलक्षणप्रकृतिपचकमिथ्यात्वे[illegible]दय नसास्वा-

दनादिषु इगपणपन्ना इति इगपन्ना एकपचाशत् मिश्रे नामकर्मप्रकृतय उदयेसति,स्थावरनामकर्म जातिचतुष्कशेषानुपूर्वीत्रिक च मिश्रेनोदय कारणभावनाचपूर्ववत् ,सम्यक्त्वेआनुपूर्वीचतुष्कोदयस्तेनपचपचाशदुदय सभा यते,दुगठाणेत्ति द्विकगुणस्थानकेदेशविरतिप्रमत्तारये गुणस्थानद्वयेचतुश्चत्वारिंशन्नामकर्मप्रकृतीनामुदयोभवति तत्रदेवद्विकनरकद्विकमनुजानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी एतासा चअविरतौसत्यामुदयात् वैक्रियस्यसहजस्याविरतौएवोदयात्,उत्तरवैक्रियस्यकारणेनाग्रहीतत्वात् दुर्भगत्रिकगुणप्रत्ययान्नोदयइति प्रमत्तेचतिर्यग्गतिउद्योतरूपप्रकृतिद्वयतिर्यग्मुख्यवेद्यचनापनीत तथापि आहारकद्विकोदयात्चतु चत्वारिंशदेवप्रकृतीनामुदयोज्ञेय ।अपमायेत्ति-अप्रमादलक्षणेसप्तमेगुणस्थानेआहारकद्विकहीनानाद्विचत्वारिंशत्प्रकृतीनामुदयोभवति आहारकोदयश्चाप्रमत्तपर्यंत हेत्वधिकारेदृश्योऽपिलब्ध्युदयोत्कर्षाभावान्नाधिकृत तत्कारणचकेवलिनोविदन्ति, अतिमसहननत्रिकाभावेऽपूर्वकरणाद्युपशातमोहातेषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुनवभिरधिकाविंशत्नवाधिकत्रिंशदुदयेभवति ॥ २० ॥

टबार्थ —हवे नामकर्मनी प्रकृतिगुणठाणे कहे छे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक जिननाम विना चोसठिनो उदय छे, तथा सास्वादनगुणठाणे सूक्ष्मत्रिकआतप १ नरकानुपूर्वि १ ए पाच विना ओगणसाठनो उदय छे मिश्रगुणठाणे स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वी ३ वलि काढीइ तेवारे एकावन्ननो उदय छे एकावन्नमा आनुपूर्वी ४ मेलीये तेवारे समकितगुणठाणे पचावन प्रकृति नामकर्मनी उदये छे ते मध्येथी वेद २ नरक २ वैक्रिय २ मनुष्यानुपूर्वी १ तिर्यगानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ इग्यार विना चौवालीसना उदय छे पाचमे देशविरति गुणठाणे

छे छठे प्रमत्तगुणठाणे तिर्यंचनीगति १ उद्योत १ ए बे नीकळे अने आहारक मेळे, इहा पण चौमालीस नामकर्मनी प्रकृतिनो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ दुर्गविना बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, छेहला सवयण ३ काढिये एटले ओगुणचालीस प्रकृतिनो नामकर्मनी आठमे तथा नवमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे उदय छे ॥ २२ ॥

सगतीसखीणमोहे, अडतीससयोगि नवअयोगमि ।
नामुदयो गोयम्मि, जादेसिदुगम्मिगमियरे ॥ २३ ॥

टीका—सगतीसत्ति-सप्तअधिकात्रिंशत्सप्तत्रिंशत् क्षीणेक्षीणमोहेउदयत्वेनभवति। क्षपकश्रेणिप्रारभश्चप्रथमसहननवत एवतेनसहननद्विकाभावात् । सप्तत्रिंशदुदय क्षीणमोहेभवति । तीर्थंकरनामोदयेक्षिप्तेअष्टात्रिंशदुदयेनामप्रकृतय सयोगिगुणस्थानकेउदयेभवति। अयोगिकेवलिनि चतुर्दशगुणस्थानके न च नामकर्मप्रकृतयोवेद्यते। अप्रशैलेशीकरणे घनीभूतत्वात्शरीराद्युदयाभावएवतेननाप्रनवनामप्रकृतीनाचर्जावविपाकित्वात् आत्मप्रदेशेपुनतद्दलानांसन्निकर्षात् तद्विपाकश्चामूर्त्तादिगुणरोधलक्षणसद्भावादवगत यइति नामोदयो एव प्रकारेणनाम्नउदयोज्ञात य । गोयमित्ति गोत्रेकर्मणि जादेसतियावत्देशविरतिगुणस्थानकेतावद्द्विकउच्चे नीचैलक्षणगोत्रद्विकउदयेसभवति । इतरपुप्रमत्तादारभ्यअयोगिकेवलिपर्यंतेपुगुणस्थानकेपु इगत्ति एकउच्चैर्गोत्रएवोदय गुणवतानीचत्वनास्त्येव हरिकेशीप्रमुखेपुउच्चैर्गोत्रोदयएवदेवादीनापूज्यत्वात्। स्वयचासकोचात् नीचैर्गोत्रोदयीस्वयमेवसकुचतेधर्मद्वेषेदुगछाचद्वेषप्रत्यया न तेषानीचैर्गोत्रोदय एवज्ञेयम्॥इति देवचद्रगणिविरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीका-

इयमुदयाधिकार उदयाधिकारस्यार याकरणेविज्ञापितचश्रीपूज्यै निष्टमुदयेभवत्व यापकोजन ॥ २३ ॥

टबार्थ—ते मध्ये ऋषभनाराच १, नाराच २, ए बे संघयण विना साटत्रीस प्रकृतिनो उदय पीणमोह गुणठाणे छे तेरमे सयोगी गुणठाणे तीर्थंकरनाम भेलीइ तेवारे आडत्रीसनो उदय छे चउदमे अयोगी गुणठाणे त्रस ३ शुभग ३ मनुष्यगति १, पचेंद्रीजाति १, जिननाम कर्म ए नवनो उदय छे ए नाम कर्मनो उदय गुणठाणाने विषे कह्यो गोत्रकर्मनो देश विरति गुणठाणा सूधी बे गोत्रनो उदय छे ठाथी पछे एक-उच गोत्रनो उदय छे एटले उदयनो अधिकार कह्यो ॥२३॥

उइरतिपमत्तता, सगट्ठमी(समी)सट्ठआउवेयाविणा ॥
छगअपमत्ताइ तओ, छपचसुहुमोपणुवसतो ॥२४॥

टीका—अथमूलोदीरणागुणस्थानेविभजयन्नाह । तत्रउदीरणास्थानानिमूलत पचअष्टौसप्तषट्पचद्वय तत्रोच्यते उइरति इत्यादि २४ उदीरणालक्षणचक्रमप्रकृतौ जकरणेणुवुट्टिया उदए दिज्जेए उइरणा-एसा पगइट्ठिइअणुभागप्पएसमुक्कत्तरविभागा १ यत्कर्मनापन्नपरमाण्वात्मकदलिककरणेनयोगसज्ञिकेनवीर्यविशेषेणकषायसहितेन असहितेनचउदयावलिकाबहिर्वर्त्तिनीभ्य स्थितिभ्योऽपकृष्य उदयेदीयते उदयावलिकायाप्रक्षिप्यतेएषाउदीरणा उक्तच उदयावलियबाहिरिल्लठिईहिंतो कसायसहिएण असहीएणं वा योगसन्नेणकरणेण दलीयमाकदियउदयावलियापवेसणउदीरणत्ति साचचतुर्विधा तद्यथा प्रकृत्युदीरणास्थित्युदीरणाअणुभागोदीरणाप्रदेशोदीरणाच एकैकापिद्विधामूलप्रकृतिविषयाउत्तरप्रकृतिविषयाच अत्रप्रकृत्युदीरणावसर

मिथ्यादृष्टिप्रभृतय प्रमत्तातायावदप्याप्यनुभूयमानभवायुरावलिका-
वशेपनभवतितावत् सर्वेप्यमीनिरन्तरमष्टावपिकर्माण्युदीरयन्ति आ-
वलिकावशेपेपुअनुभूयमानेभवायुपिसप्तवआवलिकावशेपस्यकर्मण
अनुदितदलिकाभावान्नोदीरणा उदीरणाहिआवलिकामात्रमेवदलि-
कमुदीरयति तस्यचोदीरितत्वाभेति मीसट्ठत्ति सम्यग्मिथ्यादृष्टि पुन-
रष्टावेवकर्माण्युदीरयति नतुकदाचनापिसप्तसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्था-
नकेवर्त्तमानस्यसतआयुपआवलिकावशेपत्वाभावात् सद्यनर्मुहूर्त्तव-
शेपायुष्कएवतद्भावपरित्यज्यसम्यक्त्वमिथ्यात्वचानियमात्प्रतिपद्यते
इति अप्रमत्तादयस्त्वपोऽप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरलक्षणावेद्यायु-
र्विनावेदनीआयुपीअन्तरणपट्कर्माण्युदीरयन्ति तेपामनिविशुद्धतपावे-
दनीयायुपोरुदीरणायोग्याध्यवसायस्थानाभावात् वेयणीआणपमत्तो
इतिकर्मप्रकृतिवाक्यात् तत्रपट्अनन्तरोक्तानिनामानिचनामहुदीरयन्ति
यावन्मोहनीयमावलिकावशेपनभवति आवलिकावशेपेचमोहनीयेत-
स्याप्युदीरणायाअभावात्शेपाणिपचकर्माणिउदीरयन्ति "छपचसुहुमो"
सूक्ष्म सूक्ष्मसपरायाख्य गुणस्थानक प्रथमपट्आवलिकाशेपे-
चलोभोदय पचोदीरयन्ति सूक्ष्मइतिसूक्ष्मसपरायगुणस्थानस्थोजीव
लक्षणयाज्ञेय एवसर्वत्र पणुवसन्तोत्ति उपशान्तमोहवेदनीयायुर्मोहनी-
यवर्जाणिपचकर्माण्युदीरयति ॥२४॥

टबार्थ —हवे उदीरणा गुणठाणे मूल कहे छे मिथ्यात्वसास्वादन १, अविरतिसमकित १, देशविरति १, प्रमत्त १, एतले गुण-ठाणे सातनी पण उदीरणा छे आठनी पण उदीरणा छे तिहा भवने अते एक आवलि आउखो शेष थाकता आउखानो उदय पामीये पर उदीरणा न पामीइ तेणे सातनी उदीरणा पामीइ बीजू आठनी उदीरणा छे अने मिश्र गुणठाणे मरण

नथी ते माटे आटनी उदीरणा छे अने अप्रमत्तादिकनीन गुणठाणे वेदनी कर्म तथा आउखानी उदीरणा नथी जे ए कर्मने उदीरणा सहेश परिणामे छे ते माटे सातमायी आगले वेदनी कर्मनी उदीरणा न करे उदयावली काई आणी मुक्या छे ते उदय आवे छे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे पहिले भागे छनी उदीरणा छे, पछे मोहनी कर्मनो उदय एक आवलि शेष रहि तेवारे पाचनी उदीरणा छे इग्यारमे गुणठाणे पांचनी उदीरणा ॥२४॥

पणदोखीणदुजोगी, णुदीरगअयोगीसतमोह जा ॥
अडसगखीणअमोहा, चउचरिमदुगेयसतसा॥२५॥

टीका—पणदोखीणत्ति २५ क्षीणमोहोअनतरोक्तानि पचकर्माण्युदीरयतितानिचनावदुदीरयतियावत्तज्ञानावरणदर्शनावरणान्तरायाण्यावलिकाशेषाणिभवति आवलिकाशेषेतुद्वेएव नामगोत्रलक्षणेकर्मणीउदीरयति दुजोगित्ति द्वेकर्मणीनामगोत्रारये योगामनोवाक्कायलक्षणाविद्यते यस्ययोगीइत्यनेनसयोगीकेवल्युदीरयति घात्युदयाभावात्नमूल्न अघातिषुवेदनीयायुषोस्त्रदीरणापूर्वोक्तकरणादेवनभवति अतोद्वेएव "णुदीरगअयोगित्ति" अयोगीकेवलीनकस्याप्युदीरक योगवीर्याकरणवीर्याभावात् इत्युक्तामूलोदीरणा उत्तरोदीरणा तु ओघतद्वाविंशत्युत्तरशतमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतसास्वादने एकादशाधिकशत सम्यक्त्वे चतुरधिकशतदेशे सप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति अप्रमत्तेषीणद्वीनिकाहारद्विवेदनायद्विकमनुजायुर्वर्जशेषत्रिसप्तति उदीरयतिअपूर्वेत्वेकोनसप्तति रनिवृत्तिबादरेत्रिषष्टि सूक्ष्मेसप्तपचाशत् उपशातेषट्पचाशत् क्षीणमोहप्रथमभागेचतुपचाशत् द्विचरमसमयेद्विपञ्चाशत् सयोगिकेवलिनिचतुर्दशापग-

मेतीर्थकरोपेतेचएकोनचत्वारिंशत् उदीरणायाभवति सयोग्य-
तेसर्वेषामपिउदीरणाभाव सचग्रासोदीरितत्वेनाकरणवीर्यत्वेनच
स्वामित्वतूदयवदेवभावनीय वेदनीयमनुजायुष स्वामित्वप्रम-
त्तपर्यंतमेवेति इति श्रीदेवचद्रगणिविरचितायास्वोपज्ञ विचारसार
टीकायाउदीरणाधिकार ॥ कर्मोदीरणाव्यारयाकरणेयाथार्थ्यभाव
विज्ञानेपरभावानुगवीर्यं स्वभावसमाप्तकभवतात् ॥ अथसत्ताक्रम
कर्मणाज्ञानावरणादीनायोग्यपरमाणूनाअनसक्रमणादिकरणेनआत्म-
प्रदेशावस्थितानालोलीभावमापन्नानायास्थितिरवस्थानसद्भाव सत्ता
चतुर्विधाप्रकृत्यादिभेदै तत्रमूलत सत्तास्थानानिअष्टौसप्तचतु-
र्लक्षणानिगणितत्र सतमोहजा इतिशात उपशात अतुरया-
पन्नमोहोयत्रस शातमोह एकादशगुणस्थानकयावत् अष्टानाम-
पिकर्मणासत्ताअस्त्येव "सतेअटयालसय" जावुसमुविजिणुविइअनइए
इतिकर्मस्तववाक्यात् "सगखीणत्ति"क्षीणमोहेगुणस्थानकेमोहकर्म-
तापन्नदलिकानासर्वथात्मप्रदेशावस्थितेरभावात् अमोहामोहकर्मरहि-
तसप्तकर्मसत्तायाप्राप्यते "चउचरिमदुगेत्ति" चरिमद्विकेसयोगिअ-
योगिलक्षणेगुणस्थानेचउइतिचत्वारिवेदनीयायु नामगोत्रलक्षणानि-
सत्तायासति घातिनातुसर्वथाक्षयात् तत्रसयोगिगुणेउदीतानिअ-
नुदितान्यपिसत्तास्थानानिलभ्यते अयोगिगुणेतुउदितान्येव अ-
त्रपचाशीतिसत्कर्मण सर्वप्रकृत्युदयस्तुस्तिबुकसक्रमेणज्ञेय स्तिबु-
कसक्रयश्चयथामिनशरावकेबिंदुमात्रजलद्विबिंदुमात्रजलशनै शनै
परिक्षिप्यते ततनजलशरावकेभिन्नदृष्टिगोचरीभवति शरावकास्था-
मेवलभते तथाएता पचाशीतिप्रकृतय यथायोगद्विचत्वारिंशत्प्रकृ-
तिषुसक्रमतितदवस्थालभते भिन्नाइतिचेत्नसक्रम्यते तर्हि पएसक-
म्म नीयमा वेएइ इतिभगवतीवाक्यात् अनुदितानाक्षयाभावस्तेनस-
क्रम्यक्षपयतिइतिज्ञेय गुणाधिरूढोजीवोद्विविध उपशमश्रेणिगतो-

क्षपकश्रेणिगतश्चतुश्चारित्रमोहगतैकविंशति प्रकृतिउपशमनानउपशमश्रेणिगत तेषामेवक्षपणात् क्षपकश्रेणिगत द्वयोरपिजीवयो र्वेवेतुतीनमदस्थितिरसबन्धरूपोभेदोनतुप्रकृतिबन्धभेद उदयोदीरणायानभेद सत्तायाप्रकृतिभेदात्मिताधिकारस्तत्रस्वल्पत्वात्प्रथममुपशामिकानामेवोच्यते ॥ २५ ॥

टबार्थ—बारमे खीण मोहगुणठाणे पहिले भागे पाच मल कर्मनी उदीरणा छे पछी ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी १ अतराय १ ए तीन कर्मनी आवलिका शेष उदय थका उदीरणा नथी ते माटे नाम १ तथा गोत्र १ ना उदीरणा छे । ए तेरमे सयोगी गुणठाणे नाम १ तथा गोत्र १ नी उदीरणा छे । अयोगी गुणठाणे उदीरणा नथी, ते कारणे अजोगी गुणठाणे करण वीर्यनो अभाव छे अने उदीरणा ते करण वीर्यथी थाये ते माटे उदीरणा नथी । हवे सत्तानो अधिकार कहे छे ॥ इग्यारमा गुण ठाणा पर्यन्त मूल आठ कर्मनी सत्ता छे । सत्ता आठ कर्मनी छे, क्षीण मोह गुणठाणे मोहनी कर्म्मनी सत्ता नथी, तेणे सात कर्मनी सत्ता छे तेरमे चउदमे गुणठाणे वेदनी १ तथा नाम १ गोत्र १ आऊषो १ ए च्यार कर्म्मनी सत्ता छे ॥ २५ ॥

अडचत्तसयसता, उवसत ताविजिणुवीयतइए
उवसमसमत्तीण, उवसमसेढी पवन्नाण ॥ २६ ॥

टीका—अडचत्तेति २६ मिथ्यादृष्टिगुणस्थाना प्रभृतिउपशातमोहगुणस्थानयावदष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तायाभवति विजिणुत्ति विगतजिननामयस्मात्तद्विजिनजिननाम विरहितनदेवाष्टचत्वारिं-

शशतभवति केन्याह द्वितीयेसास्वादने तृतीयेमिश्रदृष्टौ सामाणमिस्स रहिसुवानि त्थमिनिवचनात् सासादनमिश्रयो समचत्वारिंशशतभवति इदमत्रहृदय इहमिथ्यादृष्टेरष्टचत्वारिंशमपिशतमत्तापा ॥ यत्राह । प्राग्बद्धनरकायु क्षयोपशमिकसम्यक्त्वमवाप्यतीर्थकरनामोपचमार-भ्यते तदासौनरकेपूत्पद्यमान सम्यक्त्वमवश्यत्वमति तेनमिथ्यादृष्टे-स्तीर्थकरनामोऽपिसत्तामभवति पुन पूर्वअप्रमत्तादिगुणस्थाहारक-द्विकबद्धरयेति । अत्रायुश्चतुष्टयतुबद्धजीवापेक्षया सासादनमिश्रयो-स्तुतस्मिन्नेवजिननामरहितेसमचत्वारिंशशतसत्तायाभवति जिननाम-सत्कर्मणोजीवस्यतद्भावानवामे स्तद्बारभस्यचगुद्रसम्यक्त्वन बृ हत्कर्मस्तवभाष्येप्युक्त नित्थयरेणविहीण सीयालसयतुसतण्डोइ सा-सायणम्मिउगुणे सम्मामीसेयपयडीण १ अविरतसम्यग्दृष्टयादी-नाअष्टिमदर्शनसप्तकानाअष्टचत्वारिंशशतसत्तायाभवति केषामित्याह उवसमेत्तिउपशमसम्यक्त्वनाउपशमश्रेणिचारित्रमोहोपशमरूपाश्रेणि यथानुक्रमोत्तरोत्तरगुणारोहरूपाप्रपन्नानामेवभवति पूर्वमप्रमत्तादि-ष्वाहारकादिकृतसत्ताक्रयोपशमश्रेणिवतोभवति ॥ २६ ॥

टबार्थ—हवे उत्तर कर्मनी सत्ता कहे छे एकसो अने अडतालीस उत्तर प्रकृतिनी सत्ता छे इग्यारमा गुणठाणा सुधी बीजे सास्वादन गुणठाणे अने त्रीजे मिश्र गुणठाणे जिन नामनी सत्ता नथी तेणे एकसोसडतालीसनी सत्ता छे ए उपसम समकितवत जे जीव छे, पहीला सातमा प-र्यंत चढता होये तेहने एकसो सडतालीसनी सत्ता थाये अनादि मिथ्यात्व जीव प्रथमथी समकित पामे । तेहने जिन नामनी १ आहारक १नी सत्ता बंध करे पछी होये पर प्रथम तीन होये । ए उपसम श्रेणि चढता जीवनी सत्ता जाणवी ॥ २६ ॥

इगचत्तससयसता, खायगसमत्तसतसेढीण ॥
अडतीससयनवमे, खवगसेढीपवन्नाण ॥ २७ ॥

टीका—अथवात्रकश्चिद्विसयोजिनानुबधिचतुष्कस्तत्प्रत्यय-जन्यनरकतिर्यगायुषोग्यबद्ध देवायुर्मनुजायुषिवर्तमान क्षयो-पशमसम्यक्त्वचारित्रप्रशाद्वद्धाहारकादिरुपशमश्रेणिमारोहति तस्य-तिर्यगायुर्नरकायुरनतानुबधिचतुष्टयलक्षणप्रकृतिषट्करहितशेषद्विच-त्वारिंशशतसत्तायाप्राप्यते ॥ यदुक्त बृहत्कर्मस्तवभाष्ये ॥ अणतिरि-नारयरहीअ नापालसयवयाणसतम्मि उवसामगस्सपुव्वा तियद्धि-सुहुमोवसतम्मि । १ । य कश्चिज्जीव क्षयोपशमसम्यग्दृष्टि विशुद्धा यवसायबलेनकारणापवादमार्गसापेक्षोपियथार्थप्रुक्तत्त्वभाव-र्मकार्यात्सर्गश्रद्धानुभवलीन तैवकाग्रताप्राप्तवीर्येणक्षयीकृतानुब-धिचतुष्कमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वमोहलक्षणसप्तकस्तस्योपशमश्रेणिग-तस्यापि एकचत्वारिंशशतसत्तायाभवति यावदुपशातमोहगुणस्थान-कतावत्क्षायिकसम्यक्त्वोपशमश्रेणिस्थानाजीवानामेवभवति अथवा पूर्वबद्धायु पश्चात्क्षयोपशमीभूयक्षायिकसम्यग्दृष्टिर्भवति तस्यसप्तक-क्षयेएकचत्वारिंशशतमेवसत्ताया य पुन मनुष्य क्षपकश्रेण्यारो-हानुकूलस्तस्यनरकातिर्यग्देवायुष सत्ताभावात् वेद्यमाउनरायुस्त-त्सत्ताकथतेनअविरतिगुणस्थानात्दर्शनसप्तकायुस्तु (स्तूद) याभा-वात् अनिवृत्तिबादरप्रथमभागयावत् अष्टत्रिंशत्शतसत्तायाभवति ॥ २७ ॥

टबार्थ—जे जीव पहेला क्षयोपसमकित होइ ते जीवने परिणामनि विशुद्धता थाये । अननानुबधी ४ मिथ्यात्व मो-हिनी १ समकित मोहिनी १ मिश्र मोहिनी १ एव सात प्रकृति क्षय करे । तेहने एकसो एकताळीसनी सत्ता थाये

ते चोथायी माडी इग्यारमा पर्यंत १४ नी सत्ता होये, ए जीव क्षायिक समकिती उपसमश्रेणि छे तेहने इम होये इम क्षपक श्रेणि पडिवज्या जीवने प्रथमथी नारकी १ तिर्यंच १ देवता १ नी गतिना आऊपा टाले, तेवार पछी अनतानुबंधी ४ दर्शन मोहिनी ३ एव दश खपावे तेवारे चोथायी माडी नवमा गुण ठाणाना नव भाग छे। तेहने पहिले भागे एकसो अठ्ठीसनी सत्ता छे। इहा कोइ पूछे जे तीन सत्ता तो क्रोड जीवने न होइ तो खपावे किहायी? तेहनो उत्तर जे परिणामे आऊपानो बंध थाये एहवा परिणामनी योग्यता टाले तेहनी क्षेपणा गवेषी छे, बीजे भागे एकसो बावीसनी सत्ता छे, तीजे भागे एकसो चउदनी सत्ता छे, चोथे भागे एकसो तेरनी सत्ता छे, पाचमे भागे एएकसोबारनी सत्ता छे, छठे भागे एकसोछनी सत्ता छे, सातमे भागे एकसोपाचनी सत्ता छे आठमे भागे एकसोचारनी सत्ता छे नवमे भागे एकसोतीननी सत्ता छे ॥२४॥

दुसयसुहुमेखीणे, इगसयनवनवईसत्तपयडीउ ॥
पणसी(ह)सयोगीअयोगी, तेरसखवीउणसिज्झति२८

टीका—द्वितीयभागेतुस्थावर १ सूक्ष्मद्विक २, तिर्यग्गति १, तिर्यगानुपूर्वीलक्षणद्विक नरकगतिनरकानुपूर्वीलक्षण २, आतपोद्योतद्विक २, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, एकेंद्रियजातिचतुष्क ४, साधारणनामलक्षणप्रकृतिषोडशकतिर्यग्नरकगतिनैमित्तिकसत्तायाक्षीयते सदाद्वाविंशशतसत्तायाभवति तृतीयभागेअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानकषायाष्टकक्षीयते तदाचतुर्दशशतसत्तायाभवति नपुंसकवेदे

क्षीणेनयोदशशतसत्तायातुर्यभागेभवति तत स्त्रीवेदेक्षयेपचमेभागेद्वादशशतसत्तायाभवति ततोहास्यषट्कक्षयेषष्ठे भागेषडधिकशतसत्तायाभवति तत पुरुषवेदक्षयेसप्तमेभागेपचाधिकशतभवतिसत्तायां तत सज्वलनक्रोधेक्षीणेअष्टमेभागेचतुरधिकशतभवतिसत्तायां तत सज्वलमानाभावेनवमेभागेऽधिकशतसत्तायाभवति पुरुषप्रतिपत्तेरयक्रम अथस्त्रीप्रारभिकातत्रप्रथमनपुसकवेदतत पुरुषवेदततोहास्यषट्कतत स्त्रीवेदअथनपुसक प्रारभकस्यततोऽसौ अनुदीर्णमपिप्रथमस्त्रीवेदक्षपयति तत पुरुषवेदतत षट्कततोनपुसकवेद तत सज्वलनत्रिक इत्येवक्रमनोनेय अनिवृत्यतसमयेसज्वलनमायाक्षयेदशमेसूक्ष्मसपरायाख्येगुणस्थाने द्व्यधिकशतसत्तायाभवति क्षपकस्येकादशेअगमनात् क्षीणेक्षीणमोहाख्येगुणस्थानेसज्वलनलोभस्यसूक्ष्मसपरायातेक्षयणादेकाधिकशत प्रथमेभागेक्षीणमोहेभवति ततोनिद्राद्वयक्षयगतेक्षीणमोहस्यद्वितीयेभागेनवनवति सत्तायाभवति क्षीणमोहेचरमसमयेज्ञानावरणीयपचकमतरायपचकदर्शनावरणचतुष्टयक्षपयित्वासयोगिकेवलीगुणस्थानेपचासीतिसत्कर्माभवति अयोगिद्विचरमसमययावत पचासीतिसत्तायाभवति अयोगीचरमसमयात्पूर्वसमयेद्वासप्ततिं क्षपयतिताण्यदर्शयति देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वीलक्षणस्वर्गतिद्विक शुभाशुभविहायोगतिरूपगघद्विकस्पर्शाष्टकवर्णपचक रसपचकतनुपचक बधनपचक सघातनपचक सहननषट्क सस्थानषट्क अस्थिरषट्क अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छ्वास १ निर्माण १ पचक अपर्याप्तनामप्रत्येकत्रिक पाउगत्रिक सातासातरूप एकतरवेदनीय सुस्वरनीचैर्गोत्रमितिद्वासप्ततिर्क्षीयते ततोऽयोगिचरमसमयेनयोदशसत्तायाभवति मतानरेमनुजानुपूर्यपिअत्रैवक्षीयते अत्रमनुजानुपूर्वीकर्मण भिन्नोदयोनास्ति स्त्रीपुकसक्रमस्यापिअत्राभावात् प्रदेशपद-

नाभावेचाक्षयात् अत ततोपूर्वमेवमनुजत्रिकपश आदेयसुभग-जिननामउच्चैर्गोत्रपचेन्द्रियजाति सातासातयोरेकतरवेदनीयान्तरा-योदश मनुष्यानुपूर्वीमन्तरेणत्रादशचरमसमयेक्षपयित्वासिद्धिंप्राप्नो-तिजीव अव्ययममूर्त्तांखटायाभावात्यतिकंकातिकनिर्द्वंद्वनिरामपल-क्षणामिति ॥ २८ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एकसोवेनी सत्ता छे, क्षीण-मोहगुणठाणे बारमे पहिले भागे एकसो एकनी सत्ता छे तेहने निद्रा २ गये नवाणुनी सत्ता बीजे भागे छे। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अनराय ५ ए खपे तेवारे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे पचासीनी सत्ता छे ते चउदमाना छेल्ला बे समय रहे तेवारे बेंतेर प्रकृति खपे तेवार छेहले समये तेर प्रकृ-तीनी सत्ता रहे ते तेर प्रकृति अयोगीचरमसमये खपावीने सिद्ध थाये ॥ २८ ॥

खीणजासत्तसा नाणा, वरणतरायएपच ।
वेयणीयगोअकम्मे, दुगदुगसताअयोगिंता ॥२९॥

टीका--अथसत्तास्वामित्वमाह ॥ खीणजाइति २९ क्षीण-मोहगुणस्थानकयावत्ज्ञानावरणातरायपचकसत्तायाभवति वेदनीय-गोत्राख्यद्विकद्विकसत्तायाअयोगिगुणस्थानकयावद्भवति प्रथमभा-गातएकैकस्यसत्ताभवति ॥ २९ ॥

टबार्थ —खीणमोह बारमा गुणठाणासीम ज्ञानावरणीनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, अतरायनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, वेदनी कर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता छे, गोत्रकर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता

छे अयोगीना प्रथम भाग पर्यंत छे छेहले भागे तेर रहे तेवारे एक वेदनी तथा एक गोत्रनी सत्ता रहे छे ॥ २९ ॥

बीएउवसतता, नवखवगाणतुबायराओछग।
खीणेछचउसता, मोहेअडवीसउवसते ॥३०॥

टीका—बीएउवसतताइति द्वितीयेदर्शनावरणीयाख्येकर्मणि-उपशातमोहातनवापिप्रकृतीनासत्ताभवति क्षपकानातुअनिवृत्ति-प्रथमभागपर्यंतनवानामपिदर्शनावरणप्रकृतीनासत्ताभवति प्रथम-भागातषोडशापगमावसरेस्त्यानर्द्धिनिकाभावेतन परक्षाणमोहप्रथम-भागयावत्दर्शनावरणीयस्यषट्प्रकृतीनासत्ताभवति क्षीणमोहस्यच-रमसमयेदर्शनावरणीयचतुष्टयंभवसत्तायाभवति "खीणदुचरिमेगसय-दुनिद्दखओ" इतिवचनात् तत परदर्शनावरणीयमत्तानभवति अथ मोहनीयकर्मण सत्तास्वामित्वमुच्यतेमोहनीयेकर्मणिउपशमसम्यक्त्वो-पशमचारित्रवत उपशमश्रेणिगतस्यउपशातमोहगुणस्थानकयावत् अष्टाविंशतिप्रकृतय सत्तायासभवति कृतनिपुजएवानग्राह्य अक्र-तनिपुजस्यानपेक्षैवग्रथिभेदकालेप्रथमक्रतनिपुजीक्षयोपशमसम्यक्त्व-लभते अक्रतनिपुजीतुउपशमसम्यक्त्वलभते इतिसिद्धातात्पर्य कर्म-ग्रथिकास्तुक्रतनिपुजीअक्रतनिपुजीजीवोपिप्रथमउपशमसम्यक्त्वमे-वलभतेइतिवदति ॥ ३० ॥

टबार्थ—बीजे दर्शनावरणा कर्म्मे उपशमश्रेणिने उपसात-मोहगुणठाणामीम नवनी सत्ता छे। क्षपकश्रेणिने नवमा गुण-ठाणाना बीजे भागे सोल प्रकृति खपे तेवारे थीणद्धी तीन खपे छे तेहने छ प्रकृतिनी सत्ता रहे छे दर्शन ४ निद्रा २ ने खीणमोहगुणठाणे पहिले भागे दर्शनावरणी छनी सत्ता छे

बीजे भागे निद्रा २ क्षय करे तेवार दर्शनावरणी न्यारनी सत्ता छे बारमाने अंते दर्शनावरणी ४ सत्ता खपे छे मोहनीकर्मनी उपसमसमकित उपसमचारित्रीयाने इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत अ-टावीसनी सत्ता छे ॥ ३० ॥

अविरईसमत्ताओ, इगवीसउवसमम्मिसतसा ॥
खवगम्मियइगवीस, तेरसबारसइगारच ॥३१॥

टीका—अविरयेत्यादि वाइतिपक्षातरेइत्यनेनक्षायिकसम्यक्त्वे उपसमश्रेणिस्थस्यअविरतसम्यग्गुणस्थानकात् आरभ्यएकादश-यावत्दर्शनसप्तकविनाएकविंशतिमोहप्रकृतिनासत्ताभवति खवग-म्मि क्षायिकसम्यक्त्व-क्षपकश्रेणिस्थस्यप्रथममनतानुबन्धिचतुष्कद-र्शनत्रिकेक्षीणेअविरतसम्यक्त्वगुणस्थानतोऽप्रमत्तयावत्मोहनीयस्य-कविंशति सत्तायाभवति ततोकषायाष्टकेक्षीणेऽनिवृत्तिबादरतृती-यभागेमोहनीयस्यत्रयोदशसत्तायाभवति ततोनपुंसकेक्षीणेद्वादश स्त्रीवेदेक्षीणेएकादश ॥ ३१ ॥

टबाय—तथा क्षायिकसमकिती उपसमश्रेणीने चोथा अ-विरति गुणठाणायी माडीने इग्यारमा उपशात मोह गुणठाणा पर्यंत चार कषाय नवनो कषाय एकवीसनी सत्ता छे उपसम-भावे मोहनीनी प्रकृतिनो उदय नथी तेवारे परसत्तायी काढी नसके ए रीत छे। हवे क्षपकश्रेणिने प्रथमथी अनतानुबन्धी ४ दर्शनमोहिनी तीन खपे तेवारे एकवीसनी सत्ता छे पछी आठ कषाय खपे तेवारे तेरनी सत्ता छे, पछी नपुसकवेद खपावे तेवारे बारनी सत्ता छे, पछी स्त्रीवेद खपावे तेवारे इग्यार प्रकृति मोहीनानी सत्ता छे ॥ ३१ ॥

पचयचउतिदुइग, सतठाणाणिमोहसतम्मि ॥
सुहुमज्जआउकम्मे, चउसताअपमत्तज्जा ॥३२॥

टीका—हास्यषट्कक्षयेपच पुरुषवेदक्षयेचतस्र सज्वलनलोभस्यक्षयेतिस्र सज्वलनमानक्षयेद्वे सज्वलनमायाक्षयेएका सज्वलनलोभप्रकृतिक्षयेसत्ताभावोमोहस्यसूक्ष्मसपराययावत् मोहनीयसत्ताक्षीणमोहादौतुनेवेति सत्तास्थानानानिमोहसत्तायासूक्ष्मसपराययावद्भवतिसर्वत्र आयु कर्मणिअप्रमत्तयावत् चतुर्णामपिसत्ताभवति प्रसंगद्वापेक्षयैवनि ॥ ३२ ॥

टबार्थ—पछे हास्यादिक खपावे तेवार मोहिनाने पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, ते माथेथी पुरुषवेद खपावे तेवारे मोहिनीनी च्यार प्रकृतिनी सत्ता छे, पछी सज्वलनो क्रोध खपावे तेवार आठमे भागे तीन प्रकृतिनी सत्ता छे, ते सज्वलनोमा बे प्रकृतिनी सत्ता छे पछी सज्वलनी माया खपावे तेवारे दशमे सूक्ष्म सपराय गुणठाणे एक लोभनी सत्ता छे दशमाने अते ते पिण खपावे ते अमोही थाये ए दशमा गुणठाणा पर्यंत क्षपकश्रेणिवालाने मोहिनी कर्म्मनी सत्ता छे, बारमो क्षीणमोही छे आऊखा कर्मनी अप्रमत्त गुणठाणा पर्यंत च्यार आऊखानी सत्ता छे, पर्व आऊखो बांधो होय तेमाटे उपशमश्रेणे जीवने च्यार आऊखानी सत्ता कही ते योग्यतानी छे, उपशमश्रेणिवाला पूर्व आऊखो बांधी पछी श्रेणि चढे ॥ ३२ ॥

चउदुगइगसतता, खीणाओएगसतनाममि ।
तिनवट्ठउवसतता, असीइखवगेनवअयोगि ॥३३॥

टीका—तत परउपशमश्रेण्यावर्त्तमानानाकेषाचिज्जीवानापूर्व-बद्धायुषाएकादशयावत्चतुर्णामपिसत्ताभवति मिथ्यजीवापेक्षमिद-वाक्य अथवाकश्चित्मनुष्योदेवायुर्बन्धाउपशमश्रेणिमारोहते तस्यभु-ज्यमानमनुजायुरभिनवबद्धदेवायुरितिद्वयो सत्ताभवति पुनर्य औपश मिकसम्यग्दर्शनीअबद्धायुरेवोपशमश्रेणिमारभते तस्यभुज्यमाननरा-युषवसत्ता(या)भवति रवीणाओइति तायिकसम्यग्दर्शनीक्षपकश्रेणिमा-रोहतितस्यैकमेवमनुजायु सत्तायाभवति नाम्मिति नामकर्मणिउपशम-श्रेणिस्थस्यउपशातमोहयावत् अनेकजीवापेक्षयानिनवति सत्तायामा-प्यतेक्षपकश्रेणिमारूढस्यनवमगुणद्वितीयभागेत्रयोदशनामप्रकृतिक्षये अशीतिरेवसत्तायायावदयोगिद्विचरमसमयेतावद्भवति अयोगिचरम-समयेनवनामप्रकृतीनासत्ताभवति तत्रस्तासाक्षयेजीव सिध्यतिसकल-प्रदेशपुद्गलकर्माशेपरहितएवभवति इतिश्रीदेवचन्द्रगणिविरचितया-स्त्रोपज्ञविचारसारटीकायासत्ताधिकार सत्ताकर्म पारयाकरणेजीवस्व-भावविज्ञानेसत्ताकर्मविमुक्ता भवतुजीवा सदाजिना ॥३३॥

टबार्थ—चारे आऊखानी सत्ता भिन्न जीव अपेक्षाये होये आऊखा बान्ध्या विना उपशम श्रेणि माडे तेहने एक वर्तमान मनुष्यायु सत्तामा होये ए रीते पण होइ क्षपकश्रेणि जीवने चोथायी माडी चउदमा पर्यन्त एक न मनुष्यायु सत्तामा होय हवे नाम कर्म्मनी सत्ता गुणठाणे कहे छे उपशमश्रेणिनी अ पेक्षाइ सामान्य अनेक जीवने नाम कर्मनी आणु प्रकृति सत्तामा छे अने क्षपकश्रेणिने नवमा गुणठाणाना पहिला भाग पर्यन्त आणुनी सत्ता छे पछी बीजे भागे सोलखपावे तेवारे तेर नाम कर्मनी खपे तेवारे तेरमा गुणठाणा पर्यन्त एंसीनी सत्ता छे पछी चउदमाने छेहले भागे तिऊत्तरखपावे तेवारे अयोगी तेने छेहले भागे नवनी सत्ता रहे छे ॥३३॥

सव्वजीयठाणमिच्छे, सगसासाणेपणअपज्जसन्निदुग।
सम्मेसन्निदुविहो, सेसेसुसन्नीपज्जत्तो ॥३४॥

टीका—अथगुणस्थानेषुजीवस्थानानिकथ्यते इहसुहुमबायरे गिंदीवितिचउअसन्निपचेंदि अपजत्तापज्जत्ता क्रमेणचउदसजीअठाणा १, इहास्मिन्जगतिसक्षेप यारयायासग्रहनयेन एगेआया इतिएकएवजीवभेदोमध्य यारयायाविशुद्धनगमआसा यवहारनयेनचतुर्दशजीवस्थानानिकेनक्रमेणेतिचेदित्याह सूक्ष्मबादरैकेंद्रियद्वित्रिचतुरसंज्ञिसंज्ञिपचेंद्रियाइतिसप्तएतेसप्तअपर्याप्तपर्याप्तभेदाच्चतुर्दशएकस्पर्शनलक्षणमिंद्रिययेषातेएकेंद्रिया प्रथ यप्तेजोवायुवनस्पतय तेच प्रत्येकद्वेधासूक्ष्मा बादराश्चतत्रसूक्ष्म नामकर्मोदयात्सूक्ष्मा सकललोकव्यापिन बादरनामकर्मोदयाबादरास्तेचलोकप्रतिनियतदेशवर्तिन द्वेस्पर्शनरसनलक्षणेइंद्रियेएषातेद्वीन्द्रिया कृमिपूतरकादय त्रीणिस्पर्शनरसनाणरूपाणिइंद्रियाणियेषातेत्रींद्रिया कुथुमत्कूणयूकादय चत्वारिस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुलक्षणानिइंद्रियाणियेषातेचतुरिंद्रिया भ्रमरमक्षिकामशकवृश्चिकादय पचस्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रोत्रलक्षणानिइंद्रियाणियेषा ते पचेन्द्रिया मत्स्यकलभसारसुरनारकमनुष्यादय तत्रातिर्यग्मनुष्यपचेन्द्रियाद्विविधासंज्ञिन असंज्ञिनश्चतत्रसंज्ञानसंज्ञा भूतभवद्भाविभावस्वभावपयालोचनदीर्घकालिकीसंज्ञायासासंज्ञाविद्यते येषातेसंज्ञिन विशिष्टस्मरणादिरूपमनोविज्ञानभाजइतियावत् ताद्विपरीता स्त्वसंज्ञिनोमनोविज्ञानविकलाइत्यर्थ एतेचप्रत्येकद्विधापर्याप्तकाअपर्याप्तकाश्च पर्याप्तिनामपुद्गलोपचयज पुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुशक्तिविशेष साचविषयभेदात्षोढा आहारपर्याप्ति शरीरपर्याप्ति उच्छ्वासपर्याप्ति भाषापर्याप्ति मन पर्याप्तिरिति-

तनयया लोमादिआहारमादाय खलरसरूपतया परिणामयति साआहा-
रपर्याप्ति यया रसीभूतमाहारशरीरतया परिणामयति साशरीरपर्याप्ति
येचपुद्गला शरीरतया परिणमन्ति इन्द्रियाकारसहायतया परिणामयति सा
शरीरपर्याप्ति यया उदयानुगशक्तिविशेषया पुनरुच्छ्वासप्रायोग्यव-
र्गणादलिकमादाय उच्छ्वासरूपतया परिणमय्यालम्ब्य च मुञ्चति-
साउच्छ्वासपर्याप्ति यया भाषायोग्यवर्गणाद्रव्यगृहीत्वा भाषात्वेन-
परिणामय्यालम्ब्य वचनरूपतया मुञ्चति सा भाषापर्याप्ति यया पुनर्मनोयो-
ग्यवर्गणादलिकगृहीत्वा मनस्त्वेन परिणमय्यालम्ब्य चिन्तन व्यापारकृत्वा-
मुञ्चति सा मन पर्याप्ति एताश्च यथाक्रममेकेन्द्रियाणां विकलासंज्ञिना-
तथा संज्ञिनाचतु पञ्चषट्संख्या भवन्ति स्वस्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्ता-
पर्याप्तका तदपरिसमाप्तिविकलास्तेऽपर्याप्तका तेऽपर्याप्तकाद्विवा-
लब्ध्याकरणेश्च ये चाहारशरीरेन्द्रियपर्याप्तिनिष्पाद्यन्ते ते लब्धिऽप-
र्याप्तका येचाहारशरीरेन्द्रियाणि निष्पादितानि शेषा स्वयोग्या
पर्याप्तय निष्पादयिष्यति ते करणापर्याप्तका इति सर्वजीवठाणमिच्छे
इत्यादि सर्वानि जीवस्थानानि चतुर्दशाऽपि मिथ्यादृग्गुणस्थानके भवन्ति
सगत्ति सप्तजीवस्थानानि सास्वादने भवन्ति पञ्चापर्याप्ता बादरकेन्द्रि-
याऽपर्याप्ता द्वीन्द्रियाऽपर्याप्ता त्रीन्द्रियाअपर्याप्ता ३ चतुरिन्द्रियाअ-
पर्याप्ता असंज्ञिपचेन्द्रियाअपर्याप्ता ५ संज्ञिद्विकसंज्ञिअपर्याप्तपर्या-
प्तलक्षण केतनापर्याप्तकाश्चेह करणापर्याप्तकाद्रष्टव्या नतु लब्धिअपर्या-
प्तकास्तेषु मध्ये सास्वादनसहितस्योत्पादाभावात् भावनाचकाश्चिदेवा-
दिगतोजीव प्रथमपृथिवीकायादिकआयुर्बध्वातत परग्रन्थिभेदस-
भवउपशमसम्यक्दर्शनमवाप्यसासादनगतआयु क्षये एकेन्द्रियोभ-
वति तस्योत्पत्तिकाले सभाव्यते विकलेन्द्रियासंज्ञिनातुतिर्यग्मनुष्य-
तस्तैयवमृतस्यसभाव्यते सम्मे अविरतिसम्यग्दृष्टिगुणस्थाने सज्ञीद्वि-
विधोऽपर्याप्तरूपोद्रष्टव्य इहापर्याप्तकरणापेक्षयानेको नतुलब्ध्यप-

र्याप्तक सम्यग्दृष्टिर्भवतिशेषेषुमिश्रदेशविरत्याद्ययोगिपर्यंतेषुगुण-स्थानकेषुसज्ञीपर्याप्तलक्षणमेकजीवस्थानप्राप्यते इति पाख्यातानि गुणस्थानकेषुजीवस्थानानि ॥ ३४ ॥

टीकार्थ—हवे गुणठाणाने विषे जीवना भेद कहे छे मिथ्यात्व गुणठाणे सर्व चउद भेद जीवना छे सास्वादन गुणठाणे अपर्याप्ता पाच बादर अपर्याप्तो १, बेंद्रीअपर्याप्तो १, तेंद्रीअपर्याप्तो १, चौरिंद्रीअपर्याप्तो १, असज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, ए पाच अने सज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, तथा सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो ए बे एव सात जीवना भेद छे सास्वादन गुणठाणे ते जाणवा सहि चोथे समकित गुणठाणे सज्ञी पचेंद्री पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए बे जात भेद छे तथा देशविरति प्रमत्ते १ अप्रमत्तअपूर्वकरण, अनिवृत्ति बादर सूक्ष्मसपराय उपशातमोह क्षीणमोह सयोगीगुणठाणे अयोगीकेवळी ए अग्यार गुणठाणे १ पचेंद्रियपर्याप्तो जीवभेद छे

सव्वगुणठाणमज्जे, सनामगुणठाणगचनेयव्व ।
अज्जवसायमसखा, सुहुमताइगेगचउचरिमे ॥३५॥

टीका—सप्रतिगुणस्थानकेषुगुणस्थानान्याह ॥ सव्वगुणठाणति ॥ ३५ ॥ सर्वेषुगुणस्थानकेषुमध्यवनामेनिस्वस्वकीयनामस्वनामएवगुणस्थानक स्वनामगुणस्थानक "नेअव्व" ज्ञातव्यमित्यर्थ यतोमिथ्यात्वेमिथ्यात्व एवगुणस्थानक "सासादन" सासादनमेवगुणस्थानक मिश्रे मिश्रमेवगुणस्थानक एवमर्वनज्ञेयनव "सुहुमित्ति" सूक्ष्मसपराययावत् प्रत्येक एकैकस्मिन्गुणस्थानके मिश्रअ यवसायास्तीव्रतीव्रतरतीव्रतममदमदतरमदतमरूपा, परिणामभेदाअसख्ये

या सख्यातीताज्ञेया तत्रमिथ्यात्वेपितीव्रमदादिभेदेनअसख्येया परि-
णामा सति एवसास्वादनेपिसम्यक्त्वप्रतिपातन प्रथमसमयेअ पा
सल्किष्टाद्वितीयसमयेविशेषत साक्लिष्टा तृतीयसमयेविशेतरसाक्लिष्ट-
ज्ञेया नोविशुद्धाभवनि शेषेषुगुणेषुसाक्लिष्टा अप्पसरयेपाविशुद्धा
अप्पसंख्येयाभवति सयमस्थानानामपिअसख्येयत्व कषायक्षयोप-
शमन सयमश्रेणिन ज्ञेय। सयमस्थानेचारित्रविभागानाप स्थान-
पनिरूपणेज्ञेय, स्थानानाचतु स्थानिकत्वमेवसूक्ष्मसपरायपर्यन्त उ-
पशातमोहक्षीणमोहसयोगिअयोगिगुणेचारित्रस्यैकैकमेवाध्यवसाय-
स्थानमोहोदयाभावात्नाध्यवसायभेद उक्तचभगवत्या "निग्गथाण-
एगेसजमठाणेसणायाणएगेसजमठाणे" एष्वेवचतुर्षुनिजरास्थाना-
निअनेकानिप्रतिसमयमसख्येयगुणनिर्जराधिकत्वात् प्रतिगुणस्थान-
कस्य "असखगुणनिज्झराजीवा" इतिवचनात् ॥ ३५ ॥

टबार्थ —सर्व चउद गुणठाणने विषे पोताना नामनो तेहज एक गुणठाणो पामीये, जे कारणे मिथ्यात्वमा मिथ्यात्व गुणठाणो, सास्वादनमा सास्वादन गुणठाणो, एम सर्वने जाणवो अने एक एके गुणठाणे तीव्रमदमदतरतीव्रतर परिणामभेदेअ-ध्यवसाय असख्याता जाणवा एक मिथ्यात्व गुणठाणो पिण मिथ्यात्वनी तीव्रमदता अनेक प्रकारनी छे सास्वादनमे पिण तीव्र मदतानो प्रतिसमयीभेले एक समयना अध्यवसाय असख्याता छे कषायना तीव्रमदता क्षयोपशमयी छे ते जानाइ कषायनो क्षयोपशम छे तासुधी अध्यवसायनो पण भेद छे एतले दशमा गुणठाणापर्यंत अध्यवसाय असख्याता छे तरतमयोग छे ते नली छठाण वर्डीया छे। इग्यारमायी माडी उपरले च्यार गुणठाणे मोहनो उदय नथी तेमाटे चारित्रनो एक

अव्यवसाय छे। निर्ज्जरा थानकमे अनेक भेद छे, परचारित्रना थानकनो भेद नथी ॥ ३५ ॥

मिछिदुगिअजय(यि)योगा, हारदुगुणाअपुव्वपणगेओ।
मणवयउरलसविउव्वि, मिसिसविउव्व(व्वि)दुगदेसे।३६।

टीका—अथगुणस्थानकेषुयोगान्निरूपयन्नाह। मिछदुगत्ति ३६॥ योगा पचदशधा तत्रमनोयोगश्चतुर्द्धा सत्यमनोयोग असत्यमनोयोग सत्यामृषामनोयोग असत्यामृषामनोयोग तत्स्वरूपचेद "सन्नाहीयासन्नामिह सतोगुणापयडावानिवरीयामोसामीसाजातदुभ(य)सहावा ? अणहिगयाजाना सुविसुद्धुद्धियाकेवलिअसच्चमोसा एववाग्योगोपिचतुर्धाद्रष्टव्य । काययोग सप्तधा औदारिक औदारिकमिश्र, वैक्रियवैक्रियमिश्र, आहारकआहारकमिश्र, कार्मणचतत्रौदारिककाययोगस्तिर्यग्मनुष्ययो तयोरेवापर्याप्तयो रौदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियकाययोगोदेवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययो वैक्रियलब्धिमतो वैक्रियमिश्रकाययोगोऽपर्याप्तयो र्देवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययोर्वा वैक्रियस्यारभकालेपरित्यागकालेचआहारकचतुर्दशपूर्वविद आहारकमिश्रकाययोग आहारकस्यप्रारभसमयेपरित्यागकालेचकार्मणकाययोगोऽष्टप्रकारकर्मविकाररूप शरीरचेष्टास्वरूपोंतरालगतावुत्पत्तिप्रथमसमयेकेवलिसमुग्घातसमयेचयोगस्वरूपवस्तुत तत्त्वार्थटीकानोल्लिख्यते वीर्यांतरायक्षयोपशमजनितेनपर्यायेणात्मन सचयोयोग ॥ सचवीर्यप्राणोत्साहपराक्रमचेष्टाशक्तिसामर्थ्यादिशब्दवाच्य अथवायुनक्तयेनवीर्योवीर्यांतरायक्षयोपशमजनितपर्यायमितियोग सचकायादिभेदत्रिविध तत्रकाय शरीरमात्मनोवासनिवास पुद्गलद्रव्यघटत स्थविरस्यदुर्बलस्यवा यष्टिलकनयष्टिकादिवद्विषमेषूपग्राहकस्तद्योगाज्जीवस्यवीर्यपरिणामशक्ति सामर्थ्यंकाययोग यथाग्निसप

र्कात् घटस्यरक्तताया परिणाम तथा मन आपकरणसंज्ञाद्वीर्यपरि-
णति स्तथात्मयुक्तकायायत्तावाग्वर्गणायोग्यस्कन्धाविसृज्यमाना-
वाक्त्वेनकरणनामापद्यते तेनवाक्करणेनसंज्ञा मनोद्वीर्यसमुत्थान-
भाषकशक्ति सवाग्योग सत्यादिभेदाद्धर्तुं यत अत्रपुद्गलास्तुनो-
नसत्यादिभेदभाज किंतुज्ञानमेवसत्यादिभेदमुत्पन्न तद्व्यवहारो-
तथापिनद्वलाद्धीनसाधकत्वमत्याद्वागपिसत्यादिभेदेनोपचर्यते तथा
आत्मनाशरीरवनासर्वप्रदेशैर्गृहितामनोवर्गणायोग्यस्कन्धा मननार्थक-
रणभावमाप्यते तत्सम्बन्धादात्मन पराक्रमविशेषोयोग सत्यादि-
विकल्पाश्चतुर्धा अत्रापिमनोवर्गणायोग्यस्कन्धानसत्यादि व्यपदेशा
परमार्थत किंतुनोइन्द्रियावरणक्षयोपशमसमुद्भूतमनोविज्ञानपरिण-
तात्मनोबलाधानकारित्वादात्मसहचरितत्वादुपचारत सत्यादि-
व्यपदेश उदारप्रधानसहजावगाहनामहत्वादुदारा तीर्थकरादय-
स्तेषामिदमौदारिक अथवा उदारप्रधानमोक्षसाधनरूपकार्यनिष्प-
द्यतेतस्माच्छरीरात् तद्धेतुमनशरीरमौदारिक विविधाक्रियादृश्यादृश्य-
रूपकारणो वैक्रिय सूक्ष्मार्थग्रहणार्थतीर्थकृतिशयादिमहिमावलो-
कनार्थंवाजाहियतेइत्याहारक, सर्वकर्मप्ररोहबीज सासारिकसुखदु ख
भाजनकर्मवर्गणानिष्पन्नकार्मण, अत्रकार्मणशरीरकर्मणोर्नपेक्षयाहा-
रतयागृहीतकार्मणवर्गणास्कन्धा तेचशरीरत्वेनपरिणमतियेचाकर्मप्र-
कृतितयापरिणमतियेचास्रवपरिणत्यायोगवीर्यणगृहीताकार्मणवर्गणा-
स्कन्धाकर्मप्रकृतितयापरिणतास्तेकषायाव्यवसायत स्थितिरसभा-
जोभवति येचशरीरतयापरिणतास्तेनैवनवास्थितिंकुर्वति पूर्ववद्व-
स्थितिप्रमाणतिष्ठति तेजसशरीरमाहारपाचनसमर्थनाभिनवकर्मगृह-
णकारणतेनतन्नभेदेनोपात्त,तत्रयोगस्थानपरिणतिर्वीर्याविभागवर्गणा-
दिरूपपुद्गलवर्गणाबलविकरणवीर्यभावयोगत्वेनोच्यते पर्याप्तिना-
मोदयागतमनोवाक्कायवीर्याविभागत मनोवाक्कायवर्गणा गृहचा-

(र्यायत्तप्रवात्तद्रव्य?)योगत्वेन यपदिश्यते तत्रपापात्विरत यइत्यादियथार्थसत्य तद्विपरीतोऽसत्य पापनास्तिपरभवादिनास्तिर्ईश्वरकृतजगदित्यादिउभयलक्षण सत्यानतोयथेमागावश्चरतिपुसामपितत्रसभवात् उभयलक्षणायोगादसत्यानृतो यथाहेदेवदत्तग्रामगच्छेत्यादि एपत्रिविधोवियोगश्चत्वीर्यमनाद्विविध दयादानपूजादिप्रवृत्त शुभ हिंसास्तेयमैथुनेच्छादिप्रवृत्तोऽशुभइति "मिउदुगि"इत्यादिमिथ्यादृष्टिद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादनलक्षणतत्रअयतेअविरतसम्यग्दृष्टौचेत्येतत्रगुणस्थानत्रयेआहारकद्विकोआहारककाययोगाहारकमिश्रयोगरहितास्त्रयोदशयोगा सभवति "आहारकदुगजायइचउदसपुव्विस्सेत्ति" तेन तए तेषु तथा अपूर्वपचकेअपूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहक्षीणमोहलक्षणेनवयोगाभवति तत्रथा चतुर्विधोमनोयोगचतुर्विधोवाग्योग औदारिककाययोगइतिनशेषाअत्यनविशुद्धतयातेषा वैक्रियाहारकद्विकारभाभावात् तयोश्चोत्सुक्यादिपरिणामपूर्वकमेवसभवात् सवैक्रियादशयोगामिश्रे सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकेचतुर्विधोमनोयोग चतुर्विधोवाग्योग औदारिकवैक्रियलक्षणौद्वौकाययोगौएवदशयोगामिश्रेभवतिनशेषा तत्रथाआहारकद्विकस्यासभव पूर्वाधिगमाभावात् कार्मणौदारिकवैक्रियमिश्राभावस्तुमरणाभावात् अत्रचवैक्रियलब्धिमताअभिनववैक्रियारभकालेवैक्रियमिश्रभवति तच्चकुतश्चित्कारणात्पूर्वाचार्यैर्नाभ्युपगम्यते तत्रसम्यगवगच्छामस्तथाविधसप्रदायाभावात् देशेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेवैक्रियवैक्रियमिश्रसहिताएकादशयोगाभवति यथाअवटस्येति ॥३६॥

टबार्थ—हवे गुणठाणे योग कहे छे मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन एक तथा अविरति समकित १ ए तीन गुणठाणे तेर योग छे मनना ४ वचनना ४ औदारिकद्विक २ वैक्रिय-

द्विक २ कार्मण १ शेष १३ छे आहारक २ वे नही ते छठे गुणठाणे मुनिने होये, बीजाने न होये, अपूर्वकरणथी माडी ९ गुणठाणे क्षीणमोह पर्यन्त नवयोग पामीये मनना ४ वचनना ४ एक औदारिक ए नवयोग छे पछे मिश्र गुणठाणे ए नव मध्ये वैक्रिय १ भेळीइ तेवारे १० योग छे इहा वैक्रियमिश्रनो अभाव छे, जे अपर्याप्तो अवस्थाए मिश्र गुणठाणो न होये अने वैक्रियलब्धि नवि करे तेहने पण मिश्र गुणठाणे लब्धि करे ते गवेषी नथी, विउव्विआहारगे उरलमिस्से इतिवचनात् ॥३६॥

साहार(ग)दुगपमत्ते, तेविउव्वाहारमीसविणुइयरे ॥
कम्मुरलदुगंताइम, मयवयणसयोगिनअयोगी॥३७॥

टीका—साहारगदुपमत्तेत्यादि ३७। पूर्वोक्तपचैकादशयोगा-साहारकद्विकाआहारकाहारकमिश्रयुक्ता स्त्रयोदशप्रमत्तेभवति, औदारिकमिश्रकार्मणाभावस्तुपूर्ववदेवतेष्वेवैक्रियमिश्राहारकमिश्रविना-एकादश इतरस्मिन्नप्रमत्तगुणस्थानकेभवति, वैक्रियाहारकमिश्रतुप्रारभकालेलब्ध्युपजीवनतुऔत्सुक्यादिप्रमादेसप्तमेतुप्रमादाभावात् नेति "मायीविउव्वति नोअमायीविउव्वति" इत्यागमवचनात् तथाकार्मण-औदारिकद्विकऔदारिकमिश्रलक्षणअतादिममनसीसत्य १ असत्या-अमृषारूपौमनोयोगौ एवमेवसत्य १ असत्याअमृषालक्षणौवा-ग्योगौचेतिसप्तयोगा सयोगिकेवलिनिभवति कार्मणौदारिकमिश्रतु-समुद्घातावस्थायामितिन अयोगिति ननैवएकोपियोग अयोगिके-वलिनिइतिउक्तागुणस्थानेषुयोगा ॥३७॥

टबार्थ—देशविरति गुणठाणे वैक्रिय मिश्र भेळीये तेवारे ११ योग छे, मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ वैक्रियद्विक

२ ए इग्यार योग होये प्रमत्त गुणठाणे आहारकद्विक २ भेलीइ तेवारे तेर योग पामीये प्रमत्त गुणठाणे ते मध्येथी वैक्रिय मिश्रआहारक मिश्र ए बे काढीये तेवारे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे इग्यार योग होये, जे कारणे अप्रमत्त साधु लब्धी फोरवे नहीं तेम भगवतीसूत्रमा कह्यु छे, मायी विउवत्तिनो अमायीविवत्ति ए वचन छे अने तेरमे सयोगी गुणठाणे कार्मण २ औदारिकमिश्र २ औदारिक २ मनना २ सत्यमनोयोग २ असत्यामृषामनोयोग इम वचनात् २ ए सातयोग पामीये ते मध्ये कार्मण १ औदारिकमिश्र १ ए बे योग समुद्घात करता पामीये अने अयोगी गुणठाणे योग नथी, योगनोरोध करयो छे ॥३७॥

तिअन्नाण दुदसाइमेदुगे, अजयदेसिनाणदसतिग ॥
तेमिसिमीससमणा, जायाइकेवलदुगतदुगे ॥३८॥

टीका—अधुनातेष्वेवोपयोगानभिधातुकामआह "तिअन्नाणत्ति ।३८। त्रयाणामज्ञानानासमाहारव्यज्ञानमत्यज्ञानश्रुताज्ञान, विभगज्ञानरूप द्वयोर्दर्शनयो समाहारोद्विदर्शनचक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनरूपमित्येते पचोपयोगा मिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्भवति नशेषा "बेंदियस्सदोनाणाइकहलब्भति भणइसासायणपडच्चतस्सअपज्जत्तगस्सदोनाणाइ इतिप्रज्ञापनापेक्षया सासादनेज्ञानसूत्रेसमतमपिकर्मग्रथाभिप्रायेणसास्वादनस्यमिथ्यात्वाभिमुखत्वादनतानुबधिकषायोदयेयथार्थोपयोगमलीमसत्वेन तन्निबधनस्यज्ञानस्यापिमलीमसत्वादज्ञानरूपताइति। अवधिदर्शनाभावश्चविभगेकतिचित्पर्यायज्ञानात् वैपरीत्येनसामान्यावबोधरहितत्वात्। जीवाभिगमे। विभगि-

नाअवधिदर्शनग्रहणेप्यवनिषेधस्तेनपंचोपयोगा सम्यक्त्वविरत्य-भावाद्यनशेषा तथा अपने अविरतसम्यग्दृष्टौ देशे देशविरतौ नाण-दसणतिगति" मतिश्रुतावधिरूप ज्ञानत्रिक चक्षुअचक्षुअवधिदर्शन-रूपदर्शनत्रिक एव षडुपयोगा नशेषा सर्वविरत्यभावात् एतेएवष-डुपयोगामिश्रे अज्ञानसहितादृष्ट्या तत्रसम्यग्दृष्टित पतितानाआ-सतास्यासत ज्ञानवाहुल्ययेचमिथ्यात्वतोमिश्रत्वगतानाआसतास्या-सतो अज्ञानवाहुल्यइतितेनज्ञानाज्ञानेमिश्रजीवापेक्षयागृहीतेवस्तुत-स्तुसम्यदृष्टेरेवज्ञानप्रमाणनि सशयत्वात्। अवविभगेअवधिदर्शनतत् जीवामिगमापेक्षया "समणाजयाइइति" इतिय यादीनाइत्यनेनप्रमत्ता-प्रमपूर्वकरणानिवृत्तिवादरसूक्ष्मसपरायोपशानमोहक्षीणमोहलक्षणेषुस-प्तगुणस्थानकेषुमन पर्यवयुक्ताइतिसप्तउपयोगा ज्ञानचतुष्कदर्शन-त्रिकरूपाभवतिकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणोपयोगरूपउपयोगद्वयअ-तिमद्विकेसयोगिकेवलीअयोगिकेवलीलक्षणचरमगुणस्थानकेद्विकेम-वति नशेषा अवमत्यादिज्ञानानावस्तुस्वरूपात् आत्मनिकेवलज्ञान-कालेपिमत्यावरणादीनाक्षयात् तद्ज्ञानानामपिनिरावरणत्वभवनात् मत्यादीनामपिसत्वन यापि सवितुरुदयेतारकादीनासत्वेपितत्प्रभावात् तथैवकेवलज्ञानस्यप्रकटमत्यादिप्रवृत्त्यभावात् "नट्ठम्मिछाउमत्थिए-नाणेकेवलनाणेउवज्झइ" इत्यागमवाक्यात् यवहारनयेनछाद्मस्थिक-ज्ञानाभाव तत्प्रवृत्त्यभावात् ॥ ३८ ॥

टबार्थ —हवे उपयोग बार गुणठाणे कहे छे आदिम बे गुणठाणे मिथ्यात्व सास्वादन ए बे गुणठाणे तीन अज्ञान बे अचक्षूचक्षुदर्शन ए पाच उपयोग छे प्रथम बे गुणठाणे अ विरति समकित १ तथा देशविरति ए बे गुणठाणे ज्ञानत्रिक ३ दर्शन ३ पहिला ए ७ उपयोग छे मिश्र गुणठाणे मिश्रित

उपयोग छे जे जीव तेह समकितथी पडि मिथ्रे आवे तेहने पूर्वाभ्यास माटे ज्ञान होये, जे मिथ्यात्वथी आवे तेहने अज्ञान होये अने यति आदीदेइ छट्ठायी बारमा गुणठाणा पर्यंत मन पर्यायज्ञान भेळीये एतले च्यार ज्ञान, तीन दर्शन, ए सात उपयोग होये अनदुग तेरमे चऊदमे गुणठाणे केवलदुग कहेता केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे उपयोग होय ॥३८॥

छसुसव्वातेऊतिगं, इगछसु सुक्काअयोगिअलेसा।
इगचउपणतिगुणेसु, चऊतिदुइगपच्चओवधो ॥३९॥

टीका—उपयोगाउक्ता, अधुनागुणस्थानकेष्वेवलेश्याअभिधित्सुराह ॥ छसुसव्वाते ॥ ३९ ॥ षट्सुमिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्राविरतदेशविरतप्रमत्तलक्षणेषुसर्वा षडपिकृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेज ४ पद्म ५ शुक्ल ६ लेश्याभवन्ति, बधस्वामि अविरतसम्यक्त्वपावदेवषड लेश्याउक्ता साचप्रतिपद्यमानकापेक्षया, तेउतिग तेज पद्मशुक्ललेश्यालक्षणत्रिक इगित्ति एकस्मिन्प्रमत्तेभवति विशुद्धत्वात्षट्सुअपूर्वकरणादिसयोगिपर्यंतेषुशुक्लाएवभवन्ति अयोगित्ति अयोगिन योगरहितत्वेनसिद्धा अप्ययोगिनएवेतितेअलेश्याअलेश्यारहिता लेश्याचयोगप्रभवा तेननयोगरहितानां इहलेश्यानाप्रत्येकमसंख्येयानिलोकाकाशप्रदेशप्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि ततोभद्राध्यवसायापेक्षयाशुक्ललेश्यादीनामपिमिथ्यादृष्ट्या कृष्णलेश्यादीनामपिप्रमत्तगुणस्थानकेपिसंभवोनविरुध्यते इतिनदेवमुक्तागुणस्थानकेषुलेश्या साम्प्रतबधहेतवोवक्तुमारभ्यते मूलहेतवोचत्वार मिथ्यात्व अविरति कषाया योगाश्च तत्रमिथ्यात्व अयथार्थावबोधपूर्वकतत्त्वनिर्धाररूपतत्पचप्रकार अभिगृहेणेद एव दर्शन शोभन-

नान्यदित्येवरूपेणकुदर्शनविषयेणनिर्वृत्तमाभिग्रहिक यद्वशाद्गोष्टि-
कादिकुदर्शनानामन्यतमहठेनगृण्हाति तद्विपरीतमनभिग्रहिकं य-
द्वशात्सर्वाण्यपिदर्शनानिशोभनानीत्येवमीषन्माध्यस्थ्यमुपजायतेत-
दनभिग्रहिकम्, अभिनिवेशकज्ञात्वामिथ्याग्रहरूपयागोष्ठामा-
हिलादीना साशयिकयच्छशयेननिर्वृत्तयद्वशाद्भगवदर्हदुपदिष्टेष्वपि-
जीवादितत्त्वेषुसशयउपजायते तथानजानेकिमिदभगवदुक्त धर्मा-
स्तिकायादिसत्यमुतान्यथेति अनाभोगयदनाभोगेननिर्वृत्तशून्यतारूप
तच्चैकेन्द्रियादीनामितिपचप्रकारमिथ्यात्वमिति द्वादशप्रकाराअवि-
रति कथमित्याह मन स्वात करणानिइन्द्रियाणिपचतेषास्वस्वविषये-
प्रवृत्तमानाना अनियमोऽनियमन इत्यनेन रसनेन्द्रियाविरतौमृषावाद-
सग्रह मन स्पर्शनेन्द्रियाविरतौस्तेयोपदान सकलेन्द्रियाविरतौमैथु-
नस्यसग्रह मनसअविरतौपरिग्रहास्रव रसनेन्द्रियाविरतौरात्रिभोज-
नास्रव तथापृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसरूपाणाबाधाहिंसारू-
पाअविरति षट्एवद्वादशज्ञेया कप ससारस्याय कषाय कषाय
सहचरितानोकषाया कषायतुल्याइत्यर्थ कषाया षोडशअनता-
नुबन्धऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसज्वलनक्रोधमानमायालोभाख्यास्ते-
षाकषायाणासदृशा कषायतीव्रतीव्रभेदभेदास्तेनोकषाया हास्यर
त्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुसकरूपानवइत्येव पचविंशतियोगा
पचदशपूर्वव्याख्यातस्वरूपाएवमूलत बधहेतवश्चत्वार उत्तरत सप्त-
पचाशद्भवति तन्मूलहेतुन् गुणस्थानेषुविभजयन्नाह इगत्ति एक-
स्मिन्मिथ्यात्वेगुणस्थानकेचत्वारोबधहेतव अयमर्थ मिथ्यादृष्टि-
गुणस्थानकवर्तीजन्तु ज्ञानावरणीयादिकर्मचतुर्भिर्मिथ्यात्वाविरति
कषाययोगलक्षणैश्चतुर्भि प्रत्ययैर्बध्नातिचतुर्षुसास्वादनमिश्राविरति-
सम्यग्दृष्टिदेशविरतरूपेषुमिथ्यात्ववर्जिताअविरतिकषाययोगलक्षणा-
स्त्रय प्रत्यया सतिभावनाचसास्वादनादिचतुर्षुगुणेषुवर्तमान ज-

तुरविरतिकषाययोगलक्षणैस्त्रिभि प्रत्ययै ज्ञानावरणादिकर्मबध्नाति यद्यपिदेशेस्थूलप्राणातिपातविषयाविरतिरस्तितथापिस्वल्पत्वान्नेहविवक्षिता सर्वविरतावेवसर्वथाऽविरत्यभावइति पणत्ति पचसुगुणस्थानकेषुप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायलक्षणेषुद्वौप्रत्ययौकषाययोगाभिख्यौयस्यसद्विप्रत्ययोबधोभवति इदमुक्तभवतिमिथ्यात्वाविरतिहेतुद्वयस्यतेष्वभावात् शेषेणकषाययोगप्रत्ययद्वयेनामीप्रमत्तादय कर्मबध्नतिइतियावत् तथानिषुउपशातक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेषुगुणस्थानकेषुएकएवयोगलक्षण प्रत्ययोयस्यसएकप्रत्ययोभवति एषुनिषुगुणस्थानेषुयोगप्रत्ययएवकर्मबध्नाति सातावेदनीयाख्यनदपिद्विसामयिकप्रकृतिप्रदेशलक्षणद्विविधबधकरोति । योगापयडिपएसठिइ अणुभागकसायाओइतिवचनात् अयोगिगुणे हेत्वभावात्बधाभावइति ॥ ३९ ॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे लेश्या कहे छे गुणठाणे मिथ्यात्वयी माडी छठा पर्यंत छ लेश्या छे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे तेजो १ पद्म २ शुक्ल ए तीन लेश्या छे आठमायी तेरमा पर्यंत छ गुणठाणे एक शुक्ल लेश्या छे अयोगी गुणठाणे लेश्या नयी लेश्या ते योगपरिणाम छे ते योग नयी ते माटे अयोगी ने लेश्या नयी ते योग विना होये नही हवे बध हेतु कहे छे तिहा मूल बधहेतु च्यार छे। मिथ्यात्व १ अविरत २ कषाय ३ योग ४ ए च्यार हेतु छे । ते हवे गुणठाणे कहे छे एक मिथ्यात्व गुणठाणे च्यार बध हेतु छे पछी सास्वादन १ मिश्र १ अविरति १ देशविरति १ ए च्यार गुणठाणे अविरति १ कषाय २ योग ३ हेतु ए तीन छे। पछी पण कहेता पाच गुणठाणे प्रमत्त १ अप्रमत्त १ अपूर्व-

करण १ अनिवृत्तिबादर १ सूक्ष्मसपराय १ ए पाच गुणठाणे कषाय तथा योग ए बे बन्ध हेतु छे। पछी तीगुणेसु कहेता तीन गुणठाणे उपशांतमोह १ क्षीणमोह १ सयोगीकेवली १ इणे तीने एक योग प्रत्यपीषो बन्ध हेतु छे ॥ ३९ ॥

पणपन्नपन्नति(य)छहीय, चत्तगुणचत्तछचउदुगवीसा।
सोलस(दस)नवनवसत्त, हेउणोनउअयोगम्मि॥४०॥

टीका—अथ गुणस्थानेषुउत्तरहेतुनाह ॥ पणपन्नपन्नेत्यादि- मिथ्यादृष्टौआहारकशरीर आहारकमिश्रलक्षणमिश्ररहिता शेषा पचपचाशद्धेतव सति तेचामीपचमिथ्यात्वअविरतिद्वादश कषाय- पचविंशति योगास्त्रयोदश सास्वादनेपचमिथ्यात्वोना पचाशद्धे- तवोभवनि मिश्रेत्रिचत्वारिंशद्बन्धहेतवोभवति औदारिकमिश्रवैक्रिय- मिश्रलक्षणमिश्रद्विककार्मणशरीर अनन्तानुबन्धिनस्तैर्विनाइयमत्रभा- वना "नसम्मामिछोकुणइकालमिति" वचनात् सम्यग्मिथ्यादृष्टौ परलो- कगमनाभावात् औदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्मणअनन्तानुबन्ध्युदया- भावात् अनन्तानुबन्धिचतुष्टयनास्ति । अतएतेषुसप्तसुपूर्वोक्तापा पचाशतोऽपनीतेषुशेषास्त्रिचत्वारिंशद्बन्धहेतवोमिश्रेभवनि । अविर- तौचपरलोकगमनसभवात् पूर्वोपनीतमौदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्म- णचपूर्वोक्तायात्रिचत्वारिंशत्पुन प्रक्षिप्यते ततोअविरतेपद्चत्वा- रिंशद्बन्धहेतवोभवति "गुणचत्तेति" देशे देशविरता एकोनचत्वारिंश- द्बन्धहेतवोभवति, नसासयम पाअविरतिऔदारिकमिश्रकार्मणअप्रत्या- ख्यानचतुष्टयचेति तत्रनसासयमत्तु बहुच्छतकच्चूणात्वस्यसकल्पजन्य- साविरतिगमात् गृहिगामशक्यपरिहारत्वेनशक्यपरिहारत्वेनसत्यप्या- रभजन्यमाविरतौ तथापिनविवक्षिता कार्मणौदारिकमिश्रौतु विग्रहग-

त्यपर्याप्तावस्थायाचदेशविरत्यभावान्नसभवत द्वितीयकषायस्याप्य-
भावुदयात् उक्तचावश्यकनिर्युक्तौ बीयकसायाणुदए अपच्चक्खा-
णावरणनामधेज्जाण देसविरइनउलहति ? तदभावेएवतत्प्रादुर्भाव
तत एतेसप्तपूर्वोक्ताया पदचत्वारिंशतोऽपनीयते तत्रएकोनचत्वा-
रिंशद्बधहेतव शेषा देशविरतेभवति तथाषड्विंशतिबधहेतव प्र-
मत्तेभवति इदमत्रहृदय प्रमत्तगुणस्थाने एकादशवाअविरति प्र-
त्याख्यानावरणचतुष्टयवचनसभवति आहारकद्विकचलब्ध्युपयुक्तस्य-
सभवतिअत पूर्वोक्तायाएकोनचत्वारिंशत पचदशकेऽपनीतेद्विकेच-
तत्रप्रक्षिप्तेषड्विंशतिर्बधहेतव प्रमत्तेभवति, तथाऽप्रमत्तस्यलब्ध्य-
नुपजीवनेनाहारकमिश्रवैक्रियमिश्रलक्षणद्विकरहिताश्चतुर्विंशतिबधहे-
तवो अप्रमादेगुणस्थानकेभवति, अपूर्वकरणेपुन सैवचतुर्विंशति-
वैक्रियमिश्रलक्षणद्विकरहिताद्वाविंशति बंधहेतवोभवति एतेपूर्वो-
क्ताद्वाविंशति हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सालक्षणारहिता षोड-
शअनिवृत्तिबादरेसभवति तेएवषोडशवेदत्रिकस्त्रीपुनपुसकलक्षणस-
ज्वलनत्रिकसज्वलनक्रोधमानमायालक्षणतेनविनादशबधहेतव सूक्ष्म-
सपरायेभवति तेएवदशलोभरहितानवबधहेतव उपशातमोहेक्षीण-
मोहेचभवति कषायोदयरहितत्वमेवानयो तथौदारिकद्विककार्मण-
सत्यमनोयोगअसत्याअमृषामनोयोग सत्यवचनयोग असत्याअ-
मृषावचनयोग एवसप्तहेतव सयोगिनयोदशमेसभवति भावनाच-
औदारिकतनुवर्त्तमानऔदारिकमिश्रतुकेवलिसमुद्घातद्वितीयषष्ठसप्त-
मसमये कार्मणतुसमुद्घातावसरेतृतीयचतुर्थपचमेमनोयोगावलब-
नतुमन पर्यवज्ञानानाक्षेत्रावस्थितानाकृतप्रश्नाना उत्तरदानकालेवा-
ग्योगप्रवृत्तिस्तुप्रसिद्धैवन अयोगित्ति अयोगिगुणस्थानकेनसतिब-
धहेतवइति ॥ ४० ॥

टबार्थ—हवे गुणठाणे उत्तर हेतु छे ते कहे छे, ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ते मिथ्यात्वना ५ भेद छे, अविरतिना १२ भेद छे, कषायना २५ भेद छे, योगना १५ भेद छे, एव सर्व सत्तावन भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे आहारक २ आहारकमिश्र नथी तेणे पचावन हेतु छे ॥ ५ मिथ्यात्व। अविरति १२, कषाय २५, योग १३ सास्वादन गुणठाणे पचास हेतु छे, पाच मिथ्यात्व नथी, बार अविरति, पचवीस कषाय, १३ योग पचास हेतु छे मिश्रगुणठाणे अनतानुबधी ४ औदारिकमिश्र १ वैक्रियमिश्र १ कार्मण १ ए सात काढीइ तेवारे अविरति १२, कषाय २१, योग १०, ए तेतालीस बध-हेतु छे चोथे समकित गुणठाणे औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र १, कार्मण १ ए तीन मेलीये एतले अविरति २२, कषाय २५, योग १३, ए छेतालीस बधहेतु छे पाचमे गुणठाणे अप्रत्याख्यानीया ४, त्रसनिअविरति १, औदारिकमिश्र १, कार्मण १, ए सात काढिइ तेवारे ओगुणचालीस हेतु छे अविरति ११, कषाय १३, योग १ छे, छट्ठे प्रमत्तगुणठाणे अविरति ११, प्रत्याख्यानीया ४, ए १५ काढीइ तेवारे आहारक बे मेलीये तेवारे छवीस हेतु छे तेर कषाय १३ योग, सातमे गुणठाणे आहारकमिश्र १ ए बे काढीये तेवारे चोवीस बधहेतु छे आठमे गुणठाणे वैक्रिय १, आहारक १ ए बे काढीये तेवारे बावीसबध हेतु छे नवमे गुणठाणे हास्य छ काढीइ तेवारे सोल हेतु छे पछी दशमे गुणठाणे तीन कषाय तीन वेद काढीये तेवारे दश बधहेतु छे पछी लोभ काढीये तेवारे इग्यारमे बारमे नव बधहेतु छे, तेरमे गुणठाणे सात योगना हेतु छे, तथा अजोगीगुणठाणाने विषे हेतुबध कोइ नथी ॥४०॥

मिच्छेपणमिच्छता, अविरइसमत्तवारअविरइओ ।
देसेतसवहहीणा, योगापुव्विंवनेयव्वा ॥ ४१ ॥

टीका—अत्रवीर्यस्यशरीरपर्याप्ति भाषापर्याप्ति मन पर्याप्ति उदयेनगृहीततद्वर्गणावलवित्वकायवाग्मनोयोगाइति चेतनावीर्यादीनामिथ्यात्वकषायेन्द्रियविषयोदयप्राप्तानातन्मया प्रवृत्ति मिथ्यात्वादिहेतव क्षयोपशमीभूतचेतनावीर्यादीनाउदयाश्रितप्रवृत्तानाहेतुत्वोपदेश मिथ्यात्वादीनाप्रकृतीनास्वोदयावतसम्यग्दर्शनादिरूपाणाउदयत्वोपदेश यावत्कषायोदयस्तावत्स्थित्यनुभागबधौ पावद्योगप्रवृत्तिस्तावत्प्रकृतिप्रदेशबधौ ॥ उक्तच ॥ योगापयडिपएसठिई अणुभागकसायाओ इतिमिच्छत्ति मिथ्यात्वेपचमिथ्यात्वभेदा नोपरितनेषुगुणेषुद्वादशअविरतय अविरतसम्यक्त्वयावत्लभ्यते देशविरतिगुणेनसवरहिताएकादशअविरतय प्राप्यते नोपरिगुणेषुयोगा पूर्वगुणस्थानकेषुउक्तास्तद्वदेवज्ञातव्या ॥ ४१ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे पाच मिथ्यात्व छे, पछी मिथ्यात्व नथी अविरतसम्यक्त्वी गुणठाणेसीम बार अविरति छे देशविरति श्रावकपणो प्रगटे, थूलप्राणातिपात विरमणव्रत लीधो तेहने त्रसनी हिंसा नथी इग्यार छे छट्ठाथी पछी अविरति नथी, योग ते पूर्वे कह्या छे तिम जाणवा ॥ ४१ ॥

आइदुगेपणवीस, अणुविणुइगवीसमीससम्ममि ।
देसेसत्तरवियविणु, तिअविणुतेरसगुणतिममि॥४२॥

टीका—कषायागुणेषुविभजयन्नाह आइदुगेत्ति॥४२॥आदिद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वयेपचविंशतयएवकषाया.—

सति तथा मिश्रेसम्यक्त्वेचअनतानुबधिचतुष्टयरहिताएकविंशतिप कषायाभवति देशे देशविरताख्येसप्तदशकषाया द्वितीयाअप्रत्या- ख्यानक्रोधमानमायालोभरहिताखयोदशकषाया गुणतिगम्मिति गु- णत्रिकेप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणक्षणेसति ॥ ४२ ॥

टचार्थ—आदि वे गुणठाणे पचवीस कषाय छे मिश्र गुणठाणे तथा समकित गुणठाणे अनतानुबधी च्यार विना एकवीस कषाय छे देशविरति गुणठाणे बीजा अप्रत्याख्यानी चोकडी विना सत्तर कषाय छे तीजी चोकडी विना तेर कषाय छट्ठे सातमे आठमे तीन गुणठाणे छे ॥ ४२ ॥

अछहासानवमेसग, वेयसजलणति(हीण)इगसुहुमे।
थोवुवसताखीणा, सखगुणापत्तपिवसता ॥४३॥

टीका—अछहासाइति नवमेअनिवृत्तिबादरे सगत्ति सप्तहास्य- षट्करहिताहेतव सति, वेदत्रिकसज्वलनत्रिकहीन इगत्ति एक एव- सज्वलनलोभाख्यसूक्ष्मेसपरायेदशमेगुणस्थानेहेतु प्राप्यतेतत्र पर- कषायोदयाभावात् नैवकषायोदयइति ॥ उक्तच ॥ हेतुस्वामित्व गुणस्थानकेषु सप्रतिगुणस्थानकेषुवर्त्तमानजंतूनामल्पबहुत्वमाह थो- वउवसतत्ति स्तोकाउपशातमोहगुणस्थानवर्त्तिनोजीवा यतस्तेप्रवि- शन्त प्रतिपद्यमानकाएकस्मिन्समयेउत्कर्षेन चतु पचाशत्प्रमाणा- एवप्राप्यते पसत्ति प्राप्ता स्तद्गुणस्थानवर्तिनस्तूत्कर्षत शतपृथक्त्व- प्रमाणा प्राप्यतेतेभ्य सकाशात्क्षीणमोहा सख्येयगुणापतस्तेप्र- तिपद्यमानका एकस्मिन्समयेअष्टोत्तरशतप्रमाणालभ्यते तत्रस्था- स्तुउत्कर्षत सहस्रपृथक्त्वप्रमाणाएवअत्रनतुप्रतिसमयचतु पचा- शदुपशा तेअष्टोत्तरशतक्षीणप्रतिमानकभवतितर्हिअसख्येयसमयप्र-

माणाभ्याप्राप्तास्तथाउत्कर्षत असरयेया कथनभवतितत्रोच्यतेनै-
वयत प्रतिपद्यमानकानाजघन्यत एकसमय उत्कृष्टत अष्टौसमया-
एवप्रतिपद्यमानका प्राप्यते नापरेतत जघन्यतएक उत्कृष्टत
सरयेयाअसरयेया समयाअतरभवति "बत्तीस" इत्यादि गाथा व्या-
रयानेसिद्धदटिकासिद्धप्राभृतविशेषणवत्यादिषुज्ञेय तेनात्रसरयेयाए-
वजीवानासरयेयइति । एतच्चोत्कृष्टपदापेक्षयोक्तमन्यथाकदाचिद्वि
पर्ययोपिदृष्टय कदाचित्स्तोका क्षीणमोहा बहवस्तुउपशान्त
मोहा कदाचित्क्षीणमोहाएवनोपशाता कदाचिदुपशाताएवन-
क्षीणा अनयो सानरत्वादितिज्ञेयनथानेभ्य क्षीणमोहेभ्य सका-
शात् ॥ ४३ ॥

टबार्थ—हास्य षटक विना नवमे अनिवृत्ति बादर गुणठाणे
सात कषाय छे वेद ३ सज्वलन तीन उदयमाथी गया एटले
दशमे गुणठाणे एक कषाय छे पछी कषायनो हेतु अभाव
छे हवे गुणठाणे अल्प बहुत्व कहे छे, सर्वथी उपशातमोह
गुणठाणे वर्तमान जीव थोडा छे, जे ए गुणठाणे एकसमये
उत्कृष्टा चोपन जीवनी प्रवेशना छे तेमाटे तेहथी क्षीणमोही
जीव सख्यातगुणा छे जे इहा उत्कृष्ट प्रवेशना एकसोआठनी
छे.तेणे गुणठाणे प्राप्त जीव तथा पेसता जीव ए रीते छे ॥४३॥

सुहमानियदिअपुवा, समअहिया सेणियुगलसुविसुद्धा।
उवसामगाकिलठा, जीवालभंतितिगुणेसु ॥४४॥

टीका—सूक्ष्मसपरायानिवृत्तिबादरापूर्वकरणवर्त्तिनोजीवाविशे-
षाद्धि स्वस्थानेपुनश्चिंत्यमानास्त्रयोपिसमास्तुल्याइतिकथमित्याह-
एषुजीवास्त्रिप्रकारालभ्यते तेचश्रेणियुगला श्रेणियुगलस्थानोपशम-

श्रेणिस्था क्षपकश्रेणिस्थाश्चसुविशुद्धा इतिश्रेणिमारोहमाणा निर्मलनिर्मलतरपरिणामत्वात् सुविशुद्धाउच्यनेपुन उपशामका क्लिष्टा सक्लिश्यमाना प्रतिपतन्तोप्यत्रप्राप्यते, उपशान्तमोहत प्रतिपातो द्विविध उपशानाद्धाक्षयात् तत्रएकादशन दशमेदशमानवमे नवमादष्टमेएवमयानक्रमचतुर्थेनन सास्वादनेनन प्रथमेव्रजति यस्तुआयु क्षयात्पननिसएकादशेमृत चतुथमेवस्पृशति नान्य । इतिप्रतिपातेअपिउपशामकाजीवा लभ्यते एतेषुत्रिषुगुणस्थानेषु इति, ननअविरोक्ता त्रिप्रकारत्वेनकथनसरयेयगुणा यत अष्टोत्तरशतक्षपका विशुद्धा चतु पचाशदुपशामका विशुद्धा, पुन सक्लिश्यमानाउपशामकाअपिभवन्तस्तर्हिद्विगुणत्वेनसरयेयगुणा सभवति तत्कथमधिकाइतिउच्यते उपशामका पतन नसर्वे क्रमेणपतन्ति केचिदुपशातेआयु क्षयेत्रयगुणत्रजानितेएतेएपुनप्राप्यते अतोद्विगुणत्वाभावात् अधिकयुक्ता ॥ ४४ ॥

टबार्थ—तेहथी सूक्ष्मसपराय तथा अनिवृत्तिबादर तथा अपूर्वकरण ए तीन गुणठाणे वर्तमानजीव तेहथी एतले क्षीणमोहथी ए गुणठाणे माहोमाहे सम छे, अधिकार छे ए गुणठाणे उपशमश्रेणि चढता तथा पडता पामीये छे, माहोमाहे सम छे बराबर छे उपसमश्रेणि चढता क्षपकश्रेणि चढता ए बे ते शु विशुद्धजीव कहीये जे निर्मलपरिणाम छे, उपशमश्रेणियी पडता ए गुणठाणे वर्तमानजीव पिण सक्लेशी कहीये जे शक्ति पल्टे माटे ए तीन गुणठाणे ए रीते जीव पामीये ॥ ४४ ॥

योगिअपमत्तइयरे, सखगुणादेससासणामीसा ।
अविरइअयोगीमिच्छा, असखचउरोदुवेणता ॥४५॥

टीका—इतितेभ्य सूक्ष्मादिभ्य सयोगिकेवलिन सख्यात-गुणास्तेषा कोटिपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात् प्रतिपद्यमानकास्तुअष्टोत्तरशत अस्मिन्नेवप्राप्यमाणत्वात्तेभ्योइयरत्तिप्रतियोगिन प्रमत्ता सख्येयगुणा प्रमादवतोनिर्ग्रंथाबहव कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात्, प्रमत्तयावत्सज्ञिकर्मभूमिजमनुष्याणामेवयोग्यत्वात् सख्येयगुणत्वतेभ्य देशविरताजीवाअसख्येयगुणास्तिरश्चामप्यसख्यातानादेशविरतिभावात् तेभ्य सास्वादनाअसख्येयगुणा अनेकदाचित्सास्वादना सर्वथैवनभवति यदाभवति तदाजघन्यत एकोद्वौचउत्कर्षतस्तुदेशविरतेभ्योप्यसख्येयगुणा चतसृषुगतिषुप्राप्यमाणत्वात् अनोपशमश्रेणित प्रतिपतितापेक्षयात्वसख्येयत्वासभवस्तथापिग्रथिभेदसभवोपशमात्पतनोऽसख्येयाभवति, इदकर्मग्रथवृहट्टीकातोज्ञेय तेभ्योपिमिश्राअसख्येयगुणा सास्वादनाद्धायाउत्कर्षत षडावलिकामानतयास्तोकत्वात्मिश्राद्धाया पुनरतर्मुहूर्त्तप्रमाणतयाप्रभुतत्त्वात् तेभ्योप्यसख्येयगुणाअविरतसम्यग्दृष्य तेषागतिचतुष्टयेपिप्रभुतनयासर्वकालसभवात् तेभ्योप्ययोगिकेवलिन भवस्थाभवस्थभेदभिन्नाअनन्तगुणा सिद्धानामनतत्वात्, भवस्थायोगिनस्तुक्षीणमोहतुल्याएवतेभ्योऽनन्तगुणामिथ्यादृष्टय साधारणवनस्पतिभ्यसिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात् तेषाचमिथ्यादृष्टित्वादिति तदेवमभिहितगुणस्थानवर्त्तिजीवानामल्पबहुत्वम् ॥ ४५ ॥

टबार्थ—तेहथी योगी तेरमा गुणठाणानाजीव सख्यातगुणा छे तेहथी इतर कहेता प्रमत्त गुणठाणाना जीव सख्यातगुणा छे ए सर्व गुणठाणे सन्नियापर्याप्ता मनुष्य जीव पामीये छे, ते सख्यातगुणा छे तेमाटे तेहथी देशविरति असख्यातगुणा छे, तिर्यंच मनुष्य ए २ गतिना जीव पामीये छे, तेहथी सास्वा-

दन गुणठाणे जीव असख्याता छे, ए च्यार गतिमे पामीये तेहथी मिश्रगुणठाणे वर्तमान असख्यातगुणा छे, जे कारणे सास्वादनथी मिश्रगुघे रहेवानो काल घणो छे, तेहथी अविरति समकित गुणठाणे वर्तमान जीव असख्यात गुणा छे, जे एहनो उत्कृष्टकाल बासठि सागरोपम छे, तेहथी अयोगीजीव अनतागुणा छे जे सिद्ध अयोगी छे ते माहे गण्या छे, तेहथी मिथ्यात्वजीव अनतगुणा छे, जे निगोदीया सर्व मिथ्यात्वि ते सर्व गण्या छे, ए छ मध्ये च्यार सख्यातगुणा छे, अने वे बोल अनता छे ॥ ४५ ॥

तिगपणचउतिगभावा, ति अट इग दोगुणेसुमुलिल्ला।
अन्नाणस्सयउदओ, तिग चार गुणमिमयभेया ॥४६॥

टीका—इहेदानीभावानास्वरूपकथयन्नाह ॥ भावाइतिभवनलक्षणा जतो परिणतिविशेषास्तेमूलत पच सान्निपातिकस्तुमयोगजन्यत्वात् उत्तरोपिच्यारयाभेदज्ञापनार्थंषष्ठउक्त उपशमक्षायिकक्षायोपशिकमौदयिकपारिणमिकाश्चपच षष्ठ सान्निपातिकइतितत्रउपशमनउपशम कर्मणोऽनुदयावस्थाभस्मपटलच्छन्नाग्निवत् मोहनीयस्यकर्मण विपाकप्रदेशरूपतयाद्विविधस्यापिउदयस्योपशमनउपशम द्विविध, दर्शनचरणभेदात्तत्रानतानुबधिचतुष्टयदर्शनमोहनिकस्योपशमनाद्उपशमसम्यक्त्व अत्रकेचित् अनतानुबन्धुदयाभावतोऽशतश्चारित्रप्राकट्यमिच्छति तदसत् अनतानुबधिविगमेतुचारित्ररुचिरवन चारित्रचारित्रमोहप्रकृतीगृहित तच्चात्मन स्थैर्यत्वव्यवसकारित्वात्नगरद्वारपिधानवद्रोधकत्वाच्चचारित्रमोहोपशमनाद्उपशमचारित्रमिति तथानन्त्यात्यनाऽत्यय क्षय घातिकर्मप्रकृतीनायद्यद्-

गुणरोधकानासत्तानोसर्वथाक्षयेयनिवृत्त दर्शनादिगुणव्यूह स क्षायिक नत्रविध । यथाज्ञानावरणस्यसर्वथाक्षयेकेवलज्ञानजीवादिवस्तुन विशेषधर्मावबोधक दर्शनसप्तकक्षयेक्षायिकसम्यक्त्व तत्त्वरुचिरूपनिरतिचाररूपचारित्रमोहनीयक्षयेक्षायिकचारित्र सत्प्रवृत्तिरूपस्वधर्मैकत्वरूपस्थिरतास्वभावानुभवलक्षणमप्रतिपातिचारित्रदानातरायादिक्षयेक्षायिकदानादिकपचप्रकारदानादिस्वरूपतुविशेषावश्यकतोज्ञेय उदीर्णानाक्षय अनुदीर्णानातूपशम तेननिर्वृत्त क्षायोपशम भावनाचयतस्तत्राप्युदितक्षीणअनुदितचोपशातमित्यत्रोच्यते क्षयोपशमेह्यदयोप्यस्तिप्रदेशतयाकर्मणोवेदनानुज्ञानात् नत्वसौगुणविघातायभवतिविपाकवेदनतुनास्येति, उपशमेतुप्रदेशकर्मापिनानुभवति क्षयोपशमेतुप्रदेशवेदनसद्भाव तेनक्षयोपशमेननिर्वृत्त क्षायोपशमिकोभाव तस्यभेदाअष्टादश, ज्ञानचतुष्टयअज्ञानत्रयदर्शनत्रय क्षयोपशमिदानादिपचक क्षयोपशमसम्यक्त्व देशविरति सर्वविरति क्षायोपशमिकाइत्येवमष्टादश क्षयोपशमसम्यक्त्वादयोहितद्विघातकप्रकृतिप्रदेशोदयेनसातिचारताभवति कर्मणामुदयेननिर्वृत्त औदायिकतत्र एकविंशतिप्रकार अत्रामणसिद्धत्वादसयमलेसाकषायगईवेआ मिठमित्यत्रोच्यते कर्मणामष्टानाद्वाविंशशतप्रकृत्युदयोदृष्ट सएवएकविंशतिप्रकारेकथसगृहीतइत्युच्यते अज्ञानग्रहणात् ज्ञानदर्शनावरणदर्शनमोहनीयानासग्रह गतिग्रहणात्शेषनामगोत्रवेदनीयायुषिवाक्षिप्तानि भवधारणकारणत्वादेपाकर्मणामितिलिंगग्रहणात्हास्यादिग्रह शेषौदयिकस्यासिद्धत्वेसग्रह , ननुचकर्मप्रकृतिभेदानाद्वाविंशत्युत्तरशतप्रकृतिगणनयाप्रसिद्धमाम्नायेनचतनलेश्या परिपठितास्तदेतत्कथमुच्यतेवक्ष्यतेनामकर्मणिमन पर्याप्तिनामपर्याप्तिश्चकरणविशेषोयेनमनोयोग्यान्पुद्गलान्आदायचिंतयन्तितेचमन्यमाना पुद्गला सहकरणान्मनोयोगउच्यतेमनोयोगपरिणामश्चलेश्या।

अत मन पर्याप्तासगृहीतत्वादितिज्ञेय एकेंद्रियादीनाभावयोगापेक्षयालेश्या जोगप्पभवालेश्याइति पचमागवचनात् पारिणामिकस्त्रिभेद जीवत्वभव्यत्वअभव्यत्वभेदात् जीवभावेजीवत्व जीवत्वगृहणेनअजीवत्वादीनामग्रह भव्यासिद्धिर्यस्यासौ भव्य भव्य एवभव्यत्व अभव्य सिद्धिगमनायोग्य कदाचिदपियोनसेत्स्यत्यभव्यएवत्वभव्यत्वइतित्रिपचाशद्भेदा उत्तराज्ञेया । भावानामिति तिगपणइति भावाइतिपदसर्वत्रयोज्य तिगभावा पणभावाचउभावातिगभावाएवतिअडत्तिगुणेसुपदसर्वत्रयोज्य तिगुणेसुइत्यनेनत्रिषुगुणेषुमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेषु त्रिगभावाइतिसत्रय त्रयोभावा क्षायोपशमौदयिकपारिणामिका तत्रक्षयोपशममत्यज्ञानादिक औदयिकमनुष्यगतिमिथ्यामोहमिश्रमोहलक्षणपारिणामिकजीवत्वादिएवज्ञेयअष्टसुगुणेषु अविरतसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहरूपेषु "पण भवति"पचापिभावा सभवति तेचानेकजीवापेक्षयाकस्यचित् जीवस्यक्षायिकसम्यक्त्वोपशमचारित्रवत एकस्यापिपचभावा सभवति क्षपकश्रेणौतुचत्वारएवभावा तस्योपशमाभावात् "इगत्ति" एकस्मिन्क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानेचउभावाचत्वारोभावाउपशमरहिताभवति "दोगुणेसु" द्वयोर्गुणयोरित्यर्थ द्विवचनेबहुवचनप्राकृतत्वात् सयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणयो त्रिगभावा त्रयोभावा क्षायिकौदयिकपारिणामिकयुक्ता भवति मूलिल्लाइतिदेशीवचन मूलाएवेति अत्राशयभेददर्शयन्नाह अन्नाणरसत्ति अज्ञानत्रयक्षयोपशमभावेप्युक्त पुनरौदयिकेभावेअज्ञानस्योपादानअत्रक प्रतिविशेष उच्यते मत्यावरणादीनाक्षयोपशमेनअवबोधेजातेपिमिथ्यात्वोदयात्विपर्यासअयथार्थज्ञानअज्ञान तच्चक्षायोपशमिक उपयोगस्यतदावरणकर्म्मक्षयोपशमोत्पन्नत्वात् विपर्यासश्चमिथ्यात्वसहकारात्पत्पुन अज्ञाणतच्चज्ञानावरणोदयेनसर्वथाज्ञान-

स्यआवरणरोव अत्यतावयोरूपअन्नाण तत्औदयिकभावेज्ञान-
व्यतेनअन्नाणस्सइतिअज्ञानस्योदय निगगुणम्मि निगुमिथ्यात्वसा-
स्वादनमिश्रलक्षणेपुअस्ति केचित् पुन केचित्सूक्ष्म पारयाकरणकु-
शला क्षीणमोहपर्यंतेअज्ञानस्योदयमिच्छन्ति ज्ञानावरणादर्शनावर-
णकर्मोदयावत यावत्ज्ञानदर्शनचेतनाशतावत् अन्नाणतच्चकेवलज्ञा-
नप्राकट्येएवसर्वचेतनाप्राग्भावस्तनस्तनावाकृअज्ञानसभवइतिदि-
गूपटाअनसग्रमति तच्चतेषामेवभ्रमइति मयमेअत्ति नैगमनयमते-
सम्यग्ज्ञानेजातेक्षायोपशमिकज्ञानस्यविपर्यासाभावात् सम्यक्त्वेना-
ज्ञानइति एवमूलमतेतुसर्वथाज्ञानावरकपटलाभावेएवअन्नाणाभाव-
इतिस्वयऊह्यम ॥ ४६ ॥

टबार्थ—हवे भाव कहे छे तिहा मूल भाव पाच छे उपशम भावना २ भेद छे उपशमसमकित, उपशमचारित्र क्षायिकभावना ९ भेद छे क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ क्षायिकदानादि ५ लब्धिक्षयोपशम भावना भेद १८, उपयोग १० ज्ञानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ एव १८ औदयिकभावना भेद २१ अन्नाणअसिद्धत्व १ असयम १ लेश्या ६ कषाय ४ गति ४ वेद ३ मिथ्यात्व १ एव २१ पारिणामिक भावना भेद ३ भव्यत्व १ अभव्यत्व १ जीवत्व १ ए तेपन्न उत्तर भावना भेद थया हवे गणठाणे मूल भाव कह छे मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए तीन गुणठाणे क्षयोपशम १ उदय १ पारिणामिक १ ए ३ भाव छे समकितथी माडी इग्यारमा पर्यंत आठ गुणठाणे पाच भाव छे एक क्षीणमोहे उपशम विना च्यार भाव छे सयोगी केवली अयोगी केवली

गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक १ ए तीन भाव छे औदयिक भावनो भेद जे अज्ञान केइ आचार्य नो तीन गुणठाणा सीम माने छे केटलाएक आचार्य ज्ञानावरणी दर्शनावरणीनो उदय तेहने अज्ञाण कहे छे ते माटे बारमा गुणठाणासीम एहनो उदय माने छे जे क्षीणमोहने अंते ए खपे अज्ञान ३ लीधा ते क्षयोपशमभावना भेद छे, ते विपर्यासयुक्त जाणवा अने औदयिक मध्ये जे अज्ञाण ते जे अजाण्यो भाव रह्यो ते ज्ञानावरणीना उदय तेहनो भेद औदयिक भावमा कह्यो छे ॥ ४६ ॥

चउदुगदुगपणचउतिग, तीसातीसासगठदुगवीसा।
वीसगुणवीसतेरस, बारसभावा गुणठाणे ॥ ४७ ॥

टीका—अथगुणस्थानेषु उत्तरत्रिपञ्चाशद्भेदानूपयोगविभजयन्नाह ॥ चउदुगति अत्रतीसाद्वनिपदानूसरत्र चउतीसाइति प्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानकेचतुस्त्रिंशद्भेदाभावानाभवन्ति अत्रक्षयोपशमस्यअज्ञानत्रिक चक्षुर्दर्शनद्वय इतिपचक अवधिदर्शन विभगेअधिकृतमपिकर्मग्रंथे नाधिकृत अन्नाणदुदसाआइमदुगेइतिवचनात् दानादिलब्धिपचक एव १० दशऔदयिकस्यैकविंशति परिणामकस्यत्रयोपिण्यचतुस्त्रिंशद्भेदामिथ्यात्वेभवति "दुगतीसत्ति" सास्वादनेद्वात्रिंशद्भेदा भावाना-क्षयोपशमस्य ते एव दश १० औदयिकस्यमिथ्यात्वरहितावि शति २० पारिणामिकस्य अभव्यत्वरहितौद्वौअभव्यत्वमिथ्यात्वएवसभवात् एवद्वात्रिंशति पुन दुगतिसत्ति मिश्रेद्वात्रिंशत्ताएवसास्वादनेनोक्ता अनकेचित्मिथ्यात्वस्यातेमिश्रोदयेन त्रयोस्त्रिंशदिच्छन्ति तदपिसम्मत, तथापिगाथायामिश्रमोहस्य-

सग्रहात् नेह व्यारयात केचित् ते मीसिमीसइति वचनमाश्रित्य सप्त-
विंशद्भेदा मिश्रे वन्ति, तदप्यपेक्षयमेव यत श्रुतसम्यग्दर्शनाना-
नज्ञान नादसणिरसनाणमिनिउत्तरा ययनवाक्यात्ज्ञेय, अनोद्वाविंश-
द्भेदाएव अविरतसम्यग्दर्शनगुणे "पणतीसत्ति" पचविंशद्भेदा भा-
वाना,तत्रोपशमसम्यक्त्व १ क्षायिकसम्यक्त्व १ क्षयोपशमेतुक्षयो-
पशमसम्यक्त्व १ ज्ञानत्रयदर्शनत्रय ६ दानादिलब्धिपचकइति-
द्वादश १२ अज्ञानमिथ्यात्वरहिताएकोनविंशतिरौदयिकस्य, अभ-
व्यत्वहीनाद्वौपारिणामिकस्य, एवपचविंशद्भेदाभवति अत्रौदयिके-
मिथ्यात्वस्यस्थाने केचित्सम्यक्त्वमोहोदयक्षिप्यति तदपिसम्मतमिति
देशविरतिगुणे "चउतीसत्ति" चतुस्त्रिंशद्भेदाभवति,तत्रोपशमसम्यग्-
दर्शन १ क्षायोपशमस्य द्वादश ता एवदेशविरतिमिलनेत्रयोदशौ-
दयिकस्य,देवगतिनरकगत्यपगमेसप्तदशपारिणामिकस्य,द्वौइतिप्रमत्ते
"तिगतीसत्ति" प्रमत्तेत्रयस्त्रि शद्भेदाभावानाभवति, तत्रपूर्वोक्ताया
चतुस्त्रिंशत देशविरति रसयमनिर्पग्गतिश्चापनीयते पुन मन
पर्यवज्ञानसर्वविरति क्षिप्येते तदात्रयस्त्रिंशद्भेदा प्राप्यते, अप्रमत्तेइति-
तथाऽप्रमत्तेसप्तमेगुणस्थानेत्रिंशद्भेदा भावाना, अत्रकृष्णनीलकापोत-
इतिलेश्यात्रयाभावात्तेनत्रिंशदिति, सगट्ठउगवीसत्ति सप्त तथा अष्टौ
पदान्यविंशतिसत्र इत्यनेनअपूर्वकरणेसप्तविंशति भावभेदाइति,
अत्रतेज पद्मलेश्यात्रयोपशमापगमेसप्तविंशति , उपशमचारित्रेक्षिप्ते
अष्टाविंशति , कर्मप्रकृतिकारस्तु उपशमचारित्रउपशातमोहेएवइ-
च्छति, चारित्रमोहनीयप्रकृतीनावेद्यमानानानोपशम किंतुश्रेणात्र-
पिउपशमकएवगृहीतइति, भावत्रिभग्यातुकडेइति यायात्, उपशा-
मकस्तुउपशातइतिग्रहणेनगृहीतनदपिदेशमात्रमिति, दशमेसूक्ष्मस-
परायगुणस्थाने " दुगवीसत्ति " द्वाविंशतिर्भेदाभावानाभवति,
यतश्चवेदत्रिकसज्वलनत्रिकस्यानुदयेशेषा द्वाविंशति भवति, तत्रो-

पशमद्विविधक्षायिकदर्शन १ क्षयोपशमस्यज्ञानचतुष्टयदर्शनत्रिक-सर्वविरति ८ दानादिपचकइतित्रयोदशद्वौपारिणामिकौमनुष्यगति-सज्वलनलोभशुक्ललेश्या सिद्धत्वरूपाऔदयिकाइतिद्वाविंशति, उप-शातमोहेतुलोभकषायक्षायोपशमिकसर्वविरत्यभावात्त्रिंशतिभेदाभ-वति, क्षीणमोहे "गुणवीसत्ति" एकोनविंशति भावानाभेदाभ-वति, तेचउपशातोक्ता विंशते उपशमभेदद्विकापगमेक्षायिकचारि-त्रेक्षिप्तेभवति, सयोगिगुणस्थानके "तेरसत्ति" त्रयोदशभेदा भावानाभवति, तेचनव क्षायिकोद्भवा मनुष्यगति १ शुक्ललेश्याऽ सिद्धत्वचौदयिक जीवत्वचपारिणामिकमितित्रयो दश यत प्रज्ञाप-नायाकेवलिन किंभव्या किंवाअभव्याइतिप्रश्ने नोभव्यानोअभव्याइ-त्युक्तत्वादिति, अयोगिगुणस्थानके बारमत्तिद्वादशभावा भवति शुक्ललेश्यापगमात् अलेश्यत्वेनचास्येति, सिद्धानातुक्षायिक भेदा जीवत्वपारिणामिकमितिदशभावाभवति यद्यपिक्षायिकभावभेदनव-केतुघातिकर्मक्षयसमुत्थानामेवगुणानाग्रहण तथाप्यघातिक्षयसमु-त्थानातथाशेषसकरादिगुणानातुपारिणामिकेएवसग्रहइतिपचसग्रह-टीकाशय इतिव्याख्यातागुणेपूत्तरभावभेदा ॥ ४७ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे चोवीस भाव छे क्षयोपश-मना १० औदयिकना २१ पारिणामिकना ३ सास्वादन गुण-ठाणे बत्तीस भाव छे क्षयोपशमना १० औदयिकना मिथ्या-त्वना विना २० पारिणामिकना अभव्यपणा विना २ एव ३२ मिश्रगुणठाणे बत्तीस भाव छे, क्षयोपशमना १० औदयिकना २० मिथ्यात्व विना पारिणामिकना २ अभव्य विना, समकित गुणठाणे पाचीस भाव छे उपशम समकित १ क्षायिक सम-कित १ क्षयोपशम समकित १ ज्ञान ३ दर्शन ३ दानादि ५ औदयिकना अज्ञान १ मिथ्यात्व १ विना ओगुणीस, पारिणामिक

२ एव पार्नीस भाव छे देशविरति गुणठाणे चोर्नीस भाव छे ए पार्नीसमायी औदयिकनी गति २ नीकली क्षयोपशमनो देशविरति १ मेलवीये एव चोर्नीस छे छठे प्रमत्त गुणठाणे तेत्रीस भाव छे देशविरति १ असयम १ तिरिगति १ ए तीन निकल्या मन पर्यवज्ञान सर्वविरति ए बे मेल्या तेवारे तेत्रीस, अप्रमत्त गुणठाणे त्रीस भाव छे लेश्या तीन नीकळी, तथा अपूर्वकरण गुणठाणे सत्तावीस भाव छे, तेजो १ पद्मलेश्या २ नीकल्या क्षयोपशम समकित १ ए एक नीकळी तेवारे सत्तावीस छे तेमध्ये उपसमचारित्र १ मेळीये तेवारे नवमे गुणठाणे अठावीस भाव छे इहा कम्मपयडिमध्ये उपशमचारित्र इग्यारमेज गणेव्यो छे पछे वेद ३ सज्वलन ३ ए छ काढ्या तेवारे दशमे चावीस भाव छे इग्यारमे गुणठाणे वीस भाव छे खीणमोह गुणठाणे उपशमना २ काढीये क्षायिकचारित्र ए एक मेळीये तेवारे ओगणीस भाव छे सयोगि गुणठाणे क्षायिकना नव मनुष्यगति १ शुक्ललेश्या १ असिद्धत्व १ जीवत्व ए तेर भाव छे अयोगि चउदमे गुणठाणे शुक्ललेश्या विना १२ भाव पामीये, सिद्ध जीवने क्षायिकना नव, जीवपणो पारिणामिकनो ए दश भाव छे ए दशमे आत्मधर्म छे ए गुणठाणे भाव कह्या ॥ ४७ ॥

सम्मत्ताओ पचसु, उवसमसमतिगेसुचरणयु(जु)अ।
सम्माइ(यण)सुसतेपुण, खायगसमत्तगा हुति॥४८॥

टीका—अथगुणस्थानेषुभावानाम्यानित्यमुच्यते सम्मत्ताओ-इति सम्यक्त्वात्पचसुअपूर्वकरणपर्यंतेषुगुणस्थानेषु उपशम-

सम्यग्दर्शनप्राप्यते "तिगेसु" त्रिकेषु नवमेदशमेएकादशे "चरणयुत" उपशमचारित्रयुत, इत्यनेनउपशमदर्शन उपशमचारित्र एवमेदद्वयप्राप्यते पुन सम्यग्दर्शनादिउपशममोहयावत् क्षायिक सम्यग्दर्शनभवति यश्चैकचत्वारिंशत्सत्ताकस्तस्यक्षायिकसम्यक्त्व-प्राप्यतेइति ॥ ४८ ॥

गुण	भाग	उप	क्षयो	क्षायि	औद	पारि
मि		०	१०	०	२१	३
सा		०	१०	०	२०	२
मि		०	१२	०	१९	२
अ		१	१२	१	१९	२
दे		१	१३	१	१७	२
प्र		१	१४	१	१५	२
ऽप्र		१	१४	१	१२	२
ऽप्र		१	१३	१	१०	२
ऽनि		२	१३	१	१०	२
सू		२	१३	१	४	२
उ		२	१२	१	३	२
क्षी		०	१२	२	३	२
स		०	०	९	३	१
अ		०	०	९	२	१

टबार्थ—सत कहेता उपशमश्रेणिवतने समकितथी माडी इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत कोईक जीवने क्षायिकसमकितपणे होये जे एकसो एकतालीस सत्तावालो जीव श्रेणि उपशमचारित्रे

माडे तेहने क्षीणमोहगुणठाणे क्षायिकसमकित, क्षायिकचारित्र ए बे भेद क्षायिकमा पामीये एटले क्षायिकसमकित क्षायिक-चारित्र छे ॥ ४८ ॥

खीणेसम्मचरण, नवभेदसभेदुगठगभयणा ।
नवनवचरिमदुगम्मि, खायगभेया समुद्दिट्ठा ॥४९॥

टीका—"खीणेसम्मचरणइति" क्षीणेक्षाणमोहगुणस्थानेक्षायिक चारित्रप्राप्यते, नवमेअनिवृत्तिबादरे दशमेसूक्ष्मसपराये क्षायिकभाव-स्यद्विकसम्यक्त्वचारित्रलक्षणवदति केचित्एकक्षायिकसम्यक्त्वमेव-वदति, एवभवतिभजनाचसाअपेक्षाभेदएवज्ञेय "चरिमदुगम्मि" चर-मद्विकेसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणस्थानेनवनवक्षायिकभेदाउक्ता वीतरागेणेति ॥ ४९ ॥

टबार्थ—नवमे दशमे गुणठाणे क्षायिकना कोईक आचार्य क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र ए बे भेद माने छे। अने कोइक आचार्य क्षायिक समकित १ एक भेद माने छे एहवी भजना छे। चरिमदुग कहेता छेहले बे गुणठाणे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे क्षायिकना नव भेद पामीये ए सर्व क्षायि-कना भेद कह्या ॥ ४९ ॥

परिणामगस्सभेया, मिच्छे तिगसेसयंमिदुगचेव ।
अभवत्तविहीणपुण, चरिमदुगेएगजीवत्त ॥ ५० ॥

टीका—परिणामगस्सेति परिणामस्यभेदामिच्छेइति मिथ्यात्वे "तिगत्ति" त्रिकजीवभव्यत्वाभव्यत्वरूपास्त्रयोभेदा प्राप्यतेशेषेषु-सास्वादनमारभ्यक्षीणमोहपर्यंतेषु "दुगत्ति" द्विकभेदजीवत्वभव्यत्व

रूप अभव्यत्वेनहीनरहितद्विकप्राप्यते "चरमदुगत्ति" चरमद्विकेत्रयो-दशगुणस्थानकेचतुर्दशगुणस्थानकेच जीवत्वमस्तिभव्यत्वतुसिद्धि-गमनयोग्यत्व तच्चारित्रनिष्पातेननभव्यत्व अभव्यतुपूर्वमेवनास्ति अतोजीवत्वमेव,भव्याभव्यत्वस्वरूपतुभगवतीसूत्रेजयतीप्रश्नेचभव्य-त्वनकर्मजमिति ॥ ५० ॥

टबार्थ —पारिणामिकभावना भेद तीन छे ते मध्ये मिथ्या-त्वगुणठाणे पारिणामिकना तीन भेद छे सास्वादनथी माडी क्षीणमोह पर्यंत पारिणामिकनाए वे भेद छे । अभव्यपणो नही । अभव्यपणो मिथ्यात्वगुणठाणेज हुवे । चरिम छेहले वे गुण-ठाणे एकजीवपणो छे भव्यपणो तिहा टल्यो योग्यता नीपन्या पछी कहेवाये नही ॥ ५० ॥

मीसेपणलद्धीओ, अन्नाणदसणदुगंचपढमदुगे ।
ओहीदसणजुत्त, मीसे नाणाइभयणाए ॥ ५१ ॥

टीका—मीसेपणलद्धिओइतिमिश्रेनाम क्षायोपशमिकेभावेपण-लद्धीओपचलब्धय दानलाभभोगोपभोगवीर्यरूपा "अन्नाणत्ति"अ-ज्ञानत्रय मत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभगलक्षण "दसदुगति" दर्शनद्विक च-क्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयच प्रथमद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वये-प्राप्यते "मीसेत्ति" मिश्रगुणस्थानेनाणाइ ज्ञानानिभजनात भजना-तुमिथ्यात्वात् मिश्रभागस्याज्ञान, सम्यक्त्वात् मिश्रभागस्यज्ञान, अत्रकेचित्विभगेदर्शनमिच्छति,तदाशयदीपयनाह "ओहीदसणजुत्त" इति अवधिदर्शनेनयुक्तमिति । अवधिदर्शनभवति एतद्वचनस्य-मताविष्करणार्थंनोक्तकितुजीवाभिगमादिवृत्तिमनुश्रियंति भावनाच वस्तुधर्मावलबनेतुसम्यगदर्शनिनामेवज्ञानभाष्यकारणापिउक्त श्रद्धा-

विरुद्धानामज्ञान शुद्धश्रद्धावतामेवज्ञान, मिश्रोदयस्तुसम्यग्दर्शन-गुणरोधकएवअतोमिश्रेऽज्ञानमेवेति ॥ ५१ ॥

टबार्थ —मीसे कहेता क्षयोपशमभावना भेद ते भव्ये पाच लब्धि, अज्ञान त्रण ३ दर्शन २ ए दश भेद मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन ए प्रथम "दुग" बे गुणठाणे पामीये मिश्रगुणठाणे जे समकितथी पडतो मिश्रमें आवे तो अवधिदर्शन लेतो आवे तेहने अवधिदर्शन कहीये, अने मिथ्यात्वथी मिश्रे आवे तेहने अवधिदर्शन नहीं, अने मिश्रगुणठाणे ज्ञाननी भजना छे। चोथायी त्रीजे आवे तेहने ज्ञान कहीये, पहिलायी त्रीजे आवे तेहने अज्ञान कहीये, ए अज्ञानमानि परिपाटी छे, पर-श्रद्धाशुद्ध विना भाष्यकार प्रमुख अज्ञानज माने छे। मिश्र-मोहनीयनो उदय दर्शन गुणने सर्वथा रोके छे, तेमाटे ज्ञाननी भजना छे ॥ ५१ ॥

दसणनाणतिगपण, लद्धीओमीसगचसम्मत्त।
वारस्सअविरईसम्मे, देसजुआदेसविरयमि ॥५२॥

टीका—"दसनाणतिगमित्यादि अविरइसम्मे" अविरतिसम्यक्त्वे द्वादशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, तेचामीदर्शनत्रिकचक्षुरचक्षुरवधि-दर्शन लक्षण "नाणतिग" ज्ञानत्रिक मतिश्रुतावधिज्ञानलक्षण "पणलद्धीओ" इतिपचदानादयोलब्धय "मीसगच" मिश्रक्षमिश्रा-रयप्रयोपशमसम्यक्त्व एवद्वादशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, तेएवद्वादशभेदादेशयुक्तादेशविरतियुक्तादेशविरतौपचमेगुणस्थानके त्रयोदशभेदा क्षयोपशमस्यप्राप्यते ॥ ५२ ॥

टबार्थ —चोथे समकितगुणठाणे दर्शन तीन चक्षुदर्शन १

अचक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन १ ज्ञान ३ दानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित ए अविरति समकित गुणठाणे चार भेद क्षयोपशमना होवे, देशविरति गुणठाणे जे चार कह्या तेमा देशविरति भेळीये तेवारे १३ तेर भाव पामीये ॥ ५२ ॥

देसविणुसव्वविरइ, मणनाणजुआपमत्तजुअलम्मि।
सम्मविणा य अपुव्वे, अनियट्टिचउम्मिचरणविणा ५३।

टीका—'देसविणुत्ति' देशविरतिविनासर्वविरतिमन पर्यायज्ञानयुता प्रमत्तेऽप्रमत्तेचतुर्दश क्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनइतिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन विनाअपूर्वेत्रयोदशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, अनिवृत्तिगुणस्थानेन "चउक्कम्मि" अनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशान्तमोहक्षीणमोहलक्षणेषुक्षयोपशमचारित्रविनाद्वादशभेदा क्षयोपशमभावस्यप्राप्यते, कर्मप्रकृतातुनवभेदशमेगुणस्थानेक्षयोपशमचारित्रमिच्छन्ति, तत क्षयोपशमभावोनप्राप्यतेइति ॥ ५३ ॥

टबार्थ—देशविरति काढीये सर्वविरति मेलविये। वली मनपर्यवज्ञान मेलविए तेवारे प्रमत्त गुणठाणे अप्रमत्त गुणठाणे ए बे गुणठाणे क्षयोपशमना चउद भेद छे अपूर्वकरण गुणठाणे क्षयोपशमसमकित विना तेर भेद पामीये, अनिवृत्ति गुणठाणायी माडी च्यार गुणठाणे क्षयोपशमचारित्र विना बार भेद छे कर्मप्रकृतीमध्ये दशमा गुणठाणापर्यंत क्षयोपशमचारित्र मान्यो छे ॥ ५३ ॥

मिच्छेदुगवीसपुण, सासाणतिगेअमिच्छउदयस्स।
सत्तरसदेसविरए, सुरनिरयअन्नाणरहिआओ ॥५४॥

टीका—अथौदयिक विभजयन्नाह ॥ मिछेइगवीसपुणडति । मिच्छेमिथ्यात्वेएकविंशतिभेदा औदयिकस्य प्राप्यते, पुन सास्वादनविकेसास्वादनमिश्राविरतिसम्यक्त्वे 'अमिच्छत्ति' मिथ्यात्वरहिता "उदयस्सेति" औदयिकस्य भावस्यविंशतिर्भेदाभवति, एतद्भाव्यतुद्वादशमगुणस्थानयावत् अज्ञानस्योदय मगृह्यते तन्मतपुन मुख्यत्वेनअज्ञानस्यापगमे अविरतसम्यग्दर्शने एकोनविंशतिरेवप्राप्यते देशविरते पचमगुणस्थानकेसप्तदशभेदाऔदयिकस्यप्राप्यते, सुरइति देवगतिनिरयेति नरकगतिअज्ञानरहिता ॥ ५४ ॥

टबार्थ—हवे औदयिकभावना भेद कहे छे मिथ्यात्व गुणठाणे एकवीस भेद छे औदयिक भावना २१ छे, सास्वादनथी तीन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २० भेद पामीये, समकित गुणठाणे ज्ञान विना ओगणीस छे, इमज भेद जणावावानु वचन छे देशविरति गुणठाणे सत्तर भेद पामीये, देवगति १ नरकगति १ अज्ञान १ ए तीन मिथ्यात्वे ए च्यार नथी, ए वली मतभेद देखाड्यो छे ॥ ५४ ॥

तिरिअविरयाओहीणा, पमत्तिअपमत्तिलेसत्तिगहीणा।
अदुलेसापुव्वदुगे, अवेअतिकसायसुहुमच(उ)ओ॥५५॥

टीका—तिरिअविरयाओत्ति तिर्यग्गति १ अविरतिन हीनारहिता पचदशभेदाऔदयिकस्यप्रमत्तेप्राप्यते अप्रमत्ते लेसतिगत्ति लेश्यात्रिकहीना कृष्णनीलकापोतरहिता द्वादशऔदयिकस्यभेदा प्राप्यते, "सुहुमति" सूक्ष्मसपरायलक्षणेगुणस्थानकेवेदत्रिककषायत्रिकरहिता चउत्ति चत्वारऔदयिकभावभेदा प्राप्यते ॥ ५५ ॥

टबार्थ—तिर्यंचनीगति १ असंयम १ ए बे-काढीये तेवारे प्रमत्तगुणठाणे पचार भेद औदयिकना छे, अप्रमत्त गुणठाणे कृष्णनीलकापोत लेश्या तीन काढीये तेवारे औदयिकना १२ भेद छे वे लेश्या, तेजो तथा पद्म काढीये तेवारे आठमे नवमे दश भेद छे औदयिकना वेद ३ कषाय ३ काढीये तेवारे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे औदयिकना च्यार भेद छे लोभकषाय १ असिद्धपणो १ मनुष्यगति १ शुक्ल लेश्या ए च्यार छे ॥ ५५ ॥

उवसतातिगेअलोभा, लेसविणादोअयोगीगुणठाणे।
मिच्छतिगेसन्निवाईय, चउइग(इगचउ)वारसउज्ज-
यतिन्नि ॥५६॥

टीका—उवसतत्ति उपशातत्रिके उपशातमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके अलोभत्ति अलोभालोभरहिता पंच-औदयिकस्यभावभेदा प्राप्यते लेसविणत्ति लेश्या शुक्ललेश्या विना तद्रहितौ द्वौएवभावभेदौ औदयिकस्यायोगिगुणस्थानेप्राप्येते, इत्युक्त्वाऔदयिकभावभेदागुणस्थानेषु, साम्प्रतसान्निपातिकभेदानिरूप्यते, तत्रयद्यौपशमिकादिभावानापचानामेकसायोगिका पचभगाभवति, तेचसयोगाभावात् नसान्निपातिकेभावे द्विकादिसयोगजाभगास्तेसान्निपातिकभावेसगृह्यन्ते तेचपञ्चविंशतिर्भवति तत्रद्विकसयोगेअक्षसचारणया दशभगालभ्यते, तेचामी १२।१३।१४।१५।२३ २४।२५।३४।३५।४५ रूपा त्रिकसयोगेपिदश तेचामी। १२३। १२४।१२५।१३४।१३५।१४५।२३४।२३५।२४५।३४५।एव रूपादशभवति चतुष्कसयोगा पचभगाभवति तेचामी।१२३४।

१२३५।१२४५।१३४५।२३४५। इत्येवपचज्ञेया पचसयोगिकस्त्वेकएक।१२३४५। एवरूप, एवपइविंशतिभगकेषुषट्वैभगा जीवेषुप्राप्यते नपरे भेयावीस असभविणोइत्यागमवाक्यात् तत्रैकोद्विकसयोगोयथाक्षायिकपारिणामिकलक्षण द्वौत्रिकसयोगिकौतत्रक्षयोपशमऔदयिकपारिणामिकलक्षण, मिथ्यादृशा चतुर्गतीना क्षायिकौदयिकपारिणामिकलक्षण, केवलिनाभवस्थानाद्वौचतुष्कसयोगौ तत्रउपशमक्षयोपशम औदयिकपारिणामिकलक्षण, प्रथमश्चतुर्गतिषुक्षायिकक्षयोपशम औदयिक पारिणामिकलक्षणोपिचतुर्गतिषु, पचकसयोगिकस्तुक्षायिकसम्यक्त्वोपशमचारित्रबलेनोपशमश्रेण्यारूढता तत्रगाथाचतुर्थकर्मस्तवे चउचउगईसुमीसग परिणामुदएहिंचउसुखएहि उवसमजुएहिंवाचउ केवलिपरिणामुदयखईए १ खय परिणामेसिद्धानराणपणजोगुवसमसेढीए इत्यादिज्ञेय, इतिभगक्रमेणक्षायिकसम्यग्दर्शनस्यचतुर्गतित्वनिवेदित, मिच्छतिगत्ति मिथ्यादिनिके मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थाननिके मूलोभगएक क्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षण सचचतसृषुगतिषुप्राप्यते तेनउत्तराश्चतुर्भंगाज्ञेया बारसत्ति अयते अविरतेसम्यग्दर्शनारयेगुणस्थानकेमूला तिन्नित्तित्रयोभगा क्षयोपशमौदयिकपारिणामिकलक्षण प्रथम उपशमक्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षणोद्वितीय अथचोपशमकदर्शनिनाक्षायिकौदयिकक्षायोपशमपारिणामिकलक्षण तृतीय क्षायिकदर्शनिनाएतेत्रयोमूलोत्तरास्तुचतुर्गतिषु एतेभवति तेनचतुर्गतीनाद्वादशभवति ॥ ५६ ॥

टबार्थ—उपशातमोह गुणठाणे क्षीणमोह सयोगी गुणठाणे लोभ विना तीन भेद छे औदयिकना अने शुक्ललेश्या विना वे भेद छे अयोगी गुणठाणे वे भेद छे, मिथ्यात्व

सास्वादनमिश्र ३ ए तिन गुणठाणे सांनिपातिकना मूल १ उत्तर च्यार भागा पामिये, क्षयोपशम औदयिकपारिणामिक ३ ए तीननो ए भागो ते च्यार गतिमा गणना चार भागा छे, अविरति गुणठाणे चार भागा सांनिपातिकना छे क्षयोपशम १ पारिणामिक २ औदयिक ३ एक भागो अथवा क्षयोपशम १ उपशम १ पारिणामिक । औदयिक ए च्यार भावनो ए बीजो भागो अथवा क्षयोपशम, क्षायिक, पारिणामिक, औदयिक ए च्यार भावनो तीजो भागो ए तीन भागा च्यार गतिमा छे, तेणे च्यार भागा छे ॥५६॥

छगदेसिपमत्तदुगे, तिगअपुव्वचऊदोदो ॥
खीणाइतिगेइग सभवि, (व)भगायविन्नेया ॥५७॥

टीका—देशेदेशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानेमूलास्तुपूर्वोक्ता-एवत्रय उत्तरास्तुतिर्यग्मनुष्यगतिद्वयगुणनेप भवति, प्रमत्ताद्वि-केप्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेत्रयस्तएवमनुष्यगतिप्रायोग्याएव-सनि अपूर्वादिचतुष्केअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसपरायोपशातमो-हलक्षणेउपशमश्रेणिप्रत्ययेद्वौभगकौ, उपशमक्षयोपशमौदयिकपारि-णामिकलक्षण उपशमदर्शनचारित्रपरिणतानाएवपचकसायोगिकस्तु-क्षायिकसम्यग्दर्शनोपशमचारित्रवताभवति, क्षपकश्रेणिस्थानानाअ-पूर्वानिवृत्तिसूक्ष्मसपरायाणाक्षायिकक्षयोपशमौदयिकलक्षणएकएव ए-वयोज्या क्षीणादित्रिकेक्षीणमोहसयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानत्रिके-एकएवभगस्तत्रक्षीणमोहेक्षयोपशमक्षायिकऔदयिकपरिणामलक्षण-श्चतुष्कसयोग सयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानद्वयेक्षायिकौदयिकपरि-णामकलक्षणस्त्रिकसयोगिक. सभवति, सभविइतिषट्सभवन्तिजीव-

वर्त्तिनोभगाएवज्ञेया गतिभेदेनविभज्यमानानानाप्रकाराभवति तद्यः-पिमूलत षडेवेति ॥५७॥

टबार्थ —देशविरति गुणठाणे सन्निपातना भागा षट् छे। मूलभागा तीन तेहने तिर्यंच मनुष्य गति १ ए बे गतिना गणता छ भागा थाय प्रमत्त १ तथा अप्रमत्त गुणठाणे मूल तीन भागा छे, अपूर्वकरणथी माडी इग्यारमा पर्यंत च्यार गुणठाणाने सन्निपातना बे भागा छे, एक उपशम १ क्षयोपशम १ पारिणामिक १ औदयिक ए क्षपकने इहा तीजो भागो पाच सयोगनो छे, नो तीन पण पामीये, क्षीणमोह गुणठाणे क्षायिक औदयिक पारिणामिक क्षयोपशम ए तिन सयोगि गुणठाणे, अयोगी गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक १ ए तीन सयोगी एक भागो छे, ए सर्व भागा मूल छ उत्तर १५ ते माहेला जाणवा वीस भागा असभवी छे पर कोई जीवमा पामीये नही ॥५७॥

वीसमसभवि छगपन्नरभगगइविभेएण ।
पणसयपणतीसही मिच्छे, जीवभेयविन्नेया ॥५८॥

टीका—सान्निपातिकभगसख्यामाह वीसविशतिर्भंगा असभवि सर्वजीवेषुक्वाप्यभावान्ननद्भगवर्त्तिनोजीवा सति, तत्रद्विकसयोगे-नवत्रिकसयोगेअष्टौ, चतुष्कसयोगेत्रय, एतेविंशतिर्भंगा असभविनो-ज्ञेया, सभविनिजीवेषुप्राप्यमाणा षड्भगास्तेचगतित्रिभेदेनविभक्ता "पनरत्ति" पचदशभवति इत्युक्त'गुणस्थानेषुभावा अथविस्तरया-ख्यायानिषष्ट्यधिकपचशतजीवभेद' प्रज्ञापनोक्तास्तेगुणस्थानेषुय-थाप्राप्यते तत्कथयनाह, तत्रप्रथमजीवभेदान्कथयति, तत्रचतुर्दश-

भेदेनिरयकास्तत्रगाथा रयणरय १ सक्क २ पहरचालयपह ३ पकपह ४ धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तत्रपृथवीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवतितेनपर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्विनिचतुरिंद्रियाअपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउरपरिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसंज्ञिसंज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्तपर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवति, एवतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तत्रगाथा पुढवाइचउसुचउविह छगवणविगलाथलजलाखयरा उरपरिभुजपरिसमणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिसप्तत्यधिकानित्रीणिशतानि, तत्रपचभरतपचैरावतपचमहाविदेहरूपा पचदशकर्मभूमय, पचहैमवतपचहैरण्यवतपचहरिवर्षपचरम्यकवर्षपचदेवकुरुपचोत्तरकुरुरूपास्त्रिंशत्कर्मभूमय, षट्पचाशदंतरद्वीपा क्षुल्लहिमवतशिखरीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसंज्ञिमनुष्याणातेचापर्याप्ताएवइंद्रियपर्याप्तिंनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्तारभकाएव म्रियतेमनुष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनाया "वतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइगणेसु इत्यादिएवसर्वेअधिकानिशतभेदा, गाथाचानपन्नरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्पन्नाअतरदीवासमणादुविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एकशतअष्टनवत्यधिकास्तेपाममीयथापचदशपरमाधर्मिकानरकपाला दशभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोडशव्यंतरभेदा पिचाशादय दशजृभका कचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरस्थिरभेदेनत्रय

किल्विषा चडालस्थानीया द्वादशकल्पा नवलोकातिका ब्रह्मदेवलोकरिष्टप्रस्तरतटासनकृष्णराजिषुनवविमानवासिन नवग्रैवेयका पचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनद्विगुणिता अष्टानवत्यधिकशतप्रमाणाभवति अपर्याप्तत्वमानोत्पद्यमानकालेअतर्मुहूर्त्तयावदेवतेपर्याप्ता चोच्यते, गाथा, पनरसपरमहम्मिअ दसभवणासोलविंतरादेवा दसजभगजोईसीया बारसकप्पानिकिंबसिया १ नवलोगतिअभेआ नवगेविज्झाअणुत्तरापच अपज्झत्तापज्जत्ता सुरभे आठाणभेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तथापितेनाधिकृता एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा । पचशतत्रिषष्ट्यधिकाज्ञेयाइति तत्रमिच्छेइतिमिथ्यात्वे प्रथम गुणस्थानके पचशतपचत्रिंशदधिकाजीवभेदा सभवति, त्रिगतिका सर्वेपिदेवगतिभेदाना मन्ये सप्ताधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे ज्ञेयम् ॥ ५८ ॥

वीस भागा असभवी छे छ मूल उत्तर १५ पनर भागा सभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाचसोपाचीस भेद जीवना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ए चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अट्ठावीस समकिती छे, ते मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यंचना ३०३ भेद मनुष्यना एकमोअट्ठाणु भेद १९८ देवताना एव ५६३ भेद छे ते मन्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगतिकाअणुत्तर सुर, भेयविणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्झत्तातीरिअइगवीस ॥५९॥

भेदेनिरयकास्तनगाथा रयणरय १ सक्क २ पहरचालूयपह ३ पकपह ४ धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तत्रपृथवीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवतितेनपर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्वित्रिचतुरिंद्रियाअपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउरपरिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसंज्ञ्यसंज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्तपर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवति, एवतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तत्रगाथा पुढवाइचउसुचउविह छगवणविगलाथलजलाखयरा उरपरिभुजपरिसमणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिभिरधिकानित्रीणिशतानि, तत्रपचभरतपचैरावतपचमहाविदेहरूपा पंचदशकर्मभूमय, पचहैमवतपचैरण्यवतपचहरिवर्षपचरम्यकवर्षपचदेवकुरुपचोत्तरकुरुरूपास्त्रिंशदकर्मभूमय, षट्पचाशदंतरद्वीपा चुल्लहिमवतशिखरीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसंज्ञिमनुष्याणातेचापर्याप्ताएवइंद्रियपर्याप्तिंनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्तारभकाएव म्रियतेमनुष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनाया "वतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइगणेसु इत्यादिएवसर्वेअधिकत्रिंशतभेदा, गाथाचारपन्नरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्पन्नाअंतरदीवासमणादुविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एकशतअष्टनवत्यधिकास्तेपाममीयथापचदशपरमाधर्मिकानरकपाला दशभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोडशव्यंतरभेदा पिचाशादय दशजृभका कचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरस्थिरभेदेनत्रय

किल्विषा चडालस्थानीया द्वादशकल्पा नवलोकान्तिका ब्रह्मदेवलोकरिष्टप्रस्तरतटासन्नकृष्णराजिपुनवविमानवासिन नवग्रैवेयका पचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनद्विगुणिता अष्टानवत्यधिकशतप्रमाणाभवति अपर्याप्तत्वयोत्पद्यमानकालेअन्तर्मुहूर्त्तयावदेवतेपर्याप्ता चयते, गाथा, पन्नरसपरमहम्मिअ दसभवणासोलविंतरादेवा दसजभगजोईसीया बारसकप्पातिकिव्वसिया १ नवलोगतिअभेआ नवगेविज्जाअणुत्तरपच अपज्जत्तापज्जत्ता सुरभे आठाणभेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तथापितेनाधिकृता एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा । पचशतत्रिषण्यधिकाजेयाइति तत्रमिच्छेइतिमिथ्यात्वे प्रथम गुण स्थानके पचशतपचविंशत्यधिकाजीवभेदा सभवन्ति, त्रिगतिका सर्वेपिदेवगतिभेदाना मध्ये सप्ताधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे ज्ञेयम् ॥ ५८ ॥

वीस भागा असभवी छे ७ मूल उत्तर १५ पन्नर भागा सभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाचसोपावीस भेद जावना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ए चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अट्ठावीस समकिती छे, ते मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यंचना ३०३ भेद मनुष्यना एकसोअट्ठाणु भेद १९८ देवताना एव ५६३ भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगतिकाअणुत्तर सुर, भेयविणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्जत्तातीरिअइगवीस ॥५९॥

टीका—लोगंतिकाइतिलोकांतिकानव, पंचानुत्तरभेदाश्चतुर्दश-तेपर्याप्ताअपर्याप्तभेदेनाष्टाविंशतिभेदास्तेसम्यक्त्वेएवभवंति न मिथ्यात्वे, लोकांतिकाधिकारिणोगृहीतत्वानशेषा, लोकांतिकपरिवारश्चज्ञातायां जिनायाध्ययने सामानिकात्मरक्षकादयोऽभिहिता नवे सर्वेसम्यग्दृष्टानिनदृष्टि तथैवसास्वादनेचतु शतभेदाजीवानामिति तेचसप्तनैरयिका पर्याप्ता तत्रापर्याप्तावस्थायांनसम्यक्त्व, यत सास्वादनेनरकानुपूर्वीअनुदयानिरयाणुपूर्विणुदयाइतिकर्म्मस्तवाकस्यात् निरियद्वगवीस, तिर्यग्योनिजाएकविंशतिभेदा सास्वादनेभवंति॥५९

व्याख्या—लोकांतिक नव तथा अणुत्तर ५ ए पर्याप्ता अपर्याप्ता ए अट्ठावीस भेद नथी। इहां लोकांति नव अधिपतिना लीधा छे, परिवारतो एहनो घणो छे। ज्ञातासूत्रे कह्यो छे सामानिक आत्मरक्षकादिक छे ते माटे समकितना सर्वने भजना जाणीये छे, निश्चय तो जिनोवेत्ति, तिमहीज सास्वादन गुणठाणे न्यारसे जीव भेद छे, नारकीना भेद सात पर्याप्ता भेद छे अपर्याप्तावस्थाये सास्वादनपणो न होये जे माटे नरकानुपूर्वीनो उदय सास्वादन मानयी ते माटे तिर्यंचना एकवीस भेद छे ॥५९॥

बायरथावरतियग, अपज्जत्तवियलतिअअपज्जत्त।
अमणापचअपज्जा, समणापज्जाअपज्जाय ॥६०॥

टीका—बायरइति बादरस्थावरत्रिकबादरपृथिवी अपर्याप्त १ बादराप्कायापर्याप्त बादरप्रत्येकवनस्पतिकायापर्याप्तइतिभेदत्रयसास्वादनेभवति इयमत्रभावना अत्रकश्चित्संज्ञिपंचेंद्रिय तिर्यग्नरामरभेद पूर्वमिथ्यात्वबलेनोत्सूत्रादिप्ररूपणाकरणेनबद्धैकेंद्रियायु पुन कारण-

वशात्। यथाप्रवृत्त्यादिकरणकरणेनग्रन्थिभेदकृत्वात्क्षयोपशमसम्यग्दर्शन उपशमाद्वा यावत् उपशमीभूयाते सास्वादनमधिगम्यसास्वादन स्याते अल्पतरकालावशेषे आयु क्षयेमृत्वा स्थावरनिकेउत्पद्यते, तस्य शरीरपर्याप्तावस्थतोऽर्वागुपशमसम्यक्त्वमहित्वामिथ्यात्वलभते, मनुष्यस्तुपूर्वंबद्धायुस्तदा पश्चात्ग्रन्थिभेदसम्भवश्रेणिसम्भवाउपशमप्राप्यपतित सास्वादनेचायुष क्षयकृत्वाएकद्वियेषूत्पद्यतेतस्यापिभवति विकलत्रिय अपर्याप्तसास्वादनेसम्भवति, अपचतिर्यग्मनुष्योवापूर्वंबद्धायुरुपशमप्राप्यपतनसास्वादनेमृत विकलेषूत्पद्यते विकलानातुशरीरपर्याप्तिरनन्तरमिथ्यात्वंव्रजति, असंज्ञिपचेंद्रिया पचजलचरस्थलचरखेचर भुजपरिउरपरिरूपाअपर्याप्तेषुविकलवत्प्राप्यन्ते समणेत्ति समनसो मन सहिता एतेजलचरादय पचअपर्याप्ता पचपर्याप्तास्तेषुसास्वादनप्राप्यते अपर्याप्तेषुग्रन्थिभेदसम्भवोपशमात्पतित सास्वादनप्राप्यमृतस्यसंज्ञिपूत्पद्यमानस्यभवति पर्याप्तेषुग्रन्थिभेदसम्भवोपशमात्पतितेन सास्वादनप्राप्यते, एवस्थावरत्रिक अपर्याप्तविकलत्रिक अपर्याप्तअसंज्ञिपचक अपर्याप्तसंज्ञिदशक मितिएकविंशतिभेदा तिर्यंच सास्वादनेप्राप्यते ॥ ६० ॥

टबार्थ —विगलत्तिनअपर्याप्तापृथ्वी १ अप् १ वनस्पति १ ए तिन थावर अपर्याप्ता ते बादर छे ए तीन भेद छे असंज्ञि ५ अपर्याप्तासंज्ञि ५ पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मिल्या दश ए विश तिर्यंचना भेद पामीये ॥ ६० ॥

मणुएसमणाभेआ, देवेनिछवतहचमीसम्मि ।
सगपणइगहीयम्मय, पणसोईसन्निपज्जत्ता ॥ ६१ ॥

टीका—मणुएसमणा मनुष्याणामध्ये समगत्ति मन सहित

मिथ्यात्ववत्सप्ताधिकशतसास्वादने प्राप्यते इतिसर्वमिलने सास्वादने प्राप्यते तथाचमिश्रेपर्याप्तभेदा एवप्राप्यते, तत्रसप्तभेदा पर्याप्ता रत्नप्रभाया प्राप्यन्तेतिर्यग्भेदा सज्ञिपर्याप्तका प्राप्यते ॥ ६१ ॥

टबार्थ —मनुष्यना समणा कहेता गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता पर्याप्ता २०५ भेद सास्वादन गुणठाणे पामीये देवताना मिथ्यात्वनि पेरे अट्ठाविश विना ११७ पामीए, सर्वे मीलया च्यारसें थया तथा हवे मिश्रगुणठाणे सात भेद नारकिना पर्याप्ता ७ ते तिर्यंच पचेंद्रीसज्ञी पाच पर्याप्ता तथा मनुष्यना एकसोएक भेद गर्भज पर्याप्ता देवना पच्यासी पर्याप्ता एटले एकसो अटाणु भेद मिश्रगुणठाणे पामीये ॥ ६१ ॥

सम्मेसन्नीदुविहा, चउसय तेवीस माघवइपज्जा ।
देसेपणतेरिक्खा, पन्नरसाकम्मभूमिनरा ॥ ६२ ॥

टीका—सम्मेसन्निति सम्यक्त्वेसज्ञिपचेंद्रियोद्विविध पर्याप्तापर्याप्तभेदभिन्न चतु शतचतुर्विंशतिप्रमाणस्तत्रमाघवतीनामतमापृथ्वीपर्याप्तभेदे नैवप्राप्यते। इत्यमुनाप्रकारेण त्रयोविंशत्यधिका चतु शतभेदा प्राप्यन्ते। नैरयिकास्त्रयोदशतिरिश्चादश मानुषोद्भवाष्यधिकशतद्वय। अष्टानवत्यधिकमेकशतदेवाना, एवचतु शतत्रयोविंशत्यधिकप्राप्यते। ननुपरमाधर्मिकेषुकथसम्यक्त्वमुच्यते। अत्रपूर्वसगतिकदेवनाशुपदेशेनप्राप्नोति इद्रकृतनदीश्वरोत्सवादिदर्शननिमित्तमपिप्राप्यते। देसेत्ति देशविरतिगुणस्थानकेविंशतिभेदा प्राप्यते, द्विगतिप्रत्यया तिर्यग्मनुष्यगतिप्रत्यया तत्रदेशे विरतारये पचमे गुणस्थानके पचतिरिस्कानियग्योनिजा सज्ञिपचेंद्रिया जलचराद्या पचपर्याप्ता मनुष्यगतिसभवा पचदशकर्मभूमिसभवानरामनुष्योद्भवाएव २० विंशतिभेदा प्राप्यते ॥ ६२ ॥

टबार्थ —समकितगुणठाणे मूल भेद २ सज्ञीपर्याप्तो अपर्याप्तो ए बेना उत्तर भेद च्यारसेने चोवीस थाये ते मध्ये सातमी नारकीना अपर्याप्तो १ भेद ए मध्ये समकित नही एटले च्यारसे तेवीस भेद छे नारकीना १३ तिर्यंचना १० गर्भजमनुष्यना २०२ देवताना १९८ एव च्यारसे तेवीस पामीये, इहा कोइ पूछे जे परमाधर्मिने समकित केम जडे ? तिहा उत्तर जे कोइ पूर्वसगति देवताने कारणे समकित पामे छे, देशविरति गुणठाणे पाच भेद गर्भजतिर्यंचना पर्याप्ता पनर कर्म्मभूमिना मनुष्यना पनर भेद पर्याप्ताए वीस भेद पामीये छीए ॥ ६२ ॥

पन्नरसकम्मभूमि(या), नरभेयासेसएसुठाणेसु ।
समुग्घायायपमत्ते, केवलिवज्जाछगहवति ॥ ६३ ॥

टीका—पन्नरसेत्यादिपचदशकर्मभूमिजा नरभेदा पचभरतैरावतमहाविदेहाख्या पचदशनरभेदा शेषेषुप्रमत्तादिषुनवगुणस्थानकेषुप्राप्यते। सज्ञिपचेंद्रिया पर्याप्ता कर्मभूमिजाएवसर्वविरतिलभते, इत्युक्तगुणस्थानकेषुजीवभेदद्वार। अथगुणस्थानेषुसमुद्घातद्वारप्रतन्यते। तत्रसमुद्घाता सप्त, वियण १ कसाय २ मरणे ३ वेउव्विये ४ तेजसे ५ अआहारे ६ केवली ७ यसमुग्घायाउछउ मत्थाजिणेएग १ ससम्यक्त्वप्रकारेणउत्प्राबल्येनवात वीर्यप्राबल्येनप्रागल्भ्यसमुद्घात, सम्यक्त्वप्रकारणउत्प्राबल्येनवात चैतन्योपयोगादीनावेदनीयायुरुदयेनससमुद्घात सप्तप्रकार, तत्रवेदनासमुद्घात वेदनीयकर्मोदयेनसातासातयोरुभयोरप्युदयेनचेतनाविपर्यभवति कषायसमुद्घात चारित्रमोहोदयेनमरणसमुद्घातोपिवेद-

नीयकर्मोदयेनदृष्ट, सचासातावेदनीयविपाकेन, वैक्रियसमुद्घात, वैक्रियशरीरनामोदयेन, तैजससमुद्घात तैजसशरीरनामोदयेन, आहारकसमुद्घात, आहारकनामोदयेन, केवलिसमुद्घात वेदनीयनामगोत्रोदयेन, सयोगिप्रातेएवभवति समुद्घाता समुद्घाताश्चप्रमत्ते केवलिसमुद्घानवर्जा षट्भवति ॥ ६३ ॥

टबार्थ—शेष छद्वाथी उपरले गुणठाणे पन्नर कर्मभूमिना पर्याप्ता ए पनर भेद पामीये बीजे क्षेत्रना उपन्या ते विरति धर्मनी प्राप्ति नहीं सामग्रीनो अभाव छे ते माटे जाणवु समुद्घात सात छे ते मध्ये प्रमत्त गुणठाणे एक केवली समुद्घात नथी, शेष छ समुद्घात छे वेदना १ कषाय २ मरण ३ वैक्रिय ४ तैजस ५ आहारक ६ ए छ पामीये ॥ ६३ ॥

पढमेबीयचउत्थे, देसेअणहारमिस्सिदोचेव ।
केवलीयचरसयोगे, खीणअयोगामि नो हुति ॥६४॥

टीका—प्रथमेमिथ्यात्वे द्वितीयेसास्वादने चतुर्थेअविरतिसम्यक्त्वे अनाहारत्तिआहारकसमुद्घातवर्जा पचसमुद्घाताभवति आहारसमुद्घानस्तुचतुर्दशपूर्वधरस्यप्रमत्तगुणस्थानकस्यैवभवतिनशेषेषु। मीसत्ति मिश्रे तृतीयेगुणस्थानकेद्वावेववेदनीयकषायलक्षणौसमुद्घातौप्राप्येते मिश्रेमरणाभावात्नमारणातिक वैक्रियमिश्रयोगाभावात्नवैक्रिय तेजसस्तुतीव्रसक्लिष्टपरिणामस्यभवति तीव्रसक्लेशोनमिश्रस्य शेषपूर्ववदेव । सयोगिकेवलिलक्षणत्रयोदशमेगुणस्थाने, केवलीय केवलिसमुद्घातलक्षणसमयाष्टकपरिमाणभवति । खीणत्तिमोहाद्यपेद्वादशे अयोगित्ति अयोगिकेवलिलक्षणेचतुर्दशगुणे नो-

इतिनिषेधेभवति क्षीणेमरणाभावात्मारणातिकमोहाभावानलब्धपुनर्जीवन, ध्यानारूढत्वान्नवेदनाकषायौ, उद्भस्थत्वात्नकेवलिसमुद्घात एवमयोगेपि ननुअयोगमरणदृश्यतेतत्कथनमारणातिकमितिअयोगेचेतनावाताभावात् भवक्षयेपि न मरणसमुद्घात ॥ ६४ ॥

टबार्थ—पहिले मिथ्यात्व गुणठाणे हवे बीजे सास्वादन गुणठाणे, चोथे समकित गुणठाणे पाचमे देशविरति गुणठाणे, केवली समुद्घात तथा आहारक समुद्घात विना पाच समुद्घात छे २ नथी आहारक समुद्घात चऊद पूर्विने होये, मिश्रगुणठाणे वेदनी, कषाय ए बे समुद्घात होवे सयोगी गुणठाणे एक केवली समुद्घात छे खीणमोह अयोगी केवली गुणठाणे कोइ समुद्घात नथी ॥ ६४ ॥

सेसेमरण इक, अट्टरुद्दायपढमपचगुणे ।
अट्टतिगधम्मचउग, पमत्तिअपमत्तिधम्मचउ॥६५॥

टीका—शेषेषुअप्रमत्तादिषुउपशातमोहपर्यंतेषुएकमरणमरण समुद्घानलक्षणंप्राप्यत उपशांतस्यआयु क्षयेमरणभवति, तेननद्वेषणात्केचिदप्रमत्तादिषुमरणमन्यतेनमारणातिकसमुद्घात ध्यानारूढत्वात् ॥ इत्युक्तं समुद्घातद्वारगुणस्थानेषु ॥ साप्रतध्यानद्वारगुणस्थानेपूच्यते जदस्थायत्तिनध्यानचतुर्भाआर्त्तध्यान १ रुद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ चेति ॥ उक्तच ॥

जथिरमज्झवसाण, तझाणजचलतयचित्त ।
तहुज्झभावणावा, अणुप्पेहावाअवाचिंता ॥ १ ॥

अतर्मुहूर्त्तप्रमाणकालमेकवचित्तावस्थानेध्यानशेषचलनचित्तअथवा भावना अथवा अनुपेक्षा—अथवा चिंताभूति ॥ उक्तच ॥

अंतोमुहुत्तमित्तं, चिंतावत्थाणमेमवत्थुम्मि ।
छउमत्थाणझाणं, जोगनिरोहो जिणाणंतु ॥ २ ॥

अंतर्मुहूर्तात् परतः चिंताभवति अथवा ध्यानांतरंवाभवति पुनः बहुवस्तुसंक्रमेसंतानोभवति ॥ उक्तंच ॥

अंतोमुहूत्तपरओ, चिंताज्झाणंतरंवदुज्झाहिसु ।
चिरमिहदुज्झंबहुवा, धुमंकमेझाणसंताणो ॥ ३ ॥

अत्तरुद्धम्मं, शुक्लज्झाणाइंतत्थअंताइं ।
निव्वाणसाहणाइं, भवकारणमट्टरुद्दाइं ॥ ४ ॥

तत्रार्त्तध्यानं चतुर्धा अमनोज्ञानांवियोगचिंतनरूपप्रथमं अमनोज्ञा अमनोहरा शब्दादयस्तेषांवियोगचिंतनंकदाएतेमजंति अथवा शत्रुप्रमुखाणांसंयोगेतद्वियोगचिंतनंकदाएतेषांक्षय इत्यादि अनिष्टसंयोगे आतुरारतिसमुद्भवेतद्वियोगचिंतनेउपयोगस्यैकाग्र्यअभिनवोपयोगतारूपध्यानप्रथममनोज्ञविषयादिसंप्रयोगचिंतारूप, द्वितीयंकदाकथंवाइष्टा शब्दादय मित्रादय संदृश्यते एतच्चिंतारूपैकाग्र्याऽनन्योपयोगतारूपध्यानंद्वितीयइष्टवियोगचिंतासमुद्भव, तथा शूलादिरोगप्रकटनेनतद्विगमचिंतारूपतृतीय, एतेरोगामेकथंजाता कथंगच्छति एतच्चिंतातन्मयत्वरूपरोगचिंतारूयतृतीय, रोगस्याप्यनिष्टत्वेनप्रथमभेदेएवांतर्भावस्तथापि अनिष्टा शत्रुप्रमुखामित्रक्षेत्रत्वेनरोगाणांचस्वशरीरावगाहात् एकक्षेत्रेणैवमित्रामित्रयोन, तथाचक्रवर्त्यादिविषयाणांअभिलाषेणतद्विषयवांछानिदानकरणरूपचतुर्थं । एवमार्त्तध्यानचतुष्टयभेदसंसारवर्धनं तिर्यग्गतिमूलंज्ञेय, रागोदोसोमोहो जेणसंसारहेयवोभणिआ अट्टम्मियंतेतेनिवि तोतसंसारतरुबीया १ लेश्याआद्याअप्रशस्तास्तिस्र तस्यक्रंदनशोचनपरिवेदनताडनलक्षणानिलिंगानि । पुनरुक्तंच सद्दाइविसयगिद्धो सधम्मपरमुहो-

पमायपरो, जिणमणमयमणुविरक्तो वट्टइअट्टम्मिज्झाणम्मि इत्यार्त्त-स्वरूप तद्भवबधबन्धनवहनमारणप्रनि यान (प्रणिधान?) अनिक्रोधग्रहग्रस्त निर्घृणरुद्रघोरपरिणामरुद्रध्यानचतुर्विध हिंसानुबधि १ मृषानुबधि १ चौर्यानुबधि १ परिग्रहरक्षणानुबधिरूप तत्र हिंसाद्र यहिंसासाच हिंसाकरणकारणानुमतिर्चिंतनैकाग्रतारूपमनन्योपयोगतारूप प्रथम एवमृषाभाषणेत्रिकरणैकत्वोपयोगतारूपद्वितीय चौर्यचिंतनैकत्वरूप तृतीय परिग्रहमिलनरक्षणचिंतातन्मयत्वरूपतुर्यरुद्र आद्ये लेश्यात्रयरूप, अस्यलिंगानिमरणाभिलाषमरणेहापरस्य यसनेहर्षनिर्दयत्वपरस्यकष्टकरणे, न अनुतापइत्यादीनिरुद्रध्यानस्वरूप, धर्मध्यानतस्यभावनाज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्यलक्षणानि । तत्रगाथा नाणेनिवशासोकुणइमनोधारणचिसुद्धिंच नाणगुणमुणीमुणियसारोतोब्भाइमुणिचलमईओ ॥ १ ॥

सकाइदोसरहिओ, पसमधिज्जाइगुणगणोवेओ ।
होइअसमूढमणो, दसणसुद्धलाणम्मि ॥ २ ॥
नवकम्मअणायाग, णेराविणिज्जरसुभायाण ।
चारित्तभावणाए, झाणमयत्तेणससमेई ॥ ३ ॥
सुविइयजगसब्भावो, निस्सगोनिब्भओनिरासोओ ।
वैरग्गभावियमणो, झाणम्मिसुनिचलो होइ ॥ ४ ॥

इत्यादिभावनयाविशुद्धपरिणाम मुनिर्धर्मध्यानमवलम्बते धर्मध्यानस्यालम्बनानिवाचनापृच्छनापरिवर्त्तनाऽनुपेक्षालक्षणानि धर्मध्यानभेदा, आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, सस्थानविचयलक्षणा स्तत्रसुनिपुणअनाद्यनिधनसर्वमतहितपर्यायभाव कथनरूप अजितअमितमहार्थमहानुभावमहाविस्तारनिरवद्यजि-

स्तनैकत्वरूपजिनाज्ञासत्यत्वोपयोगैकत्वप्रथमधर्मध्यान, कदाप्य-वचोवेजिनाज्ञासत्याइतिचिंतन, अणुवकयपराणुगाढ परायणाज-किणाजुप्पवराजिय रागदोषमोहानवहाया ईगोत्तेण १ इत्येक-त्वरूप प्रथम, अपाया रागद्वेषकषाया एतेममनयुज्यते, भावनाच नाहविभावकर्त्ता नाहविभावभोक्ता नाहविभावाधार नाहविभा-वरसिक नाहविभावपरिणामी, नचपुद्गलानास्वामीनचाधार नग्रा-हक नव्यापकोनोपुद्गलानायोगेममसुख परकर्तृत्वमेवदु ख यच्चा-नतनिर्विकारस्वभावात् अन्यनूतनूनमम, एतेरागद्वेषमिथ्यात्वादयो-दोषाअपायाएव तेषायोगेममनस्थात य इत्यादिचिंतनैकागतोपयोग-रूप द्वितीय । विपाकविचयश्चज्ञानावरणादीनामष्टानाकर्मणाविपा-काज्ञानरोधादय तेषाविपयश्चिंतनज्ञानावरणादीनानाहकर्त्तानाहभो-क्तानाह, आदाता नाह कर्मणासमूद्वइत्युपयोगचिंतनतन्मयत्वतृतीय-विपाकविचयाख्य, चतुर्थलोकालोकस्वरूपऊर्द्ध्वाधस्तिर्यग्लोकास्थान-चिंतन वस्तुत स्वीयासख्येयप्रदेशगुणपर्यायावस्थानपरिणमनचिंत-नतन्मयत्वसस्थानविचयाख्यधर्मध्यान किंबहुना सत्वविचयजी वाई पय-त्थवित्थरोवेय सत्वनयसमूहमयम्भाइज्जासमयसत्त्र १ सत्वपमायावि-रया मुणओखीणोवसतमोहाय। झायारोनाणधरा, धम्मज्झाणस्ससनि-द्दिट्ठा २ इत्यनेनधर्मध्यानध्यातारस्तेनिर्ग्रन्था एव, अतदिगपटाश्चतुर्थे-गुणस्थानके आज्ञाविचयाख्यधर्मध्यानमिच्छति तदभिप्रायपरिज्ञा-नात् आज्ञागीकारतद्भावनादयोभवति आज्ञास्वरूपैकत्वोपयोग-स्थिरत्वमतर्मुहूर्त्तप्रमाण अनतानुबधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानक-षायोदयाभावेएवभवतिनाऽ ऽइत्युक्त धर्मध्यानस्वरूप, शुक्लध्यानतु-निर्मलक्षयोपशमोद्भवयथार्थ चेतनाप्रागल्भ्येनिमित्तावलबनप्राप्त स्वरूपोपयोगीस्वरूपैकत्वपरिणतस्यभवति पूर्वविद आद्येशुक्ले तत्र तत्कालकृतज्ञानावरणीयक्षयोपशमरूपभावश्रुतापेक्षवचनद्रव्यश्रुता

पेक्ष नोचेन्मरुदेवीमापतुषादिषु यमिचार, तच्छुक्लध्यानचतुर्द्धा-
पृथक्त्ववितर्कसप्रविचारं प्रथम, एकत्ववितर्कमविचारं द्वितीय,
य, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिरूपतृतीय, व्युपरतक्रियानिवृत्तिरूपचतुर्थं, त-
त्राद्ये द्वे उपशान्तक्षीणकषाययोर्भवत, अत्रोपशान्तक्षीणकषायशब्देन
उपशमश्रेणिक्षपकश्रेणीप्रारम्भेते एवज्ञेय ध्यानशतकादिषु, तत्रा-
त्मन पुद्गलादिभ्य भिन्नत्वेनस्वरूपोत्पादव्ययध्रौव्यपृथक्त्वचिंतनेन-
स्वरूपगुणपर्यायपृथक्त्वचिंतनेनवितर्कश्रुतज्ञानावलंबनविचारो अर्थ-
व्यजनयोगसंक्राति, अथ पदार्थ जीवाद्यजनतत्प्रकाशकज्ञानादि-
गुणसमूह तद्योगोमनसएकत्वेनवाक्कायचापलरोधलक्षण तद्रूप-
ध्यानद्रव्यात्पर्यायेपर्यायाद्द्रव्येएवसामान्यधर्मविशेषधर्मगुणपर्यायपर्यो-
गपरावर्त्तनेन सविकल्पनिर्विकल्पपूर्वक श्रद्धानज्ञानस्वरूपैकत्वात् भेद-
रत्नत्रयरूपप्रथमशुक्लध्यान, अर्थपदार्थे व्यजनेगुणपर्यायेएकत्वोपयो-
गरूपवितर्काख्यश्रुतालंबनेनअविचार उपयोगातरासंक्रमणरूपनिर्वि-
कल्पचतेनाविचारनिर्विकल्पत्वेनाभेदरत्नत्रयीरूपद्वितीय, एकत्ववि-
तर्कअप्रविचारलक्षणशुक्लभवति, सूक्ष्मक्रियासूक्ष्मयोगचलनरूपात-
स्यारोधककालेअप्रतिपातिरूपतृतीय, सर्वथासंक्रियत्वक्षेत्रातरगमन-
रूपक्रियारूपचतुर्थव्युच्छिन्नक्रियानिवृत्तिरूप चतुर्थ शुक्लध्यान, एव
ध्यानस्वरूप, तत्रगुणस्थानकेषुविभजनाह ॥ अट्टरुद्दाइतिप्रथमेषु-
पचसख्यालक्षणेषुगुणेषु मिथ्यात्वात् देशविरतिपर्यंतेषु आर्त्तरौद्रे-
द्वेध्याने, आवश्यकनिर्युक्तौ, तदकियदेशविरया पमायपरसजयाणु-
गज्झाण भवपमायमूलत्वज्ञेयत्वपयत्तेण ? इत्यार्त्तध्याने इयकरणा-
कारणाणु मइविसयमणुचिंतणचउज्झेओ अविरयदेशासजयजणमण-
मसेविअमदत्त इतिरुद्राधिकारेमुनीना धर्मध्यानमितिवाक्यात्, त-
त्त्वार्थेतुअप्रमत्तानाधर्मध्यान, तत्रप्रतिपद्यमानकापेक्षया अप्रमत्ते-
धर्मध्यानमालंब्यपश्चात्पतन्प्रमत्तेपिकियत्कालयावत्धर्मध्यानीभवति,

तेनआर्त्तविकल्पर्मचतुष्कप्रमत्तेऽप्रमत्तेगुणस्थानकेभवति, निदानार्त्त-स्यमुनीनामसंभवात्अप्रमत्तारयेसप्तमेगुणेधर्मध्यानस्यैवचत्वारोभेदा-भवति ॥ ६५ ॥

टबार्थ—शेषगुणठाणे पाचने विषे प्रमत्त १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिबादर ३ सूक्ष्मसपराय ४ उपशांतमोह ५ ने विषे एक मरण समुद्घात छे ॥ हवे गुणठाणे ध्यान कहे छे । मिथ्यात्वथी मांडी पाच गुणठाणा पर्यंत आर्त्त १ तथा रौद्र १ ए बे ध्यान छे, तेहना ८ पाया छे, आवश्यक निर्युक्ते मुनि विना धर्मध्याननी मना छे निदान आर्त्तविना तीन भेद आर्त्तध्याननना च्यार भेद ए सात भेद प्रमत्तगुणठाणे ध्याननना छे । अप्रमत्त गुणठाणे धर्मध्याननना च्यार भेद छे ॥ ६५ ॥

चउधम्म एकसुक्क अपुव्विसेसमि एगसुक्कच।
चरिमे दुसुक्कचरिमा, ज्झाणभेया गुणठाणे ॥६६॥

टीका—चउधम्मइत्यादिअपुव्विइत्यादि, अपूर्वकरणेअष्टमेगु-णस्थानकेचत्वारोधर्मध्यानस्यभेदा, एकश्चशुक्लध्यानस्यएव पचभेदा-भवति "सेसम्मि" शेषेअनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशांतमोहक्षीण-मोहसयोगिकेवलिपर्यंतेषुएकशुक्लभवति, तत्रोपशांतमोहयावत् पृथ-क्त्ववितर्कसप्रविचाररूपशुक्लमोहेएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपप्राप्यते, सयोगिकेवलिचरमभागेयोगरोधकालेआवर्जीकरणकेवलिसमुद्घाता-नंतरसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति प्राप्यते, चरिमेत्ति चरमेअयोगिकेवलि-लक्षणे, दुसुक्कत्ति द्वौशुक्लौचरमौसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिक्रियलक्षणौ द्वौशु-क्लभेदौभवत एवध्यानभेदागुणस्थानकेज्ञेया, ॥ ६६ ॥

टबार्थः—च्यार धर्मध्याननां पाया तथा एक पहेलो पृथ-

क्त्ववितर्कसप्रविचारनाम ए पाच भेद ध्यानना अपूर्वकरण गुण-ठाणे छे, शेष गुणठाणे एक शुक्लध्यान छे, नवमे दशमे अग्यारमे शुक्लनो प्रथम पायो छे, क्षीणमोहे शुक्लनो बीजो पायो छे, तेरमे शुक्लनो तीजो पायो छे, तेरमाने अते छे, तेरमानी आ-दिध्यान तथा ध्यानातरिका छे, "चरिम" चौदमे शुक्लना छेहलां बे भेद छे, ध्यानभेद गुणठाणे इम कह्या ॥ ६६ ॥

दडकभेया सुगमा, वेयतिगजावबादरकसाओं ।
चरणे अविरईइक्का, पढमचउठाणगे नेआ ॥६७॥

टीका—अथगुणस्थानकेषुदडकभेदानाह दडकभेदा सुगमा सुज्ञेया नेरईया १ असुराइ १० पुढवाई ५ बेन्दिया ३ चेव गं-ब्भयतिरि १ नराण १ वनर १ जोइसिअ १ वेमाणी १ इत्येव चतुर्विंशतिदडकास्तेमिथ्यात्वेचतुर्विंशरपिभवति सास्वादनेतेजोवा-यू विनाभवतिद्वाविंशति, मिश्रेऽविरतसम्यक्त्वेषोडशपचेंद्रियदंडका, देशविरतिगुणस्थानकेतिर्यग्पचेंद्रियामनुष्यपचेन्द्रिया, एतौद्वौदंडकौ-भवत, प्रमत्तादयोगिपर्यंतेषुएकोमनुष्यपचेंद्रियार योदडकोलभ्यते, वेदद्वारेवेदनिकपुरुषनपुसकस्त्रीवेदलक्षणयावद्बादरकषायइति अनिवृ-त्तिबादरगुणयावत् वेदनिकोदय ।सूक्ष्मसपरायात् उपरिअवेदीएवजीव वेदाद्विविधा।द्रव्यवेदा भाववेदाश्चतत्रद्रव्यवेदालिंगाकाररूपा, भाव-वेदा पुरुषाणास्त्रयमिलाषरूप स्त्रीणापुरुषामिलाषरूप षढानातूभ-यामिलाषरूप, पुरुषादिषु तिणफुफुमनगरदाहसमानविषयदाह स-चनवमगुणस्थानकयावदेव लिंगाकाररूपस्तुसयोगिकेवलिपर्यंतदृश्यते, तत्पाठश्चकर्मग्रथेवेदनिके, उपयोगद्वादशकथनेनद्रव्यलिंगग्रहणक्रन-मिनि, अभिलाषापेक्षयातुनवमयावत्, ननुध्यानारूढस्यश्रेणिगतस्य-

कावेदोदयनानाभिलाषरूप, तत्कथ तत्रोच्यतेअनवेदोदय नविषयाभिलाषरूप किंतुपुरुषे धैर्यरूप, स्त्रीवेदस्यकिंचिद्दैन्यतारूप, नपुसकस्यकिंचिदातुरतारूपएवज्ञेय, वेदोदयाभावेतुतीव्रत्वदैन्यत्वातुरत्वादयोनभवन्ति, उक्ता वेदा सप्रतिचारित्रकथयन्नाह, चरणेत्ति चारित्रसप्रतिपक्षभेदग्रहणेनसप्तविध, तद्यथा सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति, अविरतिश्चतत्रसामायिकमिति सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षणसामायिक, तद्विशेषाएवछेदोपस्थाप्यादयोविशुद्धतराध्यवसायविशेषा, सावद्ययोगविरतेरखतन्त्रयुत्पत्ति, रागद्वेषविरहित सम, अयो गमनसकलक्रियोपलक्षणमेतत्सर्वैवक्रिया, साधो अरक्तद्विष्टस्यनिर्जराफला, समस्याय समाय समायमितिस्वार्थिकष्टक, समायेभवसामायिक, सामायेननिर्वृत्तसमस्यवाविकारस्तन्मय समाय सप्रयोजनमस्येतिवासर्वनयथाभिप्रेतेर्थेटक्, तद्यसामायिकद्विप्रकार, इत्वरकालयावज्जीविकच तत्राद्यप्रथमात्यतीर्थकातीर्थयो, प्रव्रज्याप्रतिपत्त्यावारोपित, शस्त्रपरिज्ञाध्ययनादिविद श्रद्दधत छेदोपस्थाप्यसयमारोपपरोविशिष्टतरत्वाद्विरते सामायिकव्यपदेश जहाति, इत्यतइत्वरकालमध्यमतीर्थकृताविदेहक्षेत्रवर्तिनाचयावज्जीविक प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्यप्राणप्रयाणकादवतिष्ठते, प्रथमातिमतीर्थकरशिष्याणासामान्ययतिपर्यायछेदोविशुद्धतरसर्वसावद्ययोगविरतावस्थानविविक्ततरमहाव्रतारोपणछेदोपस्थाप्यसयम । छेदोपस्थाप्यमेवछेदोपस्थाप्यपूर्वपर्यायछेदेसतिउत्तरपर्यायेउपस्थापनछेदोपस्थापन, तदपिद्विविधा, निरतिचारसातिचारभेदेन, तत्रशिष्यस्यनिरतिचारमधीतविशिष्टाध्ययनविद मध्यमतीर्थकरशिष्योवायदोपसपद्यते, चरमतीर्थकरतीर्थनशिष्याणाशिष्यत्वेनभवनेभवति, सातिचारतुभग्नमूलगुणस्यपुनर्व्रतारोपणेछेदोपस्थाप्यसुभ यचैनतु, सातिचार-

चस्थितिकल्पएवाद्यततीर्थकरयोरवेत्यर्थ, परिहारस्तपोविशेषस्तेन-
विशुद्धपरिहारविशुद्धमिति, तदपिद्विधा, निर्विश्यमानक, निर्विष्टकायि-
कच, तत्रनिर्विश्यमानकमासेव्यमानकपरिभुज्यमानकमित्यर्थ, निर्वि-
ष्टकायिकमासेवितमुपभुक्तनत्सहयोगात्तदनुशायिनोपिनिर्विशमानका-
स्ताळीत्येशक्तौवानिर्वेश उपभोगोनिर्विशमानका तत्रउपभुजाना-
निर्विष्टकायिका कायोर्यरितिपरिभुक्तनादृग्विधतपस निर्विष्टका-
यिकाइत्यर्थ परिहारविशुद्धिश्चतप प्रतिपन्नानानवकोगच्छ, तत्रप-
रिहारिणश्चत्वार, अनुपरिहारिणश्चत्वार, कल्पस्थितएकएववाचना-
चार्य, सर्वेपिश्रुताद्यतिसपन्नास्तथापिस्त्याकल्पस्थितएक कश्चिद-
वस्थाप्यते, तत्रयेकालभेदेनविदितपोनुतिष्ठतितेपरिहारिण निय-
ताचाम्लभक्ता, स्वनोनुपरिहारिणाग्रीष्मेचतुर्थषष्ठाष्टमभक्तलक्षणज-
घन्यमध्यमोकृष्ट, क्रमेणैवशिशिरकालेषष्ठाष्टमदशमानि जघन्यम यमो-
त्कृष्टानि, वर्षास्वष्टमद्वादशभक्तानि जघन्यम यमोत्कृष्टानि, पारणाका-
लेप्याचाम्लमेवपारयति, उक्तविधानतप षण्मासकृत्वापरिहारित्वप्र-
तिपद्यते, अनुपरिहारिणश्चपरिहारिणोभवति, तेपिषण्मासान्विदधते-
तत्तप, पश्चात्कल्पस्थितइति, एवमेषपरिहारविशुद्धसयमोऽष्टादशभि-
र्मास परिसमाप्तिमुपयातिपरिसमाप्तेतुतस्मिन्पुनस्तदेवकिंचित्परिहा-
रतप प्रतिपद्यते, स्वशक्त्यपेक्षा केचिद्वाभिनकल्पमपरेतुगच्छमेव-
विशन्ति, परिहारविशुद्धिकाश्चस्थितकल्पाएवप्रथमचरमतीर्थयोरेवनम-
ध्यमतीर्थेष्विति, सूक्ष्मसपरायसयमस्तुश्रेणिमारोहत प्रतिपतनोवाभ-
वति, श्रेणिरपिद्विप्रकारा उपशमिका, क्षायिकाच, तत्रोपशमिकाअनता-
नुबन्धिनोमिथ्यात्वादित्रय नपुसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुवेद अप्रत्या-
ख्याना प्रत्याख्यानावरण सज्वलनाश्चेति, अस्याश्चारभकोऽप्रमत्त-
सयत अपरेतुनुवतेऽविरतदेशप्रमत्ताविरतानामन्यतम प्रारभते, सचा-
ननानुबन्धिनश्चतुरोपिसमकमेवशमयति । अन्तर्मुहूर्तेननतोदर्शनत्रिक

ततोऽनुदीर्णपुमान्नारोहन्नपुसकवेदतत स्त्रीवेदयोपिदारोहति प्राङ्नपुसकवेद तत पुरुषवेद तृतीय प्रकृतिरधिरोहत्प्राङ्स्त्रीवेदतत पुरुषवेदततोपिहास्यादिषट्कतत पुवेदततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानरूपौद्वौक्रोधौतत सज्वलनक्रोधशमयति, एवद्वौमानौपश्चात्सज्वलनमान पुनर्द्वेमायेपश्चात्सज्वलनमायापुनर्द्वौलोभौपश्चात् सज्वलनकोलोभस्तस्यसख्येयानिखडानिकृत्वाक्रमेणचोपशमपश्चिमखंडमसख्येयानिखडानिकरोति, तत प्रतिसमयमसख्येयभागमुपशमयन्समस्तमतर्मुहूर्तेनशमयति, ताश्चासख्येयभागान्शमयन्सूक्ष्मसपरायसयमीभवति, सविशुध्यमानसूक्ष्मसपरायीकथ्यते, अत्यतविशुद्धाध्यवसायीदशमगुणस्थानवर्त्ती श्रेण्यारोहेचवर्द्धमानविशुद्धाध्यवसायविशुद्धतर उपशातमोहाख्यउपशातसर्वकषाय एकादशगुणस्थानकलभते, मचोपशातादाक्षयेणप्रपतन्पुनर्दशमसूक्ष्मसपरायगुणस्थानलभते, सचहीयमानपरिणामत्वात् सक्लिश्यमानसूक्ष्मसपरायीकथ्यते इति, क्षायिकीतुश्रेणिमारोहन्प्रथममनतानुबधिनोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वानिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणौनपुसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुवेदम्। सज्वलनाश्चअस्यास्त्वारोहक अविरतिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्तविरतीनामन्यतमोविशुद्धमानाध्यवसाय सचानतानुबधिनोयुगपदेवक्षपयत्यतर्मुहूर्त्तेन तत क्रमेणदर्शनमिकततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणाश्चयुगपदेवक्षपयितुमारभते, तन्मध्यभागेत्वेषामिमा षोडशप्रकृती क्षपयति, नरकतिर्यग्गतीएतदानुपूर्व्यौएकद्वित्रिचतुरिंद्रियजाती आतपोद्योतस्थावरसाधारणसूक्ष्मनामानि, ततोनिद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानर्द्धी १ ततोष्टानाशेषततोनुदीर्णवेदजघन्यपूर्ववत्, ततोहास्यादिषट्क, ततउदितवेदतत सज्वलनानामेकैकक्रमेणक्षपयति, सावशेषपूर्वसज्वलनकषायेउत्तरक्षपयितुमारभते, सर्वत्रपूर्वशेषोत्तरेणैवसहक्षपयति यावत्सज्वलनसख्येयभाग तमपिअसख्ये-

यानिखडानिकृत्वाप्रतिसमयमेकैकखडक्षपयति, तदपिसूक्ष्मसंपराय-संयमीभवति, सविशुद्धिमानकएवकथ्यते, अथचक्षीणमोहीएवभवति, यथोक्तोपशमश्रेणिएकादशगुणस्थानप्राप्त, उपशातकषायोपियथा-ख्यातसंयमीभवति, तथापुनरयक्षीणमोहीक्षपितकषायोपियथाख्या-तसंयमीभवति, यथाशब्दार्थेयथाख्यात संयमोभवति, भगवतातथा सर्वैवकथचरयानोप्रसिद्ध यथाख्यात सर्वैकादशगुणस्थानेउपशात-त्वात् द्वादशेक्षीणत्वाच्चकषायाभाव, एवसयोगिकेवलिअयोगिके-वलिनोपियथाख्यात, एवपचविधचारित्र, अष्टविधकर्मचारित्रीकरणा-चारित्रपुलाकादिभेदा अपिअन्तर्लीनाएवज्ञेया, अत्रमतिपक्षसा-हचर्यात्हिंसाप्रत्याख्यानरूपादेशविरति सर्वथाअप्रत्याख्यानरू-पाअविरति, एवसप्तभेदा संयममार्गणाद्वयुक्तचारित्रस्वरूप ततगुण-स्थानकेषुविभजनाह, चरणेचारित्रेचारित्राधिकारेप्रथमचतुर्थगुणस्था-नकेषुअविरति असंयमएवास्ति ॥ ६७ ॥

टबाथ—टकना भेद सुगम कहेना, तिहा मिथ्यात्व गु-णठाणे चोवीस दडक छे, सास्वादन गुणठाणे तेउवाउ विना बावीस भेद पामीये, मिश्रगुणठाणे सोल पचेंद्रीना भेद पामीये, समकितेपण सोल पामीये, देशविरति तिर्यंच पचेंद्रि मनुष्य पचेंद्रि ए बे दडक पामीये, अने छठ्ठा गुणठाणायी एक मनु-ष्यनो दडक पामीये वेद द्वारे बादरसंपराय पर्यंत तीन वेद पामीये, दशमा गुणठाणायी माडी उपरला पाच गुणठाणा अ-वेदी छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए उपयोग तीन वेद मध्ये कर्मग्रथे मान्या छे, बाह्यद्रव्यनीलिंगनी अपेक्षाये ए मान्या छे, पर वेद जे अभिलाषरूप ते भाववेदनी अपेक्षाये नव गुण-ठाणेज छे, चारित्रमार्गणाना भेद सात ७ सामायिक १ छेदो-

पस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ अविरति ७ ए सात भेद तिहां पहिले च्यार गुणठाणे अविरति एकज छे ॥ ६७ ॥

दरविरइदेसविरए, पमत्तिअपमत्तिचरणतिअगच।
सामाइयछेयपुण, नियट्टिअनियट्टिगे नेय ॥ ६८ ॥

टीका—देशविरतौपचमेगुणस्थानके दरविरति दराईपद्विरति त्रसहिंसारूपादरविरतिर्भवति, प्रमत्तेतथाऽप्रमत्तेचरणतियग चरणानाविकचरणत्रिक सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणप्राप्यते, सामायिकपुन छेदइतिछेदोपस्थापनीयचारित्रयुग्मअपूर्वकरणे अनियट्टी अनिवृत्तिकरणेभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—अने देशविरति गुणठाणे एकज देशविरतिज छे प्रमत्त १ अप्रमत्त २ गुणठाणे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ ए तीन होये, अपूर्वकरण गुणठाणे तथा अनिवृत्तिकरण गुणठाणे सामायिक चारित्र १ अने छेदोपस्थापनीय चारित्र ए बे चारित्र होय ॥ ६८ ॥

सुहमेसुहमचरण, सेसेसु अहरकायगभवेचरण।
योणिलक्खाचुलसी, मिच्छेबीये अ गइतसगा ॥६९॥

टीका—सूक्ष्मेसूक्ष्मसपरायलक्षणे दशमेगुणस्थानके सूक्ष्मचारित्र सूक्ष्मसपरायलक्षणचारित्रभवति, शेषेषुउपशातमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिलक्षणेषु चतुर्षुगुणस्थानकेषु अहरकायग यथाख्यातलक्षणचारित्रप्राप्यते, इत्युक्तचारित्रद्वार, अथयोनिद्वारअभिधित्सुराह तत्रयोनिरुत्पत्तिस्थान तत्रयेजीवा पूर्वभवायुष

क्षयात्अभिनवायुरुदयेऋजुगत्यावक्रगत्यावाआगत्यप्रथमसमये यत्र-उत्पद्यते तत्रयद्वर्णगंधरसस्पर्शसंस्थानपरिणता पुद्गलाआहारत्वेन-गृण्हतितस्यजीवस्यतद्रूपायोनि, वर्णादीनामभेदनमपरावृत्तौअपरा-योनि, एवएकवर्णद्विवर्णत्रिवर्णचतुर्वर्णपंचवर्णादिसंयोगेभंगावर्णस्य ३१ एकत्रिंशत् गंधस्यत्रय ३, रसस्य एकत्रिंशत् ३१, स्पर्शस्य-षट्त्रिंशदुत्तरशत १३६, संस्थानस्यएकत्रिंशत्, तेचपरस्परगणितायो-निभेदा भवंति, तेचाहारपुद्गलाविंशतिगुणास्तथापिमुख्यत्वेनग्राह्या-इतिमुख्यत्वेनवर्णादीनामेकत्वमेवभवति, एवंयोनय शीतोष्णादिस-वृतादिसचित्तादिभेदात्चतुरशीतिप्रमाणा संति ताश्चेमा, पुढविदग-अगणिमारुअ, इक्किक्केसत्तयोणिलक्खाउ, दसपत्तेअ तरूण चउदस-लक्खायइयरेसिं १

दोदोविगलनारय, तिरिदेवेचउरचउरलक्खाइ,
मणुएचउदसलक्खा, सखाजोणीयाचुलसीओ ॥ २ ॥

तत्रमिथ्यात्वेचतुशीतिलक्षायोनय प्राप्यते, बीयेत्ति द्वितीयेसास्वाद-नेअगतिनसका -गतिनसकास्तेजोकायावायुकायिकास्तद्विरहिता सा-धारणरहिता शेष ५६ षट्पंचाशल्लक्षायोनीनाप्राप्यन्ते, लक्खाचुल-सीमिच्छे बीएगतसनिगोयविणाइतिपाठ ॥ ६९ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे सूक्ष्मसंपरायचारित्र होये, शेष इग्यारमो बारमो तेरमो चउदमो ए च्यारे गुणठाणे यथाख्यात चारित्र छे हवे चोरासी लाख जीवायोनि कहे छे, मिथ्यात्व गुणठाणे चोरासी लाख जीवायोनि छे, सास्वादन गुणठाणे तेउ-कायनी सात लाख वायुकायनीए चउद लाख नथी, चउद लाख साधारणनी नथी ॥ ६९ ॥

मीसदुगेसुरनिरया, तिरिमणुपचेंदिसभवाजोणी।
देसेतिरियनराणा, सेसेसु मणुअयोणीओ ॥ ७० ॥

टीका—मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेसुरयोनि, निरयोत्ति नारकप्रत्ययायोनि, तिर्यग्पचेंद्रियप्रत्ययायोनि, मनुष्यप्रत्ययायोनि षड्विंशतिलक्षायोनीना प्राप्यते, देसे देशविरतार ये गुणस्थाने-तिर्यग्मनुष्यप्रत्ययाअष्टादशलक्षायोनीनासभवनि, शेषेषुप्रमत्तादयोगिकेवलिपर्यंतेषुमनुष्यप्रत्ययाएवचतुर्दशलक्षाएवप्राप्यते, अत्रपर्याप्तापर्याप्तसमूर्छिमादीनायोनिभेदव्याख्यायाअदृष्टत्वान्नइहापिसमुचिताव्याख्यानाएवेति ॥ ७० ॥

टबार्थ—मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाणे पचेंद्रीपणानीच्यार लाख देवतानी च्यार लाख, नारकीनी च्यार लाख, तिर्यंचनी चउद लाख, मनुष्यनी एटली योनि होये, देशविरति गुणठाणे च्यार लाख तिर्यंचनी, चउद लाख मनुष्यनी होये, शेष छठाथी माडी सर्व गुणठाणे मनुष्यनी योनि होये, योनि ते वर्ण गध रस फरसमया, जे गध प्रथम समये आहार लेवे ते योनि कहीये ॥ ७० ॥

कुलकोडीणएव(सु), धुवबधीमिच्छमाइठाणेसु।
सगचत्तछचत्तगुणयाल, दुगचपणतीसदुगतीस ॥७१॥

टीका—कुलकोटीनाअपिच्यारयाएवमेवयोनिक्रमेणैवज्ञेया, कुलाश्चभिन्नयोनौअपिएककुलत्वभवति, एकयोनावपिअनेककुलत्वभवति, गतकुलकोटीद्वार, अथध्रुवबधिनीद्वाराण्याह, ध्रुवबधीइत्यादि-तत्रनिजहेतुसद्भावेयासाप्रकृतीनाध्रुवोअवश्यभावीबधोभवतिताध्रुवबधिन्य, यासाचनिजहेतुसद्भावेपिनावश्यभावीबधस्ताअध्रुवबधिन्य,

यदवादि, "नियहेतुसभवेविदु, भयणिज्जोजेणहोयपयडीण, बधोता-अधुवाओ धुवाअभयणिज्जबधाओ ।१। ध्रुवबधिन्यश्च वर्णचउतेय-कम्मा गुरुलहुनिमिणोपघायभयकुछा मिच्छकसायावरणा विग्घधुव-बधिसगचत्ता ।१। तत्रवर्णचतुष्कतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणो-पघातानिइत्येतानवनामप्रकृतय, भयकुछामिथ्यात्वकषाया षोडश-इत्येताएकोनविंशतिर्मोहनीयप्रकृतय, आवरणानिज्ञानावरणपचक-दर्शनावरणनवकस्वरूपाणिचतुर्दश विघ्नमनरायदानलाभभोगोपभोग-वीर्यांतरायलक्षणपचविघमित्येवमसप्तचत्वारिंशदप्येतागुणस्थानारोहेब-धनिरोधेऽपिस्वस्वहेतुसद्भावेअवश्यबधात्ध्रुवबधिन्य इति, मिथ्यात्व-मादिर्येषातेमिथ्यात्वादय तेषुमिथ्यात्वादिषुस्थानेषु,मिच्छमाइठाणेसु-इत्यनेनमिथ्यात्वादिषुगुणस्थानेषुयथासभवयोज्य, तत्रमिथ्यात्वे "स-गचत्त" सप्तचत्वारिंशतध्रुवबधिन्य बध्यते द्वितीयेसास्वादनेमिथ्यात्व-बधाभावेषट्चत्वारिंशतध्रुवबधिन्योबध्यते, गुणयालदुगचइत्यनेनमि-श्रगुणस्थानकेसम्यक्त्वगुणस्थानकेऽनतानुबधिस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वा-नाबधापगमेएकोनचत्वारिंशद्ध्रुवबधिन्योबध्यते देशविरतेअप्रत्या-ख्यानाभावेपचविशतिप्रकृतयोबध्यते, प्रमत्तेप्रत्याख्यानकषायबधा-पगमेएकविंशद्ध्रुवबधिन्योबध्यते ॥ ७१ ॥

टबार्थ —कुलकोडी पण ए रीते, हवे ध्रुवबधीनी सडता-लीस प्रकृति छे, वर्णादि ४ तेजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण १ उपघात १ दुगछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ अतराय ५ एव सुडतालीस ध्रुवबधी जाणवी, मिथ्यात्व गुणठाणे सडतालीश ध्रुवबधी बाधे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना छेतालीश ध्रुवबन्धी छे, मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाण ए बे गुणठाणे अनतानुबधी ४ थीणद्धी ३ मिथ्यात्व १ [illegible] बाधे,

तेणे उगुणचालीस बाधे, देशविरति गुणठाणे अप्रत्याख्यानी ४ न बाधे ते पाचीस, बाधे छठे गुणठाणे प्रत्याख्यानी प्रकृति, ४ न बाधे तिणे इगतीस ध्रुवबंधी प्रकृति बाधे ॥७१॥

इगतीसगुणतीस, अट्ठारसचउदसचसुदुम्मम्मि ॥
अधुवाबंधेसेसा, धुवउदयामिच्छिसगवीस ॥७२॥

टीका—अप्रमत्तेपिएकत्रिंशत्ताएवबध्यन्ते, अपूर्वकरणेनिद्राद्विकापगमेएकोनत्रिंशत् ध्रुवबंधिन्योबध्यते, नवमेअनिवृत्तिबादराख्येभयजुगुप्सानवनामप्रकृत्यपगमेऽष्टादशध्रुवबंधिन्योबध्यते । सूक्ष्मसपरायेसज्वलनाभावेचतुर्दशध्रुवबंधिन्योबध्यते, तत्र परध्रुवबंधिन्योबध्यते, नवेबंधप्रकृतीशेषाध्रुवबंधप्रकृत्यपसरेशेषा या प्रकृतयस्ताअध्रुवा ताअध्रुवबंधिन्योज्ञेया ताश्चेमा, तणुवंगागिइसंघयण जाइगइखगइपुव्विजिणुसास, उज्झोयायवपरघातसवीसागोयवेयणीय १ हासाजुअलदुगवेअआउतेवत्तरी, अध्रुवबंधास्तनव औदारिकवैक्रियाहारलक्षणास्तिस्र, तैजसकार्मणयोर्ध्रुवबंधित्वेनाभिहितत्वात्, उपांगानितीणि, आकृतय षट्, सहनानिषट्, जातय पच, गतयश्चतस्र, खगतिद्वय, आनुपूर्व्यश्चतस्र, जिननाम, श्वासोच्छ्वासनाम, उद्योतनाम, आतपनाम, परावातनाम, त्रसदशक, स्थावरदशकरूप, षसविंशतिरूप, गोत्रद्विक, वेदनीयद्विक, हास्यादिचतुष्क हास्यरति अरतिशोकलक्षण, वेदत्रिक, आयुश्चतुष्टय एव त्रिसप्तति अध्रुवबंधिन्योभवति, तत्रमिथ्यात्वेसप्तति अध्रुवबंधिन्योबध्यते, सास्वादनेपचपशाशत्, मिश्रेपचत्रिंशत्, सम्यक्त्वेअष्टत्रिंशत्, देशविरतौद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेऽष्टात्रिंशति, अपूर्वकरणेप्रथमत्रिंशति, चरमेभागेषट्, अनिवृत्तिकरणेचतस्र, सूक्ष्मसपरायेतिस्र, उपशांतेएका, क्षीणेएका,

सयोगिकेवलिलक्षणेएका, एवमध्रुवबन्धिन्योबध्यते, अबध्रुवबंध अनाद्यनंतभंग, अभव्याना अनादिसांतोभंगो, भव्याना सादिसांतभंग, उपशांतयावत्आरूढस्य ध्रुवबंधकाभावेपुनर्मिथ्यात्वगतेसप्तचत्वारिंशद्बंधकरणेबंधोभवति, पुन श्रेण्यारोहेतद्बंधापगमेबंधोन, तेनसादिसांत भंगकोभवति, पुनरध्रुवबंधप्रकृतिषुएक सादिसांत भंग प्राप्यते, निरंतरबंधात्तबंधकालेसादि बंधाभावेसांत इतिभाव्य, यासामनुच्छिन्नस्तुसंतत स्वोदयबंधच्छेदकालयावदुदयस्ताध्रुवोदया, यासातुबंधव्यच्छिन्नोप्युदयोभूयोपिप्रादुर्भवति तथाविधद्रव्यक्षेत्रकालभावस्वरूपपंचविधहेतुसमग्रप्राप्यताअध्रुवोदया, यदभाणि, अवुछिन्नोउदयो जाणपयडीणनाधुवोदइआवुछिन्नो विहुसभवइ जाणउदयानाओ १ तत्रध्रुवोदयाइमा, निमिणथिरअथिरअगुरुअसुहअसुहतेयकम्मचउवन्ना नाणतरायदसणमिछधुवउदयसगवीसा १ तत्रनिर्माणअस्थिरअस्थिरअगुरुलघुशुभअशुभतैजसकार्मणद्वेशरीरेवर्णादिचतुष्कएताद्वादशनामकर्मण १२, ज्ञानावरणपंचकमंतरायपंचकमिथ्यात्वइत्येता सप्तविंशति ध्रुवोदयाज्ञेया, मिथ्यात्वस्यसांतरोदयेपिध्रुवोदयस्तासाअनंतकालमिथ्यात्वोदयेनैवसहवर्त्तमानात्, ध्रुवोदयोमिच्छि, मिथ्यात्वेसप्तविंशतिरपिआरित, सतिमिथ्यात्वेकस्यापिनोदयबंधच्छेद ॥ ७२ ॥

टबार्थ —सातमेपणद्गतीस बांधे, आठमे गुणठाणे निद्रा २ विना ओगणत्रीस बांधे नवमे गुणठाणे भय १ दुगछा १ नव नामकर्म्मनी एकवीस न बांधे तेवारे अठार ध्रुवबंधी बांधे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे संज्वलना ४ च्यार विना चउद ध्रुवबंधी बांधे ध्रुवबंधीयी काढना शेष रही ते अध्रुवबंधी जाणवी ते इहा मिथ्यात्वे सित्तेर अध्रुवबंधी छे सास्वादने

५५ छे, मिश्रे ३५ छे, समकिते ३९ छे देशविरते ३३ छे प्रमत्ते ३३ छे अप्रमत्ते २८ अपूर्वकरणे प्रथम ३० पछे आठ ८ अनिवृत्ति ४ तथा सूक्ष्मसंपराये ३ उपशांतमोहे १ क्षीणमोहे १ सयोगि केवलि १ अयोगि केवलिये नथी ॥७२॥

छवीससीणजा, सयोगीबारसधुवोदयापयडी ।
ओहोदओवसेसा, अधुवदया हुतिपयडीओ ॥७३॥

टीका—सास्वादनादारभ्यक्षीणमोहपर्यन्तं मिथ्यात्वरहिता षड्विंशति ध्रुवोदयाः सम्पन्ने, क्षीणमोहांते ज्ञानावरणदर्शनावरणांतरायक्षयात् सयोगिनयोदशेगुणेद्वादशनामप्रकृतयएवध्रुवोदयाउदयत्वेनप्राप्यन्ते अयोगिगुण सर्वाअपिअध्रुवोदयाउदयेवर्त्तते, तत्रषोडशकषायाणामध्येक्रोधादीनांचतुर्णांनैकसमयउदय, क्रोधोदयकालेमानादीनामुदयाभाव, मानोदयकालेक्रोधादीनामुदयाभाव, यद्यपिवर्णपचकेकृष्णादीनामध्येएकस्यवर्णस्यनैरन्तर्योदय तथापिअन्यतमवर्णोदयेनवर्णइतिसामान्यप्रकृतेर्ध्रुवोदय एवगंधादीनामिति, पुन अध्रुवोदया पचनवति, तद्यथा थिरसुभिअरविणु अध्रुवबंधीमिच्छत्तविणमोहध्रुवबंधी निद्दोवघायमीस सम्मपणनवइअध्रुवोदया १ याअध्रुवबंधिन्य त्रिसप्ततिप्रकृतय तासामध्यात्स्थिरमस्थिरशुभमशुभइतिप्रकृतिचतुष्टयध्रुवोदयेग्रहितत्वात्शेषा एकोनसप्ततिप्रकृतय अध्रुवोदयाभवति, मोहध्रुवबंधिन्यएकोनविंशतिस्तन्मध्येमिथ्यात्वस्यध्रुवोदयांतर्गतत्वात्शेषा अष्टादशाध्रुवोदयाभवति, निद्रापचक उपघातनाममिश्रमोहनीयसम्यग्मोहनीयइतिपचनवति अध्रुवोदयाप्यवच्छिन्नस्याप्युदयस्यपुनरुदयसद्भावादिति, यद्येवमिथ्यात्वस्याप्यध्रुवोदयताएवयुज्यते सम्यक्त्वप्राप्तौ यवच्छिन्नस्यापितदुदयस्यमिथ्यात्वगमनेपुन सद्भावादिति चेदुच्यते, यासाप्रकृतीनायेषुगुणस्थानकेषु

गुणप्रत्ययनोऽत्राप्युदय यवच्छेदोनविद्यते, अथद्रव्यक्षेत्रकालाद्यपेक्षयातेष्वेवगुणस्थानकेषुकदाचिदसौभवति कदाचिन्नभवतिताएव-अध्रुवोदया, यथानिद्रायामिथ्यात्वदृष्टेरारभ्यक्षीणमोहयावदुदयोऽवश्यप्रवर्त्तते,अथचनसततमसौभवतीतिमिथ्यात्वस्यनेदलक्षण, यतस्तस्ययत्रप्रथमगुणस्थानकेनात्राप्युदय यवच्छेदस्ततसततोदय नकदाचित्क इतिध्रुवोदयेनैवतस्येति ओघोदयत ध्रुवोदयापहारेऽवशेषाअध्रुवोदया प्रकृतयोभवति, तत्रमिथ्यात्वसप्तदशाविकशतमोघोदयेतत्सप्तविंशतिध्रुवोदयास्तदपगमेशेषाभवन्ति, मिथ्यात्वेअध्रुवोदयाभवन्ति, एवसास्वादनेपचाशीति, मिश्रेचतु सप्तति, सम्यक्त्वेऽष्टसप्तति, देशविरतौएकषष्टि, प्रमत्तेपचपचाशत्, अप्रमत्तेपचाशत्, अपूर्वकरणेषट्चत्वारिंशत्, अनिवृत्तिकरणेचत्वारिंशत्, सूक्ष्मसपरायेचतुस्त्रिंशत्, उपशातमोहेत्रयस्त्रिंशत्, क्षीणमोहेएकत्रिंशत्, तथाचरमातेएकोनत्रिंशत् सयोगिकेवलिनित्रिंशत्, अयोगिकेवलिनिद्वादश, अध्रुवोदयाउदयत्वेनज्ञेया, इ सुदय, अध्रुवोदयासुप्रकृतिषुअनाद्यनतअनादिसातलक्षणौद्वौभगकोभवत, तत्राभव्यानाएता सप्तविंशतिरप्यनाद्यननोदयाएव, भव्यानातुअनादिकालीनाअविस्वस्वोदय यवच्छेदकालेअनुदयात् साताइति, अध्रुवोदयानाप्रकृतीनातुनिरतरउदयाभावत् सादिसातताएवइत्येकभग ॥ ७३ ॥

टबार्थ—हवे ध्रुव उदयी सत्तावीस छे निर्माण १ अथिर १ अशुभ १ शुभ १ अगुरु १ अगुरु लघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादि ४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवोदयी मिथ्यात्वे छे सास्वादनथी माडि खीणमोह पर्यंत मिथ्यात्व विना उवीस ध्रुवोदयी छे सयोगी गुणठाणे नामकर्मनी बार ते ध्रुवोदयी छे अयोगीमे

ध्रुवोदयी नथी बारनो उदय छे अध्रुवोदयीनो छे ओघोदयथी ध्रुवोदयी टालता शेष रही ते अध्रुवोदयीनी मरया जाणवी, ते अध्रुवोदयी पचाशु छे ९५ ते मध्ये मिथ्यात्वे ९० छे सास्वादने ८५ मिश्रे ७४ समकिते ७८ देशविरते ६१ प्रमत्ते ५५ अप्रमत्ते ५० अपूर्वकरणे ४६ अनिवृत्तिकरणे ४० सूक्ष्मसंपराये ३४ उपशांतमोहे ३३ क्षीणमोहे ३१ ॥७३॥

तीसहीयसयसता, धुवाउवज्जतमोहठाणजा ॥
खीणेअसईचरिमे, चउसयरिसेसअधुवाओ ॥७४॥

टीका—अथसत्ताध्रुवप्रकृतिदिशाह तीसहियेत्ति तत्रससारिणाअप्राप्तसम्यक्त्वाद्युत्तरगुणानासात येनचतुर्गतिषुसद्भावेनभवतिताध्रुवसत्ताका, यास्तुकदाचिद्भवन्तिकदाचिद्नभवन्तिताअध्रुवसत्ताकाज्ञेया, तत्रगाथा तसवनवीससगते अकम्मधुववविसेसवेअतिग, आगइतिगवेयणीय दुजुअलसगउरलसासचउ १ खगइनिरिदुगतिपध्रुवसत्ताससदशकस्थावरदशकचोभयमीलनेनसविंशति वनवीसत्ति, वर्णपचकगधद्विकरसपचकस्पर्शाष्टकमीलनेनविंशति ,सगतेयकम्मत्ति, तैजसकार्मणसप्तकतैजसशरीर १ कार्मणशरीर २ तैजसतैजसबधन १ तैजसकार्मणबधन १ कार्मणकार्मणबधन १ तैजससघातन १ कार्मणसघातन १ इतितैजससप्तक ध्रुवविशेषेतिवर्णचतुष्कतैजसकार्मणशरीरातूशेषाण्यष्टचत्वारिंशद्ध्रुवविन्य, वेदनिक आगइतिगत्ति आगिइसवयणजाइइति सस्थानसहननजातिसर्वमिलनेसप्तदश १७ वेदनीय सातासातलक्षण दुजुअलत्ति युगद्विकहास्यरतिअरतिशोकलक्षण, सगउरलत्ति औदारिकसप्तक, तत्रौदारिकशरीर १ औदारिकागोपागलक्षण २ औदारिकसघातन १ औदारिकबधन १ औदारिकतैजसबधन १ औदारिककार्मणबधन १ औ-

दारिकतैजसकार्मणबन्धन ७ इतिऔदारिकसप्तक, उच्छ्वासचतुष्क उच्छ्वास १ उद्योत १ आतप १ परावातलक्षण १ सुरगति १ असुरगतिद्विक २ तिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीलक्षणतिर्यग्द्विक २ नीचैर्गोत्रलक्षणएतास्त्रिंशदुत्तर शतसंख्या प्रकृतयोऽत्रसत्ताकाअभिधीयते ध्रुवसत्ताकत्वासासम्यक्त्वलाभादर्वाक्सर्वजीवेषुसदसद्भावात्, अध्रुवसत्ताकत्वासाक्षपकाणामुद्वलनसंभवाद्ध्रुवसत्ताकत्वेनयुज्यते, अत्र कथमध्रुवसत्ताकप्रकृतीनांत्रिंशदधिकशतसंख्यामगच्छते? मैवं वोचः यतोऽवाप्तसम्यक्त्वाप्युत्तरगुणानामेवजीवानामेतद्विसंयोगो नसर्वजीवाना अध्रुवसत्ताकता वा नवाप्तोत्तरगुणजीवानाचचिंत्यते, अतोऽनन्तानुबंधिनाध्रुवसत्ताकत्वेनयदिवोत्तरगुणप्राप्तापेक्षयाअध्रुवसत्ताकत्वाक्षीक्रियते तदासर्वासामपिप्रकृतीनाग्यात्रातोऽनुबंधिनामेव यत सर्वाअपिप्रकृतयोयथास्थानमुत्तरगुणेषुसत्तायाश्छेदमनुभवन्त्येवेति, तत्रोपशमश्रेणिगतस्यएकादशगुणस्थानकयामनुत्रिंशदधिकशतध्रुवसत्तायाप्राप्यते यद्यपिक्षायिकसम्यक्त्ववतासप्तकादिक्षयरूपोसत्तामेदोऽस्ति, तदपिगुणस्थानेसामान्यसत्ताविकारेकथितत्वान्नेहगृहीत तथापिस्वबुद्ध्यावगन्तव्य, क्षीणे असईति अष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तापेक्षयामोहनीयषड्विंशति निद्रापचक आयुस्त्रिक त्रयोदशनामप्रकृतय औदारिकतैजसबन्धन औदारिककार्मणबन्धन औदारिकतैजसकार्मणबन्धनएता पचाशद्व्यवच्छिद्यते, तत अशीतिद्वादशेसत्ताध्रुवरूपाप्राप्यते, अष्टपचाशत्सत्तापेक्षयाषट्शीति सत्तायाप्राप्यते, "चरिमे"त्रयोदशेचतुर्दशेगुणस्थानेचतु सप्तति सत्तायाप्राप्यते गुणस्थानोक्तओघसत्तापेक्षयाध्रुवसत्तागणनाज्ञेयाअध्रुवसत्तागुणस्थानकेवक्तव्या, अध्रुवसत्ताअष्टाविंशति यास्तुकदाचित्कम्यागतीप्राप्यते कम्यानप्राप्यतेताअध्रुवसत्ताका, ताश्च सम्यग्मोह १ मिश्रमोह १ मनुष्यद्विक २ देवद्विक २ नरक-

द्विक २ वैक्रियसप्तकलक्षण, वैक्रियएकादशक, जिननाम, आयुश्चतुष्टय, आहारसप्तक, उच्चैर्गोत्रलक्षणाष्टाविंशति प्रकृतिसमूहरूपाअध्रुवसत्तारूपास्तत्रमिथ्यात्वेऽष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ता प्राप्यन्ते, जीवभेदापेक्षयासास्वादनेमिश्रेचजिननामरहिता सप्तविंशति सम्यग्दर्शनात् उपशातमोहयावत् अष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ताका प्राप्यन्ते क्षीणमोहेसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके एकविंशतिरध्रुवसत्ताका प्राप्यते, एवध्रुवसत्ताशेषाअध्रुवसता प्रकृतयइति,इत्युक्तअध्रुवसत्ताद्वार ॥ ७४ ॥

टबार्थ—तथा २९ सयोगिये ३० छे अयोगीये १२ अध्रुवोदयी जाणवी ध्रुवसत्ता एकसोतीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहिनी २६ नामकर्मनी तिर्यंचगति ४ जाति ५ औदारिक १ तैजसकार्मण ७ सवयण ६ सस्थान ६ वर्णादि २० विहायोगति २ तिरिआनुपूर्वि १ जिननाम कर्मविना प्रत्येक ७ त्रसदश १० थावर १० नीचगोत्र १ अतराय ५ एकसोतीस १३० ध्रुवसत्ता इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत जाणवी, नवमाने बीजे भागे क्षपकश्रेणिने तेर नीकले तेवारे नवमायी क्षीणमोहपर्यंत ऐंसीनी सत्ता छे क्षीणमोहे ऐंसी, तेरमे चउदमे चहुत्तरी ध्रुवसत्ता छे मिथ्यात्वे २८ सास्वादने २७ समकिते २८ अप्रमत्ते २८ अनिवृत्ति २८ सूक्ष्मसपराये २८ उपशातमोहे २८ क्षीणमोहे २१ सयोगि केवली २१ अयोगि केवली २१ ए अध्रुवसत्ता जाणवी ॥ ७४ ॥

मिच्छेविसममिच्छा, बीएअणथीणत्तिविणुमीसदुगे।
बीयतीअकसायहीणा, देसेपमत्त युअलम्मि ॥७५॥

टीका—साम्प्रतसर्वघातिदेशघात्यघातिद्वारमभिधित्सुराह ॥ तत्रप्रथमघातिलक्षण, यथाआत्मनोज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यलक्षण गुणचतुष्टय स्वरूपेणस्वकीयज्ञायकत्वदृश्यत्वस्थिरत्वसामर्थ्यत्वलक्षणस्वकार्यस्वकारक, तथाशेषाणाअघातिनाआत्मगुणानानिरावरणत्वकरणेकारणरूपमपितेनएतद्गुणचतुष्टयप्रधान शेषाअघातिनोगुणा स्वरूपत्वेनैकार्यरूपा नात्यद्गुणप्राकटनेहेतुत्वमिति, अतोज्ञानादीनाकारणकार्यरूपोभयधर्मवतामातकानिज्ञानावरणदर्शनावरणमोहातरायलक्षणानिघातिकर्माण्युच्यते, शेषाणिवेदनीयायुर्नामगोत्ररूपाणिअघातीत्यभिधीयते, तत्रघातिषु या प्राकृतय उदिता स्वावर्यगुणसर्वआवृण्वतिघातयत्येवशीला सर्वघातिन्योविंशति भवति, या प्रकृतय उदिता स्वावर्यगुणआवृतमपिदेशत घातयतेदेशतोविरतिगुणप्रत्ययादिनाक्षयोपशम प्राप्यतद्गुणप्राकट्यलभते इत्येवशीला देशघातिन्य पचविंशतिर्भवति, तत्रसर्वघातिन्य केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण पचनिद्राद्वादशादिनाअनतानुबधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणलक्षणा कषाया मिथ्यात्वचेतिविंशति, तत्रकेवलज्ञानावरणकेवलदर्शनावरणेक्षपकश्रेण्यादौप्रक्षीयमाणस्थितिरसप्रदेशक्षयपावत्सर्वथाक्षयस्तावत्गुणप्राग्भावानिक्षयस्तावत्गुणप्राग्भाव, सर्वथाक्षये सकलविशेषावबोधसकलसामान्यावबोधरूपौकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणौभवत, अतएतेसर्वघातिन्यौ तथानिद्रापचकानामप्युदयअवबोधसर्वथाघातयन्तितेनसर्वघातिन्य, यद्यपिनिद्रायामपिस्वप्नादीनादर्शनतदपिनिद्रोदयशैथिल्येनैवेतिद्वादशकषायाणाउदयोपिअनतानुबन्ध्युदय शुद्धचारित्रधर्मरुचिघातनरूप, अप्रत्याख्यानकषायोदयस्त्वहिंसकपरिणामघातनरूप, प्रत्याख्यानकषायोदय सर्वसावद्यविरतिरूपपरिणमनघातक, एतेयथाक्रमसर्वथाघातकत्वात्सर्वघातका, यत्पुनस्तेषाप्रबलोदयेपिअयोग्याहारवि-

रमणउपलभ्यते, तत्रवारिवाहदृष्टांतोवाच्य , सुदृविमेहदए होईपहा-
चदसूराणमित्यादिज्ञेय, अथवानरकादिविपाकभयाद्यद्विरमणतद्वेंद्रि-
यसुखाभिलाषे नैवेतितीव्रलोभोदयएवग्राह्य , तथामिथ्यात्वतुजिनप्र-
णीतत्त्वश्रद्धानस्वरूपसम्यक्त्वसर्वमपिहतीतिसर्वघाति, यत्तुतस्यप्र-
बलोदयेपिमनुष्यपश्वादिवस्तुश्रद्धानतदपिस्याद्वादोपयोगाभावात् मि-
थ्यैवेति ॥ उक्तच ॥ विशेषावश्यके, सदसदविसेसणाओ भवहेउ-
जहत्थिओवलभाओ, नाणफलाभाओ मिच्छदिट्ठिस्सअन्नाण १
इतिमिच्छेवीसममिच्छाइति ॥ मिच्छेइतिमिथ्यात्वेवीसविंशतिप्र-
कृतय सर्वघातिन्योबधेसति, अमिच्छामिश्यात्वरहिताएकोनविं-
शति वीएत्ति द्वितीयेसास्वादनेबधेप्राप्यन्ते, ताएवएकोनविंशति
अनतानुबधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धित्रिकविनाद्वादशसर्वघातिन्य मीसदु-
गेत्ति मिश्राविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेप्राप्यन्ते वीयकसा-
यहीणा देसेइतिसबध द्वितीयकषायहीना देशविरतेऽष्टौसर्वघातिन्य
तीयकसायहीणाप्रमत्तयुगलेतृतीयकषायरहिताश्चतस्र प्रकृतय प्रम-
त्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेप्राप्यन्ते ॥ ७५ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्वे वीस सर्वघाती छे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्वमोहिनी विना १९ सर्वघातिनो बध छे, मिश्र तथा समकित गुणठाणे अनतानुबधी ४ थीणद्धि तिन विना बार सर्वघाती प्रकृतिनो बध छे, देशविरति गुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानीयानी काढीये एटले आठ सर्वघातिनो बध छे, प्रमत्त तथा अप्रमत्त ए बे गुणठाणे सर्वघाति ४ नो बध छे केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रा बे ए च्यार बाधे छे ॥ ७५ ॥

केवलजुअलावरण, अपुव्वीअभागओअसुहुमजा ।
दरघाइमिच्छिसत्ता, नपुविणातेविसासाणे ॥ ७६ ॥

टीका—केवलचुअलावरणमिति ॥ अपुव्विइतिअपूर्वकरणप्रथमभागातेनिद्राद्वयबन्धाभावेअपूर्वकरणस्यद्वितीयभागात सूक्ष्मसपरायपर्यन्त् केवलयुगलावरण केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण रूपाप्रकृतिर्बद्ध्यते, तत परबन्धाभाव दरवाइतिदेशघातिन्य पचविंशति मतिज्ञानावरणश्रुतज्ञानावरणमन पर्यवज्ञानावरणरूपज्ञानावरणचतुष्टय चक्षुदर्शनावरणाऽचक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणरूपदर्शनावरणत्रिक सज्वलनाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभरूपानोकषायाहास्यरतिअरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीवेदपुवेदनपुसकवेदलक्षणा "नोकषायत्ति" कषायसदृशाइत्यर्थ, अन्तरायपचकएता पचविंशतिप्रकृतयोदेशघातिन्योदेशघातयतीत्येवशीलादेशघातिन्योमतिज्ञानावरणमुदितमपिदेशघातयति किंचित्देशक्षयोपशमप्राप्त तथाघातयतिएवसर्वतथा मलयगिरिपूज्यास्तुआत्मन सर्वस्वकेवलज्ञानकेवलदर्शनरूपनघातयतिना सर्वघातिन्योमतिज्ञानादिकतु आत्मनोदेशरूपगुणघातयतिनादेशघातिन्य तासामन्ये, मिच्छिमिथ्यात्वेसबाइति सर्वा प्रकृतय देशघातिन्योबध्यते ताएवसास्वादनेनपुसकवेदरहिताश्चतुर्विंशतिरेवबध्यन्ते, नपुसकवेदबध मिथ्यात्वप्रायोग्यएवेति ॥ ७६ ॥

टबार्थ—अपूर्वकरण गुणठाणाना बीजा भागथी दशमा गुणठाणासीम केवलज्ञानावरणी केवलदर्शनावरणी ए बे सर्वघातीनो बध छे पछे नथीज, देशघातीप्रकृति २५ ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ हास्यादि ६ वेद ३ सज्वलना ४ अन्तराय ५ एव २५ ते मध्ये मिथ्यात्वगुणठाणे सर्व २५ देशघातीनो बध छे, सास्वादन गुणठाणे नपुसक विना चोवीस देशघातिनो बध छे ॥ ७६ ॥

थीविणुमीसचउक्के, अपमत्तदुगम्मिसोगदुगहीणा।
हासचउहीणनवमे, अपुरिससजलणदसमम्मि ७७॥

टीका—थीविणुत्ति मीसचउक्केत्ति–मिश्राविरतिसम्यग्देशविरतिप्रमत्ताख्येगुणस्थानचतुष्टयेस्त्रीवेदरहितास्त्रयोविंशतिर्बध्यते, अपमत्तदुगम्मि अप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेगुणस्थानद्वयेशोकारतिहीनाएकविंशतिर्देशघातिन्योबध्यते, तथानवमेअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थानेहास्यरतिभयदुगच्छाहीना सप्तदशदेशघातिन्योबध्यते, दशमम्मिडानिदशमेसूक्ष्मसपरायेगुणस्थानेपुरुषवेदसज्वलनचतुष्टयरहिताद्वादशबध्यते, ताद्वादशज्ञानावरणचतुष्टयदर्शनावरणनिकातरायपचकमतरेणसूक्ष्मावेतासामबधकइतिगतदेशघातिद्वार ॥ ७७ ॥

टबार्थ—मिश्र १ अविरतिसमकित १ देशविरति १ प्रमत्त १ ए च्यार गुणठाणे स्त्रीवेद काढीये एटले त्रेवीस देशघाती बधाये, अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणे शोकअरति बे न बाधे एकवीस देशघाती बाधे, नवमे अनिवृत्तिकरणे हास्यादिरतिभयदुगछा ए च्यार विना सत्तर देशघाती बाधे, दशमे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे पुरुषवेद १ सज्वलना ४ ए पाच काढीये बार देशघाती बाधे, दशमाने अते ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ अनराय ५ ए बार जाये न बाधे ॥ ७७ ॥

सव्वदरघाइसेसा, अघाइपयडीओसव्वगुणठाणे।
पुन्नेनव(ग)अडचउसग, इगइगतिगदुगअहीअतीसा ॥ ७८ ॥

टीका—साम्प्रतमघातिस्वरूपकथ्यतेसव्वदरघाइइत्यादि स-

र्वघातिदेशघातित शेषाअघातिप्रकृतय सर्वेषुगुण-
स्थानेषुमन्तव्याइतिवेदनीयद्विक, आयुश्चतुष्क, नामसप्तषष्टि,
गोत्रद्वय, इत्येता पचसप्ततिरघातिन्योज्ञेया, तत्रमिथ्यात्वेद्वि-
सप्तति, सास्वादनेऽष्टपचाशद्, मिश्रेएकोनचत्वारिंशत्, सम्यक्त्वे-
द्विचत्वारिंशत्, देशविरतौसपगयेनय, उपशातमोहक्षीणमोहसयो-
गिकेवलिषु एका, सातवेदनीयरूपा, अत्रध्रुवध्रुवोदयेवात्यघाति-
द्वारेउदयाधिकारोपिस्वमुख्याओघोदयाधिकारतोज्ञातव्य, पुन्नेइति-
पुण्यप्रकृतयोजीवाल्हादजनकायदुदयमुज्यमानआल्हादजनकभवति,
ता पुण्यप्रकृतय द्विचत्वारिंशद्भेदभिन्ना सति, तत्रगाथा सुरनरनिगु-
च्चसाय तसदसतणुअगवयरचउरस, परघासगतिरिआऊ वणचउप-
णिंदिसुभखगइ १ बायालपुन्नपगई अपढमसठाणखगईसरयणा,
तिरिदुगअसायनीओ वन्नायइगविगलनरयतिग २ थावरदसवणचउक्क
घाइपणयालसहिअठासीई, पावपयडित्तिदोसुवि वन्नाइगिहासुहाअ-
सुहा ३ इत्यादिगाथोक्ता पुण्यपापप्रकृतय मिलिताएकशतचतु-
र्विंशत्यधिकभवति एतदपिबहुमाश्रित्यैवेतिनोचेत् घातिसप्तचत्वा-
रिंशत्गुणनेषड्विंशत्यधिकशतभवति, अत्रबहुधाधिकारेविंशत्यधि-
कशतमानेचतुर्विंशत्यधिकतु वन्नाइगदासुहा असुहाइतिवर्णादय
वर्णगन्धरसस्पर्शरूपा पुण्यप्रकृतौशुभाग्राह्या, पापप्रकृतौतुअशुभा-
ग्राह्या इत्युभयग्रहणात्चतुर्विंशत्युत्तरशतज्ञेय, तत्रपुण्यप्रकृतिक्रम
गुणस्थानेषुविभजन्नाह, पुन्नेनवअट्ठइति नवभिरधिकाखिंशत्मिथ्या-
त्वेपुण्यप्रकृतयोभव्यते, इतिजिननामाहारकद्विकरहिता "ताप"आत-
परहिता सास्वादनेअष्टाधिकाखिंशद्भव्यते, ताएवेतितिर्यग्नरदेवायु-
रुद्योतहीनामिश्रे चतुस्त्रिंशत्ताएवजिननामनरदेवायुर्युक्ता सम्य-
क्त्वेसप्तत्रिंशत्, ताएववज्रऋषभनाराचसहननमनुष्यत्रिकौदारिक-
रहितादेशविरतौएकत्रिंशत्, प्रमत्तेएकत्रिंशत्, ताएवाहारकद्विकयुक्ता-

स्त्रयस्त्रिंशत्, अप्रमत्तेपुण्यप्रकृतयोबध्यते, तापुत्रदेवायुरहिताअपूर्वकरणेद्वात्रिंशद्बध्यते, अत्रगाथाया अष्टसुपदअग्रेननगाथायागतमनुवर्त्तनीय अष्टसुगुणस्थानकेषुअयस्म ॥ ७८ ॥

टबार्थ—सर्वघाती तथा देशघाती काढता शेष रही ते अघाती प्रकृति सर्व गुणठाणे जाणवी अघाती ७५ छे ते मध्ये मिथ्यात्वे ७२ छे सास्वादने २८ छे मिश्रे ३९ छे समकिते ४२ छे देशविरते ३६ छे अप्रमत्ते ३४ छे अपूर्वकरणे ३३ छे अनिवृत्तिबादरे ३ छे सूक्ष्मसपराये ३ छे उपशान्तमोहे १ छे क्षीणमोहे १ छे सयोगिकेवलिये १ बाधे छे इम उदयनो अधिकार जोई कहेवो उदयपिणे पुण्यप्रकृतना भेद ४२ छे सातावेदनी उचगोत्र मनुष्यद्विक २ देव २ पचेन्द्रि जाति १ पाचशरीर ५ तीनउपाग ३ वज्रऋषभनाराचसघयण १ समचउरससस्थान १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ पराघात १ उसास १ आतप १ उद्योत १ शुभविहायोगति १ निर्माण १ त्रसदश १० देवतानुआयु १ मनुष्यायु १ तिर्यचनुआयु १ तीर्थंकरनाम १ ए बेतालीसमध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ३९ ओगणचालीस छे जिनआहारक नयी सास्वादन गुणठाणे अडतीस छे आतप नयी मिश्र गुणठाणे चोतीस छे तीन आउखा नयी, उद्योत नयी समकित गुणठाणे जिननाम तथा आउखा बे मेलाय तिणे वे सडतीस छे देशविरति गुणठाणे इगतीस छे अप्रमत्ते तेतीस छे अपूर्वकरणे बत्तीस छे ॥७८॥

अट्ठसुतिगचदोसु, तिसुसाय बधसेसयापावे ।
चउवीससयओहो, वन्नाइगहासुहाअसुहा ॥ ७९ ॥

टीका—अट्ठसुत्तिगचइत्यादि अष्टसुगुणस्थानकेषुइतिपदपूर्वे-

गाथाया सबधित तिगचदोसुत्ति द्वयोर्गुणकयोविषयेद्विवचनेबहुवचनमितिप्राकृत्वात्, तिग सातवेदनीय उच्चर्गोत्रयशोनामलक्षणप्रकृतित्रिक पुण्यप्रकृतीनाबध्यते । तिसुत्रिषुउपशातमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके "सायाबधत्ति"सातस्यैवबध, अयोगिस्थानेबधाभावात्, सेसयाइतिशेषका पुण्यप्रकृतिगणनातरिता पापप्रकृतय सर्वगुणेषुज्ञेया स्तत्रमिथ्यात्वेद्व्यशीति तासुपचदशापसारे सास्वादनेसप्तषष्टि, मिश्रेचतुश्चत्वारिंशत्, सम्यक्त्वेचतुश्चत्वारिंशत्, देशविरतौचत्वारिंशत्, प्रमत्तेषट्त्रिंशत्, अप्रमत्तेत्रिंशत्, अपूर्वकरणेप्रथमनिद्राद्विकापगमेअष्टाविंशति, अनिवृत्तौएकोनविंशति, सूक्ष्मसपरायेचतुर्दशइतिपापप्रकृतिबधक्रमस्तत्र अत्रपुण्यपापोभयमीलनेओघेचतुर्विंशतिशतमिथ्यात्वेएकविंशतिशत तत्रवर्णादयोगृहीता शुभास्तथाऽशुभा शुभलेश्यावान्शुभानिवर्णादीनिबध्नाति, अशुभलेश्यावान्अशुभवर्णादीनिबध्नाति, तेनोभयग्रहणइतिज्ञेय ७९।

टबार्थ —ए आठ गुणठाणे पुण्यप्रकृति बाधे ते कही, नवमे दशमे गुणठाणे तीन पुण्यप्रकृति बाधे छे साता १ जसनाम १ उचगोत्र १ ए तीन छे, तीन गुणठाणे इग्यारमे बारमे तेरमे सातानो बध छे ए बत्रमा पुण्यप्रकृति गणता शेष रहि ते पाप प्रकृति जाणवी मिथ्यात्वे ८२ सास्वादने ६७ मिश्रगुणठाणे ४४ समकित गुणठाणे ४४, देशविरति गुणठाणे ४०, प्रमत्त गुणठाणे ३६, अप्रमत्त गुणठाणे ३०, अपूर्वकरण गुणठाणे २८ अट्ठावीस, अनिवृत्तिकरण गुणठाणे २३ सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १४ पापप्रकृति बाधे छे, उपरले गुणठाणे पापप्रकृतिनो बध नथी, इहा किने पुन्यप्रकृति अने किने पापप्रकृति ए बे मेलवता एकसोचोवीसनो ओघ थाय छे, जे वर्णादिक

४ न्यार ९ शुभ ते पुन्यप्रकृतिमा गण्या छे अशुभ ते पाप-प्रकृतिमे गण्या ते माटे एकसो चोवीस प्रकृति थाय छे ॥७९॥

नामधुवबंधिनवग, दसणपणनाणविग्घ(य)परग्घाय।
भयकुछमिच्छसास, जिणगुणतीसाअपरियत्ता ॥८०॥

टीका—अथापरावर्त्तद्वारव्यारयानयाह, तत्रया प्रकृतय अन्यरया प्रकृतेर्बंध उदयउभयत्रानिवार्यस्वकीयबंधउदयउभयत्वादर्शयंतिता परावर्त्तमाना यास्त्वन्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयत्रा अनिवार्यस्वकीयबंधमुदयमुभयत्वादर्शयंतिता नपरावर्त्तंतेइति कृत्वाअपरावर्तमानाउच्यते, यत्मत्यपादि विणिवारीयजागच्छई बंधमुदयत्रअनपगइए, साहुपरियत्तमाणी अणिवारतीअपरियत्ता १ तत्रप्रथमपरावर्त्तमाना प्रकृतयस्तामि सहनामधुवबंधिनवगइत्यादि नाम्नोध्रुवबंधिनवक वर्णचतुष्कतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणोपघातलक्षण, दर्शनावरणचतुष्कचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनावरणरूप, पणत्ति पंचनाणज्ञानावरणपंचक, विग्घत्तिअंतरायपंचक परावातनामभयदुगछादिक मिच्छेत्तिमिथ्यात्वश्वासोच्छ्वासनामकर्मजिननामएता एकोनत्रिंशत्प्रकृतय अपरावर्तमानाभवंति। इत्येता एकोनत्रिंशत्प्रकृतय स्वमतोदयोभयकालेनान्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयत्रानिरुध्यप्रवर्त्तंतेऽतोऽपरावर्त्तमानाइति ॥ ८० ॥

टबार्थ—अथ हवे अपरावर्त्तमान प्रकृति कहे छे नाम ध्रुवबंधी नव वर्णादिक ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निमाण १ उपघात १ ए नव, दर्शनावरणी ४ ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ कर्मप्रकृति ५ परावात १ भय १ दुगछा १ मिथ्यात्वमोहनी १ सासोसास १ जिननाम ए २९ अपरावर्त्त

छे बन्धमा तथा उदयमा कोइके नहि ते बन्ध तथा उदयपणे आवती नथी पोतापणे बन्ध तथा उदय आवे छे ते बन्ध तथा उदय कोईक्नी प्रकृतिनो रोकीने पोतानो बन्ध तथा उदय थाइ ते परावर्त्तमान कहीजे, तेहथी इतर बीजी ते अपरावर्त्तमान कहीजे ॥ ८० ॥

जिणविणुमिच्छिअमिच्छा, सासणमीससुसजिणसम्माई ।
पंचसुनाणविग्घ, दसणचउनवगदसमम्मि ॥ ८१ ॥

टीका—अथपरावर्त्तमाना गुणस्थानकेषुविभजन्नाह । जिणविणु इत्यादि जिननामवर्जितामिथ्यात्वेअष्टाविंशति परावर्त्तमानाबध्यते, अमिच्छा मिथ्यात्ववर्जरहिता सास्वादने तथा मिश्रगुणस्थानेसप्तविंशतिरपरावर्त्तमानाबध्यन्ते, सजिणत्ति जिननामसहितास्ताएवअष्टाविंशति सम्यक्त्वादिपंचसुगुणेषुसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्ताऽप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेषु अपरावर्त्तमानाबध्यते, तत्र परज्ञानावरणपंचक विघ्नत्तिविघ्ननाम अन्तरायपंचक दसणचउत्ति दर्शनावरणीयचतुष्क, एताश्चतुर्दशअपरावर्त्तमाना नवमेऽनिवृत्तिकरणेऽशमेसूक्ष्मसंपरायलक्षणेबध्यतेऽति ॥ ८१ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे जिन नाम विना २८ अपरावर्त्तमान बांधे छे सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २७ अपरावर्त्तमान छे, मिश्रगुणठाणे सत्तावीस २७ बांधे छे समकितथी माडी पांच गुणठाणे समकिते, देशविरते, प्रमत्ते, अप्रमत्ते, अपूर्वकरणे ५ एमाए जिननाम मेलीये तेवारे २८ परावर्त्त

प्रकृति बधाये, नवमे गुणठाणे दशमे गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दर्शनावरणी ४ एव १४ अपरावर्त्तमान बधाये ॥८१॥

तणुअट्ठवेअदुजूअल, कसायउज्जोअगोअदुगनिद्दा।
तसवीसाउपरित्ता, बधइअपरित्तसेसाउ ॥८२॥

टीका—तणुअट्ठइत्यादि तनुशब्देनोपलक्षितमष्टक तणुवगागिइसवयण जाइगइखगइपुव्वित्तिगाथावयवेनप्रतिपादिततन्वष्टक, तत्रतनव तैजसकार्मणयोरपरावर्त्तमानासुप्रतिपादितत्वात् शेषाओदारिकरूपास्तिस्र, उपागानिवेणिआकृतय सस्थानानिषट्, सहननानिषट्, जातय पच, चतस्रोगतय, खगतिद्वय, आनुपूर्वीचतुष्क मिति अष्टकशब्देनत्रयस्त्रिंशत्प्रकृतयोगृह्यते, वेदा स्त्रीपुनपुसकरूपा स्त्रय दुजुअल द्वि युगलहास्यरत्यरतिशोकरूप, कषाया षोडश, उज्जोयदुगति द्विकशब्दस्यप्रत्येकसबधाद्द्योतातपारय गोत्रद्विक, गोत्रवेदनीयलक्षणगोत्रउच्चैर्गोत्रभेदात्, सातासातभेदाद्वेदनीयमपिद्विधा, निद्रापचक, त्रसदशक, स्थावरदशक, आयूषिचत्वारिइत्येताएकनवति प्रकृतय परावर्त्तमानाभवति, तत्रषोडशकषायानिद्रापचकचयद्यपिएता एकविंशतिप्रकृतयोध्रुवबधित्वाद्बधप्रतिपरोपरोधनकुर्वति तथापिस्वोदयेस्वजातीयप्रकृत्युदयनिरोधात्परावर्त्तमानाभवति, स्थिरास्थिरशुभाशुभप्रकृतयश्चतस्रोयद्यपिउदयप्रतिनविरुद्धारतथापिबधप्रतिपरावर्त्तमाना शेषा पञ्चषष्टि प्रकृतयोबधोदयाभ्यामपिपरस्परविरुद्धा अपिअत परावर्त्तमानागुणस्थानेषुबधक्रमेपूर्वोक्ताऽपरावर्त्तमानेभ्य शेषा परावर्त्तमानाबधेभवति, तत्रमिथ्यात्वेनवाधिकाअशीति, जिननामतुअपरावर्त्तमानेषुगणनात्, परावर्त्तमानतुआहारकद्विकमेवएकनवत्यामपगमेशेषानवाधिकाअशीति बधेप्राप्यते, एवसर्वत्रतेनसास्वादनेचतु सप्तति, मिश्रेसप्तच-

त्वारिंशत्, सम्यक्त्वेएकोनपचाशत्, देशएकोनचत्वारिंशत्, प्रमत्ते-पचत्रिंशत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत, अपूर्वकरणेत्रिंशत, अनिवृत्तिकरणेऽष्टौ, सूक्ष्मसपरायेतिस्र, उपशातादिषुत्रिषुएकसातमेवएवपरावर्त्तमानाना-बधक्रमइति ॥८२॥

टबार्थ—तनुआदिक आठआठ पिंड प्रकृति तनु ३ उ-पाग ३ सस्थान ६ सघयण ६ जाति ५ गति ४ विहायो-गति २ आनुपूर्वि ४ वेद ४ हास्यादि ४, कषाय १६ उद्योत १ आतप १ गोत्र १ वेदनी २ निद्रा ५ त्रस १० थावर दस आऊखा च्यार एइकाणु परावर्त्तमान जाणवी मिथ्यात्वे न्यासी ८९ सास्वादने ७४ मिश्रे ४७ समकिते ४९ देशविरते ३९ प्रमत्ते ३५ अप्रमत्ते ३१ अपूर्वकरणे ३० अनिवृत्तिकरणे ८ सूक्ष्मसपराये ३ इग्यारमे १ बारमे १ तेरमे १ अयोगि अब-धक अपरावर्त्ते जे गाथा माहे कही तेह टाल्ता शेष रही ते परावर्त्तमान जाणवी, त्राधे, हवे विपाक च्यार कहे छे जे मध्ये जे क्षेत्र आकाश तेह फिरता उदय आवे ते क्षेत्र विपाकी ४ आनुपूर्वी छे ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे समकित गुणठाणे च्यारे आनुपूर्विनो उदय छे ॥८२॥

मिच्छेसम्मेचउपुवि,निरयविणुदीयएआउचउ(चउरो)
देसेनरतिरिसेसा, मणुआमणुआउवेयगाभणिया ।८३।

टीका—अथविपाकद्वारचिंतयनाह, तत्रविपाक कर्मफलानुभव, सचतुर्द्धातत्रप्रथमक्षेत्रविपाका आनुपूर्व्यश्चतस्र, क्षेत्रमाकाशतत्रैव-विपाकउदयोयासाना क्षेत्रविपाकाआनुपूर्व्यश्चतस्रोनरकतिर्यग्नराम-रानुपूर्व्योलक्षणायतस्तासाचतसृणामपिविग्रहगतावेवोदयोभवतीति ॥

उक्तंच बृहत्कर्मविपाके नरयाउस्सउदए नरएवक्केणगच्छमाणस्स
नरयाणपुव्वियाए, ताहिंनहिअन्नहिंनत्थित्ति ॥१॥
एवनिरिमणुदेवे, तेसुविवक्केणगच्छमाणस्स
तेसिमणुपुव्वियाण, ताहिंउदयोअन्नहिंनत्थित्ति ॥२॥

नन्वविग्रहगत्यभावेपि आनुपूर्वीणामुदय सक्रमवरणेनविद्यतेऽत कथक्षेत्रविपाकिन्यस्ताश्चतुर्गतिगतो जीवविपाकिन्यइत्यनोच्यते, विद्यमानेपिसक्रमेयथानासागतीनाविपाकस्तथाविपाकस्तथापियथा-तासाक्षेत्रविधानेनस्वकीयोविपाकोदयोननथाऽन्यासामत क्षेत्रविपाकि-न्यएवेति, तत्रगुणस्थानेक्रमेणविभजनाह, मिच्छेसम्मेइत्यादि तत्र-मिच्छेमिथ्यात्वेसम्मेत्ति सम्यक्त्वदर्शनलक्षणेगुणस्थाने चउचतस्र-पुव्वित्तिआनुपूर्व्य उदयेप्राप्यते, तीणत्तिद्वितीयेसास्वादनारये गुण-स्थानके नरयविणु नरकानुपूर्वीविनास्तिस्रआनुपूर्व्य उदयेप्राप्यते, शेषेषुगुणस्थानेषुस्वप्रकृतिविपाकत्वेनानुपूर्वीउदयएवनास्ति, यत अतरालगतौगुणस्थानविकस्यैवप्राप्यमाणत्वात्, ननुआनुपूर्व्वीणा-स्थितिबन्धस्तुकथमेवते, तत्राहप्रदेशोदयेनसक्रातोदयेनवेतिगम्य ॥ उक्तच ॥ कर्मप्रकृतिचूर्णौविवागमुज्जाएतिइएसेसापएससक-तादयेणभुजइनिवचनात् अथभवविपाकस्वरूपकथयन्नाह, तत्र-भवनिकर्मवशवर्त्तिनोअस्मिन्प्राणिनइतिभव नारकादिपर्याय- सच-पूर्वायुर्व्यवच्छेदेविग्रहाद्यन्तरालगतिमारभ्यवेदितव्य, यदाहभगवान्-सुधर्मास्वामी भगवत्या, नेरइएतेरइएउवज्जइइति,तस्मिन्नेवभवेनार-कतिर्यग्नरामररूपेविपाकउदयोविद्यते यासानाभवविपाकिन्य तथा-दियथासभवपूर्वभवचव्यमानागामिभवेपिपच्यतेइतिभाव ननुयथा-युपादेवादिभवेऽवश्यविपाकोभवतिनथागतीनामप्यन्तस्ताअपिभवबि-पाकिन्य प्राप्नुवति, अत्रोच्यते आयुर्यद्यस्यभवस्ययोग्यनिबद्धतत्त-

स्मिन्नेवभवेवेद्यते नान्यभवे इत्यायुषोभवविपाकदानाद्भवविपाकित्व, गतयस्तुविभिन्नभवयोग्यानिबद्धाअपिएकस्मिन्नपिभवेसर्वा सक्रमेणसवेद्यन्ते, तथाहिमोक्षगामिन अशेषगतय मनुष्यगतावेवसक्रम्यक्षयपाति, अतोविभिन्नस्योदयभवप्रतिगतीनानियत्यभावान्नभवविपाकिन्य, किंतुजीवविपाकिन्यएवेत्युक्ताआयूपिचत्वारिएवविपाकिन्य, गुणस्थानक्रमेतु आउचउदृतिआयुश्चतुष्क नरकायुस्तीर्यगायुर्नरायुर्देवायु चउरोत्ति चतुष्केमिथ्यात्वसास्वादनमिश्राविरतिलक्षणेगुणस्थानचतुष्केउदय ,प्राप्यते,तथादेसेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेतिरिमणुत्तितिर्यगायुर्मनुष्यायु प्राप्यते, शेषा प्रमत्तादारभ्यअयोगिकेवलिचरमसमयपर्यन्तमनुष्यायुष वेदकाभणिता सप्तकमप्रकृतीनामबाधास्वस्वस्थित्यतर्वर्तीन्येव ? यथाज्ञानावरणीयस्योत्कृष्टास्थिति त्रिंशत्कोटाकोटीसागराणा अबाधाचत्रिंशद्वर्षशतानि अबाधायूत कर्मनिषेक भावनाचएतानित्रिंशद्वर्षशतानित्रिंशत्कोटाकोटिसागरान्तर्गतायेवान्यानिसाधिकानिआयुषस्तुदेवनारकायुषोरुत्कृष्टास्थिति त्रयस्त्रिंशत्सागरा तेचदेवनारकभवबद्धा, अबाधाचमनुष्यतिर्यगभवत्रिभागप्रमाणात्रयस्त्रिंशत्सागरोपमत्रिभागाएवेतिकथमित्युच्यतेआयुष अबाधायाप्रदेशवेदनमस्तितेनभिन्नाएव, शेषकर्मणातुअबाधायाप्रदेशोदयताभवति तेनान्तर्गताएवेतितथाआयुष प्रदेशोदयोपिक्रमादिनातद्भवे एवभवति अतआयुषोभवविपाक एवेति ॥८३॥

टबार्थ—सास्वादन गुणठाणे नरकानुपूर्विनो उदय छे नही, शेष तिन आनुपूर्विनो उदय छे, उपरात सर्व गुणठाणे छे, आनुपूर्विनोव्यक्त विपाकोदय नथी तो कोइ पूछे जे आनुपूर्व्विनो थितिबंध एटलो किहा भोगवे तेहनो उत्तर कम्मपयडीयी जे प्रदेशोदयपणे भोगवे अथवा गतिनामकर्म मध्ये सक्रमावी भो-

गवे छे, जे नवमे गयाज उदये आवे बीजा भवमे उदय नावे तेमाटे कम्मपयडी मध्ये कह्यो छे, जे बीजा कर्म्मनी अबाधा ते कर्मनी स्थिति मध्ये गणी छे अने आऊखानी थितिबधयीज उदीरणा छे, ते प्रदेशोदय पण थाये नही आऊखा च्यारे ते भव विपाकी छे, अबाधा ते मध्ये च्यार गुणे च्यार आऊखानो उदय छे, देशविरति गुणठाणे नर कहेता मनुष्यनो आऊखो १ तिर्यंचनो आऊखो उदय छे, शेष गुणठाणे एक मनुष्यायुनो उदय छे, आऊखा कर्मने सक्रमणकरण नथी, प्रदेशोदयपणे मुख्यताये विपाकोदय भेलोइज छे, किहाइक प्रदेशोदय अल्पता रीते भिन्नपणे गवेख्यो छे ॥ ८३ ॥

नामधुवोदयचउतणु, वग्घासाहारणियरुज्जोयतिग।
पुग्गलविवागिमिच्छे, चउत्तीसहारदुगहीण ॥८४॥

टीका—अथपुद्गलविपाकिस्वरूपदर्शयन्नाह, यत्पूर्वभवसत्तागतकर्मपुद्गलानाउदयेऽभिनवाऔदारिकादिविंशतिगुणाबादरवर्गणासूक्ष्मवर्गणानामपिआहारत्वेनाकृष्यगृहणेनयासाप्रकृतीनाविपाक उदयोभवतिता पुद्गलविपाकिन्य पट्त्रिंशत्, नामधुवोदयइत्यादि ८४ नाम्न कर्मण ध्रुवोदयानित्योदयानामध्रुवोदयाद्वादशप्रकृतय, तद्यथा निर्माणस्थिरास्थिरागुरुलघुशुभाशुभतैजसकार्मणवर्णचतुष्कइतिच-उतणुत्ति तनुशब्देनोपलक्षितचतुष्कतणुवगागिदसजयणइत्ति तत्रतनव तैजसकार्मणयोध्रुवोदयमध्येपतितत्वात् तनवऔदारिकवैक्रियाहारकलक्षणास्तिस्र परिगृह्यते, उपागानित्रीणि, आकृतय षट्, सहननानिषट्, तदेवअष्टादशप्रकृतय, उपघातसाधारण उद्योतआतप पराघातलक्षणइत्येता षट्त्रिंशत्प्रकृतय पुद्गलविपाकिन्यइतिअ-

त्रनैतसकार्मणवर्गणाप्याहारपर्याप्तिबलेनगृहीतानैतसकार्मणशरीरोद-यरूपाग्राह्या ॥ उक्तंच ॥ भगवत्या जीवाणभतेजे आहारत्ताएपु-ग्गलागिण्हन्तितेकिअणुगिण्हतिवायराअणुगिण्हन्तिगो० अणुविगि-ण्हन्तिइनायराइपिगिण्हन्ति तत्रकार्मणशरीरोपचयहेतवः कार्मणवर्ग-णापुद्गलाऔदारिकादिशरीरोपचयहेतवोबादरपुद्गलाएवमुच्य अत्र श्वासोच्छ्वासभाषामनोरूपाअपिअभिनवग्रहणेनैवविपाकेऽपिआहा-रत्वेनअग्राह्यमाणत्वान्नपुद्गलविपाकेगृहीताइति अथगुणस्थानेषुविभ-जनाह मिच्छे मिथ्यात्व "चउतीस" चतुस्त्रिंशत्पुद्गलविपाकिन्य प्रकृतय उदयेप्राप्यन्ते आहारकद्विकहीनाइति ॥ ८४ ॥

टबाथ—हवे पुद्गलविपाकी कहे छे नामकर्म्मनी प्रकृतीदयी १२ निर्माण १ थिर १ अथिर १ शुभ १ अशुभ १ अगुरुलघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादिक ४ शरीर ३ उपाग ३ संस्थान ६ संघयण ६ उपघात १ साधारण १ प्रत्येक १ उद्योत १ पराघात ए चउतीस प्रकृति पुद्गलविपाकी जाणवी बीजे पूर्व-बध कर्मयुगलसत्तागत तेहने उदयथी नवाग्राह्यथी नवा औदा-रिकादिक वीसगुणा वर्गणा लेईने जे उदय आवे ते पुद्गल-विपाकी छे, मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक विना चोत्तीस पुद्गल-विपाकी उदय छे ॥ ८४ ॥

आयवनिगोयहीण, दुगतीससासणाइतियगिम्मि ।
उरलदुगहीणादेसे, छट्ठेमाहारजोयविणा ॥ ८५ ॥

टीका—आयवनिगोयहीणइत्यादिसास्वादनेदुगतीस द्वात्रिं-शत् आयवनिगोयत्तिसाधारणहीनाउदयेप्राप्यन्ते, एवमिश्रेऽपिद्वात्रिं-शत्, सम्यक्त्वेऽपिद्वात्रिंशत्, उरलदुगऔदारिकद्विकहीना देशे देश-

विरतौ त्रिंशत्उदयेप्राप्यन्ते, उष्टेदनिपष्टेप्रमत्तारये साहारत्तिआहारद्विकसहिताउद्योतनामकर्मरहिताएकत्रिंशत् पुद्गलविपाकेउदयरूपा प्राप्यन्ते ॥ ८५ ॥

टबार्थ —आतपनामकर्म १ निगोद वहेना साधारण नाम विना सास्वादन तथा मिश्र तथा समकित एटले गुणठाणे बत्रीस पद्गलविपाकनी प्रकृति छे, देशविरति गुणठाणाने विषे औदारिकद्विक विना त्रीस छे, छठे गुणठाण आहारक बे २ मेलीये उद्योतनाम कर्म काढीये तेवार इगतीस पद्गलविपाकी उदयपणे ॥ ८५ ॥

अदुहारगअपमत्ते, अतिमसघयणतिगविणाचउसु ।
सघयणदुगविहीण, चउवीसखीणयोगम्मि ॥ ८६ ॥

टीका—अदुहारगअपमत्तेअप्रमत्ते गुणस्थानके अदुहारगत्ति आहारकद्विकरहिता एकोनत्रिंशत्उदयेलभ्यन्ते तथाअतिमत्ति अन्त्यसहननत्रिकविनाअर्द्धनाराचकीलिकासेवार्त्तहीना षड्विंशति अपूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहलक्षणेषुगुणस्थानेषुचतुर्षुउदयत्वेनप्राप्यन्ते पुद्गलविपाकिन्यइति सघयणत्ति सहननद्विकहीनइतिप्रकृतत्वात्हीनाश्चतुर्विंशति पुद्गलविपाकिन्य क्षीणमोहे तथा सयोगिमित्ति सयोगिकेवलिलक्षणे गुणस्थानकद्विकेप्राप्यन्ते, अयोगिगुणस्थानेतुशरीरोदयाभावात् नपुद्गलविपाकिन्युदयइति ८६

टबार्थ —अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ बे विना २९ पुद्गलविपाकी उदय छे, छेहला सघयण तीन विना आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे छवीस पद्गल प्रकृतिविपाकी

उदय छे, ऋषभनाराच १ नाराच २ ए बे संघयण विना क्षीण-मोह गुणठाणे तथा सयोगि गुणठाणे पुद्गलविपाकी चोवीस छे, अयोगी गुणठाणे शरीरनो उदय नथी तेमाटे पुद्गलविपाकिनो पण उदय नथी ॥ ८६ ॥

घणघाइदुगोयजिणा, तसीयरतिगसुभगदुभगचउ-सास ।
जाइतिगजीयविवागा, पणदुगसयरीपढमदुगे॥८७॥

टीका—अथजीवविपाकिप्रकृतीराह घणघाइत्ति, घनघातिन्य सप्तचत्वारिंशत् ज्ञानावरणपंचक दर्शनावरणनवक मोहनीयमष्टाविंशतिधा अंतरायपंचधा दुगोयत्तिगोयवेयणीयइतिगोयद्विक वेदनीयद्विक दुगोयशब्देनप्रकृतिचतुष्टयगृह्यते जिननाम त्रसत्रिक त्रसबादरपर्याप्तलक्षण इतरत्रिइतरत्स्थावरत्रिक स्थावरसूक्ष्मापर्याप्तलक्षण सुभगदुभगचउत्ति सुभगचतुष्क सुभगसुस्वरादेययश कीर्तिरूप दुर्भगचतुष्क दुर्भगदुःस्वरानादेयायशो रूप, सासत्ति उच्छ्वास जाइतिगत्ति जातित्रिक जातिपंचक गतिचतुष्क स्वगतिद्विक जातित्रिकशब्देनएकादशप्रकृतयोगृह्यते इत्येता अष्टसप्ततिप्रकृतयोजीवविपाकिन्य जीवविपाकित्वजीवगुणाज्ञानादयोआवृत्त्यतिशयति यथाबद्धास्तथाएककर्मवर्गणाउदयत्वेनभुज्यते वस्तुतस्तुक्षेत्रभवपुद्गलविपाकाअपिजीवस्येवपारंपर्येणानुग्रहमुपघातंचकुर्वंतितेनजीवविपाकाएवेतिमिथ्यात्वगुणस्थानेजिननामसम्यक्त्वमोहरहिता पंचसप्तति जीवविपाकेप्राप्यते,सास्वादनेताएवसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वोदयरहिताद्वासप्तति जीवविपाकाउदयेप्राप्यते ॥ ८७ ॥

टबार्थ—हवे जीवविपाकी कहे छे घनघाति ४५ ते मध्ये

ए विपाक ते उदयावस्था छे, तेमाटे मिश्रमोहनीयसम्यक्त्वमोहनी २ मेलीये एटले ४७, गोत्र २ वेदनी २ जिननामकर्म १ त्रसदशक ३ त्रस १ बादर १ पर्याप्त ३ इहां त्रसना दश छे स्थावर दश स्थावर १ सूक्ष्म २ अपर्याप्त ३ दुर्भग ४ सुभग १ सुस्वर २ आदेय ३ जस ४ दुर्भग ४ दुर्भग १ दुस्वर २ अनादेय ३ अयश ४ तथा साम कहेता श्वासोच्छ्वास १ नामकर्म १ जाइनिग कहेता जाति ५ गति ४ खगति २ एव ७८ जीवविपाकी छे पहले जीवे बधाडे बाध्या तेहज उदयपणे आवे छे, तेमाटे निद्रा मिथ्यात्व गुणठाणे जिननाम १ मिश्रमोहिनी १ समकित मोहिनी विना पचोतेर जीवविपाकीनो उदय छे सास्वादन गुणठाणे सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ मिथ्यात्व १ ए तीन विना बहुत्तर जीव विपाकी छे ॥ ८७ ॥

दुगिचउसट्ठीपणपन्न, गुणपन्नछपचचत्तगुणचत्ता ।
तिगदुगदुगजूअतीसा, सत्तरइक्कारजीयभुज्जा(या)८८।

टीका—दुगचि द्विगुणस्थानके मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेऽनतानुबधिचतुष्कस्थावरनामरहितामिश्रमोहयुक्ताश्चतु षष्टि सम्यक्त्वेतुमिश्राभावेसम्यग्मोहनीययुक्ताश्चतु षष्टि जीवविपाकिन्यउदयेप्राप्यन्ते, देशविरतौ द्वितीयकषायचतुष्कदेवगतिदुर्भगा नादेयायशइतिनवकापगमेपचपचाशज्जीवविपाकिन्यउदयेप्राप्यन्ते, तासुतीर्थगतिनीचैर्गोत्रतृतीयकषायचतुष्कापगमेएकोनपचाशत्, देशविरतौउदयेप्राप्यन्ते, ताएवस्त्यानर्द्धित्रिकरहिता षट्चत्वारिंशत्प्रमत्ते, ताएवसम्यग्मोहनीयरहिता पचचत्वारिंशत् अपूर्वकरणे, ताएवहास्यादिषट्करहिताएकोनचत्वारिंशत् अनिवृत्तिकरणे, ताएववेदत्रिकसज्वलनत्रिकरहितास्त्र-

षष्ठिशत् सूक्ष्मसपराये, ताएवसज्वलनलोभरहिता द्वाविंशत्उपशात मोहे, ताएवद्वाविंशत् क्षीणमोहेपि, ताएवनिद्राद्विकज्ञानावरणपचकातरायपचकदर्शनावरणचतुष्कमि येव षोडशापगमेजिननामोदयेचसप्तदशप्रकृतय सयोगिकेवलिगुणस्थानके, ततअयोगिकेवलिगुणेएकादशजीवविपाकिन्य उदयेप्राप्यते इति, इत्युक्तावियाका ॥ ८८ ॥

टबार्थ—मिश्र गुणठाणे बासठ प्रकृति जीव विपाकी छे, समकित गुणठाणे चोसठ प्रकृति जीव विपाकी छे, देशविरति गुणठाणे पचावन प्रकृति जीव विपाकी छे, प्रमत्त गुणठाणे उगुणपचाश प्रकृति जीव विपाकी छे, अप्रमत्त गुणठाणे बेंतालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, अपूर्वकरण गुणठाणे पिस्तालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, नवमे अनिवृत्तिकरण गुणठाणे उगुणचालीस छे, सूक्ष्मसपराये तेत्रीस छे, उपशातमोहे बत्तीस छे, सयोगिकेवलिने सत्तर प्रकृति जीव विपाकी उदये छे, अयोगिने इग्यार जीव विपाकी उदय छे, बारमी प्रकृति आऊखो ते भव विपाकी प्रकृति छे ॥ ८८ ॥

अट्ठगचउचउरट्ठगाय, चउरोयहुतिचउवीसा।
सोलसभगानवमे, इगभगोसुहमठाणम्मि ॥८९॥

टीका—अथभगाकम्माणमितिविवृणनाह गुणट्ठाणेसुअट्ठसुइक्किक्कमोहबधट्ठाणतु, पचाअनियट्टिठाणेसु बधोपरमोपरततो १ मोहनीयसत्कबधस्थानेषुमध्येएकैकबधस्थानमिथ्यादृष्ट्यादिषुनवसुगुणस्थानकेषुभवति, तत्रमिथ्यादृष्टेद्वाविंशति, सास्वादनस्यैकविंशति, सम्यग्मिथ्यादृष्टे सप्तदश, अविरतसम्यग्दृष्टे सप्तदश, देशविरतस्यनयोदश, प्रमत्तापूर्वकरणेषु भगएकैकानानवनव, एतानिचद्वाविंशत्या-

दीनिनवपर्यंतानिस्थानानि,तत्रद्वाविंशतिभंगा, एकविंशतौचत्वारो-भंगा, सप्तदशत्रयोदशनवगुस्थानेषुद्वाद्वाभंगकौ, पंचादीनानवस्थाना-नाएकएवभंगक नवस्थानेजातत्य, तत्रपंचचतस्रस्तिस्रोद्वेएका-प्रकृतिर्बंधइति पंचस्थानानिअनिवृत्तिगुणस्थानकेप्राप्यन्ते, अथगुण स्थानेषुउदयस्थानान्याह तत्रोदयस्थानानिनवएकद्वेचत्वारि पंच-षट्सप्तअष्टौनव दशएवनवस्थानानि तत्रगाथा—

सत्ताइदसओमिच्छे, सासायणमीसएनबुक्कोसा ।
छाइनवअविरये, देसेपंचाइअट्ठेव ॥ १ ॥

विरएखओछसमीए, चउराईसत्तउवसमुवसंते ।
अनियट्टियापरेपुण, एक्कोवदुचेवउदयसा ॥ २ ॥

एगसुहुमसरागे, वेएइक्कोयगाभवेसेसा ।
भंगाणचपमाण, पुव्वुदिट्ठेणनायव्व ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टौसप्तादीनिदशपर्यंतानित्रीणिपर्यंतानिचत्वार्युदयस्थानानि-भवंति ॥तद्यथा॥ सप्तअष्टौनवदशसास्वादनेसप्तादीनि दशपर्यंतानि-त्रीणिउदयस्थानानिसप्तअष्टौनव, एवं मिश्रेपित्रीणिउदयस्थानानि अ-विरतेषडादीनि नवपर्यंतानिचत्वारिउदयस्थानानि षट्सप्तअष्टौनवइ-तिचत्वारि,देसेदेशविरतारयेपंचादिअष्टपर्यंतानिचत्वारिउदयस्थानानि पंचषट्सप्तअष्टौएतानिचत्वारिउदयस्थानानि, तथा विरतेक्षयोपशमे-प्रमत्तेतथाअप्रमत्तेचतुरादिसप्तपर्यंतानिचतु पंचषट्सप्तएतानिचत्वा-रिउदयस्थानानि, उवसमुवसमे अपूर्वकरणेचतुरादिषट्पर्यंतानि त्री-णिउदयस्थानानि, अनिवृत्तिबादरेगुस्थानकेद्वौएकद्वेउदयस्थाने, सू-क्ष्मसंपरायेएकमुदयस्थान, शेषाउपशांतमोहादयोमोहोदयरहिताज्ञेया अतोगुणस्थानकेषुमोहेभंगचतुर्विंशतिंविभजन्नाह मिथ्यादृष्ट्यादिष्व-

पूर्वकरणपर्यवसानेषुगुणस्थानकेषुप्रत्येकमष्टौअपूर्वकरणेचतस्रइत्या-
दिचतुर्विंशतयोभवन्ति, तत्रमिथ्यात्वेअष्टौ सास्वादनेचतस्र, मिश्रे-
चतस्र, चउरङ्गगतिअविरतादिषुअप्रमत्तपर्यवसानेषुगुणस्थानेषुप्रत्ये-
कचतस्रएताश्चभावयति तत्रमिथ्यात्वेसप्तविधोदयेएकाचतुर्विंशति,
अत्रकश्चिज्जीव अनन्तानुबन्धिचतुष्टयसत्तान अप्रवर्त्तनाकरणेनउद्वल-
नया यपवर्त्यप्रतिपतितोमिथ्यात्वेगत तस्यसप्तविधउदय, अन-
न्तानुबन्धिनासत्तायाभावात्तनउदय, तत्रमिथ्यात्वअप्रत्याख्यानावरण-
प्रत्याख्यानसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमेनय क्रोधादीनानयाणावेदा-
नाअन्यतमोएकोवेद हास्यरतियुगलारतिशोकयुगलयोरन्यतरत्यु-
गलइत्येतासासप्तप्रकृतीनाउदयोभवति मिथ्यात्वे, अत्रहास्यरतियुगले-
एकोभग, सप्तारतिशोकयुगलेद्वितीयोभग, एवभगद्वय वेदैस्त्रिगु-
णेनतेनभगा षड्भगा क्रोधसभवा, षड्भगामानसभवा, षड्भ-
गा मायासभवा, षड्लोभसभवा, एवचतुर्विंशतिभगा सर्वत्रभगा
चतुर्विंशतिकाक्रमोऽयमेवतस्मिन्नेवसप्तके नयेवाजुगुप्सायावाअनन्ता-
नुबन्धिनिवाप्रक्षिप्तेअष्टनामुदय अत्रभयादौप्रत्येकमेककाचतुर्विंशति
प्राप्यते, इतितिस्रश्चतुर्विंशतय, तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्स
योरन्यतराभमानतानुबन्धिनोर्यद्वाजुगुप्सानन्तानुबन्धिनो प्रक्षिप्तयोर्नवाना-
मुदय, जाताप्येकैकस्मिन्नविकल्पेभगानाचतुर्विंशति प्राप्यते, इतिति-
स्रश्चतुर्विंशतय, तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्सा तानुबन्धिषुयुगपत्-
प्रक्षिप्तेषुदशानामुदय अत्रैकाभगानाचतुर्विंशति, सर्वसख्ययामिथ्या-
दृष्टौचतुर्विंशतय, सास्वादनेसप्तअष्टौनवतीणिउदयस्थानानि, तत्रसा-
स्वादनेऽनतानुबन्धीउदयेनैवआगच्छति, अनन्तानुबन्धसादिकषायचतु-
ष्टयानामन्यतमेचत्वार क्रोधादिका, नयाणावेदानामन्यतमोवेद, द्वयो-
र्युगलयोरन्यतरत्युगलमित्येतासासप्तप्रकृतीनाअत्रैव उदय, अत्र-
प्रागेवैकाभगानाचतुर्विंशतिकातत्रोभयेजुगुप्सायावाप्रक्षिप्तायाअष्टा-

नामुदय तत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयो प्रक्षिप्तयोर्नवोदय, अत्रैका-
भगानाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययामिश्रेचतस्रश्चतुर्विंशतय, मिश्रेऽ
पिसप्तअष्टानवतीनिउदयस्थानानि तत्रानन्तानुबंधिवर्जास्त्रयोऽन्यतमे-
क्रोधादिका त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगल-
पुता सप्तउदया, तत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयजुगुप्सायामक्षि-
प्तायाअष्टोदय, अत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयोर्नवा-
नाउदय तत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययामिश्रेचतस्रश्चतुर्विंशतय
अविरतसम्यग्दृष्टौ पञ्चसप्तअष्टानवपर्याप्तानिचत्वारिउदयस्थानानि,
तत्राननानुबंधिवर्जास्त्रयोऽन्यतमेक्रोधादिका, त्रयाणावेदानामन्यत-
मोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतमद्युगल इतिषण्णाप्रकृतीनाउदयोअवि-
रतस्यक्षायिकसम्यग्दृष्टेर्वाउपशमसम्यग्दृष्टेर्वाभुव अत्रैकाचतुर्विंशति,
ततोभयेवाजुगुप्सायासम्यक्त्वमोहेप्रक्षिप्तेसप्तानामुदय अत्रतिस्रश्च-
तुर्विंशतय, तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सयोर्भयसम्यग्मोहयोर्जुगु-
प्सासम्यग्मोहयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयोरष्टानामुदय, अत्रापितिस्रश्चतुर्वि-
शतय तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सासम्यक्त्वमोहानायुगपत्प्रक्षिप्ता-
नानवानामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययाअविरतसम्यग्दृष्टाव-
ष्टौचतुर्विंशतय, देशविरतौपञ्चपञ्चसप्तअष्टाइति उदया तत्रप्रत्याख्या-
नावरणसज्वलनक्रोधादीनाअन्यतमोद्वाक्रोधोत्रयाणावेदानामन्यतमो-
वेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगलमिनिपञ्चानामुदय देशविरतस्यक्षायिक-
सम्यग्दृष्टेरोपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वाअत्रैकाचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगु-
प्सायावासम्यग्मोहेवाप्रक्षिप्तेषण्णामुदय अत्रतिस्रश्चतुर्विंशतय,
तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सयोर्वाजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वयोरथवाभ-
यवेदकसम्यक्त्वयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयो सप्तानामुदय, अत्रापितिस्रश्चतु-
र्विंशतय, तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सासम्यग्मोहेप्रक्षिप्तेअष्टानामु-
दय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययादेशविरतौअष्टौचतुर्विंशतय,

तत्रश्चप्रमत्तेऽप्रमत्तेचत्वारिपचपट्सप्तइत्येतानिचत्वारि उदयस्थाना-
नि, तत्रक्षायिकसम्यग्दृष्टेरौपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वाप्रमत्ताप्रमत्तस्यप्रत्ये-
कसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणावेदानामन्यतमो-
वेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरयुगल इतिचतसृणाप्रकृतीनामुदय अत्रै-
काचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगुप्सायावासम्यग्मोहेवाक्षिप्तेपचानामुदय
अत्रतिस्रश्चतुर्विंशतय भगानातस्मिन्नेवचतुष्केचभयजुगुप्सासम्यग्-
मोहयो प्रक्षिप्तयो षण्णामुदय अत्रापितिस्रश्चतुर्विंशतय तया-
तस्मिन्नेवचतुष्केभयजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वे क्षिप्तेसप्तानामुदय अ-
त्रैकाचतुर्विंशति सर्वसरयपाप्रमत्तस्यअष्टौचतुर्विंशतय, एवमप्र-
मत्तस्याप्यष्टौचतुर्विंशतय अपूर्वकरणेचतस्र पचषट्इत्येतानित्रीणि-
उदयस्थानानि, तत्रसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमएक क्रोधादि त्रया-
णावेदानाअन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरयुगलइत्येतासाचतसृ-
णाप्रकृतीनामुदयोऽपूर्वकरणेत्रव अत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयेजु-
गुप्सायावाप्रक्षिप्तायापचानामुदय अत्रद्वेचतुर्विंशती भयजुगुप्स-
योर्युगपत्प्रक्षिप्तयो षण्णामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति सर्वसरयया-
अपूर्वकरणेचतस्रश्चतुर्विंशतय अनिवृत्तिबादरपुन एकोद्वौवाउदया-
शौउदयभेदौअत्रचतुर्णासज्वलनानामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणा-
वेदानामन्यतमोवेद इतिद्विकोदय, अत्रत्रिभिर्वेदैश्चतुर्भि सज्वल-
नैर्द्वादशभेदा ततोवेदोदय यत्रच्छेदेएकोदय सचतुर्विधोद्विविधत्रधे
एकविधत्रधेप्राप्यते, तत्रयद्यपिप्राक्चतुर्विधत्रधेचत्वार त्रिविधत्रधे
त्रयोद्विविधत्रधेद्वौएकविधत्रधेएक इतिदशभगा प्रतिपादिता त-
थाप्यत्रसामान्येनचतुस्त्रिद्व्येकत्रधापेक्षयाचत्वारएवभगाविवक्ष्यते ते-
नपोटशभगकाअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थाने, इगभगोसुहुमठाणम्मि
सूक्ष्मसपरायेत्रधाभावेएककिट्टीकृतसज्वलनलोभवेदयते, अत्रैकएव-

भग शेषाउपरितना उपशातमोहादय सर्वेष्यवेदकामोहस्येति व्याख्याताचतुर्विंशति भगकाम् ॥ ८९ ॥

टबार्थ —मोहनीकर्मनी उदयभागानी चोविसी गुणठाणे बेंतालीस छे तेमव्ये मिथ्यात्वे आठ चोवीसी छे, सास्वादनगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, मिश्रगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, उपरले च्यार गुणठाणे चोथे तथा पाचमे तथा छठे तथा सातमे आठ आठ चोवीसी छे, आठमे गुणठाणे च्यार चोवीसी छे, ईहा चोवीसी सर्वत्रवेद ३ तेहथी हास्ययुगलना तीन भागा अरतिशोकना तीन भागा एव ६ भागा क्रोधथी ६ भागा मानथी ६ भागा मायाथी ६ भागा लोभथी ६ भागा ए चोवीस भागा जाणवा सर्व चोवीसी ए रीते छे, तथा नवमे गुणठाणे सोल भागा छे तथा दशमे गुणठाणे एक भागो छे मोहनीकर्मनी ए सर्व चोवीसीने चोवीसगुणी करीये ॥ ८९ ॥

चउवीसगुणा एए, सोलसनवमे इगंचदसगम्मि ।
वारसपणसट्ठिसया, मोहभगाण सव्वग्ग ॥९०॥

टीका—चउवीसगुणाएएइत्यादि एतद्द्विपचाशच्चतुर्विंशतय द्विपचाशत चतुर्विंशत्यागुणनेद्वादशशतीअष्टचत्वारिंशतभगानाभवति, सास्वादनेषड्विंशति , मिश्रेषड्नवति , सम्यक्त्वेद्विनवत्यधिकशत, देशविरतेद्विनवत्यधिकशत, प्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अप्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अपूर्वकरणेषड्विंशति , अनिवृत्तिकरणेषोडशभगा , सूक्ष्मसपरायेएकोभग , इत्येवभगनिरूपण अस्मत्कृतसर्वेभप्रकरणतोज्ञेय द्वादशशतपचषष्टिमोहभगानासर्वाग्रभवति ॥९०॥

टबार्थ.—तेवारे २४८ भागा थाय ते मध्ये सत्तर भागा

मेलीये एटला मिल्या १२६५ भागा थाय, ते गुणठाणे तिहा मिथ्यात्वे १९२ भागा छे, सास्वादने ९६ मिश्रगुणठाणे ९६ समकित गुणठाणे १९२ देशविरति गुणठाणे १९२ प्रमत्तगुणठाणे १९२ अप्रमत्त गुणठाणे १९२ भागा, अपूर्वकरण गुणठाणे ९६ अनिवृत्तिकरण गुणठाणे १६ भागा सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १ भागो छे, इम भागाना भेद जाणवा ते सवेधप्रकरण स्वधणियेज किधो छे, तेहथी जोई लेवा ए मोहनीकर्मना भागानो सरवालो जाणवो ॥ ९० ॥

अडसट्ठीबत्तीस, वत्तीससट्ठीमेववावन्ना ।
चउयालदोसुवीसा, नवमेअडवीसइगसुहुमे ॥९१॥

टीका—अडसट्ठीबत्तीस अथपदवृन्दचतुर्विंशतिनिरूपणायाह। मिथ्यात्वगुणस्थानकेअष्टषष्टिपदवृन्दचतुर्विंशतय तत्रसप्तोदयेसप्तचतुर्विंशतय अष्टोदयेचतुर्विंशति चतुर्विंशतय नवोदयेसप्तविंशति चतुर्विंशतय दशोदयेदशचतुर्विंशतय, एवअष्टाधिकाषष्टिर्मिथ्यात्वेपदानाचतुर्विंशतयोभवन्ति,सास्वादनेद्वात्रिंशच्चतुर्विंशतय, तत्रसप्तोदयेसप्तअष्टोदये षोडश,नवोदयेनव,एवद्वात्रिंशत्,मिश्रे,सप्तोदयेसप्तअष्टोदयेषोडश नवोदयेनव, एवद्वात्रिंशत्,सम्यक्त्वे,षष्टि, तत्रषड्डदयेषट् सप्तोदयेएकविंशति अष्टोदयेअष्टा एवद्विपचाशत्, प्रमत्तेचतुश्चत्वारिंशत् चतुरुदयेचतस्र पचोदयेपचदश षड्डदयेऽष्टादश सप्तोदयेसप्त एवचतुश्चत्वारिंशत् अपूर्वकरणेविंशति, एवत्रीणिशतानि द्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतयोभवति, तच्चतुर्विंशतिगुणितपदवृन्दसर्वाग्रप्राप्यते नवमेऽष्टाविं-

शति तथा दशमेएक एकजानानिअष्टसहस्राणिचतु शतानिसप्तत्यधिकानिपदप्रदानासर्वाग्रभवति एतेचभगकायोगादिनागुणितेअनकभगानासर्वाग्रभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थ—हवे पदवृद्धनी चोवीसी कहीये छे निद्रा मिथ्यात्वे अडसठि चोवीसी छे सास्वादन बत्तीस चोवीसी छे मिश्रे बत्तीस चोवीसी छे समकिते साठ चोवीसी छे देशविरते बावन चोवीसी छे प्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे, अप्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे अपूर्वकरण गुणठाणे वीस चोवीसी छे सर्व मिलिया ५२ चोवीसी छे नवमे गुणठाणे अठावीस भागा छे दशमे सूक्ष्मसपराय गुणठाणो तेने विषे एकज भागो छे ॥ ९१ ॥

उदयपयाओगुणीया, पयवन्नासभवविथाणिज्जा ।
नाणतरायतिविह, दससुदोहुतिदुन्निम्मि ॥ ९२ ॥

टीका—अथज्ञानावरणादिकर्मणाभगकानिवितन्यन्ते । तत्र ज्ञानावरणे तथा अन्तरायेतिविहतिविमकारसभव , प्रथमभगेपचविधो बध पचविधउदय पचविधासत्ता एव त्रिकयोगयुक्त प्रथमोभग, दससु, मिथ्यात्वनआरभ्य दशसुसूक्ष्मसपरायपर्यंतेषुप्राप्यते, द्वुतिम्मिद्वुतिउपशान्तमोहक्षीणमोहलक्षणे गुणस्थानद्वयेद्वेउदयसत्तारूपेभवत पचविधउदय पचविधासत्ता एतत्त्रिसयोगलक्षणोद्वितीयभग प्राप्यते ज्ञानावरणातरायोर्भगद्वयमेव ॥ ९२ ॥

टबार्थ—ए चोवीसी सर्व उदय पदथी गणिये तेवारे पद वृद्धनो सर्वाग्रथाये, दसनी चोवीसी दसगुणी करीये, नवनी चो-

वीसी नवगुणी करीये, इम सर्वत्र करता ८४७७ भागा थाये, ज्ञानावरणीना भागा २ छे अन्तरायना भागा २ छे पाचनो नव पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए त्रिविध भागो दशमा गुणठाणा पर्यंत छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए एक भागो छे ॥ ९२ ॥

मिच्छेपुणसासाणे, नवचउपणनवयबधुदयसत्ता ।
मीसाइनियट्टिओ, छचउपणनवयदुगभगा ॥९३॥

टीका—अथदर्शनावरणीयभगकान्गुणस्थानकेषुदर्शयन्नाह । मिच्छेपुणसासाणेइ यादि मिथ्यात्वेपुन सास्वादनेदर्शनावरणीयस्यद्वौ-भगौ, नवत्ति नवानाप्रकृतीनामव चतुर्णामुदय नवानासत्ताल-क्षण प्रथमोभग, तेषामेवजीवानानिद्रोदये पचानामव्ये एकस्मिन्-समये एकाएवनिद्राउदयेभवति नसर्वास्तेननवानामव पचानामुदय नवानासत्तारूप द्वितीयएवभगद्वयप्रथमगुणस्थानद्वये प्राप्यते, मिश्रादारभ्यनियट्टित्तिबादरप्रथमभागयावन्नूस्त्यानर्द्धिनिकबधाभावेप-ण्णामेवनव चतुर्णामुदय नवानासत्ता अथवापण्णामव पचानामु-दय नवानासत्ताएनद्वभगद्वयलभ्यते ॥ ९३ ॥

टबार्थ—दर्शनावरणीना मिथ्यात्व तथा सास्वादने नव बध च्यार उदय, नव सत्ता ए एक तथा नव बध पाच उदय नव सत्ताए बीजो ए बे भागा छे मिश्र गुणठाणाथी माडी आ-ठमा गुणठाणाना प्रथम भाग सुधी १ च्यारनो उदय नव नवनी सत्ता ए एक भागो तथा छनो बध पाचनो उदय नवनी सत्ता ए बीजो भागो ए बे भागा छे ॥ ९३ ॥

चउबधतिगेचउपण, नवसदुसुजुअल छ सता ।
उवसतेचउ पण नव, खीणेचउदयछचउसता॥९४॥

टीका—चउबधतिगे इत्यादि अपूर्वकरणस्यषट्पचाशद्बन्धकभागादारभ्य सूक्ष्मसपरायपर्यन्त उपशमश्रेणिवत चउबधत्ति, चतुर्णाबध चतुर्णामुदय नवसत्ति नवसत्तालक्षण एकोभग अथवाचतुर्णाबध पचानाबध नवसत्तालक्षण द्वितीय निद्रोदयस्तुघोलनापरिणामरूप घोलनाचवीर्यरयतीक्ष्णवागलक्षणप्रवर्त्तनेकिंचित्पुन परावर्त्तलक्षणरूपापरिणति दुसुत्ति नवमेदशमेबधोदयानायुगल चतुर्णाबध चतुर्णामुदय षट्सत्ता एपक्षपकश्रेण्यारोहवत भग, तथा उवसते उपशातेएकादशेगुणस्थानेचतुर्णामुदय नवानासत्ता अथवा नवानामुदय नवानासत्ताएनद्वौभगकौप्राप्येते खीणत्ति क्षीणमोहलक्षणेद्वादशेचतुर्णामुदय षण्णासत्ता अथवा चतुर्णामुदय चतुर्णासत्तारूप एवभगद्वयप्राप्यते, क्षपकाणामत्यतविशुद्धतयानिद्राद्विकस्यउदयाभावात् उदयभगेषु सक्रान्तोदयस्यप्रकृत्यतरभवनेननवगवेषणाप्रदेशोदयस्यापि नमुख्यताक्वचित्ग्रहणमपिकारणिकम् ॥ ९४ ॥

टबार्थ—आठमाना उपरला भागे नवमे दशमे ए तीन गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता ए भागो उपशमश्रेणिमें छे च्यारनो बध च्यारनो उदय उनी सत्तानो भागो नवमाना तीजा भागथी जाणवो इग्यारमे गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता अथवा पाचनो उदय नवनी सत्ता ए बे भागा छे क्षीणमोह गुणठाणे च्यारनो उदय उनी सत्ता अथवा च्यारनो उदय च्यारनी सत्ता ए बे भागा छे ॥ ९४ ॥

चउछसुदुन्निसत्तसु, एगेचउगुणेसुवेयणियभगा ।
गोएपणचउदोतिसु, एगट्ठ(सु)दुन्निइक्कम्मि ॥९५॥

टीका--अथ वेदनीयगोत्रभगकान्गुणस्थानेषुदर्शयन्नाह । चउछसुइत्यादिषुषट्सुमिथ्यादृष्ट्यादिषुप्रमत्तसयतपर्यंतेषुगुणस्थानकेषुप्रत्येकवेदनीयस्य प्रथमाश्चत्वारोभगा तेचेमेअसातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता २ असातस्यबन्ध सातस्यउदय सातासातेसत्ता ३ सातस्यबन्ध सातस्योदय सातासातेसत्ता ४ एवभगचतुष्टयप्राप्यते तथाअप्रमत्तसयतादिषुसयोगिकेवलिपर्यंतेषुद्वौभगकौ सातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता १ पुन सातस्यबन्ध सातस्योदय सातासातेसत्ता एवभगकद्वयप्राप्यते, तथाएकस्मिन्नयोगिकेवलिनिच त्रोभगा तेचेमेअसातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्योदय सातासातसत्ता २ एतौद्वौविकल्पौ अयोगिकेवलिनिद्विचरमसमयपर्यन्त प्राप्येते चरमसमयेतु असातस्योदय असातसत्ता १ अथवा सातस्यउदय सातसत्ता एवभगद्वय प्राप्यते द्विचरमसमयस्यसातक्षीणतस्यअसातप्राप्यते यस्यअसातक्षीणतस्यसातप्राप्यते गोएत्तिगोत्रस्यपचभेदामिथ्यादृष्टौ तेचेमेनीचैर्गोत्रस्यबन्धोनीचैर्गोत्रोदय नीचैर्गोत्रसत्ताएकोविकल्प तेजस्कायिकेषुवायुकायिकेषुलभ्यते तद्भवाद्बुद्धृत्तेषुचाशेषजीवेषुमिथ्यादृष्टौ नीचैर्गोत्रस्यबन्ध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा नीचैर्गोत्रस्यबन्ध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गोत्रस्यबन्ध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गोत्रस्यबन्ध उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता एवभगपचकभवति तथा सा-

स्वादनेप्रथमभगवर्जभगचतुष्यप्राप्यते प्रथमभगकतेजोवायुकायिक-योरतद्भवेतेषुतनसास्वादनाभावात्, तथानिवृत्तिमिश्राविरतिदेशविरतेषु-उच्चैर्गोत्रबन्धकाद्वौभगौभवत मिश्रादयोहि नीचैर्गोत्रनबध्नन्ति अन्ये-त्वाचार्या देशविरतस्यपचमएवभगएक उक्तच सामण्णवयजाइए उच्चगोयस्सउदओहोइ इतिवचनात् एगट्ठमुप्रमत्तसयतप्रभृतिषुअप्र-मुगुणस्थानेषुप्रत्येकमेकैकोभग तनप्रमत्तात्सूक्ष्मसपरायपर्यंत उच्चै-र्गोत्रस्यबन्ध उच्चगोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता उपशातमोहक्षी-णमोहसयोगिकेवलिनिबन्धाभावात् प्रत्येकउच्चगोत्रस्योदय उच्चनी-चैर्गोत्रसत्तारूप विकल्प "दुनिइक्कम्मि" एकस्मिन्अयोगिके-वलिनिद्वौभगौउच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ताअयविकल्प अ-योगिद्विचरमसमयपर्यन्त चरमसमयेतु उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्गोत्र-सत्ताअयद्वितीयोविकल्प नीचैर्गोत्रस्यसत्ताद्वासप्ततिप्रकृतिषुक्षीण-त्वात् इत्युक्तेवेदनीयगोत्रे ॥ ९५ ॥

ट्यार्थ—वेदनी कर्मना छ गुणठाणे च्यार भागा छे असातानो बध १ असातानो उदय १ साताअसातानी सत्ता १ असातानो बध १ सातानो उदय १ साताअसातानी सत्ता २ तथा सातानो बध सातानो उदय साताअसातानी सत्ता ३ सातानो बध असातानो उदय साताअसातानी सत्ता ४ ए च्यार छट्ठा गुणठाणा पर्यंत छे इहा छट्ठाने अंते असातानो बध जाय छे तिणे सातमाथी तेरमा पर्यंत सात गुणठाणे सा-तानो बध सातानो उदय बेनी सत्ता १ तथा सातानो बध असातानो उदय बेनी सत्ता ए बीजो ए बे भागा पामीये छे एक अयोगी गुणठाणे अबधना च्यार भागा छे असातानो उदय, बेनी सत्ता १ सातानो उदय बेनी सत्ता २ असातानो

उदय सातानी सत्ता २ सातानो उदय सातानी सत्ता १ ए च्यार भागा छे मोहकर्मना भागा सात छे तिहा मिथ्यात्वे पाच भागा छे नीचनो बध नीचनो उदय नीचनी सत्ता १ नीचनो बध नीचनो उदय बेनी सत्ता नीचनो बध ऊचनो उदय बेनी सत्ता ऊचनो बध नीचनो उदय बेनी सत्ता ए पाच भागा छे सास्वादन गुणठाणे नीचनो बध नीचनो उदय नीचनी सत्ता ए भागो नथी तेणे च्यार भागा छे, जे कारणे उपशमसमकित पडतो सास्वादने आवे उचगोत्र बाधी सत्ताकरीज आवे, समकिती ते नावे तो बध नथी, तिहा तीजे तथा छठे गुणठाणे ऊच बधना बे भागा छे, जे कारणे सास्वादनने नीचनो बध टल्यो छे, तेणे नीच बधना तीन भागा टल्या, पाचमे पण एहज बे भागा छे, छठायी माडी दशमा पर्यंत ऊचनो बध ऊचनो उदय ऊचनी सत्ता ए एक भागो छे, इग्यारमे बारमे तेरमे ऊचनो उदय छे बेनी सत्ता एक भागो छे एक अयोगि गुणठाणे बधना बे भागा छे ॥९५॥

अट्ठछाहिगवीसा, सोलमवीसचवारछदोसु ।
दोचउसुतिसुइक, मिच्छाइसु आउएभगा ॥९६॥

टीका —साप्रतमायु कर्मणोभगकान्गुणस्थानेषुदर्शयन्नाह । अट्ठछाहिगवीसाइत्यादिअनायु कर्मण अष्टाविंशतिभगा स्तत्रनरकायुष पच,प्रथमअनद्धायुष नरकायुरुदय नरकायु सत्तालक्षण प्रथम बध्यमानायुषाद्वेभगकेतिर्यगायुर्बध नरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु सत्ताएतद्भगकमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते मनुष्यायुर्बध नरकायुरुदय नरकमनुष्यायु सत्ता, एषतुमिथ्यात्वेसास्वादनेअविरतौचप्राप्यते

आयुर्बंधकरणानंतरनरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु सत्ता, नरकायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्ता एतौभगकौनारकस्यचतुर्थगुणस्थानेषुप्राप्येते एतेपचनैरयिकायुर्भंगका, देवायुषोपिपच, देवायुरुदय देवायु सत्ताबध्यमानायुषातिर्यगायुर्बंध देवायुरुदय देवतिर्यगायु सत्ता मनुष्यायुर्बंध देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता बधानंतरदेवायुरुदय तिर्यग्देवायु सत्ता, देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता एव पच, तिर्यगायुरुदयेनत्रभगका, स्तिर्यगायुरुदय तिर्यगायु सत्ता अयचपचसुगुणेषुप्राप्यते, बध्यमानायुषानरकायुर्बंध तिर्यगायुरुदय नरकतिर्यग्सत्तारूप मिथ्यात्वेएवप्राप्यते, तिर्यगायुर्बंध तिर्यगायुरुदय तिर्यग्तिर्यगायु सत्तारूपस्तुमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते, मनुष्यायुर्बंध तिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यग्सत्ता अयभग मिथ्यात्वेसास्वादनेमुख्यतयाप्राप्यते, सम्यग्दृष्टेरितरश्चोऽपिदेवायुर्बंध तिर्यगायुरुदय सत्तालक्षण मिश्रवजमिथ्यात्वादि देशविरतपर्यंतप्राप्यते बधानंतरतिर्यगायुरुदय नरकतिर्यग्सत्तातिर्यगायुरुदय तिर्यगतिर्यग्सत्तातिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यगसत्तातिर्यगायुरुदय देवतिर्यगायु सत्ताएतेचत्वारोपिपूर्वबद्धायुषोऽपेक्षयापचस्वपिगुणेषुप्राप्यन्ते एवमनुष्यायुर्भंगानव, मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्तालक्षण चतुर्दशसुगुणस्थानेषुप्राप्यते, बध्यमानानानरकायुर्बंध मनुष्यायुरुदय नरकायुर्मनुष्यायु सत्तारूप मिथ्यात्वेतिर्यगायुर्बंध मनुष्यायुरुदय तिर्यग्मनुष्यायु सत्तालक्षणभगोमिथ्यात्वेसास्वादनेदेवायुर्बंध मनुष्यायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्तारूप भगोमिथ्यात्वेसास्वादने, देवायुर्बंध मनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्तालक्षणभग मिश्रवर्जमिथ्यात्वाद्यप्रमत्तपर्यंतेषुप्राप्यतेइति अष्टाविंशतिभगामिथ्यात्वेप्रथमेगुणस्थानेप्राप्यते, सास्वादनेषट्विंशतिभगा,स्तिर्यग्मनुष्ययो नरकायुर्बंधलक्षणौद्वौभगौ न नरकायुषोहिनवोमिथ्यात्वेएवेति छत्ति,

षडधिकाविंशति मिश्रेषोडशभगावध्यमानभगानाद्वादशानामभावात् वीसच अविरतसम्यग्दर्शने "वीसभगा" विंशतिर्भंगा कथमिनिचेदुच्यते तिर्यग्मनुष्याणाप्रत्येकमायुर्बंधकालेयेनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्विषयास्त्रयोभगा यश्चदेवनैरयिकाणाप्रत्येकमायुर्बंधकालेनियग्गतिविषय एकैकोभग तेअविरतसम्यग्दृष्टेर्नसभवति नत शेषाविंशतिरेवभवति, देशविरतेद्वादशभगा, यतोदेशविरतिस्तिर्यग्मनुष्याणाएवभवति, तेचतिर्यग्मनुष्यादेशविरताआयुर्बध्नन्तोदेवायुरेवबध्नातिनशेषमायुस्तत्रतिरश्चामनुष्याणाचप्रत्येक परभवायुर्बंधकालात्पूर्वएकैकोभग परभवायुर्बंधकालेपिदेवायुर्बंधरूप एकैकोभग बंधोत्तरकाल तुचत्वारोभगा, चतुर्णामप्यायुषामध्येअन्यतमबद्ध्वातत्रोदेशविरतिंप्रतिपद्यते, तदपेक्षयाचत्वारोभगा प्राप्यन्ते, सर्वसंख्यया, द्वादश उदीरणाद्वयो प्रमत्ताप्रमत्तयो प्रत्येकषड्भगा, प्रमत्ताप्रमत्तसंयतादि मनुष्याएवभवति बंधकालात्पूर्वएक बंधकालेतुदेवायुर्बंधरूप एक बंधोत्तरकालतुचत्वारोपिएवषडभगा, दोचउपशमश्रेणि चतुर्षुअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसंपरायोपशान्तमोहेषुगुणस्थानेषूपशमश्रेणिमधिकृत्यप्रत्येकद्वौद्वौभगोतत्रथा मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्ता, अथवा बद्धायुषस्तुमनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्तालक्षणएवद्वौभगकौप्राप्येते एषविकल्प परभवायुर्बंधोत्तरकालएतेद्वायुर्नबध्नाति, अतिविशुद्धत्वात्पूर्वबद्धेचायुषि उपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते ते, देवायुष्येबद्धेतान्यायुषिनदुक्तकर्मप्रकृतौ तिसुआउगेसुबद्धेसु जेणसेढिंआरुहइ, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्यएतेषुद्वौद्वौएवभगकौपूर्वबद्धायुष्कान्तुनक्षपकश्रेणिंप्रतिपद्यते, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्येत्युक्त क्षपकश्रेण्यान्त्वेतेषाएकैकोभग मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्तालक्षणएवनिरूपितत्वात् कर्मस्वरूपम् ९६॥

बचार्थ—हवे आउखाकमना भागा गुणठाणे कहे छे

मिथ्यात्व गुणठाणे नारकीना ५ देवताना ५ तिर्यंचना ९ ए अठावीस भागा छे, सास्वादन गुणठाणे छवीस भागा छे मनुष्यना तथा तिर्यंचना नारकीबधना २ भागा नथी मिश्र गुणठाणे सोळ भागा छे च्यार गतिमध्ये बध्यमान भागा नथी. बार बध्यमान भागा नथी समकित गुणठाणे वीस भागा छे च्यार अबधना च्यार बाधी रह्या पछी बध्यमान च्यार छे जे देवता नारकी समकित गुणठाणे मनुष्यायु बांधे तिरि मनुष्य एक देवायु बांधे, समकितीने नरकतिरि आयुबध नथी छट्ठाथी माडी तेरमा पर्यंत उच बध, उच उदय, उच नीचनी सत्ता, ए एक भागो छे एक अयोगी केवली गुणठाणे अबधना बे भागा छे सत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबधायु चढे पर बधायु चढे नहीं देशविरति गुणठाणे तिर्यंचना छ मनुष्यना छ ए बार पामीये अबधनो १ बध्यमान एक देवतानो बाधी रह्या पाछल्या च्यार एव ६ तिरिगतिना छ मनुष्यगतिना, छट्ठे तथा सातमे गुणठाणे मनुष्यगतिना छ भागा पामीये तथा आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे मनुष्यायुसत्ता मनुष्यायुउदय मनुष्यायुउदयदेव मनुष्यायुसत्ता ए बे भागा पामीये कोईक जीव आउखो बांधे, उपशमश्रेणि चढे तथा क्षीणमोह गुणठाणे मनुष्यायु उदयसत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबधायु चढे परबधायु चढे नहीं ॥ ९६ ॥

छनवछक्कतिगसत्ता, दुगदुगतिगदुगतिअट्ठचउदुग ।
छचउदुगपणचउ, चउदुगचउपणगएगचउ ॥९७॥

टीका—सामतनामकमस्वरूपविभजन्नाह छनवछक्कइत्यादि-

गाथायुग्म तत्रव्याख्या तत्रमिथ्यादृष्टौनाम्न षट्बन्धस्थानानि तद्य-
थात्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-
शत् त्रिंशत्, तत्रापर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्य बध्नत त्रयोविंशति, तस्या
चबध्यमानायां बादरसूक्ष्मप्रत्येकसाधारणैर्भंगाश्चत्वार पर्याप्तकेंद्रिय
प्रायोग्यापर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यगपचेंद्रियमानुष्यप्रायोग्यबध्नत प-
चविंशति, तत्रपर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्यायापचविंशतौबध्यमानायाभगा-
विंशति अपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्यायाबध-
ध्यमानायातुप्रत्येकएकैकोभगइतिसर्वसंख्ययापचविंशति पर्याप्तैकें-
द्रियप्रायोग्यबध्नत षड्विंशति तस्याचबध्यमानायाभगा षोडश,
देवगतिनरकगतिप्रायोग्यबध्नत अष्टाविंशति देवगत्यष्टाविंशतौ
अष्टौभगा नरकाष्टाविंशतौएकभग एवनवपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रिय-
तिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्याबध्नता एकोनत्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रि-
चतुरिंद्रियप्रायोग्यायाएकोनत्रिंशतिबध्यमानायाप्रत्येकअष्टौभगा ।
तिर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्यायाषट्चत्वारिंशत् शतानिअष्टाधिकानिमनुष्य-
गतिप्रायोग्यायामप्येतावतएवभगा सर्वसंख्ययाचत्वारिंशदधिकानि-
द्विनवतिशतानि ९२४०। यातुदेवगतिप्रायोग्यातीर्थंकरनामसहिता
एकोनत्रिंशत् साचमिथ्यादृष्टौनबध्नमायातितीर्थंकरनामसम्यक्त्वप्रत्य-
यात्, मिथ्यादृष्टेश्चतद्भावात्, पर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्पचेंद्रिय-
प्रायोग्यबध्नत त्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियप्रायोग्यायात्रिंश-
तिबध्यमानायाप्रत्येकमष्टौभगा, तिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यायात्वष्टा-
धिकानिषट्चत्वारिंशच्छतानि।४६०८ सर्वसंख्ययाद्वात्रिंशत् उत्तरा-
णिषट्चत्वारिंशत् यावन्मनुष्यगतिप्रायोग्या त्रिंशत् तीर्थंकरनामस-
हितायाचदेवगतिप्रायोग्याआहारकद्विकसहितातेउभेअपिमिथ्यादृष्टौ
नबध्नमायात, तीर्थंकरनाम्न सम्यक्त्वप्रत्ययत्वादाहारकनाम्नस्तु-
संयमप्रत्ययत्वात्, उक्तंच सम्मत्तगुणनिमित्तंतित्थयरं संयमेणआहा-

रमिति तत्र त्रयोविंशत्यादिषुभगसख्यामिथ्यात्वप्रत्ययनिरूपणार्थ-माह ॥ गाथा ॥

चउपणवीसासोलस, नवचत्तालसयायवाणउई ।
बत्तीसुत्तरछाया, लसयामिच्छस्सपत्ययविही ॥ १ ॥

तथामिथ्यादृष्टेर्नवउदयस्थानानि तद्यथाएकविंशति चतुर्विंशति सप्तसहस्राणि सप्तशतानि त्रिसप्तत्यधिकानि तथाहिएकविंशत्युदये एकचत्वारिंशत्, तत्रैकेंद्रियाणामेव अन्यत्रचतुर्विंशत्युदयस्याभावात्, पचविंशत्युदयेद्वात्रिंशत् तत्रएकेंद्रियाणासप्तवैक्रियतिर्यग्पचेंद्रियाणामष्टौ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक एवद्वात्रिंशत्षड्विंशत्युदयेपञ्चशतानि तत्रैकेंद्रियाणात्रयोदश १३ विकलेंद्रियाणा नव, तिर्यग्पचेंद्रियाणाद्वेशतेएकोननवत्यधिके २८९ मनुष्याणामपिद्वेशतेएकोननवत्यधिके ॥२८९॥ सप्तविंशत्युदयेएकत्रिंशत् तत्रएकेंद्रियाणाषट् ६ वैक्रियतिर्यग्पचेंद्रियाणामष्टौ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक, अष्टाविंशत्युदये एकादशशतानिनवनवत्यधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणाषट्, तिर्यग्पचेंद्रियाणापचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियतिर्यग्पचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवाना षोडश, नारकाणाएक, एकोनत्रिंशदुदयेसप्तदश शतानिएकाशीत्यधिकानि ॥१७८१ तत्रविकलेंद्रियाणाद्वादश, तिर्यक्पचेंद्रियाणामेकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि ११५२ वैक्रिय, तिर्यक्पचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापचशतानिषट्सप्ततिअधिकानिवैक्रियमनुष्याणामष्टौ ८ देवानाषोडश, नारकाणाएक, त्रिंशदुदयेएकोनत्रिंशत्शतानिचतुर्दशाधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणामष्टादशतिर्यक्पचेंद्रियाणासप्तदशशतानिअष्टाविंशत्यधिकानि१७२८ वैक्रिय-

देवनैरयिकसत्कोदयस्थानभगा न प्राप्यन्ते, सत्तास्थानानिपचतथा-
द्विनवति अष्टाशीति षडशीति अशीति अष्टसप्ततिश्चतस्रैक-
विंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशत्युदयेषुपचापिसत्ता-
स्थानानि नवर पचविंशत्युदयेतेजोवायुकायिकानधिकृत्याष्टसप्तति
प्राप्यते, षड्विंशत्युदयेतेजोवायुकायिकान् तेजोवायुभवादुद्धृत्यवि-
कलेन्द्रियतिर्यक्पचेन्द्रियेषुमध्येसमुत्पन्नान्अधिकृत्याष्टाविंशत्येकोन-
त्रिंशत्एकत्रिंशद्रूपेषुपचसुअष्टसप्ततिवर्जानिशेषाणिप्रत्येकंचत्वारि-
चत्वारिसत्तास्थानानिसर्वसरयथासर्वाण्युदयस्थानानिअधिकृत्यनवो-
विंशतिबधकस्यचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि, एवपचविंशति षड्विंशति
बधकानामपिवक्तव्य केवलमिहदेवाअप्यात्मीयेषुसर्वेष्वप्युदयस्थाने-
षुवर्तमानपर्याप्तैकेन्द्रियपयोग्यापचविंशतिं षड्विंशतिंचबध्नति इत्य-
वसेय, नवरपचविंशतिबधेबादरपर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभदुर्भगानादे-
ययश कीर्तिअयश कीर्तिपदैरष्टौभगा अवसेया नशेषा
सूक्ष्मसाधारणपर्याप्तिषुमध्येदेवस्योत्पादाभावात्, सत्तास्थानभावना
पचविंशतिबधेषड्विंशतिबधेचप्रागिवकर्त्तव्या सर्वसख्ययाचत्वारिंशत्
सत्तास्थानानि, अष्टाविंशतिबधकस्यमिथ्यादृष्टेर्द्वेउदयस्थाने तद्यथा-
त्रिंशत्एकत्रिंशत्, तिर्यक्पचेंद्रियमनुष्यानधिकृत्यएकत्रिंशत् तिर्यग्प-
चेंद्रियानेवअष्टाविंशति बधकस्य चत्वारिसत्तास्थानानिद्विनवति
एकोननवति अष्टाशीति षडशीति तत्रत्रिंशदुदयेचत्वार्यपितत्रा-
प्येकोननवतिर्योनामवेदकसम्यग्दृष्टिर्बद्धतीर्थकरनामा परिणामपरिव-
र्त्तनेनमिथ्यात्वेगतोनारकाभिमुखोनरकगतिप्रायोग्यामष्टाविंशतिंब-
ध्नाति, तमधिकृत्यवेदितव्यानिशेषाणि पुनस्त्रीणिसत्तास्थानान्यविशे-
षेणतिर्यग्मनुष्याणाएकत्रिंशदुदयेएकोननवतिवर्जानित्रीणिसत्तास्था-
नानिएकोननवतिर्हितीर्थकरनामसहिता नचतीर्थकरनामतिर्यक्षुसभ-
वति सर्वसरयथाअष्टाविंशति(बधे)सप्तसत्तास्थानानि देवगतिवर्जा-

शेषामेवभवतिविंशतिविकलेंद्रियतिर्यक्पंचेंद्रियप्रायोग्यामनुष्यगतिप्रायोग्याचयत्नोनिष्पादिते सामान्येननवापिप्राक्तनानिउदयस्थानानिनवयाद्विनवति एकोननवति अशीति षडशीति अशीति पञ्चसप्ति तत्रैकविंशत्युदयेसर्वाण्यपिपंचसप्तानिप्राप्यन्ते, तत्राप्येकोननवति बद्धतीर्थकरनामानमिथ्यात्वगुणनैरयिकमविकृत्यावसेया द्विनवति अष्टाशीतिश्चदेवनैरयिकमनुजविकलेंद्रियतिर्यक्पंचेंद्रियकेंद्रियानविकृत्यषडशीति अशीतिश्चविकलेंद्रियतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्यैकेंद्रियानविकृत्यवेदितव्या, अष्टसप्ततिरेकेंद्रियतिर्यक्पंचेंद्रियानविकृत्यचतुर्विंशत्युदयेएकोननवतिवर्जानिशेषाणि पंचसप्तास्थानानितानिचैकेंद्रियानविकृत्यवेदितव्यानि, जन्यमचतुर्विंशतिरुदयस्थानाभावात् । पंचविंशत्युदयेषिषटसप्तास्थानानि तानिपंचविंशत्युदयेभावितानिनैवभावनीयानि षड्विंशत्युदय एकोननवतिवर्जानिशेषाणि पंचसप्तास्थानानितानिप्रागिवभावनीयानि, एकोननवतिस्तुनलभ्यते यतोमिथ्यादृष्टे सत एकोननवतिनरकेषु पद्यमानस्यनैरयिकस्यप्राप्यते नशेषस्यनचनैरयिकस्यषड्विंशत्युदय सम्भवति, सप्तविंशत्युदये अष्टसप्ततिवर्जानि शेषाणिपंचसप्तास्थानानि तत्रैकनवति प्रागुक्तरूपनैरयिकमद्विकृत्यविनवतिरष्टाशीतिश्चदेवनैरयिकमनुष्यविकलेंद्रियतिर्यक्पंचेंद्रियैकेंद्रियाणामानपोद्योतान्यतरसहितानाभवति, नारकादीनावानचतेषामष्टसप्ततिस्तेषामवश्यमनुष्यद्विकबंधसम्भवात् एतान्येवपंचसप्तास्थानानि अष्टाविंशत्युदयेनत्रैकोननवतिर्द्विनवतिरष्टाशीतिश्चप्रागिवभावनीया, षडशीतिरष्टाशीतिश्चविकलेंद्रियतिर्यक्

ग्पचेन्द्रियमनुष्यानधिकृत्यवेदितव्याएवमेकोनत्रिंशदुदयेप्येतानिएव-
पचसत्तास्थानानि भावनीयानि, त्रिंशदुदयेचत्वारिनद्यथात्रिनवति-
रष्टाशीति षट्शीतिरशीतिरनानिविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनु-
ष्यानधिकृत्यवेदितव्यानि, एकोननवति पद्मुप्राप्यते, यत सा
मिथ्यादृष्टे सतोबद्धतीर्थकरनाम्नोमिथ्यात्वगतस्यनरयिकस्यप्राप्यते
नचैनरयिकस्यत्रिंशदुदयोऽस्ति एकत्रिंशदुदयेप्येतान्येवचत्वारिनानि-
चविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियानधिकृत्यद्रष्टव्यानि, सर्वसंख्ययामिथ्या-
दृष्टेरेकोनत्रिंशत्त्रिंशतोबध्नत पचचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि यात्तुदेवग-
तिप्रायोग्याएकोनत्रिंशत्सामिथ्यादृष्टेर्नबधमायाति कारणप्रागेवोक्त
मनुष्यदेवगतिप्रायोग्यवर्जाशेषात्रिंशत विकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रिय-
प्रायोग्याबध्नत सामान्येनप्रागुक्तानिनवोदयस्थानानि, एकोननवति
वर्जानिपचसत्तास्थानानि, एकोननवतिसत्कर्मणस्तिर्यग्गतिप्रायोग्य-
बधारभात्भवात्तानिपचसत्तास्थानानि, एकविंशतिचतुर्विंशतिपच-
विंशति षडविंशत्युदयेषुप्रागिवभावनीयानि, सप्तविंशत्यष्टाविंशति ए-
कोनत्रिंशद्रूपेषुपचसूदयस्थानेषुअष्टसप्ततिवर्जानिप्रत्येकशेषाणिचत्वा-
रि २ भावनीयानि अष्टसप्ततिप्रतिषेधेकारणप्रागुक्तमनुसरणीय सर्व-
संख्ययामिथ्यादृष्टे त्रिंशतबध्नत चत्वारिंशत्सत्तास्थानानि मनुज-
गतिदेवगतिप्रायोग्यात्रिंशत्मिथ्यादृष्टे नबधमायाति मनुजगतिप्रा-
योग्याहितीर्थकरनामसहितादेवगतिप्रायोग्यात्वाहारकतीर्थकरनामस-
हितातत सात्कथमिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानसंवेध, सम्प्रतिसास्वा-
दनस्यबधोदयसत्तास्थानान्युच्यते, निगसत्तद्गति नीणिबधस्थानानि
तद्यथाअष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्तत्राष्टाविंशतिर्द्वेधा देवग-
तिप्रायोग्यानरकगतिप्रायोग्याचतत्र नरकगतिप्रायोग्या सास्वा-
दनस्यबधमायाति, देवगतिप्रायोग्यायाश्चबधकास्तिर्यग्पचेन्द्रियमनु-
ष्याश्चतस्याचाष्टाविंशतोबध्यमानायाअष्टौभगा तथासास्वादनाएके-

न्द्रियविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्या देवानैरयिकाश्चतिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामनुष्यप्रायोग्यावाएकोनत्रिंशतबन्नतिनशेषा अत्रभगा चतु षष्टिशतानि सास्वादनायादितिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामथवा मनुष्यगतिप्रायोग्या एकोनत्रिंशतबन्नति तथापि न हुडसस्थानसेवार्त्त सहननच बन्नति मिथ्यात्वोदयाभावात् ततश्चतिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामेकोनत्रिंशतबन्नति पचमि सस्थानै पचमि सहननै प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिभ्यास्थिरास्थिरशुभाशुभसुभगदुर्भगसुस्वरदुस्वरादेयानादेययशोअयशोभ्याचभगाद्वात्रिंशत्शतानिसर्वबधस्थानसख्ययाअष्टाधिकानिषण्णवतिशतानि ९६०८ अत्रभाष्य गाथा॥

अट्ठसयाचउसट्ठी, बत्तीससयायसासणेभेया ।
अट्ठावीसाइसु, सवाणट्ठहियछन्नुइ ॥ १ ॥

सुगमा, तथासास्वादनस्योदयस्थानानि सप्त तद्यथा, एकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् तत्रएकविंशत्युदये एकेन्द्रियविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रिय मनुष्यदेवानधिकृत्यवेदितव्या नरकेषुसास्वादनोनोत्पद्यते इतिकृत्वातद्विषयोएकोभग सहनसभवति किंतुशेषाएवतेचविकलेन्द्रियाणाद्वौद्वौइतिषट्तिर्यग्पचेन्द्रियाणामष्टौ मनुष्याणामष्टौ देवानामप्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंशत्युदयेद्वात्रिंशद्भगा चतुर्विंशत्युदयेएकेन्द्रियेषुउत्पन्नमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तकेनसहयश कीर्त्ययश कीर्त्तिभ्याद्वौद्वौभगौतावेवसभवत नशेषा, सूक्ष्मेषुअपर्याप्तेषुसास्वादनस्योत्पादाभावात् अतएवविकलेन्द्रियाणा तिर्यग्पचेन्द्रियाणा मनुष्याणा च प्रत्येकमपर्याप्तकेनसह य एकैकोभग सहनसभवति किंतुशेषपरावर्तेचविकलेन्द्रियाणा द्वौद्वौइतिषट्तिर्यग्पचेन्द्रियाणामष्टौ मनुष्याणामप्यष्टौ देवानामप्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंशत्युदयेद्वात्रिंशद्भगा चतुर्विंशत्युदये एकेन्द्रियेषुमध्येउत्पन्नमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तके-

नसहयश कीर्त्ययश कीर्त्तिम्यार्यद्वाभगौनावेनसभवत नशेषा सूक्ष्मेषुसाधारणेषुतेजोवायुषुचमध्येसास्वादनस्योत्पादाभावात्, पचविंशत्युदयो देवेषुमध्येउत्पन्नमात्रस्यप्राप्यतेनशेषम्यनत्रचाष्टौभगा तेचस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्तिअयश कीर्त्तिपदैरवसेया षड्विंशत्युदयोविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्येषुमध्येउत्पन्नमात्रस्यअनाप्यपर्याप्तकेनसहयएकैकोभग नसभवति, अपर्याप्तकमध्येसास्वादनस्योत्पादाभावात् शेषास्तुसभवति तेचविकलेन्द्रियाणाप्रत्येकद्वाद्वाविंशतिपदतिर्यग्पचेन्द्रियाणाद्वेशतेअष्टाशीत्यधिकेमनुष्याणामपिद्विशते अष्टाशीत्यधिकेसर्वसख्ययापड्विंशत्युदयेपचशतानिद्व्यशीत्यधिकानि ५८२ सप्तविंशत्यष्टाविंशत्युदयौनसभवत नौहिउपत्त्यनतरातमुहूर्तेसतिभवति सास्वादनभावश्चोत्पत्त्यनतरमुत्कर्षत किंचिदूनषडावलिकामात्र तत एतौसास्वादनस्यनप्राप्यत एकविंशदुदयेदेवनैरयिकाणास्वस्थानपर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानानाप्राप्यते तत्रदेवस्यैकोनविंशदुदयेभगाअष्टौनैरयिकस्यैकइति सर्वसख्यया नव ९ त्रिंशदुदयातिर्यग्मनुष्याणापर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानानादेवानामुत्तरवैक्रियेवर्त्तमानानासास्वादनाना तत्रतिरश्चा मनुष्याणाचत्रिंशदुदयेप्रत्येकद्विपचाशदधिकान्येकादशशतानि ११५२ देवस्याष्टौसर्वसख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशाधिकानि २३१२ एकत्रिंशदुदयास्तिर्यग्पचेन्द्रियाणापर्याप्ताना प्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानानाअत्रभगाएकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि देवस्याष्टौसर्वसख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशानि २३१२ एकत्रिंशदुदयेप्रत्येकद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि ॥ गाथा ॥

बत्तीसदुतिअट्ठतिपायोग्गसामायपचनवउदया
बारहियातेवीस, मानायाअरससयाय ॥ १ ॥

सुगमा, सर्वभगसख्ययासप्तनवत्यधिकानिचत्वारिंशत्शतानि सास्वादनस्यद्वेसत्तास्थाने तद्यथाद्विनवति अष्टाशीतिश्चनवद्विनवति आहारकचतुष्टयबन्ध्वाउपशमश्रेणित प्रतिपतनसास्वादनभावमनुगच्छनितस्यलभ्यते नशेषस्य, अष्टाशीति चतुर्गतिकानामपिसास्वादनाना, सप्रतिसवेधउच्यते तत्राष्टाविंशतिबध्नत सास्वादनस्यद्वेउदयस्थाने तद्यथाविंशत्एकविंशत् अष्टाविंशतिर्हिसास्वादनस्यबधयोग्याभवति देवगतिविषयानचकरणापर्याप्त सास्वादन देवगतियोग्यबध्नातितन शेषाउदयानसभवति, अत्रमनुष्यानधिकृत्यविंशदुदयेद्वेअपिसत्तास्थानेतिर्यग्पचेंद्रियान्सास्वादनानधिकृत्याष्टाशीतिरेवयतोद्विनवतिरुपशमश्रेणित प्रतिपततोलभ्यते, नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव, एकविंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयतोद्विनवतिरुपशमश्रेणित प्रतिपततोलभ्यते नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव एकविंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयतएकविंशदुदयस्तिर्यग्पचेंद्रियाणानचतिरश्चाद्विनवति सभवति प्रागुक्तयुक्ते एकोनविंशतितिर्यग्पचेंद्रियाणामनुष्यप्रायोग्याबध्नत सास्वादनेसप्ताप्युदयस्थानानि, तत्रएकेंद्रियविकलेंद्रियतिर्यग्पचेंद्रियमनुष्यदेवनैरयिकाणासास्वादनानास्वीयस्वीयोदयस्थानेषु वर्त्तमानानामेवसत्तास्थानमष्टाशीति नत्रमनुष्यस्य विंशदुदयेवर्त्तमानस्योपशमश्रेणित प्रतिपतन सास्वादनस्यद्विनवति एवविंशद्बधकस्यापिवक्तव्य सर्वाण्यप्युदयस्थानान्यधिकृत्यसामान्येनसर्वसख्ययासास्वादनस्याष्टौसत्तास्थानानि, सप्रतिसम्यग्मिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानान्यभिधीयते, दुगतिमदुगति मिश्रेगुणस्थानकेद्वेबधस्थाने तद्यथा अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् तत्रतिर्यग्मनुष्याणासम्यग्मिथ्यादृष्टीनादेवगतिप्रायोग्यमेवबधमायाति तत्र शेषाअष्टाविंशति तत्रभगाअष्टौएकोनविंशतिमनुष्यगतिप्रायोग्याबध्नतादेवनैरयिकाणा अत्राप्यष्टौभगा तेचउभयत्रापि । स्थिरा-

नि सप्त तद्यथा ॥ एकविंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविं-
शति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् मनुष्याणाएकविंशतभवति
एकैकस्मिन्नुदयस्थानेद्वेसत्तास्थानेतद्यथानवतिनवति एकोननवतिश्च
मनुष्यगतिप्रायोग्याचैकोनत्रिंशतबध्नति देवनैरयिकाणाउदयस्थानानि
पचतद्यथा एकविंशति पचविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्
देवानापचतायेनषष्टुत्रिंशत ? साचउद्योतवेदकानामपगतया एकैक-
स्मिन्नुदयस्थानेद्वेद्वेसत्तास्थानेतद्यथाद्विनवतिरष्टाशीतिश्चमनुष्यगति-
प्रायोग्यात्रिंशतविरतसम्यग्दृष्टदेवानैरयिकाश्चबध्नति तत्रदेवानामुद-
यस्थानानिषट् तान्येवतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेत्रिनवति-
रेकोननवतिश्चनैरयिकाणाउदयस्थानानिपचतेषुप्रत्येक सत्तास्थानमे-
कोननवतिरेवतीर्थकराहारकसत्कर्मणोनरकेषूत्पादाभावात् तदेवसा-
मान्येनएकविंशत्यादिषुत्रिंशत्पर्यंतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थाने-
त्रिनवतिरेकोननवतिश्चनैरयिकाणामुदयस्थानानिपच तेषुप्रत्येकस-
त्तास्थानमेकोननवतिरेवतीर्थकराहारकसत्कर्मणोनरकेषूत्पादाभावात्
तदेवसामान्येनएकविंशत्यादिषुत्रिंशत्पर्यंतेषुउदयस्थानेषुसत्तास्थाना-
निप्रत्येकचत्वारि तद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोननवतिरष्टाशी-
तिश्चएकविंशदुदयेद्वे द्वेद्विनवतिरष्टाशीतिश्चसर्वसंख्ययात्रिंशत्इति स-
प्रतिदेशविरति तस्यत्रयादिस्थानान्युच्यते दुगउक्कचउक्कइति देश-
विरतस्यद्वेत्रयस्थाने तद्यथा अष्टाविंशतिरेकोनत्रिंशत् तत्राष्टावि-
शतिर्मनुष्यस्यतिर्यक्पचेंद्रियस्यचादेशविरतस्यदेवगतिप्रायोग्याअष्टौ-
भगा तेचतीर्थकरसहिताएकोनत्रिंशत् साचमनुष्यस्यैव तिरश्चस्ती-
र्थकर्मसत्कर्मणोभावात् अत्राप्यष्टाभगा षडुदयस्थानानि तद्यथाप-
चविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्राद्या-
निचत्वारि वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाअत्रएकैकोभग तिरश्चामाद्यद्वयोरे-
कैकोअतिमयोस्तुद्वौद्वौसर्वपदानाप्रशस्तत्वात्त्रिंशत्स्वभावस्थानाना-

तिर्यङ्मनुष्याणाअत्रभगानाचतुश्चत्वारिंशद्शत १४४ तद्यथाद्वि स-
हननै सुस्वरदु स्वराभ्याप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिभ्याचजायते
दुर्भगानादेयायश कीर्त्तीनामुदयोगुणप्रत्ययादेवनभवतिइति तदा-
श्रितानिविकल्पानप्राप्यते, वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाप्रत्येकमेकैकोभग
एकविंशत्तिरश्चाअत्रापितएवभगा, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथा
त्रिनवति, द्विनवति, एकोननवतिरष्टाशीतिश्च तत्रयोऽप्रमत्तोऽ
पूर्वकरणोवातीयकराहारकमद्ध्यापरिणामहासेनदेशविरतोजात तस्य-
नवति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्एतेषुचप्रत्ये-
कद्वेद्वेसत्तास्थाने तद्यथा द्विनवतिरष्टाशीतिश्चएवतिश्चोऽपि, नवरत-
स्यएकत्रिंशदुदयोपिवक्तव्य, तत्रापिचएतेएवद्वेसत्तास्थानेएकोनत्रि-
शद्व वोमनुष्यस्यैवदेशविरतस्योदयस्थानानिअनतरोक्तान्येवपच, तेषु-
प्रत्येकद्वेद्वेसत्तास्थाने, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवतिश्च तदेवदेशविर-
तस्यपञ्चविंशत्यादिषुत्रिंशत्पर्यंतेषु चत्वारिसत्तास्थानानि तथाप्रमत्ते-
बप्रस्ने द्वेतद्यथाअष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्एतेचदेशविरतस्यैवभा-
वनीये,पचउदयस्थानानि तद्यथापचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति
एकोनत्रिंशत्त्रिंशदेतानिसर्वाण्यप्याहारकसयतस्यवैक्रियसयतस्यवावे-
दितव्यानि, त्रिंशत्स्वभावस्थसयतस्यापितत्रवैक्रियसयतानामाहारक-
सयतानाच पृथक्पचविंशति सप्तविंशत्युदययो प्रत्येकमेकोभग
अष्टाविंशतावेकोनत्रिंशतिचैकैक सर्वसख्ययाचतुर्दश १४ त्रिंश-
दुदय स्वभावस्थस्यापिप्राप्यते, तत्रचतुश्चत्वारिंशदधिकशत १४४
तद्यदेशविरतस्यैवभावनीय सर्वसख्ययाअष्टपचाशदधिकशत, चत्वारि-
सत्तास्थानानि, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवति द्विनवतिरष्टाशीतिश्च, त-
त्राहारकसयतस्यद्विनवतिरेव, आहारकमत्कर्माद्याहारकशरीरमुत्पाद-
यतीतितत्तस्यद्विनवतिरेवैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितीर्थकरनामस-
त्कर्माचाष्टाविंशतिनभवतिइतित्रिनवतिरेकोननवतिर्नप्राप्यते, एको-

नविंशद्बंधकस्य,पचस्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेतद्यथानिन-वतिरेकोननवतिश्च तत्राहारकसयतस्यनिनवतिरेवतस्यैकोनविंशद्बंध-कस्यनियमस्तीर्थकराहारकसद्भावात्, वैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितदेव प्रमत्तसयतस्यसर्वेष्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकचत्वारि २ सत्तास्थानानि-प्राप्यन्ते, इतिसर्वसंख्ययाविंशति इदानीमप्रमत्तस्यबंधादीन्युच्यते चउदुगचवत्ते अप्रमत्तसयतस्यचत्वारि बंधस्थानानितद्यथाअष्टाविं-शति एकोनविंशत्विंशत्एकविंशत्तत्राद्येद्वेप्रमत्तस्यैवभावनीये, सै-वाष्टाविंशतिराहारकद्विकरहितात्रिंशत्, आहारकद्विकतीर्थकरसहि-तात्वेकविंशत् एतेषुचतुर्ष्वपिस्थानेषुभंग एकैकएववेदितव्य, अ-स्थिराशुभायश कीर्त्तीनाअप्रमत्तेबंधाभावात् द्वेउदयस्थाने तद्यथा-एकोनविंशत्विंशत्, तत्रैकोनविंशत्योनामपूर्वप्रमत्तसयतस्तत्रआ-हारकवैक्रियचनिवर्त्यपश्चादप्रमत्तभावगच्छतितस्यप्राप्यते,अत्रद्वौभ-गौएकोवैक्रियस्यापरआहारकस्यएव त्रिंशदुदयेपिद्वौभंगौस्वभावस्थ-स्याप्यप्रमत्तसयतस्यत्रिंशदुदयोभवति तत्र भंगाश्चतुश्चत्वारिंशदधिक-शत १४४ सत्तास्थानानिचत्वारितद्यथानिनवति द्विनवति एकोनन-वति अष्टाशीतिश्चसप्रतिसत्वेउच्यते,अष्टाविंशतिबंधकस्यद्वयोरप्यु-दयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान अष्टाशीति, एकोनविंशद्बंधकस्यापिद्व-योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थानएकोननवति, विंशद्बंधकस्यापिद्व-योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान द्विनवति, एकविंशत्बंधकस्या-पिद्वयोरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान त्रिनवति, यस्यहितीर्थकरमा-हारकत्वासत्सनियमात्तद्बंधाति तेनएकैकस्मिन्बंधेएकैकमेवसत्तास्था-नसर्वसंख्ययाअष्टौ, सप्रत्यपूर्वकरणस्यबंधादीन्युच्यते, पणगणाचउइति अपूर्वकरणस्यपचबंधस्थानानि, तद्यथाअष्टाविंशति एकोनविंशत् विंशत्एकविंशत्एकश्चतत्राद्यानिचत्वारिअप्रमत्तसयतस्यैवद्रष्टव्यानि एकोनुयश कीर्त्ति साचदेवगतिप्रायोग्यबंधव्यवच्छेदेसतिवेदितव्या

एकमुदयस्थानविंशत् अथवज्रऋषभनाराचसंहननषट्संस्थानसुस्वरदुःस्वरप्रशस्तविहायोगति भगाश्चतुर्विंशति अन्येत्वाचार्याब्रुवते आद्यसंहननत्रयान्यतमसंहननयुक्ताअप्युपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते, तन्मतेनभगाद्विसप्तति, एवमनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशांतमोहेष्वपिद्रष्टव्य, चत्वारिसत्तास्थानानि, यथाद्विनवति त्रिनवति एकोननवतिरष्टाशीतिश्चसप्रतिसर्वेवउच्यते, अष्टाविंशत्येकोनत्रिंशत्त्रिंशदेकत्रिंशत्त्रयकानाविंशदुदयेसत्तास्थानानियथाक्रमअष्टाशीतिरेकोननवति द्विनवतिस्त्रिनवतिश्चएकविंशत्यकस्यविंशदुदयेचत्वार्यपिसत्तास्थानानिकथमितिचेदुच्यतेइहअष्टाविंशेकोनविंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशद्भंगा प्रत्येकंदेवगतिप्रायोग्यनवत्यवच्छेदेसत्येकविंशत्यकाभवति, अष्टाविंशत्यादित्रयकानाचस्थानानियथाक्रममष्टाशीत्यादीनिसत्तास्थानानि, ततएकविंशत्यकेचत्वार्यपिसत्तास्थानानिप्राप्यते सम्प्रत्यनिवृत्तिबादरस्यबंधस्थानादीन्युच्यते ॥ ९७ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे नामकर्मना छ बंधथानक, नव उदयस्थानक, छ सत्ताना थानक पामीये सास्वादन गुणठाणे तीन बंधथानक, सात उदयथानक ए बे सत्ताना थानक पामीये मिश्र गुणठाणे बे बंधथानक, तीन उदयथानक बे सत्ताना थानक छे समकित गुणठाणे तीन बंधथानक, आठ उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे देशविरति गुणठाणे बे बंधथानक, च्यार उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे प्रमत्ते बे बंधथानक, पाच उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे अप्रमत्ते च्यार बंधथानक, बे उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक अपूर्वकरणे पाच बंधथानक, एक उदयथानक च्यार सत्ताथानक नामकर्मनी नवमे गुणठाणे ॥ ९७ ॥

एगेगमट्ठएगेगमट्ठ, छउमत्थकेवलिजिणाण ।
एगंचउएगचउ, अट्ठचउदुछक्कमुदयंसा ॥ ९८ ॥

टीका—एगेगमट्ठत्ति । अनिवृत्तिबादरस्यएकबंधस्थानयश कीर्ति एकमुदयस्थानत्रिंशत्, अष्टौसत्तास्थानानि तद्यथा त्रिनवति द्विनवतिरेकोननवतिरष्टाशीतिरशीतिरेकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्ततिश्चतत्राद्यानिचत्वार्युपशमश्रेण्यांक्षपकश्रेण्यांवायावत्तामत्रयोदशक नश्यतेत्रयोदशसुयथाक्रमंत्रिनवत्यादे क्षीणेषूपरितनानिचत्वारिसत्तास्थानानित्रयोदयस्थानभेदेनभेदाभावात्ऽनसवेधोभवति इतिनाभिधीयते, सूक्ष्मसपरायस्यएकबंधस्थान यश कीर्ति एकमुदयस्थानत्रिंशत्अष्टौसत्तास्थानानितानिबानिवृत्तिबादरस्यैववेदितव्यानि तत्राद्यानिचत्वार्युपशमश्रेण्यामेवउपरितनानितुक्षपकश्रेण्या छउमत्थकेवलिजिणाण इत्यादि छद्मस्थजिनाउपशातमोहा क्षीणमोहाश्चकेवलिजिना सयोगिकेवलिनोऽयोगिकेवलिनश्चतेषायथाक्रममुदयसत्तास्थानानि एगचउ इत्यादि तत्रोपशातमोहस्यएकमुदयस्थान त्रिंशत्, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोननवति अष्टाशीतिश्चक्षीणकषायस्यएकमुदयस्थान त्रिंशत्अनभगाश्चतुर्विंशतिरेववज्रर्षभनाराचसहननयुक्तस्यैवक्षपकश्रेण्यासभवात् तत्रापितीर्थंकरसत्कर्मण क्षीणमोहस्यसर्वस्थानादिप्रशस्तमित्येकएवभग चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्ततिश्चएकोनाशीति पचसप्तति, अतीर्थंकरसत्कर्मणोवेदितव्ये, अशीति, षट्सप्तति, तीर्थंकरसत्कर्मण सयोगिकेवलिनोऽष्टावुदयस्थानानि तद्यथाविंशति, एकविंशति, षड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति,

एकोनविंशत्, विंशत्, एकविंशत्, एतानिसामान्यतोनाम्नउदय-स्थानचिंतायासप्रपचनिवृत्तानिनमूयोविविर्यते चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथाअशीति, षट्सप्तति, एकोनाशीति, पचसप्तति, सप्तति सर्वेवउच्यते, सचपूर्वगुणस्थानकापेक्षयास्वत ऊर्ध्व अयोगिकेवलि-नोद्वेउदयस्थाने तद्यथा नवअष्टौचतस्राष्टोदयोअतीर्थंकर अयो-गिकेलिनोनवोदय तीर्थंकर अयोगिकेवलिन, षट्सत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्तति नवअष्टौ तस्राष्टोदयेनीणिसत्तास्थानानि तद्यथा एकोनाशीति पचसप्तति अष्टौचतस्राद्वेद्वेयावद्विचरमसमय तावत्प्राप्यते, चरमसमयेअष्टौ-नवोदयेनीणिसत्तास्थानानि, तद्यथाअशीति षट्सप्तति नवचतस्रा-द्वेद्वेयावद्विचरमसमय नव चरमसमये इत्यादि गुणस्थानकेषुनाम-भगका उक्ताः कर्मग्रथटीकानुक्रमेणभगोत्पत्तिस्तु स्वोपज्ञसवेध-प्रकरणगाथातोज्ञेया तदेवगुणस्थानकेषुबधोदयसत्तास्थाना यु-क्तानि तत्सुगमावबोधार्थंयत्नकन्यासतोज्ञेयम् ॥ तच्चेदम् ॥९८॥

टबार्थ —एक बधथानक, एक उदयथानक, आठ सत्ता-थानक. दशमे गुणठाणे एक बधथानक, एक उदयथानक आठ सत्तायानक छे छद्मस्थजिन इग्यारमो, बारमो केवलिजिन, तेरमो गुणठाणो, चउदमो गुणठाणो इहा बध नथी इग्यारमे गुणठाणे एक उदयथानक, च्यार सत्तायानक बारमे गुणठाणे एक उदयथानक, च्यार सत्तायानक तेरमे गुणठाणे आठ उदय-थानक, च्यार सत्तायानक. चउदमे गुणठाणे बे उदयथानक छे छ सत्तायानक नामकर्मना जाणवा ॥ ९८ ॥

गुणठाणा	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्तास्थान
मिथ्यात्व १	२३।२५।२६ २८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२८।२९।३०	९२।८९।८८।८६ ८०।६८
सास्वादन २	२८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२९।३०।३१	८८ ९२
मिश्र ३	२८।२९	२९।३०।३१	९२।८८
अविरत ४	२८।२९।३०	२१।२५।२६।२७ २८।२९।३०।३१	९३।९२।८९।८८
देशविरत ५	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३०।३१	९२।९२।८९।८८
प्रमत्त ६	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३१	९३।९२।८९।८८
अप्रमत्त ७	२८।२९।३० ३१	२९।३०	९३।९२।८९।८८
अपूर्वकरण ८	२८।२९।३० ३१।१	३०	९३।९२।८९।८८
अनिवृत्ति ९	१	३०	९३।९२।८९।८८ ८०।७९।७६ ७५
सूक्ष्मस १०	१	३०	९३।९२।८९।८८ ८०।७९।७६।७५
उपशात ११	०	३०	९३।९२।८९।८८
क्षीणमोह १२	०	३०	८०।७९।७६।७५
सयोगि १३	०	२०।२१।२६।२७ २८।२९।३०।३१	८०।७९।७६।७५
अयोगिकेवलि १४	०	८ ९	८०।७९।७६।७५ ९।८

आसवतिसुइग, चत्ताइरिआवहिणचत्तसम्मत्ते ।
मिच्छविणुदेसेगुण चत्त, अविरइविणुसुजइपणवीस९९

टीका—अथाश्रवादितत्त्वभेदान्गुणस्थानेषुविभजनाह ॥ तत्राश्रवभेदाद्विचत्वारिंशत् तद्गाथा । इंदिअकसायअव्वय जोगा-पचचउपचतिनिकमा किरियाओपणवीस इमाउनाउअणुक्कमसो-तर्वेंद्रियाणिपच स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रवणानितानिचइंद्रियाण्युप-योगरूपाणिमतिज्ञानक्षयोपशमरूपाणि तानिचपुद्गलस्कन्धस्यस्प-र्शादिस्थूलपर्यायग्राहकाणितानिचइष्टानिष्टविषयेषुप्राप्तेषुरागद्वेषप-रिणतानि मनोज्ञेष्वासक्तानि अमनोज्ञेषुजुगुप्सादिपरिणतानि अभिनवकर्मग्राहकाणिभवतितेनकर्मग्रहणाच्चात्स्पर्शनादीनि इंद्रिया-ण्यपिआश्रवाभवन्ति, तानिचरागद्वेषविमुक्तानियथार्थउपयोगेनव-र्णादिगृह्णतेभावरूपाणीद्रियाणितेमतिज्ञानभेदा आश्रवाइनि-कषाया क्रोधादयस्तेष्वभिनवकर्महेतुत्वादाश्रवा अव्रतानिप-चप्राणातिपातमृषा अदत्तादानमैथुनपरिग्रहलक्षणा अभिनवक-र्मग्रहणहेतुत्वादाश्रवा तेचाश्रवाद्विभेदाद्द्रव्याश्रवभावाश्रवभेदात् तत्रद्रव्यत प्राणातिपातलक्षण जीवानाद्रव्यत प्राणाइंद्रि-योच्छ्वासनलायुरूपा तेषाअतिपात द्रव्यप्राणातिपात भावत प्राणा आत्मन ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा तेषाअतिपातोवात अ-भिनवकर्मग्रहणेनज्ञानादिगुणानाआवरणलक्षण भावप्राणातिपात सआश्रवइतिआत्मन विशेषस्वभावातर्गतकर्तृत्वपरिणामरूपस्वभा-वाज्ञानादयस्तेषाकर्तृत्वस्वभावस्यनदकरणेनपुद्गलग्रहणक्रियाकर्तृत्वेन विपर्यस्तपरिणत्यापरभावकर्तृतारूप परिणाम भावप्राणातिपातपरि-णाम मृषाअलीकतस्यवाद तद्वद्रव्यत सासारिकाणाभावानावितथा भाषणरूप भावत मृषाजीवादीनापदार्थानानित्यानित्यैकानेका-

स्तिनास्तिनाभेदाभेदवक्तव्यावक्तव्यपरिणतानां गुणपर्यायण्यपरिणि-
तानाअयथार्थपरिज्ञान जिनोक्ततत्त्वविरुद्धभाषण भावमृषा-
वाद, आत्मन स्वरूपग्रहणताशक्तिमत स्वरूपाप्राप्तौपरभाव-
ग्रहणतापरिणति अभिमधिवीर्यादिनाभावादत्तादान, तस्यचप्रवृत्ति-
बाहुल्येनपरणलोभोदयात्स्वायत्तीकृतान्धन्यधन्यादीनाग्रहणद्रव्या-
दत्तादान, स्वरूपानतज्ञानानदादिस्तद्धर्मभोक्तु जीवस्यस्वरूपभोग-
प्राप्तौपरभावानारागादीनावर्णादीनासयोगीकृतानाभोग आस्वादन-
भावमैथुन तरयैवअत्यतपरिणतौइन्द्रियायतचेतनायायावैषयिकाप-
रिणतिस्तयाइन्द्रियविषयग्रहणद्रव्यमैथुन, स्वभावानाचिदानदादीना
गुणानास्वामीपति ईश्वरआत्मातेषाचावरणेनवर्णादिगुणपरिणता-
नापुद्गलस्कधानाचिदानदादीनागुणानास्वामित्वेनाधिपत्यरूपापरि-
णति भावपरिग्रह, तत्प्राबल्येनधनधान्यादीनास्वामित्वरक्षणता-
परिणति द्रव्यपरिग्रह, इत्यादि स्वरूपधर्मसग्रहणीतोज्ञेय योगा.
परायत्तबलवीर्यपरिणतिरूपा कर्मग्रहणहेतव भावयोगा परिणामाल-
बनादिरूपा द्रव्ययोगास्तदवष्टभकपुद्गलपरिणामामनोवाक्कायरूपाएव
सप्तदशक्रिया पचविंशतयस्तत्रचतुर्विंशति सापरायिकीक्रिया
सांपरायिकीनामसपरायेणकषायेणसहपरिणतासापरायिकीक्रिया ए-
काइर्यापथिकीतत्रसपरायेणकषायेणसहपरिणतानाजीवानायथायो-
गानाप्रवृत्तिः सासापरायिकाक्रिया चतुर्विंशतिविधाकायेननिवृत्ता-
कायिकाकायव्यापाररूपाक्रियाकायिकीक्रिया १ अधिकरणभावनो-
गुणवातनद्रव्यनोमाणवातन कारणअधिकरण तत्प्रवृत्तिरूपाक्रिया-
अधिकरणिकीक्रिया २ प्रद्वेष्टोद्वेष परजीवेदु खदानरूपाम नोयोग-
परिणति प्राद्वेषिकीक्रिया ३ परेपातापनरूपापरिणति पारिताप-
निकी ४ प्राणानाद्रव्यभावरूपाणाअतिपात प्राणातिपात तद्रूपा-
क्रियाप्राणातिपातिकी ५ परप्राणाघातेनजीवानाइनस्तत प्रचालन-

नाअनादृतानाजतुवातादिनिवृत्ताक्रियाप्रातीत्यकीक्रिया, अथवापर-
कृतारभादिगृहाणाप्रशसनतत्प्रातीत्यकीक्रिया, सामन्तोपनिपातिकी-
क्रिया समतात्अनुप्राप्तो सामन्तोपनीपात स्त्रीपुरुषनपुसकपशुस-
पातान् उज्झनीयवस्तुत्याग साचगृहस्थानाभवति, तत्त्वार्थवृत्तौतु-
प्रमत्तसयताना भक्तपानादिअनादत्तेअवश्यत्याज्येसमनादत्तुपानो-
भवति, सपातिमसत्त्वानामिति नैसृष्टिकीदेशीभाषा परहस्त-
कृतजतुवातादिनाक्रिया नसृष्टिकीक्रिया अथवानैसर्गिकक्रियाचि-
रकालप्रवृत्तपरदर्शितपापार्थभाषानायदनुज्ञानसानिसर्गक्रियाइति त-
त्त्वार्थवृत्तौ आणवणीत्ति क्षेत्रान्तरात्स्वेप्सितवस्तुआनयनरूपाक्रिया
विदारणकी विदारणजीवाजीवाना द्वेधीकरण तत्प्रायोग्यकीक्रिया
अथवाविदारणपराचरित प्रकाशनीयसावद्यप्रकाशीकरण विदारण-
तत्प्रत्ययाक्रिया अथवा वितारणक्रियाइत्यपितत्त्वार्थभाष्यपाठात्-
भाषाद्वयामिज्ञ पुरुषोयथैकवितारयतिअर्हत्प्रणीताज्ञोल्लघनेनस्व-
मनीषिकयाजीवादिपदार्थप्ररूपणस्वयनयनक्रिया अन्यैर्वानयनरूप-
दतोनयनक्रियास्याद्वादानपेक्षितकायकारणोपयोगमतरेणस्वच्छदोप-
देशरूपाइतिस्थानागवृत्तौ अनाभोग अज्ञान तत्प्रत्ययाक्रिया
अथवा अनाभोग अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितेदेशेशरीरोपकरणनिक्षेप
अनवकाक्षिकीक्रिया, आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया आज्ञाबलात्कारेणआ-
देश तत्प्रयुजनारूपानृपामात्यादीनाभवति, समुदाणत्ति समुदाय
रूपाचौरादिमारणेझटितितदास्वकार्यार्थंव्रजामइत्यादिसकल्पयोत्था-
सामुदायिकीक्रिया, पेज्जत्तिप्रेमराग अभिष्वगरूप प्रीतिपरिणाम
स्तत्प्रत्ययाप्रेमक्रिया, दोसत्ति द्वेष द्विष्टताअनभिष्वगरूपोऽप्रीति-
परिणाम तत्प्रत्ययिकीक्रियाइतिएवमेता क्रिया सापरायेणकषा-
येणसहवर्त्तमानस्यजीवस्य यापाररूपा क्रिया ताअपिप्रशस्ताप्र-
शस्तभेदात् तत्रमिथ्यात्वाप्रत्याख्यानानाभोगरूपा क्रिया अप्रश-

स्नाअवशेषास्तुप्रशस्ता पुण्यबन्धकारिण्योऽप्रशस्ता पापबन्धकारिण्य उभयबन्धिबन्धकारणत्वात् आस्रवरूपाण्येतिनाअपितीनमदज्ञाना-ज्ञानभावर्वीर्याधिकरणकारणविशेषेस्युस्तद्विशेष उक्त, सापरा-यिकीभेदाश्चतुर्विंशति, ईर्यापथिकीच द्वारणकपनचलवीर्यत्वेनविष-यकषायरहितएकक योगव्यापारस्नप्रत्ययिकीक्रिया प्रदेशप्रकृति-बन्धकारणरूपाईर्यापथिकीक्रिया साअकषायमुनीनामेव, उमशातमो-हक्षीणमोहसयोगिकेवलिचरमसमयपावत् भवति, एवमुक्ताआस्र-वभेदा तान्चगुणस्थानेषुविभजनाह ॥ आसवत्तिसुइत्यादि ९९ ॥ आस्रवाअभिनव कर्मग्रहणहेतव तिसु इतितिषुमिथ्यात्वसास्वादन-मिश्रलक्षणेषुगुणेषु इगचत्ता एकचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यते तत्रमि-श्रदृष्टौमिथ्यात्वभावेपिसम्यग्दर्शनाभावान्मिथ्यात्विकीक्रियासद्भाव-एवउक्तचभगवत्या नैरयियाणभतेसवेसमकिरिया गो० नोतिणट्टे-समट्ठेसेकेणट्ठेणगो० नेरइआतिविहापन्नत्तासम्मदिट्ठीमिच्छादिट्ठी-सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थण जेतेसम्मदिट्ठीतेसिणचत्तारिकियाओपन्न-त्ताओ तजारभियापरिग्गहियामायावत्तिआपच्चक्खाणीया तत्थण जे ते मिच्छादिट्ठीतेसिणपचकिरियाओपन्नताओ तजारभिया परि-ग्गहिया जावमिच्छादसणवत्तीआ एवसम्मामिच्छदिट्ठीणपिअवै-मानिकपर्यन्तमूत्रालापकइतितेनमिश्रगुणस्थानकेपिमिथ्यात्विकीक्रिया सद्भाव एव एकचत्वारिंशद्भेदा इरियावहिहीण ईर्यापथिकीक्रिया हीनात्ति रहिताउच्यते चत्तइतिचत्वारिंशत्आस्रवभेदा सम्मत्तेइति सम्यग्दर्शनलक्षणेगुणस्थानके पूर्वोक्ताईर्यापथिकीक्रिया मिथ्या-त्विकीक्रियाविनाभवन्ति, देसि देशविरतौ गुणचत्त एकोनचत्वा-रिंशद्भेदा अप्रत्याख्यानिकीक्रियारहिताआस्रवाणामिति अत्रसा विरतिरेवनास्ति शेषाएकादशविरतय सयोगनहिकथसर्वेअविरते-रभाव अत्रस्थावरादिअविरतिसद्भावेपिसापेक्षत्वेननलोहपदवृत्ति-

सनिभइन्द्रियविषयसेवत्वेननाप्रत्याख्यानकीक्रियाइति अथवा परिमिताश्रवत्वेननाप्रत्याख्यानकीवति सुजइति सुइत्ति शोभन यति सुयति प्रमत्तमुनि गुणस्थाने पचविंशतिरास्रवभेदाभवति ॥९९॥

टबार्थ—आश्रवतत्वना ४२ भेद छे इन्द्रिय ५ कषाय ४ अव्रत ५ योग ३ क्रिरिया २५ एव ४२ छे इनमध्ये मिथ्यात्व सास्वादन मिश्र ए तीन गुणठाणे इकतालीस आश्रव छे, इरियावही क्रिया नथी, ते अकषाय तेहवे तेणे सकलपी थानके ए नथी समकित गुणठाणे च्यालीस आश्रव छे एक ईरियावही किरिया नीकली हती वली मिथ्यात्वकी किरिया नीकली एतले च्यालीस छे देशविरति गुणठाणे च्यालीस आश्रव छे अपच्चरकाणकी किरिया नथी सुयति—छट्ठे गुणठाणे पचवीस आश्रव छे ॥ ९९ ॥

पाणाइवायपरिग्गह, मिच्छअपचरकआणपाओगी।
पाडुच्चीअसामतो, वणीअनेसत्थीसाहत्थी ॥१००॥

टीका—प्राणातिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया २ मिथ्यात्विकीक्रिया ३ अप्रत्याख्यानिकीक्रिया आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया प्राडुच्चीक्रिया प्रातित्यक्रिया सामतोपनिपातिकीक्रिया नेसत्थीक्रिया साहत्थीक्रिया ॥१००॥

टबार्थ—प्राणातिपातकी क्रिया १ परिग्रहकी क्रिया २ मिथ्यात्वकी क्रिया ३ अपच्चरकाणकी क्रिया ४ अन्नापायोगकी क्रिया ५ पाडुचिय क्रिया ६ सामतोवणी क्रिया ७ नेसत्थी क्रिया ८ साहत्थीकी क्रिया ॥१००॥

परायेनवआस्रवा प्राप्यते, इत्यनेनलोभकषाययोगत्रिकक्रियाकीदृष्टिकीस्पृष्टिकीअनाभोगिकीरागप्रत्ययिकीइतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यन्ते दोसविहीणत्ति द्वेषाभावकथनेनअधिकरणप्राद्वेषिकीपारितापनिकीप्रमुखा सर्वाअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेषेउपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेईर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकचएतेचत्वारआस्रवभेदा प्राप्यते, अयोगीनिराश्रवइतिश्रीप्रज्ञापनायालोभस्यरागाशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा ॥ १०२ ॥

टबार्थ—ते मध्येथी आरभकी क्रिया हीण करीये तेवारे सातमे गुणठाणे ओगणीस आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया विना आठमे नवमे गुणठाणे अठार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते मुख्यवृत्ते रागमा गण्यो छे, पनवणानी टीका मध्ये शेष इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे गुणठाणे आश्रवनथनो भेद नथी ॥१०२॥

अज्जयदुगिवारभावण, दुपमत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नाखीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसवरभेदा सप्तपचाशत्,तत्रअयपूर्वोक्त आश्रव पौरुषेयः सचकदाचित् केनचित् अत्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुसासमाससादितनदुच्छेदसाधनात्यतिकक्षयमापद्यते तत्रपूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायतपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अभिनवकर्मोपचयनिवारणायसवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध सवर, आस्रूयतेसमादीयतेयै कर्माष्टक(मिति)आस्रवा कर्मणाप्रवेशद्वीथय इन्द्रियकषायादय तेषानिरोध सवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव सवर सचसर्वदेशातद्विधा बादरसूक्ष्मयोगरोधकाले-
सर्वसवर शेषकालेचरणप्रतिपत्तेरारभ्यदेशसवर ससवर केनोपायेन
कर्तव्य इत्युपायदर्शनार्थमत्राथोक्तसूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-
परीषहजयचारित्र त्रिपचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्त-
चाशत्भवति, तत्रसम्यग्प्रशस्तसमुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति, आत्मस-
क्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्तेषानिग्रहो निगृहीति प्रवचन-
विधिनामार्गे यवस्थापनउन्मार्गगमननिवारणसम्यग्आगमोक्तानुसा-
रेणरक्तद्विष्टपरिणतिसहचरिणो मनोवाक्काय यापारनिवापारतागुप्ति
त्रिप्रकारा मन सक्लेपस्तस्यगोपन मनोगुप्ति, वाक्सत्यादि-
भेदातस्यगोपनवाग्गुप्ति, काय चलतारूपयोगस्यऔदारिकादे गो-
पनकायगुप्ति, योगानामप्रवृत्ति अथवससरत चेष्टावतोपिसवर-
सिध्यर्थमिमा पचईर्याभाषणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय तत्रई-
र्याईयागतिपरिणाम आवश्यकार्थआगमोदिते विहारजिनसद्मआ-
हारोगोचरीविहारोस्थडिल्यग्रामानुगमगमनचइत्यादिकाये आगमो-
क्तविधिनारागद्वेषाकुलतादिमतरेणनि सगतासाध्यत्वेनगमनईर्यास-
मिति, आहच उपयोगोत्रोतालबनमार्गविशुद्धिभिपतेश्चरत सूत्रो-
दितेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आत्मनेपरस्मैहितमायत्या-
मुपकारकमुखवसनावाहितस्यनीतिवहप्रयोजनमात्रसाधक मितमसं-
दिग्धसूत्रोक्तमर्थवर्णप्रतिपत्तौवानसदेहकारिनिरवद्यार्थमनुपघातकप-
णाजीवकायानाएवविधनियमितचसर्वदेवभाषण भाषासमिति, आ-
हचत्यक्त्वानृतादिदोषसत्यमसत्त्वानृतचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो
भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भे-
दउपकरणानिरजोहरणमुखवसनपटीचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थ-
विरकल्पजिनकल्पयोग्योपधि

परायेनवआस्रवा प्राप्यते, इत्यनेनलोभकषायपयोगक्रियाक्रियाक्रियादृष्टि-
क्रीस्पृष्टिक्रीअनाभोगिक्रीरागप्रत्ययिक इतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यते
दोसविहीणत्ति द्वेषाभावकथनेन अधिकरणप्राद्वेषिकीपारितापनिकीप्र-
मुखा सर्वाअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेषेउपशांतमोहक्षीणमोहसयो-
गिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकचएते-
चत्वारआस्रवभेदा प्राप्यते, अयोगीनिराश्रवइति श्रीप्रज्ञापनायालो-
भस्यरागांशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा
॥ १०२ ॥

टबार्थ—ते मध्येथी आरंभकी क्रिया हीण करीये तेवार
सातमे गुणठाणे ओगणीस आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया
विना आठमे नवमे गुणठाणे अठार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे
द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते मुख्यवृत्ते रागमा गण्यो
छे, पन्नवणानी टीका मध्ये शेष इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे
एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे
गुणठाणे आश्रवतत्त्वनो भेद नथी ॥१०२॥

अज्जयदुगिवारभावण, दुपमत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नासीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसवरभेदा सप्त-
पञ्चाशत्,तत्रअयपूर्वोक्त आश्रव पौरुषेय सचक्रदाचित् केनचित् अ-
त्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुसासमाससादितनदुच्छेदसाधनात्यतिकक्षयमाप-
द्यते तत्पूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायतपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अ-
सिनवकर्मोपचयनिवारणायसवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध सवर
आस्रूयतेसमादीयतेयै कर्माष्टक(मिति)आस्रवा कर्मणांप्रवेशद्वीपाय
इन्द्रियकषायादय तेषानिरोध- सवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव सवर सघसर्वदेशात्द्विधा बादरसूक्ष्मयोगरोधकाले-
सर्वसवर शेषकालेचरणप्रतिपत्तेराग्म्यदेशसवर ससवर केनोपाये-
नकर्तव्य इत्युपायदर्शनार्थतत्त्वार्थोक्तसूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-
परीषहजयचारित्रै त्रिपचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्तप
चाशत्भवति, तत्रसम्यग्प्रशस्तमुमुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति, आत्मस-
रक्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्तेषानिग्रहो निगृहीति प्रवर्तन
विधिनामार्गे यवस्थापनउन्मार्गगमननिवारणसम्यग्आगमोक्तानुसा-
रणरक्तद्विष्परिणतिसहचरिणो मनोवाक्काय यापारनिवापारतागुप्ति
त्रिप्रकार मन सकल्पस्यगोपन मनोगुप्ति, वाक्सत्यादि-
भेदानस्यगोपनवाग्गुप्ति, काय चलतारूपयोगस्यऔदारिकादे गो-
पनकायगुप्ति, योगानामप्रवृत्ति अथवमसरत चेष्टवतोपिसवर
सिध्यथमिमा पचर्ईयाभाषणादाननिक्षपोत्सर्गा समितय तत्रई-
रणईयागतिपरिणाम आवश्यकार्यआगमोदिते विहारजिनसद्मआ-
हारोगोचरीविहारे पडित्यग्रामानुमगमनचक्रत्यादिकार्ये आगमो-
क्तविधिनागगइपाकलतादिस्तरणनि सगतासाध्यत्वेनगमनईयास-
मिति, आहार उपयोगोघोनालवनमार्गविशुद्धिमियतेश्वरत सूत्रो-
दितेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आत्मनेपरस्मैहितमायत्या-
मुपकारकमुखवमनावाहितस्यनीतिवत्प्रयोजनमात्रसाधक मितमस-
दिग्धसूत्रोक्तमथवर्णमतिपर्त्तावानसदेहकारिनिरवद्यार्थमनुपघातकष-
ण्णाजीवकायानाण्वविधनियमितचसर्वदैवभाषण भाषासमिति, आ-
हचत्यक्त्वानृतादिदोषसत्यमसत्त्वानृतचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो
भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भे-
दउपकरणानिरजोहरणमुखवमनपट्टचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थ-
विरकल्पजिनकल्पयोग्योपधि औपग्रहिकाणाश्रुतधर्मचरणधर्मसाध-
नार्थपात्राणिपतनायाहारग्रहणार्थ एकान्तस्वाध्यायादिनिमित्तउद्गमो-

त्पादनैषणादोषरहितआगमोक्तविधिनाबृमागारादिदोषरहिताएषणा-
गवेषणासमिति, यद्यपिनिर्ग्रंथानाहारार्थिनस्तथापिवाचनादिकर्णे-
ष्युपयोगस्यावातकरतुशीतादिमालोक्यहिंदिदोषरहितअदान ज-
व्यापक असमान अगक्तनयाआहारादिकरोति तद्गवेषणास-
मिति, तथादाननिक्षेपणासमितिमाह रजोहरणादिचतुर्दशोपकर-
णानापीठफलकशय्यादीनाआदानग्रहणनिक्षेपणमुचन । तत्रजी-
वादिरहितनमन्यस्यादिष्टनयाकरणप्रमार्ज्यआदाननिक्षेप कर्तव्य
इत्यादाननिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकासमितिमाह स्थडिल
उज्झित यवस्तुपरिष्ठापनक्षेत्र नवस्थावरजगमजतुवर्जितचक्षुपानिरी-
क्ष्यउपयुक्त पुद्गलेषुअद्वेषतो दोषाभावत आवकत्त्ववारणाय
वस्त्रपात्राहारशिष्यमलादीनाउत्सर्ग परिष्ठापनासमिति इतिपचस-
मितय, सवरार्थमात्मनाधार्यतेइतिधर्म सचदशविधस्तत्र प्राधान्येन-
निर्ग्रंथानातेन मनिधर्मोदेशन श्रावकाणामपिक्षमादिरहितार्थयेति
क्षमणक्षमाक्रोधत्याग इत्यनेनप्रशसानिंदावदनछेदनादिप्राप्तौसम-
परिणामरूपाक्षमा अत्यनाशुभशुभोदयेस्वकृतविपाकवेदनेऽविक-
त्यइतिक्षमा नहिक्रोधीममस्वभाव नाहक्रोधस्यकर्त्ताइत्यादिभा-
वनायास्तथ्यपरिणति क्षमा १ मार्दवमस्तब्धपरिणाम नीचैर्वृ-
त्ति अभ्युत्थानासनदानाजलिप्रग्रहयथार्हविनयकरणरूपानीचैर्वर्त्तन
उत्सेकश्चित्तपरिणामोगर्वरूपस्तद्विपर्ययोऽनुत्सेक अवगतससारस्व-
भाव विशिष्टजातिकुलसपद कदाचिदेवसपद्यते, कदाचिद्धीना-
रततोनगर्वपरिणाम मदनिग्रहोमानविघातश्चेत्यर्थ, जात्यादिकसर्व
मपिऔदयिकऐश्वर्यादिकक्षणभगुरतेननयकोमद, अहत्तुनिर्मलानद-
स्वभाव अनोमानकषायोनममकार्य सम्यग्दर्शनादयोममकार्य न-
मदादिममकार्य इत्यादिभावनयामदत्यागीमार्दवमिति, आर्जवस्वरूप-
तुमायात्याग आर्जवमृजुभावइत्यर्थ मायाकापट्य द्रुह्यतानि-

वृति साचपरकीयवस्तुग्रहणार्थभवति परवस्तुग्रहणच्च ममनसयु-
ज्यते नाहपरभोगीतिनमायाक करोनि अनोमाया याग आर्जवमम-
धर्मइति ३ अलोभ शौचलक्षणलोभस्तुभावत परमार्थतोऽभिष्वग
चेतनाचेतनमिश्रवस्तुविषय लोभस्तेपाद्यक्रोधमानमायाहिंसाननस्ते
यात्रह्मपरिग्रहार्जनमलजालेनोपचीयमान आत्माभवति अशुचि
तेनभावविशुद्धि ममत्वाभावो नि सगता अपरद्रोहणात्माऽर्थानुश
ननि कर्मपनानिर्मलताभावसाधनमात्रजोहरणादिषुविगतमूर्छ मुनि
शुचि तेनएनशौच अपरनाममुक्तिइत्यादि ४ विद्यमानेअर्थेभव-
स्यसतोजीवादिपदार्था तेनहितअनेकातनयप्रमाणसप्तभगेनिक्षे
पानुगतमत्य श्रुताभ्यासपूर्वकअविसवादिअर्हच्छासनानुगतज्ञान
सत्यतदुपयुक्तवाक्यमपिसत्यतदात्मन धर्म आत्माहियथार्थोपयो-
गीयथार्थोपयोगिनोममधर्मोपयोपयोगिनाएवसत्य तदनुगतअपरस्य-
असप्रानरागद्वेषविमुक्तश्रोतु धर्मप्रापकद्रव्यभावाहिंसामृतवाक्य
तदपिधर्म ॥ ५ ॥ अथमनसयोगनिग्रह सयम सचसप्तदशविध
स्थावरपचसचतुष्कायकरूप योगत्रयगुणसरक्षणप्रवर्तनत्रयानु-
यायिप्रवृत्तिवारणरूप योगसयम प्रेक्षयचक्षुषादृष्ट्वास्थडिलादित्वर-
प्रवर्त्तनादिकरणेप्रेक्षासयम यत औदयिकभाववास्थादिग्रहस्यातग्र-
हणतदूअपेक्षऔदासीन्यभजन अपेक्षासयमोभवति अपहृत्यपरि-
वर्जयेउपकरणादीनालाववकुर्वन सयमोभवति तदपहृत्यसयम
भक्तपानाद्यर्थपथिगच्छन सचित्तरजोनुरजितचरणस्यस्थडिलात्
स्थडिलसक्रामन प्रमार्जनसंयम उपकरणसयम अथवाअ-
जीवकायसयम अजीवकायानापुस्तकादीनाअन्यतरेषुरागद्वेषरूप
परिणामत्यागअजीवकायसयम इतिसप्तदशविधसयमआत्मन धर्मो
भवति यत परभावानुपायिप्रवर्तनअधर्म तत्परित्यागोधर्म इति-
सयमयारयात तपोधर्म तपनपतिनापयतिइतितप तपतिइति-

स्वयउद्विग्नोभवतिसयोगजसुखात् तापयतिआत्मप्रदेशेस्थितान् कर्मदलिकानितितप शरीरेंद्रियतापात् कर्मदहनाच्चतप भावनअनन्तज्ञानानदादितत्त्वेस्वस्वरूपेभोगतोआनदेनस्वरूपेकाग्र्यसमरतप परभावत्याग परभावानभिलाषस्तत्सकोचादिरूपनिर्जरातप तच्चद्वादशविध बाह्याभ्यातरभेदात्तच्चनिर्जराधिकारतोज्ञेयत्यागस्वरूपतुआत्मन शरीरोपध्याहारोपाश्रयादिषुअभिष्वगहेतुभूतआत्मन परभावानुगत्वरूपोभावदोष तस्यत्यागपरिणाम आत्मन धर्मोभवति आकिंचन्यतुस्वात्मन सत्तारूपस्याद्वादपरिणतिपरिपाट्यास्यात् अस्तिपक्षगृहीतात्मभावस्यआत्मत्वेनोपादेयतयाकृत्वाशेषस्यान्नास्तिनापक्षमतपरयूह तत्रनिर्ममत्वआकिंचन्य यत्नमदीयसत्तानोअन्यत्नाहअद्वतुस्वस्वभावगुणपर्यायवान्चिदानदस्वरूपस्यकर्त्ताभोक्ताविलसितान्यभावानारागद्वेषादीनाअभोक्ताअतस्तद्वाचकत्वमवेक्ष्य । तत्रनिर्ममत्वआकिंचन्य ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्यस्वरूपतुब्रह्मत्वादात्माब्रह्मतत्रावृत्ति आत्मनिउपयोगरमणभोगतयावर्त्तनब्रह्मचर्यब्रह्मणिआत्मनिचरण एकीभावेनअवस्थान ब्रह्मचर्यतद्रक्षणाय परभावाभोगात्मकभावमैथुन स्त्रीशरीरस्पर्शादिद्रव्यमैथुनत्याज्य आत्मस्वरूपैकत्वरूपब्रह्मचर्यरूपदृढीकरणार्थं गुरुकुलवासेवसितव्य गुरुशुद्धात्मतत्त्वज्ञापकात्मतत्त्वरमणना सरक्षणकोपयोगदाता स्वयमपिस्वतत्त्वविलासी न पुद्गलाशी गुरु स्तस्यातेवासित्व परमात्मतत्त्वप्राग्भावहेतुत्वात् यावज्जीवसेव्य आचार्योपाध्यायादीनाससर्ग तत्त्वोपपदेशकारणमितिब्रह्मचर्यस्थैर्यार्थस्त्रीससक्तवसत्यादित्यागरूपाभावना श्रीउत्तराध्ययनोक्ता श्रयतिनिग्रथा एवविधब्रह्मचर्यआत्मधर्मएवव्याख्यात दशवियोयतिधर्म स्तद्दृढीकरणार्थंभावनाभावनीया ताश्चद्वादशअनित्याअशरणाद्या इतितत्रसर्वसयोगाअनित्या सयोगोवियोगयुक्तएवअत्रस्तन कोरागइत्यादिअनुपेक्षाअशरणोऽय आत्मा-

ससारेनहिधनस्यजनादयोस्वात्मगुणरक्षका शरणेस्वरूपरुचिपरि-
णते । स्वरूपज्ञातास्वरूपरमणीआ माण्वनिमित्तास्तुअर्हत्सिद्धा-
चार्यादिनिर्ग्रथा यमाल्ब्यआत्मास्वरूपविश्रामीभवति अत्यतानद-
भोगीभवति एवजन्मादित समुद्रमतेन दु खेनालीढस्यज भवत
शरणनास्ति इत्यालोचयन सर्वदाहमशरण इतिनित्यमेवमीतस्य-
सासारिकेषुभावेषुमनुजसुरसुखेषु हस्त्यश्वादिषुहिरण्यसुवर्णादिषु-
चनामिष्वगोनप्रीतिर्भवति किंतुपरमर्षिप्रणीतशासनामिहितएव-
विधौज्ञानाचरणादिषुप्रवर्त्ततेभावार्थ अहममशरणनान्येआत्मार्थो-
पासनेनममसुखइतिससारेससरत अनतपुद्गलपरावर्त्तपरिवर्त्तनेन-
प्रातस्यममकाकावस्थानप्राप्ता व्यवहारराशिप्राप्तानतकालस्य केन-
सहनसबध कृतइति अत्रसमरतोनसुख सुखतुममस्वरूपोपयो-
गैकत्वपरिणमनेनएकतानुप्रेक्षाएकएवाहनाह परसगी वीतराग-
द्वेषस्वभावस्यमम क सगी ॥ ४ ॥ अन्यत्वभावनातुसर्वमपि-
धर्मास्तिकायादिअजीवद्रव्यसमूहमत्तोअन्यजीवा । सर्वेमत्तोभि-
न्नाइतिअशुचिभावनातुसर्वेपिपुद्गला एकैकेनजीवेनअननवारजु-
पूर्वास्तेनात्यतशुचय तत्रत्तत्वेनाहमपित्वस्यु ? शुचिअत अशु-
चिंत्यक्त्वाशुचिरूपोचिद्रूपेरमणमिति ६ आस्रवभावनामिथ्या-
त्वाविरतिकपाययोगा आस्रवास्तेचत्याज्या नाहआस्रवस्यकर्त्ता
नाप्यास्रवोममस्वभावइति ज्ञानदर्शनचारित्ररूपोपरिणाम सवर
सवरश्चममधर्म सवरीचाह इतिनिर्जरापूर्वबद्धकर्मक्षपणरूपानिर्ज-
रास्वरूपमुच्यते नममगृहीतामिनवकर्मण तत्क्षपणायकरणाय
इति लोकस्वभावाश्चसालोकस्पर्शनाअजावाटकन्यायेनाननवारकृता-
अनोलोकपरिभ्रमणेनममधर्मोमदीयलोकश्चासर येयप्रदेशानतज्ञानपरि-
णतिपरिणाम तत्रयथार्थोत्पाद यथौ यसकरसहकारसहजकृत्या-
भवनलोक सचममधर्मइति ॥ १० ॥ ओ[illegible]स्यकत्वयथा-

र्थप्रतीतिरूपतत्त्वश्रद्धासाचदुर्लभा लम्भइसुरसामित्तलम्भइपहुअत्त-
णनसदेहो इक्कोनवरिनलम्भइ जिणदवरदेसिओधम्मो ।१। धर्म-
आत्मस्वभावरूपस्तत्कारणरूपधर्म श्रुतचारित्ररूपनस्यसाधकानि-
र्ग्रंथादयोतदहायोग्यादेशविरतादयोभात्रा परिणामादुर्लभा इतिद्वादश-
भावना आत्मधर्मसाधनकारणत्वात् धर्मरूपा सवरभेदाइतिसप्रति-
परीषहान्वक्ष्याम प्रतिजानीतेमार्गअच्यवनार्थंनिर्जरार्थंपरिषोढ या
परीषहसहनासमर्थमार्गात् च्यवतेमार्गार्थीपरिषहजये एवप्रवर्त्ततेते-
परीषहा कर्मोदयविपाका तेषुअनाकुलत्वेनरागद्वेषरहितरूपोजय
रूपवसवर तेचक्षुत्पिपासाशीतदशमशकरत्यरतिस्त्रीचर्यानिषद्या-
शय्याआक्रोश वध याचनअलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारप्रज्ञाअ-
ज्ञानदर्शनइतिद्वाविंशति उदयप्राप्ता सहनीया सहनचसमपरि-
णाम अनाकुलत्वेनआत्मनश्चसाधनपरिणामो जय ४ यथाक्षुत्-
परिषहोदयेमुनिश्चिनयति असद्वेदनीयोदयेनक्षुदुदय साचक्षत या
तत्क्षमेनिर्जरातर्हितदुपशमनायक स्वाध्यायाध्ययनादिक परित्य-
ज्यआहारार्थंप्रयनते शुद्धात्मसाधनक्रियात्रिमुच्य अनतकालपुन
पुन ग्रहणेनआहारार्थक स्वीयवीर्यंप्रवर्त्तयति अतोनाहममकार्य
आहारश्चप्राप्ति कोहिपुद्गलग्रहणायप्रवर्त्तते इत्यादिभावनयापरीषह-
क्षमणाययतिन य इति चारित्रभेदा सामयिकछेदोपस्थापनीयप-
रिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपा पूर्वव्यावर्णिता तेचसवर-
भेदा सप्तपचाशत्गुणस्थानेषुविभजन्नाह तत्र आद्येषुत्रिषुगुणस्था-
नेषुसवरभेदानसभवति मिथ्याश्रद्धावत नस्वरूपग्राहकत्व इति
तथा अजयदुगिइत्यादि ४ अजयदुगिअविरतदेशविरतलक्षणेगु-
णस्थानद्वये द्वादशभावना एवप्राप्यते शेषभेदानातुसर्वविरतौ ए-
वप्राप्यमाणत्वात् तेननात्रसगृहीता दुपमत्ते प्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेपच-
पंचाशत्भेदा अट्ठचरणाइतिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपचारित्रद्वय-

रहिता तथा पुवदुगेत्ति अपूर्वकरणानिवृत्तिकरणलक्षणेगुणस्थानद्वये परिहारादिचारित्ररहिताश्चतुष्पचाशत्भेदा सवरस्यउपशातमोहक्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानद्वये एकस्ययथाख्यातस्यैवसभवात्त्रिपचाशद्भेदा सवरस्येति ॥ १०३ ॥

टबार्थ—हवे सवरतत्त्वना भेद गुणठाणे कहे छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ए गुणठाणे सवरतत्त्वनो भेद कोई नथी अविरति समकित तथा देशविरति गुणठाणे बार भावना कोइक जीवने कोइक वेलाइ होइ ते माटे १२ भेद छे प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणठाणे सवरना पचावन भेद छे सूक्ष्म सपराय १ यथाख्यात २ ए बे चारित्र विना अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण ए बे गुणठाणे परिहार विशुद्ध विना चोपन सवरना भेद छे अने सूक्ष्मसपराये शेष चारित्र विना त्रेपन सवरना भेद छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे एक यथाख्यात चारित्र छे, शेष च्यार चारित्र छे नहीं ॥१०३॥

सेसेसुएकखायग, चरणखवगत्तणेणनोअन्ने ॥
परिसहजयोअसवर, तेणसवथ्यतेगहोया ॥१०४॥

टीका—सेसेसुएगखायग ४ शेषेषुसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिलक्षणेएकक्षायिकयथाख्यातचारित्रसवरभेदेषुप्राप्यते शेषाषट्पचाशद्भेदा क्षयोपशमरूपानप्राप्यते यद्यपिक्षायिकत्वेपरीषहजय सभाव्यते तथापिवीर्यानतरायसहनविकल्पाभावान्नापेक्षते अत्रचपरिषहोदयस्तुगुणस्थानेषुअल्पोनास्ति तथापिपरीषहजयस्तुसर्वगुणस्थानेषुअस्तितेनसर्वत्रतेपरीषहजयरूपाद्वाविंशतिभेदा गृहीता इत्युक्ता सवरभेदागुणस्थानेषु ॥ १०४ ॥

टबार्थ—तेणे त्रेपन भेद छे शेष कहेता शेष रह्यो जे तेरमो तथा चऊदमो गुणठाणो तेहने विषे एक यथाख्यात चारित्र छे बीजा सवरना भेद सर्व क्षयोपशमी छे ते तेरमे चऊदमे गुणठाणे क्षयोपशमी भाव नथी ते माटे क्षायिक चारित्र छे, अन्यभाव नथी ते माटे सुमति गुपतिक्षायिक चारित्रमाज गवेषी छे बावीस परिसह तेतो उपरले गुणठाणे नथी, पर बावीस परिषहनो जीपनो ते सवर छे परिसह तो कर्मना ऊदयथी छे ते माटे इम कह्यो छे ॥१०४॥

पढमतिगुणेअकामा, सम्मत्ताओसकामछट्ठाओ ।
वारविहनिज्जराओ, ज्झाणदुगचरिमदुगुणम्मि॥१०५॥

टीका—अथगुणस्थानकेषुनिर्जराभेदाउच्यते तेचतपोभेदाद्वादशपद्बाह्यतपोभेदाअनशनअवमोदर्यवृत्तिसक्षेपरसत्यागकायक्लेशसलीनतालक्षणा बाह्यत्वतुयत्तपोदर्शनेनलोकाअपिप्रमोदते आश्चर्यलभते नबाह्या अभ्यतराश्चप्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायध्यानकायोत्सर्गलक्षणास्तेनिर्जराहेतुत्वात् निर्जराभेदा वस्तुतोनिर्जराभेदौद्वौ सकामाकामाभ्यातत्रसकामानिर्जरार्थिना अकामातुनिर्जराभिलाषरहितानां तत्रपढमतिगुणेसुइत्यादि प्रथमेषुत्रिषुगुणस्थानेषुअकामाएवनिर्जराप्राप्यते अकामतण्हाएअकामछुहाए अकामसेयमल्लइत्यादि आगमपाठात्ज्ञेयासम्यक्त्वादिगुणस्थानत अयोगिपर्यंतसकामानिर्जराप्राप्यते छठाओत्ति षष्ठात्गुणस्थानात्आरभ्यद्वादशनिर्जराभेदा प्राप्यते चरमगुणस्थानद्वयेध्यानद्वयसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति उच्छिन्नक्रियालक्षणपूर्ववर्णितस्वरूपभवति ॥१०५॥

टबार्थ—निर्जरातत्व आश्रयी पहिले तीन गुणठाणे अ-

कामनिजरा छे सकाममणाना अभावथी समकित गुणठाणाथी सकाम निर्जरा छे छठा गुणठाणाथी बारमा पर्यंत बार भेद निर्जराना छे ए रीते तेरमे गुणठाणे एक शुक्लध्याननो तीजो पायो छे अने चऊदमे गुणठाणे शुक्लध्यानना बे छेल्ला पाया छे निर्जरा स्वरूप कह्यो ॥१०५॥

आसुहुमचउबधो, उवसमतिसुपगईपएसबधदुग ।
मुक्काजीवाभेया, गुणठाणेसु नसभवई ॥१०६॥

टीका—अथबधतत्त्वस्वरूपगुणस्थानेषुविभजन्नाह बधश्चतुर्धा प्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबधइति तत्रप्रदेशादीनासमुदाय स्वस्वविपाकस्वभाव प्रकृतिबध स्थिति कालावधारणएतत्समया बद्धाप्रकृति इयत्कालयावद्भुज्यतेइतिनिर्धारणात्मिकास्थिति अनुभागोमदतीव्रादिविपाकहेतुमतोरस आर्द्रनाकषायप्रत्ययोत्पन्नाएकद्विनिचतु स्थानरूपा तस्यायबध अनुभागबध प्रदेशा पुद्गलपरमाणुनिचयरूपास्तेषाबध प्रदेशबध कार्मणवर्गणायोग्यपुद्गलद्रव्यसमूह तस्यबध प्रदेशबध उक्तच ठिईबधोदलस्सठिई पएसबधोपएसगहण जताणरसोअणुभागो तस्समुदाओपगइबधो १ विस्तारस्तुशतकादितोऽवसेयइति आसुहाति ६ आइतियावत्सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकतावत्चतुर्विधोपिबध प्रकृतिप्रदेशोयोगहेतुकौस्थितिरसौतुकषायप्रत्ययौउभयोरपिसद्भावात्उपशातमोहात्उपरिगुणस्थाननिकेषुप्रकृतिबधप्रदेशबधौएवयोगप्रत्ययत्वात् योगानाचतत्रसत्वात्इत्युक्त सक्षेपेणबध तीव्रमदादिविस्तारस्तुकर्मप्रकृत्यादितोज्ञेयइतिकृत्स्नप्रकर्मक्षयोमोक्ष सचसर्वगुणस्थानातीतत्वात्गुणस्थानेषुनसभवतिअजीवभेदाश्चतुर्दश धर्मास्तिकायस्कधादयस्तेपिगुणस्थानेषुनसभवति अतोनोक्ता ॥१०६॥

टबार्थ—सूक्ष्म सपराय गुणठाणा पर्यंत च्यार बंध छे १ स्थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ च्यार बंध छे उपशांत प्रमुख तीन गुणठाणे प्रकृतिबंध प्रदेशबंध ए बे बंध छे मोक्षतत्वना भेद तथा अजीव तत्वना भेद गुणठाणे सभवे नहीज ॥ १०६ ॥

भगासवेहाओ, गुणठाणसयंचदेवचदेण ।
भणियविणयावणय, सतिदासस्सवयणेण ॥१०७॥

टीका—भगासवेहाओ इत्यादि १०० मोहादिकर्मणाभगास्तेषाक्रमस्तुसवेहाओत्ति कर्मसवेधनाम्नास्वकृतएवग्रथस्तस्मादवसेया स्तवसविस्तरेकथितत्वेनविचारसारप्रकरणेनोक्ता इतिइदगुणस्थानशतयद्यपि अष्टगाथाधिकमपिशतमेवेतिरयाति श्रीमत्सधर्मप्रभृतिवाचकवशावच्छिन्नपरपरायातसवेगशालादिग्रथेनोद्धारितानेकभव्यसंघातसत्पदप्ररूपणाबलेनप्राप्तखरतरविरुद श्रीमज्जिनेश्वरसूरिवशपूर्वाचलभानुस्वरूपश्रीमदभयदेवसूरि नवागउपपातिक पंचाशकादिवृत्तिप्रकाशकपरपरयाश्रीमत् खरतरान्वयेश्रीजिनचद्रसूरिशिष्यश्रीमत्पाठकपुण्यप्रधानाच्छिष्या पाठका श्रीसुमतिसागरा चिंतामणिटिप्पनादिग्रथकरणप्राप्तन्यायभारतीअवदाता तच्छिष्यावाचका बृहत्कल्पादिछेदग्रथलघुभाष्यादिटिप्पनकरणविमलावदाता श्रीसाधुरंगा तच्छिष्यानेकतीर्थप्रतिष्ठादिकृतशुभाचारा पाठकाराजसारास्तच्छिष्या पाठका श्रीज्ञानधर्मास्तच्छिष्या पाठका श्रीशत्रुजयेसमवसरणमेरुप्रमुखानेकतीर्थराजनगरादिषुसहस्रफणादिप्रतिष्ठाकरणकृतशासनोद्दीपना श्रीमद्द्वीपचद्रास्तेषाशिष्येनजैनागमाभ्यासरसिकेनगुणस्थानकेषुद्वारामिधानपूर्वकविरचितगुणस्थानशतक । श्रीमद्राधनपुरवास्तव्य विनयेनअवनत नम्र शांतिदासइति श्राद्ध-

स्तस्यवचनानुग्रहेणगाथारचितास्तत सूक्ष्माम्नायावबोधार्थं पण्डित देवचद्रगणिनाएव पारयानावृत्ति श्रुतिरसिकानामोदाय अव- सधिसमासाद्यकरणतु अल्पबुद्धिना यामोहनिवृत्यर्थंअवप्रमादादिदोष- श्रवुवैर्नप्रेक्ष्य सतोहिगुणज्ञाभवति ॥ इतिश्री विचारसारप्रकरणे श्रीदेवचद्रगणिविरचितेस्वोपज्ञगुणस्थानशतकेस्वोपज्ञाटीका लिखि- ता श्रीमति ? वीरनदनातुयावद्वीरजिनयाणीनम श्रीवर्द्धमानायगौत- मायसुधर्मणेवाचकोत्तरमवशायसिद्धायगुणशालिने ॥ १ ॥ तद्गो- खरतरगच्छे बुले वाद्रेगुणाकरा श्रीजिनचद्रसूरीशा सममूवन्मुनि- नायका ॥ २ ॥ तदन्वयाब्धिसद्वृत्ताराजमाराद्वकवाचका ज्ञान- धर्मादीपचद्राश्चद्रोज्ज्वलगुणोज्ज्वाला ॥३॥ जगज्जनिनमोवानाते- पासवेगपक्षिणाविनेया समजायनदेवचद्रा शुभालया ॥४॥ स्वा- न्ययोरपकाराय । देवचद्रेणधीमता । गुणस्थानशतेटीका । चने- स्वोपज्ञसज्ञका ॥ ५ ॥ तत्वाचयतुसद्भ्या ज्ञानस्वादपरायणा यथार्थमार्गरसिकाभवतुभाविका सदा ॥६॥ इतिश्रीविचारप्रकरणे- गुणस्थानशतटीकासपूर्णा ॥ शुभभवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

॥ अथ श्री विचारसार प्रकरणसटीक ॥

नमिउ वीरजिणंद, मग्गणठाणेसु पुव्वभणीयाइं ।
दाराइं चउनवई, भणामि गियपरविबोहत्थं ॥१॥

टीका—श्रीवर्द्धमानमानम्य केवलज्ञानभास्कर जीवाजीवादिभावाना सर्वधर्मप्रकाशक ॥ १ ॥ नत्वावाचकवंश गुरुन् सिद्धाततत्त्वकरपद्रन् । गत्यादिमार्गणाना करोमिस्वोपज्ञसद्वृत्तिं ॥२॥ इहादिपूर्वगुणस्थानेषु पूर्वोक्तद्वारविभजनाकृता । तदनतरमार्गणाभेदेषुनान्येवद्वाराणिविभजन्प्रथममिष्टदेवनमस्कारपूर्वकं अभिधेयादिप्रकाशनार्थं प्रथमागाथामाह ॥ नमिउवीरजिणंद इत्यादि नमिउइति नत्वा वीरजिनेंद्रमार्गणास्थानेषु पूर्वभणितानि * चतुर्नवति द्वाराणिभणामिकथयामि इतिसंबंध । नत्वानमस्कृत्यवीरचतुर्विंशतितमतीर्थनाथ श्रीइंद्रभूत्यादिचतुर्दशसहस्र श्रमणचंदनादिषट्त्रिंशत्सहस्रसंयतीशेवशतकादिएकलक्षैकोनषष्टिश्रमणोपासकसुलसारेवत्यापिअष्टादशसहस्राधिकत्रिलक्षश्रमणोपासकारूपसंघस्ययथार्थरत्नत्रयीरूपात्मधर्मदेशनामृतदायक रागद्वेषमोहादिकवारवैरिवारजेतृत्वात्जिना वीतरागा क्षीणमोहादयस्तेषांइंद्र परमाहन्त्यमहिमालंकृतत्वात् तनत्वाइतिनमस्कृत्यमार्गणास्थानेषुमूलोत्तरवर्यादिद्वारकद-

---

* अहिं मूळ गाथाने अनुसार "चतुर्नवतिद्वाराणि" पाठ शुद्ध संभव छे अने पूर्वार्धनी तथा उत्तरार्धनी टीकामा "एकशत द्वाराणि" एवो पाठ हस्तलिखित प्रतमा छे ते मूळ गाथाने अनुसार संभवतो नथी

वक-अभिधेयभणामिकथयामित्यर्थं प्रयोजनचनियपरविबोहत्थ-निज आत्मापराययथार्थभावजिज्ञासारसिकासम्यग्दृष्टिदेशविरत-सर्वविरतादिजीवास्तेषाविशिष्टोबोध ज्ञानविबोधस्तदेवअर्थं प्रयो-जनयस्यस तनिजपरविबोधार्थं आत्मनोज्ञाननिर्मलाय परस्या-पिश्रोतु ज्ञानप्रकाशाय ॥ १ ॥

टबार्थ—नमस्कार करीने वीरवर्द्धमानजिनेंद्र सामान्य के-वलीमा इंद्रसमान तेह प्रत्ये मार्गणास्थानकने विषे पूर्वे कह्या ले बयादिकद्वार चोराणु तेभणामि क० कहु छु निज आत्माने तथा परने प्रति बोधवाने ज्ञान जाणवा प्रकाशने हेते अर्थे करीने ॥ १ ॥

गईइंदिएकाए, जोएवेएकसायनाणेसु ।
सयमदसणलेसा, भविसम्मेसन्निआहारे ॥२॥

टीका—मार्गणानामभिधायिका गाथामाह । गइइंदिएकाए इत्यादि ॥ २ ॥ गम्यतेतथाविधकर्मसचिवैर्जीवै प्राप्यतेइति-गति नारकत्वादिपर्यायपरिणति साचतुर्द्धा नारकतिर्यग्नरसुररूपा इंद्रनादींद्र आत्माजानैश्वर्ययोगात्तस्यइदइंद्रियतानिविद्यतेयेषाते-तद्मार्गणापचप्रकारा एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिंद्रियपचेन्द्रियभे-दात्पचधा चीयतेयथायोगवर्गणागणैरितिकाय तद्भवा जीवा कायाः पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसभेदात्षोढा ॥ ६ ॥ युज्य-तेप्रयुज्यतेतेयोगामनोवाक्कायलक्षणास्तद्वतोजीवाएवगृहीता वेद्य-तेअनुभूयते इंद्रियोद्भवसुखमनेनेतिवेद पुरुषवेदस्त्रीनपुसकभेदात्-त्रिविध कषशिषजयहिंसाया इतिदंडकधातु कष्यतेहिंस्यते अ-स्मिन्परस्परप्राणिन इतिकष तस्यआयोलाभ येभ्यस्तेकषाया

क्रोधमानमायालोभाख्या चत्वार ज्ञप्तिर्ज्ञान यद्वाज्ञायतेपरिच्छिद्य-
तेवस्तुअनेनेतिज्ञानसामान्यविशेषात्मकेवस्तु निर्विशेषधर्मग्रहणात्म-
कोबोध ज्ञानमतिश्रुतावधिमन पर्यायकेवलभेदात् पचप्रकार तदेव-
ज्ञानमिथ्यात्वसहकारेणविपर्यस्तमत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभगभेदात् त्रि-
प्रकारमज्ञान विशेषस्यपर्यायाधिकत्वादेकान्तरूपेणकुग्रहग्रस्तानान-
तादृक् बोधस्तेनअज्ञान ज्ञानाज्ञानयोरुभयोरपिविशेषग्राहकत्वात्
ज्ञानावरणीयक्षयोपशमोद्भूतत्वादात्मन ज्ञानरूपस्यस्वपर्यायस्व-
भावस्यप्रवृत्तिशक्तिरूपत्वात् अष्टानामपिज्ञानमार्गणायांसग्रह ॥८॥
ससम्यग्प्रकारेणयमन उपरमणसावद्ययोगादितिसयम यद्वासयम्यते
नियम्यते आत्मापापव्यापारसभारादनेनेतिसयम । अथवा शुशो
भनायमा प्राणातिपातविरमणा अस्मिन्निति सयमश्चारित्रसामायिकछे-
दोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपराययथाख्यातलक्षणपचधा ।
विरतिसाम्यात्देशविरति ग्रहण विरतधर्मस्यप्रतिपक्षभूतत्वादविर
तिस्तस्याऽपिग्रहण एव सप्तवासयममार्गणा दृश्यते अनेनेतिद-
र्शन यदिवादृष्टिर्दर्शन सामान्यविशेषात्मकेवस्तुनिसामान्यात्मकोबोध
दर्शनइत्यर्थ तच्चतुर्विधचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनभेदात् अवदर्शन-
स्यसामान्यबोधरूपत्वात् सामान्यबोधस्यपिंडरूपवस्तुग्राहकत्वात् ।
नहिपिंडरूपवस्तुनिर्विपर्यास तेनदर्शनोपयोगेनविपर्यतापरिणति
इति लिश्यतेश्लिष्यते कर्मणासहआत्माअनयाइतिलेश्या कृष्णनील-
कापोततेज पद्मशुक्लभेदात्षोढा तत्रभावलेश्या परिणतिरूपायोग-
वीर्यसहकारिचेतनायावाअप्रशस्ताप्रशस्तापरिणति । बलवीर्यवत
प्रशस्ताप्रशस्तकार्यपरिणामप्रवर्तनरूपाभावलेश्या द्रव्यलेश्यातुवै
क्रियशरीरधारिणोतत्तद्वर्णादिपुद्गलपरिणमनरूपा नौदारिकाणामि-
तिउत्तराध्ययने शातिवादिकृतबृहद्वृत्तौ । भवति परमपदयोग्यना-
माराधयतिइतिभव्य सिद्धिगमनयोग्ये भव्य नभव्य नसिद्धग

मनयोग्य अभव्य इतिसम्मतिसम्यग्प्रशस्तार्थ अविरुद्धार्थो सम्यग्जीवस्तद्भाव सम्यक्त्वमोक्षाभिलाषरूपा या आत्मपरिणति तत्त्वेतत्त्वनिर्द्धाररूपपरिणमनसम्यक्त्व तच्चत्रिविध उपशमक्षयोपशमक्षायिकभेदात् सास्वादनस्योपशमातर्भावात् । मिश्रस्यक्षयोपशमसहचारात् मिथ्यात्वस्यतत्प्रतिबन्धकत्वात् सम्यक्त्वमार्गणायाअतर्भाव अनतानुबधिचतुष्कस्य दर्शनमोहनीयत्रिकस्यविपाकप्राप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य प्रदेशविपाकतोऽनुदितस्य उपशातस्य यत्दर्शन उपशमदर्शन सप्तकस्यविपाकप्राप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य विपाकतोउपशातस्य प्रदेशत उदयतयावेद्यमानस्य दर्शनक्षयोपशमसम्यग्दर्शन सम्यक्त्वस्य दीनयस्य ? विपाकोदयेपि मिथ्यात्वप्रदेशत्वात् प्रदेशग्रहण दर्शनसप्तकस्य सत्तात सर्वथा क्षीणस्यनिर्मल निरतिचार अप्रतिपातिदर्शन क्षायिकसम्यग्दर्शन इति मिथ्यात्वादयोगुणस्थानाधिकारेव्याख्याताएव ॥१२॥ सन्निति सज्ञानसज्ञामूलभवद्भाविभावस्वस्वभावपर्यालोचन सा सज्ञाविद्यतेयेषातेसज्ञिन मनोविज्ञानयुक्तादीर्घकालिकीसज्ञायुक्तासज्ञिन तदितराअसज्ञिन इति ॥१२॥ ओजोलोमकावलिकादिआहाराणा अन्यतमाहारयुक्ताआहारका तद्रहिताअनाहारका तेविग्रहगतिसमापन्ना केवलिसमुद्घात अयोगीकेवलिन सिद्धाअनाहारका शेषाआहारका एतेचतुर्दशमूलमार्गणाउत्तरद्विषष्टिमार्गणारूपाभेदाउक्ता ॥ २ ॥

टबार्थ—हवे ६२ मार्गणा नाम कहे छे वेद ३ कषाय ४ गति ४ इंद्री ५ काय ६ योग ३ ज्ञान ८ ज्ञान ५ तीन अज्ञानमाहे गण्या माटे मार्गणा ते सर्व जीवनी विचारणा तेमाटे ७ प्रकृति गणी छे. सयम ७ पाच चारित्र ५ देश-

विरति ६ अविरति ७ दर्शन ४ चक्षुआदिक, लेश्या ६ कृष्णादि, भव्य तथा ऽभव्य २ समकित ६ उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायक ३ मिथ्यात्व ४ सास्वादन ५ मिश्र ६ सज्ञी तथा ऽसज्ञी २ तथा आहारक तथा अनाहारक ए ६२ मार्गणा जाणवी ॥२॥

पणतिरिचउसुरनिरये, नरसन्निपणेंदिभव्वतसिसव्वे ।
इगविगलभूदगवणे, दुदुएगगईतसिअभव्वे ॥ ३ ॥

टीका—अथनासुमार्गणासुगुणस्थानानिकथयन्नाह ॥ पणतिरि इत्यादि३॥तिरित्ति तिर्यग्गतिविषये पणत्ति मिथ्यात्वस्य देशविरतिपर्यंतपचगुणस्थानानि चउइतिसुरगतौनरकगतौमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रअविरतसम्यक्दर्शनरूपा चत्वारो गुणस्थानकाप्राप्यते नरइतिमनुष्यगतौ सज्ञिमार्गणाया पचेंद्रियमार्गणायाभव्यमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया एतपचमार्गणायासर्वेतिसर्वेमिथ्यात्वत अयोगिपर्यंताश्चतुर्दशगुणस्थानका प्राप्यते इगत्ति एकेंद्रियेषुसास्वादनान्यत विगलत्ति विकलेषुद्वित्रिचतुरिंद्रियेषुभुवि पृथिवीकायेषु उदक्त्ति अप्कायेषु वणत्ति वनस्पतिकायेषु दुदुद्वेद्वेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानकेभवत तत्रमिथ्यात्वसर्वत्रसास्वादनतुकरणपर्याप्त्या पर्याप्तकेषुपूर्वभवेपूर्वबद्धएकेंद्रियाद्यायु उपशमप्राप्यएतत्प्राप्त सास्वादन मृत्वाएकेंद्रियादिषुउत्पद्यतेतस्यअपर्याप्तावस्थायासास्वादनभवति एवभावनीय एगगईतसित्ति गत्यात्रसा गतित्रसस्तेजोवायुकायलक्षणा तेषुएक मिथ्यात्वगुणस्थानलक्षणप्राप्यते ॥ ३ ॥

टबार्थ—तिर्यंचगतिमध्ये पाच पहिला गुणठाणा छे देवगति नरकगतिने विषे ४ मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए ४ गुणस्थाना छे मनुष्यगति १ संज्ञीमार्गणा २

पचेंद्रीमार्गणा ३ भव्यमार्गणा त्रसकायमार्गणा विषे सवेक० मिथ्यात्वयी माडी अयोगी पर्यंत चउदे गुणठाणा पामीये एकेंद्री १ विगलत्रिक ३ पृथ्वीकाय १ अप्काय २ वनस्पतिकाय ३ सात मार्गणाने विषे मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन गुणठाणा बे छे गतित्रसत्रेक० तेउकाय १ वाउकाय तथा अभव्य १ ए तीन मार्गणाने विषे १ मिथ्यात्वगुणठाणो पामीये ॥ ३ ॥

वेयतिकसायनवदस, लोभेचउअजयदुतिअणाणतिगो।
बारसअचक्खुचक्खुसु, पढमाअहक्खायचरमचउ ४॥

टीका—वेअतिकसायत्ति ॥ ४ वेदेषु त्रिषुकषायेषु त्रिषुक्रोधमानमायालक्षणेषु मिथ्यात्वत आरभ्य अनिवृत्तिबादरयावत्नवगुणस्थानकानिप्राप्यते दसत्ति लोभाख्ये कषायेगुणस्थानकदशप्राप्यते चउअभयत्तिअविरतिमार्गणायाचउ चतुर्मिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतसम्यग्दृष्टिलक्षणानिचत्वारिगुणस्थानकानिप्राप्यतेइति सम्यक्त्वदर्शनत प्रतिपतत मिश्रेपूर्वाभ्यासबाहुल्येनज्ञानतन्मतापेक्षयाअज्ञानत्रिकमार्गणाया मिथ्यात्वसास्वादनलक्षणगुणस्थानद्विकप्राप्यते मिथ्यात्वात्समागच्छत कश्चित्विभगावधेरपिमिश्रेभवति तेनमिश्रमपिप्राप्यते तेनअज्ञानत्रिकप्राप्यते अत्रैकस्मिन्मतेविभगवत मिश्राभाव उक्त तस्यनत्वतुकेवलिनोजानाति अचक्षुदर्शनेचक्षुदर्शनेबहुवचनप्राकृतत्वात् द्वादशगुणस्थाना प्राप्यते पढमेत्ति पदसर्वत्रयोज्यवेदत्रिकेनवतेषि प्रथमत मिथ्यात्वत आरभ्यअनिवृत्तिबादरयावत्नवइत्यनेनसर्वत्रएतद्गाथातमार्गणासुएवज्ञेय अचक्षुचक्षुदर्शने द्वादशप्रथमामिथ्यात्वत आरभ्यक्षीणमोहाता प्राप्यते सयोगिकेवलीपर्यंतमेकेवलदर्शनस्यैवप्राप्यमाणत्वात् अहक्खायत्ति यथाख्याते-

चरमाअन्या चउत्तिचचारगुणस्थानका उपशांतमोहक्षीण-
योगिकेवलिअयोगीकेवलिरूपाभवनि एपुकषायोदयाभावा
॥ ४ ॥

ट्यार्थ—वेद तीन, क्रोध मान माया ए ६ मार्गणाने विषे
त्वथी माडी अनिवृत्तिकरण पर्यंत नव गुणठाणा छे लोभने
मिथ्यात्वथी सूक्ष्मसंपराय पर्यंत १० गुणस्थानक छे अविरति-
ा विषे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए
णठाणा छे अज्ञान तीन मार्गणाने विषे बे अथवा तिन
णा छे परकोइ जीव समकितगुणठाणाथी पडतो मिश्र
। तेहने नजिक अभ्यासे तथा मिश्रना अल्पकाळ माटे
पल्टे नहीं तिणे ज्ञान कहीये इत्यर्थ अचक्षुदर्शन १
चक्षुदर्शनविषे मिथ्यात्वथी माडी क्षीणमोह पर्यंत १२
णा पामीये छे यथाख्यातचारित्रे चरिमक० छेहला ॥११॥
१३।१४। ए ४ गुणठाणा छे ॥४॥

णणसगजयाइ, सामाइयछेयचउदुन्निपरिहारे ।
ठदुगिदोचरमा, जुयाईनवमईसुओहिदुगे ॥५॥

टीका—मणनाणसगजयाई । इत्यादि मन पर्यवज्ञाने सगनि-
नामनिर्ग्रंथस्नातादीनिइत्यनेनप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्ति-
सूक्ष्मसंपरायोपशांतमोहक्षीणमोहलक्षणानि सप्तगुणस्थानानि-
सामायिकछेदोपस्थापनेचारित्रयोर्नानिप्रमत्ताप्रमत्तापूर्व-
निवृत्तिबादराणीत्यर्थ दुन्निति द्वेप्रमत्ताप्रमत्तरूपेपरिहारविशु-
द्धिप्राप्येते नोत्तराणिपरिहारस्यग्रहीतक्रियानिवाहणविकल्प
श्रेणिमारोह केवलद्विकेकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्गे-

णाद्विके द्वौचरमोत्रयोदशचतुर्दशमलक्षणोगुणस्थानकोभवत अज-
याइतिअयतादिअविरतसम्यग्गुणस्थानत क्षीणमोहपर्यंतनवगुण-
स्थानकानिप्राप्यते मतिज्ञानश्रुतज्ञाने ओहिदुगेत्तिअवधिद्विके
अवधिज्ञानअवधिदर्शने प्राप्येते । नशेषाणितयाहि मतिज्ञानश्रुत-
ज्ञानावधिज्ञानानि मिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्रेपुनभवति तद्भावेज्ञान-
त्वस्यैवायोगात् यत्तुअवधिदर्शनत कुतश्चिदभिप्रायाद्विशिष्टश्रुतविदो
मिथ्यादृष्टीनानेच्छतित मतमाश्रित्य स्माभिरपितत्तेपानभणित अथ-
चसूत्रेमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्यवधिदर्शनप्रतिपाद्यते ॥ यदाह ॥ श्रीसु-
धर्मास्वामी पचमागे " ओहिदसणअणगारोवउत्ताणभतेकिंनाणी ?
अन्नाणीगोयमा नाणीवि अन्नाणी वि जईनाणीनोअत्थेगइयातिनाणी-
अत्थेगइयाचउनाणीजेतिनाणीतेआभिणिबोहीयनाणी सुअनाणी ओ-
हिनाणीजेचउनाणीतेआभिणिबोहिनाणी सुयनाणी ओहीनाणी मणप-
ज्जवनाणी जेअन्नाणीतेनियमाइमअन्नाणी सुअअन्नाणी विभगनाणी"
इत्यादिअत्रहियेअज्ञानिनस्तेमिथ्यादृष्टयएवेतिमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्य-
वधिदर्शनसाक्षादत्रसूत्रेप्रतिपादितचएवविभगज्ञानी य सास्वादन-
मिश्रेवर्त्तते तत्रापितदानीमवधिदर्शनप्राप्यतेइति ॥ ५ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञानने विषे यति आदिक सात गुण-
ठाणा छे छट्ठाथी बारमा पर्यंत छे सामायिकचारित्र तथा छेदो-
पस्थापनीय चारित्रने विषे छठो, सातमो, आठमो, नवमो, ए
च्यार गुणठाणा छे परिहारविशुद्धि गुणठाणाने विषे छठो सा-
तमो ए बे गुणठाणा छे केवलज्ञानने विषे ॥ १३ । १४ मो
ए बे गुणठाणा पामीये अजनक० अविरतिथी माडी बारमा
पर्यंत नव गुणठाणा छे मतिज्ञान १ तथा श्रुतज्ञान २ अवधि-
दर्शन अवधिज्ञान ए ४ मार्गणामे पामीये छे ॥ ५ ॥

अडउवसमिचउवेयगि, खइएइक्कारमिच्छतिगदेसे।
सुहमिसट्ठाणतेरस, योगआहारसुक्काए ॥ ६ ॥

टीका—अडउवसमिइत्यादि ॥ काकाक्षिगोलकन्यायादिहायनादितिसर्वत्रयोज्यते अयनादौ उपशातमोहानान्यष्टौगुणस्थानानि उपशमसम्यक्त्वेभवति अयनात्पूर्वान्गुणस्थानकान् अप्रमत्तपावत् चत्वारिवेदके अपरपर्याये क्षयोपशमेसम्यक्त्वेप्राप्यते खइएइक्कारत्ति क्षायिकसम्यक्त्वेअयतादीन्ययोगिकेवलिपर्यन्तानान्यकादशगुणस्थानानिभवति, तथामिथ्यात्वत्रिकेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रिकलक्षणेदेशविरते सुहमि, सूक्ष्मसपरायचारित्रेसट्ठाणस्वस्थानस्वनामस्थानकप्राप्यते इत्यनेनमिथ्यात्वेमिथ्यात्व सास्वादनेसास्वादन मिश्रेमिश्र देशविरतोदेशविरत सूक्ष्मसपरायेसूक्ष्मसपराय इतियावत् । योगत्रिकमार्गणाया आहारकमार्गणाया शुक्ललेश्यामार्गणाया तेरसत्तिमिथ्यात्वत सयोगिकेवलिपर्यन्तत्रयोदशगुणस्थानिप्राप्यते ॥ ६ ॥

टबार्थ—उपशमसमकितने विषे आठ गुणठाणा छे चौथायी माडी इग्यारमा पर्यंत क्षयोपशमसमकितमध्ये चोथो, पाचमो, छठो, सातमो, ए ४ गुणठाणा, क्षायिकसमकितें चोथायी चौदमा पर्यंत इग्यार गुणठाणा छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ ए तीनने विषे तथा देशविरतिने विषे तथा सूक्ष्मसपरायने विषे सठाणक० पोताना नामनाज गुणठाणा छे मिथ्यात्वने विषे, मिथ्यात्व, सास्वादनने विषे सास्वादन मिश्रने विषे मिश्र, देशविरतिने विषे देशविरति, सूक्ष्मसपरायने विषे सूक्ष्मसपराय छे तीन योगने विषे आहारकमार्गणाने विषे शुक्ललेश्याने विषे तेर गुणठाणा छे ॥ ६ ॥

असन्निसु पढमदुग, पढमतिलेसासु छच्चदुसुसत्त ।
पढमतिमदुगअजया, अणहारेमग्गणासुगुणा ॥७॥

टीका—असन्निसुपढमदुग । इत्यादि ॥ असज्ञिषुसज्ञिव्यतिरिक्तेषु प्रथमद्विक मिथ्यात्वसास्वादनलक्षण गुणस्थानद्वयप्राप्यते प्रथमलेश्यात्रये मिथ्यादृष्ट्यादीनिप्रमत्तातानि षड्गुणस्थानानि भवन्ति च कृष्णनीलकापोतलेश्यानाहिप्रत्येक सख्येयलोकाकाशप्रदेश प्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि ततोमदसङ्क्लेशेषु तदध्यवसायस्थानेषु तथाविधसम्यक्त्वदेशविरतिसर्वविरतीनामपि सद्भावोनविरुध्यते ॥ उक्तच ॥ सम्यक्त्वदेशविरतसर्वविरतीनाप्रतिपत्तिकालेशुभलेश्यात्रयमेवभवति उत्तरकालेतुसत्वाअपिलेश्या परावर्तते इति श्रीमदाराध्यापादाअप्याहु "सम्मत्तसुअसवासु लहइसुद्धासु निसुअचरित्तपुव्वपडिवज्जओपुण अन्नयरीए छ लेसाए" ॥ १ ॥ श्रीभगवत्याच "सामाइयसजण्णभतेकइलेसासुहोज्जा गो० । छसुलेसासुहोज्जाएवछेओवट्ठावणीयेसजयाएवि" इत्यादि तथा तेजोपद्मलेश्ययो सप्तगुणस्थानानिभवन्ति अप्रमत्तातानामिमिथ्यादृष्ट्यादीनाअप्रमत्ताना तेजोपद्मलेश्यास्तारतम्येनभवति तथाअनाहारकेपचगुणस्थानानिभवति कमित्याह प्रथमातिमद्विकायनानिइतिद्विकायनानिइति द्विकशब्दस्यप्रत्येकयोगात् प्रथमद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादन अतिमद्विकसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिलक्षण अयतइति अविरतिसम्यग्दृष्टिश्चेति तत्रमिथ्यात्वसास्वादन अविरतसम्यग्दृष्टिलक्षणगुणस्थानत्रय अनाहारकेविग्रहगतौप्राप्यते सयोगिकेवलिगुणस्थानत्वनाहारके समुद्घातावस्थायातृतीयचतुर्थपचमसमयेदृष्ट्य । अयोगिकेवल्यवस्थायातुयोगरहितत्वेनौदारिकादिशरीरपरिपोषकपुद्गलग्रहणाभावादनाहा-

रकत्व औदारिकवैक्रियाहारकशरीरपरिपोषकस्तुपुद्गलोपादानमाहारकइतिमार्गणासु गुणागुणस्थानकाउक्ता ॥ ७ ॥

टबार्थ—असज्ञिमार्गणाने विषे मिथ्यात्वसास्वादन ए बे गुणठाणा छे कृष्ण १ नील १ कापोत १ ए लेश्यामार्गणाने विषे छ गुणठाणा छे तेजो १ पद्म १ ए बे लेश्याने विषे पहिला सात गुणठाणा छे । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ७ । पढमदुगमिथ्यात्व १ सास्वादन २ अतिमदुग तेरमो चउदमो अजयाक० अविरतिक० समकित ए पाच गुणठाणा छे अनाहारकमार्गणामे तेमव्ये पहिलो बीजो चोथो ए तीन गुणठाणे विग्रहगति वर्त्तमान जीवने अनाहारकपणो पामीये तेरमे गुणठाणे केवलीसमुद्घातकरताअनाहारक छे चउदमो अशरीरी छे निणे अनाहारी छे ॥ ७ ॥

नरगईपणेंदितसयोग, नाणचउतिदससुक्कभविसन्नी।
खायगदारेचउठाण, अणहारेसत्तइगबध ॥ ८ ॥

टीका—अथमार्गणास्थानेषु मूलबधस्थानानि वेदयन्नाह ॥ नरगइपणदि ॥ नरगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, योगत्रय, मत्यादिज्ञानचतुष्टय, चक्षुरचक्षुरवधिरूपदर्शनिक, शुक्लेश्या १ भव्य सज्ञा, क्षायिकसम्यग्दर्शनी आहारक एतासु, अष्टदशमार्गणासुमूलत चत्वारिबधस्थानानि सप्तविधबधकाअपि एतेअष्टविधबधकाअपि एतेषड्विधबधकाअपि एकबधकोऽपि एतेएवचत्वारिबधस्थानकानि तत्रसर्वभवआयुर्वर्जसप्तकर्मबधकास्तेएवआयुर्बधकाले अष्टविधबधकाले एकसूक्ष्मसपरायप्राप्ता मोहायुर्वर्जा षड्विधबधका तेचसातवेदनीयबधकालेएकविधबधका एवचत्वारिबधस्थानानिप्राप्यते अनाहारकमार्गणायासप्त एकरूपेद्वेबधमूलस्थाने ॥ ८ ॥

टबार्थ—मनुष्यगति १ पचेन्द्रिजाति २ त्रसकाय १ तीनयोगमनवचनकाया एव ३ ज्ञान ४ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनपर्यव ४ दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्ललेश्या १ भव्यसज्ञी क्षायिकसमकित १ आहारक १ ए अठार मार्गणाने विषे च्यार बधस्थानक सात । आठ । ७ । एकनो छे

इगविणुलोभेअडतिणु, उवसमिकेवलदुगेअहक्खाए।
***एगापयडीबधे, सेसेसुसगट्ठबधाइ ॥ ९ ॥**

टीका—इगविणुलोभेइत्यादि । लोभकषायमार्गणाया इगविणु एकविधबधकत्व विनासप्तअष्टौषट्लक्षणानित्रिणिबधस्थानानि अत्रप्रथमगुणस्थदेशकत्वात् उपशमसम्यक्त्वमार्गणाया अष्टविधबधकत्व विनासप्तषट्एकरूपाणित्रीणिबधस्थानानि परमुपसमिनहृताआउनबधेतिइत्यायुष अबधकत्वात् केवलद्विगि केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणे मार्गणाद्वये यथाख्यातचारित्रे एका सातावेदनीयाख्याप्रकृतिर्बध्यते इत्यनेनएकविधबधक सूक्ष्मसपरायेषड्विधबध मिश्रेसप्तबधेप्राप्यते शेषा उक्तशेषा षड्विंशत्मार्गणा गतित्रिकइद्रियचतुष्ककायपचकवेदत्रिककषायत्रिक अज्ञानत्रिक सयमलेश्यापचअभव्यक्षयोपशमसास्वादनपचमिथ्यात्वअसज्ञिलक्षणा सप्तअष्टौएतेद्विबधस्थानेप्राप्यते इत्येवउक्तामार्गणासुमूलप्रतिबधभेदा ॥ ९ ॥

टबार्थ—लोभकषाये एकनो थानक नथी ८ नो ७ नो ६ नो ए तीन बधथानक छे उपशमसमकितमार्गणाने विषे

* पाठान्तर
" एगासुहमिच्छमीसे, सगसेसासत्तअडबंधा "

आठनो बंधथानक नथी ७।६।१। नो छे परमुवसमिवहना-आउनबंधतिइतिवचनात् केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यातचारित्र ए तीन मार्गणाने विषे एक सातावेदनी प्रकृति बांधे शेष ३९ मार्गणाने विषे सातनो तथा आठनो बंधथानक छे हवे मार्गणाये बंध स्वामी कहे छे ॥ ९ ॥

इगसत्तरवीसचउअहिय, सयनरगाइगइचउक्केसु
जाइचउतिन्निथावरि, नवसयसयपचतेउदुगे॥१०॥

टीका—इगसत्तरवीसचउअहियाइत्यादि । अथमार्गणासुउत्तरबंधस्वामित्वकथयन्नाह एकाधिकशतनरकेओघबंध तनसुरद्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, देवायु नरकत्रिक, विकलत्रिक, सूक्ष्मत्रिक, एकेन्द्रियस्थावर, आतप, एता एकोनविंशतय नैरयिका न बध्नंति यत नैरयिका मृत्वानैरयिकेषुनोत्पद्यते तेननरकत्रिकस्य देवत्वेपिनोत्पादात् तेननदेवत्रिक वैक्रियद्विकस्य आहारकद्विकस्यमुनि बंधक तेननबंध एकेन्द्रियादिचतुर्षुउत्पादाभावात् नबंधस्तदुदया प्रकृतीरपिनबध्नंति अतएकाधिकशत ज्ञानावरणपंचक, दर्शनावरणनवक, वेदनीयद्विक, मोहनीयस्य पंचविंशति, आयुष, द्वय नाम्न पंचाशत, गोत्रद्वय, अंतरायपंचक, एव एकाधिक शतंरत्नप्रभादिषुत्रिषुबध्यते पंचकादिषुत्रिषुजिननामरहित एकशतंबध्यते तमतमायांजिननाममनुष्यायुरहितानवतिबध्यते तत्ररत्नप्रभादिषुत्रिषुओघत एकाधिकशत मिथ्यात्वेजिननामरहित शतंबध्यते सास्वादनेनपुंसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय, हुंडकसंस्थान, सेवार्त्त, एव चतुष्टयवर्जयित्वापंचाणवति बध्यते तेषुअनंतानुबंधिचतुष्टय न्यग्रोधसंस्थानचतुष्टय मध्यसंहननचतुष्टय कुखगति [illegible] दुर्भगत्रिक स्त्यानर्द्धित्रिक उद्योतनाम

तिर्यग्द्विक तिर्यगायुर्नरायु एतद्द्वात्रिंशन्निरहितासप्तति मिश्रेनरयिकायन्नति, अविरत सम्यग्दर्शने जिननामनरायुर्युक्ताद्वि सप्तनि बध्यते एवसर्वनयथायोग्ययोज्य सप्तमपृथिव्यानवनवतिओघ । जिननाम्न सद्भावेअबद्धानमनुष्यायुस्तुसप्तम्याउद्वृत्त तिर्यगुसमुत्पन्नवेइतिनियमात्नबध नरद्विकउच्चैर्गोत्रमन्तरेणमिथ्यात्वेषण्णवति सास्वादनेतिर्यगायु नपुसकचतुष्कवर्जएकनवति मिश्रेअनतानुबन्धादिचतुर्विंशतिरहितानरद्विके उच्चैर्गोत्रयुक्तासप्ततिर्बध्नाति एव सम्यक्त्वेऽपि अत्रमिश्राविरतौनरायु स्तावन्नबध्यते तथापिनरद्विक उच्चैर्गोत्रबध्यते तेनसप्ततिर्बध्यते अयमर्थ नरद्विकस्यनरायुषा सास्वादनावश्यप्रतिबध आयुर्बन्धमन्तरेणापिगत्यानुपूर्वीबन्धोभवति । आयुर्बन्धकालेतुअवश्यगत्यानपूर्वीबध इतिअन्तर्मुहूर्त्तान्तरउभयेषुपूर्वबद्धगत्यानुपूर्वीणाबन्धसक्रमणात्भवति । नरगइतिनरकादिनरकतिर्यग्मनुष्यदेवगतिचतुष्केषुयथानुक्रमयोज्य तत्रनरकगतौएकाधिकशतओघ तिर्यग्गतौसप्तदशाधिकशतओघ बधस्यमनुष्यगतौविंशत्याधिकशतबध ओघत देवगतौचतुरधिकशतओघत बध तत्रतिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहित सप्तदशाधिकओघत बधोभवति तत्राहारकमुनित्वाभावात् जिननामचसत्यपिसम्यक्त्वे तथाविधविवेचकबुद्धिमन्तरेणअर्हद्भक्त्यादिषुएकत्वासभवात्बध मिथ्यात्वेऽपिसप्तदशाधिक सास्वादनेएकाधिकशत नरकत्रिकादियोडशप्रकृत्यबधात् तत अणमज्झोगइसवयण कुखगइनियइत्थि दुहेगयीणतिग उज्झोयतिरिदुगतिरि नराउनरउरलदुगरिसह ॥ इति गाथोक्त ॥ एकत्रिंशत्सुरायु इतिद्वात्रिंशत्वर्जोएकोनसप्तति मिश्रे बधोभवति । तत्रायमर्थ आयुर्बन्धस्तुमिश्रेनास्ति अनतानुबधिपचविंशति स्वभावादेवमिश्रेनास्ति तिर्यग्मिश्रस्थस्यदेवप्रत्ययिक प्रकृतिबधात् नरद्विकौदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचबधाभाव, साए-

कोनसप्तति सुरायु सहिताप्रम्यक्त्वेसप्ततिर्भवति सा सप्तनिर्द्वितीय-कषायैरप्रत्याख्यानक्रोधमानमायालोभैर्विनाषट्षष्टिर्देशविरतिगुणस्था-नेबध्यते इतितिर्यग्गतिबन्धस्वामित्व मनुष्यगतौओघतोत्रिंशो-त्तरशतसास्वादने एकोत्तरशतमिश्रेअनतानुबधिप्रमुखैकत्रिंशत्सु-रायु एतद्वात्रिंशत्बन्धाभावेएकोनसप्तति साएवजिननामसुरायु स-हिताएकसप्तति सा वाप्रत्याख्यानचतुष्टयवर्जादेशेसप्तषष्टि प्रमत्ते-त्रिषष्टि अप्रमत्तादिकओघवत्नेय देवगतौचतुराधिकशतबधेय भवति तत्रनरकप्रायोग्य एकाधिकशतमानेएकेन्द्रियनामस्थावरनाम आतपप्रक्षेपेचतुरधिकशतबधेभवति यत भवनपति यतरज्योतिष् सौधर्मेशानपर्यंतमिथ्यात्वोदयोत्सूत्रप्ररूपणादिनाएकेन्द्रियत्वबध्नति। तेनैवज्ञेय मिथ्यात्वे जिननामवर्जेत्युत्तरशतसास्वादनेनपुसकचतु-ष्केकेन्द्रियस्थावरातापप्रकृतिसप्तकरहितापण्णवति मिश्रेअनतानु-बधिषड्विंशती रहितासप्तति सम्यक्त्वे सा एवनरायुर्जिननाम-सहिताद्वासप्तति बधेभवति सौधर्मेशानकल्पेएववाच्य भवनपति-व्यतरज्योतिषाचलयोगित्वात् न तादृक् शासनभक्त्यादिषु परिणम-नात् तीर्थंकरनामकर्मण बधेनभवति तेनओघेमिथ्यात्वेत्युत्तरशत-भवति सास्वादनेषण्णवति मिश्रेसप्तति सम्यक्त्वे जिननामबधा-भावात् एकसप्तति बधेभवति सनत्कुमारादीना एकाधिकशत। यत आनतादीनातिर्यग्गतौगमनाभावात् तिर्यक्त्रिकस्यउद्योत-स्यनबध शेषरत्नप्रभावत् आननादिषुउद्योतनामतिर्यक्त्रिकस्य-बधाभावेओघत षण्णवतिर्भवति पचउत्तरेदुर्गगुणस्थानवर्तित्वात् द्वासप्ततिबध शेषपूर्ववत् देवगतिबधस्वामित्वज्ञेय जाइचउत्ति जा-तिचतुष्केपृथिवीअप्वनस्पतिलक्षणस्थावरत्रिके एव सप्तमार्गणा-याजिननामसुरद्विक २ वैक्रियद्विक २ आहारकद्विक २ देवायु १ नरकत्रिकादि एकादशप्रकृतिवर्जनवाधिक शतओघत भवति

ओघेमिथ्यात्वेच सास्वादनेसूक्ष्मत्रिक विकलत्रिक एकेंद्रियनाम, स्थावरनाम, आतपनाम, नपुंसकवेद मिथ्यात्वदुःसेवार्त्तइति त्रयोदशनामकर्माभावेपणगति सास्वादनेनरकमायाति मतांतरेतु सास्वादनेचतुर्णवति र्येनआयुर्बंधस्तुदृष्टियपर्याप्त्यनंतरभवति सास्वादनस्तुशरीरपर्याप्तिन अर्वाग् एवसास्वादनत्वापगम तेननरतिर्यगायु र्नबध्नाति एतासुमार्गणासु आयुर्बंधोमिथ्यात्वेभवति न सास्वादने तेनचतुर्णवतिर्भवति अपर्याप्तेषुतिर्यक्त्वपिनवाधिकशतमेवबध्नाति अपर्याप्तेषुमनुष्येष्वपि असंज्ञिमनुष्येष्वप्येतनवाधिकशत ओघवत् एवगुणस्थानद्वय अवगन्तव्यइति तेउवुगे तेजस्कायवायुकायलक्षणेमार्गणाद्वयेपृथिवीकाय प्रायोग्येनवाधिकशते मनुष्यत्रिकउच्चैर्गोत्रलक्षणाप्रकृतिंविनापचाधिकशतओघेमिथ्यात्वेभवति सास्वादनादिभावस्तुनैपासंभवति इतित्रयोदशमार्गणासुबंधस्वामित्व उक्त ॥ १० ॥

टबार्थ—नरकगतिनेविषे सुरवैक्रिय २ आहारक २ देवतानोआयुष १ नरकत्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर आतप १९ नाकी न बांधे ते माटे नारकीने एकेन्द्रि तथा विगल तथा देव नारकीमे जाय नथी तिणे १०१ नो बंध छे तिर्यंचगतिमे ११७ नो बंध छे जिननाम १ आहारक २ न बांधे मनुष्यगति एकसोवीसनो बंध छे देवगतिमे एकसोच्यारनो बंध छे एकेन्द्रि ३ बांधे एकेन्द्रिमे जाइ तेमाटे नरकादि च्यार गतिने विषे बंध जाणवो जाति ४ थावर ३ पृथ्वी अपवनस्पतिने विषे एकसोनव प्रकृतिनो बंध छे जिननाम सुर २ वैक्रिय २ आहारक २ देवायु १ नरक ३ ए ११ विनातेउवायुकायने १०५ नो बंध छे ए ११ पूर्वकमनुष्यत्रिकउचगोत्र ए १५ विना जाणवो ॥ १० ॥

नाणतिगओहिदसण, सम्मदुगे इगुणसीइबधति ।
उवसमगेसगसयरि, केवलहरकायगे एगा ॥ ११ ॥

टीका—नाणतिगइत्यादि ज्ञानत्रिकमार्गणाया अवधिदर्शने-सम्यक्त्वद्विकेक्षयोपशमदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेएकोनशीति ओघेन-बधोभवति तत्रसप्तसप्तति अविरतसम्यग्दर्शनगुणस्थानत्रयप्रायोग्या-आहारकद्विकचअप्रमत्तेगत बध्नाति तेनएकोनाशीतिर्बधेभवति साएकोनाशीति आहारकद्विकरहितासप्तसप्तति अविरतिसम्यग्दर्शनेभवति देशविरतौसप्तषष्टि प्रमत्तेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वकरणे-अष्टपचाशत् अनिवृत्तिकरणेद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उपशातमोहक्षीणमोहेएकाबध्नाति उपशमदर्शनेसाएकाशीति मनुष्यायुतथादेवायुर्वर्जाभवति ओघन उपशमस्यायुर्बधमेवनभवति तत्र-अविरतेपचसप्तति देशविरतेषट्षष्टि प्रमत्तेद्वाषष्टि अप्रमत्तेअष्टपचाशत् अनिवृत्तौद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उपशातमोहे एकाबधेभवति केवलद्विकेयथाख्यातचारित्रे एकासातावेदनीयरूपाबधेभवतिएवमार्गणादशकेक्रम उक्त ॥ ११ ॥

टबार्थ—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ अवधिदर्शन १ क्षयोपशमसमकित १ क्षायिक समकित १ ए ७ मार्गणाए इगुण्यासी प्रकृति बाधे ते ७७ सत्तहत्तरि समकित गुणठाणे छे ते अने आहारक २ अप्रमत्तगुणठाणे जईने बाधस्ये ते सर्व मिली ओघेएगुण्यासीनो छे उपशमसमकितने विषे मनुष्यायु तथा देवायुनो बध नथी तिणे सत्तहत्तरि प्रकृतिनो ओघे बध छे केवलदुगयथाख्यातचारित्रने विषे एक प्रकृतिनो बध छे बीजा नथी ॥ ११ ॥

मणनाणचरणतियगे, पणसट्ठीदेससासणेमीसे ।
मिच्छेसुहमेनियआ, अभवअन्नाणअमणेसु ॥१२॥

टीका—मणनाणइत्यादि मन पर्यवज्ञानेसामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रयेपचषष्टीनाओव बधेभवति तत्रत्रिषष्टि प्रमत्तप्रायोग्याआहारकद्विकएवपचषष्टि तत्रप्रमत्तेआहारकद्विकाभावेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वेअष्टपचाशत् एवयावतोगुणस्थानकाभवतिनावज्ज्ञेय देशइतिदेशविरतौमार्गणाया सास्वादनमार्गणाया मिश्रमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया सूक्ष्मसपरायमार्गणाया नियमेति निजकास्वनामगुणस्थानप्रायोग्यबधप्रकृतिबधाति तत्रदेशेसप्तषष्टि सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशत सूक्ष्मसपरायेसप्तदशबधेभवति तथा अभव्यमार्गणाया अज्ञानत्रिकमार्गणायाअमणेसुअसज्ञिमार्गणाया॥१२॥

टबार्थ—मन पर्यवज्ञान १ सामायिक १ छेदोपस्थापनीयचारित्र १ परिहारविशुद्धि ए च्यारे मार्गणाये पासठ प्रकृतिनो ओव छे तेसठीऊगगुणठाणेबध छे ते आहारकद्विगसातमे जे बाधस्ये तेमाटे पासठीनो ओव छे देशविरतिगुणठाणे ते गुणठाणानी सडसठीप्रकृतिनो ओव छे सास्वादनगुणठाणे १०१ प्रकृतिनो ओव छे मिश्रगुणठाणे ७४ नो ओव छे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसो सत्तरनो ओव छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे ते गुणठाणे प्रत्ययी १७ प्रकृतिनो बाधे तथा अभव्य १ अज्ञान २ असज्ञी मार्गणाने विषे एकसोसत्तर प्रकृतिना बधनो ओव छे ॥१२॥

सत्तरससयबधे, अजयतिलेसेअठारसयगतु ।
एगारसयतेउ, अडचउसयपउमसुकमि ॥ १३ ॥

टीका—सत्तरससयबधे जिननामाहारकद्विकरहित सप्तदश-

शतओघ प्राप्यते तत परगुणस्थानोवत्तज्ञेय तथा अजयति अविरतमार्गणायातिलेसेइतिकृष्णनीलकापोतलेश्यापा आहारकद्विक-रहित अष्टादशाधिकशतओघेभवति जिननामरहितसप्तदशाधिक-शतमिथ्यात्वे सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति एव प्रमते-त्रिषष्टिपर्यन्तवक्तव्य, तेजोलेश्यायानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिक-रहित एकादशोत्तरशत प्राप्यते तच्चमिथ्यात्वे अष्टोत्तरशत सा स्वादनेएकाधिकशतपर्यन्त अप्रमत्तेएकोनषष्टिरतावज्ज्ञेय तथापद्म-लेश्यामार्गणाया नरकत्रिकसूक्ष्मत्रिक विकलत्रिकैकेन्द्रियातपस्थावर-इतिद्वादशाऽनवेअष्टाधिकशतओघ प्राप्यते, मिथ्यात्वेपचोत्तरशत सास्वादनेएकाधिकशत एवपर्यन्त अप्रमत्तेएकोनषष्टि शुक्ललेश्या-यानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिक एकेन्द्रियस्थावरातपोद्यततिर्यग्-त्रिकमितिषोडशरहितचतुरधिकशत ओघेप्राप्यतेमिथ्यात्वेजिनाहा-रकद्विकरहित एकाधिकशतभवतिसास्वादनेनपुसकचतुष्कापगमेसप्त-नवति मिश्रेअनतानुबन्ध्याद्येकविंशति नरामरायुश्चएवमयोविंशति-विगमेचतु सप्तति एवपर्यन्त सयोगिगुणस्थानतावज्ज्ञेय॥ १३ ॥

टबार्थ—अविरतिमार्गणाये कृष्ण १ नील २ कापोत ३ ए मार्गणाये ११८ नो ओघ छे एकसोसत्तर मिथ्यात्व गुणठाणे बावे ते एक जिननाम एम ११८ नो छे तेजोलेश्याये नरक-त्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ नव ए बावे एकसोअगीयारनो ओघ छे पद्मलेश्या ३ सूक्ष्म २ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर १ आतप १ ए बार विना एकसोआठ १०८ नो ओघ छे नरक तथा ए चार उद्योत ४ ए सोल विना शुक्ललेश्या ए १०४ एकसो च्यारनो ओघ छे ॥ १३ ॥

बारसयमणाहारे, सेसासुअगीसअहियसयपयडी ।
बधुत्तरपयडीण, ओहो एसोसमासेण ॥ १४ ॥

टीका—बारसयमणाहारे इत्यादि । अनाहारेअनाहारकमार्गणायाआहारकद्विकदेवायुर्नरकत्रिकतिर्यगायु मनुष्यायु इत्यष्टौविनाद्वादशाधिकशतओघ प्राप्यते मिथ्यात्वेजिननामरहित एकादशाधिकशतप्राप्यते सास्वादनेजातिचतुष्क स्थावरचतुष्कहुंडातपसेवार्तनपुसकवेदमिथ्यात्वप्रकृतीनाबंधाभावेअष्टनवति सम्यक्त्वेपचसप्तति सयोगिकेवलिगुणस्थानेएकाइतिबंध शेषासुपचेंद्रिय १ त्रस १ योगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्क ४ चक्षुरचक्षुदर्शनभव्यसंज्ञिआहारकलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुत्रिंशोत्तरशतबंधेप्राप्यते गुणस्थानक्रमश्चओघवत्राविकारवत्वक्तव्य बंधोत्तरप्रकृतीनाएवंओघ समासेनेतिसंक्षेपेणउक्त ॥ १४ ॥

टबार्थ—अनाहारकमार्गणाए एकसो बारनो ओघ छे शेष मार्गणा १८ नरगति १ पचेंद्रीजाति २ त्रसकाय ३ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन २ भव्य १ संज्ञीआहारकमार्गणाये एकसोवीस १२० प्रकृतिनो बंध छे सर्वमार्गणाए जेटला कह्या तेटले गुणठाणे बंधप्रकृति कहेवी बंधनी उत्तरप्रकृतिनो ओघ संक्षेपे कह्यो ॥ हवे बंधस्वामीपणोकर्मनो कहे छे ॥ १४ ॥

केवलदुगअहक्खायग, रहियाबंधतिनाणविग्घाइ ।
तेउसुहुमासाय, सेसादुगवेयणीकुणगा ॥ १५ ॥

टीका—अथमार्गणासु ज्ञानावरणादिकर्मप्रकृती विभजनाह ॥ केवलदुगत्यादि केवलद्विकयथाख्यातचारित्रमार्गणारहिताएकोनषष्टि मार्गणा नाणविग्घाइइतिज्ञानावरणपंचकअंतरायपंचकरूपा दशप्रकृती नियमेनबंधतिबंधकुर्वंति वेदनीयेकर्मणिकेवलद्विकयथाख्या-

तल्लक्षणापूर्वोक्तास्तिस्रो मार्गणा सूक्ष्मसपरायमार्गणासहिताश्चतस्र एकसातवेदनीयबन्धकुर्वन्निशेषा अष्टपञ्चाशन्मार्गणा वेदनीयद्विकस्य कुर्वन्ता वेदनीयद्विकबन्धकर्त्तारः ॥ इति ॥ १५ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र ए तीन मार्गणा विना सर्वमार्गणाइ ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दानलाभ भोगउपभोग वीर्यांतराय एव ५ नो बध छे तथाकेवलदुगयथाख्यातसूक्ष्मसपराय ए च्यार मार्गणाए एकसाता वेदनी बाधे शेष अटावन्नमार्गणा साता तथा असातावेदनी बाधे छे ॥१५॥

नाणचउओहिदसण, चरणतिगेदेससम्मतिगमीसे।
दसणछगचबधइ, केवलहक्खायगे नत्थि ॥ १६ ॥

टीका—अथदर्शनावरणीयमार्गणासुविभजन्नाह ॥ ज्ञानचतुष्क अवधिदर्शने चरणत्रिके देशविरतिमार्गणाया सम्यक्त्रिकमार्गणाया मिश्रदृष्टिमार्गणाया त्रयोदशमार्गणाया दर्शनावरणीयषट्कस्त्यानर्द्धित्रिकरहितबन्धेप्राप्यते केवलद्विकयथाख्यातरूपायामार्गणाया दर्शनावरणीयबन्धेनास्ति तेषुगुणस्थानेषुतद्बन्धाभावात् ॥१६॥

टबार्थ—हवे दर्शनावरणीकर्मनो मार्गणाये बध कहे छे ज्ञान ४ अवधिदर्शन, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, समकित तीन उपशम १ क्षयोपशम १ क्षायिक १ तथा मिश्रमार्गणा एतली मार्गणाये दर्शनावरणीकर्मनी छ प्रकृति बाधे, थीणद्धीतीन न बाधे, केवल दुग तथा यथाख्यातचारित्रे दर्शनावरणीकर्मनो बध नथी ॥ १६ ॥

सुहमेदसणचउग, सेसानवबधगायगोयम्मि।
तेउवाउनीय, सम्मत्तपराउउच्चच ॥ १७ ॥

टीका—सुहुमेइत्यादि ॥ सूक्ष्मसंपरायचारित्रे दर्शनावरणीयचतुष्कबंधेभवति शेषा नवनवचत्वारिंशन्मार्गणा दर्शनावरणीयनवबंधाबंधकानवबंधका ज्ञानत्रया इंद्रियगोत्राख्ये कर्मणि तेजस्कायवायुकायरूपेद्वेमार्गणेएकनीचैर्गोत्रबंधेकुर्वंति सम्यक्त्वपराउच्चैर्गोत्रबंधंकुर्वंति सम्यक्त्वत्रयं परा सम्यग्रहिता मार्गणाज्ञानचतुष्कसंयमचतुष्कदेशविरत्यवधिदर्शनसम्यग्दर्शनत्रिकमिश्रलक्षणासु चतुर्दशमार्गणासु उच्चैर्गोत्रएकबंधेभवति ॥ केवलद्विकत्रयाख्यातेअबंध ॥ १७ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे दर्शनावरणी ४ बंधाये शेषमार्गणा ४५ ते दर्शनावरणीनी नव प्रकृति बांधे हवे गोत्रनो बंध कहे छे तेउकाय तथा वाउकाय एकनीच गोत्रनो बंध कर सम्यक्त्व उपरली मार्गणाओ ज्ञान ४ अवधिदर्शन ६ संयमसमकित तीन मिश्रमार्गणाए एक उच्चगोत्रने बांधे छे ॥१७॥

सेसादुविहबंधइ, मोहेतिगनाणओहिदसेसु ।
सम्मतिगेगुणवीसति, चरणमणनाणइक्कारा ॥१८॥

टीका—सेसादुविहइत्यादि ॥ शेषा मार्गणा त्रिचत्वारिंशत्मार्गणा द्विविधउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रद्वयबंधकुर्वंति मोहमोहनीयाख्येकर्मणिज्ञानस्यात्रिके अवधिदर्शने सम्यक्त्वत्रिकमोहनीयस्यएकोनविंशतिर्बंधेभवति अनंतानुबंधिचतुष्टय मिथ्यात्वमोहनीय नपुंसकवेदस्त्रीवेदइतिसप्तनबंधेभवति तिचरणत्ति सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रिके मन पर्यवज्ञानमार्गणायां मोहनीयस्यएकादशप्रकृति बंधेभवति ताश्चेमा संज्वलनचतुष्टयहास्यादिषट्क पुरुषवेद एवएकादशबंधेभवति शेषा द्वादशकषायस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वलक्षणा पंचदशबंधेनभवति ॥१८॥

टबार्थ —सेसाक० शेषमार्गणाए उचगोत्र १ नीचगोत्र २ ए बे प्रकृति बाधे मोहनीकर्मनो बंध गुणठाणे कहे छे, ज्ञान ३ अवधिदर्शन सम्यक्त्व ३ उपशमक्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए ए मार्गणाए मोहनीकर्मनी १९ प्रकृति बाधे अनंतानुबंधी ४ मिथ्यात्वमोहनी, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद ए सातनो बंध नथी सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, मन पर्यवज्ञान एटली मार्गणाए मोहनीनी ११ प्रकृति बाधे बार कषाय, २ वेद मिथ्यात्व १ ए पनर न बाधे ॥ १८ ॥

केवलदुगेहखाए, सुहमेनोव बंडउमोहस्स ।
सासणमीसेदेसे, नीअठाणठीआओपयडीओ॥१९॥

केवलदुगेहखाए इत्यादि । केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणे तथा यथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसंपराये मोहस्यमोहाख्यस्यकर्मणः प्रकृतिबंधेनभवति, नवमगुणस्थानातेएवमोहबंधव्यवच्छेदात् बंधदशसुहमइतिवाक्यात् सास्वादने तथा मिश्रे तथा देशेदेशविरतारये मार्गणास्थाने नियठाणठीयाओइति निजस्थानतनामगुणस्थानतनस्थिता प्रकृतय बंधेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वमोहनपुंसकवेदविनाचतुर्विंशति बंधेप्राप्यते मिश्रेएकोनविंशति प्राप्यते अनंतानुबंधिस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वमोहरहिता देशविरतौअनंतानुबंधिचतुष्टयअप्रत्याख्यानचतुष्टयस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वरहिता पंचदशबंधेप्राप्यते ॥ १९ ॥

टबार्थ —केवलदुगयथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसंपरायचारित्रे मोहकर्मनी प्रकृतिनो बंध नथी सास्वादन गुणठाणे २४ बाधे मिश्रे इगुणीस बाधे १९ देशविरते १५ प्रकृति बाधे ए पोताने थानकनी प्रकृति जाणवी ॥ १९ ॥

सेसासुमग्गणासु, छवीसपयडीओमोहकम्मस्स ।
गुणठाणसभवाओ, आउभेया य नायव्वा ॥ २० ॥

टीका—सेसासुइत्यादि । शेषासु चतु चत्वारिंशत्मार्गणासु षड्विंशति प्रकृतय मोहकर्मण बधेप्राप्यते समुदायकसूत्रएकैकस्यजीवस्यस्वस्वाध्यवसायविशेषात् न्यूनाधिकतीव्रमदप्रकृतय बधे भवति गुणठाणसभवाओ गुणस्थानशतके यथागुणस्थानेउक्ता तथामार्गणास्थानेपिआयुष भेदा ज्ञातव्या तत्रनरकगतौदेवगतौ तिर्यगमनुष्यरूपेद्वेआयुषाबधेभवत मनुष्यगतौतिर्यग्गतौ पचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्टये अज्ञानत्रये अविरतिमार्गणाया दर्शनत्रये लेश्याया आत्रिके भव्याभव्यद्विके मिथ्यात्वेमार्गणाया आहारकमार्गणाया एतएतासुआयु चतुष्टयमपिबधेप्राप्यते तथा एकेन्द्रियविकलेन्द्रियपृथिव्यप्तेजवनस्पतिलक्षणासु तिर्यग्मनुष्यरूपौद्वौआयुर्भेदौभवत । तेजस्कायवायुकायमार्गणाया एकतिर्यगायुरेवबधेभवति ज्ञानत्रिकशुक्ललेश्याक्षयोपशमक्षायिकसम्यक्त्वलक्षणासु मार्गणासु मनुष्यदेवरूपौद्वौआयुर्भेदौप्राप्येते । तथा मन पर्यवज्ञानसामायिक छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धि देशविरतिलक्षणासु एकदेवायुरेवबध्यते केवलज्ञानकेवलदर्शनसूक्ष्मसपराययथाख्यातोपशमसम्यग्दर्शनमिश्रअनाहाररूपासु आयुर्बधेनास्ति तेज पद्मलेश्यासास्वादनरूपासुतिर्यग्मनुष्यदेवारूपा । त्रयआयुर्भेदा बधेभवति एवसर्वत्रज्ञेय ॥ अथनामप्रकृतिमार्गणास्थानकेषुविभजन्नाह ॥ २० ॥

टबार्थ—शेष जे मार्गणा रही जे चोमालीस तेहने विषे मोहनीनी २६ प्रकृति मोहकर्मनी बाधे आऊखाना बधनी प्रकृति नरकगति २ देवगति २ मनुष्यतिर्यंचने ४ एकेन्द्रि,

विकलेन्द्रि ने पचेन्द्रि ४ पृथिवी अप्वनस्पतीने ३ तेउवाउने ४ योग २ वेद ३ कषाय ४ ए च्यार आउखा बाधे तीन ज्ञानदेवना मनुष्यना २ आउखा बाधे मनपर्यव ज्ञानदेवतानो आउखो बाधे केवलज्ञानको आउखो न बाधे तीन अज्ञान ४ आयु बाधे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि एक देवायु बाधे सूक्ष्मसपराय यथाख्यात ए कोई आउखो न बाधे देशविरति देवायु बाधे अविरति तीन दर्शन ४ आयु बाधे केवलदर्शन न बाधे तीन लेश्या ४ आयु बाधे तेजोपद्म ३ आयु बाधे शुक्ललेशी २ आयु बाधे भव्य अभव्य ४ आयु बाधे उपशमी न बाधे मिश्र न बाधे क्षायिक क्षयोपशमी २ आयु बाधे सास्वादन ३ आयु बाधे मिथ्यात्वी सज्ञीअसज्ञी आहारी ४ आयु बाधे अनाहारी न बाधे एव प्रकारे आयु कर्मनो बध मार्गणाये जाणनो मार्गणाये जे गुणठाणे ते प्रमाण लेवा ॥ २० ॥

पन्नासाचउसट्ठी, सगसट्ठीतिपन्ननिरयमाईसु,
अडवन्नाचउजाईसु, थावरतिसुछपन्नतेउदुगे ॥२१॥

टीका—पन्नासाचउसट्ठी इत्यादि । तत्रनिरयमाइसुत्ति नरकादिषु, चतुर्षु गतिषु यथाक्रमयोज्य नरकगतौपचाशत्नामप्रकृतिर्बध्यते सुरवैक्रियाहारकनरकद्विकसूक्ष्मविकलत्रिकएकेन्द्रियस्थावरातपलक्षणा सप्तदशानबधेभवति तिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहिताचतुषष्टि बधे लभ्यते मनुष्येसप्तषष्टि देवगतौपचाशन्नरकप्रायोग्याएकेन्द्रियस्थावरातपसहितात्रिपचाशद्देवगतौबधेप्राप्यते । तथा जिननामसुरद्विकवैक्रियद्विकआहारकद्विकनरकद्विकलक्षणानवनबध्यते शेषाअष्टपचाशन्नामप्रकृतिएकेन्द्रियादिजातिचतुष्कपथि-

व्यपूर्वनस्पतिलक्षणासु सप्तमार्गणासु बंधेप्राप्यते तेजस्कायवायुकायमार्गणाया तासुअष्टपचाशत्सु मनुष्यद्विकाभावेपद्पचाशत्बंधेभवति ॥ २१ ॥

टबार्थ—हवे नामकर्मनी प्रकृति मार्गणाये कहे छे नरकगते नामकर्मनी ५ प्रकृति बाधे सुर २ वैक्रिय २ आहारक २ नरक २ सूक्ष्म ३ विकल ३ एकेन्द्रिय थावरातप ए सतर न बाधे तिर्यंच जिननाम आहारक २ विना चौसठी बाधे जिननामसुर २ वेक्रीय २ आहारक २ नरक २ ए नव न बाधे ५८ प्रकृति च्यार जातिना जीव एकेन्द्रिय त्रिगलेन्द्रि ३ ए जीव न बाधे तीन थावर पृथ्वी पाणी वनस्पतिपिण ५८ बाधे ते उकाय १ वाउकाय मनुष्यदुग विना छापन प्रकृति बाधे ॥ २१ ॥

सम्मत्तमग्गणासु, गुणयालचरणमग्गणाठाणे ।
चउत्तीसचोसठो, मिच्छत्तठिया(उ)सुनामस्स॥२१॥

टीका—सम्मत्तमगाणासुत्तिगाथा २२ सम्यक्त्वेनयुक्तामार्गणासम्यक्त्वमागणा मतिश्रुतावधिज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेवेदकउपशमक्षायिकदर्शनेएकोनचत्वारिंशत्बंधेभवति तत्रमिथ्यात्वातेत्रयोदश सास्वादनातेपचदश एवंअष्टाविंशति बंधेनभवति चरणमार्गणायाचारित्रयुक्तमार्गणायामन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रयेचतुस्त्रिंशत्प्रकृति षष्ठसप्तमगुणस्थानप्रायोग्याबध्नन्ति मिच्छत्तगियासु मिथ्यात्वस्थितामिथ्यात्वगुणस्थानयासु मार्गणासु प्राप्यते ता मार्गणा मिथ्यात्वाभव्यासज्ञिलक्षणासुजिननामाहारकद्विकविनाचतु षष्टि बंधेप्राप्यते । नामकर्मण ॥२२॥

टबार्थ—समकीत बीज जे मार्गणाये ३ ज्ञान अवधि-

दर्शन क्षयोपशम क्षायिक सम्यक्त्व ए मार्गणाये ३९ ओगण-चालीस प्रकृति बांधे तेर प्रकृति सास्वादन आवना तथा १५ मिश्र आवना ते न बांधे उपशम समकिती आहारक २ न बांधे अने जे चारित्र प्रत्यपी मार्गणा मन पर्यव सामायिक छेदोपस्थानीय परिहार ए ४ मार्गणाये चौती प्रकृति छठी सातमी प्रत्यपी छे ते बांधे मिथ्यात्व प्रत्यपी मार्गणा मिथ्यात्व १ अज्ञान त्रिक अभव्य असज्ञी ए मार्गणाये जिननाम कर्म आहारक्र विना ६४ नो बंध छे नाम कर्मयी प्रकृतिनो ॥२२॥

सपमत्तसजुआमग्गण, जावबधईपचसठीयो,
अणहारेतेसट्ठी केवलहसायनोजयई ॥ २३ ॥

टीका—सपमत्तसजुआइत्यादि ॥२३॥ मिथ्यात्वत प्रमत्तपर्यंतगुणस्थानायासुमार्गणासुप्राप्यते कृष्णादिलेश्यायेआहारकद्विकरहितापचषष्टि बंधेप्राप्यते तूपगुणस्थानातजिननामयुक्तापचषष्टि बंधेभवति अनाहारकेआहारकद्विकनरकद्विकाबंधेत्रिषष्टिनामप्रकृतय बंधेभवति । केवलद्विकयथाख्यात नामप्रकृति न अजयति । नबंधतिइत्यर्थ ॥२३॥

टबार्थ—प्रमत्त गुणठाणा पर्यंत जे मार्गणा छे कृष्णनीलकापोतादि ते पासठी प्रकृति पर्यंत बांधे आहारक २ न बांधे अविरति मार्गणा पण आहारक न बांधे ए भावना पद छे प्रमत्तथी अबाद् छे पासठि बांधे अनाहारक मार्गणाये आहारक २ नरक बे विना ६३ प्रकृति बंधाय छे केवलज्ञान मार्गणाये तथा यथाख्यात चारित्र मार्गणा नामकर्मनी प्रकृति न उपार्जे न बांधे ॥२३॥

मिच्छतिगदेससुहुम्मे, ठाणभवासेसयासुसगसट्ठी,
अविरइतिलेसपणसट्ठी, नवछतिगपन्नतेउतिगे ।२४।

टीका—मिच्छतिगइत्यादि ॥२४॥ मिथ्यात्वत्रिके मिथ्यात्व-सास्वादनमिश्रलक्षणे देशविरतौसूक्ष्मसपरायचारित्रे स्थानभवाप्रकृति त्रवेभवति मिथ्यात्वेचतु षष्टि सास्वादनेएकपचाशत् मिश्रेषट्त्रिंशत् देशविरतौद्वात्रिंशत् सूक्ष्मसपरायेएकानामप्रकृति बवेप्राप्यते शेषापचेन्द्रियत्रसयोगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्टयदर्शनद्वयभव्यसज्ञी-आहारकलक्षणासुमार्गणासुसप्तषष्टि नामप्रकृतिर्बंधेप्राप्यते अविरति-कृष्णनीलकापोतलक्षणासुमार्गणासुआहारकद्विकमार्गणाशतकविना-पचषष्टि प्राप्यते तेजोलेश्यायानवाधिकापचाशत्इत्यनेनएकोनषष्टि पद्मलेश्यायापडधिकापचाशत् शुक्ललेश्यायात्रिपचाशत्नामप्रकृति बवेभवति इत्येवनामकर्मप्रकृति मार्गणासुविभक्ता तदेवविभक्ता-अष्टकर्मबधप्रकृतय इत्यनेनमार्गणासुउक्तबधस्वामित्व अथमार्ग-णासुउदयस्वामित्वकथयन्प्रथमद्विषष्टिमार्गणासु मूलउदयस्थानानि-कथयितुमाह । मूलकर्माणित्रीणि उदयस्थानानितान्याह ॥२४॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठि सास्वादने एकावन ५१ मिश्रे छत्तीस ३६ देशविरते ३२ सूक्ष्म सपराये एक ठाणे जे गुणठाणो तिहा औपन्या जे ते प्रकृति बाधे शेष मार्गणा पचेंद्री त्रसकाय १ योग तीनवेद ३ कषाय ४ दर्शन २ भव्य १ सज्ञी १ आहारक १ एटली मागणाते सत्तसठि ६७ प्रकृति बाधे अविरति मार्गणा तथा तीन लेश्या मार्गणाने विषे आहारक द्विक विना ६५ बाधे ते जो लेश्याए ५९ गुणसठि

बाधे पद्मलेश्याए ५६ बाधे शुक्ललेश्याये त्रेपन बाधे ए मार्गणाये नाम प्रकृति वेहचीने कही ॥२४॥

अट्ठसगचउरउदया, नरपणतसयोगसुक्कभव्वेसु,
खवगाहारगसन्निसु, अडचउअणहारगेउदया ॥२५॥

टीका—अट्ठसगचउरउदयाइत्यादि । तत्रज्ञानावरणादिसर्वकर्मणाउदयवेत्यरूप अष्टानासमकालविपाकत्वात् अष्टोदयरूपप्रथमस्थान तत्र सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रप्राप्त परभावारोचकस्वभावानुभव तदेकाग्रतादितत्त्वपरिणत्यासकलपरभावेष्वानासक्तोपयोग अरक्तद्विष्टत्यासर्वविभावत्यजनस्वभावरमणानुभवैकत्वेनप्राप्तशुक्लध्यान उपशमश्रेणिं क्षपकश्रेणिंवागत उपशातमोहरूपएकादशमक्षीणमोहरूपद्वादशमगुणस्थानमधिरूढ आत्मामोहोदयरहितोभवति तदासप्तकर्मरूपद्वितीयस्थानकभवति सएवक्षीणमोहीएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपशुक्लध्यान यायन्ज्ञानावरणदर्शनावरणातरायरूप कर्मत्रय सर्वथाक्षय कृत्वा प्राप्तमत्रभावावभासरूप केवलज्ञानदर्शनात्तवीर्यशेषमवातिकर्मचतुष्टयेवेदयति तस्यचतु कर्मोदयरूपत्रितयस्थानकभवतिनवमार्गणासु मार्ग्यतेनरइतिपचेन्द्रियजातो त्रसकायमार्गणायायोगत्रिकशुक्ललेश्याभव्यक्षायिकाहारकसज्ञालक्षणा मार्गणा अडसगचउरुदयाइतिसत्र इत्यनेनएतासुमार्गणासुअष्टसप्तचतूरूपाणि त्रीणि स्थानानिप्राप्यते अनाहारकमार्गणाउपशातमोहक्षीणमोहगुणस्थानाभावात् सप्तोदयरूपस्थानाभावात् अष्टचतु रूपौद्वौस्थानकौप्राप्येते ॥२५॥

टबार्थ—हवे मार्गणाये उदयस्थानक कहे छे आठनो उदय तथा सातनो उदय मोह विना तथा घनघातीकर्म खपे च्यारनो उदय ए ३ थानक छे मनुष्यगतिपचेन्द्रिय जाति

त्रसकाययोग ३ शुक्ल लेश्या ३ विषे क्षायिक समकितीने आहारक मार्गणाये सज्ञा मार्गणाये एहवी मार्गणाये ८।७।४ नो उदय छे अनाहारक मार्गणाये आठ तथा च्यार ४ ने थानक छे ॥ २५ ॥

उवसमदसणतियगे, नाणचउक्केसुअट्ठसगउदयो ।
सगचउरअहखाए, केवलिचउअट्ठसेसासु ॥ २६ ॥

टीका—उवसमदसण इत्यादि । तत्रोपशमसम्यक्त्वे चक्षुरचक्षुरवधिरूपे दर्शनत्रिके मत्यादिमन पर्याये ते ज्ञानचतुष्टये अष्टौसप्तएतद्वौउदयस्थानौचतु रूपस्यकेवलिन सभवात् यथाख्यातचारित्रेसप्तचत्वारएतद्वौउदयस्थान उपशान्त मोहादिष्वेव यथाख्यात स्यसभवात् केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणाया चउत्ति चतुरुदयरूपउदयस्थान अयात्युदयस्थानसभवात शेषासुमार्गणासुअष्टौएवउदयेभवति ॥ सूक्ष्मात्उपरिनगुणस्थानाभावात ॥ २६ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितदर्शन ३ ज्ञान ४ एहने विषे आठ तथा सातनो उदय छे यथाख्यातचारित्रमार्गणाये सातनो उदय तथा च्यारनो उदय केवलज्ञान केवलदर्शन ते च्यारनो उदय छे शेषमार्गणा जे रही तेहने आठ कर्मनो उदय छे ॥२६॥

निरएगुणसीउदओ, देवेचुलसीअसीईएगिदि ।
तिरीएनवअहीसेय, मणुएचउअहीअमयउदओ॥२७

टीका—इत्येवउक्तानिमूलोदयस्थानानिमार्गणासुसाम्प्रतमुदयोत्तरप्रकृतीनाउदयस्वामित्वकथयनाह । निरएगुणसीउदओइत्यादि ॥२७॥ नरकगतिमार्गणायाएकोनाशीति कर्मप्रकृति उदयस्वामि-

त्वओघत भवति ताश्चइमा ज्ञानावरणीयपचक दशनावरणनवक वेद-
नीयद्विक मोहनीयपइविंशति स्त्रीपुवेदस्योदयाभावात्नरकायु नीचै
र्गोत्रअनरायपचक एवसप्तकर्मणाएकोनपचाशत् नाम्नस्तुनरकगति
१ नरकानुपूर्वीद्विक पचेंद्रियजाति १ वैक्रियागोपागद्वय तैजस-
कार्मणशरीरद्वयहुडकसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ अशुभविहायोगति १
उच्छ्वास निर्माण अगुरुलघु उपघात त्रसबादरपर्याप्त ३ प्रत्येक १
स्थिर २ शुभरूपा अपर्याप्तास्थिरषट्रूपाविंशतइतिसर्वत एकोना-
शीति ओघोदय तत्त्वसिद्धातापेक्षया कर्मग्रथापेक्षयातुअपर्या-
प्तनामोदयनारकाणानेच्छन्ति परघातचेच्छन्तितथापिएकोनाशीति
ओघोदय मिथ्यात्वेचसम्यक्त्वमोहमिश्रमोहविनासप्तसप्तनिरुदयेभवनि
सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीरूपाणाप्रकृतीनाअनुदयेचतु
सप्तनि उदयेभवति मिश्रेअनतानुबधिचतुष्टयापगमेमिश्रमोहनीउद-
येचएकसप्ततिरुदयेप्राप्यते एवचमिश्रमोहनीयापगमेसम्यग्मोहनीय
नरकानुपूर्वीमीलनेद्वासप्तति अविरतसम्यग्गुणस्थानेप्राप्यते इति
नरकगतिउदयस्वामित्व देवेत्तिदेवगतिविषयेषुचुलसीतिचतुरधिका-
शीतिचतुरशीति उदयेओघ प्राप्यते ज्ञानावरणीयपचकदर्शना-
वरणीयनवक वेदनीयद्वय नपुसकवेदविनासप्तविंशति मोहनीय-
देवायु गोत्रद्वयेउच्चैर्गोत्रयद्यपिकिल्विषादीनानीचैर्गोत्रतथापिउच्चि-
प्त्वाद्यभावान्नापेक्षित। अनरायपचकएवसप्तकर्मणापचाशत् नाम्न-
स्तुदेवगतिदेवानुपूर्वीद्वयपचेंद्रियजाति १ वैक्रियद्विक तैजसकार्मण
समचतुस्रसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ शुभविहायोगति पराघात-
नाम १ उद्योतनाम १ अगुरुलघुनाम १ निर्माणनाम १ उप-
घातनाम १ त्रसदशक अस्थिर १ अशुभदुर्भग १ अनादेय १
अयश इतिचतुर्विंशत्नाम्न सर्वमीलिनेचतुरशीति प्राप्यते।
केचित्तु स्वरापर्याप्तरूपोदयइच्छन्ति तदपिकर्मग्रथेनाधिकृत नीचै-

र्गोत्रस्यविपाक अष्टाप्रज्ञापनोक्तस्यदेवेष्वदर्शनात् तेननाधिकृत उपघातोदय सुशरीरपुद्गलोपचयस्य यूनाधिक्येनगणनानुगृहीतमच-तुरशीतिओघ लब्धिपर्याप्तदेवानानास्तितेनापर्याप्तइतिनापेक्षित कार्मग्रथीकेसिद्धातेत्वपेक्षित "देवापद्यनाविअपत्रताविगतिपाटात्" कर्मग्रथेपिदेवगतौजीवस्थानद्वयमितिवाक्येनगृहीतमपिअत उत्प-त्तिकालपर्याप्तनामोदयेपचाशीति सम्यग्मोहनीय १ मिश्रमोहनी-यस्योदयाभावेमिथ्यात्वगुणस्थानेऽशीति सास्वादनेमिथ्यात्वमोहनी-यापर्याप्तमतरेणएकाशीति मिश्रअनतानुबधिदेवानुपूर्व्यौउदयाभावे-पदसप्ततिर्भवति तत्रमिश्रमोहनीयक्षेपेसप्तसप्तति अविरतसम्यगदर्श-नेमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहनीयदेवानुपूर्व्यौक्षेपेअष्टसप्ततिरुदयेभवति-इतिदेवगतावुदयस्वामित्व अमीइएगिदीएकेंद्रियमार्गणायाअशीतिरु-दयेओघ भवति तत्रज्ञानावरणीयपचक दर्शनावरणीयनवक वेदनी-यद्विक मोहनीयस्यचतुर्विंशति मिश्रमोहनीयसम्यग्मोहनीयस्त्री-वेदपुरुषवेदोदयाभावात् तिर्यगायु १ नीचैर्गोत्रअत्रकल्पवृक्षादीना-उच्चैर्गोत्रोदय कथन १ इत्यत्रोच्यतेयद्यपिशुभगोत्रोदयेनइष्टत्वेपि-प्रज्ञापनोक्तोच्चैर्गोत्रविपाकानामव्येकस्याप्यसभवात् नीचैर्गोत्रमेव-अनतरायपचकएवसप्तकर्मणासप्तचत्वारिंशन्नामकर्मण त्रयस्त्रिंशन्नि-र्यग्द्विक एकेंद्रियजाति आहारकद्वतेशरीरचतुष्टय हुडकसस्थान वर्णादिचतुष्टय उच्छ्वासनाम १ आतपोद्योतेनिर्माणेअगुरुलघु १ उपघात १ परावात १ बादर १ पर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभयशोरूपप-दक दुस्वरविनास्थावरानवक एवत्रय त्रिंशत् एवसर्वाग्रेअशीति अत्रसेवार्त्तसहननक्वचिन्नगृह्यते तथापिकार्मग्रथिकैरगृहीतत्वान्नोपात्त परावातोदय कार्मग्रथीकैरगृहीतेपिप्रज्ञापनायागृहीतत्वात् एकेंद्रि-याणाहुर्द्वर-त्वतुदेवामियोगात् तेननोपात्त तयोग्रहणेद्वाशीतिरप्य-न्येहुसीइएगेदिइत्यपिपाठातर उपागोदयस्तुनैकेंद्रियाणामिथ्यात्वे-

प्यशीतिरेव सास्वादनेसूक्ष्मत्रिकमिथ्यात्वातपानुदयेपचसप्ततिरुदये भवति गुणस्थानद्वयस्यत्रसभवात् तिर्यग्गतिविषयेनवाधिकशतउदये-भवति ज्ञानावरणपचक दर्शनावरणनवक वेदनीयद्विक मोहनीया-ष्टविंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्र १ अतरायपचक एवएकपचाशत् सप्तकर्मणानाम्न अष्टपचाशत् तिर्यग्द्विक २ जातिपचक शरीर-माहारकमनरेणचतु औदारिकवैक्रियोपागद्वय सहननषट्क सस्था-नषट्क खगतिद्वय जिननामविनाप्रत्येकसप्तक वर्णादिचतुष्य त्रस-दशक स्थावरदशकमिति अष्टपचाशत्उभयमीलनेनवाधिकशतओघे मिथ्यात्वेसम्यग्मोहमिश्रमोहविनासप्ताधिकशत । सास्वादनेसूक्ष्म त्रिकातापमिथ्यात्वविनाद्व्याधिकशत मिश्रेजातिचतुष्क अनतानु-बधिचतुष्कस्थावरनाम १ तिर्यगानुपूर्वीमनरेणमिश्रमोहोदयेनत्रिन-वतिरुदयेभवति अविरतसम्यग्दर्शनेमिश्रमोहापहारेसम्यग्मोहनीय-तिर्यग्गानुपूर्वीउदयेचतुरशीति देशविरतौअप्रत्याख्यानचतुष्टयवै-क्रियद्विकदुर्भगानादेयायश तिर्यगानुपूर्वीलक्षणदशप्रकृत्यपगमेच-तुरशीति उदयेप्राप्यते सप्ततिग्रयेअनादेयोदय विवक्षितोपि " आइइज्जासव्वलोगगिऊवउ " वाग्योगप्रत्ययोदयत्वेनयोगरोध-कालेगृहीतत्वात् वाग्योगरहितानभवति सप्ततिवाक्याशयोपूज्यएव जानति मणुएत्तिमनुष्यगतौचतुराधिकशतउदयेभवति तत्रज्ञानाव-रणादिसप्तकर्मसुतिर्यग्नरकदेवायुस्तरेणद्विपचाशत् नाम्नस्तुनरग-त्यानुपूर्वीलक्षणद्वयपचेंद्रियजाति शरीरपचक उपागत्रयसहननषट्क वर्णादिचतुष्य खगतिद्विक आतपस्यपृथिवीकायोदयात् उद्योत-स्यतिर्यग्प्रत्ययत्वात् तयोरभावेप्रत्येकषट्क त्रसदशकस्थावरसूक्ष्म-साधारणवर्जप्रकृतिसप्तक एवद्विपचाशत्उभयमीलनेचतुरधिकशत उदयेओघ सभाप्यते तत्रमिथ्यात्वे आहारकद्विकजिननाममिश्र-मोहसम्यग्मोहाभावेनत्रनवतिरुदयेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त

विनासप्तनवतिरुदयेभवति मिश्रेअनतानुबधिचतुष्टयमनुष्यानुपूर्वी-मिश्रोदयेनचनिनवतिरुदयेभवति सम्यक्त्वेमिश्रभावेसम्यग्मोहमनुष्यानुपूर्वीयुक्तेचतुर्नवतिरुदयेभवति देशविरतेद्वितीयकषायचतुष्कमनुष्यानुपूर्वी १ वैक्रियद्विकदुर्भगानादेयायशलक्षणदुर्भगत्रिक एव १० दशप्रकृत्यपगमेचतुरशीतिरुदयेभवति प्रमत्तेतृतीयकषायचतुष्क नीचैर्गोत्रइतिपचकापगमेआहारकद्विकोदयेचएकाशीति उदयेप्राप्यते अप्रमत्तेपदसप्तति अपूर्वेद्वासप्तति अनिवृत्तौषट्षष्टि एवयावत्अयोगिगुणेद्वादशओघोदयवत्भावनीय ॥ २७ ॥

टबार्थ —नारकीनीमागणाए इगुण्याएसीनो उदय छे देवगतिमार्गणाये चोरासीनो उदय छे, एकद्रीयमार्गणाये अेंसीप्रकृतिनो उदय छे, तिर्यचगतिमार्गणाये एकसोसातनो उदय छे, मनुष्यगते एकसोबेनो उदय छे ॥ २७ ॥

विगलेदुसईचउदससय, पचेंदिएसुपुढविवणे । ७
गुणसीईतेउदुगे, सगसयरिजलमिअडसयरी ॥२८॥

टीका—विगलेदुसीइ इत्यादि । विकलेद्वित्रिचतुरिन्द्रियलक्षणेमार्गणात्रयेद्वाशीतिरुदयेओघ भवति ज्ञानावरणपचकदर्शनावरणनवक वेदनीयद्विकमोहनीयस्यचतुर्विंशति सम्यग्मोहमिश्रमोहपुरुषस्त्रीवेदलक्षणप्रकृतिचतुष्टयवर्जा तिर्यगायु नीचैर्गोत्रअतरायपचकनाम्नस्तुतिर्यग्द्विकद्वीद्रियजातिऔदारिकतैजसकार्मणलक्षणशरीरत्रिकऔदारिकोपाग सेवार्त्तहुडकसस्थानअशुभविहायोगति

* पाठातरे

गणसीदगीसयरिगइतसिसयम्रिसगसयरि

वर्णादिचतुष्टयउच्छ्वासोद्यतागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातषट्क सु-
भगेआदेयमतरेणत्रसषट्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रयविनास्थावरसप्तक
मिनिपचविंशतिमीलनेद्वाशीति ओघोदय प्राप्यते अत्रमिथ्यात्वे-
द्वयशीति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयविनाअशीति एवंत्रींद्रि-
येतुत्रींद्रियजाति चतुरिन्द्रियेतुचतुरिन्द्रियजातिग्रहणेनशेष द्वी-
न्द्रियवत्वाच्य चउदशसयपचेन्द्रियेसुत्तिपचेन्द्रियमार्गणाया चतुर्द-
शाधिकशतउदयेभवति तत्रसप्तकर्मणा पचपचाशत्नाम्नस्तु एकेन्द्रि-
यादिजातिचतुष्टयाभावेस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपाभावेचशेषैकोनषष्टि-
रुदयेप्राप्यते तदुभयमीलनेचतुर्दशाधिकशतभवतिओघत मि-
थ्यात्वेआहारकद्विकमिश्रमोहसम्यग्मोह जिननामलक्षणप्रकृतिप-
चकाभविनत्राधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीलक्षण-
प्रकृतित्रयमतरेणषट्विकशतभवतिमिश्रेतुअनन्तानुबंधिचतुष्कानुप-
र्व्वीत्रिकापगमेमिश्रमोहमीलनेचशतमेवोदयेप्राप्यते अविरतिसम्यग्-
दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एवसर्वगुणस्थानकेषुओघो-
दयपद्वाच्य पुढविवणेगुणसीई तत्रपृथ्वीकायमार्गणाया एकोना-
शीति ज्ञानावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक वेदनीयद्विकमोहनीय-
चतुर्विंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्रअन्तरायपचकनामकर्मण तिर्य-
ग्द्विक एकेन्द्रियजाति १ शरीरत्रिकहुडकसंस्थानवर्णादिचतुष्टय
प्रत्येकसप्तकत्रससुस्वादेयविशेषपदक साधारणदुस्वरविनास्थावरसूक्ष्म-
एवद्वात्रिंशत् अत्रपरघातोदयागीरस्तु कर्मग्रथाशयापेक्षयाज्ञेय ।
वणेत्तिवनस्पतिकायेपिएकानाशीतिरेवोदयस्तथाप्ययभेद सप्तक-
र्मणासप्तचत्वारिंशत्नामासुआतपोदयाभावेसाधारणोदयेचद्वात्रिंशत् ।
आतपोदय पृथिव्यामेवभवति मिथ्यात्वेएकोनाशीति सास्वादने-
सूक्ष्मअपर्याप्तमिथ्यात्वाभावेपचसप्तति प्राप्यते अत्रापर्याप्ताभा-
वस्तुलब्ध्यपर्याप्तापेक्षय आतपोदयस्तुपर्याप्तानांतत्पर्याप्तत्व सास्वा-

दनेनभवति तेननरपापगम वनस्पतिकायप्रत्ययेएकोनाशीतिमिथ्यात्वेएकोनाशीति सास्वादनेसूक्ष्मविकमिथ्यात्वाभावेपचसप्तति एवगुणस्थानद्वयतुप्रत्येकवनस्पत्यासाधारणवनस्पत्यातुमिथ्यात्वमेचभवति सपरीतापकायेसगसप्ततिसप्तसप्ततिस्त्रयेभवति तत्रसप्तकर्मणासप्तचत्वारिंशन्नाम्नस्तुतिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक हुडकसंस्थानवर्णादिचतुष्टयप्रत्येक पटक त्रसस्थावरसुभगादेयविनाशेषपटक साधारणदुस्वरत्रिकविनाशेषसप्तक एवएकत्रिंशत्सर्वमीलनेसुसप्तति मिथ्यात्वेसप्तसप्तति सास्वादनेसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वविनाचतुसप्तति तेजस्कायलक्षणामार्गणायासप्तकर्मणा सप्तचत्वारिंशन्नाम्नस्तु तिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक हुडकवर्णादिचतुष्टयउच्छ्वासागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातबादरपर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभलक्षणपचक साधारणदुस्वरविनाशेष स्थावरपटकएवउभयमीलनेपटसप्तति मिथ्यात्वेतुषष्टिसप्तति अनिलत्तिवायुकायलक्षणामार्गणाया वैक्रियशरीरोदयगणनकोनत्रिंशत्सप्तसप्तति प्राप्यते ॥२८॥

इनार्थ —विकलेन्द्रिनो छयासीनो उदय छे पचेन्द्रिमार्गणाये एकसोचौदनो उदय छे पृथ्वीकाय तथा वनस्पतिकायने इगुण्यासीनो उदय छे तेउकाय वायुकायने सतहत्तरिप्रकृतिनो उदय छे अपकाये अठहत्तरिप्रकृतिनो उदय छे ॥ २८ ॥

सत्तरससयतसमि, इगलाअभव्वदुअणाणमि ।*
मणयोगकसाएसु, विभंगचखूसुनवगसयं ॥ २९ ॥

* (पाठान्तरे)

अभव्वअन्नाणसतरअहिअसय ।

टीका—सत्तरससय इत्यादि । त्रसकायलक्षणमार्गणायासप्त-
दशाधिकशतप्रकृतिनाओघेउदयोभवति तत्रसप्तकर्मणापचाशत्ना-
म्नस्तु एकेंद्रियजातिआतपस्थावरसूक्ष्मसाधारणलक्षणप्रकृतिपचक
नास्तिशेषाद्वापष्टि उभयमीलनेसप्तदशाधिकशतउदयेओघत प्रा-
प्यते तत्रमिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहाख्यप्रकृतिप-
चक विनाद्वादशाधिकशतसास्वादनेतुमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीलि-
क्षणत्रयमन्तरेणनवाधिकशतउदयेभवति मिश्रेअनन्तानुबधिचतुष्टयानु-
पूर्वीनिरविकलत्रिकाभावे मिश्रमोहनीयप्रक्षेपेचप्रकृतीनाशतउदये-
प्राप्यते अविरतसम्यग्दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एव
ओघोदयवत्यावद्योगगुणस्थानकतावज्ज्ञेय अभव्यमार्गणायाअज्ञा-
नत्रिकमार्गणायासप्तदशाधिकशतओघेउदयोभवति मिश्रमोहसम्य-
ग्मोहजिननामाहारकद्विकविनासप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते मण
योगतिमनोयोगमार्गणाया एकेन्द्रियादिजातिचतुष्क स्थावरचतुष्क
आनुपूर्वी चतुष्कातपलक्षणत्रयोदशविनानवाधिकशतओघोदयेभ-
वति मिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहविनाचतुरधिक-
शतभवति सास्वादनेमिथ्यात्व विनाअधिकशतभवति मिश्रेत्वन-
तानुबधिचतुष्कविनामिश्रमोहनीयक्षेपेचशतउदयेभवति सम्यग्गुणे-
तुमिश्रमोहानुदये सम्यग्मोहोदये शतमेवदेशविरतेतुअप्रत्याख्यानच-
तुष्टयनरकगति नरकायुर्देवगति देवायुर्दुर्भगानेद्योयशोलक्षणप्रकृति
त्रयोदशकमन्तरेणसप्ताशीतेरुदयोभवति प्रमत्तेत्वेकाशीति अप्रमत्ते-
षट्सप्तति एवयावत्सयोगिगुणस्थानकेद्विचत्वारिंशदुदयेप्राप्यते ।
इति । कषायचतुष्टयेतुक्रोधकषायेमानचतुष्क लोभचतुष्क जिन-
नामलक्षणप्रकृतित्रयोदशाभावेनवाधिकशत मिथ्यात्वेआहारद्विक-
मिश्रसम्यग्मोहविनाषाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्व-
नरकानुपूर्वीविनानवनवति प्राप्यते एव गुणस्थानकेषुअनिवृत्ति-

बादरयावत्वक्तव्यमानकषायेष्वेयमायाकषायेष्वेवगुणस्थानदशकषा-
वत्वाच्च स्वनामकषायतोऽन्येनिवार्यातेचक्षुर्दर्शनमार्गणायांचजा-
तिचतुष्क स्थावरचतुष्कानुपूर्वीचतुष्कातप जिननाममतरेणचक्षु-
र्दर्शनेनवाधिकशत मिथ्यात्वेआहारकद्विकसम्यक्त्वमोहनीयमतरेणप-
चाधिकशतमास्वादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशत मिश्रेअनतानुबधी
चतुष्कचतुरिन्द्रियजातिलक्षणपचकापहारेमिश्रमोहक्षेपेशत सम्यग-
दर्शनेमिश्राभावेसम्यगमोहनीयउदयेशत देशेसप्ताशीति एव क्षीण-
मोहपावत्वाच्च विभगज्ञानेसम्यगमोहनीयजातिचतुष्क स्थावरच-
तुष्काहारकद्विकातपजिननामरूपप्रकृतिनवयोदशविनानवाधिकशत-
ओघेभगवत्यामनुष्यतिर्यगानुपूर्वीउदयकालेविभगप्रतिषेध कर्म-
ग्रथेतुऔदारिकमिश्रयोगोदयज्ञानेनअनविवक्षित मिथ्यात्वेमिश्रमोह-
नीयविनाअष्टाधिकशत मिथ्यात्वनरकानपूर्वीविनापडधिकशत मि-
श्रेअनतानुबधीचतुष्टयानुपूर्वीनयाभावे मिश्रमोहनीयक्षेपेशतउदये-
भवति ॥ २९ ॥

स्वार्थ —एकसो सत्तरनो उदय त्रसने विषे एकेंद्रियआतप थावर सूक्ष्म साधारण विना एकसो सत्तरनो उदय छे, त्रसकाय-मिथ्यात्व अभव्यमार्गणाये बे अज्ञानमार्गणाये एकसो सत्तरनो उदय छे, मिश्रमोहनी १ सम्यक्त्वमोहनी २ जिननाम १ आहारक १ आहारकमिश्र २ ए पाच नथी मनोयोगने विषे कषाय ४ ने विषे विभगने विषे चक्षुदर्शनने विषे पद्मलेश्याने विषे एकसो नवनो उदय छे तिहा मनोयोगमे जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप ए तेरनो उदय नथी, कषाय ४ मे अन बार कषाय जिननाम विना विभगने चक्षुदर्शननो पद्मलेश्याने जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप विना ॥२९॥

वयणेबारहीयसय, थीतिनाणेसुओहिदसेअसम्म।
दुगिच्छसयउदओ, उवसमगेतिगसयउदओ ॥३०॥

टीका—वयणेबारहीयसय । वचनयोगेसप्तकर्मणापचपचाशत्नामकर्मणस्तुगतिचतुष्टय एकेन्द्रिय विनाजातिचतुष्कशरीरोपागसह संस्थानवर्णादिचतुष्कखगतिद्विकआतपमनरेणप्रत्येकसप्तकत्रसदशक लब्ध्यपर्याप्तापेक्षयास्थावरचतुष्कमनरेण स्थिरादिषट्क एवसप्तपचाशत् एकेन्द्रियजात्यानपानुपूर्वीस्थावरचतुष्कमनरणगर्वमीलनेद्वादशाधिकशत तत्रोमिथ्यात्वेजिनाहारक द्विकमिश्र "सम्यग्मोहपचरहित सप्ताधिकशत तत् मिथ्यात्वरहित षडधिकसास्वादनेतदेवानतानुबन्धिविकलत्रिकरहित मिश्रमोहयुक्तचमिश्रेनदेवमिश्रमोहरहित सम्यग्मोहयुक्त शत सम्यग्दर्शने तदेवाप्रत्याख्यानचतुष्टयदेवगत्यायु नरकगत्यायु वैक्रियशरीरोपागलक्षणषट्क दुर्भगानादेयायशोरूपत्रिकमिनित्रयोदशापगमेसप्ताशीति साएवतिर्यग्गत्यायुर्नीचैर्गोत्रोत्रप्रत्याख्यानचतुष्टयानुदये आहारकद्विकोदयेएकाशीति, एवत्रयोदशापावज्ञेय तथा थीतिनाणेसुओहिदसे असम्मदुगिच्छसयउदओइतिस्त्रीवेदेज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेक्षयोपशमक्षायिकलक्षणेसम्यग्दर्शनद्वयेएवमार्गणासप्तक, ठअहीयत्तिषटअधिकशतउदयेओघ प्राप्यते तत्रस्त्रीवेदमार्गणायासप्तकर्मसुपुरुषनपुसकवेदनरकायुषिविनाद्विपचाशत्, नामकर्मणस्तुनरकगत्यानुपूर्वाद्वय एकेन्द्रियादिजातिचतुष्टयस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रिक आतपनामजिननामाहारकद्विकत्रयोदशक विनाचतु पचाशत्उभयमीलनेषटधिकशतउदयेओघ तदेवमिश्रसम्यग्मोहद्वयापगमेमिथ्यात्वचतुरधिकशततदेवमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयाभावेसास्वादनेद्व्यधिकशततदेवानतानुबन्धिआनुपूर्वीत्रयानदयेमिश्रोदयेचषण्णवतिस्तदयोमिश्रेप्राप्यते ।

साएवमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रयोदयेचनवनवति सम्यग्दर्शनेसाएवाप्रत्याख्यानचतुष्टयदेवद्विकदुर्भगत्रिवैक्रियद्विकनरतिर्यगानुपूर्वीलक्षणचतुर्दशापगमेपचाशीति देशविरतिगुणस्थानकेउदयोभवति। साएवप्रत्याख्यानचतुष्कनीचैर्गोत्रोद्योततिर्यग्गतितिर्यगायुर्लक्षणाष्टकानुदयेसप्तसप्तति प्राप्यते, अप्रमत्तेस्त्यानर्द्धित्रिकाभावाच्चतु सप्तति अपूर्वकरणेअतिसंहननत्रिकसम्यग्मोहनीयापगमेसप्तति, अनिवृत्तिबादरेहास्यषट्काभावाच्चतु षष्टिरुदयेभवति तत्र परवेदाभावेत्वष्टसप्तति स्त्यानर्द्धिकावधिदर्शनक्षयोपशमक्षायिकमार्गणानुजानिचतुष्कस्थावरचतुष्कानपजिननामानतानुबधिमिथ्यात्वमिश्रलक्षणषोडशाभावेषडधिकशतओघोदय अविरतसम्यग्दर्शनेआहारकद्विकाभावेचतुरधिकशत, देशेसप्तदशाभावात्सप्तशीति, क्षीणमोहयावत्वा य क्षयोपशमेअप्रमत्तयावत्, क्षायिकेतुजिननामक्षेपेसम्यग्मोहनीयवर्जनेषडधिकशतअयोगिगुणयावत्वाच्यम् ॥ उपशमेउपशमसम्यग्मार्गणायाक्षयोपशमप्रायोग्यषडधिकशतेआहारकद्विकसम्यग्मोहनीयाभावेअधिकशतओघेप्राप्यते, देशेऽशीति प्रमत्तेतत्रस्त्यानर्द्धित्रिकापगमेपचसप्तति एवउपशांतमोहयावत्वाच्यम् ॥ ३० ॥

टबार्थ —वचनयोगे एकसोबारनो उदय जातिएकेन्द्रि १ थावर ४ आनुपूर्वीआतप एहनो उदय नथी स्त्रीवेदने विषे वेद २ जाति ४ आहारक २ आनुपूर्वी ४ थावरसूक्ष्म साधारण ३ आतप एव १६ प्रकृति विना एकसोछनो उदय छे. तीन ज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशमसमकित १ एटली मार्गणाये जाति ४ थावरसूक्ष्म अपर्याप्तनाम साधारण ३ आतप १ जिननाम १ अनतानुबधि ४ मिथ्यात्व १ मिश्रए १६ विना १०६ प्रकृ-

तिनो उदय छे इहा अपर्याप्तपणो काढीए ते लब्धिअपर्याप्तो-गवेष्यो छे उपशम समकित एकसोछ मध्येथी स्त्रीवेद १ आ-हारकद्विक २ ए तीन काढीये तेवारे एकसोतीननो १०३ नो उदय छे ॥ ३० ॥

मिच्छतिगिदेससुहुमे, सठाणुदओअपुरिसिअट्ठसय*
मणनाणेइगसीई, केवलिजुअलेवयालीस ॥ ३१ ॥

टीका--मिच्छतिग इत्यादि ॥ मिथ्यात्वेसम्यग् मिश्रमोह-जिनाहारकद्विकोदयाभावेसप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते, सास्वादने-एकादशाधिकशतउदयेप्राप्यते, मिश्रेशतप्राप्यते देशेसप्ताशीति उद-येप्राप्यते, सूक्ष्मसपरायेषष्टिरुदयेप्राप्यते, सगतिस्वकृतिस्वस्वगुण-स्थानप्रायोग्योदया प्राप्यते, षढेनपुसकवेदलक्षणेसोलइतिषोडशा-धिकशतउदयेओघ प्राप्यते, देवत्रिक वेदद्विक जिननामोदयरहित भवति, मिथ्यात्वेसम्यग्मिश्रमोहाहारकद्विकरहितद्वाशाधिक शत-प्राप्यते, तदेवसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनाषडाधिकशत-सास्वादनेप्राप्यते, अननानुबधिस्थावरकेंद्रियादिजातिचतुष्कानु-पूर्वीतिर्यगानुपूर्वीत्रिकानुदयेमिश्रमोहोदयेपचनवति साएवमिश्र-मोहानुदये सम्यग्मोहोदये आनुपूर्वीप्रक्षेपेचअष्टनवनवति प्राप्यते द्वितीयकषायमनुष्यानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी नरकत्रिकवैक्रियद्विकदुर्भ-गत्रिकाभावेचतुरशीति प्राप्यते एवप्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्ते-सप्तति अपूर्वेएकोनसप्तति अनिवृत्तौतुषष्टि एववाच्य पुरिसित्ति-पुरुषवेदमार्गणाया जातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपनरकानिक-

* (पाठातरे)

सगसढेसोलपुरिसेअ ।

जिननामअन्यवेदद्वयाभावेअष्टाधिकशतओघोदय प्राप्यते, गुणस्थानक्रमश्चमिथ्यात्वे आहारद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोहाभावेचतुरधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त विनाष्ट्यधिकशतमिश्रअनतानुबधिआनुपूर्वीविनाविनामिश्रमोहक्षेपेचषण्णवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहाभावेसम्यग्मोहानुपूर्वीविनिक्षेपेनवति, देशविरतौअप्रत्याख्यानीयवैक्रियद्विकदेवनिकमनुष्यतिर्यगानुपूर्वी दुर्भगनिकरूपचतुर्दशन्यपगमेपचाशीति प्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्तेचतु सप्तति अपूर्वेसप्तति अनिवृत्तिबादरेचतु षष्टि इतिनेय मणनाणेत्ति मन पर्यवज्ञाने एकाशीति प्रमत्तगुणस्थानोदययोग्यातन क्षीणमोहयावज्ज्ञेय केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणेमार्गणाद्वयेद्विचत्वारिंशत् नयोदशगुणस्थानोदयेचतुर्दशेतुद्वादश ॥ ३१ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र १ देशविरति १ सूक्ष्मसपराय एटली मार्गणाए नामगुणठाणे जे कही ते प्रकृतिनो उदय छे, मिथ्यात्वे ११७ एकसो सत्तरनो सास्वादने एकसो अगीयार १११ उदय छे, मिश्रे १०० नो प्रकृति उदय छे, देशविरतीमें ८७ सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे, सूक्ष्मसपराये ६० साठ प्रकृतिनो उदय छे, पुरुषवेद एकसो आठनो १०८ उदय छे, जाति ४ थावर ४ आतप १ जिननाम १ नरक २ वेद २ ए १५ प्रकृति नथी मन पर्यवज्ञाने एक्यासी प्रकृतिनो उदय छे, जे छठा गुणठाणे छे ते लेवी केवलज्ञान केवलदर्शननी बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, तेरमा सयोगी गुणठाणा मध्ये उदय छे ते लेवी ॥ ३१ ॥

परिहारेअडसयरि, सामइयछेएसु हुतिइगसोइ ।
सट्ठीओअहक्खाए, इगवीससयअचक्खुम्मि ॥३२॥

टीका—परिहारेअडसयरित्यादि परिहारविशुद्धिचारित्रेअष्टसप्ततिस्तत्रप्रमत्तयतिप्रायोग्यैकाशीतित स्त्रीवेदाहारकद्विकापगमेअष्टसप्तति साएवस्त्यानर्द्धित्रिकाभावेचसप्ततिरप्रमत्तेभवति, सामाइयछेएसुत्ति सामायिकेछेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेएकाशीति प्रमत्तयतिप्रायोग्याउदयेभवतिओघ प्रमत्तेचअप्रमत्तादौओघोदयवत् सट्ठीओइतियथाख्यातचारित्रेषष्टिप्रकृतीनामुदयेओघ तत्रएकोनषष्टिरुपशातमोहप्रायोग्याजिननामयुक्तापष्टिर्भवतिओघेतत्रोपशातमोहेएकोनषष्टि क्षीणमोहेसप्तपचाशत् सयोगिकेवलिगुणेद्वाचत्वारिंशत् अयोगिगुणेद्वादशउदयेभवन्ति अचक्षुर्दर्शनेजिननामाभावात् एकविंशत्यधिकशत ओघ उदयेभवतिमिथ्यात्वादारभ्यक्षीणमोहपर्यन्तओघोदयवद्भावनीयम् ॥ ३२ ॥

टबार्थ—छठा गुणठाणाप्रत्ययी ८१ इक्यासी प्रकृतिनो छे ते मांये स्त्रीवेद १ आहारक काढीए तेवारे परिहारविशुद्धिचारित्रमे अठहत्तरि प्रकृतिनो उदय छे, सामायिक १ छेदोपस्थापनीयचारित्रे छठा गुणठाणावालाने इक्यासीनो उदय छे, यथाख्यातचारित्रे साठ प्रकृतिनो उदय छे, इगुणसट्ठी इग्यारमे उदय छे, ते मांये एक जिननाम मेलिये तेवारे साठ थाइ, अचक्षुदर्शनमे जिणनामकर्म विना एकसो एकवीसनो उदय छे ॥ ३२ ॥

अजए इगुणीससय, आइतिलेसेगवीसयुअसयग।
एगारनवयदसहिय, सयचतेउतिगेनेय ॥ ३३ ॥

टीका—अजएइगुणीससयइत्यादि अजयेअविरतिमार्गणायाआहारकद्विकजिननामोदयरहिता एकोनविंशत्यधिकशतप्रकृतय

ओघोदयेभवति, मिथ्यात्वेमिश्रमोहसम्यग्मोहविनासप्तदशाधिकसास्वादने १११ मिश्रे १०० अविरते १०४ भवति आदिलेश्यात्रयेकृष्णनीलकापोतलक्षणेजिननामोदयाभावात् एकविंशत्यधिकशतप्रकृतीनाओघ एवप्रमत्तयावत्वाच्यएगारेत्यादितेजस्त्रिकेतेजोलेश्यामार्गणायानरकायु विनाचतु पचाशत्सप्तकर्मप्रकृतय नाम्नस्तुनरकद्विकविकलत्रिकापर्याप्तसूक्ष्मसाधारणातपजिननामरहिता सप्तपचाशत्उभयमीलनेएकादशाधिकशतओघोदय मिथ्यात्वेमिश्रमोहसम्यग्मोहाहारकविनासप्ताधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वविनापडधिकशतमिश्रे अनतानुबधिचतुष्कानुपूर्वीत्रिकेकेंद्रियजातिस्थावरनामाभावेमिश्रोदयेचअष्टनवति अयतेमिश्रमोहानुदयेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रिकमीलनेएकाधिकशत देशविरतौचतुर्दशापगमेसप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीतिरप्रमत्तेषट्सप्ततिरितिज्ञेय पद्मलेश्यायातेजोलेश्याप्रायोग्येकादशाधिकशतप्रकृतौएकेंद्रियजातिस्थावरनामाभावेनत्र्याधिकशतओघेमिथ्यात्वेपचाधिकसास्वादनेचतुरधिकशतमिश्रेअष्टनवति अविरतसम्यग्दर्शनेएकाधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति, प्रमत्तेएकाशीति अप्रमत्तेषट्सप्तति इतिवाच्य शुक्ललेश्यायादशाधिकशतओघत उदयोभवति जातिचतुष्कस्थावरचतुष्कातपनरकत्रिकविनादशोत्तरशतओघेमिथ्यात्वेसम्यग्मिश्रमोहाहारकद्विकजिननामविनापचोत्तरशतसास्वादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशतमिश्रेअनतानुबधिचतुष्कानुपूर्वीत्रिकाभावेमिश्रमोहक्षेपेचअष्टनवतिर्भवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहाभावेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रिकप्रक्षेपेएकाधिकशतदेशविरतौचतुर्दशाभावेसप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति एवसयोगिगुणस्थानपावज्ज्ञेय ३३॥

टबार्थ —अविरतिमार्गणाये एकसो ओगणीसनो उदय छे, आहारकजिन नाम विना ए तिन विना आदि तीन लेश्याने विषे जिन नाम विना एकसो वीसनो उदय छे, नरक ३ विकल

३ सूक्ष्म ३ आतप १ जिन नाम ए विना तेजोलेश्यामे एकसो इग्यारनो उदय ए इग्यार तथा एकेंद्रीथावर १ ए विना एकसो नवनो उदय छे, शुक्ललेश्याने विषे जाति च्यार थावर ४ आतप १ नरक ३ ए बार विना एकसो दसनो उदय छे ॥३३॥

चउदससयचसन्निसु, अट्ठारसअहीयसयतुआहारे।
तणुभविदुवीससय, अणहारेअसीईनवअहीया* ३४॥

टीका--चउदससयचसन्निसुइत्यादि सज्ञिमार्गणायाएकेंद्रियादिजातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपलक्षणाष्टकोदयविनाचतुर्दशाधिकशतओघेभवति मिथ्यात्वेपचकमतरेणनवाधिकशतसास्वादने अपर्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनाषट्टिकशतमिश्रेअनतानुबध्यानुपूर्वीत्रिकाभावेमिश्रक्षेपेचशतउदयेभवतितत अयोगिपर्यंतओघोदयवत्भावनीयसज्ञिमार्गणायाअपर्याप्तोदयग्रहणतु सुक्कासन्नीसुसन्निदुग इत्याशयातु ॥अट्ठारसत्तिआहारकमार्गणाया आनुपूर्वीचतुष्टयोदयाभावात् अष्टदश उदयेभवति मिथ्यात्वेपचकाभावात् त्रयोदशाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्वाभावात् अष्टाधिकशतमिश्रेअनतानुबधिजातिचतुष्कस्थावराभावेमिश्रक्षेपेचशतसम्यक्त्वेमिश्रेवानुदयेसम्यग्मोहोदयेचशतमेवेतितत त्रयोदशाभावेसप्ताशीतिएवप्रमत्तादिषुसयोगिपर्यंतेषुवाच्य तणुत्ति तनुयोग काययोग भव्वत्ति भवसिद्धिकलक्षणेमार्गणाद्वयेद्वाविंशत्यधिकशत ओघेभवतिमिथ्यात्वादिषुओघोदयवत् अनाहारकमार्गणायाऔदारिकवैक्रियाहारकशरीरोपागसहननसस्थानविहायोगतिपराघातोच्छ्वासातपोद्योतो-

* (पाठातरे)
नवहिअदुग

पघातसुस्वरदु स्वरप्रत्येकसाधारणमिश्रमोहलक्षण प्रकृतिर्त्रिंशदनुदये-द्विनवति ओघेउदय सभा यतेआदेयानादेयोदयस्तुस्वरोदयेप्रोक्त-वाक्यस्यपरेश्रुतस्यादेयताभवतिवक्त यकालेतुआहारकत्वपश्चात्सम-यातरे अनाहारकत्वप्रपत्स्यादेयनानादेयताचोदयेभवति अयोगि-गुणस्थानके च स्वरनामोदयाभावेप्यादेयनामोदयउक्तइतिनिदर्शनात मिथ्यात्वेसम्यग्मोहजिननामानुदयेनवतिर्भवति, सास्वादनेसूक्ष्माप-र्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीसम्यग्मोहोदयेएकोनाशीति सयोगिगुणे-मनुष्यगतिअयोगिगुणेद्वादशपचेंद्रियजाति १ त्रसत्रिकसुभगत्रिक-ध्रुवोदयीद्वादशजिननामवेदनीयद्वयउच्चैर्गोत्रमनुष्यायु एवपचविंशति ॥ ३४ ॥

टबार्थ—सज्ञीमार्गणाए जाति ४ थावर ३ आतप ए आठ विना एकसो चौदनो उदय छे, च्यार आनुपूर्वी विना एकसो अढारनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोगभव्यमार्गणामे एकसो बावीसनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोग भव्य-मार्गणामे एकसोबावीसनो उदय छे अनाहरकमार्गणाए गुणनि-वेनो (बाणुनो) उदय छे शरीर ३ उपाग ३ सघयण ६ सस्थान ६ वर्णादि ४ वययोगनि १ परावात १ उच्छ्वास १ आतप १ उद्योत १ उपवात १ सुस्वर १ दुस्वर १ ए विना ॥३४॥

चउनवईअसन्निसु, उदयसामित्तमग्गणाठाणे।
केवलदुगवज्झासु, सव्वासुनाणविग्घुदयो ॥३५॥

टीका—चउनवइअसन्निसु इत्यादि। असज्ञिमार्गणायाज्ञा-नावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक वेदनीयद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोह पुरुषवेदस्त्रीवेदोदयविनाचतुर्विंशति नरकायुर्देवायुर्द्वयविनाआयुर्द्वय

नीचैर्गोत्रअतरायपचक एवअष्टचत्वारिंशत्नाम्नस्तु निर्यग्मनुष्यगत्यानुपूर्वीचतुष्य जातिपचकवैक्रियाहारकविनाशरीरओदारिकोपाग त्रयमेवार्त्त १ हुडकवर्णादिचतुष्कअशुभविहायोगति सप्तकतीर्थकरविनाप्रत्येकनसस्थावरदशकएवपचचत्वारिंशत् वैक्रियशरीरेचगृहीतेचतुर्नवति असज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेपिचतुर्नवति सूक्ष्मत्रिकानपमिथ्यात्वविनाएकोननवति सास्वादनेप्राप्यतेइति प्रोक्तउदयस्वामित्वमार्गणास्थाने,मार्गणासुकर्मोदयविवरणवाहकेवलदुगत्तिकेवलज्ञानकेवलमार्गणावर्जयित्वाशेषासुषष्टिमार्गणासु ज्ञानावरणीयातरायदशकस्योदय प्राप्यते ॥ ३५ ॥

टबार्थ—चउनवई चोराणुनो उदय छे, असज्ञीमार्गणामे उदय छे, समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद १ नरकायु १ देवायु १ नरकगति १ देवगति १ आहारक २ सघयण ५ सस्थान ५ देवानुपूर्वि १ नरकानुपूर्वि १ शुभविहायोगति १ परावात १ तिर्थकरनाम १० तथा ए मार्गणाए स्वामी कह्यो, केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ नो उदय नथी शेष सर्व मार्गणाए ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ ए दश प्रकृतिनो उदय छे ॥ ३५ ॥

दसणरोहकम्म, सुहुमाहक्खायगेसुछगुदओ ।
केवलदुगेअभावो, सेसासुनवेवउदयमि ॥ ३६ ॥

टीका—दसणरोह इत्यादि दर्शनेसामान्योपयोगरूपगुणरोधयतीत्येवशीलदर्शनरोधदर्शनावरणीयकर्म सुहुमाहक्खायगे सूक्ष्मसपराययथाख्यातलक्षणमार्गणाद्वये दर्शनावरणीयचतुष्कनिद्राप्रचलाद्वयप्रकृतिषट्क उदयेप्राप्यते केवलदुगेकेवलज्ञानकेवलदर्शनल-

क्षणापामार्गणायादर्शनावरणीयस्योदयाभाव सेषासुअष्टपचाशत्-मार्गणासुदर्शनावरणीयकर्मणोनवप्रकृतय उदयेप्राप्यते ॥ ३६ ॥

टबार्थ —दर्शनावरणीयकर्म सूक्ष्मसपरायगुणठाणे यथाख्यात मार्गणाये दर्शनावरणी ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिकेवल ४ ए च्यार आवरण निद्रा १ प्रचला १ ए ६ नो उदय छे, केवल-दुगने विषे दर्शनावरणीकर्मनो अभाव छे, शेष अठावनमार्ग-णाए नवनो उदय छे, दर्शनावरणीये नवे प्रकृतिनो उदय लाभे ॥ ३६ ॥

सव्वासुवेअणीए, उदयदुगनीअगोअउदयं च ।
निरएथावरतिरिए, चउजाईअसन्निठाणेसु ॥ ३७ ॥

टीका—सव्वासुत्ति सर्वासुद्विषष्टिमार्गणासु वेदनीयकर्मप्रत्य-याइतिवेदनीयकर्मण प्रकृतिद्विकउदयेप्राप्यते, नीचैर्गोत्रउदयचेति-चपुन नरकगतिमार्गणायापृथिव्यादिपचस्थावरकायमार्गणायातिर्य-ग्गतिमार्गणायाएकेंद्रियविकलेंद्रियजातिचतुष्कमार्गणाया असज्ञि-मार्गणायाएवद्वादशमार्गणास्थानेषुनीचैर्गोत्रस्यउदय प्राप्यते, नउच्चै-र्गोत्रोदय उच्चैर्गोत्रविपाकस्तुअष्टप्रकार प्रज्ञापनोक्तस्तस्यतत्राभावा-त्नीचैर्गोत्रवि पाकस्यतत्रप्राप्यमाणत्वात् ॥ ३७ ॥

टबार्थ —सर्वमार्गणाए वेदनीयकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय छे, शाता १ अशाता २ ए बे जाणवी, नीचगोत्रनो उदय छे ए मार्गणाए ते कहे छे, नरकगतिथावर पाचमे तिर्यंचगति एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चौरेंद्री ए कहीये, च्यार जाति असज्ञिमार्गणा विषे एक नीचगोत्रनो उदय छे एत्र ॥ ३७ ॥

मणनाणकेवलिदुगि, सजमपणगेसुउच्चउदयोत्ति ।
सेसासुगोयजुअल, देसअसन्नीसुआउदुग ॥ ३८ ॥

टीका—मणनाण इत्यादि मन पर्यवज्ञानकेलद्विकसयमपचैक-लक्षणासुमार्गणासुउच्चैर्गोत्रोदय नीचैर्गोत्रोदयस्यपचमेगुणस्थाने प्राप्यतेसर्वथैवनिवृत्तत्वात् शेषासुद्विचत्वारिंशन्मार्गणासुगोत्रयुगल-उच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रलक्षणप्रकृतिद्वयउदयेप्राप्यतेइति आयु कर्मविषयेतु देशविरतिमार्गणाअसज्ञिमार्गणासुआउदुगतिर्यग्मनुष्यायूरूपआयु-द्विकउदयेप्राप्यते ॥ ३८ ॥

टबार्थ—मन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन पाच सयम एटली मार्गणाए एक उच्चगोत्रनो उदय छे एव १९ शेष मार्गणाइ उचगोत्र नीचगोत्र बे कर्मनो उदय छे, देशविरति मार्गणाइ तथा असज्ञिमार्गणाइ आऊखा २ नो उदय छे, एक तिर्यचनो एक मनुष्यनो ए बे आऊषानो उदय छे ॥ ३८ ॥

गईजाईचउसुथावरि, सयममणनाणकेवलदुगमि ।
एगतेउतिगेसु, वेयतिगेतिन्निउदयाई ॥ ३९ ॥

टीका—गईजाईचउसु इत्यादि गतिर्नरकादिस्तत्रएकैकआयु उदयेप्राप्यते, तत्रनरकगतौनरकायु तिर्यग्गतौतिर्यगायु मनुष्यगतौ-मनुष्यायु देवगतौदेवायु उदयेप्राप्यते जातिषुएकेंद्रिय द्वींद्रियत्रीं-द्रिय चतुरिंद्रियलक्षणासुचतसृषुस्थावरितिपृथ्व्यादिपचस्थावरकायमा-र्गणासु एकतिर्यगायु उदयेप्राप्यते, सयमपचकेसामायिकादिकेमन प-र्यवज्ञानेकेवलज्ञानदर्शनद्विकाष्टमार्गणासुएकमनुष्यायुर्लक्षणउदयेप्रा-प्यते तेउतिगेतेजोपद्मलेश्याशुक्ललेश्यालक्षणेलेश्यात्रिकेनरकायुर्वि-

नारीणिनरतिर्यग्देवलक्षणान्यायूषिउदयेप्राप्यन्तेनेयतिगोतिवेदत्रिवे-
नीणिनीणिआयूषिउदयेभवन्तिनपुसकवेदेदेवायुर्विनानीणिस्त्रीवेदेपुरु-
षवेदेनरकायु विनानीणिआयूषिउदयेप्राप्यते ॥ ३९ ॥

टबार्थ—गति च्यार ने पोना २ नो एक आउखानो उदय छे जाति च्यारे एकेन्द्रि, विकलेन्द्रि, एहने विषे एक तिर्यंच आउखानो उदय छे थावर पाचमे एक तिर्यंचायुनो उदय छे सपम ५ मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, केवलदर्शन एटली मार्गणाये एक मनुष्यायु उदय छे तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ल-लेश्यामे नारकायु विना तीन आऊखानो उदय छे. वेदनीने तीन आऊखानो उदय नपुसकवेदे देवायु विना २ नो उदय स्त्रीवेदे पुरुषवेदे नरकायु विना तीन आऊखानो उदय छे ॥३९॥

चत्तारियसेसासु, तिरिनिरिपचेंदियोगतसअजये ।
चरकुदुहारगलेसे, भवसन्नीसुअडवीस ॥ ४० ॥

टीका—चत्तारिअ इत्यादिशेषासुत्रयस्त्रिंशन्मार्गणासुचत्वारि-आयूषिउदयेभवति जीवभेदेनएकजीवस्यएकस्मिन्भवेएकस्यैवायुष उदयोभवतिआयु कर्मण प्रदेशोदय विपाकोदयविनानास्ति-सक्रमोपिनास्तिएवज्ञेय अथमोहोदयविभजनाह तिरिइत्यादि ति-र्यग्नरगतिपचेन्द्रियजातियोगत्रिकत्रसकायाविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनाहा-रकलेश्यापट्कभव्यसज्ञिलक्षणासुएकोनत्रिंशतिमार्गणासुमोहनीयक-र्मण अष्टाविंशतिप्रकृतय उदयेप्राप्यते मार्गणोदयश्चमार्गणागता-'नेकजीवापेक्ष एकजीवोदयस्तु उदयभगकात्ज्ञेय ॥ ४० ॥

टबार्थ—शेषमार्गणाये च्यार आऊखानो उदय छे. हवे

मोहमार्गणा कहे छे तिरिगति मनुष्यगति पचेन्द्रि मार्गणाये तीन योग त्रसकायमार्गणाने विषे अविरतिमार्गणाइ चक्षु १ अचक्षुदर्शनमार्गणाइ आहारकमार्गणाये लेश्या ६ ने विषे भव्यमार्गणाये पुरुषवेदइ सज्ञीमार्गणाइ मोहनीकर्मनी अठावीस प्रकृतीनो उदय छे ॥ ४० ॥

नपुविणुदेवगईए, निरएपुरसित्थिहीणइगविगले।
थावरअसन्निएसु, असम्ममीसायचउवीस ॥४१॥

टीका—नपुविणु इत्यादि ॥ देवगतौनपुसकवेद विनासप्तविंशतिर्मोहप्रकृतय उदयेप्राप्यते निरएत्तिनरकगतौपुरुषवेदस्त्रीवेदविनाषड्विंशति उदयेइगत्तिएकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय स्थावरपचकासज्ञिलक्षणासुदशसुमार्गणासुपुरुषस्त्रीवेदविनाषड्विंशति असम्मत्तिसम्यग्मोहमिश्रमोहविनाचतुर्विंशति उदयेप्राप्यते ॥ ४१ ॥

टबार्थ—देवगतिमार्गणाये नपुसकवेदनो उदय नथी नरकमध्ये पुरुषवेद १ स्त्रीवेदविना २६ प्रकृतिनो उदय छे, मोहनिनो एकेन्द्रिय १ विकल ३ थावर ५ असज्ञीमार्गणाये नपुसकवेदनो उदय छे, स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेदनो उदय छे नही, अने समकीतमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए ४ विना चोवीस प्रकृतिमोहनीनो उदय छे ॥ ४१ ॥

वेएदुवेअहीणा, अवारकसायचउगेसु।
मणनाणदुसामईए, चउदसथीहीणपरिहारे॥४२॥

टीका—वेएदुवेअहीणा इत्यादि ॥ वेदानिकेवेदद्वयहीनातत्रपुरुषवेदेस्त्रीनपुसकवेदविनाषड्विंशति स्त्रीवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनाषड्-

विंशति नपुसकवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनापड्विंशति उदयेभवति क-सायचउगेत्तिकषायचतुष्केषु क्रोधमानमायालोभलक्षणेषुअनतानु-बधिकषायद्वादशविनाषोडशउदयेप्राप्यन्ते मन पर्यवज्ञानसामायिक-छेदोपस्थापनीयचारित्रेसज्वलनचतुष्कहास्यषट्कवेदत्रिकसम्यग्मोह-लक्षणचतुर्दशप्रकृतय उदयेप्राप्यते परिहारविशुद्धौस्त्रीवेदविनाता-एवत्रयोदशभवन्ति ॥ ४२ ॥

टबार्थ —पुरुषवेदमध्ये स्त्रीवेद नपुसकवेदनी २६ नो उदय छे स्त्रीवेदमध्ये पुरुष नपुसक विना २६ नो उदय छे नपुसक-वेदमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद विना २६ नो उदय छे क्रोधकषाय-मध्ये मान ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे मानमध्ये क्रोध ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे इम मायामध्ये १६ उदय इम लोभमध्ये १६ उदय छे मन पर्यव ज्ञानमध्ये सामायिकना भेद जाणवा १५ उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये स्त्रीवेद विना १४ उदय छे ॥४२

नाणतिगओहिदसे, वेअगसम्मेअमिच्छअणमीसा।
सम्मविणुदुसम्मत्ते, मीसजुआतेउमीस्सम्मि॥४३॥

टीका—तथाज्ञानत्रिकेवधिदर्शनेवेदगत्तिवेदकेक्षायोपशमसम्य-ग्दर्शने अमिच्छात्तिनविद्यन्ते मिथ्यात्वानतानुबधिमिश्रा इत्यनेनमि-थ्यात्वमोहनीयअनतानुबधिचतुष्टयमिश्रमोहविनाद्वाविंशति उदयेप्रा-प्यन्ते,दुसम्मत्तेइतिद्विसम्यक्त्वेक्षायिकोपशमलक्षणेसम्यक्त्वद्विकेसम्म विणुइतिसम्यग्मोहनीयविनाइत्यनेनवेदकसम्यग्प्रायोग्याद्वाविंशति। सम्यग्मोहनीयरहिताएकविंशति उदयेप्राप्यते उभयोरपिनिरतिचा-रित्वात् जातिचारित्राचक्षयोपशमगुणवतएवभवति मिसजुआइति-

तेउत्तिताएकविंशतिर्मिश्रमोहोदयेनयुक्ताद्वाविंशतिर्मोहस्यउदय मिश्रे-प्राप्यते ॥ ४३ ॥

टबार्थ—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन वेदक समकित ए मार्गणाए मिश्रदृष्टि १ अनंतानुबंधि ४ मिश्र-मोहनी विना बावीस प्रकृतिनो उदय छे, वे समकितमध्ये उप-शम तथा क्षायिकमध्ये समकितमोहनी विना २१ प्रकृति मोह-कर्मनी उदय छे, मिश्रदृष्टिमार्गणाए मिश्रमोहनी मेलीइ तेवारे बावीसनो उदय छे ॥ ४३ ॥

केवलिदुगहरकाए, उदयाभावोअनाणतिगेसु ।*
छगसगवीसदेसे, अट्ठारसगवीसमणहारे ॥४४॥

टीका—णोकेवलिहरकाए इत्यादि केवलत्तिकेवलज्ञान-केवलदर्शनयथाख्यातचारित्रिणोनमोहोदय उपशांतमोहगुणस्थाने यथाख्यातचारित्रवतो नमोहोदय सर्वथोपशांतत्वात्प्रतिपातश्च-स्थित्यद्धाक्षयकारणेनसत्ताम्यितत्वेनपुन प्रादुर्भाव क्षीणमोहादिषु-मोहस्यचयोदयोदीरणसत्तायाः सर्वथाअभावात्प्रतिपात इति सुह-मिगलोभोत्ति, सूक्ष्मसपरायचारित्रेइगनिएकएवसज्वलनलक्षणस्य-लोभस्यउदय, अज्ञानत्रिके छगसगवीसत्तिषड्विंशति सप्तविंशति-र्वाउदयेभवन्ति, तत्रयेषामतेमिश्रेज्ञानमिच्छतितन्मतेसम्यग्मोहमि-श्रमोहोदयविनाषड्विंशति, येचमिश्रेअज्ञानमिच्छतितन्मतेमिश्रेस-म्यग्मोहविनासप्तविंशति उदयेभवन्ति, देसेत्तिदेशविरतौअनंतानु-

* पाठांतरे

[illegible]मिगलोभोअनाणत्तिगेसु ।

वन्यप्रत्याख्यानद्वयकषायाष्टकमिश्रमिथ्यात्वोदयविनाशेषा अष्टादशउदयेभवति, सगवीसत्ति, अनाहारकमार्गणाया मिश्रमोहोदय विनासप्तविंशति उदयेभवति ॥ ४४ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रे मोहनीकर्मना उदयनो अभाव छे, अज्ञानतीनने विषे केटलाएक आचार्यमते समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए बे विना छवीसनो उदय छे, केटलाएक आचार्य मिश्रगुणठाणे अज्ञान तीन माने तेहने समकितमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे, अढारसगदेसविरतिमध्ये अढारनो उदय छे, अनतानुबधि ४ अप्रत्याख्यानी ४ समकितमोहनी १ मिश्रमोहनीए १० उदय नथी तिणे १८ नो उदय छे, अनाहारकमार्गणाये मिश्रमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे ॥ ४४ ॥

सासाणेपणवीस अभवमिच्छेसमिच्छछवीस ।
नामस्सपयडीओ, गुणठाणविहीउनायव्वा ॥ ६५ ॥

टीका—सासाणे इत्यादि सास्वादने दर्शनमोहनीयत्रयोदयविनापचविंशति उदयेभवन्ति, सास्वादनस्योपशाताद्धाशत्वात्, अनतानुबन्ध्युदयेदर्शनमोहत्रिकानुदयेचसास्वादनत्वापत्ति । अभव्यमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता षड्विंशति मिथ्यादर्शनमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता षड्विंशति इत्युक्तमार्गणासुउदयस्वामित्वमोहस्य, साम्प्रतनामप्रकृती मार्गणासुउदयत्वेनविभजन्नाह ॥४५॥

टबार्थ—दर्शनमोहनी तीन विना सास्वादनगुणठाणे २५ पचवीसनो उदय छे, दर्शनमोहनी अभव्यमार्गणाये तथा मिथ्या-

त्वमार्गणाये मिथ्यात्वमोहनी मेळीये तेवारे २६ नो उदय छे, हवे नामकर्मनी बासठी मार्गणाये उदयनी प्रकृति कहे छे, गइइंदिय ए गाथाने अनुक्रमे तीस छप्पन्नपन्नास एगाथा जोडीने अर्थ करवो ॥ ४५ ॥

तीसअडदुपन्नासा, दुसुतीत्तीस(चउतिगतीस)तिगे-
सुपणतीस ।
गुणसट्ठीदुगतीस, इगतीसदोसुतीसच ॥४६॥

टीका—तिसअडत्ति ॥४७॥

टबार्थ —नरकगतिए तीस प्रकृतिनो उदय छे तिर्यंचगतिए अट्ठावन नामकर्मनो उदय छे मनुष्यने पचाश नामप्रकृतिनो उदय छे, देवगतिए तेत्रीस प्रकृतिनो उदय छे बेन्द्री, तेन्द्री, चोरेन्द्रीय ए तीन मार्गणाए ३५ प्रकृतिनो उदय छे पचेन्द्रिने गुणसठिनो उदय छे पृथ्वीकायने बत्तीसनो उदय छे, अपकायने इगतीसनो उदय छे तेउकायने वाउकायने तीस प्रकृतिनो उदय छे ॥ ४६ ॥

बत्तीसा(दुगतीसा)बासट्ठी, चउसगसट्ठी(पन्ना)त-
हेवसगसट्ठी ।
छपन्नाचउपन्ना, चउसट्ठीचउसुछासट्ठी ॥४७॥

टीका—दुगतीसा ॥ ४७ ॥

टबार्थ —वनस्पतीकायमध्ये बत्तीस प्रकृतिनो उदय छे, त्रसकायने बासठी प्रकृतिनो उदय छे, मनोयोगमध्ये चउपन्ननो

उदय छे वचनयोगे सत्तावनतो उदय छे तिमज काययोगे सडसठीनो उदय छे, पुरुषवेदने छप्पननो उदय छे स्त्रीवेदने चोपन्ननो उदय छे, नपुसकवेदने चोसठीनो उदय छे कषाय ४ ने छासठीनो उदय छे ॥ ४७ ॥

तिसुसगवन्नाचोयाल, अडतीसदोसुइतिचोसट्ठी ।
पणपन्नदुचउचत्ता, बायालीदोसुगुणचत्ता ॥४८॥

टीका--तिसुसगवन्ना ॥ ४८ ॥

टबार्थ—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधि ३ ए तीन मार्गणाने विषे सत्तावननो उदय छे मन पर्यवज्ञाने ४४ नो उदय छे केवलज्ञाने ३८ नो उदय छे मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ बे मार्गणाये चोसठीनो उदय छे विभगे पचावननो उदय छे चारित्र बेमध्ये सामाइक छेदोपस्थापनीयमध्ये चौमालीस प्रकृतिनो उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये ४२ प्रकृतिनो उदय छे सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात ए बेमध्ये ३८ नो उदय छे ॥ ४८ ॥

चोयालाचोसट्ठी, चउपन्नछसट्ठिसत्तपन्नाय ।
अडतीसतिलेसासु, चउसट्ठिछसट्ठिभयणाए ॥४९॥

टीका--चोयालाचो इत्यादि ॥ ४९ ॥

टबार्थ—देशविरते चौमालीसनो उदय छे अविरतिमध्ये चोसठीनो उदय छे चक्षुदर्शने चोपन्ननो उदय छे अचक्षुदर्शने छासठीनो उदय छे अवधिदर्शनमध्ये सत्तावननो उदय छे.

केवलदर्शनभव्ये अडतीसनो उदय छे कृष्णनील्कापोत ए तीन लेश्यामव्ये न्यार गुणठाणा मानिये तो आहारक २ जिन विना चोसठीनो उदय छे अथवा छ गुणठाणा मानिये तो जिननाम विना छासठीनो उदय छे एभजना जाणवी ॥ ४९ ॥

सगपणछपन्नासा, सगचउसट्ठीतहेवपणपन्ना।
दुसुसग(सगअडवन्ना)वन्नाइगपन्न, गुणवन्ना(सट्ठी)
तहयचउसट्ठी ॥ ५० ॥

टीका—सगपणछपन्नासा इत्यादि ॥ ५० ॥

टबार्थ—तेजोलेश्याए सत्तावननो उदय छे, पद्मलेश्याए ५५ नो शुक्ललेश्याए ५६ प्रकृति नामकर्मनो उदय छे भव्यने सडसठीनो उदय छे अभव्यने चोसठीनो उदय छे उपशमने पचावननो उदय छे क्षायिकने क्षयोपशमने सत्तावननो उदय छे सास्वादन गुणे इगुण पचासनो उदय छे तिम वली मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठीनो उदय छे ॥ ५० ॥

अडवन्नाछायाला, तिसट्ठीपण(अड)तिसनामकम्मस्स।
उदओमग्गणठाणे, गईआईकमेणणेयव्वो ॥५१॥

टीका—अटवन्ना इत्यादि। एव गाथापन्कस्यसमुदिताएव-व्यारया तत्रनरकगतौनाम्नस्त्रिंशत्, तिर्यग्गतौअष्टपचाशत्, मनुष्यगतौद्विपचाशत्, देवगतौचतुस्त्रिंशत्, एकेन्द्रियेत्रयस्त्रिंशत्, विकलत्रिकेपचत्रिंशत्, पचेन्द्रियेएकोनषष्टि पृथ्व्याद्वात्रिंशत्, अप्कायेएकत्रिंशत्, अग्निकायेएकोनत्रिंशत्, वायुकायेत्रिंशत्,

वनस्पतिकायेद्वात्रिंशत्, त्रसेद्विषष्टि मनोयोगेचतु पचाशत्, वचनयोगेसप्तपचाशत्, काययोगेसप्तषष्टि पुरुषवेदेषट्पचाशत्, स्त्रीवेदेचतु पचाशत्, नपुसकवेदेचतु षष्टि कषायचतुष्केषट्षष्टि, त्रिषुमत्यादिज्ञानेषुसप्तपचाशत्, मन पर्यवज्ञानेचतुश्चत्वारिंशत्, केवलज्ञानेअष्टत्रिंशत्, दोसुत्ति, द्वयोर्मतिज्ञानश्रुतज्ञानयोश्चतु षष्टि विभगेपचपचाशत्, दुईत्तिसामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्रत्येक चतुश्चत्वारिंशत्परिहारेद्विचत्वारिंशत्, सूक्ष्मसपराययथाख्यातयो एकोनचत्वारिंशत्, चत्वारिंशच्चदेशविरतौचतुश्चत्वारिंशत्, अविरतौचतुषष्टि चक्षुर्दर्शनेचतु षष्टि, अचक्षुर्दर्शनेषट्षष्टि अवधिदर्शनेसप्तपचाशत्, केवलदर्शनेअष्टत्रिंशत्, तिलेसासुत्तिकृष्णनीलकापोतलक्षणासुतिसृषुलेश्यासुयदिगुणस्थानचतुष्टयमगीक्रियते तदाजिननामाहारकद्विकोदयविनाचतु षष्टि अथवाप्रमत्तयावत् षट्गुणस्थानकानिमन्यन्तेतदा जिननामविनाषट्षष्टि एवभजनाभवति, अत्रयेचतुष्टयइच्छति तेप्रतिपद्यमानकायलेश्या त्रयतुगुणस्थानचतुष्टयेभवति, पूर्वप्रतिपन्नाद्यलेश्यात्रयतुप्रमत्तयावत्प्राप्यते, यद्यपिविशुद्धिवशताहीयमानाप्रतन्वीतथापिसत्वेनगृहीतत्वाइतिपूर्वप्रतिपन्नापेक्षया " छिज्जमाणेछिन्ने " एतद्वचनापेक्षयागत्वरत्वात्नागीकार, यथासास्वादनस्याज्ञानकर्मग्रथिकानामिति भावनयापेक्षया तुसूक्ष्माशस्यापिसत अग्रहणेदोष तेनग्रहणयथासिद्धातेसास्वादने ज्ञानइति तेजोलेश्यायासप्तपचाशत् पद्मलेश्यायापचपचाशत्, शुक्ललेश्यायाषट्पचाशत्, भव्येसप्तसष्टि, अभव्येचतु षष्टि उपशमेसम्यग्दर्शनेपचपचाशत्, वेदकेसप्तपचाशत्, क्षायिकेअष्टपचाशत्, मिश्रेएकपचाशत् सास्वादनेएकोनषष्टि मिथ्यात्वेचतु षष्टि, सज्ञिमार्गणायाअष्टपचाशत्, असज्ञिमार्गणायाषट्चत्वारिंशत्, आहारकेत्रिषष्टि अनाहारकेअष्टत्रिंशत्, एवनामकर्मण उदय मार्गणा-

स्थानकेगत्यादिक्रमेणज्ञानस्य इत्युक्तमुदयस्वामित्वमार्गणासु, साम्प्रतमुदीरणास्वरूपनिदर्शयन्नाह ॥ ५१ ॥

टबार्थ—सज्ञीनेजाति ४ आनुपूर्वी ४ आतपविना अठावननो उदय छे, असज्ञिने छेतालीसनो उदय छे, आहारकने त्रेसठीनो उदय छे, अनाहारकने पात्रीसनामकर्मनी प्रकृतिनो उदय छे, उदयनि प्रकृतिमार्गणाने विषे गति आदिकने अनुक्रमे जाणवी ते समजी लेज्यो ॥ ५१ ॥

मूलोदीरणठाणा, सडअडछपचदुन्निनेयव्वा ।
उत्तरउदीरणाए, उदयसमापयडिसरसाय ॥ ५२ ॥

टीका—मूलोदीरण इत्यादि तत्रमूलोदीरणास्थानानिपच, प्रथमसप्तकर्मोदीरणारूप तत्रयेजीवाभवान्तेएकावलिकाशेषेप्रातग्रासस्यप्रथममुदीरितस्योदयात् शेषस्याभावात् नउदीरणातेनआयुर्वर्जसप्तकर्मोदीरणारूप प्रथमस्थानसर्वसंसारिणासर्वमपिभवयावत् अष्टाना उदीरणातत्रअभिनवायुरुदयेतुउदीरणोदयश्चैकमेवसमयनसमयातरपदाचअप्रमत्ताभिवानेगुणस्थानेप्राप्तस्तदाविशुद्धिप्राबल्येनवेदनीयायुष नोदीरणा, तेनषण्णामेवोदीरणा, सूक्ष्मसपरायेतुसज्वलनलोभस्यचरमग्रासोदयात् तेनवेदनीयायुर्मोहनीयोदीरणाभावात्, पचानामेवोदीरक क्षीणमोहस्यप्रथमासरयेयसमययावत् पचानामुदीरणाक्षीणमोहस्यावलिकाशेषे सतिज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयातरायस्योदीरणा युच्छिन्ना, तेननामगोत्रयोर्द्वयोरुदीरणाभवति, मार्गणासुउदीरणास्थानानिगुणस्थानकवत्भावनीयानि, तत्रमनुष्यगतौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेमत्यादिज्ञानचतुष्टये दर्शनत्रिकेशुक्ललेश्यायाभव्यक्षायिकाहारकसज्ञिलक्षणासुअष्टादशसुसर्वाण्यप्युदीरणा-

स्थानानि, नरकादिगतित्रिकइंद्रियचतुष्ककायपचकअज्ञानत्रिकदेशविरताविरतिलेश्यात्रिकमाद्यमभव्यसास्वादनमिथ्यात्वासंज्ञिलक्षणासुसप्तअष्टौद्वेउदीरणास्थानेवेदत्रिककषायत्रिकसामायिकछेदोपस्थापनीयतेज पद्मवेदकमार्गणासुसप्तअष्टौषट इति त्रीणिउदीरणास्थानानि, सज्वलनलोभेसप्तअष्टौषट्पच, परिहारेअष्टौषट्, सूक्ष्मसपरायेषट्पच, यथाख्यातेपचद्वेउपशमेअष्टौपचषट्, मिश्रेअष्टौ, अनाहारेद्वेकेवलद्विकेद्वयोरेवउदीरणास्थानानिउत्तरोदीरणाया सक्षिपन्नाह ॥ ५२ ॥

टबार्थ—उदीरणाना मूलथानक ५ छे सातनो आऊखा विना आऊखा सहीत आठनी उदीरणा आऊखावेदनी विना सातमे गुणठाणे आठमे नवमे गुणठाणे ६ नी उदीरणा छे, मोहनी विना दशमे इग्यारमे बारमाने प्रथमभाग पर्यंत पाचनी उदीरणा, ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ अतराय विना बेनी उदीरणा तेरमे गुणठाणे छे, प्रकृति उत्तर तेहनी सख्या १२२ नी उदयनी रीते जाणवी ॥ ५२ ॥

मणुआउवेयणीय, अपमत्ताओपरतुनोदीरइ ।
बारसअयोगिपयडिनो, दीरइअकरणोविरीओ ॥५३॥

टीका—मणुआऊ इत्यादि मनुष्यायुर्वेदनीयद्वयअप्रमत्तात् परउपरिनउदीरयति, अप्रमत्तादिषुविशुद्धवीर्यत्वात्व्यानाद्यालबकत्वाच्चपूर्वस्वतएवोदयावलिकाक्षिप्तवेदनीय तथा मनुष्यायु उदयेलभ्यतेनोदीरणाकरणेन तथा द्वादशअयोगिगुणस्थानस्था प्रकृतयउदयेसतिनोदीरणाया येनकरणवीर्येणनामचलवीर्येणोदीरणाभवति, अयोगिगुणस्थानकेकरणवीर्यस्याभावात् अकरणवीर्यत्वेनोदीरणाइति तथाचचरमसमयसत्वात्नोदीरणाभवति ॥ ५३ ॥

टबार्थ—मनुष्यआयुवेदनी २ प्रमत्तगुणठाणा सुधी उदीरे, अप्रमत्तथी पछी उदीरे नही, अयोगिगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे तेमाटे उदीरणा नथी ॥ ५३ ॥

सेसासव्वापयडी, आवलियसेसगाओउदयम्मि ।
नोदीरइअपडीगाही, पडिग्गहीउदयतुल्लाओ ॥५४॥

टीका—सेसासव्वा इत्यादि । शेषा सर्वा सप्ताधिकशतरूपा प्रकृतय यावत् क्षपकालात् आवलीभोगयोग्यादलिका अवशेषा-उदयरूपेभवति तदानोदीरणाचरमग्रासत्वात्इतिना का अपतद्ग्राहिण्य अपतद्ग्राहित्वतुयासाप्रकृतीनाचरमोंश अन्यप्रकृतिपुनसंक्रामतिनाअपतद्ग्राहिण्य सज्वलनलोभप्रमुखा पुन यासाप्रकृतीनाचरमोंश अन्यासुप्रकृतिपुसंक्रम्यक्षपयति, पुरिसोकोहेकोहंमाणेचमाणमायाएमायलोभेपतद्रूपेणता प्रकृतय पतद्ग्राहिण्य-इत्युच्यते, ता चाचरमोग्रास अन्यसंक्रमणेनअन्यप्रकृतित्वप्राप्यउदयत्वेनावलिकाशेषेउदीरणाऽभाव किंतुउदयोदीरणाया समकालमेवाभाव अत अपतद्ग्राहीचरमावलिकायाउदय भवतिपरनउदीरणाभवतिया पतद्ग्राहिण्य तासाउदयोदीरणा समकालएवव्युच्छिद्यते, एवउत्तरोदीरणास्वामित्वस्वत उदयस्वामित्ववत्भाव्य अथमार्गणासुचतुरशीतिलक्षयोनिसख्याविभजन्नाह ॥ ५४ ॥

टबार्थ—शेष जे प्रकृति रही ते जेवारे उदयमध्ये एक आवली शेष रहे तेवारे उदयपणे छे, परउदीरणा नथी, जे ते काले सत्तामध्ये अनुदिनदल रह्या नथी जे उदीरे तेमाटे आवलीका शेषकाले उदीरणा पण नथी, अपडीगाहि (अप्रतिग्राही) प्रकृतिने ए रीते छे ते अपडिगाहीनो छेहडो अश कोई मे न-

सक्रमे तेमाटे इम छे, अने पडिगाहिप्रकृतिने तो उदय तथा उदीरणा भेलीज छे उदयनो अनतमो भाग सवली प्रकृतिमे भेली खपावे छे तेमाटे हवे चोरासीलाख जीवाजोनीनु स्वरूप कहे छे ॥ ५४ ॥

पुढवाईसुपत्तेय, सगवणपत्तेयणतदसचउद ।
विगलेसुदुदुसुरनारय, तिरिचउचउदसनरेसु ॥५५॥

टीका—पुढवाईसुपत्तेय इत्यादिपूर्वंव्याख्याताएव ॥५५॥

टबार्थ—पृथिवीकायनी सातलाख योनि छे, अप्कायनी सातलाख योनि छे, तेउकायनी सातलाख योनि छे, वाउकायनी सातलाख योनि छे, वनस्पतिकायमध्ये प्रत्येक वनस्पतिनी १० लाख योनि छे, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख जीवायोनि छे, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री एहनी प्रत्येके बे बे लाख योनि छे, देवताने च्यार लाख, नारकीने च्यार लाख, तिरियचने ४ लाख तथा मनुष्पने १४ लाख योनि छे ते मिल्याथका चोरासी लाख जीवायोनि छे गतिच्यारमाहे २६ लाख जीवायोनि इद्रीमार्गणाये सवली लामे काय ६ माहे सवली लामे मनोयोगे २६ लाख, वचनयोगे ३२ लाख, काययोगे सरव लामे, पुरुषवेदे २२ लाख लामे, स्त्रीवेदे २२ लाख लामे, नपुसकवेदे ८ लाख लामे, कषाय ४ माहे सरव लामे ॥५५॥

एगिंदिएसुपचसु, वारसगतिसत्तअट्ठवीसाय ।
विगलेसुसत्तअडनव, जलखहचउपयउरगभुयगे ५६॥

टीका—एगिंदिएसुइत्यादि अथकुलकोटिमानमाह, एकेंद्रियेषु

पचसुपृथिव्यादिषुपृथिवीकायेद्वादशलक्षा कुलकोटीना, आप्कायेसप्त-लक्षा कुलकोटीना, अग्निकायेत्रयोलक्षावायुकायेसप्तलक्षा वनस्पति-कायेअष्टाविंशतिलक्षा विगलेत्ति, द्वीद्रियादौद्वीद्रियेसप्तलक्षा त्रीद्रि-येअष्टौलक्षा चतुरिंद्रियेनवलक्षा कुलकोटीना जलचरेसार्द्धद्वादशलक्षा, खचरस्यद्वादशलक्षाश्चतुष्पदस्यदशलक्षा कुलकोटीनाभवनि, उर परिसर्पस्यदशलक्षा भुजपरिसर्पस्यनवलक्षा अमरस्यषड्विंशतिलक्षा नारकस्यपचविंशतिलक्षा कुलकोटीनाभवति सर्वत एकाकोटि सप्तनवतिलक्षा पचाशत्सहस्राणिकुलानाभवनि, एवगाथाद्वय-वाच्यम् ॥ ५६ ॥

टबार्थ—हवे कुल कोडी कहे छे, एकेन्द्रिमे पृथविनी बारलाख कुल कोडी, अपकायने सातलाख कुल कोडी, तेउ-कायनी तीनलाख कुल कोडी, वायुकायने सातलाख कुल कोडी, वनस्पतिने अट्ठावीसलाख कुल कोडी, बेद्रीने सातलाख कुल कोडी, तेद्रीने आठलाख कुल कोडी, चौरेन्द्रीने नवलाख कुल कोडी, जलचरमे साढीबारलाख कुल कोडी, खेचरने बारलाख कुल कोडी जाणवी ॥ ५६ ॥

अद्धतेरसबारस, दसदसनवगनरामरेनिरए ।
बारसछवीसपणवीस, हुतिकुलकोडिलरकाइं ॥५७॥

टीका—अथमार्गणासुयोनिसख्यामाह । नरकगतौचत्वारो-लक्षामनुष्यगतौचतुर्दशलक्षा, देवगतौचतस्रस्तिपर्यगतौद्वाषष्टि यो-नय, एकेन्द्रियाणाद्विपचाशत्, द्वीद्रियेद्वे, त्रीद्रियेद्वे, चतुरिन्द्रियेद्वे, पचेन्द्रिये षड्विंशति, पृथिव्यादिषुचतुर्षु सप्तसप्त, वनस्पत्याचतु-र्विंशति, त्रसेद्वाविंशत्, मनोयोगेषड्विंशति, वचनयोगेद्वाविंशत्,

कायपयोगेचतुरशीति, पुरुषवेदेद्वाविंशति, नपुसकेअशीति कषायेषुचतुरशीति, रूपत्रयेषड्विंशति, मन पर्यवकेवलेचतुर्दश, अज्ञानद्वयेचतुरशीति, विभगेषड्विंशति, सयमपचकेचतुर्दश, देशविरतौअष्टादश, अविरतौचतुरशीति, चक्षुर्दर्शनेअष्टाविंशति, अचक्षुर्दर्शनेचतुरशीति, अवधिदर्शनेषड्विंशति, केवलदर्शनेचतुर्दश, आद्यलेश्यात्रयेचतुरशीति, तेजोलेश्यायापट्चत्वारिंशत्, पद्मशुक्लयोर्द्वाविंशति, भव्येअभव्येचचतुरशीति, दर्शनत्रयेमिश्रेचषड्विंशति, सास्वादनेषट्पचाशत्, मिथ्यात्वेचतुरशीति, सज्ञिमार्गणायापड्विंशति, असज्ञिमार्गणायापट्सप्तति, आहारकानाहारकयोश्चतुरशीति, एवकुलकोटीसख्या अपियथासभववक्तव्या तथाविज्ञेयाइति। सामान्येनयथासभव अवयथासख्यमिति अवयोनिरुत्पत्तिकालेप्रथमाहारपुद्गलाना स्वरूपेणभाविता तेनअपर्याप्त पर्याप्तापेक्षयाभेदोनापेक्षित, मनुष्येषुकर्मभूम्यकर्मभूमिभेदोऽपिनापेक्षित। प्रथमाहारयोग्यपुद्गलानावर्णादितुल्यत्वेनयोनिस्तेननभेदताऽभवतिकुलकोटीकथचिन्भेदतासभवेपिआगमेभिन्नत्वेनोक्तत्वात् अत्रापिनोक्त इतिउक्तेयोनिकुलकोटिद्वारे ॥ ५७ ॥

टबार्थ—चौपदने दस लाख कुल कोडि, उरपरिसर्पने दस लाख कुलकोडि, भुजपरिसर्पगोहनोलीयाप्रमुखनी नवलाख कुल कोडी जाणवी, मनुष्यने बार लाख कुल कोडी, देवताने छवीस लाख कुल कोडी, नारकीने पचवीस लाख कुल कोडी, मिल्या सर्वे एक कोडी साडासत्ताणुलाख कुल कोडी छे ॥ ५७ ॥

जोणीकुलकोडीओ, मग्गणठाणेसु जत्थसभवइ।
विन्ने सामन्नेणजहासख ॥ ५८ ॥

टीका—अथमार्गणासुसत्ताद्वार मूलोत्तरभेदेनकथयन्नाह, अनसत्ताद्वारस्यप्रथमवक्तव्येऽपियोनिकुलकोटिद्वारेपूर्ववर्णिते सूचीकटाहन्यायेनचपृच्छकस्याशयक्रमेणवेति ॥ ५८ ॥

टबार्थ —योनि तथा कुल कोडी मार्गणास्थानके जे जिहा जिम सभवे ते तिहा तिम कहेवा सामान्ये विशेष एहना यनकथी जोइ लेवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिदियोगे, हरकाएसुकभवसन्नीसु ।
आहारेतिगसत्ता, दुगसतानाणदसेसु ॥ ५९ ॥

टीका—"तसनर" इत्यादि त्रसकायमनुष्यगतिपचेन्द्रियजातियोगत्रय यथाख्यातशुक्ललेश्याभव्यक्षायिकसज्ञिआहारकलक्षणासुतिगसत्ता त्रीणिसत्तास्थानानि, अष्टौउपशातमोहयावत् क्षपकश्रेणौसूक्ष्मसपरायपर्यंतेमोहस्यसर्वथाक्षयात्, क्षीणमोहेसप्तकर्मणासत्ता सयोगि अयोगिगुणस्थाने अघातिचतुष्टयसत्ता, दुगसन्ताइतिज्ञानचतुष्केमत्यादिकेदर्शनद्विकेद्वेसत्तास्थाने, अष्टौतथासप्त नचतूरूपासाचकेवलिनाआसाचसप्तानामार्गणानाछेद्य(उद्ध)स्थत्वात् ॥ ५९ ॥

टबार्थ —त्रसकायमनुष्यगति पचेन्द्रिजातियोग ३ यथाख्यात चारित्रशुक्ललेश्याभव्य १ सज्ञीमार्गणाये आहारकमार्गणाये तीन सत्तास्थानक छे ८ तथा मोह विना ७ तथा घाति विना ४ नी सत्ता छे ज्ञान ४ दर्शन ३ ने विषे ८ तथा ७ वे सत्तास्थानक छे ॥ ५९ ॥

अट्ठचउअणहारे, केवलदुगिचउरसेसअडसता ।
निरएदेवाउविणा, तिरिएजिणहीणसताओ ॥६०॥

टीका—अट्ठचउ इत्यादि । अनाहारकमार्गणायाद्वेसत्तास्थाने तत्रअष्टानासत्ता अंतरालगतिकानाचतसृणासत्ता, केवलिसमुद्घातायोगिगुणौप्रतीत्य केवलद्विके, केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणासुमार्गणासुअघातिचतसृणासत्ता, शेषासुमार्गणासुअष्टौसत्ता, इत्युक्तामूलसत्ता, अथोत्तरसत्तास्थानान्याह, निरए नरकगतौनैरयिकाणादेवायूरहिता सप्तचत्वारिंशच्छतसत्तापाप्रकृतय भवन्तिइतिसंबन्ध, तिर्यग्गतौ जिनहीनत्ति, जिननामरहिता सप्तचत्वारिंशच्छतसत्तापाप्यते, भवस्वभावादेवनहिजिननामसत्ताक तिर्यग्गतावुत्पद्यते ॥ ६० ॥

टबार्थ—अनाहारकिमार्गणाए आठ तथा ४ ए २ सत्तास्थानक छे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमार्गणाये ४ सत्ता छे शेषमार्गणाये सर्वने आठनी सत्ता छे नरकगतिमध्ये देवनाना आउखानी सत्ता नथी शेष १४७ नी सत्ता तिरिपचगतिमध्ये जिननाम सत्ता नथी शेष १४७ नी सत्ता छे ॥ ६० ॥

निरयाउविणादेवे, थावरतिगिजाईचउसुअजिणाय।
देवनिरयाउहीणा, तेउजुयलेनराउविणा ॥ ६१ ॥

टीका—निरयाउविणादेवेइत्यादि ॥ निरयाउविणादेवे नरकायुर्विनासप्तचत्वारिंशच्छतदेवगतौसत्ताप्राप्यते, स्थावरत्रिकेपृथ्वीअपवनस्पतिरूपेजातिचतुष्के एकेंद्रियादिलक्षणेअजिणाय इतिजिननामरहिताचपुन देवनरकायुर्हीनापचचत्वारिंशच्छतसत्तायाभवति, तेउजुअले तेजोवायुकायलक्षणेनरायुविणाइति मनुष्यायुर्विनाचतुश्चत्वारिंशच्छतसत्तायाप्राप्यते, अत्रदेवद्विकनरकद्विकमनुष्यद्विकवैक्रियचतुष्काहारकचतुष्कजिननामइतिपचदशनामप्रकृतीनाआयु त्रिकमि-

श्रसम्यग्मोहसत्ता तेजोवायुकायेनास्ति तथापिकर्मप्रकृतौसक्रमप्रदेशसत्ताकस्यचित्अक्षपितकर्मांशस्यसभवति तेनोक्तापिप्रवाहव्यारयायातुअष्टाविंशत्युत्तरशतसत्तायाप्राप्यते गइतसिवेउविहारनरहीणातनवैक्रियोपलक्षितदेवत्रिकनरकत्रिकेवैक्रियचतुष्कआहारकचतुष्कमनुष्यत्रिकउपलक्षणेनउच्चैर्गोत्रमित्यादिग्रहणम् ॥ ६१ ॥

टबार्थ—देवगतिमध्ये नरकायु विना १४७ नी सत्ता छे, थान २३ पृथिवी १ अप २ वनस्पतिमध्ये जिननाम विना देवायु १ नरकायु विना एकसोसिस्ताळीसनी सत्ता छे । तेउकायवाउकायमध्ये देवतानो आऊखो १ नरकायु १ मनुष्यायु १ जिननाम एटलानी सत्ता नथी १४४ नी सत्ता छे ॥ ६२ ॥

सासणमीसअसन्निसु, जिणविणुआहारसम्मीसविणा।
अभवेक्कायगसम्मे, सत्तविणु हुति इगचत्ता ॥६२॥

टीका—सास्वादने तथा मिश्रेअसज्ञिषु जिननामविनासप्तचत्वारिशत्शतअभ येजिननामाहारकचतुष्कसम्यग्मोहविनाएकचत्वारिंशत्शतसत्तायाप्राप्यते खवगेति क्षायिकसम्यग्दर्शनेसत्तविणुअननानुबधिचतुष्कदर्शनमोहत्रिकलक्षणसप्तकविनाएकचत्वारिंशत्शतसत्तायाप्राप्यतेइति ॥ ६२ ॥

टबार्थ—सास्वादन १ मिश्र १ तथाअसज्ञीनेविषेजिननामविना १४७ नी सत्ता छे । आहारक ४ समकितमोहनी विना अभ यमार्गणाये एकसो एकतालीसनी सत्ता छे । क्षायिकसमकितमध्येअनतानुबधी ४ मिथ्यात्वमोहनी १ मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ ए सात विना एकसो एकतालीसनी सत्ता छे॥६२॥

केवलदुगिपणनीइ, खवगसुहुमेदुसयहक्खाए ।
एगसयसेसासुअ, अडयाऽसयचसतंसा ॥ ६३ ॥

टीका—केवलदुगिइत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनेपचाशीति सत्तायाप्राप्यते त्रयोदशगुणस्थानप्रायोग्या सूक्ष्मसपरायचारित्रेक्षपकश्रेणिगतसूक्ष्मसपरायस्यद्व्यधिकशत सत्तायाप्राप्यतेऔपशमिकसूक्ष्मसंपरायस्यअष्टचत्वारिंशत्शतसत्तायाप्राप्यते तथाहक्खाएत्तियथाख्यातचारित्रे क्षपकश्रेणिगतस्यएकाधिकशत औपशमिकयथाख्यातस्यअष्टचत्वारिंशत्शत सेसासुज शेषासुमार्गणासुअष्टचत्वारिंशत्शतसत्तायाभवति ॥ ६३ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ मध्ये पचाशीनी सत्ता छे, क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसपरायने एकसोदोय १०२ नी सत्ता छे, उपशमश्रेणि सूक्ष्मसपरायने एकसो अडताळीसनी सत्ता छे, यथाख्यातचारित्रेक्षपकश्रेणीने एकसो एकनी सत्ता छे, उपशमश्रेणीने एकसो अडताळीसनी सत्ता छे, शेषमार्गणाये एकसो अडताळीसनी सत्ता छे ॥ ६३ ॥

सव्वासुगोयवेयणीय, केवलदुगिहीणनाणविग्घाण ।
वीएकम्मे एव, नव छ सताअहक्खाए ॥ ६४ ॥

टीका—इत्युक्तासर्वमार्गणासुसत्ता साम्प्रतज्ञानावरणादिकर्मणासत्तामार्गणासुविभज्यदर्शयन्नाह । सव्वासुगोयइत्यादि सर्वासुद्विषष्टिलक्षणासुमार्गणासुगोत्रवेदनीयस्यद्वयद्वयसत्तायाप्राप्यते तेजोवायुकायेनीचैर्गोत्रएकाएवसत्ताप्राप्यतेगाथायामुक्तमपि सम्प्रतिकालोवाच्य केवलद्विणत्ति केवलज्ञानदर्शनद्वयरहितासुशेषासुषष्टिमार्गणासुज्ञानाव-

रणीय अन्तरायसत्तायाप्राप्यते केवलद्विके नप्राप्यते ॥ बीएकम्मे-एवमीएत्ति द्वितीयेकर्मणिदर्शनावरणीयेएवज्ञानावरणीयवत्नवसयथा-ख्याते औपशमिकयथाख्याते दर्शनावरणीयनवकस्यसत्ताक्षपकय-थाख्याते दर्शनावरणीयस्यमध्यानद्विनिद्ररहितानवप्रकृतिसत्ताएवसू-क्ष्मसपरायेऽपि ॥ ६४ ॥

टबार्थ—कर्मनी भिन्न भिन्न सत्ता कहे छे। गोत्रकर्म १, वेदनीकर्मनी सत्ता सर्व मार्गणा विषे छे। केवलज्ञान केवलदर्शन-भव्ये ज्ञानावरणीय २ अन्तरायनी सत्ता नथी, बीजी सर्व मार्ग-णाये ए बे कर्मनी सत्ता छे बीजो दर्शनावरणीयनी सत्ता, पिण केवलदुगभव्ये तथा यथाख्यातचारित्रभव्ये उपशमश्रेणिने नवनी सत्ता छे ॥ ६४ ॥

केवलदुगिहक्खाए, खीणेनोसत्तमोहकम्मस्स।
सुहुमेअठवीसया, दुगंचअभवेअठवीस ॥ ६५ ॥

टीका—अथ [illegible] ॥ केवलदुगिइत्यादि केवल-ज्ञानकेवलदर्शने तथा यथाख्यातेक्षीणेक्षिप्तमोहस्यसत्तानभवति, औपशमिकेयथाख्यातेअष्टाविंशति, सत्कर्मा "सुहुमे" सूक्ष्मसपरायेवा-इतिपक्षान्तरेअष्टाविंशतिसत्कर्माउपशमश्रेणिमपेक्ष्यक्षपकसूक्ष्मसपरा-येएक सज्वलनलोभ सत्तायाप्राप्यते अभवेय अभव्येसम्यग्मोहमि-श्रमोहविनाषडविंशतिसत्तायत निपुजकरणेकृतेअष्टाविंशति सत्कर्मा-भवति तच्चभव्यानामेवभवति अभव्यस्यानाद्यनन्तमिथ्यात्वंभवति-यथाप्रवृत्तिकरणपावत् नअपूर्वकरणादिनाग्रन्थिभेद अभिनग्रन्थिका-एवअभव्या अत षडविंशतिरेवसत्ताभवति ॥ ६५ ॥

टबार्थ—केवलदुगने विषे केवलज्ञान १ केवलदर्शन२ए

केवलद्विक तथा क्षपकश्रेणि यथाख्यातमे मोहनीकर्मनी सत्ता नथी, सूक्ष्मसपराय उपशमश्रेणिने मोहनीकर्मनी अटावीसनी सत्ता छे, क्षपकसूक्ष्मसपरायने एक लोभसज्वलननी सत्ता छे, अभव्यने छवीसनी सत्ता छे, जे कारणे ग्रथिभेदी थई त्रिपुजीकरण कर्या पछी मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ ए बेनी सत्ता थाये तेतो ग्रथीभेद तो भव्यनेज थाये, अभव्यने अनादिअनत मिथ्यात्व छे तिणे छवीसनी सत्ता छे समकितमोहनी मिश्रमोहनीनी सत्ता नथी ॥ ६५ ॥

सेसासुअट्ठवीस, इगवीसतिसतनिरयदेवेसु ।
एगिंदियविगलेसु, थावरतिगितिरियनरसत्ता ॥६६॥

टीका—सेसासुइत्यादि शेषासुमार्गणासुअष्टाविंशति मोहस्यसत्ताभवति, क्षायिकेसम्यक्त्वेएकविंशतिर्मोहसत्ताभवति, आयुत्रिकनरकगतौनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्लक्षणसत्तायाभवति, देवगतौदेवायुस्तिर्यगायुर्मनुष्यायुस्त्रयसत्तायालभ्यते, एकेंद्रियमार्गणायाविकलत्रिकमार्गणायापृथिवीअप्वनस्पतिरूपेस्थावरत्रिकेतिर्यगायु नरायुर्लक्षणआयुर्द्वयसत्तायाप्राप्यते ॥ ६६ ॥

टबार्थ—शेषमार्गणा जे रही तेहने विषे अटावीसनी सत्ता छे आयुखाकर्मनी नरकगति तथा देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे नरकने देवायु सत्ता नथी देवताने नरकायु सत्ता नथी किम जो नरकथी नीसर्यो देवता न थाये अने देवतायी नीसर्यो नारकी न थाय तिणे नरकगतिमध्ये ने देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे, एक जे देवगतिमा देवायु, नरायु, तिर्यंचायु ए ३ लाभे नरकगतिमध्ये नरकायु, नरायु, तिर्यंचायु ए ३ लाभे

इत्यर्थ एकेन्द्रियमार्गणाये विकल तीनमध्ये पृथिवी, अप् वनस्पति ए तीनमध्ये तिर्यंच १ मनुष्यायु सत्ता छे २ नी देवताना आऊखानी नरकना आऊखानी सत्ता नथी जे ए मार्गणावाला मरी देवता नारकी न थाये ते माटे ॥ ६६ ॥

गइतसितिरियकेवल, दुगिमणुआउसुहुमअहक्खाए।
खीणेमणुअसते, चउसेसासुचउगति ॥ ६७ ॥

टीका—गइतसितिरिय इत्यादि। गतित्रसतेजोवायुकायलक्षणेएकतिर्यगायु प्राप्यते, केवलद्विगि केवलज्ञानदर्शनलक्षणेमनुष्यायु प्राप्यते, सूक्ष्मसपरायेयथाख्याते क्षपकेएकमनुष्यायु, उपशमेसूक्ष्मसपरायेयथाख्यातेदेवायुमनुष्यायु सत्तायाभवति, अत्र कर्मग्रथासिप्रायेतुदेवायु सत्ताक एवमनुष्य उपशमश्रेणिअधिरोहतिनतिर्यगनरकायु सत्ताक उपशमश्रेणिअधिरोहति, शेषासुमार्गणासुचउगतिआयुष चतुष्कप्राप्यते इत्युक्तमायुष स्वरूपम् ॥ ६७ ॥

टबार्थ—गतित्रस तेउकाय वायुकायने एकतिर्यंचायुसत्ता छे केवलज्ञान, केवलदर्शनमध्ये एक मनुष्यायु सत्ता छे सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात १ क्षपकने १ एक मनुष्यायु सत्ता छे उपशमश्रेणी सूक्ष्मसपराय १ तथा यथाख्यातने च्यार आऊखानी सत्ता छे शेषमार्गणा जे रही तेहमध्ये चार आऊखानी सत्ता छे ॥ ६७ ॥

नामेतिरिचउजाईसु, थावरि(सासाण)मीसे(मीस)
तहेवसासाण(अमणेसु)।
असन्निसुदुगनवई(दुनवइयसेसासु), जिणविणुसे-
सासुतिगनवई ॥ ६८ ॥

टीका—अथनामकर्मण सत्तामार्गणासुविभजनाह ॥ नामे-तिरि इत्यादि नामेइतिनामकर्मण तिर्यग्गतौजातिषु चतसृषुस्थावरेषु पृथ्वीअपतेजोवायुवनस्पतिस्थावरणासु । असंज्ञिमार्गणायाद्विनवति जिननामरहितासत्तायाप्राप्यते, आहारकत्तगत्रा सप्तगुणेइतिवचनात् जिननामसत्ताचतिर्यग्गतौनभवत्येव सास्वादनमिश्रयोरपिजिननामसत्ताभवति मेसासुशेषासुमार्गणासुत्रिनवति नामकर्मण सत्ताभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—नामकर्मनी सत्ता विचारता तिर्यंचगतिजाति ४ तेमाचे थावर ५ मिश्रदृष्टिमध्ये तथा सास्वादनमध्ये तिम असंज्ञी मार्गणामध्ये त्राणुनी सत्ता छे जिननामविना शेषमार्गणाये त्राणुनी सत्ता छे ॥ ६८ ॥

अडसीई अभवेसु, हारगजिणहीणकेवलदुगमि ।
सुहुमदुगेखवगाण, अस्सीइतिरिनिरययोगविणा॥६९॥

टीका—अडसीईअभव्वेसु-इत्यादि अभव्यमार्गणासुअष्टाशीति सत्तायाप्राप्यते, आहारकचतुष्कजिननामरहिताअष्टाशीति प्राप्यते, केवलदुगम्मि इत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणायासुहुमदुगे सूक्ष्मसपराययथाख्यातचारित्रलक्षणमार्गणासु क्षपकश्रेणिगतासु अशीति सत्तायाप्राप्यते, तिर्यग्गतिनरकगतिप्रायोग्यात्रयोदशनवमगुणस्थानेद्वितीयभागेक्षीणत्वात् अशीति सत्तायाप्राप्यते, उपशानसूक्ष्मसपराये तथा यथाख्याते त्रिनवतिरेवसत्तायाप्राप्यते ॥ ६९ ॥

टबार्थ—अभव्यने आहारक ४ जिननाम विना अठ्यासी प्रकृतीनी सत्ता छे आहारक १ आहारकागोपाग २ आहारक-

नवन ३ आहारकसवान ४ केवलज्ञान १ केवलदर्शनमव्ये तथा क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसपराय यथाख्यातचारित्रमव्ये ऐसीनी सत्ता छे तेरनी नथी तिर्यंच तथा नारकीयोगे प्रकृति नीकली थावर १ सूक्ष्म १ साधारणजाति ४ तिरि २ नरक २ आतप १ उद्योत ए तेर नथी, ए सत्ताऽधिकार सपूर्ण ॥ ६९ ॥

चउदसजिआण भेया, सुरनरविभगमईसुओहिदुगे।
सम्मत्ततिगेपम्हा, सुक्कासन्निसुसन्निदुग ॥७०॥

टीका—इत्युक्त सत्तास्वरूप, अथमागणासुजीवभेदानुदर्शयन्नाह ॥ चउदसजिआणभेआइत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा चतुर्दशएकेंद्रियसूक्ष्मएकेंद्रियबादरद्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रिय असज्ञिपचेंद्रियसज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तभेदात् चतुर्दश तत्रसुरनरत्ति ॥ सुरगतौनरकगतौचसज्ञिद्विक पर्याप्तापर्याप्तलक्षणभवति अपर्याप्तश्चेद्दकरणापर्याप्तोगृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्यदेवनरकगतौउत्पादाभावात् विभगेविभगज्ञानेनोमतिज्ञाने श्रुतज्ञानेओहिदुगत्ति अवधिद्विके अवधिज्ञानदर्शनलक्षणे सम्यक्त्वत्रिकेक्षयोपशमिक क्षायिकउपशम लक्षणेपद्मलेश्याया शुक्ललेश्याया सज्ञिनिचसज्ञिद्विकमपर्याप्त पर्याप्तलक्षणभवति नशेषाणिजीवस्थानानितेषुमिथ्यात्वादिकारणनोमतिज्ञानादीनामसभवात्, अतएवचहेतोरिहापर्याप्तक करणापर्याप्तकोगृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्य मिथ्यादृष्टेरशुभलेश्याकत्वादसज्ञित्वाच्चेति आह क्षायिकक्षायोपशमोपशमिकेषु कथसज्ञिअपर्याप्तकोलभ्यते उच्यतेइहय कश्चित्पूर्वबद्धायुष्क क्षपकश्रेणिमारभ्यानतानुबधिदर्शनत्रिकरूप सप्तकक्षयकृत्वाक्षायिकसम्यक्त्वमुत्पाद्ययदिगतिचतुष्टयस्यान्यतरस्यागतावुत्पद्यते तदासोऽपर्याप्तक क्षायिकसम्य-

क्त्वेप्राप्यते, क्षायोपशमिकयुक्तश्चदेवादिभवेभ्योअनतरमिहोत्पद्य-
मानस्तीर्थंकरादिरपर्याप्तक सुप्रतीत एवऔपशमिकसम्यक्त्वपुन-
रपर्याप्तावस्थायामनुत्तरसुरस्यद्रष्टव्य, इहौपशमिकस्य सम्यक्त्वमूअ-
पर्याप्तस्यकेचिन्नेच्छति तथाचतेप्राहु नतावदस्यामेवापर्याप्तावस्था
यामिदसम्यक्त्वमुपजायते तदानस्पतथाविधविशुद्धपभावात् अथैत-
त्किदानीमोहोदयतुपारभविक तद्भवतुकेनतत्निवार्यते इतिमन्येथा
तदपिनयुक्तियुक्तमुत्पश्याम यतोयोमिथ्यादृष्टि स्तत्प्रथमतयासम्य-
क्त्वमौपशमिकमवाप्नोतिसतावत्तद्भावमापन्न सन्कालनकरोत्येवयदु-
क्तमागमे अणवयोदयमाउगवज्जकालचसासणकुणइउवसम्मसम्मदि-
ट्ठिचउद्धमि ? कालनोकुणइ ? उपशमश्रेणेर्मृत्वाऽनुत्तरसुरेषूत्पन्नस्या-
पर्याप्तकस्यतत्लभ्यतेइति चेन्नत्वेनदपिनबहुमन्यामहेतस्यप्रथमसमये-
एवसम्क्त्वमोहपुद्गलोदयात् क्षायिकौपशमिकसम्यक्त्वभवति नत्वौ-
पशमिकम् ॥ उक्तच ॥ शतकबृहच्चूर्णौ जोउवसमसम्मदिट्ठी उप-
समसेढीएकालकरेइ सोपढमसमएचेवसम्मत्तपुजउदयावलिकाए पड-
णसम्मत्तपुग्गले वेअइ तेणनउवसम्मदिट्ठी अपज्जत्तगोलम्भइ इत्यादि
तस्मात्पर्याप्तसज्ञिलक्षणमेकमेवजीवस्थानमत्रप्राप्यते इतिस्थितअ-
परपुनगहुर्भवत्येवापर्याप्तावस्थायामप्यौपशमिकसम्यक्त्वसप्ततिचूर्ण्या-
दिषु तथाभिधानात् सप्ततिचूर्णौहि गुणस्थानकेषुनामकर्मणोबन्धो-
दयादिमार्गणावसरऽविरतिसम्यग्दृष्टेरुदयस्थानचिंताया पचविंशत्युद-
यश्च देवनारकानधिकृत्योक्ततत्रनारका क्षायिकवेदकसम्यग्दृष्टय ।
देवेषुत्रिविधसम्यग्दृष्टयोपितथाच तद्ग्रथ पणवीससत्तवीसोदयो-
देवनेरइए पडुच्चनेरइगोखवगसम्मदिट्ठीवेयगसम्मदिट्ठी देवोतिविह-
सम्मदिट्ठी तथापचसग्रहेऽपिमार्गणास्थानेषु जीवस्थानचिंतायाऔ-
पशमिकस्यजीवभेदद्विक उवसम्मसिसम्मिसन्नी इत्यनेनग्रथेनसज्ञि-
द्विकमुक्तत्रत सप्ततिचूर्णिअभिप्रायेणपचसग्रहकर्यग्रथाभिप्रायेणचा-

स्माभिरपिउपशमसम्यक्त्वेसज्ञिद्विकमुक्तनत्वत्तुकेवलिनोविशिष्टबहु-श्रुताग्राविदति ॥ ७० ॥

टबाथ —हवे चौद भेदे जीव मार्गणा कहे छे सूक्ष्म एकेंद्री १ बादरएकेंद्री २ बेंद्री ३ तेंद्री ४ चोरेंद्री ५ सज्ञीपचेंद्री ६ असज्ञीपचेंद्री ७ अपर्याप्ता ए सात पर्याप्ता ७ हवे ६२ मार्गणाइ भेद कहे छे देवगति १ नरकगति २ विभगअज्ञान ३ मतिज्ञान ४ श्रुतज्ञान ५ अवधिज्ञान ६ अवधिदर्शन ७ उपशम ८ क्षायिक ९ क्षयोपशम १० ए तीन समकित पद्मलेश्या शुक्ललेश्या १२ सज्ञी १३ ए तेर मार्गणाने विषे सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो अने सज्ञीपचेंद्री अपर्याप्ता ए बे जीव स्थानक लामे बीजा नहीं ॥ ७० ॥

तमसन्निअपज्जअ, नरेसबायरअपज्जतेऊए ।
थावरइगिदिपढमा, चउवारअसन्निदुदुविगले ॥७१॥

टीका—तमसन्निइत्यादि ॥ तत्पूर्वोक्तसज्ञिद्विकअपर्याप्तासज्ञि-युतनरमनुष्यगति मार्गणायालभ्यते,इहयेमनुष्यागर्भजान्तेषुसज्ञिद्विक-लभ्यतेयेतुवातपित्तादिषुसमूर्छितेऽन्तर्मुहूर्त्तायुष असज्ञिनोलब्ध्यप-र्याप्तकाश्चद्रष्टव्या यदाहु श्रीमदार्यपादा प्रज्ञापनाया कहिणभते-समुच्छिममणुस्सासमुच्छति गोयमा, अतोमणुस्सखित्तस्सपणयालीसा-एजोयणसयसहस्सेअड्ढाइजेसुदीवसमुद्देसु पन्नरससुकम्मभूमिसु ती-साए अकम्मभूमीसुछप्पनाए अतरदीवेसुगम्भवक्कंतियमणुस्साणचे-वउच्चारेसु पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवावतेसुवापित्तेसुवासुक्केसु-वासोणीएसुवासुक्कपुग्गलेसुवासुक्कपुग्गलेपरिसाडेसुवाविगयकलेवरेसु-वायीपुरुससयोगेसुवा नगरनिद्धमणेसुवासव्वेसुचेवअसुइट्ठाणेसु इत्थ

णरसमुद्दिमणुस्सा [illegible] असंखेज्जइभागमित्ताए ओगाहणाए उत्तरिमिउदिट्ठी [illegible] बाहिंपज्जत्तीहिं अपज्जत्ताअन्तमुहुत्ताउया चेव [illegible] इति तान् सम्मूर्छिममनुष्यानाश्रित्य तृतीयमप्यसंज्ञिपर्याप्तलक्षणं [illegible] स्थानं प्राप्यते, इति समायातं तदेवपूर्वोक्तसंज्ञिद्विकमद्वादशपर्याप्तेनवर्तते इति सम्बादरपर्याप्ते जोलेश्या यालभ्यते एतदुक्तभवति तेजोलेश्यायां त्रीणि जीवस्थानानि भवति, संज्ञिपर्याप्तापर्याप्त बादरैकेंद्रियापर्याप्तश्च बादरोऽपर्याप्त कथमवाप्यते इति चेत् उच्यते इह भवनपति व्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवा पृथिवीजलवनस्पतिषु मध्येउत्पद्यते, यदाह दुस्समाचक्रनिमग्नजिनप्रवचनप्रदीपो भगवान् जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण पुढवीआउवणस्सइज्झेपज्जत्तसखजीवेसुसग्गउआणा [illegible] तेचते जोलेश्यावन्त यदभाणि किण्हनील [illegible] तेउलेस्साभवणवतरायाजोइससोहम्मीसाणाणितेउलेस्साणं, यत्रा यल्लेश्यो [illegible] तल्लेश्यएवअग्रेऽपिसमुत्पद्यते जल्लेसेमरइ तल्लेसे [illegible] इतिवचनात्, अतस्तेजोलेश्यायां बादरपर्याप्तावस्थायां कियत्कालमवाप्यते, स्थावरपचकमार्गणासुप्रथमानिचत्वारि जीवस्थानानि सूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तसूक्ष्मैकेंद्रियपर्याप्तबादरैकेंद्रियापर्याप्तपर्याप्तलक्षणानि भवन्ति। [illegible] संज्ञिनिसंज्ञि व्यतिरिक्तेकोलिकनलिकन्यायेन [illegible] शब्दस्थान [illegible] यमानि आदिमानि द्वादशजीवस्थानानि सर्वेषामपि विशिष्टमनोविकलतया संज्ञिप्रतिपक्षत्वादसंज्ञिइति व्यपदिश्यते, तुतु विगलत्तिविकलेषु द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियेषु द्वेद्वे जीवस्थाने भवत [illegible] तत्रद्वीन्द्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त इति द्वीन्द्रियेषु एवं त्रीन्द्रियेषु त्रीन्द्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त चतुरिन्द्रियेषु चतुरिन्द्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त [illegible] ॥ ७१ ॥

टबार्थ —अने मनुष्यगतेमार्गणामे होय तेहज असंज्ञी-

पचेंद्री भेळीने तेवारे सज्ञी पचेंद्रीपर्याप्तो १ अपर्याप्तो २ असज्ञी-पचेंद्रीअपर्याप्तो ए ३ जीवना भेद लाभे छे, मनुष्य असज्ञीपर्याप्तो नथाइ १४ थानके उपजे पर [illegible] पर्याप्तोईज मरे तिणे ३ जीवभेद कह्या। तेजाले[illegible] सज्ञी [illegible] १ अपर्याप्तो २ ए दोय अने बादरएकेंद्रीपर्याप्तो [illegible] तिणे अपेक्षाये तेजोलेश्यामे [illegible] ५ मे पृथ्वी-अप, तेऊ, वाउ, वनस्पतिमे [illegible] १ पर्याप्तो २ बादरएकेंद्रीपर्याप्तोअपर्याप्तो ४ ए च्यार जीवस्थानक लाभे असज्ञीमार्गणामे पहेला बार जीवस्थानक लाभे बेंद्रीमार्गणा २ बेंद्रिरा जीवस्थान छे, तेंद्रीमे [illegible] जीवस्थान छे, चोरेंद्रीमे चोरेंद्रीना जीवस्थान छे ॥ ७१ ॥

दसचरमतसेअजया, हारगतिरितणुकसायदुअनाणे पढमतिलेसामविअर, अचक्खुनपुमिच्छसव्वेवि ७२।

टीका—दसचरमत[illegible]त्यादि ॥ त्रसेत्रसकायेचरमाण्यतिमानि-पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिचतुरासज्ञिसज्ञिपचेंद्रियलक्षणानिदशजीवस्थानानि भवन्ति, द्वींद्रियादीनामेवत्रसत्वात् । तथा अयते, अविरतेसर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवन्ति, त[illegible] तथुक्ति [illegible]योगे-कषायचतुष्टयेद्वयोरज्ञा[illegible] । प्रथमत्रिलेश्यासु भव्येइतरस्मिन् [illegible] सर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवन्तिसवजीव[illegible]यनादीनामिति ७२

टबार्थ—बेंद्री तेंद्री २ चोरेंद्री ३ असज्ञी ४ सज्ञी ५ ए पाच अपर्याप्ताने ५ पर्याप्ता ए दस जीवस्थानक त्रसकायमे लाभे, अव्रतमार्गणामे १४ जीवस्थानक छे आहारकमार्गणामे २

तिर्यंचगति ३ काययोग ४ कषाय ४ मार्गणामे ८ मतिअज्ञान ९ श्रुतअज्ञानमे १० कृष्णलेश्या ११ नीललेश्या ११ कापोत लेश्या १३ भव्यमार्गणामे १४ अभव्यमार्गणा १५ अचक्षुदर्शन-मार्गणा १६ नपुसकवेदमार्गणा १७ मिथ्यात्वमार्गणा १८ ए अठारमार्गणामे सर्व १४ जीवस्थानक छे ॥ ७२ ॥

पज्जसन्निकेवलदुग, सजममणनाणदेसमणमीसे ।
पणचरमपज्जवयणे, निअछचपज्जीयरचक्खुम्मि॥७३॥

टीका--पज्जसन्नी इत्यादि । पर्याप्तसज्ञिलक्षणमेकमेवजीव-स्थानभवति ॥ कइत्याह ॥ केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने सयमपचके मन पर्यवज्ञानेदेशविरते च एकजीवस्थानसज्ञिपर्याप्त-लक्षणजीवस्थानभवतिनान्यत्, तथापचजीवस्थानानि चरमाणि-अतिमानिपर्याप्त्यपर्याप्तानि द्वींद्रियपर्याप्तत्रींद्रियपर्याप्तचतुरिंद्रिय-पर्याप्तासज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तसज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तलक्षणानि पचस्थाना-निप्राप्यते, वयणत्ति वचनयोगेकुत्रचित् एषुअपर्याप्तेष्वपिवचन-योगसभव भाविनिमृतोपचारात् इति न्यायात् तेषामतेदशजीवभेदा प्राप्यते ॥ तीयछचपज्जायरत्तिचक्खुम्मि चक्षुदर्शनेऋजुसूत्रादिनय-क्रमेणत्रीणि चतुरिंद्रियपर्याप्तअसज्ञिपर्याप्तसज्ञिपर्याप्तलक्षणानित्रयो जीवभेदामतातरेनैगमनयापेक्षयाछचपडजीवस्थानानितान्येवचतुरिं-द्रियादीनि त्रीणिपर्याप्तापर्याप्तलक्षणानिचक्षुर्दर्शनेभवति ॥७३॥

टबार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसपराय यथाख्यात-चारित्र एव ५ सयममे मन पर्यवज्ञानमे देशविरतिमे १ मनो-योगमे १ मिश्रदृष्टिमे ए ११ मार्गणामे १ पर्याप्तासज्ञी जीव-

स्थानलाभे, वचनयोग छेहला पाच पर्याप्ता जीवस्थानलाभे, बेन्द्री १ तेन्द्री २ चौरेन्द्री ३ असज्ञीपचेन्द्री ४ सज्ञीपचेन्द्री ५ पर्याप्तो ए पाचमे भाषा छे भाषापर्याप्त कीधा पछी चक्षुदर्शनमे तीन अथवा छ जीवस्थान छे चोरेन्द्री १ असज्ञीपचेन्द्री २ सज्ञीपचेन्द्री ३ ए तीन पर्याप्ता छे अथवा एहिज तीन अपर्याप्ता अने पर्याप्ता ए ६ पण जीवस्थानलाभे चक्षुदर्शनमे ॥ ७३ ॥

थीनरपणिदिचरमा, चउअणहारेदुसन्निछअपज्जा।
तेसुहुमअपज्जविणा, सासणगुणठाणपुव्विव ॥७४॥

टीका—थीनरपणिं इत्यादि। स्त्रीवेदे तथा पुरुषवेदे पचेन्द्रियप्रायोग्यानिचरमाणिचत्वारिजीवस्थानानि भवति, यद्यपिचसिद्धातेअसज्ञिपर्याप्तोऽपर्याप्तश्चएकातेनपुसकएवउक्त तथोचोक्तभगवत्याते-णभतेअसन्निपचेंदियतिरक्खयोणीयाकिं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुसगवेयगा? नोइत्थिवेयगानोपुरिसवेयगा नपुसगवेयगाइति तथापिइहस्त्रीपुसलिंगाकारमात्रमगीकृत्यस्त्रीवेदेपुरुषवेदेनिर्दिष्ट लिंगाकारग्रहणद्रव्यनिक्षेपत अभिलापरूपतुभावनिक्षेपापेक्षयाभावनीयम्, अनाहारके दुसन्निछअपज्जत्ति अनाहारकेद्विविध सज्ञिपर्याप्तापर्याप्तलक्षण षट्अपर्याप्ता अपर्याप्तसूक्ष्मैकेंद्रिय अपर्याप्तबादरैकेंद्रिय अपर्याप्त द्वीद्रिय अपर्याप्तत्रीद्रिय अपर्याप्तचतुरिंद्रिय अपर्याप्तासज्ञिपचेंद्रिय एता यष्टौप्राप्यते तत्रसप्तपर्याप्तकानिअन्तरालगतावेवसज्ञिपर्याप्तलक्षण केवलिसमुद्घातकालेतृतीयचतुर्थपचमसमयेएवकार्मणयोगिन एवलभ्यनेसुहुमअपज्जविणासासण,ना येवपूर्वोक्तानिषट्अपर्याप्तपर्याप्तसज्ञिद्विकलक्षणान्यष्टौजीवस्थानानिसूक्ष्मापर्याप्तं विनासप्तभवति ।

एतदुक्तभवतिपनूसूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तल-पणजीवस्थानसास्वादनेसम्य क्त्वेनभवति, सास्वादनम्यशुभपरिणामत्वात् सम्मम्यमहासंक्लिष्टस्य परिणामस्यसूक्ष्मैकेंद्रियमन्येउपादान् । अत बादरापर्याप्तद्वींद्रिया- पर्याप्तत्रींद्रियापर्याप्तचतुरिंद्रियापर्याप्तअसंज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त संज्ञिपंचे- द्रियापर्याप्तभेदान् सप्तजीवस्थानानिप्राप्यन्ते इत्युक्तानिमार्गणास्था- नेषुजीवस्थानानिगुणस्थानानितुपूर्वमेवोक्तत्वात् ततएवज्ञातव्यानि गुणस्थानानिमार्गणासुपूर्ववत् ज्ञातव्यानि ॥ ७४ ॥

इवार्थ —स्त्रीवेदमे १ पुरुषवेदमे १ पचेंद्रिमे १ छेहत्या ४ जीवस्थान छे, असंज्ञीपचेंद्री अपर्याप्तोपर्याप्तो २ संज्ञीअपर्याप्तो- पर्याप्तो ए ४ छे स्त्रीवेदमे, पुरुषवेदमे, असंज्ञीमे नजाइ, असंज्ञिमे नपुसकवेद छे, पर इहा मान्यो छे, ते अभिप्राय आचार्य जाणे अनाहारकमार्गणाये संज्ञीअपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ सम्मअपर्याप्तो ३ चेंद्रीअपर्याप्तो ४ तेंद्रीअप० ५ चौरंद्रीअप० ६ असंज्ञीअप० ७ बादरअप० ८ ए आठ जीवस्थानक छे । ए आठमे सूक्ष्म- अपर्याप्तो काढीए जेवारे सास्वादने सात जीवस्थानक छे । बादरअपर्याप्तो १ द्रीअप० २ तेंद्रीअप० ३ चौरेंद्रीअप० ४ असंज्ञीअप० ५ संज्ञीपर्याप्तो ६ संज्ञीअप० ७ ए सात प्रकारे जीवस्थानक पामीये गुणठाणामार्गणाए पूर्वे कह्या ते रिते गुण- ठाणा कहिवा ॥ ७४ ॥

सच्चेयरमीसअसच्चमोस, मणवयविउव्विआहारा ।
उरलमीसाकम्मण, इययोगाकम्मअणहारे ॥७५॥

टीका—सच्चेयरत्ति पचदशयोगाभिधायिकागाथा॥ इहयोग शब्दस्यसर्वत्रसंबंध युज्यतेकर्मणाअनेनेतियोग अलब्धस्यलभन-

योग चलवीर्यस्यऔदयिकानुयायिप्रवर्तनयोग अभिनवकर्मग्रहण-
हेतु इतिनवमनोयोगश्चतुर्द्धातथ्यासत्यमनोयोग असत्यमनोयोग
सत्यासत्यमनोयोग असत्यामृषामनोयोग तत्रसनोमुनय पदार्था-
वातेषुयथासर्वमुक्तिपदप्रापकत्वेनयथावस्थित तत्त्वचिंतनेनचहित
सत्य यथाअस्तिजीव अस्तिनास्तिपरिणाम कायप्रमाण लोकप्रमा-
णासंख्येयप्रदेशात्मक यथावस्थितवस्तुविकल्पनपर सत्यमनोयोग
तथाअसत्य विपरीत अयथार्थ नास्तिजीव इत्याद्युत्सूत्रचिंत-
नरूप असत्यमनोयोग तथामिश्र सत्यासत्यमनोयोग यथाइह-
धवखदिरपलाशादिमिश्रेषुबहुषुअशोकवृक्षेषुअशोकवनमेवेदइतियदा-
विकल्पयति तत्राशोकवृक्षाणासद्भाव सत्य अन्येषामपिधवखदिरप-
लाशादीना तत्रसद्भावादसत्य इतिसत्यासत्यविकल्परूप, मिश्रम-
नोयोग इति व्यवहारनयमतापेक्षया परमार्थतस्तुपुनरयमसत्य-
एवयथाविकल्पितार्थायोगात् नविद्यतेसत्ययत्रसअसत्य नविद्यते-
मृषायत्रसअमृष असत्यश्चासौअमृष अनादिमिथ्यादृष्टिकर्मधारय
असत्यामृषश्चासौमनोयोगश्च असत्यामृषामनोयोग अत्रस्याद्वादा-
नेकातनयनिक्षेपविनायद्वलोकव्यापाररूपघटपटादिचिंतन तत्व्यव-
हारतोमृषापिनपरमार्थत आगमोपयोगरहितत्वात् सत्यमपिनइदग्-
विकल्परूप असत्यमृषामनोयोग मुनीनाचआहारादियाचनेआहा-
रयाचनरूप यत्रव्यवहारतोनमृषापरमार्थत आहारमकाष(?)मितिविकल्प-
रहितत्वात्नसत्य अत्रसमिश्रमनोयोग असत्यामृषामनोयोगयो क
प्रतिविशेष तत्रोच्यतेमिश्रमनोयोगवनोअशोकवनेअशोकस्यएका-
नग्रह धवखदिराणाग्रहणेच्छापिनतेनमिश्रत्वजन्यतुअपितानार्पित-
तयासापेक्षनयापिकारणाभावात् अगृहीतत्वात् तेनसर्वथानअसत्य
इतिनसत्य नमृषाइति व्यपदिश्यते एववाग्योगोपिचतुर्विध अत्र-
तृतीयचतुर्थातुपरिस्थूर व्यवहारनयमतेनदृष्ट योनिश्चयनयेनस्याद्वाद-

सापेक्षमेवसत्य अन्यत्सर्वमसत्यमृषाकर्मग्रथटीकाकार विकलेन्द्रियाणामव्यक्तत्वेनअसत्यअमृषावचनयोग तदपिमृषावादेएवमन्तर्भवति ॥ काययोग सप्तधा वैक्रियकाययोग औदारिककाययोग आहारककाययोग मिसत्तिएतेएवमिश्रवैक्रियमिश्र औदारिकमिश्र आहारकमिश्र कम्माणत्तिकार्मण एव सप्तकाययोगा भावार्थस्तुविविधाक्रिया विक्रियातस्याभववैक्रिय तथाहिएकमनेकाजनेकभवति अणुमहामहद्भवति महद्भूत्वाअणुभवति दृश्यमदृश्यअदृश्यभवति इत्यादिविक्रियारूपवैक्रिय रूपवैक्रिय वैक्रियमिश्र यत्रकार्मणेन औदारिकेणसहवैक्रियमिश्र तत्रकार्मणेनामिश्र देवनैरयिकाणाअपर्याप्तावस्थाया प्रथमसमयानन्तर पचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणाचवैक्रियलब्धिमतावैक्रियारकालेवैक्रियपरित्यागकालेवाऔदारिकेणमिश्रभवति तद्वैक्रियमिश्रकाययोग २ चतुर्दशपूर्वविद तथाविधकार्योत्पत्तौविशिष्टलब्धिवशादाद्रियते निर्वर्त्यतेइत्याहारक अथवाआद्रियतेगृह्यतेतीर्थकरादिसमीपेसूक्ष्मजीवादिपदार्थो अनेनेत्याहारकयदवादिपूज्य कज्जम्मिसमुपज्जतेसुअकेवलिणाविसिट्ठलद्धीएजइच्छआहरिज्जइभणति आहारगतसु ॥ १ ॥ पाणिदयरिद्धिदसणत्थमत्थोवगहणहेउवाससयजुछेयत्थगमणजिणपायमूलम्मि तदेवकाययोग आहारककाययोग आहारकमिश्र आहारकप्रारभकालेत्यागकालेऔदारिकेणसहभवति आहारकमिश्रकाययोग तथा औदारिककाययोग इहप्रसिद्धसिद्धातसदोहविवरणप्रकरणकरणप्रमाणग्रथनावाप्तसुप्राज्ञवामधवलयश प्रसरधवलितसकलवसुधरावलयप्रभुश्रीहरिभद्रसूरिदर्शिताच्युत्पत्तिर्लिख्यतेतत्थताव-ट्टारउरालउरालचातित्थकरगणधरसरीराइपडुच्चउदारवुच्चइनतओउदीरनरमाममछित्तिकाउउदारनामप्रधानउरालनामविस्तरालविशालयाजभणीयहोइ कदसात्तिरेग जोयणसहस्स वनस्पत्यादीनामितिउरालना-

मरवत्पप्रदेशोपचितत्वाच्चर्डिभवनस्थूलवर्गणानिष्पन्नत्वात् श्रीपूज्या-
अप्याहु न्योदारमुरालउरालमहवामहल्लगत्तेणउगलायत्तिपढमपडुच्च-
निव्वेसरसरीर ॥ १ ॥

भणइयनहोराल, वित्थरवतयणस्सइ पप्प ।
पयईइनत्थिअन्न, इहमित्तविसालति ॥ २ ॥
उग्लथेवपएसो, वचियपिमहल्लगजहामिट्ठ ।
मसट्ठिएहारुबद्ध, उरालसमयपरिभासा ॥ ३ ॥

उदारेणभवऔदारिक औदारिककाययोग तथा औदारिकमिश्र यत्र-
कार्मणोनेति गम्यतेसऔदारिकमिश्र उत्पत्तिदेशेहिपूर्वभवादननर-
मागतोजीव प्रथमसमयेकार्मणेनैवकेवलेनाहारयतिनत परऔदा-
रिकस्याप्यारब्धवत्वादौदारिकेणकार्मणमिश्रेणयावच्छरीरस्यनिष्पत्ति
यदाहसकलश्रुतनाभोनिधिपारदृश्वाविश्वानुग्रहकाम्ययानिर्मितानेक-
शास्त्रसदर्भ श्रीभद्रबाहुस्वामी जोएणकम्मएण आहारेईअणतर
जीवोवेणपरमीसेणजावसरीरस्सनिप्पत्ती ॥ १ ॥ तथा केवलिस-
मुद्घातावस्थायाद्वितीयषष्ठसप्तमसमयेषु कार्मणेनमिश्रमोदारिक
प्रतीतमेवऔदारिकमिश्रकाययोग तथा कर्मणोविकार कार्मण-
कर्मैवकार्मण कर्मपरमाणव एवात्मप्रदेशै सहक्षीरनीरवदन्योन्या-
नुगता सत कार्मणशरीर उक्तच कम्मविगारोकम्म कम्मणमट्ठ-
विहविचित्तकम्मनिप्पन्नसव्वेसिंसरीराणकारणमूयमुणेयव्व अवसव्वे-
सिमितिसर्वेषा औदारिकादीनाशरीराणा कारणभूतबीजभूतकार्मण-
शरीरनखलु आमूलमुच्छिन्नेभवप्रपचप्ररोहबीजभूतेकार्मणेवपुषिशे-
षशरीरप्रादुर्भावसभवइदचकार्मणशरीरजतोर्गत्यन्तरसक्रान्तौसाधकतम
करण तथाहिकार्मणेनैववपुषापरिकरितोजतुर्मरणदेशमपहायोत्पत्ति-
देशमुपसर्पतिनतुयदिकार्मणवपु परिकरितोगत्यन्तरसक्रामति तर्हि-

[illegible] ॥ ७५ ॥

अर्थ — [illegible] १५ [illegible] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १५ योग [illegible] ॥ ७६ ॥

नरगइपणदितसतणू, अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगं।
सन्निछलेसाहारग, भवमइसुओहिदुगिसव्वे ॥७६॥

टीका—नरगइपणदि इत्यादि ॥ नरगतौपचेंद्रियेत्रसकाये-तनुयोगेअचक्षुर्दर्शनेनरेपुरुषवेदेनपुसकवदेकषायेषु क्रोधमानमाया-लोभेषुसम्यक्त्वद्विकेक्षायोपशमेक्षायिकेसज्ञिनिपरस्वपिलेश्यासुआ-हारकेमतिज्ञानेश्रुतज्ञानेअवधिद्विकेअवधिज्ञानावधिदर्शनेसर्वेपचद-शापियोगाभवनि एतेषुसर्वेष्वपिमार्गणास्थानेषुयथासभवसर्वयोगा पचदशभवनि ॥ ७६ ॥

टबार्थ—मनुष्यगति १ पचेंद्री २ त्रसकाय ३ अचक्षुदर्शन पुरुषवेद नपुसकवेद कषाय ४ क्रोध मान माया लोभ। क्षायिकस-मकित १ क्षयोपशमसमकित १ सज्ञीमार्गणामे १ लेश्या ६ कृ-ष्णनीलकापोत तेजोपद्मशुक्ल ६ लेश्या आहारक १ भव्य १ मति-ज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ अवधिदर्शन एटली मार्ग-णामे सर्वे पन्नर योग भमाये छे ॥ ७६ ॥

तिरिइत्थिअजयसासणि, अनाणउवसमअभवमिच्छेसु
तेराहारदुगुणा, तेउरलादुगुणसुरनिरए ॥ ७७ ॥

टीका—तिरिइत्थि इत्यादि ॥ तिरितितिर्यग्गतौस्त्रीयास्त्रीवेदे-अयतेविरतिहीनेसास्वादनसम्यक्त्वेअज्ञानत्रिकेउपशमसम्यक्त्वेअभ-व्येमिथ्यादृष्टौत्रयोदशयोगा भवतिआहारकद्विकहीनाइत्यर्थ आ-हारकद्विकसर्वविरतौचतुर्दशपूर्वधरस्यापिकस्यचित्लब्धिमतोभवति। यद्यपिस्त्रीवेदेसर्वविरतिसद्भावेऽपिस्त्रीपूर्वधरत्वाभावात्। यदाह। भाष्य-सुधानिधि तुच्छागारवबहुलाचलेंदीयादुब्बलाधिइएयइयअट्ठसेसज्ज-

यणामृआवादोनइत्यीण ॥ १ ॥ तेननाहारक एवभावनीय तथा-
तेएवनयोदशपूर्वोक्तायोगाऔदारिकद्विकोना औदारिककाययोगऔ-
दारिकमिश्रकाययोगरहितापूर्वादशयोगा सुरत्तिदेवगतौनिरत्तिनर-
कगतौप्राप्यते मनस चत्वारोवचनस्यचत्वारोवक्रियद्वयकार्मणचएव-
एकादशनवकार्मणमपानरालगतौ तथा प्रथमसमयो पद्यमानस्यवैक्रि-
यमिश्रअपर्याप्तावस्थाया वैक्रियमनोवाग्योगौपर्याप्तावस्थायासर्वाणि
यावत् ॥ ७७ ॥

इनार्थ—निर्यंचगति १ स्त्रीवेद १ अविरति १ सास्वादन
१ अज्ञान ३ कुमतिकुश्रुतिभंगरूप छहनी मार्गणामे उपशम-
सम्यक्त्वमार्गणामे १ अभव्यमार्गणामे १ मिथ्यात्वमार्गणामे १
छठ्ठी मार्गणामे १३ योग पामीये। आहारकशरीर १ आहा-
रकमिश्र २ ए काढीए तेवार इण तेरमाहे औदारिकद्विक, औदा-
रिकशरीर, औदारिकमिश्र ए दोय काढीए तेवारे देवगति १ नर-
कगति १ ए मार्गणामे ११ योग छे ॥ ७७ ॥

कम्मुरलदुगथावरि, तेसविउव्वदुगपचइगपवणे।
छअसन्निचरमवयजुअ, तेविउव्विदुगुणचउविगले७८॥

टीका—कम्मुरलदुगइत्यादि ॥ स्थावरचतुष्टयेपृथिव्यपतेजो-
वनस्पतिलक्षणेषु कार्मणऔदारिकद्विकऔदारिककाययोग औदारिक-
मिश्रकाययोगलक्षणयोगत्रयप्राप्यते, तत्रभावना। थावरेत्ति स्थावर-
पृथ्वीकायाप्कायतेजोवनस्पतिकायरूपपूर्वोक्तयोगत्रयभवतिकार्मण-
मनरालगतौ औदारिकमिश्रअपर्याप्तकालेपर्याप्तकालेऔदारिकतेपूर्वो-
क्तास्त्रय योगा सवैक्रियद्विका सहवैक्रियद्विकेनवैक्रियवैक्रियमिश्र-
लक्षणेनवर्तन्तेइतिसवैक्रियद्विका सत पचभवतिकेइत्याह इगत्ति-

सामान्यतएकेंद्रियेपवनेवायुकायेचतत्रकार्मणौदारिकद्विकलक्षणयोग-
त्रयभावनाप्राग्वत्पूर्वक्रियद्विकभावनात्वेव इहकिलचतुर्विधावायवो-
वातितद्यथासूक्ष्मावादरा पर्याप्ता अपर्याप्तकाश्चतत्रबादरवायुकाय-
पर्याप्तानाकेषाचिद्वैक्रियलब्धिसभवोऽस्तितानधिकृत्यवैक्रियमिश्रल-
लभ्यते ननुकथमुच्यतेकेषाचिद्वैक्रियलब्धिसभवोऽस्तियावतासर्वेऽपि-
बादरपर्याप्तावायव सर्वेक्रियाएवअवैक्रियाणाचेष्टाएवाप्रवृत्त उक्तच-
कहणभतेसव्वेवेउव्वियावायावायनि ? अविउव्वियाणचिट्ठाचेवनपवत्त-
इतिनदयुक्तसम्यग्सिद्धानापरिज्ञानात्अवैक्रियाणामपितेषास्वभाव-
तएवचेष्टोपपत्ते यदाहभगवान्श्रीहरिभद्रसूरिपूज्योऽनुयोगद्वारटी-
कायां वाउकाइयाचउव्विहासुहुमापज्जत्ता अपज्जत्ताबादरापज्जत्ताअप-
ज्जत्तातत्थतिन्निरासीपत्तेय असखिज्जलोगप्पमाणप्पएसरासिपमाण-
मित्ताजेपुणबादरापज्जत्ता तेपयरासखेज्जइभागमित्ता तत्थनावतिण्हरा-
सीणपेउव्वियलद्धिचेवनत्थिबायरपज्जत्ताणपिअसखेज्जइभागमित्ताण-
अत्थिनेसिंपिलद्धिअत्थिनउविपलिओवमासखिज्जभागसमयमित्तास-
पयपुच्छासमएवेउव्वियवत्तिणो तथाजेणसव्वेसुचेवउहलोगाइसुच-
लावायवोविज्जनि तम्हाअविउव्विआविवायावायतित्ति । वित्तवस-
भावेणतेसिंवायवनिवानाद्वायुरितिकृत्वातिण्हरासीणनयाणाराशीना-
पर्याप्तापर्याप्तासूक्ष्मावादरापर्याप्तवायुकायिकानातथातेएवपूर्वोक्ता प-
चकार्मणौदारिकद्विकवैक्रियद्विकलक्षणयोगाश्चरमाचतुर्थी असत्या-
मृषारूपावाग्वचनयोगाश्चरमवाक्तयायुक्ता षड्योगा भवतिक्व-
इत्याह । असज्ञिनिसज्ञि यतिरिक्तेजीवेतत्रकार्मणमपान्तरालगतावु-
त्पत्तिप्रथमसमयेचऔदारिकमिश्रमपर्याप्तावस्थायापर्याप्तावस्थायाऔ-
दारिकबादरपर्याप्तवायुकायिकाना वैक्रियद्विकचरमभवोचरम वाग्योग
असत्यामृषालक्षण तेनयुक्तावैक्रियद्विकेनऊनाहीना चत्वारोभवति-
[illegible] तत्रकार्मणौदारिक-

द्विकभावनाप्रागुक्तवत् असत्यामृषाभाषाशरीरादीनामवति । शेषाणा-विगलेअसत्यमोसवयइति ॥ ७८ ॥

टीकार्थ —पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय ३ वनस्पतिकाय ४ ए ४ थावरमार्गणामे कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रियमिश्र ५ ए पाच योग छे । असज्ञीमार्गणामे चरमवचन योग १ असत्याअमृषा भेळीजे तेवारे पाच योग तेहीज एव ६ योग छे । ए ६ योगमाहे वैक्रिय १ वैक्रियमिश्र २ ए द्विक काढीए तेवार कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ असत्याअमृषाभाषा ए ४ योग छे, विकलत्रद्री १ तेंद्री २ चौरेंद्री ३ ॥ ७८ ॥

कम्मुरलमीसविणुमण, वयसमईछेयचक्खुमणनाणे
उरलदुगकम्मपढम, तिममणवयकेवलदुगमि ॥७९॥

टीका—कम्मुरलमीसइत्यादि ॥ कार्मणमौदारिकमिश्रविना-शेषास्त्रयोदशयोगाभवति छद्मस्थाह्मनोयोगेसामायिकच्छेदोपस्थाप-नीयसयमेचक्षुर्दर्शनेमन पर्यवज्ञानेत्रयोदशयोगा भावनाशुक्लेत्रयौतु-कार्मणौदारिकमिश्रौतातेषुसर्वथानसभवनएवनयोरपर्याप्तावस्थायाभा-वात् मनोयोगादिमार्गणायातु तस्यामवस्थायामसभवात् तथा उरल-दुगत्ति औदारिकद्विककार्मण प्रथम तथा अतिम मनोयोगद्वय एव वचनयोगद्वय एवयोगसप्तक केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणमार्गणाया-प्राप्यते तत्रभावनाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगौसयोगिकेवलिसमुद्घात गतस्यभवति मनोयोगौतुअविकलसकलविमलकेवलज्ञानकेवलदर्शन-विलोकितनिखिललोकालोकस्यभगवत मन पर्यवविज्ञानिनोऽनुत्तरसु-रादिभिर्वामनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनातूतेहिभगवत्प्रयुक्तानिमना-द्रव्याणिमन पर्यवज्ञानेनपश्यतिवाग्योगस्तुदेशनावसरेभवति॥७९॥

टबार्थ—कार्मण १ औदारिकमिश्र २ ए दोय विना बाकी १३ योग छे, मनयोगमाहे १३ वचनयोगमाहे १३ सामायिकमे १३ छेदोपस्थापनीयमा १३ चक्षुदर्शनीयमे १३ मन पर्याप्तज्ञानमे १३ ए छ मार्गणामे १३ योग लाभे छे, उरलद्विक औदारिक २ कार्मण १ पहिलो अतिमममनोयोग १ असत्यमनोयोग २ पेहलो अतिमवचन १ सत्यवचनयोग १ असत्यवचनयोग १ ए ७ योग छे, केवलज्ञान केवलदर्शनमे सात योग छे ॥ ७९ ॥

मणवयउरलापरिहार, सुहुमेनवतेउमीसिसविउव्वा।
देसेसविउव्विदुगा, सकम्मुरलमीसअहखाए ॥८०॥

टीका—मणवयइत्यादि ॥ परिहारविशुद्धिकेसूक्ष्मसपरायेच नवयोगा केवेइत्याहमनोयोगश्चतुर्द्धावाग्योगश्चतुर्द्धाऔदारिकचेति आहारकद्विकचतुर्दशपूर्वविद लब्धिप्रारभकालेभवतिनचात्रनभवति वैक्रियद्विकमपिलब्धिमत तदप्यत्रनभवतिऔदारिकमिश्रकार्मणचगृहगतिमतरेणासभवात् तेनतावपिनभवत असत्यवाग्योगमनोयोगत्वतुउन्मार्गापेक्षयापरालबनचेतनापरिणामेनैवज्ञेय तेपुन पूर्वोक्तानवयोगा सवैक्रिया सहवैक्रियेणवर्त्तनइतिसवैक्रियावैक्रियसहिता सनोदशयोगामिश्रेसम्यग्मिथ्यादृष्टौभवति,तत्रवैक्रिय देवनारकापेक्षयायत्तुतत्रवाप्यतेतस्यापर्याप्तावस्थायाभावित्वात् मिश्रभावस्यचनसम्मामिच्छोकुणइकालमितिवचनप्रामाण्यादपर्याप्तावस्थायामसभवात् स्यादेवैक्रियलब्धिमतामनुष्यतिरश्चासम्यग्मिथ्यादृशासतावैक्रियारभसभवेन कथवैक्रियमिश्रनावाप्यते इतिउच्यते तेषावैक्रियारभासभवात्अ यनोत्राकुलश्चित्कारणात्पूर्वाचार्यस्तत्राभ्युपगम्यतेइतिनसम्यग्अवगच्छामस्तथाविधसप्रदायाभावादतोऽस्माभिरपितत्रेष्टमितिदेशे-

देशविरतेसंवैक्रियद्विका वैक्रियंवैक्रियमिश्रसहिता सत एकादशयोगा भवतिदेशविरतानामवडादीनां वैक्रियलब्धिमतां वैक्रियद्विकसंभवात् । तथातेएवनवपूर्वोक्ता सकार्मणौदारिकमिश्रा सहकार्मणौदारिकमिश्राभ्यावर्त्तते इतिसकर्मणौदारिकमिश्रा सत एकादशयोगायथाख्यातसंयमेभवंति अयमर्थ मनोयोगचतुष्टयवाग्योगचतुष्टयकार्मणौदारिकद्विकलक्षणाएकादशयोगायथाख्यातसंयमेभवंति तत्रमनोवाग्चतुष्कोदारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्मणमौदारिकमिश्रतुयथाख्यातसंयमआकुलस्यगृहस्थभगवत केवलिन संभवति तस्यहिसमुद्घातस्यतृतीयचतुर्थपंचमसमयेषु कार्मणकार्मणशरीरयोगीचतुर्थेपंचमेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयषष्ठसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रमिश्रौदारिकयोक्तासप्तमषष्ठद्वितीयेष्विति वचनादवाप्यते इतियथाख्यातसंयमेद्वयोरपिसंभवात् इतिप्रोक्तामार्गणास्थानेयोगा साम्प्रतमार्गणासुउपयोगस्वरूपनिरूपणपूर्वकमुपयोगानभिधित्सुराह ॥८०॥

टबार्थ—मनोयोगना भेद ४ वचनयोगना ४ भेद औदारिककाययोग ए नव योग परिहारविशुद्धिसंयममे ९ सूक्ष्मसंपरायसंयममे नव योग छे, तेहिजमननना ४ वचनना ४ औदारिक १ अने एक वैक्रियकाययोग मेलीइएने ए १० योग छे मिश्रदृष्टिमे देशविरतिमे नव योग छे तेहीजवैक्रिय २ मेली जे ए ११ योग छे यथाख्यातचारित्रमे ९ योग छे नव ते तेहीजकार्मण ३ औदारिकमिश्र २ ए २ मेलीजे तेवारे ११ योग छे यथाख्यातमे ए चासठीमार्गणामे योग कह्या ॥ ८० ॥

तियनाणनाणपणचउ, दसणबारजिअलखणुवओगा।
निणुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजएसु८१॥

टीका—तिअनाणनाण इत्यादि ॥ तीण्यज्ञानानिमत्यज्ञान-श्रुताज्ञानविभङ्गपाणिज्ञानानिमति श्रुतावधिमन पर्यवकेवललक्षणानि पचएतत्स्वरूपविशेषावश्यकभाष्यविवरणतोज्ञेय चत्वारिदर्शनानि-चक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनलक्षणानिइत्येव द्वादशोपयोगा जियलक्षणत्ति जीवस्यात्मनोलक्षणलक्ष्यतेज्ञायतेतदन्यनावच्छेदेनेतिलक्षण-मसाधारणस्वरूप अतएवोक्तम यनापिउपयोगलक्षणोजीव इतितेच-द्विधासाकाराअनाकाराश्चनवपचज्ञानानित्रीण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगा साकारा चत्वारिदर्शना यनाकाराउपयोगा यदाहप्रवचनार्थसार्थसर-ससरोरुहसमुद्धमकाशनसहस्रभानुश्रीमदार्यश्याम प्रज्ञापनायाउपयो-गपदेकतिविहेणभतेउवओगेपन्नत्ते ॥नचहा॥ आभिणिबोहियनाणे-सागरोवओगे सुअनाणेसागरोवओगे ओहिनाणेसागरोवओगे मण-पज्जवनाणेसागरोवओगे केवलनाणेसागरोवओगे मइअन्नाणेसागारो-वओगे सुअअन्नाणेसागरोवओगे विभगनाणेसागरोवओगे अणागारो-वओगेणभवेकतिविहपन्नत्तेगोयमाचउव्विहेपन्नत्तेतजहा चक्खुदसण-अणागारोवओगे अचक्खुदसणअणागारोवओगे ओहिदसण अणा-गारोवओगे केवलदसणअणागारोवओगे ॥ इत्यादि अवज्ञानस्य-मिथ्यात्वोपहतचेतनाविपर्यासेनअज्ञानत्वभवति नदर्शनस्यपन दर्शनस्यसामान्यग्राहकत्वेनपदार्थमामा यावबोधकत्वानाविपर्यासतावे नकुदर्शनत्वभेदा नभवति । मणनाणेत्ति विनामन पर्यवज्ञानकेवल-द्विकच केवलज्ञान केवलदर्शन लक्षणशेषानवोपयोगाभवति, सुरे-सुरगतौ निरित्ति, तिर्यग्गतौनिरयात्ति नरकगतौ अनयत्तिअविरति-मार्गणायाभवति । एतेषुहिसवविरत्यसभवेनमन पर्यवज्ञानकेवल-द्विकचेति ॥ ८१ ॥

टबार्थ—हवे बार उपयोग कहे छे ३ अज्ञानमतिअ-ज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभगअज्ञान ३ पाचज्ञानमतिज्ञान

१ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ च्यार दर्शन ४ चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुर्दर्शन २ अवधिदर्शन ३ केवलदर्शन ४ ए बारे जीव लक्षणउपयोग छे मन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३ ए तीन विना बाकी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ए ९ उपयोग छे देवगति १ तिरिगति २ नरकगति ३ सिद्ध कहीजे अविरति ४ ए च्यार मार्गणामे नव उपयोग छे ९ ॥ ८१ ॥

तसयोअवेअसुक्का, हारनरपणिदिसन्निभविसवे ।
नयणेयरपणलेसा, कसायदसकेवलदुगूणा ॥८२॥

टीका—तसयोअ इत्यादि ॥ त्रसेषुयोगेषुमनोवाक्कायरूपेषुवेदेषुद्रव्याकारलक्षणस्त्रीपुनपुसकलक्षणेषु शुक्ललेश्यायाआहारकेषुनरगतौपचेन्द्रियेषुसज्ञिषुभव्येषुसर्वेद्वादशाप्युपयोगा सभवति । वेदेष्वभिलापरूपेषुकेवलद्विकहीनादशैवोपयोगा लिंगाकारमात्रेषुद्रव्यवेदेषुद्वादशोपयोगा कथ्यते नयणेत्ति नयनेचक्षुर्दर्शनेइयरत्ति इतरे अचक्षुर्दर्शनेपचसुलेश्यायुचतुर्षुकषायेषु क्रोधमानमायालोभेषु केवलद्विकेनऊनादशउपयोगा भवति नतुकेवलद्विकचक्षुर्दर्शनादिसद्भावेअनुत्पादात्तस्य ॥ ८२ ॥

टबार्थ—त्रसकाय १ तीनयोग ३ मनोयोग १ वचनयोग २ काययोग ३ वेद ३ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद २ नपुसकवेद ३ शुक्ललेश्या आहारक १ मनुष्यगति २ पचेन्द्रि १ सज्ञी १ भव्य १ ए १३ मार्गणामे सर्व १२ उपयोग छे चक्षुर्दर्शनमे १ अचक्षुर्दर्शनमे १ पाच लेश्यामे कृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेजो ४ पद्म ५ कषायमे १० उपयोग छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए दोनु ओछाकीजे इत्यर्थ ॥ ८२ ॥

चउरिंदिअसन्निदुअन्नाण, दसइगबितिथावरिअचक्खू
तिअनाणदसणदुग, अन्नाणतिगभवमिच्छदुगे ॥८३॥

टीका—चउरिंदिअसन्निइत्यादि चतुरिंद्रियेअसज्ञिनिचत्वार-उपयोगाभवतिकेनइत्याह द्व्यज्ञानदर्शनद्वेअज्ञानेमत्यज्ञानश्रुताज्ञान-रूपेद्वेदर्शनेचक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनलक्षणइत्यर्थ तथानएवपूर्वोक्ताश्च-त्वारउपयोगाअचक्षुस्तुत्तिचक्षुर्दर्शनरहिता सन त्रयोभवतिके-ष्वित्याह ॥ इगत्तिसामान्यत एकेंद्रियेषुद्वींद्रियेषु त्रींद्रियेषुस्थाव-रेषुमत्यज्ञानश्रुताज्ञानेअचक्षुर्दर्शनेचेतिनयउपयोगा भवतिनशेषा विभगतुनभवप्रत्ययत शेषास्तुसम्यक्त्वादिअभावात् नप्राप्यतेअज्ञा-नत्रिकचक्षुरचक्षुरूपदर्शनद्वय एवपचोपयोगाभवतिअज्ञानत्रिकेअ-भव्यमार्गणायामिथ्यात्वद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनेपचोपयोगा अज्ञान-त्रिकदर्शनद्विकरूपानशेषा जघदातसम्यक्त्व विरत्यभावादितिपञ्चा-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेपूर्वाचार्यै कनश्चित्कारणान्नेष्यतेतन्नसम्यगवग-च्छाम इतिदेवेन्द्रसूरिवाक्यम् ॥ ८३ ॥

टबार्थ—चौरेंद्रीमे १ असज्ञिमे १ मतिअज्ञान १ श्रुतअ-ज्ञान १ ए २ अज्ञान चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए दोय दर्शनमे ४ उपयोग छे। एकेंद्रीमे बेंद्रीमे तेंद्रीमे पाच थावरमे ए ८ मार्गणामे २ अज्ञान १ अचक्षुदर्शन ए ३ उपयोग छे चक्षुदर्शन विना तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभगअज्ञान ३ दोय दर्शन चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए ५ उपयोग छे। ए मार्गणामे तीन अज्ञानमे ३ अभव्यमेमिच्छ द्विकमे मिथ्यात्व १ सास्वादनमे [illegible] छे ॥ ८३ ॥

केवलदुगेनियदुग, नवतिअन्नाणविणुखइअअहखाए।
दसणनाणतिगदेसि, मिसिअन्नाणमीसत ॥ ८४ ॥

टीका—केवलदुगेनियदुग इत्यादि ॥ केवलद्विके केवलज्ञानदर्शनलक्षणेनिजद्विककेवलज्ञानकेवलदर्शनरूपभवतिनशेषादशअवलब्ध्युपयोग यवच्छेदएव केवलज्ञानदर्शनोत्पाद नष्टमिठाउमत्थिएनाणे केवलनाणोउवउज्जइइतिवचनात् इति यवहारनयमतनिश्चयनयेनआवरणक्षयेआवार्य्यप्राकट्यनियमात् तथापिकेवलज्ञानप्रकाशेमत्यादीनामुपयोगानातत्रानर्भावात् यथासविलु प्रकाशेतारादीनासद्भावेऽपितत्प्रवृत्त्यदर्शनात् एवतेनशेषाइतिनवतिअन्नाणविणुअज्ञाननिकविनाशेषानवोपयोगा क्षायिकसम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्रेप्राप्यते अज्ञाननिकस्यमिथ्यात्वसद्भावेभावात् नअनयोरिति ॥ तथादेसिइतिदेशविरतौ ज्ञाननिकमतिश्रुतअवधिलक्षणदर्शननिकचक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपप्राप्यते । नशेषारतनाज्ञाननिकस्यमिथ्यात्वप्रत्ययात्नात्रमन पर्यवकेवलद्विक सर्वविरत्यभावात्रतत्रमिश्रे नदेवषट्क अज्ञानमिश्रिनभवति तत्रसम्यक्त्वात् पतितस्यमिश्रभावगतस्यज्ञाननिकदर्शननिकरूपउपयोगपट्कप्राप्यते मिथ्यात्वात् मिश्रमार्गगतस्यअज्ञाननिकदर्शननिकरूपउपयोगपट्कप्राप्यते अनावधिदर्शनमार्गणाऽभिप्रायेणोच्यते इति ॥ ८४ ॥

टबार्थ—केवलदुगे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमे आपआपणाएहीज केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोग छे तीन अज्ञान विना बाकी नव उपयोग पाच ज्ञान च्यार दर्शन ए समीलने नव उपयोग छे क्षायिकसमकितमे यथाख्यातचारित्रमे दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ तीन ज्ञान

मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए ६ उपयोग छे, देशविरतिमे अने एहीज ६ उपयोगज्ञानसुमिश्र न कीजे ज्ञान काढीजे एटले २ अने दर्शन ३ अज्ञान ए ६ उपयोग मिश्रमे छे ॥८४॥

मणनाणचरवुवज्जा, अणहारेतिन्निदसचउनाणा ।
चउनाणसजमोवसम, वेअगेओहिदसेअ ॥८५॥

टीका—मणनाणचरक्खुवज्जा इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानचक्षुर्दर्शनवर्जा शेषाश्चोपयोगाअनाहारकेभवति, यत्तुमन पर्यवज्ञानेचक्षुर्दर्शनंचानाहारकेनसभवति अनाहारकोविग्रहगतिकेवलिसमुद्घातायोगिसिद्धावस्थायानचतवानयो सभव तथा तीणिदर्शनानि चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपाणिचत्वारिज्ञानानि मतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणानीत्येवसमोपयोगाभवति, चतुर्पज्ञानेषु मतिश्रुतावधिमन - पर्यायलक्षणेषु तथा चतुर्पुसयमेषु सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिकसूक्ष्मसपरायेषु औपशमिकेसम्यक्त्वे तथा वेदकेक्षायोपशमिके अवधिदर्शनेचसमुच्चयेनशेषाइहाप्यवधिदर्शनेमत्यज्ञानाद्युपयोगप्रतिषेधोबहुश्रुताचार्याभिप्रायापेक्षयाद्रष्टव्य इतिमार्गणासुप्रोक्ताउपयोगा मनातरेआपेक्षिकप्रतिपादिकागाथामाह॥

दोतेरतेरबारसमणेकमा, अट्ठदुचउचउवयणे ।
चउदुपणतिन्निकाए, जीअगुणयोगोवओगत्ते ॥१॥

अत्रमुख्यस्वस्यमनापेक्षयाभिन्नयोगमुख्यत्वव्याख्यारूपागाथास्वतोव्याख्येयाइतिसाप्रतमार्गणासुलेश्या निरूपयन्नाह ॥ ८५ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञान, चक्षुदर्शन ए दोय काढीजे अनाहारकमे १० उपयोग छे तीन दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि च्यार ज्ञान ४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यायज्ञान,

ए ४ उपयोग छे च्यार ज्ञानमे सजममे उपशमसमकितमे क्षयोपशम समकितमे अवधिदर्शनमे ए इग्यार मार्गणामे सात उपयोग छे ॥ ८५ ॥

छसुलेसासुसट्ठाण, एगिंदिअसन्निभूदगवणेसु ।
पढमाचउरोतिन्निउ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥८६॥

टीका—छसुलेसासुसट्ठाण इत्यादि ॥ षट्सुलेश्यासुस्वस्थान स्वा स्वा लेश्याभवति यथाकृष्णलेश्याया कृष्णलेश्यानीललेश्यायानीललेश्या इत्यादि सामान्यत एकेन्द्रियेषुअसज्ञिभूदकवनेषुपृथिव्यबुवनस्पतिषुप्रथमा कृष्णनीलकापोततेजोलेश्याश्चतस्र भवति भवनपति यतरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवाहिस्वस्वभवच्युताएतेषुमध्येसमुत्पद्यते तेचतेजोलेश्यावन समुत्पद्यते नारकेषु विकलेन्द्रियेषु (द्वीन्द्रियेषु त्रीन्द्रियेषु चतुरिन्द्रियेषु) अग्निषु वायुकायिकेषु प्रथमास्तिस्र कृष्णनीलकापोतलेश्याभवति नान्याप्रायोऽमीषामप्रशस्ताध्यवसायस्थानोपेतत्वात् ॥ ८६ ॥

टबार्थ—हिवेबासठ मार्गणामे लेश्या कहे छे, तिहा छ लेश्यामे आपआपणी लेश्या छे कृष्णलेश्यामे कृष्ण छे नीललेश्यामे नील छे, तेजोमे तेजो कापोतमे कापोत एकेन्द्रीमे असज्ञीमे २ पृथिवीकाय अपकाय वनस्पतिकाय ए पाच मार्गणामे पहिली कृष्ण नील कापोत तेजो ए च्यार लेश्या छे नारकीगतिमे बेन्द्रीमे तेन्द्रीमे चौरेन्द्रीमे अग्निकायमे वायुकायमे ए छ मार्गणामे पहिली तीन लेश्या छे ॥ ८६ ॥

अहरकायसुहुम्मिकेवल, दुगिसुकाछाविसेसठाणेसु।
बधाचउसवत्थवि, अकसाएपगइदलवधो ॥८७॥

टीका—अहकारएसुहुम्मि इत्यादि ॥ यथाख्यातसयमेसु-क्ष्मसपरायसयमे केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनरूपेशुक्ललेश्या-एवनशेषा एतासुअत्यनविशुद्धपरिणामत्वात्, शेषासुमार्गणासु एकचत्वारिंशत् सख्यासुषडपिलेश्या प्राप्यते ॥ उक्तामार्गणासुलेश्या सप्रतिबधनत्त्वविभजन्नाह॥ बधाचउसवत्थवि इत्यादि मिथ्यात्वादि-हेतुभि आत्मप्रदेशेकर्मपुद्गलानालोलीकरणबध सचतुर्द्धाप्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबध तत्रयोगापयडिपएसठिइअणुभाग-कसायाओइतिवचनात् प्रकृतिप्रदेशबधौयोगात्भवत स्थितिबध-रसबधौकषायात्भवत, तत्त्वतत्त्वार्थतोज्ञेय ज्ञानेषु त्रिषुअज्ञानेषु षट्-सुसयमेषु त्रिषुदर्शनेषु षट्सुलेश्यासुभव्याभव्येषु षट्सुसम्यक्त्वेषु सज्ञि असज्ञि मार्गणासु आहारकानाहारकमार्गणासु चतुर्विधोपिऽबध तेनसर्वत्रापिसर्वास्वपिमार्गणासु बधभेदाश्चत्वारोपिप्राप्यते अकसाए कषायरहितासुकेवलद्विकयथाख्यातलक्षणासुत्रिषुमार्गणासु पगइ इतिप्रकृतिबध तथा दलत्ति प्रदेशसमुदयोदल प्रदेशबंध इति-बधद्वयप्राप्यते योगरूपस्यहेतो सद्भावात् द्वारायातबन्धक्रमसक्षे-पार्थ ॥ ८७ ॥

टबार्थ—यथाख्यातचारित्रमे सूक्ष्मसपरायचारित्रमे केवल-ज्ञानमे केवलदर्शनमे एक शुक्ललेश्या छे। बीजी मार्गणा १३ गतितेंद्री १ त्रस १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ७ सजम ५ दर्शन ३ भव्यसमकित ६ सज्ञी १ आहारक २ इकतालीस मार्गणामे ६ लेश्या छे। बधना ४ भेद छे, सर्वमार्गणाये च्यार प्रकारनो बध छे, जिहा कषायोदय नही तिहा प्रकृतिबध तथा प्रदेशबध छे ॥ ८७ ॥

पणतसनरयोएसु, कसायलेसाअचक्खुभवेसु ।
चउमूलउत्तरापुण, सगवन्नाहेयवोभणिया ॥ ८८ ॥

टीका—अथ पञ्चहेतवो मूलोत्तरामार्गणासु निरूपयन्नाह ॥ तत्र मूलहेतवो मिथ्यात्वाविरतिकषायपोगलक्षणाश्चत्वार उत्तरहेतव मिथ्यात्वपञ्चकअविरतिद्वादशककषायपञ्चविंशतिर्योगा पञ्चदशमर्वमीलनेसप्तपञ्चाशत्, तत्रपर्याप्तिपर्येंद्रियमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया नरक्षि मनुष्यगतिमार्गणाया काययोगमार्गणाया कृष्णादिलेश्यासुपट्सुअचक्षुर्दर्शनेभव्यमार्गणाया सञ्ज्ञिमार्गणाया आहारकमार्गणाया एव चतुर्दशमार्गणाया मूलहेतवश्चत्वार उत्तरहेतव सगवत्रासप्तपञ्चाशत्भणिता प्ररूपितास्तीर्थकरै इतिमनोयोगेवाग्योगेचक्षुर्दर्शनमार्गणाया औदारिकमिश्रकार्मणयोगविनापञ्चपञ्चाशद्हेतव प्राप्यते । ॥ ८८ ॥

टबार्थ—पचेंद्रीमार्गणाये त्रसकायमार्गणाये मनुष्यगतिमार्गणाये योग तीनने विषे कषाय ४ लेश्या ६ अचक्षुदर्शन १ भव्य एटली मार्गणाये १८ मूल च्यार बंधहेतु छे, मिथ्यात्व १ अविरति १ कषाय १ योग १ ए च्यार छे, उत्तर सत्तावन छे, मिथ्यात्व ५ अविरति १२ कषाय २५ योग १५ ए सत्तावन छे ॥ ८८ ॥

तिरिगईअन्नाणतिगे, अजयअभवेमिच्छिअणहारा ।
थीएदुवेयहीणा, साहारापुरिससढंमि ॥ ८९ ॥

टीका—तिरिगईअन्नाणइत्यादि ॥ तिरिगईति तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकमार्गणासु अजयत्ति अविरतिमार्गणाया अभव्यमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया अणहारत्ति आहारकशरीरआहारकमिश्ररहिता पञ्चपञ्चाशद्हेतव प्राप्यते थीएस्त्रीवेदेतेपूर्वोक्ता पञ्चपञ्चाशत्पुरुषवेदनपुंसकवेदहीनास्त्रिपञ्चाशद्हेतव सभवन्ति ॥ तेएवत्रिपञ्चाशत्-

साहाराआहारकद्विकसहिता पचपचाशत्हेतव पुरुषवेदेनपुसकवेदेचप्राप्यते अन्यतरवेदद्वयहीनाभवतिपुरुषवेदेस्त्रीनपुसकेनस्त्रीपुरुषेनइतिहेतवोहि उदयरूपाज्ञेया उदयरूपा परिणामविशोषिसक्लेशहेतवोज्ञेया ॥ ८९ ॥

टबार्थ —तिरिगति १ अज्ञानतीन अविरति १ अभव्य १ मिथ्यात्व ए सात मार्गणाने विषे आहारक २ विना ५५ बध हेतु छे मूल ४ छे, स्त्रीवेदमार्गणाये पुरुषवेद तथा नपुसकवेद ए विना ५३ हेतु छे, ते तेपनमध्ये पुरुषवेद तथा नपुसकवेदमध्ये आहारक बे मेळीये तेवारे ५५ हेतु छे ॥ ८८ ॥

देवेउरलाहारग, सढविणानारगेअथीपुरिसा ।
सढयुआएगिंदिसु, चउछत्तीसचमूलियरा ॥ ९० ॥

टीका—देवेउरलाइत्यादि ॥ देवगतिविषये औदारिकद्विकाहारकसढइतिनपुसकवेदविनाद्विपचाशत्बधहेतवोभवति । भवप्रत्ययादेवनसभव नारकेनारकगतौस्त्रीवेदपुरुषवेदविनातेएवदेवप्रत्यया एकपचाशत्बधहेतवोभवति षढयुआइतिषढनपुसकवेदयुक्ताइत्यनेन नरकगतौनपुसकवेदएवउदयेप्राप्यते एकेंद्रियेषुमूलहेतव चउत्तीचत्वारइतरेउत्तरभेदा छत्तीस इतिषट्त्रिंशत्भेदा तेचअग्रेतनगाथोक्ता ज्ञेया ॥ ९० ॥

टबार्थ —देवगतिमध्ये औदारिक २ आहारक २ नपुसकवेद १ ए पाच विना ५२ बधहेतु छे । नरकगतिमध्ये आहारक २ औदारिक २ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद ए ६ विना ५१ हेतु छे । एक नपुसकवेद मेळीये एकेंद्रीयमध्ये मूल च्यार उत्तर छत्तीस बधहेतु छे, ते सर्व आगळी गाथाये कह्या छे ॥ ९० ॥

इगमिच्छसत्तअविरय, कसायतेवीसपचयोगाय ।
पवणेवचउथावरि, अविउव्वाहेउचउत्तीस ॥ ९१ ॥

टीका—तेचउच्यते ॥ इगमिच्छइत्यादि ॥ तत्रएकेंद्रियेषुमिथ्यात्वअनाभोगएकअविरतय सप्त तत्रषट्कायवधस्पर्शनेंद्रियविषयरूपा सप्तअविरतय कषाया त्रयोविंशति स्त्रीपुरुषवेदहीनायोगा औदारिकद्विकवैक्रियद्विककार्मणयोगलक्षणा पचपवनेवायुकायेप्येवषट्त्रिंशत्भेदा प्राप्यतेचउथावरिस्थावरचतुष्केपृथिव्यप्वनस्पतितेजोलक्षणासुचतसृषु अविउव्वित्तिवैक्रियद्विकहीनाश्चतु त्रिंशत्हेनव प्राप्यते पृथिव्यादिषुवैक्रियद्विकनसभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थ—एक अनाभोगमिथ्यात्व १ छकाय ६ फरसनेंद्रियनी अविरति ए सात अविरतिकषाय वे वेद विना तेवीस योगा पाच योग औदारिक २ वैक्रिय २ कार्मण १ ए पाच बधहेतु छे । वायुकायमध्ये ३६ बधहेतु छे । पृथिवी १ अप २ तेउ ३ वनस्पतिए ४ थावरमध्ये वैक्रिय २ विना ३४ बधहेतु छे ॥ ९१ ॥

विगलेइन्दिअवुड्ढी, वयणयुआछसत्तअट्ठतीसाय ।
नाणतिगओहिदसे, वेअगखवगेसुअडचत्ता ॥९२॥

टीका—विगलेइन्दिअवुड्ढी इत्यादि॥ विगले द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रियलक्षणमार्गणानिकेइंद्रियाणा द्वीन्द्रिये रसनेन्द्रियवृद्धि त्रीन्द्रिये घ्राणेन्द्रियवृद्धि चतुरिन्द्रिये चक्षुरिन्द्रियवृद्धि वयणत्तिवचन असत्यामृषारूप तेनयुताइत्यनेन येपूर्वोक्ता पृथ यादिषुचतुस्त्रिंशत्हेनवस्तेअसत्यामृषावाग्योगारसनेन्द्रियाविरतियुक्ता छइतिषट्-

युक्तास्त्रिंशत् षट्त्रिंशत् त्रीन्द्रियेषु तेएव घ्राणेन्द्रिययुक्ता सप्तत्रिंशत् हेतव भवति ते एव त्रीन्द्रियप्रत्यया चक्षुरिन्द्रियाऽविरतियुक्ताअष्टत्रिंशत् चतुरेन्द्रियेषुप्राप्यते तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेवेदकेक्षयोपशमसम्यक्त्वेसवगेक्षायिकसम्यक्त्वे अष्टचत्वारिंशत्हेतवस्तत्रमिथ्यात्वपचकाननानुबधिचतुष्टयरहिता षट्चत्वारिंशत्, अविरतिसम्यग्गुणस्थानप्रायोग्या,आहारकद्विकचप्रमत्तानुदयप्रायोग्यमेव अष्टाचत्वारिंशत् हेतवोज्ञानत्रिकादिमार्गणासुप्राप्यते ॥ ९२ ॥

टबार्थ—विकलने विषे इंद्रियवृद्धि करवी अने वचनयोग असत्याअमृषाए मेलीये तेवारे बेन्द्रियने मिथ्यात्व १ अविरति ८ कषाय २३ योग ४ ए उत्तीस हेतु छे तेन्द्रि ने घ्राणेन्द्रिनी अविरति मेलीये तेवारे सडतीस बधहेतु छे चउरेन्द्रि ने चक्षुइंद्रिनी अविरति मेलीये तेवारे अडतीस बधहेतु छे ज्ञान ३ तीन अवधिदर्शन क्षयोपशमसमकित क्षायिकसमकित एटली मार्गणाये अडतालीस बधहेतु छे ॥ ९२ ॥

मिच्छअणहीणउवसमि, हारगहीणाछचत्तसासाणे।
मिच्छाहारगहीणा, मीसेदेसेगुणप्पभवा ॥ ९३ ॥

टीका—मिच्छअणहीण इत्यादि ॥ उवसमिउपशमसम्यक्त्वे मिथ्यात्वपचकअनतानुबधिचतुष्टयरहिता आहारकद्विकहीना छचत्तइति षट्अधिकाश्चत्वारिंशत् षट्चत्वारिंशत्हेतव प्राप्यते तथा सास्वादनेमिथ्यात्वपचकाहारकद्विकहीना पचाशत्हेतव प्राप्यते मिथ्यात्विना मिथ्यात्वएवोदयात् आहारकस्यप्रमत्तादौउदयात् तथा मीसेदेसेत्तिमिश्रे तथा देशेदेशविरतौ गुणप्रभवामिश्रोमिश्रगुणस्था-

नप्रायोग्या त्रिचत्वारिंशत् देशविरतेदेशविरतिगुणस्थानप्रायोग्या एकोनचत्वारिंशत्हेतव प्राप्यते ॥ ९३ ॥

टबार्थ.—मिथ्यात्व ५ अनन्तानुबंधि ४ ए नव विना उपशमसमकितमध्ये आहारक २ ते अडतालीसथी काढीये तेवारे छेतालीस बंधहेतु छे सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्व ५ आहारक २ ए ७ विना पचास बंधहेतु छे मिश्रे तेतालीस तथा देशविरते इगुणचालीस बंधहेतु छे जे गुणठाणे कही ते ॥९३॥

केवलदुगिसगयोगा, जोगाइकारशुद्धचरणमि ।
नवयोगिककसाओ, सुहुमेदसहेयवोभणिया ॥९४॥

टीका—केवलदुगिसगयोगाइत्यादि ॥ केवलद्विकेकेवलज्ञानदर्शनलक्षणेसप्तयोगा प्रथमानिममनोवाग्योगरूपा औदारिकद्विककार्मणकाययोगरूपा प्राप्यतेमोहोदयाभावात् मिथ्यात्वाविरतिकषायभेदानामनुदय शुद्धचारित्रत्वात्असत्यमिश्रमनोवाग्योगाभाव निर्मोहत्वात्तसशयवाक्यादिकरणाभावात् नैवक्रियाहारकौइति मनोयोगवाग्योगाष्टकऔदारिककाययोगएतेनवयोगाउपशातयथाख्यातस्य तथाक्षीणमोहस्यभवतिऔदारिकमिश्रकाययोगकार्मणयोगौतुकेवलिसमुद्घातावस्थायायथाख्यातचारित्रवतोभवत एवएकादशयोगा भवति सुहुमेसूक्ष्मसापरायचारित्रेनवयोगा चत्वारोमनोयोगा चत्वारोवाग्योगा औदारिककाययोगलक्षणा एकसूक्ष्मसज्वलनलोभरूप कषाय । एवदशहेतव भवतिशेषकषायाणाउदयाभावात्तद्भावेवाविरतेरप्यभाव मिथ्यात्वोदयस्तुप्रथम एवगुणस्थानकयावत्नपरतेननप्राप्यते ॥ ९६ ॥

टबार्थ.—केवलज्ञान १ केवलदर्शन एने विषे सात योग

छे। मनना ४ वचनना ४ औदारिक २ कार्मण ए ११ योग-बधहेतु, यथाख्यातचारित्रने विषे मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ नव योग तथा एक सज्वलन लोभ ए दश बधहेतु छे ॥ ९४ ॥

सजलणनोकसाया, कम्मणओरालमीसविणुयोगा।
सामाइयछेएअण, हारथ्थीविउव्विपरिहारे ॥९५॥

टीका—सजलणनोकसाया इत्यादि ॥ तत्रसामायिकचारित्रे-छेदोपस्थापनीयचारित्रेषड्विंशति हेतव प्राप्यते तत्रद्वादशकषाया-नुदयेसर्वविरतिप्रादुर्भाव सर्वविरतिप्राकट्येचमिथ्यात्वाविरतिव्यस-एवअत सज्वलनचतुष्टयनवनोकषाया एवत्रयोदशकषायभेदा कार्मणौदारिकमिश्रयोगाभावेशेषास्त्रयोदशयोगा एवषड्विंशतिबध-हेतव प्राप्यते, सामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्राप्यन्ते तथापरिहारविशु-द्धिचारित्रेस्त्रीवेदरहिताद्वादशकषाया मनोयोगवाग्योगाश्चऔदारिक-चेतिनवयोगा एतेनवयोगाएवएकविंशतिहेतव प्राप्यते वैक्रिया-हारकलब्धीच वनवासित्वात् अभिगृहीततपोविशेषयुक्तत्वान्नभवत ॥ ९५ ॥

टबार्थ—सज्वलनना ४ नोकषाय नव कार्म्मण २ औदा-रिकमिश्र ए वे विना १३ योग छवीस बधहेतु छे सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रने विषे आहारक २ स्त्रीवेद २३ बध हेतु छे ॥ ९५ ॥

तेरसकसायजोगा, मणनाणेविंतिकेइमणवयणे।
योगातेरसतेहिं, उज्जुसुअनयविहीगहिआ ॥९६॥

टीका—तेरसकसायजोगा इत्यादि ॥ मणनाणेमन पर्यव-ज्ञाने तेरसत्तिनयोदशकषाया सज्वलनचतुष्टयनवनोकषायलक्षणा त्रयोदशयोगाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयरहिता षड्विंशतिहेतव । प्राप्यते, अत्रमतांतरेकेचित्तुवति मनोयोगे वचनयोगे पूर्व-पचदशयोगा उक्तास्तेचनैगमनयेअतीतनैगमापेक्षयाएपाजीवाना-मनोयोग वचनयोगस्तस्यपचदशयोगा प्राप्यते, केचित्मनोयोगे-पर्याप्तावस्थापेक्षयाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगरहितास्त्रयोदशयोगा भवति,तेच ऋजुसूत्रनयापेक्षयाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयअपर्या-प्तावस्थायापर्याप्तावस्थायातुएतेनतेनत्रयोदशयोगागृहीता कषाय चतुष्टयेद्वादशकषायहीना पचचत्वारिंशद्बंधहेतव प्राप्यते ॥९६॥

टबार्थ—तेर योग औदारिकमिश्र १ कार्मण ए २ विना सज्वलनना ४ नवनोकषाय ए छवीस बंधहेतु छे तथा पूर्वे मनोयोगने तथा वचनयोगने सत्तावन बंधहेतु ग्रही तेमध्ये योग पनरगवेरुया तेसज्ञी अपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ जीवभेदनी अपे-क्षाये नैगमनयगवेरयु छे तथा केइक आचार्य पर्याप्ति कर्या पछी मनवचन थाय तेमाटे ते ३ योग गवेषे छे औदारिक-मिश्र १ कार्मण २ ए बे नथी गवेषता ते ऋजुसूत्रनय गवेषे छे ऋजुसूत्रनय वर्त्तमानकालग्राही छे तेमाटे ते ग्रहु छे एव बंधहेतु अधिकार कह्यो छे ॥ ९६ ॥

चउदसयोगाविहीणा, अणहारेअसन्निएसुइगचत्ता।
वयतिवणमिच्छेचउ, पुरिमथ्थीहारदुगहीणा॥९७॥

टीका—चउदसयोगविहीणा इत्यादि ॥ तथा अनाहारक-मार्गणायाचतुर्दशयोगान भवति कम्मअणहारेइतिवचनात् शेषामि-

थ्यात्वादयोद्विचत्वारिंशत्कार्मणयुक्तास्त्रिचत्वारिंशत् हेतव प्राप्यते असन्नीएसुत्ति असज्ञिमार्गणाया एगचत्तत्ति एकचत्वारिंशत्हेतवोभवति, तत्रसप्तपचाशत्लक्षणेषु वचनयोगत्रयमनोयोगचतुष्टयमिथ्यात्वचतुष्टय अभिग्रहादिक मनोयुक्तस्यैवामनस्कस्यानाभोगमिथ्यात्वमेवतेनाभिग्रहादयश्चत्वारिमिथ्यात्वानि, पुरुषस्त्रीवेदौआहारकद्विकमनस अविरति एवपोटशहेतवोनभवति शेषाएकचत्वारिंशत्भवति थीनरपाणिंदि चरमाचउइतिवाक्यालिंगाकारमात्रनवस्तुगत्याइति ॥ इत्युक्ता मूलोत्तरबहेतव मार्गणासु यत्अपेक्षाभेदेनोक्त तत्सर्वमपिसापेक्षमेवनोत्सूत्रबुद्धिकार्यादक्षैरिति ॥ साम्प्रतमाश्रवभेदान्मार्गणासुनिरूपयन्नाह ॥ ९७ ॥

टबार्थ —

नरपंचिंदियतसभव, योएआहारसुक्कसन्निसु ।
बायालीसआसव, केवलहक्खायगेचउग ॥९८॥

टीका—नरपचिंदियतसभव इत्यादि ॥ तत्राश्रवभेदाद्विचत्वारिंशत् इंदिअकसाय अव्वययोगापचवउपचतिनिकम्माकिरीयाओपणवीस काइअमाइयाभेया ॥ तत्रनरमनुष्यगतौपचेन्द्रियेत्रसकाये भव्येयोगत्रिकेआहारकेशुक्ललेश्याया सज्ञिमार्गणाया द्वाचत्वारिंशत् आश्रवभेदा प्राप्यते एतासुमार्गणासु जीवभेदेन कालभेदेन सर्वे आश्रवभेदा प्राप्यते तथा केवलज्ञानकेवलदर्शने उपयोगद्वये यथाख्यातचारित्रेचउगत्तिचतुष्क योगत्रिकेयापथिकाक्रियारूपआश्रवचतुष्कप्राप्यते निर्मोहस्यइन्द्रियकषायअव्रतादीनाअभावात । कायिक्यादिसपरायिकिक्रियायाअभावात् आश्रवचतुष्कमेवभवति एव त्रयोदशमार्गणा उक्ता ॥ ९७ ॥

टबार्थ—हवे मार्गणाये आश्रवना भेद कहे छे मनुष्य पचेंद्रिय त्रसकायभव्य १ योग ३ आहारक शुक्ललेश्या सज्ञी एटली मार्गणाये इन्द्रिय ५ कषाय ४ अव्रत ५ योग ३ क्रिया २५ ए ४२ बेतालीस आश्रव छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ यथाख्यातचारित्र ए तीने मार्गणाये इरियावही क्रियारूप एक आस्रवनो भेद पामीये तीन योग एव ४ पामीये ॥ ९७ ॥

एगिदिथावरेसु, तीसरसणाइइंदियानथ्थी ।
मणवयणयोगवययोग, पच्चइयानत्थिकिरियाओ९८॥

टीका—एगिंदिथावरेसु इत्यादि ॥ एकेंद्रियमार्गणायास्थावरपचकमार्गणायाविंशतआस्रवभेदा प्राप्यते रसनादीन्द्रियाणिनसति आसुस्पर्शनेन्द्रियस्यसद्भावात कषायचतुष्क अव्रतपचक एक काययोग चक्षुरिंद्रियाभावात्दृष्टिकी क्रियाभवति पाडोच्ची १ सामतोवणी १ आनयनी क्रिया १ आज्ञाप्रत्ययिकी क्रिया एता चतस्र क्रिया वचनयोगवनएवभवति स्थावरेषु वचनयोगाभावात् न एता क्रियाइरियावहीविहिणा इतिपदअनयोज्यतेनइर्यापथिकी क्रियाक्षीणकषायाणाभवति एकेन्द्रियादिपदमार्गणासु कषायोदय अस्त्येवतेननेर्यापथिकी क्रिया ॥ शेषा कायिक्यादय एकोनविंशतिभेदा प्राप्यते इत्येवविंशत् ॥ ९८ ॥

टबार्थ—एकेन्द्रिमार्गणाये थावर ५ मार्गणाये त्रीस आस्रव छे रसनादिक इंद्रिय नथी एटले एक फरसन इन्द्रिय छे कषाय ४ अव्रत ५ मनोयोग वचनयोग नथी एक काययोग छे वचनयोगथी उपनी जे क्रिया ते नथी दृष्टिकी १ पाडोच्ची

१ सामनोवणी १ आणवणी १ आज्ञाप्रत्ययकी १ ए वचन-योगनी क्रिया नथी ॥ ९८ ॥

इरियावहीअभावो, वेइदिसुरसणवयणसजुत्तं ।
तेइदिएसुनासा, चउरिदिसुचक्खुदिट्ठीअ ॥९९॥

टीका—इरियावहीअभावो इत्यादि ॥ द्वीन्द्रियेषुतेएवत्रिंशत्-भेदा रसनेन्द्रियवचनयोगसयुक्ता द्वात्रिंशत्योगा भवति, ननुवच-नयोगोदयेपाडोच्ची इत्यादिकाक्रियाकथन तनोच्यते पाडोच्चाप्रमुखा-क्रियापूर्वापरकालयावत्वाक्यस्मरणवत् भवतिस्मरणचदीर्घकालिक-सज्ञावारकस्यदीर्घकालिकीसज्ञा तु समनस्कस्यैवतेनद्वीन्द्रियादीनान-भवति ॥ त्रीन्द्रियेषुरसनेंद्रियघ्राणेंद्रियपोगात्त्रयस्त्रिंशत्आस्रवभेदा सभवति। चतुरिंद्रियेषुचक्षुरिंद्रियेतथादिष्टि इतिदृष्टिकीक्रियाएवद्वयो-र्मीलनेपचत्रिंशत्आस्रवाभवति।अनएकेंद्रियविकलेंद्रियेषुमृषावादादि-अनता वचनयोगादिअभावेकथप्राप्यते तनोच्यते द्रव्यास्रवत्वतुका-रणरूपभावास्रवोह्यास्रवत्वनचात्मज्ञानाभावात् सर्वेषाभावास्रवास्सत्ये-व अशुद्धविभावपरिणतिपरिणमनेनात्मन परकर्तृत्वपरिणत्याभावप्रा-णातिपात १ जीवाजीवादिपदार्थानास्याद्वादयथार्थाऽनवबोधप-रिणामोमृषावाद सारबुद्धयापुद्गलग्राहकतापरिणतिरदत्तादान, पौ-द्गलिकवर्णादीनाअनुभूति भावमैथुन, पुद्गलसुखेषुसरक्षणापरिणाम परिग्रह इत्यनेनपरभावकर्तृताहिंसाविषयस्तज्ञान मृषापरभावग्रा-हकतादत्तादान परभावास्वादनमैथुन परभावरक्षणापरिग्रह एतेभा-वास्रवा सर्वजीवेष्वविरतेषुसदाप्राप्यते एवएवसर्वत्रयोज्यम् ॥९९॥

टबार्थ—इरियावहीक्रिया एटलानो अभाव शेष इगुणीस क्रिया छे मीलया तीस आश्रव छे, त्रेंद्रिय ने रसनइंद्रिय तथा

वचनयोग ए बे मेलीये तेवारे ३२ आश्रव छे, तेंद्रियने एक नासिका इंद्री मेलीये तेवारे तेतीस आश्रव छे, चौरिंद्रिय ते चक्षुदर्शन एकमे दृष्टिकी मेलीये तेवारे ३५ आश्रव भेद छे ९९॥

पाणाइवायपरिग्गहमि, च्छअपच्चरकतहरिआवहिया,
इंदियअव्वयहीणा, मणनाणेचरणतिअगेअ ॥१००॥

टीका—पाणाइवायपरिग्गहमि इत्यादि ॥ तत्र मन पर्यव-ज्ञानेचारित्रत्रिकेसामायिकच्छेदोस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणेप्राणा-तिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया, मिथ्यात्विकीक्रिया, अप्रत्या-ख्यानिकी, तथाईर्यापथिकीक्रियाहीना, शेषाविंशति क्रिया का-यिक्यादिका प्रशस्ता, अर्हत्भक्त्यादौशासन पावातवारणेविष्णु-कुमारादीनामिवविंशति क्रिया सामायिकचारित्रेप्राप्यते, प्रश-स्तप्रवृत्तिरिवप्रशस्तापिप्रवर्त्ततेएवनतुयदिप्रशस्ताप्राद्वेषिक्यादिक्रि-यामुनीनागृह्यतेनयाप्रशस्ताप्राणातिपातिक्यपिकथनसगृह्यते, त-त्राह ॥ प्राणातिपातास्रवस्यसर्वथाप्रत्याख्यानत्वात्तद्धेतुभूतद्वा-दशकषायोदयाभावात्नभवति, योगचापल्यादिद्वेषरागादिपरिणाम-स्यसत्त्वात्, अप्रशस्तनावारणेनप्रशस्तताप्रवृत्तिरुपालभ्यते, नतुक्रि-याया आस्रवभेदत्वात् प्रशस्तादिक्रिया प्रशस्तपुण्याद्यास्रव-कारणत्वेनकथनिर्ग्रंथ नत्यजति, नि कर्मतःसाध्यरुचिपरिणतस्य-कर्महेतुक्रियाप्रवृत्तौकिंप्रयोजन तत्राह ॥ निकाचितबद्धसज्वलन-कषायपोगानामवश्योदितत्वात् यथोदयभोग्येचाशुभबंधप्राप्तगुणवि-नाशकत्वेनपरावृत्तौदोषक्षय ज्ञानादीनाचवृद्धि शुभकर्मबंध वचन-शुभतिवत् अवश्योदयत्वेनाभाषणेचनिर्जरानभवतितेनयथार्थोपदे-शादिस्वाध्यायकरणेनिर्जराउक्ता एवप्रशस्तक्रियापिज्ञेया । इंद्रिय-

पचकाऽन्नपचकहीना सप्तविंशतिरास्रवभेदा प्राप्यते, इद्रियोपयोगेसत्यपिमैथुनास्रवस्याभावात् इद्रियविषयतातेनेंद्रियास्रवाभाव ॥ ॥ १०० ॥

टबार्थ—प्राणातिपातिकी क्रिया १ परिग्रहिकी क्रिया १ मिथ्यात्विकी क्रिया १ अपचरकाणी क्रिया १ तथा इरियावही क्रिया १ ए पाच क्रिया विना २० क्रिया इद्रिय ५ विना अव्रत ५ विना एटले कषाय ४ योग ३ क्रिया २० ए सत्तावीस आश्रव भेद छे, मन पर्याय ज्ञान १ तथा सामायिक १ छेदोपस्थापनीय १ परिहार विशुद्धि १ ए तीन चारित्रने विषे सत्तावीस आश्रव भेद छे ॥१००॥

नाणतिगओहिदसे, अमिच्छदेसिमिच्छइरिअहीणाय,
मणइरिअविणाअमणे, अणहारेहुतितित्तीस ॥१००॥

टीका—नाणतिगओहिदसे इत्यादि ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेमार्गणाचतुष्टये अमिच्छत्ति मिथ्यात्विकीक्रियारहिताएकचत्वारिंशत आस्रवभेदा प्राप्यतेअविरतिसद्भावात्, देसित्ति देशविरतिमार्गणायाअमिच्छइरियत्ति मिथ्यात्विकीतथाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशत् आस्रवभेदा प्राप्यते, मिथ्यात्वोदयस्यचतुर्थगुणस्थानेएवगतत्वात्ईर्यापथिकीतुअकषायस्यभवति देशविरतस्यकषायाष्टकोदयेवर्तमानत्वात्, तथाननुदेशविरतस्यत्रसहिंसानिवृत्तावपिस्थावरहिंसासद्भावेप्राणातिपातिकीसद्भाव इच्छापरिमाणादिकृतेलोकप्रमाणाविरतिनिवृत्तिरितिसिद्धाताशयेऽपिएकादेशविरतिर्नालपडितवीर्यसद्भावात्, , अप्रत्याख्यानिकीक्रियासद्भावस्तेनचत्वारिंशदास्रवा मणइरिअविणा अमणेत्ति असज्ञिपुमनोयोगीर्यापथिकीक्रियाविना-

अमणेअसज्ञिमार्गणायाचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यतेतत्प्रत्ययस्यतत्रसद्भावात , अणहारेत्ति अनाहारकमार्गणायामपत्रिंशत्आस्रवा तत्रेंद्रियपचकतुर्भावेंद्रियसद्भावेग्राह्यतथाचभगवत्याजीवेणभतेगम्भवक्कतेकिंसइंदीयेअणिंदीयेवक्कमति ? गो० सइंदीयेवक्कमतिसेणकतिइंदीयेवक्कमतिपचेंदियेवक्कमतिइतिवचनात इंद्रियपचकअव्रतपचककषायचतुष्टयमनोयोगवाग्योगरहितएक कायपोगस्तथापचविंशति क्रियायादृष्टिकीक्रियानभवति, यद्यपिपचेंद्रियस्यविग्रहगतिकस्यचक्षुरिंद्रियास्रवसद्भावेऽपिवर्णादिग्रहणरूपलब्धिमनरेणनदृष्टिकीक्रिया, पाडोच्चीया सामतोवणीयातु दीर्घकालिकसज्ञायुक्तस्यवचनयोगवत भवतितेननानाहारकस्य नेसत्यीसाहत्थीतुऔदारिकादिस्थूलशरीरव्यापारवत भवति, आणवणीआज्ञाप्रायोगिक्यपिवचनयोगयुक्तस्यकायादिव्यापारतोभवति, विदारणिक्यपिऔदारिकवैक्रियशरीरपर्याप्तस्य भवति, इत्यष्टक्रियारहिता सप्तदशक्रिया कायिक्यादिका प्राप्यन्तेकाययोगस्यसद्भावात् अधिकरणादिकचात्मगुणघातादिपरिणत्या विज्ञेयएवतेनानाहारकमार्गणायामपत्रिंशत्आस्रवा प्राप्यते ॥१०१॥

टबार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन १ ते एकतालीस मिथ्यात्विकी क्रिया विना देशविरति मार्गणाये मिथ्यात्विकी क्रिया १ तथा इरियावहीकि क्रिया ए बे विना चालीस आश्रवना भेद छे, मनोयोग १ इरियावही २ ए बे विना ४० आश्रव भेद असज्ञीने विषे छे, अनाहारक मार्गणाये तेतीस आश्रव छे, दृष्टिकी १ पाडोच्ची २ सामतोवणी १ सच्छीसाहच्छी १ आणवणी १ विदीरणा १ आज्ञाप्रायोगिकी १ ए क्रिया मनोयोग १ वचनयोग १ ए बे योग नथी आकी तेतीस छे ॥१०१॥

वेयगियमिच्छइरिया, उवसमखवगेतइरीअजुत्ता,
सुहमेयोगतिलोहो, काइयअणभोगपिज्जाय ॥१०२॥

टीका—वेयगियमिच्छा । वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वे मिथ्यात्विकीक्रियाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशदास्रवभेदा प्राप्यते,अविरतादिदोषसद्भावात मिथ्यात्वास्रवविगमेसम्यक्त्वदर्शनप्रादुर्भाव तथाउपशमसम्यक्त्वेक्षायिकेसम्यक्त्वेतेचत्वारिंशउर्ईर्यापथिकीक्रियायुक्ता एकचत्वारिंशदास्रवाभवति, मिथ्यात्विकीक्रियायाअभाव । सूक्ष्मसपरायचारित्रे योगतित्ति, योगामनोवाक्कायरूपास्त्रय लोहोत्ति लोभ सज्वलनलोभ कायिकीक्रिया, अनाभोगिकीक्रिया साचज्ञानावरणकर्मोदयसत्वात् यावत् ज्ञानावरणनावत् किंचित्अज्ञानपदार्थजानमस्त्येवेतितेनअनाभोगिकीक्रियासभव इति पिज्जत्ति रागप्रत्ययिकीक्रियालोभस्यरागागत्वात् क्रोधोदयाभावात् नद्वेषिकीक्रियाअवइत्येव सप्त आस्रवा प्राप्यते, केचित् ॥१०२॥

टबार्थ —वेदग कहेता क्षयोपशम समकितने विषे मिथ्यात्विकी तथा इरियावहीक्रिया विना च्यालीस भेद आश्रव ना पामीये, उपशम समकित तथा क्षायिक समकित मार्गणाये इरियावही क्रिया भेलीये एटले ४१ आश्रव छे, सूक्ष्मसपराय चारित्रे योग तीन, लोभ कषाय तथा कायिकी क्रिया अनाभोगिकी क्रिया तथा रागकी क्रिया एटला सात आश्रव पामीये सूक्ष्मसपराय मध्ये ॥१०२॥

अहिगरणदुगयुआ नव, केइभन्नतिसेसेइगुयाला,
इरियावहीविहीणा, चरकूअचरकुम्मिचायाला॥१०३

टीका—अहिगरण इत्यादि ॥ अधिकरणीपाउसीइतिक्रिया द्वयंवदतितत्रापिप्राद्वेष्यातुनसभवति, तथापिप्रज्ञापनाटीकायाचतुर्णामपिकषायाणारागद्वेषोभयरूपत्वात् प्राद्वेषिकीक्रियाभवति १ इत्याशयभेदात्नवआस्रवभेदालभ्यते (इति) केइनवभनति, सेसत्तिशेषमार्गणायामनुष्यविनागतित्रिकवेदत्रिककषायचतुष्टयअज्ञानत्रिकलेश्यापचक अभव्यत्वमिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतिश्चेतित्रयोविंशतिमार्गणासु "इरियावहीविहिणत्ति" ईर्यापथिकीक्रियारहित एकचत्वारिंशत्आस्रवा प्राप्यते, एताश्चमार्गणानियमात्सकषायाएवभवति, तेनसापरायिकीक्रिया प्राप्यतेनेर्यापथिकी, चक्षुर्दर्शनेअचक्षुर्दर्शनेद्विचत्वारिंशदास्रवा लभ्यतेइत्युक्ता आस्रवामार्गणास्थानेषुसाप्रतमार्गणासुसवरभेदान्दर्शयन्नाह ॥ तेच

समिइगुत्तिपरीसह, जइधम्मोभावणाचरित्ताणि,
पणतिगदुवीसदसवार, पचभेएहि नायवा ॥१॥

तेचगुणस्थानशतकटीकायाव्याख्यातएवज्ञातव्या ॥१०३॥

टबार्थ—केइक आचार्यो नय भेदे अधिकरणी क्रिया तथा पाउसी क्रिया बे सयुक्त करी नव आश्रव भेद माने छे सूक्ष्मसपराय मध्ये शेष थाकती रही जे २५ मार्गणा मनुष्य विना तीनगति वेद ३ कषाय ४ अज्ञान ३ लेश्या ५ अभव्य १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए सर्व मार्गणाये इरियावही विना ४१ आश्रव भेद पामीये, एटले बासठी मार्गणाये आश्रवना भेद कह्या ॥१०४॥

नरतसपणिदिजोए, नाणचउगेतिदंससुक्कासु,
भवेउवसमिखायग, सन्निआहारेसुसवेवि ॥१०४॥

टीका—नरतस इत्यादि नरत्तिमनुष्यगतौत्रसकाये पञ्चेन्द्रियेमनोवाक्कायरूपेयोगत्रयेमतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणेज्ञानचतुष्केतिदसत्ति चक्षुरचक्षुरवधिलक्षणेदर्शनत्रिकेसुक्काइतिशुक्ललेश्यायामवनिभव्ये भव्येउवसमेत्ति उपशमक्षायिकलक्षणेसम्यक्त्वद्वयेसज्ञिमार्गणायाआहारकमार्गणायाएवएकोनविंशतिमार्गणासुसर्वेसप्तपचाशत्सवरभेदा प्राप्यते चारित्रभेदानासर्वेषासत्त्वात् त सत्त्वेचसत्त्वरभेदा सर्वेऽपिप्राप्यते इति ॥१०४॥

टबार्थ—हवे बासठि मार्गणाने विषे सवरतत्वना भेद कहे छे, मनुष्य गति १ त्रसकाय १ पचेंद्रीय १ योग ३ ज्ञान ४ ए च्यार दर्शन तीन चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्ललेश्याने विषे भव्य मार्गणाने विषे उपशम समकित सज्ञा मार्गणाये आहारक मार्गणाये १९ मार्गणा तेने विषे सर्व भेद सवरना सत्तावन पामीये ॥१०४॥

वेयतिकसायलेसा, वेअगिहरकायसुहमजईहीणा,
लोभेतेउससुहमा, चउचरणविणायचरणमि॥१०५॥

टीका—वेयतिकसायलेसा इत्यादि ॥ तिइतिडमरुकमणिन्यायेनोभयथासबध वेदत्रिके, तिकसायत्ति कषायत्रिकेक्रोधमानमायालक्षणे लेसाइति कृष्णादिलेश्यापचके वेयगि, वेदकेक्षयोपशमे सम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्र सूक्ष्मसपरायचारित्रलक्षणभेदद्वयाभावात् पचपचाशत्सवरभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनत सर्वचारित्रपर्यंतएतेषु

परस्थापनीयादिचारित्रचतुष्टयाभावात् त्रिपचाशत्संवरभेदा प्राप्यते, छेदोपस्थापनीयेऽपित्रिपचाशत् सामायिकादिपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायपथारयातचारित्ररहिता परिहारेशेषचारित्ररहितास्त्रिपचाशत् सूक्ष्मेऽपित्रिपचाशत्,यथाख्यातेऽपिअन्यचारित्ररहितास्त्रिपचाशत्संवरभेदा प्राप्यते, अत्रसूक्ष्मसपराययथारयातयोर्भावनाद्वादश नप्राप्यते, ध्यानारूढत्वात् तेनएकचत्वारिंशत्भेदाभवति, सूक्ष्मसपरायेयथारयातेऽपिएकचत्वारिंशत्भेदाअत्रमोहोदयप्रायोग्या परीषहानभवति, तनस्तत्सहनरूपा परिषहा कुतोभवति तत्रोच्यतेपरीषहजय संवरस्तेनपरिषहजयरूपस्यात्मपरिणामस्यसद्भावात् एतेभेदा प्राप्यते,उक्त"चतस्त्वार्थभाष्ये"परीषहजय संवर परिषहास्तुवेदनीयादिकर्मप्रभवास्तेचभगवत्यादर्शिताएव । गाथायातुभावनाअपहारोनोक्त सतुचकारात्प्राप्त केचित्तुप्रशमरत्यादौतुभावनासत्त्वमपिवदति भावनापूर्वकज्ञानमेवध्यानेपरिणमति तेनभावनासत्त्वमपिज्ञेयम् ॥ १०५ ॥

टबार्थ —वेद ३ तीनमध्ये स्त्रीनपुसकमे कषाय ३ तीनमध्ये क्रोधमानमायामाहे लेश्या पाच शुक्ल विना क्षयोपशमसमकितने विषे यथारयातचारित्र तथा सूक्ष्मसपरायचारित्र ए भेद विना ५५ संवरभेद पामीये, लोभकषाय मार्गणाये सूक्ष्मसपरायचारित्र संयुक्त ५६ संवरभेद छे चारित्र पाच मार्गणाने विषे जे चारित्र गवेषीये तेहथी बीजा चारित्र ४ विना ५३ भेद संवरना पामीये ॥ १०५ ॥

केवलदुगेअणहारे, चउसयमभावणाविणातिगई ।
अविरईदेसेभावण, सेसासुअसंवरोनत्थि ॥१०६॥

टीका—केवलदुगेअणहारे इत्यादि ॥ केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्गणाद्वयेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायचारित्ररहिताद्वादशभावनारहिताएकचत्वारिंशतसवरभेदाप्राप्यते, समितिगुप्तिस्थितधर्मपरीषहजयादिपरिणामानाक्षायिकत्वावस्थाप्राप्ताइतिगम्यसर्वेषामपिसाधनधर्माणासपूर्णत्वेनभवनात् ॥ तथा अनाहारकमार्गणाया सामायिकादिचारित्रचतुष्काभाव द्वादशभावनाअपिनभवतिपन अन्तरालगतौक्षयोपशमचारित्राणाभावनानाचनसभव केवलिसमुद्घातावस्थायातुएतेषापोटशभेदानामसभवएव समित्यादीनातुकेवलिसमुद्घातकालेक्षायिकत्वेनसगृहीतत्वात् ॥ तथा नरकतिर्यग्देवगतौअविरतिमार्गणाया देशविरतौद्वादशभावनाएवसभवतिनशेषा सर्वविरत्यभावात्, ननुदेशविरतस्यपौषधादिकालेसमितिगुप्त्यादयोभवति ता कथनगृहीता तत्रोच्यते देशविरतस्यसमित्यादयोऽभ्यासरूपा नक्षयोपशमरूपा अनवस्थायित्वेनमवृत्तिरूपत्वात्नानुमोदना दोषस्यसर्वतोनिवृत्तेन समित्यादयोगुणा श्रावकस्य इति ॥ सेसासु शेषासुजातिचतुष्कस्थावरपचकाज्ञानत्रिकाऽभव्यमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रासज्ञिलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुसवरस्याभावएवसम्यक्दर्शनगुणप्राग्भावमतरेणनसवरभाव तेनसवरोनास्ति इतिदर्शितसवरतत्वस्वरूप मार्गणासु साम्प्रतनिर्जरातत्त्वविभजन्नाह ॥ १०६ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान केवलदर्शन अनाहारक मार्गणानेविषे च्यार चारित्रभावना बार ए सोल विना ४१ सवरना भेद पामीये छे तीन गतिनरक १ तिर्यंच २ देवगति ३ अविरति १ देशविरति मार्गणाये १२ भावनाना बार भेद छे शेषमार्गणाये सवरनो भेद नथी वासठि मार्गणाये सवरना भेद कह्या. ॥ १०६ ॥

सम्मदिट्ठीमग्गणासु, सकामइयरायमिच्छमग्गणाए।
नरतिरयदेवतिरिया, थोवादुसंखणंतगुणा ॥१०७॥

टीका—सम्मदिट्ठीमग्गणासु इत्यादि ॥ मूलभेदत निर्जरा-पूर्वोपचितकर्मपरिपहलक्षणा अथवा देशत कर्मक्षयलक्षणाद्विधाएकासकामाऽपराअकामा, तत्राकामाप्रदेशविपाकतोभुज्यमानकर्मदलिकक्षरणरूपाअस्यनिर्जरातोबन्धबाहुल्य उक्तचावश्यकनिर्युक्तौप लेमहेमहल्ले कुभपक्खिवइ सोहइनालिइयमिच्छत्तीजीवोधयइबहुअ खवइअप्प ॥ १ ॥ इयसम्यग्दर्शनादिगुणरहितस्यमिथ्यादिगुणस्थानत्रिके एवभवति ॥ सकामातुप्रदेशविपाकतोभुज्यमानकर्मानुभवे अरक्तद्विष्टतयामाध्यस्थ्यवृत्त्याभुज्यमानस्यतद्विपाकश्चस्वरूपतोभिन्न इति मन्यमानस्य नाहं क्रोधादिमान् नाहं शरीरी, नाहं आहारी, नाहं ससारी अहंतु शुद्धचिद्रूपानन्तस्वरूपभावानदभोगी इति स्वरूपालम्बनदृष्टिपरस्य भुज्यमानकर्मत रसशोषणेनअसख्येयगुणानिर्जराभवतितेनसकामाअस्यबन्धात्पनानिर्जरामहत्ता उक्तचावश्यकनिर्युक्तौ पलेमहेमहल्ले कुभसोहेइपक्खिवइनालिं, इयसम्मत्तिजीवोबधइ। अप्पखवइबहुअ ॥ १ ॥ सासकामा सम्यग्दर्शनगुणयुक्तासु मार्गणासु मतिज्ञानादि ज्ञानपचकेवेदकसम्यग्दर्शनादि मार्गणासु सामायिकादि चारित्रमार्गणासु सकामानिर्जराभवति, इतराअज्ञानादि सम्यक्त्वगुणविमुक्तासु मग्गणाएमिथ्यात्वमार्गणासु एकातेनामिथ्यात्वएवतासु अकामनिर्जरा चशब्दात्यासुगत्यादिमार्गणासुयेषाजीवानासम्यक्त्वतेषा सकामायेषा मिथ्यात्वतेषा अकामासकामनिर्जरामेदाद्द्वादशतपोलक्षणास्तेचविनयवैयावृत्तिस्वाध्यायरूपा अविरतसम्यग्गुणेदृश्यते परतेचकेचित् आचार्या सवररूपा मन्यतेयतिधर्मभेदेषुतपस सवरा तर्गतत्वात्भगवतीटीकायादेवानाविनयादि

तपोगुणेनिर्जरालक्षणेऽपिगृहीतमिति याख्यातानिर्जरा, साम्प्रतमार्गणासुअल्पबहुत्वदर्शयन्नाह ॥ नरनिरयेत्यादि । इहयथासरयेनयोजनाकर्त्तव्या साचैवनिरयदेवतिर्यग्योनिकेभ्य सकाशान्नरामनुष्या स्तोका यत द्विविधानरा समूर्छजा गर्भजाश्चतत्रसन्मूर्च्छजा कदाचिन्नभवतियत एषाविरहोजघन्यत समयमुत्कृष्टत चतुर्विंशतिमुहूर्त्ता तेनोत्पन्नानाजघन्यत उत्कृष्टतश्चातमुहूर्त्तस्थितिकत्वेन परत सर्वेषानिर्लेपात्यदातुभवतितदाजघन्यत एकोद्वौत्रयोवा उत्कृष्टतस्तुसरयाता असरयाताबाइतरेतुसर्वदेवसख्येयाभवति । तत्रसरयेयकस्यसरयातभेदत्वान्नज्ञायतेकियदपिसरयेयक तदुच्यते इहषष्ठ वर्ग पचमवर्गेणयदागुणितोभवति तदागर्भजमनुष्यसरयाभवतितत्रद्वयोस्तुवर्गश्चत्वारोभवतिएषप्रथम वर्ग (४) चतुर्णा वर्ग षोडशइतिद्वितीयोवर्ग (१६) षोडशानावर्गोद्विशतेषट्पचाशदधिके (२५६) अस्यराशेर्वर्ग पचषष्टिसहस्राणिपचशतानिषट्त्रिंशदधिकानिचतुर्थोवर्ग (६५५३६) अस्यराशेर्वर्ग सार्वगाथयाप्रोच्यते । चत्तारियकोडिसयाउणतिसचहुतिकोडीओअउणावन्नलरकासत्तट्ठिचेवयसहस्सा ॥१॥ दोसयछन्नुयापचमवग्गोइमोविणिद्दिट्ठो ॥ अकस्थापना ॥ ४२९४९६७२९६ अस्यापिराशेर्वर्गोगाथात्रयेणप्रतिपाद्यते । लरककोडाकोडीचउरासीइहभवेसहस्साइ, चत्तारियसत्तट्ठाहुतिसयाकोडीकोडीण ॥१॥ चोयाणलरकाइकोडीणसत्तचेवयसहस्सीतिन्नीयसयायसयरी कोडीणहुतिमायवा ॥२॥ पचाणउइलरकाएगावन्नभवेसहस्साइछसोलमुत्तरसयाएसोछट्ठोहवइवग्गो ॥३॥ १८४४६७४४८७३७८९५५१६१६ तदयषष्ठोवर्ग पूर्वोक्तेनपचमवर्गेणगुण्यतेतथाचसतियासख्याभवतितस्याजघन्यपदिनोगर्भजमनुष्यावर्त्ततेसाचेय ७९२२१६२५१४२६४३३७५९३५४३४५३३६ अयचराशिनिश्चयार्थगाथाद्वय छग-

तिन्नितिन्निसुन्नपचेवयनवयतिन्निचत्तारिपचेवयतिन्निनवपचपचसगतिन्नेवतिन्नेव ॥१॥ चउच्छदोचउइक्कोपणदोछक्किक्कगोयअट्ठेवदोदोनवसत्तेवय अकठाणापराहुति । तदेवमेतेषुअकस्थानेषुगर्भजमनुष्या भवति । उत्कृष्टपदेमनुष्याअसख्येयोत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि भवति इत्यादि अनुयोगद्वारतोज्ञेयनरेभ्य नैरयिकाअसख्येयगुणाउक्तचानुयोगद्वारे नेरइयाणभतेकेवइयावेउवियशरीरापनत्तागोयमा, दुविहाबद्धल्लयामुक्केल्लयातत्थणजेतेबद्धिल्लियातेण असखिज्जा। असखिज्जाहिंओसप्पिणीहिंअवसप्पिणीहिंअवहीराति खेत्तओअसखेज्जाओसेढीओपयरस्सअसखेज्जोभागोतासेणसेढीणविरकभमुईअगुलपढमवग्गमूलबीजवग्गमूलपडिपुन्नइत्यादिप्रमाणा नारका नरेभ्य असख्यातगुणानारका तेभ्य देवा असख्यातगुणाअनसकलभुवनपत्यादिसमुदायापेक्षयाचिंत्यमानादेवानारकेभ्योऽसख्यातगुणाएव। तेभ्योऽपिचदेवेभ्यस्तिर्यंचोऽनतगुणा तत्रानतसख्योपेतस्यवनस्पतिकायस्यसद्भावात्उक्तचएएसिणभतेनेरइयाणतिरिकजोणियाणमणुस्साणदेवाणसिद्धाणयकयरेकयरे हिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहियावागो० सव्वथोवामणुस्सानेरइयाअसखेज्जगुणादेवाअसखिज्जगुणगुणासिद्धाअणतगुणातिरिकजोणियाअणतगुणा । साम्प्रतमिंद्रियद्वारेकायद्वारेतदभिधित्सुराह ॥१०७॥

टबार्थ—निर्जरा ते कर्मनु परिशाटन अथवा कर्मक्षरण ते निर्जराना मूल २ भेद छे, एक सकाम निर्जरा तथा बीजी अकाम निर्जरा छे, तिहा जेटली समकित सहित मार्गणा मति ज्ञानादिक तिणमाहे सकाम निर्जरा अने अभव्यादिक तेहने इतरक० अकाम निर्जरा छे, जे मार्गणा मध्ये समकित तथा मिथ्यात्व बे भेद छे ते मार्गणा मध्ये अकाम सकाम बे निर्जरा-

छे निर्जराना १२ भेद तपना छे ते बार भेद तो जे जीव देशविरति तथा सर्वविरति परिणम्या हवे तेहने चारित्र विना तपनी आगममध्ये ना कही छे तिणे देशविरति तथा सर्वविरतिने छे तथा भगवतीसूत्रे प्रायश्चित्त १ विनय २ वैयावच्च ३ तथा सज्झाय ए च्यार तप, समकितीने कह्या छे देवता समकितीने अधिकारे इम आगमथी जाणवो हवे अल्पबहुत्व कहे छे, मनुष्य थोडा छे, सरयाता छे, उत्कृष्टे २९ आकताइ छे मनुष्यथी नारकी असरयात गुणा छे नारकीथी देवता असरयात गुणा छे देवतायी तिर्यंच अनत गुणा छे, जे सूक्ष्मबादर एकेंन्द्रिय सर्वमाहि गणवा तेवारे थाय ॥ १०७ ॥

पणचउतिदुएगिदि, थोवातिन्निहीअअणंतगुणा ।
तसथोवअसखग्गो, भूजलनिलअहीअवणणता॥१०८

टीका—पणचउतिदुएगिंदि ॥ इत्यादि ॥ इन्द्रियमार्गणाया सर्वस्तोक्ता पचेन्द्रियास्तेभ्यश्चतुरिन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्यस्त्रीन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्योद्वीन्द्रियाविशेषाधिका यद्यपिघनीकृतस्यलोकस्यउर्द्धाप्रआयताएकप्रादेशिक्य श्रेणयोऽसख्याता असख्यातयोजनकोटाकोटीप्रमाणाकाशप्रदेशसूचिगतप्रदेशराशिप्रमाणास्तासायावान्प्रदेशराशि तावत्प्रमाणाद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया पंचेन्द्रिया अविशेषेणसूत्रेनिर्दिष्टा तेभ्य एकेन्द्रिया० अनतगुणावनस्पतिकायजीवराशेरनतगुणा एएसिणभते एगिंदिय बेंदिय तेंदिय चउरिंदिय पचेंदियाणय कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवागोयमासवत्थोवापचेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिया एगिंदिया अणतगुणा इत्यादि कायमार्ग-

णाऽल्पबहुत्वैस्तोकास्त्रसा द्वीन्द्रियास्य पूर्वनिर्दिष्टास्तेभ्यस्त्रसेभ्य ऽसंख्यातगुणा अग्निकायिका सूक्ष्मबादरभेदभिन्ना असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्योऽपि पृथिवीकायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योजलकायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योऽनिलकायिकाविशेषाधिका तेभ्य अकायिका सिद्धाअनन्तगुणास्तेभ्योपि वनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा । यद्यपि चएतेषामपि पृथिवीकायिकादीनामसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्सूत्रेऽविशेषेणनिर्देश कृत तथापि लोकानामसंख्यातत्वस्यानेकभेदभिन्नत्वात् इहविशेषाधिकत्व अन्यच्चतुर्णांस्थावराणा सूक्ष्माणा सर्वलोकव्याप्यत्वात् अवगाहनाया सूक्ष्मत्वेजीवानाविशेषाधिकत्व अग्निकायेतुबादरराशेरल्पतमत्वात् स्तोकत्वमितिशेष एतेषा चसर्वेषा असंख्येयत्वात्, अकायिकानातुअतीतकालसमयेभ्य संख्येयगुणत्वात् तेभ्य वनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा यत एकस्मिन्निगोदशरीरे अतीतानागतकालसिद्धेभ्योऽनन्तगुणत्वात् तादृग्निगोदानामसंख्येयत्वात् उक्त श्रीप्रज्ञापनाया, एएसिणभंते तसकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण अपकाइयाण कयरे२हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा पुढविकाइयाइयाविसेसाहिया अपकाइयाविसेसाहिया वाउकाउकाइयाविसेसाहीया अकाइयाअणंतगुणा वणस्सइकाइयाअणंतगुणा ॥ १०८ ॥

टबार्थ—सर्वथी पचेन्द्री थोडा, पचेन्द्रीथी चौरेन्द्री अधिका, तेहथी तेरिन्द्री अधिका, तेहथी बेन्द्री अधिका, बेन्द्रीथी एकेन्द्री अनन्तगुणा छे एव पचेन्द्री जाणवा त्रसकाय थोडा

छे तिणसु अग्निकाय असंख्यातगुणा, अग्निकायथी पृथिवीकायना जीव अधिका, पृथिवीकायसु अप्कायना जीव अधिका, अप्कायसु वाउकाय अधिका, वाउकायसु वनस्पतिकाय अधिका ॥ १०८ ॥

मणवयणकाययोगा, थोवाअसखगुणअणतगुणा ।
पुरिसाथोवाइत्थी, सखगुणाणतगुणकीवा ॥ १०९ ॥

टीका—मणवयण इत्यादि ॥ मनोयोगिन स्तोका सज्ञिपचेंद्रियाणामेवमनोयोगित्वात्तेभ्य वाग्योगिनोऽसख्येयगुणा द्वींद्रियादीनामप्रक्षेपात्, तेभ्योऽपिकाययोगिनोऽनतगुणा स्थावरणा तत्रक्षेपात् । आहचप्रज्ञापनाया एएसिणभतेजीवाण मणयोगीण वागयोगीण काययोगीण अयोगीणयकयरे२हिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गो० सव्वत्थोवामणयोगीवययोगीअसखिज्जगुणा, अयोगीअणतगुणा, काययोगीअणतगुणा, सयोगीविसेसाहिया इत्यादि वेदमार्गणाया अल्पबहुत्वेसर्वत पुरिसापुरुषवेदा स्तोका तेभ्य स्त्रिय सख्यातगुणा ॥ उक्तच ॥ तिगुणातिरूव अहियातिरीपाण इत्थियामुणेयव्वा सत्तावीसगुणा पुणसत्तावीसहीआनराणच ॥ १ ॥ बत्तीसगुणाबत्तीसरूव अहिआउतहयदेवाणदेवीओपन्नत्ता जिणेहिंजिअरागदोसेहिं ॥ २ ॥ स्त्रीभ्य क्लीबा नपुसकाअनतगुणा अनतगुणनाच वनस्पत्यपेक्षयाद्रष्टव्या ॥ उक्तच प्रज्ञापनाया एएसिण भतेजीवाण सवेयगाण इत्थीवेयगाण पुरुसवेयगाण नपुसकवेयगाण अवेयगाणकयरेकयरेहिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहिया ॥ गो० ॥ सव्वत्थोवाजीवापुरिसवेयगा इत्थीवेयगासखिज्जगुणा अवेयगाअणतगुणा नपुसकवेयगाअणतगुणा सवेयगाविसेसाहीया ॥ १०९ ॥

ठबार्थ —मनयोगी थोडा छे, सज्ञी जीव ग्रह्या छे वचनयोगी असख्यातगुणा छे बेन्द्रियादिक सर्व जीव ग्रह्या छे वचनयोगीथी काययोगी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्वघणा तेमाटे पुरुषवेदी थोडा छे पुरुषवेदीथी स्त्रीवेदी सख्यातगुणा छे तिर्यचमे त्रिगुणा छे तीने वलि अधिका मनुष्यमे २७ गुणा छे २७ वली अधिका छे देवतामे ३२ गुणा ३२ अधिका छे, स्त्रीवेदिथी नपुसकवेदी अनतगुणा छे एकेन्द्रियादिक सर्व लीधा ॥ १०९ ॥

माणीकोहीमाई, लोभीअहियमणनाणिणोथोवा।
ओहिअसखामइसुअ, अहीअसमअसखविभगा११०॥

टीका—माणीकोही इत्यादि कषायमार्गणायासर्वस्तोकामानिन., मानपरिणामकालस्यक्रोधादिपरिणामकालापेक्षया सर्वस्तोकत्वात्, तेभ्य क्रोधिनोविशेषाधिका क्रोधपरिणामस्यमानपरिणामकालापेक्षयाविशेषाधिकत्वात्, तेभ्योऽपिमायिनोविशेषाधिका तद्भूयस्त्वेनजतूनाप्रभूतकालचमायाबहुलत्वात्, ततोऽपिलोभिन विशेषाधिका सर्वजीवानालोभबाहुल्यत्वेनवर्त्तनात् अथवा क्रोधानाचताहग्कारणेनभवनात् लोभस्यअकारणेकारणेऽपिवर्त्तमानत्वात् ॥उक्तच॥ एएसिणभतेजीवाण सकसाईण कोहकसाईण माणकसाईण मायाकसाईण लोभकसाईण अकसाइगयकयरेकयरे अप्पावा बहुआवा तुल्लावाविसेसाहीआ ॥गो० सव्वत्थोवाजीवा अकसाइमाणकसाइ अणतगुणाकोहकसाईविसेसाहीया मायाकसाईविसेसाहीया लोभकसाइविसेसाहीया सकसाइविसेसाहीया इत्यादि ज्ञानमार्गणायामणनाणिणोमन पर्यवज्ञानिन सर्वस्तोका तद्विगर्भजमनुष्याणातनाऽपिसय-

तानाविविधामर्षौषध्यादिलब्धियुक्तानाउपजायते ॥ उक्तंच ॥ तस्स-जयस्ससव्वप्पमायरहीयस्स विविहरिद्धिमइअइसस्स इत्यादि तेभ्यस्तो-क्ताएवसंख्यातत्वात्, तेभ्योऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिन सम्यग्दृष्टि-देवादीनामप्यवधिज्ञानभावातेभ्योऽसंख्येयगुणत्वात्, ततोऽवधिज्ञा-निभ्योमतिज्ञानश्रुतज्ञानिनोविशेषाऽधिकाअवधिज्ञानरहितसम्यग-दृष्टिनरतिर्यक्रमक्षेप्रात्, एतेचमतिज्ञानिश्रुतज्ञानिनौस्वस्थानेचिंत्य-मानौद्वावपिसमौतुल्यौमतिज्ञानश्रुतज्ञानयोरनतरापकत्वात् यदाहुर्न-ध्यादेवर्द्धिवाचका; जत्थमइनाणतत्थसुअनाणजत्थसुअनाणतत्थमई-नाणदोविएयाइ अन्नुनमणुगयाइति । तेभ्योमतिश्रुतज्ञानिभ्योवि-भगज्ञानिनोअसंख्यातगुणा मिथ्यादृष्टिसुरादीनाविभगज्ञानवतातेभ्योऽसंख्येयगुणत्वात् ॥छ॥ ११०

अर्थ—कषायमे मान कषाई थोडा छे, मान कषायथी-क्रोधी अधिका छे, क्रोधी थीमायाकपटी अधिका छे, माया कपटी थी लोभी अधिका छे, मन पर्यवज्ञानी थोडा छे, जे मन पर्यवज्ञान मानुष्य साधुमेज होवे, मन पर्यवज्ञानीथी अ-वधिज्ञानी असंख्यात गुणा जे च्यार गतिमे समकिती जीव कर्त्ता छे अवधिज्ञानी थी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अधिका छे, जे च्यारे गतिना समकितो सर्व छेगा अने मतिश्रुति पेइ बराबर छे, तिणथी विभग ज्ञानी असंख्यात गुणा छे, मिथ्यात्व दे-वना बीजा पिण तिणे थकी ॥११०॥

केवलिणोणतगुणा, सइसुअअन्नाणणतगुणतुल्ला।
सुहमाथोवापरिहार, सखअ रकायसखगुणा॥१११॥

टीका—केवलिणोणतगुणा इत्यादि तेभ्योविभगेभ्य केव-लिन. अनतगुणत्वात् सिद्धानातेभ्योऽनतगुणात्वात् तेभ्याच्चकेव-

लज्ञानयुक्तत्वात् तेभ्योऽपिचकेवलज्ञानिभ्योमत्यज्ञानश्रुताज्ञानिन अनतगुणा सिद्धेभ्योऽपिवनस्पतिकायिकानाअनतगुणत्वात् तेषा-चमिथ्यादृष्टितयामत्यज्ञानश्रुताज्ञानयुक्तत्वात्, एतेचोभयेऽपिमत्य-ज्ञानिन श्रुताज्ञानिन स्वस्थानेचिंत्यमानास्तुल्या मत्यज्ञानश्रुता-ज्ञानयो परस्परमविनाभावित्वात् ॥ उक्तच ॥ एएसिणभतेजी-वाण आभिणी बोहीअनाणीण सुअनाणीण ओहिनाणीण मणप-ज्जपनाणीण केवलनाणीग मइअन्नाणीण सुअअन्नाणीग विभगना-णीणयकयरकयरे हिंतोअप्पाबहुआवातुल्लाविसेसाहीया गोय-मा सव्वत्थोवामणपज्जवनाणी ओहिनाणी असखिज्जगुणाआभिणि-बोहीअनाणीसुअनाणीदोवितुल्लाविसेसाहीआविभगनाणी असखि-ज्जगुणाकेवलनाणी अणतगुणाइअन्नाणी सुअन्नाणीयदोवितुल्ला-अणतगुणा इत्यादि । सयममार्गणायासुहमाथोवा सूक्ष्मसपरायसय-मिन सर्वस्तोका शतपृथक्त्वमानसभवात्, तेभ्य परिहारविशु-द्धिका सख्यातगुणा उत्कर्षेन सहस्रपृथक्त्वसभवात्, तेभ्योऽपि यथाख्यातचारित्रिण सख्यातगुणा कोटिपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात् इति ॥१११॥

टबार्थ—केवलि अनत गुणा छे, जे सिद्ध भगवत माहि गण्या तेवारे तिणथी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी अनत गुणा छे, एकेंद्रीय आदिक सब लेया माहोमाहि बराबरी छे, सूक्ष्म-सपराय चारित्रीया थोडा-णा उत्कृष्टा एकसो बासठी छे, परि-हार विशुद्धि सख्य गुणा छे, उत्कृष्टा नवसो छे, यथा ख्यात चारित्रीया सख्यात गुणा उत्कृष्टा नवकोडि छे ते माटे ।१११।

छेअसमईयसखा, देसअसखगुणअणतगुणअजया ।
थोवाअसखदुअणता, ओहिनयणकेवलिअचरकू११२॥

टीका—छेअसमईसखा इत्यादि तेभ्योयथाख्यातचारित्रिभ्य छेदोपस्थापनीयचारित्रिण सख्येयगुणा कोटिशतपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात्, तेभ्योऽपिसामायिकसयमिन सख्येयगुणा कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात् इतितेभ्योऽपिदेशविरता असख्यातगुणाअसख्यातानानिरश्चादेशविरतसभवात्, तेभ्योअयताअविरताअनतगुणासयमहीनाद्यगुणस्थानकचतुष्टयवर्त्तिन इत्यर्थ मिथ्यादृशामनतानतत्वात् दर्शनमार्गणायायथाक्रमपदयोजना स्तोकाअवधिदर्शनिनचक्षुर्दर्शनिन असख्यातगुणा चतुरिंद्रियपचेंद्रियाणातत्सभवात्, तेभ्य केवलदर्शनिन अनतगुणा सिद्धानामनतत्वात्, तेभ्य अचक्षुर्दर्शनिन अनतगुणा सर्वससारिजीवानासिद्धेभ्योअनतगुणत्वात् तेषाचनियमादचक्षुर्दर्शनोपेतत्वात् यदाहु परममुनय, एएसिण भतेजीवाण चक्खुदसणीण अचक्खुदसणीण ओहिदसणीण केवलदसणीण कयरेकयरेहिंतो अप्पा वा बहुआवा। गोयमासव्वत्थोवाओहिदसणीचक्खुदसणी असखिज्जगुणाकेवलदसणी अणतगुणा अचक्खुदसणी अणतगुणा त्ति ॥११२॥

टबार्थ—तिणसा छेदोपस्थापनीय सख्यातगुणा उत्कृष्टा नव कोडीसो छे, सामायिक सख्यातगुणा छे, नवसहस्र कोडी छे देशविरति असख्यगुणा तिर्यंचगतिना मेळिये अविरति अनतगुणा छे, दर्शन च्यारनो अल्पबहुत्व कहे छे अवधिदर्शनी थोडा छे, तिणसु चक्षुदर्शनी असख्यातगुणा छे, केवलदर्शनी अनतगुणा छे अचक्षुदर्शनी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्व छेवा तेवारे अनतगुणा थाइ ॥ ११२ ॥

पच्छाणुपुविलेसा, थोवादोसखणतदोअहीया ।
अभविअरथोवणता, सासणिथोवोवसमसखा ॥११३

टीका—पच्छाणुपुव्विलेसा इत्यादि ॥ लेश्याद्वारेपश्चानुपूर्वा-लेश्यावाच्या तद्यथाशुक्ललेश्यावत सर्वस्तोका निर्मलपरिणामत्वात् सुरयत्वेनवैमानिकलातकादिष्वनुत्तरसुरपर्यवसानेषुकेषुचिदेवकर्मभूमिजेषु मनुष्यस्त्रीपुरुषेषु तिर्यग्स्त्रीपुरुषेषु । केषुचित्सख्यातवर्षायुष्केषु शुक्ललेश्यासभवात् । तत सख्यातगुणा पद्मलेश्यावत सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकेषु देवेषु पूर्वोक्तेषु मनुष्यतिर्यक्षुपद्मलेश्यासभवात् सनत्कुमारादिदेवानाचलानकादिदेवेभ्य सख्येयगुणत्वात्, तेभ्योऽपितेजोलेश्यावत सख्येयगुणत्वात् सौधर्मेशानादिदेवेषुकेषुचित्तिर्यग्मनुष्येषु तेजोलेश्यासद्भावात् तेषाचसकलपद्मलेश्यासहितप्राणिगणापेक्षयासख्येयत्वात्, तत कापोतलेश्यावत अनतगुणाअनतकायिकेष्वपि कापोतलेश्यासद्भावात्ततोऽपिविशेषाधिकानीललेश्यावतो नारकादीनातल्लेश्यावतोऽत्रप्रक्षेपात्, तत कृष्णलेश्यावतोविशेषाधिका भूयसातल्लेश्यासद्भावात्, यदभ्यधायि परमगुरुणा, एएसिण भतेजीवाण सलेसाण किण्हलेसाण नीललेसाण काउलेसाण पउमलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणयकयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहूआवातुल्लावाविसेसाहीयावा गोयमा सव्वत्थोवा जीवासुक्कलेसा पउमलेसा सखिज्जगुणातेजोलेसासखिज्जगुणा अलेसाअणतगुणा काउलेसाअणतगुणा नीललेसाविसेसाहीया किण्हलेसाविसेसाहीया सलेसाविसेसाहीआ भव्यद्वारेअभव्यास्तोका स्तेषावक्ष्यमाणस्वरूपजघन्ययुक्ताऽनततुल्यत्वात् तेभ्योभव्या सिद्धिगमनार्हाअनतगुणाः आहच एएसिण भतेजीवाण भवसिद्धीआण अभवसिद्धीयाण नोभवनोअभवसिद्धीयाण कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवागोयमासव्वत्थोवाअभवसिद्धिआनोभवानोअभवाअणतगुणाभवसिद्धिआअणतगुणा सम्यक्त्वमार्गणायासास्वादनसम्यग्दृष्टय स्तोकाऔपशमिकसम्यक्त्वात्केषाचिदेवप्रच्यमानानासास्वादनत्वात्तेभ्य औपशमिकसम्यग्दृष्टय सख्यातगुणा ॥११३॥

टबाथ—लेश्यानो अल्प बहुत्व पश्चानुपूर्वी कहीये, शुक्ल-लेशी थोडा छे तेथी पद्मलेश्यामे असख्य गुणा छे, तेजोलेशी असख्य गुणा छे, तेथी कापोत लेश्या असख्यगुणा, नीललेशी अधिका, तेथी कृष्णलेशी अधिका, अभव्य थोडा, भव्य अनन-गुणा छे, सास्वादन सम्यक्त्वी थोडा तिणथकी उपशम सम-कितो सख्यातगुणा छे, तिणसु मिश्र असख्यातगुणा छे ॥११३॥

मीसासखावेअग, असखगुणखईअमिच्छदुणता ।
सन्नियरथोवणता, अणहारेथोविअरअसखा ॥११४॥

टीका—मीसासखावेअग इत्यादि ॥ औपशमिकसम्यग्दृष्टि-भ्य मिश्रा सख्यातगुणास्तेभ्य क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टय असख्यातगुणास्तेभ्य क्षायिकसम्यग्दृष्टय अनतगुणा, क्षायिकस-म्यक्त्ववतासिद्धानामानत्यात्तेभ्योऽपिमिथ्यादृष्टयोऽनतगुणा सिद्धे-भ्योऽपिवनस्पतिजीवानामनतगुणत्वात्, सज्ञिमार्गणायासज्ञिनोजीवा स्तोका, देवनारकसमनस्कपचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणामेवसज्ञित्वात्, तेभ्यइतरेअसज्ञिनोऽनतगुणा एकेंद्रियाद्यसज्ञिपचेंद्रियातजीवाना-मानन्त्यात् । यदागमेन्यगादि । एएसिणभते जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीण नोअसन्नीण य कयरेकयरे हिंतो अप्पाबाबहु-आवातुल्लावाविसेसाहीया गोयमा सव्वत्थोवाजीवासन्नीनो असन्नीनो असन्नी अनतगुणा तथाआहारकमार्गणायाअनाहारका स्तोका विग्रहगत्यापन्नसमुद्घातेकेवलिसमुद्घातनावस्थाया अयोगिकेव-लिनासिद्धानाअनाहारकत्वात्, तेभ्य इतरेआहारकाअसख्यातगु-णा, ननुसिद्धेभ्योअनतगुणा ससारिजीवास्तेचयाय आहारकास्तत कथअसख्यातगुणा अनाहारकेभ्य आहारकाइतिनैवदोष यत प्र-

तिसमयएकैकस्यनिगोदस्यअसख्येयतमभागस्यसर्वदापिविग्रहगत्या-समापन्नत्वेनप्राप्यमाणत्वात्, अत अनाहारकेभ्य आहारकाअ-सख्येयगुणा इतिचिंतितगत्यादिष्वल्पबहुत्वइदानीमार्गणासुमूलभा-वान्विभजन्नाह ॥११४॥

टबार्थ—तिणसु क्षयोपशम समकिती असख्यात गुणा छे, तिणसु क्षायिकसमकिती अनतगुणा छे, तिणसु मिथ्यात्वी अनतगुणा छे, सज्ञी थोटा, असज्ञी अनतगुणा छे, अना-हारक थोडा छे आहारक असख्यातगुणा मार्गणाये अल्पबहुत्व कह्यो निगोदनो असख्यातमो भाग सदा विग्रहगतिमे छे तिणे ॥ ११४ ॥

गइपचिंदितसमि, जोएवेएकसायचउनाणे ।
सयमतिदसलेसा, भवखायगसन्निहारदुगे ॥११५॥

टीका—गइपचिंदि इत्यादि ॥ गतिचतुष्केपचेन्द्रियजातौत्रस-काये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्के मतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणे ज्ञानचतुष्टये सयमसप्तके चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनेलेश्यापट्के भव्येक्षा-यिकसम्यक्त्वे सज्ञिपचेन्द्रिये आहारके अनाहारके एवएकचत्वा-रिंशत्मार्गणाया पणभावाइतिमूलभावाउपशमक्षायिकक्षयोपशमऔ-दयिकपारिणामिकलक्षणा पचभावा प्राप्यन्ते ओघतइतिज्ञेय ॥ ११५ ॥

टबार्थ—गति ४ पचेन्द्रिपणो १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ४ सयम ७ दर्शन ३ लेश्या ६ भव्य १ क्षायिकसमकित १ सज्ञी १ आहारक १ अनाहारक २ एव मार्गणा ६२ ॥ ११५ ॥

पणभावाउवसमगे, खवगविणासेसआसुसमहीणा।
केवलदुगिउदय, खयपरिणामभावाय ॥ ११६ ॥

टीका—पणभावा इति उपशमसम्यक्त्वेक्षायिकभावमतरेण-चत्वारोभावा प्राप्यते, उपशातदर्शनस्यक्षायिकभावभेदोनभवति, शेषकासुजातिचतुष्के स्थावरपचके, अज्ञानत्रिके, अभव्यमार्गणाया क्षयोपशमसम्यक्त्वेमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेअसाज्ञिलक्षणासुअष्टादश-मार्गणासुक्षायिकउपशमरूपभावद्वयरहिता क्षयोपशमौदयिकपारि-णामिकलक्षणास्त्रय भावाभवति, केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणासु-मार्गणासु औदयिकपारिणामिकक्षायिकलक्षणास्त्रयोभावाभवति । इत्येवद्विषष्टिमार्गणासु मूलभावाउक्ता ॥ ११६ ॥ साप्रतमार्गणा-सुउत्तरभावान्दर्शयन्नाह ।

टबार्थ—पीसतालीस मार्गणाये पाच भाव छे, उपशम-समकिते क्षायिकभाव विना ४ भाव छे, शेषमार्गणाइन्द्रि ४ थावर ५ तीन अज्ञान ३ अभव्य १ क्षयोपशमसमकित १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ असज्ञी ए १८ मार्गणाये क्षायिक १ उपशम १ ए बे विना त्रण भाव छे, केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे मार्गणाये औदयिक १ क्षायिक १ पारिणामिक १ ए तीन भाव छे इटले बासठि मार्गणाये मूल भाव कह्या ॥ ११६ ॥

उत्तरभावापणतस, जोएसन्नीतहेवआहारे।
सव्वेअभवहीणा, भवेमणुएतिगइहीणा ॥११७॥

टीका—उत्तरभावापणनस इत्यादि ॥ [illegible]

त्रसकायमार्गणाया, योगत्रिकमार्गणाया, संज्ञिमार्गणाया, आहारकमार्गणाया, सर्वेत्रिपञ्चाशत्भेदाभावानाभवति । चतुर्गतिषु सर्वभावानाप्राप्यमाणत्वात् पञ्चेन्द्रियादिभावाना सर्वगतिषुसद्भावात्, तथा अभव्यमार्गणाया अभव्यत्वहीनाद्विपञ्चाशत्भेदा प्राप्यते, तथामनुष्यगतौ, तिर्यग्हीणाति, तिस्र गतय नारकामरतिर्यग्लक्षणानप्राप्यते, शेषा पञ्चाशत्भेदाभावानाप्राप्यते, औदयिकस्यअष्टादश शेषा सर्वेऽपिअत्रप्रदेशोदयसक्रान्तोदयत्वनापेक्षितमुख्यत्वेनमनुष्यत्वमेवार्पितमिति ॥ ११७ ॥

टबार्थ—इहे बासठिमार्गणाये उत्तरभाव कहे छे । पचेंद्रिनेत्रसकायने योग ३ ने सज्ञीमार्गणाये तिमहीज आहारक मार्गणाए सर्वभाव ५३ छे, अभव्य विना ५२ भाव छे, भव्यमार्गणा विषे मनुष्यगतिमार्गणाये तीन अन्यगति विना ५० भाव छे ॥ ११७ ॥

उवसममीसचरण, मणपज्जवदेसचक्खुदिट्ठिअ ।
अहहारेएहिविणा, खायगसगहीणचक्खुदुगे ॥११८॥

टीका—उवसममीसइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणाया सप्तचत्वारिंशत्भेदा प्राप्यते, उपशमसम्यक्त्वेआयुर्बंधाभावात्नमरणमपि, मरणाभावेविग्रहगतित्वमपिनइतिहरिभद्राशयस्तन्मतेसप्तचत्वारिंशत्, कार्मग्रथिकास्तुउपशमसम्यग्वत सज्ञिद्वयलक्षणजीवभेदागीकारेकश्चित्पूर्वबद्धायु प्रान्ते उपशमदर्शनकृत्वातत्रस्थ एवायु क्षयेमृत देवादिषूत्पद्यमानस्तस्यउत्पद्यमानस्यसज्ञिअपर्याप्तलक्षणोजीवभेदोलभ्यते, तदपेक्षयाविग्रहगतौउपशमसम्यग्दर्शनभवति, तेनाष्टचत्वारिंशत्भेदाभवन्ति, उपशमचारित्रतुपर्याप्तकस्य, मीस नामक्ष-

योपशमचारित्रमपिपर्याप्तकस्यमन पर्यवज्ञानम्यापिपर्याप्ताऽवस्था
मेवदेशविरतस्यापिपर्याप्ताऽवस्थायाचक्षुर्दर्शनमपिमु
स्यैव तेनएमिभावैर्विनाअष्टचत्वारिंशद्भेदाभवति । क्षायिकभेदा
केवलिसमुद्घातावस्थायाअनाहारकत्वेप्राप्यते । क्षयोपशमभेदे
ज्ञानत्रिकदर्शनद्विकअज्ञानत्रिकलब्धिपचकक्षयोपशमसम्यक्त्व
ग्रहणोप्राप्यमाणत्वात् । औदयिकपारिणामिकानामविरति
प्राप्यमाणत्वात्प्राप्यतेअनाहारकेएतेभावाभवति । उपशम
श्चचरणच उपशममिश्चचरणइतिसमास अथवा उपशमश्च
उपशममिश्रतदेवचरणइत्यनेनउपशमचरणमिश्रक्षयोपशम
व्यारयामेदेनोभयमतदर्शनकृतमितिज्ञेय । चक्षुर्दर्शन
खायगसगहीणत्ति, क्षायिकभावस्यलब्धिपचकेवलज्ञानदर्शन
लक्षणभेदसप्तकमतरेणषट्चत्वारिंशत्भेदाभावानाप्राप्ते
गुणस्थानयावत् चक्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयभवति, क्षीणमोह
क्त्वचारित्रेभवन, शेषा क्षायिकस्यसप्तभेदा
गिगुणस्थानादिष्वेवभवति। अतश्चक्षुरचक्षुर्दर्शन
सति ॥ ११८ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितमिश्र चारि
मन पर्यवज्ञान विना देशविरति विना
रकमार्गणाए ४८ भाव छे, क्षायिकना
ज्ञान १ केवलदर्शन १ ए सात विना
१ ए बेने ४६ भाव छे ॥ ११८ ॥

वेअकसायेतिउदय, अडयायगहीणागुवहिदसं
विणुखायसगअन्नाण, मिच्छाविरअन्नाणा

टीका—वेयकसायइत्यादि वेदत्रिकेऔदयिकभावस्यतिइतित्रिकभेदा क्षायिकस्यलब्धिपचकेकेवलज्ञानकेवलदर्शनक्षायिकयथाख्यातचारित्ररहिताद्विचत्वारिंशत्भावभेदा प्राप्यते । तत्रपुरुषवेदेस्त्रीवेदेनपुसकवेदेनरकगतिलक्षणऔदयिकत्रिकरहिता पूर्वोक्तक्षायिकाष्टकरहिताद्विचत्वारिंशत्भेदा, स्त्रीवेदेपुरुषवेदेनपुसकवेदेनरकगतिरहिता द्विचत्वारिंशत्, नपुसकवेदेपुरुषवेदेस्त्रीवेदेदेवगतिरहिताद्विचत्वारिंशत्, क्रोधेक्रोधकषायलक्षणायामार्गणायामानमायालोभरहिता अष्टादशऔदयिका शेषा पूर्वोक्ताद्विचत्वारिंशत्, एवमानेक्रोधमायालोभरहिता मायायाक्रोधमानलोभरहिता लोभेक्रोधमानमायारहिता द्विचत्वारिंशत्भेदाभावानाप्रत्येक वाच्या क्रोधानाचतुर्णामध्ये अन्यतमस्यएकस्यैवोदयात् नान्येषामिति, नाणत्तिज्ञानत्रिकयमार्गणायाअवधिदर्शनमार्गणाया क्षायिकस्यसप्तभेदा सयोगिकेवलि प्रत्ययानभवनि । एतासाक्षीणमोहयावदेवसत्त्वात्, अज्ञानत्रिकमिथ्यात्वमभव्यत्वअज्ञानऔदयिकभावस्यप्रथमभेदरूवएवत्रयोदशभावरहिता शेषाउपशमस्यद्वेक्षायिकदर्शनक्षायिकचारित्रचेतिद्वौक्षयोपशमिका पचदश, औदयिका एकोनविंशति, पारिणामिकौद्वौभेदौ एवचत्वारिंशत्भेदाभवति । अनखायगसगत्तिसमासेविणइतिपदसयोज्यएतेत्रयोदशभिर्विनाइत्यर्थ ॥ ११९ ॥

टबार्थ—वेद तीनने विषे कषाय ४ मे ४२ भाव छे, तीन औदयिकना ८ क्षायिकना तेहना भावना जे पुरुषवेदमध्ये स्त्रीवेद नपुसकवेद नरकगति ए तीन नथी। स्त्रीवेदमध्ये, पुरुषवेद नपुसकवेद नरकगति नथी । नपुसकवेदमध्ये, पुरुषवेद स्त्रीवेददेवगति नथी । कषाय ४ मध्ये क्रोधमध्ये मानादि ३ नथी, मानमध्ये, क्रोधादि ३ नथी । मायामध्ये, बीजा तीन कषाय

नथी। लोभमध्ये, अन्य तीन कषाय नथी। तथा क्षायिक-सम्यक्त्व छे, शेष अन्य नथी ए अगीयार विना ४२ भाव छे। क्षायिकना सात भेद, पाचलब्धि केवल २ अज्ञान १ मिथ्यात्व १ अभव्यपणो अज्ञान ३ एटले १३ भाव विना ४० भाव छे ॥ ११९ ॥

साभवातेअजएतेमिच्छ, तिगिदेसिसुहमेगुणप्पभवा।
अडखायगपणलेसा, समचरणविणातिलेसासु १२०॥

टीका—साभवातेअजए इत्यादि॥ अजएअविरतिमार्गणाया उपशमस्यएक क्षायिकस्यएक देशसर्वविरतिमन पर्यवविना पच-दशक्षायोपशमिका औदयिका सर्वेपारिणामिकस्यत्रयइति, साभवा-अभव्यत्वलक्षणेनपारिणामिकभेदेनयुक्ताएकचत्वारिंशत्भेदा भा-वानामविरतिमार्गणायाप्राप्यते इति, मिच्छतिगि मिथ्यात्वत्रिकेमि-थ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रयेदेशविरतिमार्गणाया सूक्ष्मि सूक्ष्मसपरायलक्षणेपचमार्गणास्थानेगुणप्रभवास्तन्नामगुणस्थान-कस्याभावा भवति। इत्यनेनमिथ्यात्वेचतुस्त्रिंशत्, सास्वादनेद्वात्रिं-शत्, मिश्रेद्वात्रिंशत्, देशविरतौचतुस्त्रिंशत्, सूक्ष्मसपरायेद्वात्रिंशति, एवज्ञातव्य तथातिलेसासु इतिलेश्यात्रये कृष्णनीलकापोतलक्षणे-अष्टौक्षायिकभेदा क्षायिकसम्यक्त्वर्जिता स्वनामलेश्यातोअन्या पचलेश्यास्तथासमशब्देनउपशमचारित्र एवचतुर्दशभेदान्मुक्त्वा-शेषाएकोनचत्वारिंशत्भेदा भावानाकृष्णादिप्रथमलेश्यात्रयेभवन्ति। ॥ १२० ॥

टबार्थ—अविरतिमार्गणाये अभव्य मेलीये तेवारे ४१ भाव पामीये, मिथ्यात्वे ३४ सास्वादने ३२ मिश्रे ३२ देशविरते

विंशतिभावा भवन्ति, देवानाएतेष्वनागमनात्, तत्रचक्षुर्दर्शनयुक्त चतुरिन्द्रियमार्गणाया पचविंशतिभावाभवति । नाणदुगजानद्विक सास्वादनकालेविकलानामूएश्रुतेभगवत्यादौसमाख्यात यदाह सुधर्मास्वामी–चेन्दीयाणभते किंनाणी किंअन्नाणीगोयमानाणीविअन्नाणीविजेसिणनाणीते आभिणिबोहीअनाणीसुअनाणीजेअन्नाणीतेमइअन्नाणीसुअअन्नाणी सूत्रवाक्यप्रामाण्यात् अन्नाम्नाय सूक्ष्मऋजुसूत्रस्यसमयमात्रस्यग्राहकत्वात् वर्त्तमानकालेसास्वादनस्थस्यमिथ्यात्वस्यअनुदयात् उपशानाद्धागतावलिकायावर्त्तमानत्वात् ज्ञानद्वयप्रोक्तकार्मग्रथिकैस्तुकडेमाणेकडेइति भगवत्वाक्यानुगमनेनामिथ्यात्वोदयसत्वमुखीभूतपरिणामत्वात् नियतमज्ञानत्वेनभवनात् अज्ञानमेवेतिअगीकृतम् ॥ १२३ ॥

टबार्थ ––तेमध्ये तेजोलेश्या गतित्रसक० तेउकाय १ वायुकाय १ त्रेन्द्रि १ तेन्द्रि १ एहने विषे २४ भाव छे चोरिंद्रिमार्गणामध्ये चक्षुदर्शन मेलीये एटले भाव २५ पामीये, तथा भगवतीसूत्रे विकलेन्द्रिने २ ज्ञान मान्या छे, बेंदीयाणभतेनाणीअन्नाणी गो० नाणीविअन्नाणीविइतिवचनात् ए सूत्रवचन पण प्रमाण छे ॥ १२३ ॥

सम्मदरसव्वविरई, अवहिदसणनाणचउहीणा ।
अन्नाणेचउतीस, भावातिगभावपच्चईया ॥ १२४ ॥

टीका––सम्मदरइत्यादि ॥ सम्मेत्तिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन दरतिईषत्वाचकोऽव्यय ईषत्विरति देशविरति सर्वविरति क्षयोपशमचारित्र अवधिदर्शन १ ज्ञानचतुष्टयहीना शेषादशक्षयोपशमभेदा, औदयिकाएकविंशति, पारिणामिका त्रय, एतेचतु-

स्त्रिशत्भावाअन्नाणेअज्ञानत्रिकमार्गणायाप्राप्यते । भावामूलापेक्षयात्रिकभावप्रत्ययिकाज्ञेया, उपशमक्षायिकभावानामत्रासभवात् तेषासम्यक्त्वमूलत्वात् ॥ १२४ ॥

टबार्थ—समकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ अवधिदर्शन १ ज्ञान ४ विना शेषक्षयोपशमना १० उदयना २१ पारिणामिकना ३ ए चौतीसभाव छे, अज्ञान ३ मध्ये मूल तीन भाव माहियी जे भेद सभवे ते कहिवा ॥ १२४ ॥

दोउवसमखयसम्म, मीसेअन्नाणदेसविणुउदए ।
तिगईअन्नाणअजई, मिच्छविणुदोन्नीपरिणामी१२५॥

टीका—दोउवसमइत्यादि ॥

टबार्थ—उपशमना भेद २ क्षायिकसमकितनामिश्रना १४ भेद विना अज्ञान ३ देशविरति विना उदयना १५ तीन गतिमिथ्यात्वविनिअन्नाण १ असयम १ ना शेष १५ पारिणामिक २ जीवत्व १ भव्यत्व ॥ १२५ ॥

सामाइदुगेपरिहारगेअ, सम्मचरणइत्थिवेयविणा ।
हक्खाएउवसमखय, मीसेलद्धीसुउवओगा ॥१२६॥

टीका—सामाइदुगेइत्यादि गाथाद्वयस्यसबध तत्रसामायिकद्विकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्विकेदोउवसमत्तिद्वौभेदावुपशमभावस्य, क्षायिकभावस्यएकक्षायिकसम्यक्त्वतथामिश्रेनामक्षयोपशमेभावस्यज्ञानत्रिकदेशविरतिविणुत्तिरहिता शेषा चतुर्दशउदयेऔदयिकेभावेनरकामरतिर्यग्गतिलक्षणेत्रिके अज्ञानविरतिमि-

थ्यात्वरूपभेदपन्कविनाशेगा पचदश द्वौभव्यजीवत्वलक्षणौद्वौ-
पारिणामिकौइत्यनेनद्वौउपशमौएक क्षायिक चतुर्दशक्षयोपशमभेदा
पचदशऔदयिकाद्वौपारिणामिकौ एवचतुस्त्रिंशत्भावभेदा सामायि-
केछेदोपस्थापनीयेचारित्रेप्राप्यते ॥ परिहारविशुद्धिचारित्रेउपशमचा-
रित्रनभवति । अनिवृत्तिबादरगुणस्थानकाभावात् । तथास्त्रीवेदस्या-
प्यभाव यतोनवनवासीनिग्रथाण इत्यावश्यकचूर्णिवाक्यात् ज्ञा-
तायामपिनिषिद्धत्वात । परिहारसमयश्चवनवासिनामेवोक्तत्वात ।
अत सामायिकोक्तचतुस्त्रिंशत्भावानामत्रेउपशमचारित्रस्त्रीवेदरहि-
ताद्वात्रिंशत्भेदाभवति हरस्याएइतियथाख्यातचारित्रेउपशमस्यद्वौभे-
दौखयाति क्षायिकस्यनवमीसेति क्षयोपशमेरद्वौत्तिलब्धिपचकसु-
इतिसुष्ठुशोभनाउपयोगा क्षायोपशमिकाज्ञानचतुष्टयदर्शनत्रिकरू-
पाद्वादशइति ॥ १२६ ॥

टबार्थ—एटले उपशम २ क्षायिक १ क्षयोपशम १४ औदयिकना १५ पारिणामिकना २ ए ३४ भाव छे । सामायिक १ छेदोपस्थापनीय ए बेने परिहारविशुद्धिमध्ये उपशमचारित्र स्त्रीवेद विना ३२ भाव छे, कोइक आदि तीन लेश्या च्यार गुणठाणा पर्यंत माने तेहने मते २९ भाव छे, यथाख्यातचारित्रमध्ये २८ भाव छे, उपशमना २ क्षायिकना ९ क्षयोपशमना १२ लब्धि ५ सुउवओगाकहेता सम्यग्ज्ञान एटले च्यार ज्ञान त्रण दर्शन एव १२ ॥ १२६ ॥

उदएअसिद्धनरगई, सुक्काभवत्तजीयचपरिणामा ।
अडवीसमभव्वेसु, मीसादसदुन्निपरिणामा ॥१२७॥

टीका—उदएअसिद्धइत्यादि॥ औदयिकस्यअसिद्धत्वनरगति

शुक्ललेश्याइतिनयोभेदाभव्यत्व जीवत्वचपारिणामिका एवअष्टाविंशतिभावभेदायथाख्यातचारित्रेअष्टाविंशतिभावभेदा प्राप्यते । अभव्येसुअभव्यमार्गणायामीसाक्षयोपशमस्यदश द्वित्रिद्वौपारिणामिकौअभव्यत्वजीवस्वरूपौ ॥ १२७ ॥

टबार्थ—औदयिकना ३ असिद्धपणे मनुष्यगति १ शुक्ललेश्या १ भव्यपणो जीवपणो ए २ पारिणामिक सर्व मिली २८ भाव छे, यथाख्यातचारित्रे अभव्यमार्गणाए क्षयोपशमना १० पारिणामिकना २ अभव्यपणो जीवपणो ॥ १२७ ॥

उदयाउवसमसम्मे, खयअन्नाणचमीससम्मविणा ।
उदयेअमिच्छावोहा, भवजीयत्तेणसगतीस ॥१२८॥

टीका—उदयाउवसमसम्मेइत्यादि उदयाऔदयिका सर्वेभेदा इतिनयत्रिंशत्भावभेदाअभव्यमार्गणायाभवति । उपशमसम्यक्त्वेखयविणत्तिक्षायिकभावभेदानभवति । अन्नाणचमीससम्मविणाइति अज्ञानत्रिक क्षयोपशमसम्यक्त्वविनाचतुर्दशउदयेऔदयिकेअमिच्छावोहा मिथ्यात्वअज्ञानरहिताएकोनत्रिंशतिभेदा भव्यत्वचजीवत्वचएवसप्तत्रिंशतभावभेदा उपशमसम्यक्त्वेप्राप्यते । उपशमश्रेणीतुउपशमचारित्रेक्षायिकदर्शनभवतिनोपशमदर्शनेक्षायिकदर्शनादिकनभवति ॥ १२८ ॥

टबार्थ—औदयिकना २१ एटले तेत्रीस भाव छे भव्यने विषे उपशमसमकित मार्गणाने विषे क्षायिकनो भेद कोई नथी क्षयोपशमना अज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित विना १४।५ लब्धिज्ञान ४ दर्शन २ देशविरति सर्वविरति औदयिकना मिथ्यात्व

१ अज्ञान विना १९ पारिणामिकमध्ये भव्यपणो जीवत्वपणो ए सर्व मीलतां पांच भाव छे ॥ १२८ ॥

खयगेरवायगजुत्ता, समदिट्ठीविणायमिसगेसम्मे ।
उवसमखयविणुमीसग, सम्मजुआइतिच्छत्तीस१२९॥

टीका—खयगेरवायगजुत्ता ॥ खयगेत्ति–क्षायिकेसम्यग्दर्शनमार्गणाया क्षायिकयुक्तास्तेपूर्वोक्ता सप्तत्रिंशन्नवक्षायिकभेदा सयुक्तास्तेचशम उपशमदृष्टि दर्शननद्विनापचचत्वारिंशत्भावास्तनोपशमचारित्रक्षायिकभावस्यनवक्षयोपशमस्यचतुर्दशऔदयिकस्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वौएवपचचत्वारिंशत्भावानाभेदा भवन्ति, मीसगेसम्मेक्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेउपशमभावविना क्षायिकभावविना इत्यनेनपूर्वोक्तपचचत्वारिंशत उपशमचारित्रक्षायिकनवापगमेपचत्रिंशत, मीसगसम्मजुआइतिमिश्र क्षयोपशमसम्यग्दर्शनतेनयुता सयुक्ता षट्त्रिंशत्भवति, इत्यनेनक्षयोपशमस्यपचदशऔदयिकस्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वाएवषट्त्रिंशत्भावा क्षयोपशमदर्शनेप्राप्यते, क्षयोपशमेक्षायिकोपशमदर्शनाऽभाव एव ॥ १२९ ॥

टबार्थ—क्षायिकसमकित मार्गणामध्ये क्षायिकना नव उपशमसमकित विना एटले उपशमचारित्र १ क्षायिकना ९ क्षयोपशमना १४ औदयिकना १९ पारिणामिकना २ ए ४५ भाव छे, क्षयोपशमसमकित तेहना उपशमनो भेद नथी क्षायिकनो भेद नथी. क्षयोपशमना १४ भेद छे, क्षयोपशमना १४ भेद छे, तेमध्ये क्षयोपशमसमकित मेलीये एटले १५ क्षयोपशमना १९ औदयिकना २ पारिणामिकना ए ३६ भेद पामीये ॥१२९

उवसमखवगेएग, मीसेमणनाणदेससव्वविणा ।
उदएतिगइतिलेसा, दुनेयविणुमेसयानिरए॥१३०॥

टीका—उवसमखवगेएग इत्यादि ॥ निरये नरकगतिमध्ये उपशमदर्शनलक्षण एकमुपशमसम्यक्त्वरूपएकक्षायिकस्यमीसे क्षयोपशमे मन पर्यवज्ञान देशविरतिसर्वविरतिलक्षणभेदत्रिकविनापचदश, औदयिकभावेतुमनुष्यतिर्यगनरगतित्रिक विनातेज पद्मशुक्ललेश्यालक्षणलेश्यात्रिक विनावेदद्विक स्त्रीनपुसकलक्षण विनात्रयोदशपारिणामिकास्त्रय एवत्रयस्त्रिंशत्भावानाभेदा नरकगतौनारकाणाप्राप्यते ॥ १३० ॥

टबार्थ—नरकगतिमध्ये उपशमसमकित १ क्षायिकसमकित १ २ मिश्रभावना १८ भेद छे, तेमध्ये मन पर्यवज्ञान १ देशविरति १ सर्वविरति विना शेष १५ औदयिकना २१ मध्ये तीन गति तीन लेश्या पुरुषवेद १ नपुसकवेद इटला विना ३३ भाव छे नरकगतिमध्ये ॥ १३० ॥

देवेतिलेसथीपुस, सयुआसटसन्निवाईआ ।
गइगुणठाणप्पभवा, मग्गणठाणेसु नेयव्वा ॥१३१॥

टीका—देवेतिलेसथी इत्यादि ॥ देवगतौपूर्वोक्तासुत्रयस्त्रिंशत्सुतेज पद्मशुक्ललेश्यात्रय स्त्रीवेद पुरुषवेदसयुक्ता असद्वनपुसकवेदरहिता सप्तत्रिंशत्भावानाभेदा भवन्ति, भावनाचस्वयोगम्याद्वत्युक्तामार्गणासुउत्तरभावा साप्रतसान्निपातिकभगान्दर्शयति, सन्निवाईयागतिप्रभवागुणस्थानप्रभवास्तेएवमार्गणास्थानेषुज्ञातव्या उपयोगत विभज्यवाच्या तत्रयासान्निपातिकाभगा षड्विंशतिन्नवपन्नसभविजीवेप्राप्यमाणालभ्यते, तेचगतिभेदेनपचदशभवति ।

नरकगतौदेवगतौतिर्यग्गतौप्रत्येकतीणिभंगाणि-क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण प्रथम एषएवउपशमयुक्त चतुष्कसयोग द्वितीय सएवक्षायिकदर्शनयुक्त इतितृतीय मनुष्यगतौसिद्धप्रत्ययक्षायिकपारिणामिकलक्षणभंगरहिता पचभगा प्राप्यते एकेन्द्रिय द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियस्थावरपचकमार्गणायाक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण एकभग पचेन्द्रियत्रसकायसयोगत्रिकेभव्येसज्ञयाहारकलक्षणासुचतुर्दशभगा सिद्धप्रत्ययिकभगासत्त्वात् कषायचतुष्टये मत्यादिज्ञानचतुष्टये दर्शनत्रिके केवलिप्रत्यय सिद्धप्रत्ययभगद्वयाभावात् शेषाभगा केवलद्विकेक्षायिकौदयिकपारिणामिकस्तथाक्षायिकपारिणामिकलक्षण एतौद्वौभंगौअज्ञानत्रयेमूलत्रिकसयोगिक एकभग स एवगतिचतुष्टयेनचत्वारोभगा सामायिकच्छेदोस्थापनीयचारित्रद्वयेक्षयोपशमपारिणामिकौदयरूप एक क्षयोपशमदर्शनचारित्रवता क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकोपशमलक्षण उपशमदर्शनोपशमचारित्रवताअथवोपशमदर्शनक्षयोपशमचारित्रवतामपिभवति। इतिद्वितीय क्षयोपशमक्षायिकपारिणामिकौदयिकलक्षण दर्शनक्षायिकक्षयोपशमोपशमचारित्रवताभवति, पचभावसयोगप्रत्ययै पचम क्षायिकदर्शनोपशमचारित्रवतस्य एव चत्वारोभगाभवति, परिहारेत्रयोभगा एक क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण एषएवोपशमयुक्त द्वितीय एषएवक्षायिकयुक्तस्तृतीय मूलतस्त्रय उत्तरतद्वितिसूक्ष्मसपरायेत्रयोभगा चतुष्कसयोगाद्वौपचसयोगलक्षण एक यथाख्यातेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणवर्जिता पचभगास्तत्रद्वौउपशमश्रेणिसभवौ, एक क्षपकश्रेणिप्रायोग्य, एक केवलिभवस्थप्रायोग्य, एक सिद्धप्रायोग्य, देशविरतौषड्भगा, गतिद्वयेएवप्राप्यमाणत्वात्। अविरतौद्वादशभगाश्चतुर्गतिकालभ्यते, लेश्यापचकेद्वादश,शुक्लेदश, अभव्येक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्ष-

णचतुर्गतिकत्वेनचत्वारोभंगा क्षयोपशमदर्शनेक्षयोपशम पारिणामिकौदयिकलक्षणएकएवउपशमदर्शनेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकोपशमलक्षणएक क्षायिकेचचारोभंगा क्षयोपशमपारिणामिकऔदयिकक्षायिकलक्षण प्रथम पचकसयोग द्वितीय केवलिसयोगिप्रत्यय तृतीय, सिद्धप्रत्ययश्चतुर्थ मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रमार्गणासुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण, चतुर्गतिकाश्चत्वार, असज्ञिषुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणएक नरतिर्यग्गतिद्वयनोद्वौभंगौ अनाहारकेपचकसयोगलक्षणैकभंगवर्जनान्मूलन पच उत्तराश्चतुर्दशभंगा भवन्ति, तत्रद्वादशविग्रहगत्यपेक्षयाएक केवलसमुद्घाताऽवस्थ एक सिद्धाऽपेक्षयाएवसर्वमार्गणासुभावनावाच्या ॥१३१॥

टबार्थ—देवगतिमध्ये उपरली तीन लेश्या स्त्रीवेद ए च्यार मेळीये तेवारे सडवीसभावना भेद छे, सन्निपातिकभावना भागा २६ छे, गतिना गुणठाणे पूर्व कह्या छे ते अनुसारे मार्गणाये पण जाणवा तेमध्ये सन्निपातिकभावना सभवी भागा ६ छे ते माहिला लेज्यो, नरकगतिदेवगतिमध्येतिरियचगतिमध्ये ३ भागा औदयिक १ पारिणामिक १ ए एक तथा ए मध्ये उपशम मेळीये ए बीजो अथवा क्षायिक मेळीये ए त्रीजो मनुष्यगतिमध्ये ६ सभवामाहिथी एक सिद्धनो क्षायिक पारिणामिक ए भागो नथी बीजा सर्व ५ छे, च्यार इद्री पाच थावर मध्ये १ त्रिकसयोगीभग छे, पचेंद्री १ त्रसकाय १ योग ३ तीन शुक्ललेश्या १ भव्य १ सज्ञी १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये १४ भागा ए सिद्धप्रत्ययी भागो नथी ॥ १३१ ॥

पणसयतेसट्ठिया, जीअभेआउत्तरागुणठाणे ।
जहतहमग्गणठाणे, लोगतियणुत्तरीसम्मे ॥१३२॥

टीका—अथमार्गणासुउत्तरजीवभेदान्दर्शयन्नाह ॥ पणसयतेसट्ठीया इत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा पचशतत्रिषष्टिप्रमिताःगुणस्थानशतकेदर्शिताएव उत्तराजयिगुणस्थानेउक्तास्तथामार्गणास्थानेज्ञातव्यास्तत्रलोकान्तिकभेदाअनुत्तरभेदा सम्मेतिसम्यक्त्वेप्राप्यते तत्रलोकातिकाना अधिपतय एवग्राह्याअनुत्तरास्तुसर्वेपिसम्यग्दृष्टयएव तथा नरकगतौचतुर्दश तिर्यग्गतौअष्टेचत्वारिंशत्, मनुष्यगतौ त्रीणिशतानि अधिकानि देवगतौअष्टनवत्यधिकशत एकेन्द्रियेद्वाविंशति द्वित्रिचतुरिंद्रियाणाद्वाद्वौजीवभेदौस्वनामकौ पचेन्द्रियाणापचशतपचत्रिंशदधिक, पृथिव्यादिषु चतुर्षुचत्वारोभेदा , वनस्पतिकायेषट्भेदा त्रसेपचशतएकचत्वारिंशदधिक, मनोयोगेसंज्ञिमार्गणाया पर्याप्ताऽपेक्षयाद्वादशाधिकद्विशत, अपर्याप्तगणनेचतुर्विंशत्यधिकानिचत्वारिशतानिभवति, वचनयोगेपर्याप्ताऽपेक्षयाविंशत्यधिक द्विशत,अपर्याप्ताऽपेक्षयाएकचत्वारिंशदधिक चतु शत काययोगेसर्वेपि, पुरुषवेदेनारकेन्द्रियविकलाऽसंज्ञितिर्यग्मनुष्यवर्जिता शेषा ४१०, स्त्रीवेदेतेएवसनत्कुमारादिदेवभेदवर्जिता ३४०, नपुसकेयुगलमनुष्यदेवभेदवर्जिता १९३, कषायचतुष्टयेसर्वेमत्यादिज्ञानत्रयेसम्यक्त्वगुणस्थानमत्यया २३, अवधिद्विकेतिर्यगपर्याप्तानानिषेधएवमन पर्यायकेवलज्ञानकेवलदर्शनेपचदशकर्मभूमिजा १५। अज्ञानत्रिकेलोकातिकाऽनुत्तरसुरभेदरहिता ५३५, छेदोपस्थापनीयपरिहारयोर्भरतैरावतपर्याप्तकादश, सामायिकसूक्ष्मसपराय यथाख्यातानापचदशकर्मभूमिजाऽपर्याप्तका देशविरतौविंशति , संज्ञितिर्यक्कर्मभूमिनरपर्याप्तका अविरतौसर्वे, चक्षुर्दर्शनेएकेंद्रियद्वीद्रियत्रीद्रियवर्जा ५३७, असंज्ञिमनुष्याणापचेंद्रियगच्चानुअचक्षुर्दर्शनेसर्वेअवधिदर्शनमतिज्ञानवत्केवलदर्शनकेवलज्ञानवत् कृष्णादिलेश्यात्रयेनारका षट तिर्यग्मत्ययाअष्टचत्वारिंशन्मानुष्या सर्वेदेवभेदा तिर्यगजृभकपर्यंताश्च-

धिकशततेजोलेश्यायाबादरपृथिवीपवनस्पतिबादरास्त्रय सज्ञितिर्यग्-प्रत्यया १० मानुष्यमायोग्याद्यधिकद्विशतदेवभेदाईशानपावत् अष्टाविंशत्यधिकशत, पद्मलेश्यायामज्ञितिर्यगपर्चेंद्रियादश, मानुष्या-भेदा देवभेदसनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकान्तिकद्विसागरायु किल्विषि-का पर्याप्ताऽपर्याप्तकभेदात्षड्विंशति, शुक्ललेश्यायातिर्यग्मनुष्या पद्मलेश्यावत् देवभेदास्तुलोकातसर्वार्थसिद्धपर्यंतत्रयोदशसागरायु किल्विषिका पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदात्चतुश्चत्वारिंशत, भव्येसर्वे अभव्येलो-कातिकानुत्तरभेदरहिता पचशतपचविंशतरूपाअत्रपराधर्मिका कर्म-भूमिनराणाअभव्यत्वप्रतिषेध कुत्रचिद्दृष्टोपिभगवत्यादौतत्त्यागद-र्शनात्नागीकृतइतिउपशमेसज्ञिभेदेषुनारकतिर्यग्मनुष्यभेदा सर्वे-सम्यक्त्वस्था देवभेदेषुलोकातिकाऽनुत्तरभेदरहिताभवति। एतेषुपूर्व-ग्रथिभेदात्नात्रोपशमसम्यग्दर्शनाभाव, क्षायिकेतुनारका षड्तिर्य-ग्प्रत्ययादशपूर्वबद्धाऽपेक्षयाकेचित्तुतिर्यक्षुक्षायिकनेच्छतिमनुष्यभेदे-षुभवति। तत्रयुगलिकानातुपूर्वकर्मभूमौबद्धयुगलायु पश्चात्युग-लेषुआगच्छतितत्र देवेषूत्पद्यतत मनुष्यत्वमापन्न सिध्यतिउक्त-चकर्मग्रथटीकाया, तसियनईयचउत्थेभवमिसिज्जतिखइयसम्मत्ते, सु-रनारयपुगलसुगइपतुजिणकालियनराण इतिवचनात एतद्गाथा-प्रमाणतिर्यग्गतौनसभव युगलसुगइपइतिवचनात्यत्र अनरद्वीप-का क्षायिकानभवतितेनमानुष्याभेदास्त्रिंशत्कर्मभूमिजा षष्टिरकर्म-भूमिजा एवनवतिर्मानुष्याभेदा षड्नैरयिका किल्विषवर्जितावैमा-निका सप्तति एववाच्य॥ क्षयोपशमेतुचतुर्थगुणस्थानप्रत्यया केचित्तुमर्वार्थसिद्धौक्षायिकसम्यक्त्वमेवइच्छन्तितथाप्येतत्प्रायिक-मिवभासतेइतिज्ञेय॥ मिश्रे १९८ सास्वादने ४०० मिथ्यात्वे ५३५ गुणस्थानोक्तभेदा वाच्या सज्ञिमार्गणायामनोयोगवत् असज्ञि-षु अष्टाविंशत् तिर्यग्प्रत्ययाएकाधिकशत (मनुष्याणा) प्राप्यते।

आहारकस्यसर्वेअनाहारकस्यते नैरयिका सप्ताऽपर्याप्तकारितिर्यग्योनिजाश्चतुर्विंशतिरपर्याप्तकादेवभेदा नवनवतिरपर्याप्तका मनुष्यभेदा असंज्ञिप्रत्ययाएकाधिकशतमपर्याप्तसंज्ञिमनुष्या एकाधिकशतपर्याप्तका केवलिसमुद्घातेचपचदशकर्म्मभूमिजाअप्यनाहारकालभ्यते-अत त्रीणिशतानिसप्तचत्वारिंशत्अधिकानिप्राप्यते ॥ इत्युक्ताविस्तारत जीवभेदामार्गणासु ॥ १३२ ॥ साम्प्रतमार्गणासुसमुद्घातभेदान्दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ—पाचसे तेसठ जीवभेद छे । उत्तर गुणठाणे जिम छे ते मार्गणाये जाणवो, तेमध्ये लोकातिकना भेद अनुत्तर देवताना भेद ए समकितीनेज होय नरकगति १४, तिर्यंचगति ४८, मनुष्यने ३०३, देवतागति १९८, पचेंद्रीयने २२, विकलने पोताना २ ना पचेंद्रीने ५३५, पृथिवीकायने ४, अप्कायने ४, तेउकायने ४, वाउकायने ४, वनस्पतिने ६, त्रसने ५४१, मनोयोगे २१२, अपर्याप्ता गिणता ४२४, वचनयोगे ४४१, कायोगे ५६३ इत्यादिक सर्वयत्थी जाणवो एकलोकातिक तथा अनुत्तर विमानना भेद सर्वसमकितीने होय, ए रीते जाणवो ॥ ॥ १३२ ॥

मणुएसगसमुग्घाया, देवेतिरएअपचचउनिरए ।
सेसासुमग्गणासु, गुणठाणविहोओनेयव्वा ॥१३३॥

टीका—मणुएसगसमुग्घाया इत्यादि ॥ मनुष्यगतौसगत्तिसप्तसमुद्घाता प्राप्यतेवेदनादय देवगतौनिर्यग्गतौ वेदना १ कषायमरण १ वैक्रियतजस १ लक्षणा पचसमुद्घाता चउनिरयेनारकगतौवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वार समुद्घाता शेषा-

सुमार्गणासु गुणस्थानविधिरनुज्ञातव्या । त्रसकायेयोगत्रयेशुक्ल-लेश्यायामभव्येक्षायिकसम्यग्दर्शनेसंज्ञ्याहारकपर्येंद्रियलक्षणासुदश-मार्गणासुसप्तसमुद्घाताभवंति, पुरुषनपुंसकवेदे कषायचतुष्टये-ज्ञानचतुष्टयेदर्शनत्रिकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेलेश्याप-चकेक्षयोपशमसम्यक्त्वलक्षणेएकविंशतिमार्गणासुकेवलिसमुद्घाता-ऽभावात्षट्समुद्घाताभवंति, स्त्रीवेदअज्ञानत्रयअविरतिदेशविरति अभव्योपशमसास्वादनमिथ्यात्वलक्षणासुदशमार्गणासु आहारक-केवलिवर्जा पंचसमुद्घाता भवंति । एकेंद्रियवायुकायअसंज्ञि-अनाहारकमार्गणासुवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वार समुद्घा-ता, विकलत्रिकस्थावरचतुष्कमार्गणासुवेदनाकषायमरणलक्षणास्त्रय समुद्घाता, परिहारविशुद्धिमिश्रमार्गणासुवेदनाकषायरूपौद्वौसमु-द्घातौ, सूक्ष्मसंपराये नसमुद्घात, मरणेऽपिसमुद्घातमनरेणैवके-वलिद्विकेयथाख्यातचारित्रेचैककेवलिसमुद्घातलक्षणभवति इत्यु-क्तामार्गणासुसमुद्घाता ॥ १३३ ॥ अथमार्गणासुध्यानान्याह ॥

टबार्थ—हवे समुद्घात कहे छे, मार्गणाये मनुष्यगति मार्गणाये सात समुद्घात हवे, देवगति तिर्यंचगतै पाच समु-द्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रीय तैजस ए पाच समुद्घात छे । नारकीने ४ समुद्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रिय ए ४ शेषमार्गणाये समुद्घात गुणठाणाने अनुक्रमे मार्गणाये पिण जाणवो ॥ १३३ ॥

इगविगलथावरेसु, असन्नीएसुनझाणममणत्ता ।
नरतसपणिंदिखवगे, सवेजोएअसुकाए ॥ १३४ ॥

टीका—इगविगलथावरेसु इत्यादि ॥ एकेन्द्रियविकलेंद्रिय-

स्थावरपचक्रमार्गणासु असज्ञिलक्षणासुनव्यान अमनस्कत्वात्मनो-रहितत्वात्, अतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणएगवत्थुम्मि छउमत्थाण-झाण इतिवचनात्अत मनोरहितत्वात् नव्यानसद्भाव नरत्तिमनु-ष्यगतौत्रसकायेपचेन्द्रियमार्गणाया क्षायिकेसम्यग्दर्शनेसर्वेआर्त्तरौद्र-धर्मशुक्लक्षणानिचत्वारिध्यानानितेषाषोडशापिपादालभ्यते सर्वगु-णस्थानकसभवात्, गुणस्थानकाऽपेक्षयाव्यानभेदावक्तव्या योग-त्रिकेशुक्लेश्यायां ॥ १३४ ॥

टबार्थ—एकेन्द्रियमार्गणाये विकलेन्द्रियमार्गणाये थावरमा-र्गणाये असज्ञीमार्गणाये ध्यान नथी स्येमाटे जे एटली मार्ग-णाये मन नथी मनविना ध्यान थाय नहीं ध्यान ४ प्रकारना छे, आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ ए ४ ध्यान छे तेमध्ये आर्त्तध्याननना पाया ४ इष्टवियोग १ अ-निष्टसयोग १ रोगचिंता १ निदान १ ए ४ रौद्रध्याननना पाया छे ४ हास्यानद १ मृषानद २ चोर्यानद ३ परिग्रहरक्षणानद ४ धर्मध्याननना पाया ४ आज्ञाविचय १ अपायविचय २ विपाक-विचय ३ सस्थानविचय ४ शुक्लध्याननना पाया ४ पृथक्त्ववि-तर्कसप्रवीचार १ एकत्ववितर्कअप्रविचार २ सूक्ष्मक्रिया प्रति-पाति ३ पृथक्त्वक्रिया निवृत्ति ४ सर्व १६ भेद थया, मनुष्यगति १ त्रसकाय १ पचेन्द्री १ क्षायिकसमकित ४ ए चार मार्गणाये ध्याननना १६ भेद छे योग ३ शुक्लेश्या तथा ॥ १३४ ॥

आहारेचरमस्स, सुक्कस्सविणाकसायवेएसु ।
उवसमितिसुक्कहीणा, तिन्नाणदसेसमणभवे॥१३५॥

टीका—आहारकमार्गणाया चरमशुक्लव्युपरतक्रियलक्षण वि-

नापचदशध्यानभेदा प्राप्यते । अस्यायोगिकालेप्राप्यमाणत्वात् अयोगित्वतुआसु मार्गणासुनास्ति तथा कषायमार्गणासु चतसृषु-वेदत्रिकमार्गणासु उपशमसम्यग्मार्गणासु, तिसुक्कहीणा, इतिनय शुक्लाएकत्ववितर्काऽप्रविचार १ सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति २ उच्छिन्न-क्रियाऽनिवृत्ति ३ क्रियालक्षणाना क्षीणमोहादिषुप्राप्यमाणत्वात् तेनैनासुनभवति, तिनाणदसेसमणभव्वे मत्यादिज्ञानत्रिके चक्षुरादि-दर्शनत्रिकेसमणत्ति समनस्काना सज्ञिनाभव्येभ्यमार्गणाया अग्रे-तनगाथागताध्यानभेदा वाच्या ॥ १३५ ॥

टबार्थ —आहारकमार्गणाये शुक्लध्याननो चरम छेहलो पायो नथी ते शुक्लनो चोथो पायो अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे नथी कषायमार्गणाये उपशमसमकितमार्गणाये वेद तीन ३ मार्गणाये आर्त्तना ४ रुद्रना ४ धर्मना ४ शुक्लनो १ एव १३ भेद छे तीन शुक्ल ते क्षीणमोह गुणठाणे पछी थाये तेमाटे नथी तीन ज्ञान ३ तीन दर्शनसज्ञी एव ७ भव्य मार्गणाने विषे छे ॥ १३५ ॥

चरमदुसुक्कविहीणा, अणहारदुकेवलेसुदोचरिमा ।
पणलेसवेयगेसु, असुक्कपरिणामभेएण ॥ १३६ ॥

टीका—एतासुमार्गणासुक्षीणमोहपर्यन्त गुणस्थानकप्राप्तौचतु-र्दशध्यानभेदा भवति चरमौद्वौशुक्लौसूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपातिव्युपरतक्रियौताभ्या-हीनाभवति । अनाहारकमार्गणाया विग्रहगतौसिद्धानाध्यानाभा-वात्, अयोगिस्थानाहारकस्यतुचरमौद्वौशुक्लौप्राप्येते, तथाकेवलद्वि-केऽपिचरमौद्वौशुक्लभेदौप्राप्येते तथा पचसुअन्त्यासुलेश्यासु तथा क्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेअसुक्क, शुक्लध्यानरहिताद्वादशभेदाभवति । अप्रमत्तपर्यन्तगुणस्थानकानासद्भावात् । शुक्लस्यअपूर्वकारणादौ-

प्राप्यमाणत्वात् नात्रसर्वत्रध्यानभेदा येउक्ता तेसर्वेपरिणामभेदेन-भवति । अत्यतविशुद्धौविशुद्धा अत्यतसक्लेशेसक्लिष्टा सर्वजीवानाप्रायोध्यानकालश्चाल्प स्मृतिचिंताभावनाकालस्तुबहुनरइति ॥ ॥ १३६ ॥

टबार्थ—छेहला शुक्लध्यानना २ पायाविना चउदे पाया छे ए अत्ये २ पाया ते अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे ओछा गण्या छे अनाहारकमार्गणाये केवल २ ने विषे शुक्लध्यानना छेहला २ पाया छे पाच लेश्याने क्षयोपशमसमकितने विषे शुक्लध्यान विना ३ ध्यानना १२ पाया छे जे कारणे परिणामने भेदे आठमा गुणठाणा पछी शुक्लध्यान होवे ए मार्गणा ७ गुणठाणा सीम छे ॥ १३६ ॥

सुहुमेपढमसुक्क, हरकाएसुक्कचउरपरिहारे ।
अट्टतिगधम्मचउग, इगसुक्कयुअदुसामईए ॥१३७॥

टीका—सुहुमेपढमसुक्क इत्यादि ॥ सूक्ष्मसपरायेचारित्रेप्रथमआद्य शुक्लपृथक्त्ववितर्कसप्रवीचारलक्षणएकशुक्लध्यानलभ्यते हरकायेयथाख्यातचारित्रेसुक्लचउरशुक्लध्यानस्यचत्वारोभेदा भवति तत्र उपशातमोहेपृथक्त्व क्षीणमोहेएकत्वसयोगेसूक्ष्मक्रियालक्षण अयोगिकेवलिगुणस्थानेव्युपरतक्रियालक्षण परिहारविशुद्धौआर्त्तत्रिक निदानार्त्तरहितमुनीनाभवति । आचार्यादिइष्टवियोगादौरोगचिंतादिकारणेचआर्त्तत्रयसभवात्, स्वाध्यायादौतुधर्मध्यानचतुष्टयस्यसद्भावात् प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानप्रायोग्यत्वात् । दुसामईएत्ति, सामायिकछेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्वयेएकप्रथमशुक्लध्यानपृथक्त्ववितर्कलक्षणवेनयुक्तइत्यनेनप्रमतेआर्त्तत्रिकधर्मचतुष्टयस्यसद्भावात् ।

प्रमत्तेधर्मध्यानचतुष्टयसद्भावात्। अपूर्वाऽनिवृत्तौप्रथमशुक्लचारित्रद्वयेप्रमत्तादिअनिवृत्तिपर्यंतगुणस्थानसद्भावात् ॥ १३७ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसंपरायचारित्रे पहिलो शुक्लध्याननो पायो छे यथाख्यातचारित्रमध्ये शुक्लध्याननां ४ पाया छे परिहारविशुद्धिमध्ये आर्त्तध्याननां तीन भेद धर्मध्याननां ४ भेद छे सामायिक छेदोपस्थापनीय विषे आर्त्तध्याननां तीन भेद धर्मना ४ भेद शुक्लनो १ भेद पहिलो ए भेद छे ॥ १३७ ॥

सुदुसुक्कमणनाणे, सेसेसुअट्टरुद्दझाणाइ ।
दुगतेरसदेवे, नवतिरियेइगेगनरनिरए ॥ १३८ ॥

टीका—सुदुसुक्कमणनाणे इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानेप्रमत्तन क्षीणमोहपर्यंतगुणस्थानसद्भावे आर्त्तनिकधर्मचतुष्कशुक्लद्वयसद्भावात् मन पर्यवज्ञाने नव ध्यानभेदा भवंति शेषासुगतिनिकअज्ञाननिक अविरतिदेशविरति अभव्यमिथ्यात्व सास्वादनमिश्रलक्षणासुद्वादशमार्गणासुआर्त्तरौद्र झाणाइ ध्यानभेदानपुमकत्वप्राकृतत्वात् अष्टौभवंति । इत्युक्ताध्यानभेदा मार्गणासु, साम्प्रतचतुर्विंशतिदंडकान्मार्गणासुदर्शयन्नाह देवेदेवगतौत्रयोदशदंडकाभुवनपतिदशव्यंतरज्योतिष्क वैमानिकलक्षणा प्राप्यते, नवत्ति, दंडका स्थावरपंचकविकलत्रिकतिर्यग्पंचेंद्रियलक्षणानवदंडकास्तिर्यग्गतिमार्गणायाएकोनरगतिलक्षण नरगतौएकोनैरयिकगतिलक्षण नरकगतौभवंति ॥ १३८ ॥

टबार्थ—मन पर्यवज्ञानमध्ये आर्त्तना ३ भेद धर्मना ४ शुक्लना २ एटला भेद छे । शेषमार्गणाये आर्त्तध्याननां भेदना

४ भेद पामीए, ए मार्गणाए ध्यानना भेद कह्या, हवे २४ दडक बासठ मार्गणाये कहे छे । तेर दडक देवतानी गतिमध्ये छे, तिर्यंच गतिमध्ये नव दडक छे । नारकीने एक दडक छे, मनुष्यने दडके एक दडक छे ॥ १३८ ॥

पणएगिंदियविगले, थावरपणगेनियचमणयोगे ।
पचेंदिसुतिगनाणे, विभगेओहिदसेय ॥ १३९ ॥

टीका—पणएगिंदियविगले इत्यादि॥एकेन्द्रियमार्गणायापणत्ति पच पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिलक्षणा पचदडका भवति, विकलेस्वका स्वनामकादडकाभवति । पृथि-यादिषुपचसुस्वनामका एवदडका , तथामनोयोगेपचेंद्रियमार्गणायाज्ञानत्रिकेमत्यादिकेविभगेअवधिदर्शनेचशब्द समुच्चयार्थ ॥ १३९ ॥

टबार्थ —एकेंद्रियमार्गणाये पाच दडक छे । पृथिवीअपतेउवाउवनस्पति एव ५ विकलनेविषे पोताना दडक बेंद्रीने बेंद्री, तेंद्रीने तेंद्री चौरिंद्रीयने चौरिंद्रीनो दडक छे, थावर पाचमध्ये थावरना दडक पोताना जाणवा । पृथिवीकायमध्ये पृथिवीनो दडक, अप्कायमध्ये अपकायनो दडक, तेउकायमध्ये तेउनो दडक, वाउकायमे वाउनो दडक, वनस्पतिकायमे वनस्पतिनो दडक छे । मनोयोग वचनयोग १ पाचेंद्रिय मार्गणाये १ मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा विभगज्ञान तथा अवधिदर्शनने विषे ॥ १३९ ॥

सम्मतिगेमीसमि, सन्निसुसालसयमेपणगे ।
मणनाणकेवलदुगे, एगनरदडगहोइ ॥ १४० ॥

टीका—सम्यक्त्वत्रिके उपशमक्षयोपशमक्षायिके मिश्रेसंज्ञिमार्गणायांसोलत्ति षोडशदंडकानारकदेवप्रत्यपाप्तक्षयोदशतिर्यग्मनुष्या एतेभवंति संयमपंचकेमन पर्यवज्ञानेकेवलज्ञानेकेवलदर्शने एकमनुष्यगतिलक्षणदंडकभवति, वचनयोगेविकलत्रिकसंज्ञिषोडशयुक्ताएकोनविंशतिदंडकाभवति ॥ १४० ॥

टबार्थ—उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक १ मिश्रदृष्टि ते संज्ञीमार्गणाए सोल दंडक छे, देवनाना १३ नारकीनो १ तिर्यंचपंचेंद्रीय १ ए सोल छे, पांच संयममन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाए एक मनुष्यनो दंडक होवे, ए मनुष्य विना न पामीये ॥ १४० ॥

इगुणिसतसेपुरिसे, थीनेएपनरससढिइक्कारा ।
देसेतिरिमणुअदुग, चरकुसुइगिवितिविणासत्तर १४१॥

टीका—इगुणिसतमेइत्यादि तेएवएकोनविंशतिदंडका त्रसकायेपुरिसेपुरुषवेदेतथास्त्रीवेदेनारकवर्जा पंचदशसंज्ञिदंडका सढिनपुंसकवेदेनारकस्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणाएकादशदंडकाभवंति । देशविरतिमार्गणायांतिर्यग्गतिमनुष्यगतिलक्षणौद्वौदंडकौचक्षुर्दर्शनेएकेंद्रिया पंच त्रिति द्वींद्रिया त्रीन्द्रियादंडकसप्तकविनासप्तदशदंडका भवंति ॥ १४१ ॥

टबार्थ—त्रसकायमार्गणायेविकल ३ देवना १३ नारकी १ तिरियंचपंचेंद्रीय १ मनुष्यपंचेंद्रीय १९ दंडक छे, पुरुषवेदे स्त्रीवेदे देवनाना १३ तिर्यंचपंचेंद्रीय १ मनुष्यपंचेंद्रीय १ ए १५ दंडक छे । नपुंसकवेदमांये नारकी १ थावर ५ विकल ३ तिर्यंचप

चेंद्रीय मनुष्यपचेंद्रीय ए ११ दंडक छे। देशविरतिमध्ये तिर्यंच १ मनुष्य १ ए बे दंडक छे। चक्षुदर्शनमध्ये एकेंद्रीना ५ दंडक छे, बेंद्रीनो १ तेंद्रीनो १ ए सात विना शेष १७ दंडक पामीये छीए ॥ १४१ ॥

बावीसकिण्हतिगे, अट्ठारस तेउएअ पउमदुगे।
तिगदसगचअसन्नी, सासाणेदुतिबावीस ॥ १४२ ॥

टीका—बावीसकिण्हतिगे इत्यादि कृष्णनीलकापोतलक्षणासुलेश्यासुज्योतिष्कवैमानिकवर्जा द्वाविंशतिदंडका तेजोलेश्यायानारकतेजस्कायवायुकायविकलत्रिकवर्जाअष्टादशदंडकाभवंति॥ पउमदुगेपद्मशुक्ललेश्याद्वयेतिर्यगपचेंद्रियमनुष्यपचेंद्रियगर्भजवैमानिकानयोदंडकाभवंति। दसगच असन्ना, असंज्ञिमार्गणायास्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणा दशदंडका भवन्ति, तथासास्वादनमार्गणाया तेजोवायुकायरहिताद्वाविंशतिदंडका लभ्यते ॥ १४२ ॥

टबार्थ—कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ ए तीनने विषे ज्योतिषी १ वैमानिकविना बावीस दंडक छे तेजोलेश्याने विषे नारकी १ विकल ३ तेउकाय वायुकाय विना १८ दंडक पामीये छे पद्म तथा शुक्ललेश्याने विषे ३ दंडक छे एक वैमानिकनो १ एक तिर्यंचनो १ एक पचेन्द्रि मनुष्यनो १ एम ३ छे, तथा असंज्ञिमार्गणाये १० दंडक छे थावर ५ विकल ३ तिर्यंचऽसंज्ञी १ मनुष्यअसंज्ञी १ एम १० दंडक लाभे सास्वादनमा २२ दंडक छे, तेउकाय वाउकाय नथी ॥ १४२ ॥

सेसासुमग्गणासु, चउविसदटगानिरयविगले ।
थावरिइगिनपुसो, देवाथीपुरिसवेआय ॥१४३॥

टीका—सेसासुमग्गणासु इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासु काययोगकषायचतुष्कअज्ञानद्वयाविरति अचक्षुर्दर्शनभव्याऽभव्यमिथ्यात्वाहारकानाऽहारकलक्षणासु चतुर्विंशतिदटका भवति । निरयविगलेत्ति, नरकगतिविकलत्रिकस्थावरपचकएकेन्द्रियलक्षणासुएक नपुसकवेदलक्षणोवेद भवति । देवगतौस्त्रीवेदपुरुषवेदौप्राप्येते ॥ ॥ १४३ ॥

टबार्थ—शेषमार्गणाये काययोगे कषाय ४ अज्ञान ३ अविरति चक्षुदर्शन १ भव्य १ अभव्य १ मिथ्यात्व १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये २४ दटक छे हवे बासठ मार्गणाये कहे छे वेद तीन वखाणे छे, नारकीनी मार्गणाये विकल ३ थावर ५ एकेन्द्रिय १ एटलाने नपुसक वेद छे तथा देवगतिमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेद पामीये छे ॥१४३॥

सुहमअहरकायदुकेवलि, वेअरहीआनपुसगाअमणा।
परिहारगादुवेया, सेस तिवेया मुणेयवा ॥ १४४ ॥

टीका—सुहमअह इत्यादि ॥ सुहमत्तिसूक्ष्मसपरायचारित्रे-यथाख्यातचारित्रे केवलिद्विकेण्ता मार्गणानेदरहिताज्ञातव्या ॥ अमणाअसज्ञिन नपुसकवेदाभवति । परिहारविशुद्धिका पुरुषवेद-नपुसकवेदाभवति । जननपुंसका त्रिमाण्यप्राप्ता भगवत्यापचविंशतिनिमशतकात्नेय। सेसाशेषा सर्वमार्गणास्त्रिवेदका भवति ।

इत्युक्तमार्गणासुवेदद्वार ॥ १४४ ॥ साम्प्रतमार्गणासुध्रुवबधिद्वार-दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यातचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाये कोई वेद नथी कर्मग्रथ-मध्ये केवलज्ञानोपयोगे वेद ३ ने कह्यो छे, ते आकाररुपवेद गवेष्या छे, परविकाररुप नथी गवेष्यो, असज्ञीने एक नपुसकवेद छे परिहारविशुद्धिने पुरुष तथा नपुसकवेद छे शेष जे मार्गणा रही ते सर्वने तीन वेद लाभे छे ॥ १४४ ॥

वन्नचउतेअकम्मा, गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा।
मिच्छकसायावरणा, विग्घाधुवबधिसगचत्ता ॥१४५॥

टीका—वन्नचउतेअकम्मा इत्यादि ॥ गाथा प्राग्व्याख्याता वर्णादीनाध्रुवबधित्वस्वस्वजातिषु एकस्यावश्यबधात् । ननु-चैवस्वजात्यन्यतमबधेध्रुवबधित्वतर्हिसातासातयोरन्यतमस्यावश्यबधात्ध्रुवबधित्वमाप्नोति, तत्राह सातासातयोर्हेतुभेदोवर्णादीनातु-सएवहेतु तेनध्रुवबधित्वमितिएवगत्यादिष्वपिहेतुभेदबधात् अध्रु-वताज्ञेया ॥ १४५ ॥

टबार्थ —हवेध्रुवबधी कहे छे वर्ण ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण नामकर्म १ उपघात १ भय १ दुगछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ आवरण १४ ज्ञानावरणी ५ दर्श-नावरणी ९ एव १४ आवरणअतराय ५ ए ध्रुवबधीनी सड-तालीस प्रकृति जाणवी ॥ १४५ ॥

अणमिच्छथीणतिग, विणुनाणतिगओहिदससम्मतिगे
मीसेदेसविरए, अवीअकसायायधुवबधी ॥ १४६ ॥

टीका—तत्रमार्गणासुअनतानुबधिचतुष्टयमिथ्यात्वमोहनीयस्त्यानर्द्धित्रिकलक्षणाष्टकप्रकृतिवर्जा शेषाएकोनचत्वारिंशत्ध्रुवबधिन्य मत्यादिज्ञानत्रिकावधिदर्शनउपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणसम्यक्त्वत्रिकेमिश्रेचबध्नति ।। ताएवपूर्वोक्ताद्वितीयकषायरहिता पचत्रिंशद्देशविरतौबधयान्ति ॥ १४६ ॥

टबार्थ—अनतानुबधि ४ मिथ्यात्व १ थीणद्धी ३ ए आठ विना ज्ञान ३ अवधिदर्शन १ समकित तीनने विषे एटली मार्गणाये इगुणचालीस ध्रुवबधी मिश्रदृष्टिनेविषे ३९ चालीस ध्रुवबधी छे, देशविरतिनेविषे ए ३९ चालीसम ये कषाय बीजानी चोकडी काढीये तेवारे पाचीस ध्रुवबधी छे ॥१४६॥

तीअकसायविणाते, मणपज्जवनाणचरणतिगसुहुमे।
चउदससासाणेते, मिच्छविणाछचत्तधुवबधी॥१४७॥

टीका—तीअकसाय इत्यादि।। ताएवपूर्वोक्तास्तृतीयकषायचतुष्टयरहिताएकत्रिंशत्, मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणेचारित्रत्रिकेबध्नति । हेतुभावनाचपूर्ववत् । तथासुहुमे सूक्ष्मसपरायचारित्रेज्ञानावरणीयपचकदर्शनावरणीय चतुष्टय अतरायपचक एव चतुर्दशध्रुवबधिन्य बधेभवति । तथा सास्वादने, तेइति, ताध्रुवबधिन्य मिथ्यात्वविनाषट्चत्वारिंशत्ध्रुवबधेप्राप्यते मिथ्यात्वस्यमिथ्यात्वेएवबधात् ॥ १४७ ॥

टबार्थ—ते पाचीस माहिथी तीजी चोकडी विना इकतीस ध्रुवबधी बाधे । मन पर्यवज्ञानी सामायिक, छेदोपस्थापनीय १ परिहारविशुद्धिने विषे ३१ ध्रुवबधी प्रकृति छे । सूक्ष्मसप-

राय गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ ए १४ ध्रुवबंधी बांधे। सास्वादन थी मिथ्यात्व विना छेतालीस ध्रुवबंधी बांधे छे ॥ १४७ ॥

केवलदुगिहरकाए, अवधन्नेरासुसवधुवबंधो।
धुवबंधहीणचउहा, सेसाअधुवबंधीण ॥ १४८ ॥

टीका—केवलदुगिहरकाए इत्यादि ॥ तथाकेवलज्ञानकेवलदर्शनयथाख्यातलक्षणासुनिसृपुलाकबकुशप्रतिसेवनाकुशीलसर्वसाअवंध नबंधोभवतिशेषासुगतिइंद्रियकायपोगवेदकषायाऽज्ञानसंयमाऽविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनलेश्याषट्कभव्याऽभव्यमिथ्यात्वसंज्ञि आहारकाऽनाहारकलक्षणासुचतुश्चत्वारिंशन्मार्गणासुसप्तचत्वारिंशत्ध्रुवबंधिन्य बंधोभवति ध्रुवबंधिहीना शेषामार्गणाचतस्राभिरुक्ता गतय अवबंधिन्य प्रतिमार्गणासुवक्तव्यास्ताश्चेमानरकगतौचतु पंचाशत् अध्रुवबंधिन्य, तिर्यग्गतौसप्तति, मनुष्येत्रिसप्तति, देवे ५७ सप्तपंचाशत्, एकेंद्रियेत्रिकलेंद्रियेद्विषष्टि, पंचेंद्रियेत्रिसप्तति, पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिषुद्विषष्टि, तेजोवायुकाये अष्टपंचाशत्। त्रसेयोगत्रयेवेदत्रयेकषायचतुष्टयेत्रिसप्तति। मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेचत्वारिंशत्केवलज्ञाने केवलदर्शनेएका मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौचतुस्त्रिंशत्। अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वेसप्तति। सूक्ष्मसंपरायेतिस्र, यथाख्यातेएकादशाविरतौद्वात्रिंशत्। अविरतौएकसप्तति। चक्षुरचक्षुर्दर्शनेत्रिसप्तति कृष्णनीलकापोतेएकसप्तति तेजोलेश्यायांचतु षष्टि, पद्मलेश्यायांएकषष्टि, शुक्ललेश्यायांसप्तपंचाशत् भव्येत्रिसप्तति। अभव्येसप्तति, उपशमेअष्टात्रिंशत्। क्षायिकक्षयोपशमेचत्वारिंशत्, मिश्रेपंचत्रिंशत्। सास्वादने पंचपंचाशत्,

मिथ्यात्वेसप्तति, सज्ञिमार्गणायानिसप्तति । असज्ञिमार्गणायासप्तति । आहारकेनिसप्तति अनाहारके ६५ पञ्चषष्टि, अध्रुवबन्धि भवति ॥ १४८ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ने विषे यथाख्यातचारित्रने विषे ध्रुवबन्धी प्रकृतिबन्धीय नहीं शेष जे मार्गणा चौवालीसते ध्रुवबन्धी सर्व ४७ सुडतालीस जाणे ध्रुवबन्धी काढीये शेष रहे ते अध्रुवबन्धी प्रकृतिनो बन्ध छे। नारकीने ५४ तिर्यंचने ७० मनुष्यने ७३ देवगतिने ५७ एकेंद्रीविकलेंद्रीने ६२ पचेंद्रीने ७३ पृथवीअप्तेउवनस्पतिने ६२ तेउवाऊने ५८ असयोग ३ वेद ३ कषाय ४ ने ७३ ज्ञान ३ ने ४० मनपर्यवज्ञानने ३४ केवलज्ञानने १ लेश्या ३ ने ७१ तेजो ६४ पद्म ६१ शुक्ल ५७ भव्य ७३ अभव्य ७० उपशम ३८ क्षायिक ४० क्षयोपशमे ४० मिश्रे ३५ सास्वादने ५५ मिथ्यात्वे ७० सज्ञी ७३ असज्ञी ७० आहारीने ७३ अनाहारीने ६५ अध्रुवबन्धीनो बन्ध छे ॥ १४८ ॥

निमिणथिरअथिरअगुरुज, सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना।
नाणतरायदसण, मिच्छधुवउदयसगवीसा ॥१४९॥

टीका—निमिणथिरअथिर इत्यादि गाथा मार्गणाप्रकरणाअध्रुवोदयिनी प्रकृती मार्गणासुविभजयन्नाह ॥ १४९ ॥

टबार्थ—ध्रुवोदयी २७ छे, निर्माण १ थिर १ अथिर १ अगुरुलघु १ शुभ १ अशुभ १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादिक ४ ए १२ नामकर्मनी ज्ञानावरणी ५ अन्तराय ५ दर्शना-

वरणी ४ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवउदयी जाणवी प्रकृति स्वरूप ए रीते छे ॥ १४९ ॥

नामधुवोदयकेवलि, सम्मत्तपरासुमग्गणासुच ।
मिच्छविणासेसासु, सगवीसहुतिधुवउदया ॥१५०॥

टीका—नामधुवोदयकेवलि इत्यादि । केवलित्ति मीमोमीमसेनइतिन्यायात् केवलज्ञान केवलदर्शनमार्गणाद्वयेनामकर्मप्रत्ययाध्रुवोदयिन्योद्वादशप्रकृतय प्राप्यते, तथा सम्मत्तपरासु सम्यक्त्वसहितासु मार्गणासुमत्यादिज्ञानचतुष्टयेअवधिदर्शनेसयमपद्के उपशमादिसम्यक्त्वत्रयेचशब्दात्सास्वादनेमिश्रेमिथ्यात्वोदयविनापद्विंशतिध्रुवोदया भवन्ति, शेषासुमार्गणासुसप्तविंशति ध्रुवोदया प्राप्यते, भावनागुणस्थानाधिकारवत्ज्ञेया ॥ १५० ॥ अध्रुवोदयिप्रकृतिदर्शनार्थमाह ॥

ठवार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शनमध्ये नामकर्मनी १२ ध्रुवोदयी उदय छे समकितसहित जे मार्गणाज्ञान ४ अवधिदर्शनसमकित तीन इत्यादिक मार्गणाये मिथ्यात्व विना २६ ध्रुवउदयी उदय छे, शेषमार्गणाये सत्तावीस ध्रुवोदयी छे ॥१५०

धुवउदयहीणउदओह, सेसा(सखा)अधुवोदयाणनेयव्वा
धुवसताकेवलदुगि, चउसत्तरिसेससव्वाओ ॥१५१॥

टीका—धुवउदयहीणउदओ इत्यादि। उदयेमार्गणासुउदयस्यपयओघ सध्रुवोदयहीन शेषाउदयौघसख्यासाअध्रुवोदयसख्याज्ञातव्या, नरकगतौ एकोनाशीति उदयसख्या तत्रसप्तविंशतिध्रुवोदया शेषा-

द्विपचाशत्अध्रुवोदयाज्ञानया एवसर्वत्रभाव्य, विचारसारयनक-स्वोपज्ञतत ज्ञानया इति ॥ अथध्रुवसत्तात्रिंशदधिकशतमानासा-चसप्त (अष्ट)? पचाशदधिकशतप्रकृत्यपेक्षयागृहीतानदपेक्षयाकेवल-ज्ञान केवलदर्शनमार्गणायाचतुस्सप्तति ध्रुवसत्तालभ्यतेशेषासुषष्टि-मार्गणासुसर्वाअपिध्रुवसत्ता लभ्यतेभावनाचस्वत ज्ञेया ॥ १५१ ॥ अध्रुवसत्तादर्शयन्नाह ॥

टबार्थ—ध्रुवउदयथी हीन करता उदयनो जे ओघ छे ते मध्ये ध्रुवोदयी काढता रही जे प्रकृति ते अध्रुवोदयी जाणवी, नरगनी १९ प्रकृति उदय छे, तेमध्ये २७ ध्रुवोदयी ५२ अ-ध्रुवोदयी इमज सर्व यत्रकथी जाणज्यो, हवे ध्रुव सत्ता कहे छे केवलज्ञान केवलदर्शनने विषे चिहुत्तरि ध्रुव सत्ता छे, शेष साठ मार्गणाये सर्व एकसोतीसनी ध्रुव सत्ता छे ॥ १५१ ॥

अधुवेतिरियाअजिणा, देवनिरयाइगाउविणुविगला।
थावरइगअजिणाओ, दुगअतिगाउतेउदुगे॥१५२॥

टीका—अध्रुवेतिरियाअजिणा इत्यादि॥ अध्रुवेअध्रुवसत्ताया तिर्यग्योनिकानाअजिनाजिननामरहिता सप्तविंशति अध्रुवसत्ताका लभ्यते, देवगतावपिनरकायूरहिता सप्तविंशतिरध्रुवसत्ता नरक-गतौदेवायूरहिता अध्रुवसत्ता प्राप्यते, विकलेंद्रियत्रिके स्थावरत्रिके पृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणे इगत्तिएकेंद्रियमार्गणाया जिननामदेवायु नरकायु इतिप्रकृतित्रयरहिता पचविंशति अध्रुवसत्ताभवति । अतिगाउत्तिनरकदेवमनुष्यायूरहिताश्चतुर्विंशति अध्रुवसत्तालभ्यते, एताश्चमनुष्यत आगत्यतेजस्कायवायुकायनात्कालिकानाभवति ।

तेजस्कायिकोदयेआवलिकानतरमनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्वी देवगतिदेवानुपूर्वी नरकगतिनरकानुपूर्वी वैक्रियसप्तकाहारकसप्तलक्षणसत्ताया उद्वलतिजिननामसत्तातुनास्त्येवेतिएवमदनाहसूत्रकार ॥१५२॥

टबार्थ —अनुवसत्तामध्ये तिर्यंचगतिमध्ये जिननामनी सत्ता नथी शेष २७ नी सत्ता छे देवगतिमध्ये नरकनो आऊखो सत्तामध्ये नथी नरकगतिमध्ये देवायु नथी, विकल ३ थावर ३ एकेन्द्रियमार्गणाये जिननाम तथा देवतानारकीनो आऊखो काढीये तेवारे २५ अनुवसत्ता छे अने तेउकाय १ वाउकाय १ ने मनुष्यना आऊखा विना २४ सत्ता छे ॥ १५२ ॥

नरअणुपुव्वि (वेउव्वि) विणावा, केवलदुगिमीससम्म-
निरयदुग।
तिगआउहीणसता, सासणमीसेअअजिणाय ॥१५३॥

टीका—नरअणुपुव्वि (नरवेउव्वि) विणावा इत्यादि ॥ अत्रनरोमनुष्य वैक्रियाहारकदेवनरकप्रायोग्यप्रकृतिविनातेजस्काय-वायुकाय लक्षणमार्गणायाभवति वाइतिपदेनसर्वकर्मप्रकृत्यादिनोज्ञेय शास्त्रसंक्षेपार्थनोक्त । केवलद्विकमिश्रसम्यक्त्वमोहनरकद्विकआयु-स्त्रिकदेवायु नरकायु तिर्यगायु इतिप्रकृतिसप्तकविनाएकविंशति अनुवसत्ताकालभ्यते ॥ सास्वादनेमिश्रेजिननामरहिता सप्तविंशति अनुवसत्ताका लभ्यते, विजिणुग्घायनइयइत्यादिवचनात् । एतद्भा-वप्राप्ति जिननामसत्तारहितानाअथवोद्वलितजिनसत्तावतामवति ॥ १५३ ॥

टबार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ने विषे मिश्रमो-हनीय १ समकितमोहनीय नरकनीनआऊपादेवायु १ नरकायु-

विना २१ अध्रुवसत्ता छे। किंहा एक नरानुपूर्विविना २० नी सत्ता छे। सास्वादन तथा मिश्र ए बे मध्ये जिननाम सत्ता नथी शेष २७ अध्रुवसत्ता छे, शेषमार्गणाए २८ अध्रुवसत्ता छे ॥ १५३ ॥

सेसासुसव्वसता, चरणापणमणुअमग्गणाठाणे । ०
पचविदितिनरेसु, देसोअजओअसव्वत्थ ॥ १५४ ॥

टीका—सेसासुसव्वसनाइत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासुअध्रुवसत्ता सर्वा प्राप्यन्तेइतिभाव ॥ इत्युक्त अध्रुवसत्ताद्वार साम्प्रतचारित्रद्वार-मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नरतसइत्यादिगाथा प्रथमदर्शितास्तितथापि-प्रक्षेपत्वेनन्यस्ता यार यावतेनरगतो त्रसेयोगत्रिकेमत्यादिज्ञानचतु-ष्टये दर्शनत्रिके शुक्ललेश्यायाभव्येउपशमेक्षायिकेसज्ञिषु आहारक-लक्षणासुमार्गणासुसप्तचरणाश्चारित्रा पचचारित्रदेशविरत्यविरतिल-क्षणा प्राप्यन्ते ॥ १५४ ॥

टबार्थ—मनुष्यनी मार्गणाय ५ चारित्र छे, सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसपराय ४ यथाख्यात-चारित्र ए पाच चारित्र मनुष्यमार्गणामध्ये पामीये। पचेंद्रीति-र्यंच तथा मनुष्यमध्ये देशविरति पामीये। अविरतिसयमसर्वमे पामीये। इहा मार्गणाये सयमयनकथी जोईलेज्यो एहनो यत्न पिण ग्रथकर्त्तानो कृत छे ॥ १५४ ॥

---

* (पाठान्तरे)
सेसासुसव्वसता, नरतसजोगनाणदसेसु ।
सुक्कभविसन्नखायग, सन्नीहारेसुसगचरणा ॥

लोभेअहक्खायविणा, तेसुहुमविणाकसायवेएसु ।
लेसपणवेयगम्मि, केवलदुगिसुद्धचरणच ॥१५५॥

टीका—लोभेअहइत्यादि ॥ लोभमार्गणायायथाख्यातचारित्र विनापड्भेदा तेएवपञ्चसूक्ष्मसपरायविनाकषायत्रिके । वेदत्रिके-लेश्यापचकेक्षयोपशमसामायिकादिसप्तभेदेषुनिजकचारित्रसामायिके-सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारेपरिहार इत्यादिज्ञेय देवादिअविरताविर-हिता मार्गणासुसम्यक्त्वेपचभेदा भवति । तथाकेवलद्विकेएकशुद्ध-यथाख्यातलक्षणचारित्रप्राप्यते ॥ १५५ ॥

चरणेसुनायचरण, देवाइअजयमग्गणेअजय ।
तिरएसदेसविरइ, साहक्खायअणाहारे ॥ १५६ ॥

टीका—एकेंद्रियेत्रिकलद्रियेदेवगतौनरकगतौस्थावरपचकेमि-थ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेत्रिके अविरतिमार्गणायाअज्ञानत्रिके-अभव्यमार्गणायाएकअविरतिलक्षणप्राप्यते । तिर्यग्गतौसदेसत्ति-देशविरतियुक्तौद्वौभेदौप्राप्येते । अविरतिदेशविरतचेतिसाहक्खा-यतियथाख्यातसहित इत्यनेनअविरति यथाख्यातचएवचारित्र-भेदद्वय अनाहारकमार्गणायाभवति । तत्राऽविरतिविग्रहगतौयथा-ख्यात केवलसमुद्घाताऽयोगिकेवलिगुणाऽवस्थायाभवति । इत्युक्तचारित्रद्वारमार्गणासु, साम्प्रतसर्वघातिद्वारदर्शयन्नाह ॥१५६॥

सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअणथीणमिच्छविणुघाई।
सजईयमग्गणाए, सव्वघाईअचउपयडी ॥ १५७ ॥

टीका—सम्मत्तमग्गणासु इत्यादि॥ सम्यक्त्वशुद्धयथार्थश्रद्धा-

तयासहिता या मार्गणा मत्यादिज्ञानत्रितयदेशविरतिअवधिदर्शन उपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणासुमार्गणासु तथा मिश्रमार्गणासु । अणत्तिअनतानुबधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वविनाद्वादशसर्वघातिन्य बधेभवति । सजइयत्ति सयतिसयमसहिता या मार्गणा मन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रिकमार्गणासुसर्वघातिन्य केवलज्ञानावरणीय केवलदर्शनावरणीयनिद्राद्विकरूपाश्चतस्र प्रकृतयोबधेप्राप्यतेसूक्ष्मसपरायेच केवलज्ञानाऽऽवरणीय केवलदर्शनावरणीय बधेप्राप्येते ॥ १५७ ॥

टबार्थ—हवे सर्वघाती प्रकृतिने बधमार्गणाये कहे छे । समकित सहित मागणा प्रतिज्ञानादिक तेमन्ये अननानुबधि ४ थीणद्धी तीन ३ मिथ्यात्वमोहनीय ए आठ विना १२ सर्वघातिनो बध छे, सयममार्गणा मन पर्यायादिक तेहने विषे सर्वघाति च्यार प्रकृतिनो बध छे । केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रानिद्रा १ ए चार छे ॥ १५७ ॥

सेसासुसबघाईय, वीसकेवलदुगेनदेसेवि ।
सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअदुवेयसासाणे ॥ १५९ ॥

टीका—सेसासुसबघाईय इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासु सर्वघातिन्य विंशतिप्रकृतय बधेभवति । चशब्दात् साम्वादनस्यमिथ्यात्वविनाएकोनविंशति सर्वघातिपोबधेभवति इत्युक्ता सर्वघातिन्य । साप्रतदेशघातिनी दर्शयन्नाह ॥ नदेसेविइत्यादि अवडमुरकमणि यायेनकेवलद्विकेदेशघातिन्य पचविंशतिप्रकृतय नइतिबधे तथा उदयेसत्तायानभवति । सम्मत्तमग्गणासुसम्यक्त्वशुद्धतत्वप्रतीतिलक्षणतद्युक्तासुमार्गणासुपूर्वोक्तासु तथा मिश्रमार्ग-

टबार्थ --मनुष्यगति १ पचेन्द्रि १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुदर्शन १ तेजोलेश्या १ भव्यमार्गणामे सज्ञीमार्गणाये आहारकमार्गणाये पुन्यना सर्व ४२ छे ॥ १६० ॥

तिरिआउविणापउमे, हारदुगहीणकिण्हतिगअजये।
अजिणाहारातिरिए, अन्नाणतिगअभव्वमिच्छेसु ॥१६१

टीका—तिरियाउविणा इत्यादि। पद्मलेश्यायातिर्यगायुर्विना-एकचत्वारिंशत्बवेभवति। तथा कृष्णनीलकापोतेअविरतिमार्गणाया आहारकद्विकविनाचत्वारिंशत् ४० पुण्यभेदा बवेभवति। एतासाधवस्वामित्वेएवबधाऽभावात् तद्भावनानत्रोक्ता॥ तिरीएइति-तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकेअभव्यमार्गणायामिच्छेइतिमिथ्यात्वेअजिणा-हारा, जिननामकर्मआहारकद्विकविनाएकोनचत्वारिंशत्पुण्यप्रकृ-तिर्बवेभवति ॥ १६१ ॥

टबार्थ --पद्मलेश्याने विषे तिर्यचायु विना ४२ पुण्यप्रकृति छे आहारक बे विना ४० पुण्यप्रकृतिनो बध छे, कृष्णनील कापोतलेश्याये अविरतिमार्गणाने विषे ४० पुण्यना भेद छे, तिर्यचगते जिननाम १ आहारक २ एव तीन विना ३० प्र-कृति पुन्यनो बध छे अज्ञान ३ अभव्यने मिथ्यात्वने विषे ३९ गुणचालीस प्रकृति पुण्यनी बाधे ॥ १६१ ॥

असन्निएविएव, नाणतिगेओहिदससुक्काए।
खायगमीसेसम्मे, तिरिआओयोगदुगहीणा ॥१६२॥

टीका—असज्ञिमार्गणायामपिएवमेवएकोनचत्वारिंशत्पुण्यभेदा-

भवति, तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणे तथा अवधिदर्शनेशुक्ल-लेश्यायाक्षायिकसम्यग्दर्शनेमीसेसम्मेइतिमिश्रशब्देनक्षायोपशमस-म्यग्दर्शनतत्रतिर्यगायु योगद्वगइतिउद्योतद्विकेनहीनाएकोनचत्वा-रिंशत्पुण्यभेदा बधेलभ्यते, एतेषामेकोनाआद्यगुणस्थानत्रयेतद्ब-धात् ॥ १६२ ॥

टबार्थ —असज्ञी तेपण ३९ गुण चालीस पुण्यप्रकृति बांधे छे। ज्ञान तिनने विषे अवधिदर्शनशुक्लेश्याने विषे क्षायिक-समकित कहेता क्षायोपशम समकित ए तीनने विषे तिर्यंचनो आऊखो तथा उद्योत १ आतप १ ए तीन विना ३९ गुण-च्यालीसनो बंध छे ॥ १६२ ॥

जाइचउथावरतिगे, सुरतिगवेउव्विहारदुअजिणा ।
जिणजुअआयावविणा, निरएदेवेसआयावा ॥१६३॥

टीका—जाइचउथावरतिगे इत्यादि ॥ एकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रिय-चतुरिंद्रियलक्षणेस्थावरत्रिकेपृथिव्यप्तेजवनस्पतिलक्षणेमार्गणासप्तकेदेव-गतिदेवानुपूर्वादेवायुरूपदेवत्रिक वेउव्विदुग वैक्रियशरीर वैक्रियोपाग-रूपआहारकद्विकआहारकशरीराऽऽहारकांगोपांगलक्षणजिननामवि-नाइत्यनेनप्रकृत्यष्टकविनाचतुस्त्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनाबधोभवति। नरके-नरकगतौ अपिदेवत्रिकवैक्रियद्विकाऽऽहारकद्विकविनाजिननामयुक्ता आतपचविनाचतुस्त्रिंशत्प्रकृतय बधेभवति। देवगतौआतपनामस-योगात्पचत्रिंशत्पुन्यभेदा बधेभवति। देवानापृथ्वीकायत्वेनभव-नात् ॥ १६३ ॥

टबार्थ —जाति ४ एकेंद्री १ बेंद्री २ तेंद्री ३ चौरेंद्री ४

तथा थावर तीन पृथवी १ अप २ वनस्पति ३ एटली मार्गणाये देवत्रिक देवगति १ देवानुपूर्वी १ देवायु ३ वैक्रिय २ आहारक २ जिननाम विना ८ चोवीस पुण्यप्रकृतिनो बंध छे। तथा नरकगति मार्गणाने विषे जिननाम मेलीये अने आतप नाम काढीइ एटले ए पिण ३४ पुण्यप्रकृति बांधे, नारकी देवगते आतप मेलीये ३५ प्रकृति पुण्यनी बांधे छे, जे कारण देवता मरी पृथविकायमध्ये जाय ते माटे आतपनो बंध छे ॥१६३॥

सुरनरतिगहारदुग, विउविदुगउच्चजिणविणातीस।
गइतसेसुहमेदेसे, मिच्छतिगेनीयगुणपयडी* ॥१६४॥

टीका—सुरनरतिगहारदुगइत्यादि ॥ गइतसे, गतित्रसेतेजोवायुलक्षणेमार्गणाद्वयेदेवत्रिकनरत्रिकाऽहारकद्विकोच्चैर्गोत्र जिननामविनात्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनाम्बंधोभवति। तथासूक्ष्मसपरायचारित्रेतथादेशविरतिमार्गणायासास्वादनेमिश्रमार्गणायानिजगुणा स्वस्वगुणस्थानेतत्रसूक्ष्मसपरायेतिस्र प्रकृतय देशविरतौएकत्रिंशत्सास्वादनेअष्टत्रिंशत्मिश्रेचतुस्त्रिंशत्इतिस्वस्वगुणस्थानप्रत्यया प्रकृतय बंधेभवन्ति ॥ १६४ ॥

अर्थ—देवत्रिक, मनुष्यत्रिक, आहारक २ वैक्रिय २ उच्चगोत्र १ जिननाम ए १२ विना ३० प्रकृति पुण्यनी बांधे गतित्रस कहेता तेउकाय १ तथा वाउकाय मार्गणाये सूक्ष्मसपराय १ देशविरति १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ एटली मार्गणामध्ये ते गुणठाणानी प्रकृति बांधे देशविरति ३१ बांधे मिथ्यात्वे ३९ सास्वादने ३८ मिश्रे ३४ पुण्यनी प्रकृति बांधे छे ॥ १६४ ॥

* सासणमीसेसुनियगुणाइतिपाठान्तरम्

आउतिगहारहीणा, अणहारगिजोयदुगतिआउविणा
सगतीसबंधति, उवसमिमणनाणतिगचरणे ॥१६५॥

टीका—आउतिगहारहीणा इत्यादि॥ तत्रदेवायु मनुष्यायु तिर्यगायु आहारकद्विकहीना सप्तत्रिंशत् पुण्यप्रकृतय अनाहारकत्वेबंधंति, तथा उपसमिइतिउपशमेसम्यक्त्वे सगती सप्तबंधति। सप्तत्रिंशत्भेदा बंधेभवति, द्विचत्वारिंशत्पुण्यप्रकृतीनामध्ये उद्योतातपदेवायु नरायु तिर्यगायुर्विनासप्तत्रिंशत्बंधेभवति, ततोमन पर्यवज्ञानेचारित्रत्रिके सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौअग्रे तनगाथोक्ता प्रकृतय अपहीयतेतत्शेषाभवति इत्यनेनत्रयस्त्रिंशत्पुण्यभेदा लभ्यते ॥ १६५ ॥

टबार्थ—आउखा ३ देवनानो १ मनुष्यायु २ तिर्यंचायु ३ ए ३ विना पुण्यमे तीनज छे तेमाटे आहारक २ ए पाच प्रकृति विना अनाहारक मार्गणाये शेष पुण्यप्रकृति ३७ बांधे तथा उद्योत १ आतप १ तीन शुभायु ३ ए पाच विना ३७ बांधे छे पुण्यनी उपशमसमकितीने तथा मन पर्यायज्ञानने विषे चारित्र तीनने विषे ॥ १६५ ॥

नरउरलयोयदुगवयर, आउदुगहीणसुद्धचरणमि ।
केवलदुगिसायेग, सेसावधोहपावस्स ॥ १६६ ॥

टीका—नरउरलसयोपदुगवयर इत्यादि ॥ तत्र पूर्वगाथोक्तासुमार्गणासुमन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रिकलक्षणासुनरद्विगति नरगतिनरानुपूर्वीलक्षणनरद्विक औदारिकशरीरौदारिकांगोपांगलक्षण औदारिकद्विक तथा उद्योतातपलक्षण उद्योतद्विक वज्र-

ऋषभनाराचसंहननआयुर्द्विकमनुष्यायु तिर्यगायरूपप्रकृतिनवक-त्यज्यते तदात्रयस्त्रिंशत्शेषामेदा बंधेभवंति। सुक्ष्मचरणमिइतिसूक्ष्म अकषायचरणचारित्र शुद्धचारित्र यथाख्यातलक्षण तथा केवलद्विकि केवलज्ञानदर्शने पुण्यप्रकृतिसंबंधिनीएकासाताएवबंधेभवंति। इ-त्युक्तपुण्यप्रकृतिद्वारसेसाबंधोइतिशेषाबंधेमार्गणासुबंधस्वामित्वे। पुण्यप्रकृतिन शेषाउद्वरितसर्वयासापापस्यसर्वयाज्ञेया, नरकगतौपुण्य-स्य चतुस्त्रिंशतपापस्यएकसप्तति उभयमीलनेजातपंचोत्तरशत अ-त्रनरकस्यबंधेन एकोत्तरशत तत्किमित्याह अवर्णादिचतुष्क पुन्यपापयोर्मध्येउभयग्रहणात् जीवभेदेचतद्वयसंख्यात्पंचोत्तरशत-भवति। एवसर्वत्रज्ञेय तिर्यग्गतौ मनुष्यगतौ पंचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्टये मत्याद्यज्ञानत्रये अविरतौचक्षुर-चक्षुर्दर्शनेकृष्णादिलेश्यात्रये भव्ये अभव्ये मिथ्यात्वेसंज्ञि असंज्ञि-आहारकलक्षणासु मार्गणासुद्व्यशीति पापस्य, देवगतौतेजोले-श्यायांत्रिसप्तति, जातिचतुष्टये स्थावरपंचकेएकोनाशीति, मत्या-दिज्ञानत्रये अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके मिश्रेचतुश्चत्वारिं-शत्, मन पर्यवज्ञाने सामायिकादिचारित्रत्रये षट्त्रिंशत्, सूक्ष्म-संपरायेचतुर्दश, केवलज्ञान केवलदर्शनयथाख्यातेन, देशविरतौ-चत्वारिंशत्, पद्मलेश्यायाएकोनसप्तति, शुक्ललेश्यायाएकोनसप्तति, सास्वादनेसप्तषष्टि, अनाहारकेएकोनाशीति, इतिवाच्यइत्युक्त-पापप्रकृतिद्वारम् ॥ १६६ ॥

टबार्थ —मनुष्य २ औदारिक २ उद्योत २ वज्रऋषभ-नाराचसंघयण १ मनुष्य तथा तिर्यंचनो आऊखो एटला विना ३३ नो बंध छे शुद्धचारित्रयथाख्यात तथा केवलद्विगने विषे एक सातानो बंध छे शेष पुण्यप्रकृति जे मार्गणा कही तेहथी

शेष रही जे मार्गणाना बधनी प्रकृति ते पापप्रकृति मार्गणाये जाणवी ते सर्व यथाक्रमी जोज्यो ॥ १६६ ॥

अपरियत्तापयडी, सुहमेचउदसतहाअहरकाए।
केवलदुगेअभावो, सासणमीसेअजिणमिच्छा॥१६७॥

अपरियत्तापयडी इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयपचकातरायपचकदर्शनावरणीयचतुष्टयरूपा सूक्ष्मसपरायेचतुर्दश, तथा यथाख्याते केवलद्विके अपरावर्त्तानिबध्यते । तथा सास्वादनेमिश्रेअजिणमिच्छाजिननामामिथ्यात्वविनासप्तविंशति अपरावर्त्तानिबधेभवति॥१६७

टबार्थ—हवे परावर्त्तमानप्रकृति कहे छे परावर्त्तमानप्रकृति १४ छे, सूक्ष्मसपराय गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ५ अतराय ५ तथा यथाख्यातचारित्रे केवलज्ञाने केवलदर्शने परावर्त्तप्रकृतिनो बध नथी सास्वादन गुणठाणे मिश्र गुणठाणे जिननाम तथा मिथ्यात्व विना २७ परावर्त्तमाननो बध छे ॥ १६७ ॥

तिरिजाइचउसुथावरि अन्नाणअभवेअसन्निमिच्छेसु।
जिणविणुनाणचउक्के, ओहिदसेतिसम्मम्मि ॥१६८॥

टीका—तिरिजाइचउसुथावरि इत्यादि ॥ तिर्यग्गतौजातिचतुष्के स्थावरपचके अज्ञानत्रिके अभव्येअसज्ञिमार्गणाया मिथ्यात्वेजीणविणु, जिननामविनाअष्टाविंशति बधेभवति । नाणचउक्के ज्ञानचतुष्के मत्यादिके अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके॥१६८

टबार्थ—तिर्यचगति १ जाति ४ एकेंद्रिय १ बेंद्री २ तेंद्री

३ चौरिंद्री ४ थावर ते मार्गणाये अज्ञान ३ मार्गणाये अभव्य मार्गणाये असंज्ञीमार्गणाये मिथ्यात्वमार्गणाये जिननाम विना २८ अपरावर्त्तमानतो नव छे, ज्ञान ४ मार्गणाये अवधिदर्शन मार्गणाये उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए तीन समकित मार्गणाये चारित्र ३ सामायिकादि ॥ १६८ ॥

चरणतिगदेसविरए, मिच्छविणासेसएसुगुणतीस ।
अपरियत्तसेसयाओ, परावत्ताओवधति ॥ १६९ ॥

टीका—चरणतिग इत्यादि ॥ चारित्रत्रिके सामायिकादिलक्षणेदेशविरतौ मिथ्यात्वविनाऽष्टाविंशति अपरावर्त्तमाना नवेभवति । सेसयासुइतिशेषकासु अनुक्तमार्गणासु एकोनत्रिंशत्अपरावर्त्तमाना नवेभवति अपरिपतिसेसाओइतिअपरावर्त्तमानत शेषा परावर्त्तमाना नवेभवति इतिज्ञेय ॥ अथविपाकचतुष्टयेकृष्णादिलक्षण पूर्वव्याख्यातस्वरूपतदेवमार्गणासुविभजनाह ॥ तत्रप्रथमक्षेत्रविपाकिनीरानुपूर्वीश्चतस्रोदर्शयति ॥ १६९ ॥

टबार्थ—देशविरति १ एटली मार्गणाये मिथ्यात्व विना २८ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे छे शेषमार्गणाये २९ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे ए परावर्त्तमान कही छे, तेहथी शेष रही जे बधनी प्रकृति ते परावर्त्तमान जाणवी ते यत्रकथी जोई लेज्यो ते यत्रकमे सर्व लाभे छे ॥ १६९ ॥

मणवयणकेवलदुगे, मणनाणेचरणछक्किचरकुम्मि ।
मीसाहारिपुवि, उदओनोदुन्निअमणेसु ॥ १७० ॥

टीका—मणवयणकेवलदुगे इत्यादि ॥ मनोयोगमार्गणाथा

वचनयोगमार्गणाया केवलज्ञाने केवलदर्शने तथा मन पर्यवज्ञाने सामायिकादिदेशविरतिपर्यंतेचारित्रषट्के चक्षुर्दर्शनेमिश्रेआहारकमार्गणाया पूर्वोउदयोनोइतिनास्तिएतन्मार्गणासु पर्याप्ताऽवस्थायाप्राप्यमाणत्वात्, अमणेसु असज्ञिमार्गणाया द्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्मनुष्यरूपेआनुपूर्व्यौउदयेप्राप्येते गतिद्वयेएवामनस्कत्वात् ॥ १७० ॥

टबार्थ—हवे कर्मना विपाक ४ क्षेत्रविपाक २ च्यार आनुपूर्वि तेहना उदय ६२ मार्गणाये कहे छे मनयोग १ तथा वचनयोग २ तथा केवलद्विक १ केवलदर्शन २ मनपर्यवज्ञान १ चारित्रषट्क ६ सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहार ३ सूक्ष्मसपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ चक्षुदर्शन १ मिश्रदृष्टि १ आहारक १ मार्गणाये एटली मार्गणाये आनुपूर्वीनो उदय नथी, जे कारणे आनुपूर्वीनो उदय अनरालगति वहता ते होवे, ते अनरालगतिमे ए मार्गणा न होवे, असज्ञीमार्गणाये बे आनुपूर्वीनो तिर्यचानुपूर्वी १ तथा मनुष्यानुपूर्वीनो उदय छे ॥ १७० ॥

वेएतेउतिगम्मि, सासणिपुव्वितिगचचउजाई ।
गईथावरेसुएगा, सेसासुपुव्विचउउदओ ॥ १७१ ॥

टीका—वेएतेउ इत्यादि ॥ वेदत्रये आनुपूर्वीत्रिकउदयेभवति । तत्रपुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्व्या अनुदयेशेषास्तिस्र, नपुसकवेदेदेवानुपूर्व्यनुदयेशेषास्तिस्र आनुपूर्व्य उदयेभवति तेउतिगइतितेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृषुलेश्यासु तथा सास्वादनेचनरकानुपूर्व्या अभावे आनुपूर्वीत्रिकउदयेप्राप्यते चशब्द पूर्वपरामर्शार्थ एकेंद्रियादिजातिचतुष्टये स्थावरपचकेएकाआनुपूर्वी-

उदयेभवति । तत्रजातिचतुष्के स्थावरपचके एकातिर्यगानुपूर्वी-प्राप्यते । गतिचतुष्टयेतुनरकेनरकानुपूर्वी देवेदेवानुपूर्वी मनुष्ये-मनुष्यानुपूर्वी तिरश्चितिर्यगानुपूर्वी उदयेभवति, शेषासु मार्गणासु पुनिचउउदओपूर्व्य श्चतस्र अपिउदयेप्राप्यते ।। इत्युक्तक्षेत्रवि-पाकीद्वार ।। १७१ ।। अथभवविपाकिआयुश्चतुष्टयमार्गणासुदर्श-यन्नाह ॥

टबार्थ—तीन वेदमध्ये तीन आनुपूर्विनो उदय छे, तिहा पुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्विनो उदय नथी, नपुसकवेदे देवानु-पूर्विनो उदय नथी तेजोलेश्या १ पद्मलेश्याने विषे शुक्ललेश्याने विषे नरकानुपूर्वि विना तीन आनुपूर्विनो उदय छे सास्वादनमध्ये पण नरकानुपूर्वि विना तीन आनुपूर्विनो उदय छे जाति ४ एकेन्द्रियादी ४ तथा गति ४ मध्ये थावर पाच मध्ये एक आनुपूर्विनो उदय छे च्यार गतिमध्ये पोतानी गति नेटामनो आनुपूर्विनो उदय जाणवो बीजा सर्वने तिर्यंचानु-पूर्विनो उदय छे शेष मार्गणाने विषे आनुपूर्वि ४ नो उदय छे ॥ १७१ ॥

मणवयणेचउआउ, मणपज्जवकेवलेयपुणचरणे ।
मणुआउदेसिसतिरि, सेसापुव्विवआउआ ॥१७२॥

टीका—मणवयणे इत्यादि ॥ मनोयोगे वचनयोगे आयु-श्चतुष्टयउदयेभवति, चतुर्गतिषुमनोवाग्योगस्यसद्भावात् । तथामन पर्यवज्ञाने केवलद्विके चारित्रपचके मणुआउइति एकमनुष्यायु उदयेभवति । देसीनामदेशविरतीसतिरिक्तिदेवमनुजायु तिर्यगायु-र्युक्त आयुर्द्वयउदयेप्राप्यते, शेषासुमार्गणासुएकपचाशल्लक्षणासु-

पुर्विव, आनुपूर्वीवत्आयुर्वत्उदयेवक्तव्य इत्युक्तभवविपाकिद्वार ॥ ॥ १७२ ॥

टबार्थ —मनोयोग तथा वचनयोगमध्ये च्यार आऊखानो उदय छे मन पर्यवज्ञानमध्ये केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ चारित्र पाचने विषे एक मनुष्यायुनो उदय छे देशविरतिमध्ये मनुष्यायु १ तथा तिर्यंचायुनो उदय छे शेष मार्गणाये जिम आनुपूर्विनो उदय छे, तिमहीज आऊखानो उदय जाणवो॥१७१

जिअपुग्गलाविवागा, पयडीओउदयसभवानेया ।
भगाणचपमाण, नेयवसभवपप्प ॥ १७३ ॥

टीका—जिअपुग्गलाविवागा इत्यादि ॥ जीवविपाका अष्टसप्ततिपुद्गलविपाका षट्त्रिंशत्प्रकृतय उदयसभवाउदयस्वामित्वसभवाज्ञेया साचसुखावबोधार्थलिख्यते तत्रजीवविपाकेनारकेएकोनषष्टिस्तिरश्चिनिसप्तति इत्यादि पुद्गलविपाके अष्टादश तिरश्चिनिसप्तति, देवगतौअष्टादश मनुष्येएकत्रिंशत् इत्यादि योज्य, उदयस्वामित्वमोघत ज्ञेयअथमार्गणासुकर्माष्टकभगान्दर्शयन्नाह ॥ भगाणचभगकानाप्रमाणज्ञानयसभवप्राप्ययत्रमार्गणायायेभगका सभवति तेयथायोगवाच्या ॥ १७३ ॥

टबार्थ —जीवविपाकि तथा पुद्गलविपाकी प्रकृति सर्व उदयीयी सभव घटे तिम जाणवो जीवविपाकी ७८ छे, नारकीने ५२ तिर्यंचमध्ये ७३ मनुष्यमध्ये ६९ देवतामध्ये इम सर्वत्र जोडी लेज्यो, १ पुद्गलविपाकी नारकीने १८ तिर्यंचने ३० मनुष्यने ३१ देवताने १८ इत्यादि यथासभव जोई लेवो हवे

वासठीमार्गणाये भगानो प्रमाण जिहा जिम सभवे तिहा ते कहेवा सवेधादिक ग्रथथी विस्तारे जोई कहेवा ॥ १७३ ॥

नाणतरायदोदोभगा, इकारदसणावरणे ।
गोएसगवेयणीए, अडआउम्मिअअडवीसा ॥१७४॥

टीका—नाणतरायदोदोभगा इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयेद्वौ-भगौपचानाञ्च पचानाउदय पचानामेवसत्ताइतिप्रथम, सूक्ष्म-सपराययावत् पचानाउदय पचानासत्ताइतिद्वितीय उपशातमोह-क्षीणमोहयावतप्राप्यतेएवमतरायस्यापिद्वौभगा प्रथमभगोअभ्या-नाअनाद्यनन्त भव्याना अनादिसातउपशातमोहात् पतिना-नासादिसान जघन्यन अतमुहूर्तउत्कर्षत देशोनपुद्गलपरावर्त-द्वितीयभग सादिसान्तोजघन्यतएकसमये उपशातेगतस्य समयातरे आयु क्षयात् पचविधबधकत्वेनभवनात्उत्कर्षत अतर्मुहूर्त्तइति-दर्शनावरणीयस्यनवभगा तद्दर्शयन्नाहसप्ततिभाष्यकार नवस्सय-सतस्सयपन्नइठाणाणितिन्नितुल्लाणि उदयठाणाणिदुवेचउपणगदसनाव-रणे ॥ १ ॥ व्याख्यापिश्रीमलयगिरिवाक्यात् दर्शनावरणीयाख्ये-द्वितीयकर्मणिनवरयसत्ताया परस्परतुल्यानितीणिप्रकृतिस्थानानि-तद्यथानवपदचतस्र तत्रसर्वप्रकृतिसमुदायोनवस्थानाद्विनिद्राहीना पट्एताश्चपनिद्राप्रचलाहीनाश्चतस्र तत्रनवप्रकृत्यात्मकनवस्थान-मिथ्यात्वेसास्वादनेतच्चमिथ्यात्वेअभव्यानाअनाद्यपर्यवसान कदाचि-दपि यवच्छेदाभावात्, भव्यानधिकृत्यानादिसपर्यवसान कालातरे-व्यवछेदसभवात् सम्यक्त्वात् प्रतिपत्यमिथ्यात्वगतानासादिस-पर्यवसानतच्चजघन्यतोअतर्मुहूर्त्तकालयावत्उत्कर्षत अपार्द्धपुद्गल-परावर्त्तपदप्रकृत्यात्मक षडस्थानसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकादार-

म्यापूर्वकरणसप्रथमभागपावत् तच्चजघ यतोऽनमुहूर्तकालउत्कर्षतो-
द्वेषट्पष्टिसागराणासम्यक्त्वस्यापातरालेसम्यग्मिथ्यात्वातरितस्यैना-
वन्तकालतथास्थानसभवात्ततत ऊर्द्धतुकश्चित्क्षपकश्रेणिंप्रतिपद्यते-
कश्चित्पुनर्मिथ्यात्वमिथ्यात्वेचप्रतिपन्नेसतिअवश्यनवविधोबध चतु
प्रकृत्यात्मकतुबधस्थानमपूर्वकरणद्वितीयभागादारभ्यसूक्ष्मसपरायपा-
वत्जघन्येनैकसमयउत्कर्षत अतर्मुहूर्तएकसमयपावत्कथप्राप्यते-
इतिचेत्उच्यते । उपशमश्रेण्यामपूर्वकरणस्याद्वितीयभाग प्रथम-
समयेचतुर्विधबधमारभतेअनतरसमयेकश्चित्कालकरोतिकालचकृत्वा-
दिवगत सन्अविरतोभवति, अविरतत्वेचषड्विधोबधइत्येकसाम-
यिकीचतुर्विधस्थाऽवस्थिति अतर्मुहूर्तंतुगुणस्थानक्रमेणज्ञेय ।
तथानवप्रकृत्यात्मक सत्तास्थानदर्शनावरणस्यकालमधिकृत्यद्विधा-
अनाद्यपर्यवसित अभव्याना । अनादिसपर्यवसित भव्याना,
सादिपर्यवसानतुनभवति, नवप्रकृत्यात्मकसत्तास्थानव्यवच्छेदोहि-
क्षपकश्रेण्याभवति, नचक्षपकश्रेणिन प्रतिपातोभवति, एतच्चस-
त्तास्थानमुपशमश्रेणिमधिकृत्योपशातमोहगुणस्थानकयावदप्राप्यते,
क्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थानकस्य प्रथम-
भागतथापट्प्रकृत्यात्मकसत्तास्थान जघन्येनोत्कर्षेणचातर्मुहूर्तप्रमा-
णतच्चानिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थानकस्याद्वितीयभागादारभ्यक्षीणमो-
हगुणस्थानकस्याद्विचरमसमययावत् अवसेय, चतु प्रकृत्यात्मकत्वे-
कसामायिकक्षीणकषायचरमसमयभावित्वादितिउदयस्थानेपुनर्द्वे भव-
त । तद्यथाचतस्र पचचतश्चतस्रश्चक्षुर्दर्शनावरणाचक्षुर्दर्शनाव-
रणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूपा एतासाचउदयोध्रुवोदय
इतिएकप्रकृतिस्थानएतासुचचनसुमध्येनिद्रादीना पचानाप्रकृती-
नामव्याद यतमस्याप्रकृतौप्रक्षिप्तायापचविध उदय नहिनिद्राद्वि-
निरूपसमकालउदयेभवति एकसमयएकजीवस्यएकाएवनिद्राउदये-

भवति ॥ तदेवमुक्तानिदर्शनावरणीयस्यबन्धोदयसत्तास्थानानि । भगाइक्कारदसणावरणे, दर्शनावरणीयेकर्मणिएकादशभगाभवतितत्प्रतिपादिकागाथामाह ॥ थीयावरणेनवबधएसुचउपचउदयनवसता, चउबधे चैवचउबधुदयेचलसाय ॥ १ ॥ उबरयबधचउपणनवसचउरुदयछच्चउसता ॥ द्वितीयावरणेदर्शनावरणेनवबधकेषुमिथ्यादृष्टिसास्वादनेषुचउपचउदयत्तिउदयश्चतुर्विध पचविधोवातनचतुर्विधश्चक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूप सएवनिद्रापचसत्कान्यतमप्रकृतिप्रक्षेपात्पचविध सत्तामधिकृत्यपुन प्रकृतिस्थाननवनवप्रकृत्यात्मकनदेवनवविधबधकेषुद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथानवविधोबध चतुर्विध उदय नवविधसत्ताएवविकल्पोनिद्रोदयाभावेनिद्रोदयेतुनवविधोबध पचविध उदय नवविधासत्ताछच्चउबधेचेवति, षड्विधबधेचचतुर्विधबधेचएवपूर्वोक्तप्रकारेणउदयसत्तास्थानानिवेदित यानिइदमुक्तभवतियेषड्विधबधका सम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्ता कियत्कालमपूर्वकरणाश्चतेषाचतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतेनद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथाषड्विध बधश्चतुर्विध उदयोनवविधासत्ताअथवाषड्विधोबध पचविधोदय नवविधासत्ता एतौचद्वौविकल्पौक्षपकमुक्त्वा ऽन्यत्रसर्वत्रापिप्राप्यतेक्षपकेत्वेकएवविकल्पस्तद्यथाषड्विधोबध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताक्षपकस्यहिअत्यतविशुद्धत्वेननिद्राप्रचलयोर्नोदय सभवति तदुक्तजिनवल्लभसूरिसत्ककर्मग्रथे, निद्दादुगस्सउदउखीणमखवगेपरियज्ज तथाचतुर्विधबधकेतुकियत्कालमपूर्वकरणमनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायेषुचोपशमश्रेणिंप्रतीत्यचतुर्विधबध चतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताक्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरुदयश्चतुर्विध एवकारणमत्रप्रागेवोक्तकेचित्पुन क्षपकक्षीणमोहेष्वपिनिद्राप्रचलयोरुदयमिच्छन्तितत्कर्म-

प्रकृत्यादिग्रंथे सहविरुद्धयतेइत्युपेक्षते, यावच्चक्षपकश्रेण्यामपिस्त्यानर्द्धित्रिकनक्षीयते तावत्सत्तानवविधा स्त्यानर्द्धित्रिकेतुक्षीणेषड्विधा-तथाचाहचउन्नउदयेऽत्तसायत्ति, चतुर्विधेबंधेचतुर्विध उदय अनिवृत्तिबादरसंख्येयैर्भागेर्गतिपरत स्त्यानर्द्धित्रिकेक्षीणेषट्विधासत्ताएषचविकल्पस्तावत्प्राप्यतेयावत्सूक्ष्मसंपरायाद्धायाश्चरमसमयपरतस्तुनप्राप्यतेबंधाऽभावात्तदेवचतुर्विधबंधकस्यत्रयोविकल्पास्तद्यथाचतुर्विधोबंध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताएषउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्यावायावत्स्त्यानर्द्धित्रिकनक्षीयतेचतुर्विधोबंध पंचविध उदय नवविधासत्ताएषउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्यातुपंचविधोदयस्यासंभवात् तथाचतुर्विध बंध चतुर्विध उदय षड्विधासत्ताएषविकल्प क्षपकश्रेण्यास्त्यानर्द्धित्रिकक्षयानंतरंजघन्येय उत्तरपदेइत्यादिउपरतेव्यवच्छिन्नेबंधेचतुर्विध पंचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतौचद्वौविकल्पौउपशांतमोहगुणस्थानकेप्राप्येते उपशमश्रेण्याहिनिद्राप्रचलयोरुदय संभवतिस्त्यानर्द्धित्रिकचनक्षयमुपगच्छति, ततश्चतुर्विध पंचविधउदयोनवविधासत्ताप्राप्यतेतथाचतुर्विध उदय षड्विधासत्ताएषविकल्प क्षीणकषायद्विचरमसमयादर्वागेवप्राप्यते। तथाचतुर्विध उदय चतुर्विधासत्ताएष विकल्प क्षीणकषायस्यचरमसमयेभवतिनिद्राद्विकस्यसत्तायाक्षपकत्वात् तदेवदर्शनावरणेसर्वसंख्ययाएकादशविकल्पा, यदिपुन क्षपकक्षीणकषायेष्वपिनिद्राप्रचलयोरुदयइष्यते तर्हिचतुर्विधोबंध पंचविध उदय षड्विधासत्ताबंधाभावेपंचविध उदय षड्विधासत्ताइत्येतौद्वाविकल्पौअधिकौप्राप्येते इतिनवोदशज्ञातव्या साप्रतवेदनायुर्गोत्रेषु संबंधविकल्पोपदर्शनार्थमाहगोएसगवेयणीये । तथागोत्रेसामान्येनएकबंधस्थानतथाउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रबंधापरस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्बंधाऽभावात् उदयस्थानमप्येकतदपिद्वयोरप्यनरत्परस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्द्वयोरुदयाऽ-

भावात्द्वेसत्तास्थाने, द्वेएकचउच्चैर्नीचैर्गोत्रेसमुदितेद्वेतेजस्कायिक-वायुकायिकबधायाउच्चैर्गोत्रसत्तायाउद्वलितेएकअथवाअयोगिद्विचरम-समयेनीचैर्गोत्रसत्तायाक्षीणायाएकउच्चैर्गोत्र, सप्रतिसवेधउच्यतेनी-चैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्योदय नीचर्गोत्रेसत्ताएषविकल्प तेज-स्कायिकवायुकायिकेषुलभ्यते, तद्भवाद्बहिस्तेषुवाशेषजीवेष्वेकाद्वि-त्रिचतुस्तिर्यग्पचेंद्रियेषुक्रियत्कालनीचैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्यो-दय उच्चैर्नीचगोत्रेसत्ताअथवानीचैर्गोत्रस्यबध उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रेसत्ताएतौचद्वौविकल्पौ मिथ्यादृष्टिषुसास्वादनेषुवानस-म्यग्मिथ्यादृष्ट्यादिषुतेषानीचैर्गोत्रबधाभावात् ऽतथाउच्चैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्योदय उभयस्मिन्सत्ताएषविकल्प मिथ्यादृष्टिगुणस्था-नकादारभ्यदेशविरतिगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत । परतोनी-चैर्गोत्रस्योदयाऽभावात् तथा उच्चैर्गोत्रस्यबध उच्चनीचगोत्रेसत्ताएष विकल्पोमिथ्यात्वादारभ्यसूक्ष्मसपरायगुणस्थानयावत् नपरत परतो-बधाऽभावात्बधाभावेतुउच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचगोत्रेसत्ताएषविक-कल्प उपशातमोहगुणस्थानकादारभ्यायोगिकेवलिद्विचरमसमय यावदवसेय उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्गोत्रेसत्ताएषविकल्प अयोगि-केवलिचरमसमयेभवतितदेवमेतेगोत्रस्यसर्वसख्ययासप्तभगा ॥ अ-थवेदनीयस्याष्टौभगा तत्रवेदनीयस्यसामान्येनैकबधस्थानतद्यथासा-तमसातवाद्वयो परस्परविरुद्धत्वेनयुगपत्बधाऽभावात् उदयस्थानम-प्येकतद्यथासातमसातवाद्वयोर्युगपदुदयाऽभावात्। सत्तास्थानेद्वेतद्य-थाद्वेएकचयावत् अयोगिद्विचरमसमयादर्वाक द्वेएवसत्तेतत चरम-समयेएकस्या अन्यतरस्याक्षीणायाएकइति सप्रतिसवेध उच्यतेअ-सातस्यबध असातस्यउदय सातेऽसातेसत्ताअथवाअसातस्यबध सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यादृष्टिगुणस्थानका-त्प्रमृतिप्रमत्तगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत परत असातस्यब-

घाऽभावात् तथा सातस्यवव असातस्योदय सातासातेसती अथवा सातस्यवव सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यात्वादारभ्यसयोगिकेवलिचरमसमययावत्प्राप्येनेनपरत एतेवत्रभगा, अवव-भगा, असातस्योदय सातासातेसतीसातस्योदय साताऽसातेसतीएतौद्वौविकल्पौअयोगिद्विचरमसमययावत्। तथाअसातस्यउदय असातस्यसत्तागतसुकुमालादीनामिवअयोगिचरमसमयेभवति। अथवा सातस्योदय सातस्यसत्ताएपविकल्प तीर्थंकरादीनाअयोगिचरमसमये एतौद्वौविकल्पौअयोगिचरमसमये एकमेवसमयभवति,सर्वसर्वयावेदनीयस्याष्टौभगास्तथाआयुषिसामान्येनएकत्रस्थानउदयस्थानमप्येक सत्तास्थानेद्वेतद्यथाद्वेएकचतुर्णामपि यतमनुष्यावदन्यतरपरभवायुर्नबध्यते परभवायुषिबध्यमानेद्वेयावदन्यत परभवेनोपपद्यतेतावद्द्वेसती-सप्रतिसयेत उच्यते तत्रायुषस्तिस्र अवस्थास्तद्यथापरभवायुर्बधकालात् पूर्वावस्थापरभवायुर्बधकालावस्थापरभवायुर्बधोत्तरकालावस्थाघनवनैरयिकस्यपरभवायुर्बधकालात् पूर्वनरकायुष उदयोनरकायुष सत्ताएपविकल्पआद्येषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुशेषगुणस्थानकस्य नरकेष्वसभवात् परभवायुर्बधकालेतिर्यगायुषोबधोनरकायुषउदयोनारकतिर्यगायुष सत्ताएपविकल्पोमिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्द्वयोरेवाद्ययोर्गुणस्थानकयोर्भवति। अत्रैवतिर्यगायुषोबधसभवात्। अथवा मनुष्यायुषोबधोनारकायुष उदय नारकमनुष्यायुष सत्ताएपविकल्प मिथ्यात्वसास्वादनाऽविरतिसम्यग्दृष्टिषुबधोत्तरकालनरकायुष उदय नारकतिर्यगायुष सत्ताएपविकल्प आद्येषुचतुर्ष्वपिगुणस्थानकेषुतिर्यगायुर्बधानतरकस्यापिसम्यक्त्वे सम्यग्मिथ्यात्वेवागमनात्। अथवा नारकायुष उदय मनुष्यनारकायुष सत्ताइहदेवानारकायुर्भवप्रत्ययादेवनबध्नाति तत्रोत्पत्त्यभवात् ॥ यदुक्त ॥ देवानेरइयादेवेसुनारकेसुविभउववज्जति। अतस्तत्प्रत्ययविकल्पाभा-

वात् सर्वसरयपापचैवविकल्पाभवति । एवदेवानामपिपचविकल्पा तद्यथादेवायुपउदय देवायुप सत्ता इत्यादि ॥ तिर्यगायुप उदय तिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प आद्येपुपचसुगुणस्थानकेपुशेषगुणस्थानकस्य तिर्यंशुअसभवात्एपविकल्प परभवायुर्बंधकालेतुनारकायुप बध तिर्यगायुप उदय नारकतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेरेवतिर्यगायुप बध तिर्यगायुप उदय तिर्यग्तिर्यग्आयुप सत्ता ॥ एप विकल्प मिथ्यात्वसास्वादनस्य अथवा मनुष्यायुप बध तिर्यगायुपउदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवासम्यग्दृष्टेर्देशविरतस्यातिरश्च देवायुपएवबधात्, अथवा देवायुप बधस्तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्पोमिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यअविरतसम्यग्दृष्टे देशविरतस्यवानसम्यग्मिथ्यादृष्टे तस्यायुर्बंधाभावात् ॥ बधानतरतिर्यगायुप उदय नारकतिर्यग्सत्ता इति प्रथम । तिर्यगायुप उदयस्तिर्यग्तिर्यगसत्ता इतिद्वितीय । तिर्यगायुप उदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ता अथवा तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प प्रथममिथ्यात्वादिषु आयुर्बंधकत्वानत परगुणस्थानकारोहवता पचमगुणस्थानकयावत्भवति, सर्वसरयपातिरश्चानपविकल्पाश्चनसुपुगतिषु तिरश्चामुत्पादसभवात । तथा मनुष्यायुपउदय मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अयोगिकेवलिनयावत् तथा नरकायुपोबध मनुष्यायुप उदय नारकमनुष्यायु सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेर्भवति । तथा तिर्यगायुपोबध मनुष्यायुप उदय स्तिर्यग्मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्य वा तथा मनुष्यायुप बधोमनुष्यायुप उदय मनुष्यमनुष्यायुप सत्ताएप विकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवादेवायुप बध मनुष्यायुप उदय देवमनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अप्रमत्तगुणस्थानकयावत् एतेचत्वारोविकल्पा

परभवायुर्बंधकाले नवेतु पवच्छिन्नेमनुष्यायुषउदयोनारकमनुष्यसत्ता-मनुष्यायुष उदय तिर्यग्मनुष्यसत्तामनुष्यायुष उदय मनुष्य-मनुष्यायुष सत्ताएतेत्रयोविकल्पा अप्रमत्तगुणस्थानयावत् । आ-युर्बंधानन्तरगुणस्थानारोहात मनुष्यायुष उदय देवमनुष्यायुष सत्ताएयविकल्प उपशांतमोहयावत्प्राप्यते, देवायुषिबद्धेप्युपशम-श्रेण्यारोहसंभवात सर्वसंख्यामनुष्याणा नवभंगास्तदेवजायुष सर्वसंख्याअष्टाविंशतिभंगा ॥ इत्येवगाथासुभंगका संक्षिप्तोऽवसेया ॥ १७४ ॥

टबार्थ—ज्ञानावरणीना बे भागा छे अंतरायना बे भागा छे दर्शनावरणीना ११ भागा छे गोत्रना ७ भागा छे वेदनीकर्मना ८ भागा छे आऊखा कर्मना २८ भागा छे हवे सर्व कर्मना भागा मार्गणाये कहे छे ॥ १७४ ॥

नाणंतरायतिगयोग, भंगोसव्वासुमग्गणासुव (सेढि-यासुदुग) ।
केवलदुगेअभावो, वेयणसंताअहरकाए ॥१७५॥

टीका—अथज्ञानावरणीयांतरायभंगान्मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नाणंतरायतिगयोगइत्यादि । ज्ञानावरणीयस्यतथाअंतरायस्यत्रिक-संयोगज भंग पंचविधबंध पंचविधउदय पंचसत्तालक्षण सर्वा-सुमार्गणासुप्राप्यते, तथासेढिया श्रेणि उपशमक्षपकलक्षणान्तर्पर्यंत उपशांतमोहक्षीणमोहगुणस्थानकपर्यंतयामार्गणामनुष्यगति १ पं-चेंद्रियजाति १ त्रसकाय १ योगत्रिक ३ भव्यादि ज्ञानचतुष्टय-चक्षुरादिदर्शनत्रिकशुक्ललेश्याभव्यउपशमसम्यक्त्वक्षायिकसम्यक्त्व-संज्ञिआहारकलक्षणाएकोनविंशतिमार्गणासु दुगतिज्ञानावरणांतराय-

स्यद्वौभंगौप्राप्येते । तथाकेवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने ज्ञानावरणातरायस्यभगानभवति, यथाख्यातेवेदनउदय सतासत्ता इत्यनेनपचविधउदय पचविधसत्तालक्षण एकएवभग प्राप्यते, भगभावनागुणस्थानक्रमतोज्ञेया ॥ १७५ ॥ अथदर्शनावरणीयकर्मण भगान्मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

टबार्थ—ज्ञानावरणीय तथा अतरायकर्मनो पाचनो बध, पाचनो उदयनी सत्ता एत्रिकसयोगी एकभगो सर्वमार्गणाने विषे, केवलज्ञान १ केवलदर्शनने विषे ज्ञानावरणीय अतरायनो भग नथी, यथाख्यातचारित्रमध्ये ज्ञानावरणीय तथा अतराय ए बे कर्मनो पाचनो उदय पाचनी सत्तानो एक भागो छे ॥१७५॥

नाणचउओहिदसे, खायगसम्मेयदसणावरणा ।
नवभगपढमदुत्रिणा, वेयकसाएसुसगभगा ॥१७६॥

टीका—नाणचउइत्यादि ॥ ज्ञानचतुष्टयेमत्यादिलक्षणेअवधिदर्शनेक्षायिकेसम्यक्त्वेदर्शनावरणीयस्यनवभगा प्राप्यते, प्रथमेद्वेनवविधबधप्रत्ययेतेमिथ्यात्वसास्वादनगुणस्थानकेसभवात् । एतासुमार्गणासुतदसभवात्नभवति । पदविधबधत उपरिसर्वेभवति । तथावेदत्रिकेकषायचतुष्टयेसप्तबधभगा बन्धोपरताभगा चत्वारोनभवतितेचउपशातमोहेक्षीणमोहेभवतितयोश्चतनाभावात॥१७६॥

टबार्थ—ज्ञान च्यार मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय, अवधिदर्शने क्षायिकसमकिते ए मार्गणाये दर्शनावरणियकर्मना नव भगा पामीये । पहेला नव बध पाच उदय नव सत्ता १ तथा नव बध च्यार उदय नव सत्ता ए बे भागा विना नव भगा पामीये, वेद ३ कषाय ४ ए सात मार्गणाये सात भागा छे, अबधना च्यार भगा नथी ॥ १७६ ॥

सामाइयछेएपण, परिहारेदुन्निकेवलेनत्थि ।
उवसमिछगहरखाए, चउसुहमेतिन्निदुगदेसे॥१७७॥

टीका—सामाइयछेएपण इत्यादि । सामायिकचारित्रेच्छेदोपस्थापनीयचारित्रेषड्विधोबन्ध प्रत्ययोद्वौचतुर्विधबन्ध प्रत्ययाख्य एवपचभगा प्राप्यते । तथापरिहारविशुद्धौषड्विधबन्धसभवोद्वौकेवलद्विकेनस्त दर्शनावरणीयभगा उवसमिछग इतिउपशमसम्यगदर्शनेषड्भगास्तत्रद्वौषड्विधबन्धसभवौद्वौचतुर्विधबन्धसभवोद्वौअबन्धप्रत्ययौउपशातमोहगुणस्थानसभवौएवषड्भगा यथाख्यातेचत्वारोभगा अबन्धसभवा , सूक्ष्मसपरायेचतुर्विधबन्धप्रत्ययाख्य दुगदेसे देशविरतौषड्विधबन्धसभवौद्वौ ॥ १७७ ॥

टबार्थ—सामायिक १ छेदोपस्थापनीयने विषे पाच भागा छे । छविधबन्धना २ च्यारविधबन्धना २ च्यारविधबन्ध च्यारनो उदय छनी सत्ताए एक एव पाच भगा छे, परिहारविशुद्धि ने दर्शनावरणीयना २ भगा छे, छनो बन्ध पाचनो उदय नवनी सत्ता तथा छनो बन्ध च्यारनो उदय छनी सत्ता ए २ भगा छे, केवल २ ने विषे दर्शनावरणीयनो भागो नथी, उपशमसमकितमध्ये ६ भगा छे, छबन्धना च्यारबन्धना २ इग्यारया अबन्धना २ एव यथाख्यातचारित्रे अबन्धना च्यार भग छे। सूक्ष्मसपरायना तीन भगा छे २ उपशमना १ क्षायिकनो देशविरतिमध्ये छविध बन्धना २ भागा छे ॥ १७७ ॥

वेयगेमीसेएव, कायपणजाइचउअसन्निसु ।
मिच्छेसासाणेपुण, अभविनबधगादुन्नि ॥१७८॥

टीका—वेयगेमीसेएवइत्यादि ॥ अखडमरुकमणिन्यायेनद्वि-कपदअनुवर्त्तनीयवेदकसम्यक्त्वेमिश्रेदर्शनेएवदेशविरतिवन्पदविशेष-सभवाद्बौभगौ कायपणत्ति पृथिव्यादिकायपचके एकेंद्रियादिजाति-चतुष्टये असज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेसास्वादनेअभव्येनवविधबधसभ-वाद्बौभगौशेषगुणस्थानकानातनाऽसभवात् ॥ १७८ ॥

टबार्थ —वेदकसमकितमिश्रने एव छ बधना २ भागा छे। अज्ञान ३ लेश्या ५ ने विषे अनाहारकमार्गणाये देवनीगति १ नरकगति, तिर्यचगति, अविरतिमार्गणाये च्यार भगा छे, नव बधना २ छे, शेषमार्गणाये सर्व कहेना अगीयार भागा छे, दर्शनावरणीयना ॥ १७८ ॥

नवछबधाभगा, तिन्निअन्नाणपचलेसासु ।
अणहारतिगइअजये, चउरोसेसासुसव्वेवि ॥ १७९ ॥

टीका—नवछबधाभगाइत्यादि ॥ तिन्निअन्नाणत्तिअज्ञानत्रये-लेश्यापचकेकृष्णादिकेअनाहारकेनरकतिर्यग्देवगतौ अविरतिमार्ग-णाया नवविधबधसभवौद्वौ षड्विधबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा. शेषानतत्प्रत्ययगुणस्थानाऽभावात् । सेसासुइतिशेषासुमनुष्यगति पचेंद्रियसकाययोगनिकचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायामभव्ये सज्ञिमार्ग-णायाआहारकेदर्शनावरणीयस्यसर्वेऽपिभगाएकादशअपिभगा प्राप्यते ॥ इत्युक्तादर्शनावरणीयभगा ॥ १७८ ॥ अथवेदनीयभगान् मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

वेयणीएनरपणतस, खायगअणहारगेसुअडभंगा ।
केवलदुगिहरकाए, छसुहमेदुसेसिचउभगा ॥१७९॥

टीका—वेयणीएनरपणतस इत्यादि ॥ वेदनीयस्यभगा मनुष्यगतौपचेन्द्रिये त्रसकाये क्षायिकसम्यग्दर्शनेअनाहारकेअष्टौ-भगा प्राप्यते । केवलद्विकेयथाख्यातचारित्रेषट भगास्तद्वौभगौ-सातावसभवौचत्वारोभगा अबंधप्रत्यया एवंसूक्ष्मेसूक्ष्मसंप-रायेसातावसभवौद्वौभगौ सेसित्तिशेषासुगतिनिकइंद्रियचतुष्टयकाय-पचकयोगनिकवेदनिकमत्यादिज्ञानचतुष्टय अज्ञाननिकसंयमपच-कदर्शननिकलेश्यापट्कभव्यअभव्यक्षायिकवर्जसम्यक्त्वपचकसंज्ञिसं-ज्ञिद्विकाहारकलक्षणासुत्रिपचाशन्मार्गणासुचत्वारोभगा, तत्रद्वौ-असातावसभवौद्वौसातावसभवौएवचत्वारोभगाभवति, सर्वत्रद्वि-वचनेबहुवचनप्राकृतत्वात, शेषमार्गणासुभगसंभवाभावनागुणस्थान-शतकतोनेया ॥ १७९ ॥ उक्तावेदनीयभगा साम्प्रतमायुर्भगान्-दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ—वेदनीकर्मना ८ भागा छे, तेमध्ये मनुष्यगति १ पचेन्द्रियजाति १ त्रसकाय १ क्षायिकसम्यक्त्व १ अनाहारक मार्गणाये बदन । ागा छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रने विषे छ भागा छे सातानाबंधना २ अने च्यार अबंधना एव ६ सूक्ष्मसंपरायमध्ये बे भागा सातानाबंधना छे, शेष रही जे ५३ मार्गणा तेहने विषे ४ भागा छे असातानाबंधना २ सातावंधना २ एव ४ ॥ १७९ ॥

निरतिरिदेवेमणुएसु, पणनवपणनवगजाइचउगेसु ।
तिगथावरेपणभगा, सुरनारयभग(विणतिरिया)व-
ज्जाय ॥ १८० ॥

टीका—निरतिरि इत्यादि ॥ नरकादिगतौपचादिभगास्तत्र-नरकगतौपचभगास्तिर्यग्गतौनवभगादेवगतौपचभगामनुष्यगतौनव

भगा पूर्वोक्ताज्ञातव्या, एकेन्द्रियादिजातिचतुष्के पृथिव्यादिस्थावरत्रयेतिर्यगायुरुदयरूपा पंचभगा । सुरनारयत्ति देवायुर्नवसभवौद्वौनरकायु सभवौद्वौएतेचत्वारोवर्जनीया शेषा पंचतिर्यगप्रत्ययाभवन्ति ॥ १८० ॥

टबार्थ—आऊखाना २८ भागा छे, तेमध्ये नरकगतिमध्ये नरकायुना ५ भगा छे तिर्यंचगतिमध्ये तिर्यंचना ९ भगा छे, देवगतिमध्ये देवायुना ५ भागा छे, मनुष्यगतिमध्ये मनुष्यायुना ९ भगा छे, तथा जाति ४ थावर ३ पृथिवी अप्वनस्पतिमध्ये पंच भगा छे, तिर्यंचायु उदय तिरियंचायु सत्तानो १ तिर्यंचायुनव तिरियंचायु उदयेतिरि २ आयुसत्तानो मनुष्यायुनव तिरि आयु उदयनिरियमनुष्यसत्ता ३ तिरिउदय तिरिनिरिसत्तानिरि उदय मनुष्यनिरिसत्ता इहा देवताना २ नारकीना २ एव ४ भगावर्जित करवा ॥ १८० ॥

अनरातेउवाउ, केवलदुगिएगदेसविरयम्मि ।
वारसमणसामाईयतिगमि, छगरगईप्पभवा ॥१८१॥

टीका—अनरातेउवाउइत्यादि ॥ तेषुपंचसुमध्येनरायु प्रत्ययौद्वौतौवर्ज्यौ शेषास्त्रयोभगास्तेजस्कायवायुकायमार्गणायातिर्यग्प्रत्यया त्रयोभगा केवलद्विकेएकोनरायुरुदय नरायु सत्तारूपोभवति देशविरयम्मिदेशविरतौबारसइतिद्वादशभगा भवतितेचपंचतिर्यग्गतिप्रत्यया, पंचमनुष्यायु प्रत्यया, नरकतिर्यग्मनुष्यायुर्वर्ज्यमानास्त्रयस्त्रयोनप्राप्यंते । देशविरतौदेवायुरेवाध्यते । मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौ छगत्ति षड्भगामनुष्यायुरुदयरूपानारकतिर्यग्मनुष्यायुर्वर्जा नरायुरुदय नरायु सत्ता-

देवायुर्बंध नरायुरुदय देवनरायु सत्ताबधानतराश्चत्वारोऽपिएव-षट्भवति ॥ १८१ ॥

टबार्थ—तेऊवाऊकायने मनुष्यने जावो नथी तेमाहे तीन भगा छे। तिरिउदय तिरिसत्तातिरिबधतिरिउदयतिरि २ सत्ता २ तिरिउदयतिरितिरिसत्ताए ३ छे, केवलदुगने नरायुउदयनरायु सत्ता ए एक भगो छे देशविरतिमध्ये १२ भगा छे मनुष्यना ८ तिर्यंचना ६ भगा छे बधमध्ये देवायुबधे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धिमध्ये आऊखाना ६ भगा छे मनुष्यायुना देवायुबध छे तेमाटे मनुष्यायुउदय मनुष्यायुसत्ता २ देवायुबध मनुष्यदेवायुसत्ता २ मनुष्यायुउदयनरक मनुष्यायुसत्ता ३ मनुष्यायुउदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ४ मनुष्यायुउदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ५ मनुष्यायुउदय देवमनुष्यायुसत्ताए छ भगा छे ॥ १८१ ॥

सुहुमाहक्खाएदो, अणहारेचउअबधपच्चइया ।
मीसेवसमेसोलस, चउदसअसन्नीएसुच ॥१८२॥

टीका—सुहुमाहक्खाएदो इत्यादि ॥ सूक्ष्मसपराये तथा यथाख्यातचारित्रे द्वौभगौनरायुरुदय नरायु सत्तारूपौक्षपकस्य-नरायुरुदय नरायु सत्तातथापूर्वबद्धदेवायु यदुपशमश्रेणीआरोह-तितदानरायुरुदय देवनरायु सत्ताएतौद्वौउपशमश्रेणिगतसूक्ष्म-सपराययथाख्यातानामवत शेषगतिनिकबद्धायु नोपशमश्रेणिमा-रोहति अणहारेत्तिअनाहारकमार्गणाया चतुर्गतिप्रत्ययाश्चत्वारो-अबद्धायूरूपाश्चत्वारोभगालभ्यतेयत विग्रहगतौएतेचत्वारोभगाएव-स्वस्वगतिसभवाभवनि, केवलिसमुद्घातेऽपिनरायुरुदय नरायु

सत्तारूप एकभंग सचप्रथमएकनवातर्गतत्वात्नाधिक तथा मिश्रे तथा उपशमसम्यग्दर्शनेषोडशभंगा भवति, तत्रचतुर्गतिषुअष्टाविंशतिभंगा तेषुबद्ध्यमानायूरूपाद्वादश द्वौनारकौद्वौदेवायु प्रत्येकचत्वारोमनुष्यायु सभवा चत्वारस्तिर्यगायु सभवा एवद्वादशनभवति, शेषाश्चत्वारोअबद्धायुष द्वादशबध्यानन्तरसभवाएवषोडशप्राप्यते ॥ असज्ञिमार्गणायाचतुर्दशभंगास्तत्रनवातिर्यगायु सभवा यत असज्ञितिरश्च चतुर्गतिषुगमनात् पचनरायु सभवास्तत्रनरायुरुदयो नरायु सत्ता तथा तिर्यगायुर्बध नरायुरुदय तिर्यग्नरायुष सत्तानरायुर्बध नरायुरुदय नरनरायु सत्ता नरायुरुदय तिर्यग्नरायु सत्ता अथवा नरायुरुदय नरनरायुष सत्ताएव पचमनुष्यायु सभवाएवचतुर्दश असज्ञिमनुष्याणानरकदेवेष्वगमनात् ॥ १८२ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपराये तथा यथाख्यातमध्ये २ भंगा, नरायुउदय नरायुसत्ता १ नरायुउदय देवनरायुसत्ता २, अनाहारकमार्गणाए च्यार भंगा च्यारे गतिना अबधना पामीये मिश्रमध्ये तथा उपशममध्ये १६ भंगा, इहा पिण नवा आऊखानो बध नथी तेमाटे बधना भंगा १२ नथी असज्ञीमार्गणामध्ये १४ भंगा छे तिहा तिर्यचना तो नव छे, मनुष्यना ५ छे मनुष्यअसज्ञी मरी देवना नारकी थाय नही तेमाटे बध्यमान तथा बधी रह्या पछीना च्यार नथी ॥ १८२ ॥

सासाणेछवीस, नाण तिगवेयगेअवहिदसे ।
वीसपुणसेसाण, अडवीसआउभगाण* ॥१८३॥

* पाठा तरम्
(वीसतेउतिवेए, तिवीसअडवीससेसासु)

टीका—सासाणेछवीस इत्यादि॥ सास्वादनेषड्विंशतिभगा, नरकायुर्बंधरूपौभगौद्वौनप्राप्येते, सास्वादनेनरकायुष' बधाभावात्। तथा ज्ञानत्रिके मतिश्रुतावधिलक्षणेवेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेअवधिदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेवीसविंशतिभगा, नरकगतौतिर्यगायुर्बंधरूपा देवेषुतिर्यगायुर्बंधरूप तिर्यक्षुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपौमनुष्येषुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपौद्वौद्वौएवभगाष्टकरहितावविंशतिभगाभवति। तेउतिइति तेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृषुलेश्यासु तिवेए वेदत्रिके तत्रप्रशस्तलेश्यात्रये पुरुषवेद स्त्रीवेदलक्षणेवेदद्वयेपचनरकायु सभवान्भगान् वर्जयित्वाशेषातिर्यग्नरदेवसभवा त्रयोविंशतिभगाभवति। नपुसकवेदेदेवायु सभवभगपचकविनात्रयोविंशतिभगाभवति। शेषासुपचेन्द्रियत्रसकाययोगत्रयकषायचतुष्टय अज्ञानत्रिक अविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनद्विकप्रशस्तलेश्यात्रये भव्यअभव्यमिथ्यात्वासज्ञि आहारकलक्षणासुत्रयोविंशतिमार्गणासु आयु कर्मण अष्टाविंशतिभगा भवति। एतासामार्गणानाचतुर्गतिषुप्राप्यमाणत्वात्। ॥ इत्युक्ताआयु कर्म भगका मार्गणासु ॥ १८३ ॥

टबार्थ—सास्वादनने छवीस भागा छे तिर्यंच तथा मनुष्यना नरकायु बधना २ भग नथी ज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित अवधिदर्शनमव्ये समकित गुणठाणावाला वीस भगा छे शेष मार्गणा जे रही तिहा आऊखाना २८ भागा छे. ए आयुभग मार्गणामे कह्या ॥ १८३ ॥

गोएसगनरपणतस, योगभविसमणहाररहीएसु।
चरखुरचरखुसुक्का, हारगिछगकेवलेदुन्नि ॥१८४॥

टीका—गोएसगनरपणइत्यादि ॥ गोत्रकर्मण सप्तभगा नर-

गतौपचेंद्रियेत्रसकायेमनोवाक्कायलक्षणेयोगत्रयेभव्यमार्गणायासमग्रसिसज्ञिमार्गणायाआहारकरहिता सुक्ति, अनाहारकमार्गणायासप्तभगा तथाचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाआहारकमार्गणायागोत्रस्यषड्भगा उच्चैर्गोत्रउदय उच्चैर्गोत्रसत्तालक्षण सचअयोगिचरमसमयेतस्यात्रासभवात् केवलज्ञानेकेवलदर्शनेगोत्रस्यद्वौभगौअबन्धप्रत्ययौ ॥ १८४ ॥

नाणतिगओहिदसे, उवसमितिगदेवसासाणे ।
चउदुवेयगिमीसे, देसेसुहमिगसेसासुपणभगा १८५॥

टीका—नाणतिगओहिदसेइत्यादि । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेउपशमसम्यक्त्वेउच्चैर्गोत्रबध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चैर्नीचै सत्तालक्षण एक द्वौअबधजौ एवत्रयोभगाभवति देवगतौ सास्वादनेनीचैर्गोत्रबधनीचैर्गोत्रउदयनीचेर्गोत्रसत्तालक्षणभगवर्जयित्वानीचैर्गोत्रबधसभवौद्वौउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा भवति, वेदकेमिश्रेदेशेउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौभगौभवत , सूक्ष्मसपरायेएकएवउच्चैर्बध उच्चैरुदय उच्चनीचसत्तालक्षण प्राप्यते । शेषासुवेदनिककषायचतुष्टय अज्ञानत्रयकृष्णादिलेश्यापचकअभव्यमिथ्यात्वअ(जय?)पतलक्षणासुअष्टादशमार्गणासुबधप्रत्यया पचभगा भवतिइत्युक्तागोत्रकर्मण भगामार्गणासु, अथमोहनीयकर्मभगान्दर्शयन्नाह ॥ तत्रप्रथममोहनीयस्यबधभगाद्वाविंशतिबधेषट्तत्रषोडशकषाया भयजुगुप्सामिथ्यात्वएवएकोनविंशतौत्रयाणावेदानामध्येएकवेद हास्यरतियुगलअथवाअरतिशोकयुगलएव प्रकृतित्रयेक्षिप्तेद्वाविंशतिस्तत्र त्रयाणावेदानात्रयोभगा तेचान्यतरयुगलगुणिता षएवएकविंशतिबधेमिथ्यात्वरहितेचत्वारोभगा नपुसकवेदस्याबधात् अनतानुबधि-

बन्धरहितेसप्तदशबन्धरहितेपुरुषवेदबन्धसभवौद्वौभगौएवअप्रत्याख्यान-बन्धरहितेनवोदशबन्धेद्वौप्रत्याख्यानबन्धरहितनवविधबन्धेद्वौतत्र भय-जुगुप्साअरतिशोकवर्जितेपचविधबन्धेपुरुषवेदरहितेचतुर्विधबन्धेसज्वल-नक्रोधरहितेत्रिविधबन्धेसज्वलनमानरहिते द्विविधबन्धेसज्वलनमायार-हिते एकविधबन्धेएकैकएवभग, एवमेकबन्धभगाएकविंशति तेच-नरकगतौदेवगतौद्वादशमिश्रगुणस्थानभगद्वयस्यमिलनगणनात् चतु-र्दशतिर्यग्गतौचतुर्दशषोडशवामनुष्यगतौसर्वेएकेंद्रियेविकलेंद्रियेस्था-वरपचकेदश, मत्यादिज्ञानेसम्यक्त्वादिषुनव, मन पर्यवचारित्रादि-मार्गणासुसप्त, सूक्ष्मसपरायेएक केवलद्विकेयथाख्यातेनभवति । यथाभावात्मनुष्यपचेंद्रियत्रसयोगादिषुसर्वे, वेदत्रयेकषायत्रयेविं-शति, लोभेएकविंशति इत्यादिगुणस्थानक्रमतोज्ञेय उदयचतु-र्विंशतिकागुणस्थानशतके सविस्तरलिखितास्तएवमार्गणासुविभज-यन्नाह ॥ १८५ ॥

उवसामगखवगेपुण, वीसचोवीससत्तरभगाय ।
वेयगिसोलसकेवल, दुगेअहक्खायगेनत्थि ॥१८६॥

टीका—उवसामगखवगेपुणइत्यादि ॥ अनउपशमेक्षायिके-सम्यग्दर्शनेवीसति विंशतिश्चतुर्विंशतय सम्यक्त्वमोहनीयउदयरहि-ताअविरतिसम्यक्त्वेचतस्रोदेशविरतौचतस्र प्रमत्तेचतस्र अप्रम-त्तेचतस्र अपूर्वकरणेचतस्र एवविंशति सप्तदशभगाद्विकैकोदय-सभवा प्राप्यते । सप्तकाउदयेएवउपशमक्षायिकदर्शनलाभ इति वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेषोडशचतुर्विंशतय सम्यक्त्वमोहनीयो-दययुक्ता तृर्येगुणेचतस्र पचमेचतस्र प्रमत्तेचतस्र अप्रमत्तेच-तस्र एवषोडशभवति । तथाकेवलद्विकेयथाख्यातेमोहनीयोदया-

भावात् भगानभवति । यथाख्यातेउपशातापेक्षया अष्टाविंशति चतुर्विंशतय एकविंशतिरूपासत्ताभवतिनक्षपकस्येतिस्वयमूह्यम् १८६

टबार्थ—हवे मोहनीकर्मना भागा कहे छे । उपशमसमकित तथा क्षायिकसमकिते वीस चोवीस सत्तर भागा छे २०। २४।१७। तिहा समकितगुणठाणेउदये १ चोवीसीसात उदय २ चोवीसी आठमे उदये एक चोवीसी इम पाचमे गुणठाणे पांचने उदये एक चोवीसी ने २ चोवीसी ७ ने उदये एक चोवीसी छ गुणठाणे च्यार उदये एक चोवीसी ५ उदये २ चोवीसी ६ उदये एक चोवीसी सातने पण च्यार चोवीसी आठमे ४ चोवीवी इम चोवीसी थई ॥ क्षयोपशमसमकिते सोल चोवीसी समकितमोहनीना उदयसहितनी छेवी केवलद्विग यथाख्यातचारित्रते मोहनीनो भगो नयी ॥ १८६ ॥

सुहमेगसेसेसुअ, मग्गणठाणेसुगुणभवाभंगा ।
चउवीसगायभगा, पयसखाउदयपच्चईया ॥१८७॥

टीका—सुहमेगसेसेसुअइत्यादि॥ सूक्ष्मसपरायेएकलोभोदयरूपभगक सेसेसुइतिशेषेषुमार्गणास्थानेषु, गुणभवायस्यामार्गणायायावत्य चतुर्विंशतय तस्यातावत्य चतुर्विंशतयोज्ञेया तथा यस्यामार्गणायायावन्त्य चतुर्विंशतयस्ताश्चतुर्विंशतिगुणिताभगसख्याभगानासख्याभवति, भगसख्याचउदयस्थानसख्यागणितापदसख्याभवति । तत्रनरकगतौमिथ्यात्वेअष्टौअष्टकायत नारकस्यनपुसकवेदोदयात्नपुसकवेदप्रत्ययाअष्टौभगाभवति । तेननरकगतौअष्टकापूवतत्रसप्तोदयेएक अष्टोदयेत्रय नवोदयेत्रय दशोदयेएक एवअष्टौअष्टकास्तस्यभगाश्चतु षष्टि सास्वादनेसप्तोदये एक अष्टो-

नवोदयेएकश्चत्वारोअष्टका तस्यभगाद्वात्रिंशत्, मिश्रेसप्तोदये-
अष्टोदयेद्वौनवोदयेएक एवचत्वारोअष्टकास्तस्यभगाद्वात्रिंशत्
तसम्यक्त्वेषड्डदयेएक सप्तोदयेनय, अष्टोदयेनय नवोदये-
त्रअष्टौअष्टका तस्यभगाश्चतु षष्टि सर्वसंख्ययाभगा एकशत-
त्यधिक भगानाएतेचभगकाउदयस्थानगुणिता पदवृंदसंख्या-
ते तत्रषड्डदयेअष्टभगा षड्गुणिताअष्टौचत्वारिंशत् पदवृंदा
दयेअष्टौचत्वारिंशत्भगा तेचसप्तगुणिता षट्त्रिंशदधिकत्रिश-
ोदयेअशीतिभगा तेचाष्टगुणिता चत्वारिंशदधिकषट्शत-
दये अष्टचत्वारिंशत्भगास्तेचनवगुणिताश्चतु शतद्वात्रिंशदधिक
शतानिभवति । दशोदयेअष्टौभगा तेचदशगुणिताअशीति
शा भवति, एवचसर्वसंख्ययापचदशशतानिषट्त्रिंशदधिकानि-
शतानिभवति ॥ एवसर्वत्रभावनाकार्या ॥ १८७ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायमध्ये लोभनो उदयनो एक भगो छे
ो मार्गणा जे रही ते मार्गणाये गुणठाण प्रत्ययी चोवीसी
त्री जे मार्गणाये जेटली चोवीसी होवे तेहने चोवीस
करीये तेवारे भागानी संख्या आवे, अने जे भगा जे
स्थानकना होवे ते भागा ते स्थानक गुणा करीये तेवारे
संख्या आवे एटले दसने उदये चोवीसी १ तेहना भागा
तेहने दस गुणा करीये तेवारे २४० पद संख्या छे इम
। जोडी लेज्यो ॥ १८७ ॥

तिउदयचउवीस, दुगिसोलसएगिअट्ठभंगाय ।
ाइसुछगसखा, भगागुणट्ठाणसखसमा ॥१८८॥

इतिमोहोदयभगा.

टीका—वेयनिउदय इत्यादि ॥ यत्रमार्गणायावेदत्रिकस्यउदयस्तत्रचतुर्विंशतिभगायत्रमार्गणायादुगिइनिवेदद्विकोदय तत्रषोडशका भवतियत्रमार्गणायाएकवेदोदयस्तत्रअष्टकाभवति । तत्रकषायचतुष्टयेचत्वारोभगास्तेहास्ययुगलेनचत्वारोऽरतिशोकेनचत्वार । एवअष्टौतेचपुरुषवेदेनएवस्त्रीवेदेनअष्टौ एव नपुसकवेदेनअष्टौएव चतुर्विंशतिर्भवति । कोहाइसु इत्यादि क्रोधादिषु क्रोधमानमायालोभेप्रत्येकषट्षट्भगा भवतियत क्रोधोदयेवेदत्रयान्यतरवेदोदये तत्रयेभगास्तेचयुगलद्वयान्यतरोदयेगुणिता षट्एवक्रोधोदयेद्विपचाशत्षट्का भवति । तस्यभगास्त्रिशतद्वादशाधिकभवति । तस्यपदवृदाएकविंशतिशतद्वादशाधिकद्विकोदये पचत्रयेद्वादशभगास्तस्यपदवृदाश्चतुर्विंशति चतुर्वेषेएकोभगस्तत्पदमपिएकएवसर्वसख्याएकविंशति शतत्रिदशदधिकपदवृदानाभवति । एवमानादिष्वपिज्ञेय । सर्वास्वपिमार्गणासु मोहोदयभगागुणस्थानभगसख्यासमास्तुख्याभवति ॥ भावनाचनरकगतौचतुर्विंशति अष्टकास्तेषाभगाद्विनवत्यधिक एकशत पदवृदाश्च पचदशशतपट्त्रिंशदधिका भवंति, तिर्यग्गतौमोहोदयचतुर्विंशतिकागुणस्थानकपचकस्यद्वात्रिंशत्तस्यभगका सप्तशतानिअष्टषष्ट्यधिकानिपदवृदचतुर्विंशतिका २४४ द्विशतचतुश्चत्वारिंशदधिकतेचचतुर्विंशतिगुणिता पचसहस्राणिअष्टौशतानिषट्पचाशदधिकानिपदवृदगणितभवति ॥ एवमनुष्यगतौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाभव्येसज्ञिआहारकलक्षणासुमोहोदयचतुर्विंशतिकाद्विपचाशत्सप्तदशभगका ॥ सर्वभंगाद्वादशशतानिपचषष्टिअधिकानिपदवृन्दचतुर्विंशतिकात्रीणिशतानिद्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतिगुणितचतुरशीतिशतान्यष्टचत्वारिंशत्तेचएकोनत्रिंशत्मिलिताश्चतुशीतिशतसप्तसप्तति पदवृदकाभवतिपुरुषादिवेदत्रयेद्विपचाशत्अष्टकाश्चत्वारोभगा एकेंद्रियद्वीद्रियत्रीद्रियचतुरि-

द्रियपृथ्वीकायअप्कायवनस्पतिकाय असंज्ञिमार्गणासद्वादशाऽष्टका षण्णवतिभगाअष्टशतानिपदवृद्धाभवति। तेजोवायुकायलक्षणासुमार्गणासुअष्टौअष्टकाएपुनपुंसकवेदएवोदयात् कषायचतुष्टयेद्विपंचाशत्षट्का षड्विंशतिरष्टविंशतिरेकोनत्रिंशत्भगालभ्यते । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेषट्त्रिंशत् चतुर्विंशतिका सप्तदशभगाभवति। मन पर्यवज्ञानेसामायिकेच्छेदोपस्थापनीयेत्रिंशतिचतुर्विंशतिका सप्तदशभगकास्तत्रप्रमत्तेअष्टौ अप्रमत्तेअष्टौ अपूर्वचत्वार एवत्रिंशति चतुर्विंशतिका नवमेदशमेसप्तदशभगाभवति ॥ अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रसंभवा षोडशचतुर्विंशतय परिहारविशुद्धौप्रमत्ताप्रमत्तभवा षोडशचतुर्विंशतयोमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेदेशविरतौअष्टौचतस्रश्चतस्र अष्टौस्वस्वगुणस्थानसंभवाश्चतुर्विंशतय अविरतिमार्गणायामिथ्यात्वादिअविरतसम्यग्दर्शनगुणास्थानसंभवाश्चतुर्विंशतिचतुर्विंशतय कृष्णादिलेश्यात्रयेचत्वारिंशत्चतुर्विंशतिका तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचत्वारोमिश्रेचत्वार अविरतेअष्टौदेशविरतेअष्टौ प्रमत्तेअष्टौ एवचत्वारिंशत्, तेज पद्मलेश्याद्वयेचत्वारिंशत्पूर्वोक्ताअप्रमत्तसंभवाअष्टौएवअष्टचत्वारिंशत्चतुर्विंशतय अभव्येचतस्र चतु० तत्रअनतानुबंधिउदयरहितामिथ्यात्वसंभवाअभव्यस्यनभवतितेनअष्टोदयाएकानवोदयाद्वेदशोदयाएकाप्राप्यते । अनाहारकमार्गणायांविंशतिश्चतुर्विंशतय तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचतस्र अविरतेअष्टौएवभवति सर्वासुमार्गणासुभगा पदवृद्धसंख्या स्वत करणानुसारेणऊह्या इत्युक्तामोहोदयभगामार्गणासु ॥ १८८ ॥ साम्प्रतनामकर्मबंधभगकान्दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —वेद तीन जिहा उदय होवे ते मार्गणाये चोवीस भगा होवे,-जिहा २ वेद उदय होवे तिहा सोल भगा होवे

जिहा एक वेद उदय होवे तिहा ८ भगा होवे, जिहा एक कषाय उदय होवे तिहा ७ भगा होवे, च्यार कषाय होवे तिहा २४ भगा होवे तथा नरकगति पाच थावरे असज्ञी एटली मार्गणाये नपुसकवेद १ उदय छे तेमाटे भगाना अष्टक कहेवा, क्रोधकषाये वेद तीनना ३ भगा ते हास्यरतियी वली ३ भगा अरती शोकथी इम जाणवा इम सर्वत्र सभाली लेवा ॥१८८॥

तेवीसपन्नवीसा, छवीसाअट्ठवीसगुणतीसा ।
तीसेगतीसमेग, वधठाणाणिनामस्स ॥ १८९ ॥

टीका—तेवीसपन्नवीसा इत्यादि ॥ नाम्न अष्टौबधस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशद् एकत्रिंशत् एकचेत्यष्टौ, अमूनिच गतिप्रायोग्यतया अनेकप्रकाराणितत्तस्तत्रैवोपदर्श्यतेतत्रतिर्यग्गतिप्रायोग्यबध्नत सामान्येनपचस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत । तत्राऽप्येकेन्द्रियप्रायोग्यबध्नत त्रीणिबधस्थानानित्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति तत्रत्रयोविंशति तिरियतिर्यग्द्विकएकेन्द्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुडकसस्थानवर्णगधरसस्पर्शचतुष्टय अगुरुलघुउपघातनामस्थावरनामसूक्ष्मबादरयोरेकतरद् अपर्याप्तनामप्रत्येकसाधारणयोरेकतरद् अस्थिरअशुभदुर्भगअनादेयअयश कीर्त्तिनामनिर्माणनामएतासात्रयोविंशतिप्रकृतीनासमुदायएकबधस्थानएतच्चापर्याप्तप्रायोग्यबध्नत मिथ्यादृष्टेरत्रसेयअत्रभगाश्चत्वार तथाहिबादरनाम्निबध्यमानेप्रत्येकेनसहएक तथाबादरसाधारणेनसहएक सूक्ष्मप्रत्येकेनसहएक. सूक्ष्मसाधारणेनसहएक सर्वसख्ययाचतस्र

एवं नवयोविंशति परघातोच्छ्वासमहितापचविंशति नवरप्रकृति-
नामनिर्यग्द्विकएकेंद्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुंडकस-
स्थानवर्णादिचतुष्टय अगुरुलघुनाम उपघातनाम परघातनाम
उच्छ्वासनाम स्थावरनाम पर्याप्तक बादरसूक्ष्मयोरेकतरत् प्रत्येकसा-
धारणयोरेकतरत् स्थिरास्थिरयोरेकतरत् शुभाशुभयोरेकतरत् यश कीर्ति-
रयश कीर्त्योरेकतरत् दुर्भगनामअनादेयनामनिर्माणनामइतिनासा-
पचविंशतिप्रकृतीनासमुदाय एकत्रमग्यानतद्यपर्याप्तकैकेन्द्रियप्रा-
योग्यबन्धनोमिथ्यादृष्टेरेकगतिपञ्चभगाविंशति तत्रबादरपर्याप्त-
प्रत्येकेषुस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्ययश कीर्तिषुदृष्टौभगास्त-
थाबादरसाधारणत सूक्ष्मप्रत्येकत सूक्ष्मसाधारणत चत्वारश्चत्वा-
रोभगा यत अयश कीर्तिनाम्न बन्धाभावाच्चत्वारएवभगा
एवविंशति पूर्वोक्तनवयोविंशति नवस्थानेस्थावरनामएकेंद्रिय-
जातिरिनिप्रकृतिद्वयविनाबन्धनामसंघातसंहननऔदारिकांगोपांगद्वी-
न्द्रियादिषुएकाजाति इतिचतुष्टयेक्षिप्तेषपचविंशति साचद्वीन्द्रिया-
दिजातिचतुष्कान्यतरेणचत्वारोभगा एवतिर्यग्गतिप्रायोग्याचतु-
र्विंशति तत्रबादरप्रत्येकप्रायोग्याष्टकभगरूपापचविंशति देवति-
र्यग्मनुष्या वैक्रियतिरोषाभगा षोडशतिर्यग्नरएवबध्नति देवाना
तत्रागमनात्निर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्यपचविंशतौतिर्यग्द्विकनिष्कास्यते
मनुष्यद्विकक्षिप्यतेइत्येषापचविंशति मनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यातिर्यग्-
मनुष्यास्तेजोवायुकायवर्जाबध्नति । इत्येवपचविंशति नवेपचविंश-
तिभगा बादरप्रत्येकपचविंशतिमध्ये आतपयुक्तापड्विंशति बध्नति।
अथवा उद्योतयुक्तापड्विंशति एकेन्द्रियप्रायोग्यात्रिगतिकामिथ्या-
दृष्टय बध्नतिषोडशभगा तथा ध्रुवबन्धिनवक त्रसबादरपर्याप्तप्रत्ये-
करूपचतुष्टयपचेंद्रियजाति परघातउच्छ्वासनामवैक्रियद्विक देव-
द्विकशुभविहायोगति १ समचतुरस्रसंस्थानस्थिरास्थिरयोरन्यतरत्

शुभाशुभयोरेकतरत्यशःकीर्त्ययशःकीर्त्योरेकतरत्सुभगदुर्भगसुस्वरदुःस्वरादेयानादेयेति एवमष्टाविंशतिः देवगतिप्रायोग्यानामष्टभङ्गाः स्थिरास्थिरशुभाशुभयशःअयशःमध्ये अष्टौभङ्गामिथ्यात्वगुणस्थानकेन अपूर्वकरणपर्यन्तं द्विगतिकसत्कर्मतिर्यग्देशविरतिपर्यन्तं मनुष्याअपूर्वकरणपर्यन्तमिति। तथा नवनवकं पञ्चेन्द्रियजातिवैक्रियतैजसकार्मणवर्णचतुष्कागुरुलघूपघातउच्छ्वासत्रसबादरपर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभनिर्माणानि अशुभविहायोगतिसंस्थानं अस्थिरषट्कं इत्यष्टाविंशतिः। नरकगतिप्रायोग्यातिर्यग्पञ्चेन्द्रियासंज्ञिसंज्ञिनः मनुष्यपञ्चेन्द्रियासंज्ञिनः बध्नन्ति। विकलेन्द्रियप्रायोग्यपञ्चविंशतिकुरुगतिः पर्याप्तपराघातोच्छ्वासत्रसबादरप्रत्येकेषु अपर्याप्तनामापहारे एकोनविंशतिर्तिर्यग्पञ्चेन्द्रियामनुष्या बध्नन्ति विकलप्रायोग्यामिथ्यादृष्टयस्तद्वीन्द्रियादिषु प्रत्येकमष्टौभङ्गा एगट्ठअट्ठविगलाणइगवणतिण्णपि। तिर्यग्गतिपञ्चेन्द्रियप्रायोग्यबन्धे त्रीणि बन्धस्थानानि। तद्यथा। पञ्चविंशतिः एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्तत्र पञ्चविंशतिः पञ्चेन्द्रियजातिपुक्तानि एकोभङ्गः एकोनत्रिंशत्पुनरियतिर्यग्पञ्चेन्द्रियजातिः औदारिकद्विकतैजसकार्मणषण्णांसंस्थानानामेकतरत्षण्णांसंहननानामेकतमत्संहननवर्णादिचतुष्टयं अगुरुलघूपघातपराघातउच्छ्वासनामप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगत्योरेकतरत्रसनामबादरनामपर्याप्तनामप्रत्येकस्थिरास्थिरयोरेकतरत्शुभाशुभयोरेकतरत्सुभगदुर्भगयोरेकतरत् सुस्वरदुःस्वरयोरेकतरत् आदेयानादेययोरेकतरत्यशःकीर्त्ययशःकीर्त्योरेकतरत्निर्माणमिति एकोनत्रिंशत्प्रकृतीनामेकबन्धस्थानं एतद्यमिथ्यादृष्टिपर्याप्ततिर्यग्पञ्चेन्द्रियप्रायोग्यबन्धे वेदितव्यं यदि पुनः सास्वादनेबध्नाति तर्हि पञ्चानां संस्थानानां पञ्चानां संहननानां अन्यतमत्संहननसंस्थानमिति वक्तव्यं। अस्यां चैकोनत्रिंशत्यां सामान्येन षड्भिः संस्थानैः षड्भिः संहननैर्गुणिता षड्त्रिंशत्। तेचविहायोगतिद्वयेगुणिता द्वासप्ततिः तेचस्थिरद्विकगुणिता चतुश्चत्वारिं-

शच्छततेचशुभाशुभद्विकगुणिताद्विशती अष्टाशीत्यधिकाभवतितेच-
सुभगदुर्भगद्विकगुणिता पचशतीपञ्चसप्ततिर्भवति तेचसुस्वरदु स्वर-
गुणिता एकादशशतद्विपचाशत्भगा भवति तेचआदेयानादेया-
भ्यागुणिता त्रयोविंशतिशतानिचतुरधिकानि भवन्तितेचयश
अयशोभ्यागुणिताभगा अष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छतसख्यावेदितया
एषैवएकोनत्रिंशदुद्योतसहितात्रिंशद्भवति अत्रापिमिथ्यादृष्टीन्सा-
स्वादनानधिकृत्यनयैवावगन्तव्यो अत्रापिअष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छ-
तसख्याभगानाभवति ॥ उक्तञ्च ॥ गुणनासनोसेवियभगाअट्ठा-
हीयाऽयालसयापचेंदित्तिरियतिरिजोगापणवीसवेभगिक्को ॥ १ ॥
सर्वसख्यपाद्विनवतिशतानिसप्तदशाधिकानि सर्वस्यातिर्यग्गतौसर्वस-
ख्यपाभगा त्रिनवतिशतानिअष्टाधिकानि॥ मनुष्यगतिप्रायोग्यपच-
विंशतिसत्कभगएकपूर्वोक्ततिर्यग्गतिप्रायोग्येकोनत्रिंशतितिर्यग्द्विका-
पसारेनरद्विकक्षेपेअष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छतसख्याभगा भवन्ति ॥
एतामिथ्यादृष्टि सास्वादनमिश्राविरतसम्यग्दृष्टिर्बध्नाति । तत्रस-
म्यग्दृष्टिप्रत्ययाएकोनत्रिंशत् जिननामसहितात्रिंशत् अत्रचस्थि-
रास्थिरशुभाशुभयश अयशोभ्याञ्चष्टौभगा अत्रजिननामत्रय स-
हननाद्यशुभानामत्रयक एवसर्वसख्यामनुष्यगतिप्रायोग्यत्रवरया-
नेषुभगा षट्चत्वारिंशच्छतानिसप्तदशाधिकानि । उक्तञ्चपणवीसय-
मिइक्को ॥ उयालसयाट्ठोत्तरइगुणतीसे, मणुतीसेअट्ठउसवेऽयाल-
सयाउससरस ॥ १ ॥ तथादेवगतिप्रायोग्य अष्टाविंशतिस्थानके-
अष्टौभगापूर्वउक्ता तत्रैवाष्टविंशतौजिननामप्रक्षेपेदेवगतिप्रायोग्या
एकोनत्रिंशतसम्यग्दृष्टि मनुष्य अविरतसम्यग्दर्शनत अपूर्वकर-
णयावन्नबध्नातिअष्टौभगा देवगतिप्रायोग्याष्टाविंशतौआहारकद्विक-
क्षेपेत्रिंशत् । अत्रसत्रप्रशस्तप्रकृतिबन्धात् एकएवभगकस्तथाआहा-
रकयुक्तात्रिंशतजिननामयुक्ताएकत्रिंशत्अत्रापिएकएवभगक एषा-

बधक सम्यग्दृष्टि मनुष्योबधकोभवति ॥ तथाचोक्त ॥ अट्ठएकेकभगा अट्ठारदेवजोग्गासु । तथानरकगतौअशुभाष्टाविंशतिमत्यएक एवभगकमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । नरकद्विकबन्धस्तुमिथ्यात्वेएवएकतुबधस्थानेयश कीर्त्तिलक्षणतद्बदेवगतिप्रायोग्यबधेन्यवच्छिन्नेअपूर्वकरणादीनात्रयाणाअवगतव्य ॥ सप्ततिकस्मिन्बन्धस्थानकेकतिभगकास्तनिरूपणार्थंगाथामाह ॥ १८९ ॥

चउपणवीसासोलस, नववाणुईसयायवायाला ।
एयालुत्तछायाल, सयाइकिकवधविही ॥ १९० ॥

टीका—चउपणवीसाइत्यादि ॥ त्रयोविंशत्यादिषुयथाक्रमबधप्रकारावेदितव्या तत्रत्रयोविंशतिबन्धस्थानेषुचत्वारोभगास्तेचैकेंद्रियप्रायोग्यामेवबध्नतोविज्ञेया नान्यत्रपचविंशतिस्थानेपचविंशतिभगाअत्रैकेंद्रियप्रायोग्यापचविंशतिंबध्नत विंशति अपर्याप्तकद्विंत्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्पचेंद्रियमनुष्यप्रायोग्या बध्नतामेकैकइतिसर्वसख्ययापचविंशति षड्विंशतिबधस्थानेषोडश तेचैकेंद्रियप्रायोग्यामेवबध्नत अवसेया नान्यत्रअष्टाविंशतिबधस्थानेभगानवतत्रदेवगतिप्रायोग्याअष्टौनरकगतौप्रायोग्य एकएकोनत्रिंशद्बधस्थानेभगाअष्टचत्वारिंशदधिकानिद्विनवतिशतानितत्राष्टौद्वींद्रियाणाअष्टौत्रींद्रियाणा अष्टौचतुरिंद्रियाणापट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकतिर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्य तथा षट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकशत मनुष्यप्रायोग्यअष्टौदेवगतिप्रायोग्य तथा त्रिंशद्बधस्थानेएकचत्वारिंशदधिक षट्चत्वारिंशच्छतभगानातत्रचतुर्विंशति विकलानापट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकतिर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्य अष्टौमनुष्यप्रायोग्या एकदेवगतिप्रायोग्य। तथाएकत्रिंशत बधेदेवगतिप्रायोग्यएकएकविधबधेचएक सर्वसख्य-

यासर्वत्र स्थानेषु भगा त्रयोदशसहस्राणिनवशतानिपचचत्वारिंशद-धिकानिभवति, इत्युक्तानामकर्मण बधभगा, साप्रतनामकर्मण उदयभगसख्याप्रतिपादनार्थमाह ॥ १९० ॥

वीसिगवीसागचउवीसाय, एगाहीयाअइगतीसा ।
उदयठाणाणिभवे, नवअट्ठयहुतिनामस्स ॥ १९१ ॥

टीका—उदयस्थानानिद्वादश, तद्यथाविंशतिरेकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत तथा नवअष्टौचएतानिचैकेंद्रियाद्यपेक्षयानानाप्रकाराणि, इतितानाश्रित्यसाप्रतमुपदर्श्यतेइतितत्रएकेंद्रियाणामुदयस्थानानिपचतद्यथाएकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविंशति तत्रतैजसकार्मणेअगुरुलघुस्थिरास्थिरेशुभाशुभेवर्णरसगन्धस्पर्शनिर्माणमितिद्वादशध्रुवोदया प्रकृतय । तिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीस्थावरनामएकेन्द्रियजातिबादरसूक्ष्मयोरेकतरत्पर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरद्दुर्भग अनादेययश कीर्त्ययश कीर्त्योरेकतरदित्येतत्रवप्रकृतिसहिताएकविंशति अत्रभगा पचबादरसूक्ष्माभ्यापर्याप्ताऽपर्याप्ताभ्या अयश इतितेनसहचत्वार बादरपर्याप्तस्ययशसासहपचम सूक्ष्मपर्याप्ताभ्यासहयश कीर्त्ते रुदयोनभवति । तेननदाश्रिताविकल्पानभवति । एषाचैकविंशतिरेकेन्द्रियस्यापातरालगतौवर्त्तमानस्यवेदितव्यातत शरीरस्थस्य औदारिकशरीरहुडकसस्थानउपघातप्रत्येकसाधारणयोरेकतरदितिचरस्त्र प्रक्षिप्यते । नियगानुपूर्वीचापनीयते ततश्चतुर्विंशतिर्भवति । अत्रचभगादश ॥ तद्यथा ॥ बादरपर्याप्तस्य प्रत्येकसाधारणयश कीर्त्ययश कीर्त्तिपदैश्चत्वार अपर्याप्तबादरस्यप्रत्येकसाधारणाभ्याअयश कीर्त्यासहद्वौ । सूक्ष्मपर्याप्त अपर्याप्तप्रत्ये-

कसाधारणयोरयश कीर्त्यासहचत्वार इतिदश बादर वायुकायि-कस्यवैक्रियकुर्वत औदारिकस्थानेवैक्रियवक्तव्यनतश्चनस्यापिचतु-र्विंशतिरुदयेप्राप्यते । केवलमिहबादरपर्याप्तप्रत्येकअयश कीर्तिप-दैरेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयो साधारणयश कीर्त्युद-योनभवनि तदाश्रिताविकल्पानप्राप्यते । सर्वसरयपयाचतुर्विंश-

	बधप्रा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
४०	एकेन्द्रिय	४	२०	१६					
१७	द्वीन्द्रिय		१			८	८		
१७	त्रीन्द्रिय		१			८	८		
१७	चतुरिन्द्रिय		१			८	८		
९२१७	तिर्यक्पचेंद्रिय		१			४६० ८	४६० ८		
४६१८	मनुष्यपचेंद्रिय		१			४६० ८	८		१
१८	देवता				८	८	१	१	
१	नारक				१				
	सर्व	४	२५	१६	९	९२४८	४८४१	१	१

त्युदयेएकादशभगास्तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेक्षिप्तेपचविंशति अत्रभगा षट् तद्यथाबादरप्रत्येकसाधारणयश कीर्त्तिअयश कीर्त्तिपदैश्चत्वार सूक्ष्मस्यप्रत्येकसाधारणाभ्याअयश कीर्त्यासहद्वौ तथा बादरवायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य पराघातेक्षिप्तेपचविंशतिर्भवति अत्रचप्राग्वदेवैकएवभग सर्वसख्ययापचविंशतौसप्तभगा प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेषड्विंशति अत्रापिभगा षट् तद्यथाबादरस्योद्योतेनसहितस्यप्रत्येकसाधारणयश कीर्त्तिपदैश्चत्वारआतपसहितस्यचप्रत्येकयश अयशोभ्याद्वौबादरवायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेप्रागुक्तापचविंशति षड्विंशतिर्भवति तत्रापिप्राग्वदेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयोरातपोद्योतयश कीर्त्तिनाउदयाभावात् । तदाश्रितानिकल्पानप्राप्यते सर्वसख्ययाषड्विंशतौत्रयोदशभगा । तथाप्राणापानपर्याप्तापर्याप्त्यस्यउच्छ्वाससहितायाषड्विंशतौआतपोद्योतानपतरसहितायापद्त्रय आतपसभवास्त्रय उद्योतसभवा, सप्तविंशत्युदयेषट्सर्वसख्ययाचैकेन्द्रियाणाभगाद्विचत्वारिंशत् ॥ उक्तच ॥ एगेन्दियउदयेसु पचइक्कारसततेरसयठक्क । कमसोभगावायालाहोंतिसवेवि ॥ १ ॥ द्वीन्द्रियाणामुदयस्थानानिषट्तद्यथाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् तत्रध्रुवोदयाद्वादशनिर्यग्द्विकद्वीन्द्रियजाति त्रसनामबादरनामदुर्भगअनादेयपर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरद्यश कीर्त्यश कीर्त्योरेकतरद्विनिनवप्रकृत्यासहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमानस्यद्वीन्द्रियस्यावाप्यते अत्रभगास्त्रय, तद्यथाअपर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्यअयश कीर्त्यासहएक पर्याप्तनामोदयेवर्त्तमानस्ययश कीर्त्ययश कीर्त्तिभ्याद्वाविनितस्यैवचशरीरस्थस्यऔदारिकशरीरऔदारिकागोपागद्वयकमस्थानसेवार्त्तसहननउपघातप्रत्येक इतिषट्

प्रकृतय प्रक्षिप्यतेतिर्यगानुपूर्वीचापनीयते जातापद्विंशति अत्रापिभगास्त्रय तेचप्रागिवद्रष्टव्या तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य अप्रशस्तविहायोगतिपराघातयो प्रक्षिप्तयोरष्टाविंशति अत्रयश कीर्त्ययश कीर्त्तिभ्याद्वौभगौअपर्याप्तकप्रशस्तविहायोगत्योरनोदयाभावात । तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत, अत्रापिनापेवद्वौभगौ अथवा शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशतअत्रापिप्रागिवद्वौभगौसर्वेप्येकोनत्रिंशतिद्वीन्द्रियस्यचत्वारोभगा ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायामेकोनत्रिंशति, सुस्वरदु स्वरयोरेकतरस्मिन्प्रक्षिप्तेत्रिंशद्भवति । अत्रसुस्वरदु स्वरयश कीर्त्ययश कीर्त्तिपदैश्चत्वारोभगा एवसर्वसंख्यया द्वीन्द्रियाणाद्वात्रिंशतिभगा एव त्रीन्द्रियाणाद्वात्रिंशतित्रीन्द्रियजाति प्रक्षेप्या एव चतुरिन्द्रियाणामपिद्वात्रिंशतिभगाश्चतुरिन्द्रियजात्यावाच्या इतिसर्वसंख्यया विकलेन्द्रियाणाषट्षष्टि भगा तदुक्त तिगतिगदुचउउच्चउविगलाणउसट्ठि-होइनिण्हपि प्राग्वतिर्यग्पचेन्द्रियाणाउदयस्थानानिषट्नवयाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्, तत्रतिर्यग्गतिस्तिर्यगानुपूर्वीपचेन्द्रियजाति त्रसनामबादरनामपर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरत् सुभगदुर्भगयोरेकतरत् अनादेयआदेययोरेकतरद्यश कीर्त्ययश कीर्त्योरेकतरदित्येतानवप्रकृतयोद्वादशसंख्यामिर्ध्रुवोदयामि सहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमानस्यतिर्यग्पचेन्द्रियस्यवेदितव्या, अत्रभगानव, पर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्य सुभगदुर्भगाभ्याआदेयानादेयाभ्यायश कीर्त्तिअयश कीर्त्तिभ्याचाष्टौभगा अपर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्यदुर्भगाअप्रशस्तप्रकृत्यासहएकएव, अन्येषुपुन सुभगादेययुगपत्दुर्भगानादेययुगपत्उदेतिनदायश अयशोभ्याचत्वारोभगाएक अपर्याप्तस्य-

इत्येवपचमगाभवन्ति । तद्भावनीयनन शरीरस्थस्यआनुपूर्वीमप-
नीयऔदारिकऔदारिकागोपागषण्णा सस्थानानाएकनमतसस्थान-
षण्णासहननानामेकसहननउपघानप्रत्येकमितिषट्कमक्षिप्यते ततो-
जातिषट्कप्रक्षिप्यतेततोजातापद्विंशति अत्रभगानाद्वेशतेएको-
ननवति अधिकेतत्रपयाप्तस्यपद्मि सस्थाने षट्तेचषद्मि सह-
नैर्गुणिता षट्विंशतूतेच सुभगदुर्भगाभ्याद्वासप्तति आदेयाना-
देयाभ्याचतुश्चत्वारिंशच्छततदेवयश अयशोभ्याद्विशतेअष्टाशीत्य-
धिकेभवन, अपयाप्तकस्यहुटकमस्थानसेवार्त्तदुर्भगानादेयायश-
कीर्तिपदैरेक इतिअस्यामेवपद्विंशतोशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपरा-
घातप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिमध्ये अन्यतरगतोचक्षिप्तायाअष्टाविं-
शति तत्रयेप्राक्पर्याप्तानाद्विशत अष्टाशीत्यधिकेउक्तेतेअत्रवि-
हायोगत्योरन्यतरगत्याइतिद्विगुणितेअत्रभगानापचशतानिषट्सप्तत्य-
धिकानिभवति । तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षि-
प्तेएकोनत्रिंशत् अत्रापिभगा प्रागिवपचशतानिषट्सप्तत्यधि-
कानि अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतना-
म्निउदितेएकोनत्रिंशद्भवतिअत्रापिभगा पचशतानिषट्सप्तत्यधि-
कानिसर्वसरयपाभगानामेकोनत्रिंशद्विपचाशदधिकानि एकादश-
शतानि । ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरदु स्वरयोरन्यतरस्मिन्
प्रक्षिप्तेत्रिंशद्भवति, अत्रयेप्रागुच्छ्वासेनपचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि
उक्तानितान्येतस्वरद्विकेनगुण्यतेततोजातानिद्विपचाशदधिकानिए-
कादशशतानि, अथवाप्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यस्वरेअनुदिते उद्यो-
तनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति । अत्रापिभगानाप्रागिवपचशतानिषट्-
सप्तत्यधिकानिसर्वसरयपात्रिंशतिभगानांसप्तदशशतानिअष्टाविंशत्य
धिकानि, तत स्वरसहितायात्रिंशतिउद्योतनाम्निप्रक्षिप्तेएकत्रिंश
द्भवति । अत्रयेप्राक्स्वरसहितापात्रिंशतिभगाद्विपचाशदधिकएका-

दशशतसंख्याउक्तास्तएवात्रापिद्रष्टव्या सर्वसंख्ययाप्राकृततिर्यक्पंचेंद्रियाणाउदयभंगाएकोनपंचाशच्छतानिषडधिकानि, इदानीं वैक्रियतिरश्चाउदयस्थानानि पंचतद्यथापंचविंशति सप्तविंशति अष्टविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, तत्रवैक्रियांगोपांगसमचतुरस्रउपघातप्रत्येकमितिपंचप्रकृतय प्रागुक्तायातिर्यग्पंचेंद्रियप्रयोग्यायामेकविंशतौप्रक्षिप्यते तिर्यगानुपूर्वीचापनीयतेतत पंचविंशतिर्भवति। अत्रसुभगदुर्भगाभ्यामादेयानादेयाभ्यायश अपशोभ्याचाष्टौभंगा, तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातप्रशस्तविहायोगतीचप्रक्षिप्तायासप्तविंशति तत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासनाम्निप्रक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवतिअत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा अथवा उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतेउदितेप्रागिवाष्टौभंगा इतिषोडशतत भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्वउच्छ्वाससहितायां अष्टाविंशतौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा तस्याउच्छ्वाससहितायां अष्टाविंशतौस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत् सर्वसंख्ययाएकोनत्रिंशतिषोडशतत समुच्चयेस्वरसहितायाएकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा सर्वसंख्ययावैक्रियतिरश्चापदपंचाशत्भंगा सर्वेषातिर्यक्पंचेंद्रियाणासर्वसंख्यया एकोनपंचाशच्छतानिद्विषष्ट्यधिकानिभंगानामवसेयानि, सामान्येनमनुष्याणामुदयस्थानानिपंचतद्यथाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, एतानिसर्वाण्यपियथाप्राक्तिर्यक्पंचेंद्रियाणा उक्तानितथैवात्रापिवक्तव्यानिनवरतिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीस्थाने मनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्व्योर्वेदितव्ये एकोनत्रिंशत्त्रिंशच्चउद्योतरहितावक्तव्यौतिर्याहारकसंयतान्मुक्त्वाशेषमनुष्याणाउद्योतोदयाभावात्तत एकोनत्रिंशतिभंगानापंचशतानिषट्सप्तत्यधिकानित्रिंशत्येकादशशतानिद्विपंचाशदधिकान्येवावगन्तव्यानिसर्वसंख्ययाप्राकृतमनुष्याणाषड्विंश-

निशतानिद्विकाधिकानिभगानाभवन्ति, वैक्रियमनुष्याणामुदयस्था-
नानिपञ्चत्रयाणिपञ्चविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-
शत्पंचिंशत्, तत्रमनुष्यगतिपंचेंद्रियजातिवैक्रियवैक्रियांगोपांगसमचतु-
रस्र उपघातत्रसनामपर्याप्तनामप्रत्येकनामसुभगदुर्भगयोरेकतरादे-
यानादेययोरेकतरद्यश कीर्त्ययश कीर्त्योरेकतर दितिपंचदशप्र-
कृतयोद्वादशसरयामिर्ध्रुवोदयामि सहपञ्चविंशति अत्रसुभगदुर्भ-
गानादेयानादेययश कीर्त्ययश कीर्तिपदरष्टौभगा देशविरतानां-
सयतानांचवैक्रियकुर्वतांसर्वेप्रशस्ताएवभगावेदितव्यास्तत्र उत्तर-
वैक्रियशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेप्रशस्तविहायोगतीचप्रक्षिप्तायां
सप्तविंशति अत्रापितएवाष्टभगा तत्र प्राणापानपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति अत्रापिभागिवाष्टौभगा अथश
सयतानामुत्तरवैक्रियकुर्वताशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तानाउच्छ्वासेअनुदिते-
उद्योतनाम्निउदितेऽष्टाविंशति अत्रएकएवभग सयतानादुर्भगा-
नादेयायश कीर्त्युदयाऽभावात्, सर्वसंख्ययाअष्टाविंशतिर्वैक्रियवता-
नैवभगा तत्रोभापापर्याप्तापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायाअष्टाविंश-
तौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशद्भवति । अत्रापिभागिवाष्टौभगा अथश
सयतानासुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत्भवति अत्रापि
भागिवैकएवभग सर्वसरयावैक्रियएकोनत्रिंशति भगानवसुस्वर-
सहितायाएकोनत्रिंशतिसयतानाउद्योतनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति, अ-
त्रापिभागिवैकएवभग सर्वसरयावैक्रियमनुष्याणाभगा पञ्चत्रिं-
शत्, आहारकसयतानाउदयस्थानानिचत्वारिभवन्ति । तद्यथा-
पञ्चविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्तत्रआहारक-
आहारकांगोपांगसमचतुरस्रसंस्थानउपघातप्रत्येकमितिपंचप्रकृतय
प्रागुक्तायामनुष्यगतिप्रायोग्यायाएकविंशतौप्रक्षिप्यतेमनुष्यानुपूर्वी-
चापनीयते ततोजातापञ्चविंशति केवलमिहपदानिसर्वाण्यपिप्रश-

रणा येवभवति, आहारकसंयतानाद्दुर्भगाऽनादेयाऽयश कीर्त्युदया-
भावात् अत एकएवात्रभगस्तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेप्रशस्तविहायोगतीचप्रक्षिप्तायासप्तविंशति अत्राप्येकएवभग तत
प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवति अत्रा-
प्येकएवभग अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्यो-
तनाम्निउदितेअष्टाविंशतिर्भवति । अत्राप्येकएवभग सर्वसंख्यया-
अष्टाविंशतेर्द्वौभगा ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायाअष्टाविंशतेसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशद्भवति। अत्राप्येकएवभग अथवा
प्राणापानपर्याप्तस्यसुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशद्अ-
त्राप्येकएवभग सर्वसंख्ययाएकोनत्रिंशतिर्द्वौभगौ ततोभाषापर्या-
प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहितायाएकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति।
अत्राप्येकएवभग सर्वसंख्ययाआहारकशरीरिणासप्तभगा केवलि-
नामुदयस्थानानिदश,तद्यथाविंशति एकविंशति षड्विंशति सप्त-
विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्नवअष्टौवात्र-
मनुष्यगतिपचेंद्रियजातिस्त्रसनामबादरनामपर्याप्तनामसुभगमादेययशः
कीर्तिरित्यष्टौप्रकृतयोदयाभि द्वादशसंख्याभि सप्तविंशति अत्रैकोभग
एषाचातीर्थंकरकेवलिन समुद्घातावस्थायाकार्मणकाययोगेवर्त्तमा-
नस्यवेदितव्यासैवत्रिंशतिस्तीर्थंकरनामसहिताएकत्रिंशति अत्रैकभग
एषाचातीर्थंकरकेवलिन समुद्घातगतस्यकार्मणकाययोगेवर्त्तमान-
स्यवेदितव्यातथात्रस्यामेवत्रिंशतौ औदारिकशरीरषण्णासंस्थानाना-
एकतमत्संस्थानऔदारिकांगोपांगवज्रऋषभनाराचसंहननउपघात
प्रत्येकमितिषट्प्रकृतय प्रक्षिप्यतेतत षड्विंशतिर्भवति इतिए-
षाचतीर्थंकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाययोगेवर्त्तमानस्यवेदित-
व्याअत्रषड्भि संस्थानै षड्भगा भवति, परसामान्यमनुष्येषुगृ-
हीतत्वात अत्रनगृहीताइत्येकएवगृहीत एषैवषड्विंशतिस्तीर्थंकर-

सहितासप्तविंशतिर्भवति एषातिर्थंकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाय-
योगेवर्त्तमानस्यावसेया ॥ अत्रसंस्थानसमचतुरस्रमेवावसेय । तत
एकएवात्रभंग संवपडविंशति परावातोच्छ्वासप्रशस्ताऽप्रशस्ताविहायोगत्यन्तरविहायोगतिसुस्वरदुस्वरान्यतरस्वरसहितानिंशत एषा-
चतीर्थंकरकेवलिन औदारिक काययोगेवर्त्तमानस्यावगन्तव्याअत्रभंगाश्चतुर्विंशति जीवभेदानांभवन्ति । तथापिनपृथगगृहीता-
मनुष्योदयेगृहीतत्वात् एषैवत्रिंशत्तीर्थंकरनामसहिताएकत्रिंशत्भवति साचसयोगिकेवलिनस्तीर्थंकरस्यौदारिकयोगेवर्त्तमानस्यावसेया,
एषैवैकत्रिंशत्वाग्योगेनिरुद्धेत्रिंशद्भवति उच्छ्वासेऽपिचनिरुद्धेएकोनत्रिंशत्अतीर्थंकरस्य केवलिन प्रागुक्तात्रिंशत्वाग्योगेनिरुद्धेसत्येकोनत्रिंशत्भवति । अत्रापिसंस्थानविहायोगत्याद्वादशभंगाभवन्ति, तथानगण्यते कर्मप्रकृत्यानेनगृहीतत्वात् । तथाउच्छ्वासनिरुद्धेअष्टाविंशति अत्रापिभंगा पूर्ववत् । तथामनुष्यगतिपचेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगमादेययश कीर्तिस्तीर्थंकरमितिनवोदय एषचतीर्थंकृतोऽयोगिकेवलिन चरमसमयेवर्त्तमानस्यप्राप्यते-सएवतीर्थंकरनामरहित अष्टोदय इहकेवलिन उदयस्थानमत्येकविंशत्येकविंशतिसप्तविंशत्येकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्नवाष्टरूपेषु-उदयस्थानेषुप्रत्येक एकैकोविशेषभंग इत्यष्टौभंगा तत्रविंशत्यष्टकयोर्भंगावतीर्थंकरकृतौशेषेषुषट्सूदयस्थानेषुतीर्थंकृत षड्भंगा ।
सर्वसंख्ययामनुष्याणा उदयस्थानेषुषडविंशतिशतानिद्विपंचाशदधिकानिदेवाना उदयस्थानानिषण्णवत्यधिकत्रिंशति पंचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्रदेवगतिदेवानुपूर्वीपचेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगदुर्भगयोरेकतर दादेयाऽनादेययोरेकतरयश अयशसोरेकतर दितिनवप्रकृतयोद्वादशसंख्यामिध्रुवोदयामि सहएकविंशति अत्रसुभगदुर्भगादेयानादेययश अयश-

पदैरष्टौभगादुर्भगअनादेयायशसामुदय पिशाचादीनामवगत प
तस्यशरीरस्थस्यवैक्रियवैक्रियागोपाग उपघातप्रत्येक समचतुरस्र
सस्थानमितिपचमकृतय प्रक्षिप्यते देवानुपूर्वीचापनीयते ततोजा-
तापचविंशति अत्रापितेएवाष्टौभगा तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य-
परावातेप्रशस्तविहायोगतौचाक्षिप्तायासप्तविंशति अत्रापितेएवाष्टौ-
भगा देवानामप्रशस्तखगतेरुदयाभावात्तदाश्रिताविकल्पानभवति
तत प्राणापानपर्याप्तस्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति तत्रापितए-
वाष्टौभगा अथवा शरीरपर्याप्तापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्यो-
तनाम्निउदितेअष्टाविंशति अत्रापिभागिवाष्टौभगा सर्वसख्यया-
अष्टाविंशतौषोडश,ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिं-
शद्भवति । अत्राप्यष्टौभगा दु स्वरोदयोदेवानानभवति । अथवा
प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोन-
त्रिंशद्भवति । उत्तरवैक्रियहिकुर्वत देवस्योद्योतोदयोलभ्यतेअत्रापित-
एवाष्टौभगा सर्वसख्यायएकोनत्रिंशतिषोडशभगा ततोभाषापर्या-
प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहितायां एकोनत्रिंशति उद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति,
अत्रापितएवाष्टौभगा सर्वसख्यायादेवानाचतु षष्टिभगा तथानैरयि-
काणाउदयस्थानानिपच, तद्यथाएकविंशति पचविंशति सप्तवि-
शति' अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् । तत्रनारकगतिनारकानुपूर्वी
पचेंद्रियजातिस्त्रसबादरपर्याप्तनामदुर्भगअनादेयअयश इत्येता
नवद्वादशध्रुवोदयाभि सहएकविंशति एषभग कार्मणशरीरस्थ-
स्यतत्रसर्वपदाऽप्रशस्तत्वेनएकएवभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्य वैक्रियवैक्रियागोपागहुडसस्थानउपघातप्रत्येकमितिपचमकृतय
प्रक्षिप्यतेनरकानुपूर्वीचापनीयतेतत पचविंशतिर्भवतिअत्राप्येकए-
वभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघाताप्रशस्तविहायोगतौक्षि-
तायांसप्तविंशति अत्राप्येकएवभग नैरयिकाणापराघात, प्रदेशो-

दयरूप पूर्वाचार्यगृहीत तत प्राणापानपर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्ते-अष्टविंशतिस्तत भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यद्वे स्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत्। अत्रापिएकएवभग सर्वसंख्ययानैरयिकाणापचभगा । सर्वत्रो-दयस्थानभगा पुन सप्तसप्ततिशतानिएकनवत्यधिकानि । सप्र-तिकस्मिन्उदयस्थानेकतिभगा प्राप्यते इतिचिंतायानिरूपणार्थ-माह ॥ १९१ ॥

एगवयालिक्कारस, तित्तीसा उसयाणितित्तीसा ।
बारससत्तरससयाणि, हिगाणिबिपचसीइहि॥१९२॥
अउणत्तासिक्कारस, सयाणिहियसत्तरपचसट्ठीहि ।
एक्केकगचवीसा, दट्ठुदयतेसुउदयविही ॥१९३॥

टीका—एगवयालिक्कारस इत्यादि ॥ विंशत्यादिअष्टपर्यंतेषु-द्वादशसुउदयस्थानेषु यथासंख्यएकादिसंख्याउत्पत्तिप्रयउदयप्रकारा, उदयभगाइत्यर्थ तत्रविंशतौएकोभग सचातीर्थकरकेवलिन एक-विंशतौद्वाचत्वारिंशत्तत्रएकेन्द्रियानधिकृत्यपच, विकलेन्द्रियानधि-कृत्यनव, पचेन्द्रियतिरश्चोऽधिकृत्यनव, मनुष्यानधिकृत्यनव, तीर्थ-करमधिकृत्यैक सुरानधिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यएक इतिद्वा-चत्वारिंशत्चतुर्विंशतावेकादशतेचएकेन्द्रियानधिकृत्यप्राप्यते, पच-विंशतौत्रयस्त्रिंशत्भगा ,तत्रैकेन्द्रियानधिकृत्यसप्त वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, वैक्रियमनुष्यानधिकृत्याष्टौ, आहारकसंयतानाश्रित्यएक, देवान-धिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यैक इतित्रयस्त्रिंशत्, षड्विंशतौपञ्चश-तानि । तत्रएकेन्द्रियानाश्रित्यत्रयोदशविकल्पानानवप्राकृततिरश्चा-द्वेशतेएकोननवत्यधिके, प्राकृतमनुष्याणाद्वेशतेएकोननवत्यधिके इतिपञ्चशतानि, सप्तविंशतौत्रयस्त्रिंशत् तत्रैकेन्द्रियाणापञ्चवैक्रिय-

तिरश्चाअष्टौ वैक्रियमनुष्याणाअष्टौ आहारकमुनीनामेक केवलिनामेक देवानाअष्टौ नारकाणाएक इतिनवपरिंशत् । अष्टाविंशतौद्वयधिकानिद्वादशशतानि, तत्रविकलेन्द्रियानधिकृत्यपटप्राकृतानितिरश्चापचशतानि षट्सप्तत्यधिकानि, वैक्रियतिरश्चापोडश, प्राकृतमनुष्याणापचशतानि षट्सप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानव, आहारकसयतानाद्वौदेवानधिकृत्य षोडश,नारकानधिकृत्यएक इतिएकोनत्रिंशतिपचाशीत्यधिकानि सप्तदशशतानि । तत्रविकलानाद्वादश, प्राकृततिर्यग्पचेन्द्रियाणाद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि, वैक्रियतिर्यग्पचेन्द्रियाणापोडश, प्राकृतमनुष्याणापचशतानि षट्सप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानवआहारकमुनीनाद्वौतीर्थकृताएक देवानापोडश नारकाणाएक इतिविंशतिएकोनत्रिंशच्छतानिसप्तदशाधिकानि, तत्रविकलानाअष्टादश, प्राकृततिरश्चासप्तदशशतानि अष्टाविंशत्यधिकानि । वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, प्राकृतमनुष्याणा एकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि, वैक्रियमनुष्याणा, एक, आहारकाणाएक, केवलिनाएकोदेवानाअष्टौ इतिएकत्रिंशतिएकादशशतानि पचषष्ट्यधिकानि, तत्रविकलानाद्वादश, प्राकृततिरश्चाद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि, तीर्थकरमधिकृत्यैक, एकोनत्रोदये,एक अष्टोदये,सर्वोदयस्थानेषुभगसरयासप्ततिशतानि एकनवत्यधिकानिइत्युक्तानिनामकर्मण उदयस्थानानि॥

॥ अथमार्गणासुबधसख्यानायनायगामाह ॥ १९३ ॥

इगविगलथावरेसु, अजिणनेउव्वाअन्नाणतिरीएसु ।
मिच्छिअसन्निअभव्वे, अजिणाहारासजिणअजये ॥१९४

टीका—इगविगल इत्यादि ॥ एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय पृथिव्यादिस्थावरपचकलक्षणासु नवमार्गणासु अजिणत्तिजिननामयुक्ता-

प्रायोग्योदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	
एकेंद्रि		५	११	७	१३	६		०					४२
बेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
तेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
चउरेंद्री		३			४		२	४	६	४			२२
प्रा ति		९			२८९		५७६	११५२	१७२८	११५२			४९०६
वैति				८		०	१६	१६	८				५६
प्रा मनु		९			२८९		५७६	५७६	११५२				२६०२
वै मनु				८		८	९	९	१				३५
अहा				१		१	२	२	१				७
केवली	१	१				१		१	१	१	१	१	८
देवता		८		८		८	१६	१६	८				६४
नारकी		१		१		१	१	१					५
सर्व सरूपा	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९६५		१	१	७७९१

येवत्रभगा वैक्रियोपलक्षिताइत्यनेनदेवनारकप्रायोग्यायेभगास्तेन-प्राप्यतेअत मनुष्यप्रायोग्याजिननामयुक्ता नव, देवप्रायोग्याअ-ष्टादश, नैरयिकप्रायोग्यएक एव अष्टाविंशतिर्नभवति शेषा १३९१७ प्राप्यते, तथा अज्ञानत्रयतिर्यग्गतिमिथ्यात्वअसंज्ञिमा-र्गणासु अभव्यलक्षणमार्गणासु जिननामाहारकरहिता इत्यनेन-मनुष्यप्रायोग्यानवदेवप्रायोग्याएकोनत्रिंशत् प्रत्ययाअष्टौत्रिंशत्प्र-त्ययएक एकत्रिंशत्प्रत्ययप्रायोग्यएक एवएकोनत्रिंशतिवर्ज्या शेषा १३९२६ भगाभवन्ति । अजये इत्यादि अविरतमार्गणायासजिना-जिननामयुक्ता १३९३४ भगाभवति शेषादशनभवति ॥१९४॥

टबार्थ—हवे नामकर्मना भागा कहे छे । एकेंद्रिमार्गणाये विकल ३ मार्गणाये जिननामना तथा वैक्रियना भागा नथी बीजा सर्व छे ॥ १३९२७ भागा छे ३ अज्ञानमार्गणाये तिर्यंचगति मिथ्यात्वे १ असंज्ञी १ अभव्ये जिननाम आहा-रकना भागा नथी १३९२६ भागा छे ॥ १९४ ॥

अविगल (इगतिरि) विउव्वितिरिया, समुच्छासम्म-नाणुवहिदसे ।
चरणतिदेसेसुरजा, अहक्खायदुकेवलेणवा ॥१९५॥

टीका—अविगलविउव्वियतिरियाइत्यादि ॥ विकलप्रत्यया-एकपचाशतउपलक्षणत एकेंद्रियप्रायोग्याश्चत्वारिंशत् नैरयिकएक तिर्यग्प्रायोग्याद्विनवतिशतसप्तदशाधिकान्भगान् वर्जयित्वाशेषाम-नुष्यप्रायोग्यादेवप्रायोग्या षट्चत्वारिंशच्छतपचत्रिंशदधिकभगाना-पदसमुच्छत्तिसम्यग्दर्शनगुणे गुणस्थानेयेउत्तिष्ठन्तितेसम्यक्त्वत्रिके-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेप्राप्यते । चारित्रत्रयेदेशविरतौदेवप्रायोग्या-स्तत्रदेशविरतौअष्टाविंशतिप्रत्ययाअष्टौएकोनत्रिंशत्प्रत्ययाअष्टौएव-

षोडशभगाभवति । परिहारविशुद्धौअष्टाविंशतिबंधेअष्टौएकोनत्रिंशद्बंधेअष्टौ, त्रिंशद्बंधेएक, एकत्रिंशद्बंधएक- एवअष्टादशसामायिकछेदोपस्थापनीयेतेषुपूर्वोक्ताअष्टादश, -एकविधबंधसभवएक एवएकोनविंशति भगाप्राप्यते । यथाख्यातचारित्रेकेवलद्विकेनामकर्मबंधाऽभावात्तननामबंधभगाभवति ॥ १९५ ॥

टबार्थ—विकलप्रत्ययीभगा वैक्रियना भगा तिर्यंचना भगा टालीये समकितना उगन्या भगा ३५ पामीये, समकित ३ ज्ञान ३ अवधिदर्शनने विषे पामीये, चारित्र तीन देशविरतीने विषे देवनाप्रायोग्य १९ पामीये । यथाख्यातचारित्रे केवल २ ने विषे नथी नामकर्मना बंधना अभावथी ॥ १९५ ॥

देवेपरित्तबायर, तिरिअनरासेसयासुठाणभवा ।
भगासग्गणठाणे, नामबधस्सणेयवा ॥ १९६ ॥

टीका—देवेपरित्तबायरइत्यादि ॥ देवगतौबादरप्रत्येक एकेंद्रियप्रायोग्याश्चतुर्विंशतिद्विनवतिशतषोडशतिर्यग्प्रत्यया पंचचत्वारिंशत्सप्तदशाधिकभगा प्राप्यतेत्रयोदशसहस्राष्टशतपंचाशत् प्राप्यते । शेषासुमार्गणासुठाणभवा गुणस्थानभवाइत्यनेनगुणस्थानानियस्यामार्गणायायावतिनस्यामार्गणाया तावतएवभगाबाध्या.॥ नरकगतौएकेंद्रियप्रायोग्याश्चत्वारिंशत्विकलप्रायोग्या एकपंचाशत् तिर्यग्मनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यौपंचविंशतिनवसगौद्वौदेवप्रायोग्याअष्टादश, नैरयिकएक एकविधबंधसभव एक इतिएकशतत्रयोदशभगान्वर्जयित्वाशेषा १३८३२ भगानभवंति, मनुष्यगतिपर्याप्तद्वियजातित्रसकाययोगत्रयवेदत्रयकषायचतुष्टयचक्षुर्दर्शनशुक्ललेश्याभव्यसंज्ञि,आहारकलक्षणासुसर्वेनामबंधभगा प्राप्यतेकृष्णादिलेश्यात्रये-

एकवि बधसभवौद्वौभगौनभवत तेज पद्मलेश्यायाएकवि बधसभवोभग एक नप्राप्यतेशेषा प्राप्यते ॥ १९६ ॥

टबार्थ —देवगतिने विषे प्रत्येक बादरएकेंद्रिय प्रायोग्य भगा तथा तिर्यंच प्रायोग्य मनुष्य प्रायोग्य १३८५४ भागा पामीये । शेष मार्गणाये गुणठाणे जिणे भगा होवे जिणे मार्गणाये जेटला गुणठाणा होवे तेटला भागा जाणवा ॥१९६॥

अणहारेनिरयभवा, आहारगतणुभवायनोभगा।
मणनाणेसामईया, भगाअहनामउदयस्स ॥१९७॥

टीका—अणाहारेनिरयभवाइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणायानरकभव एक आहारकबधसभवौद्वौएकविधबधसभव एकइतिभगचतुष्टयवर्जयित्वाशेषा १३९४१ भगा प्राप्यते ॥ नारकप्रायोग्याआहारकद्विकप्रायोग्याभगानभवति, मन पर्यवज्ञानेसामायिकचारित्रसभवाएकोनविंशतिभगा इत्युक्तामार्गणासुनामबधभगा अथनामकर्मण उदयभगामार्गणासु ॥ १९७ ॥

टबार्थ —अनाहारकमार्गणाए नारकी प्रायोग्य अहारकशरीर प्रायोग्य भगा नथी, बीजा १३९४१ भगा छे । मन पर्यायज्ञानमध्ये सामायिकचारित्रमध्ये जे भागा छे । हवे नामकर्मना उदयना भगा कहे छे ॥ १९७ ॥

गुणठाणगउदयाओ, उदयसामित्तओयनेयवा।
गोएविमग्गणाए, भगागुणठाणपच्चईया * ॥१९८॥

* पाठान्तरम्

कम्मसवेहगथाओ, भगागुणठाणमग्गणेनेया।

टीका—गुणट्ठाणगउदयाओइत्यादि ॥ गुणस्थानकेषुउदया-इतिउदयस्थानानि तथा उदयस्वामित्वेयाप्रकृति यस्यामार्गणायाउदयेप्राप्यते तत्प्रकृतिसभवाभगा तस्यामार्गणायाज्ञातव्यास्ते-चअस्मत्कृतकर्मग्रंथग्रथत गुणस्थानकेषुमार्गणास्थानकेषुज्ञेया तत्रोक्तत्वात्इहनोक्ता तथापि विचारसारयत्रकतोनेया अस्य-यत्रकस्वोपज्ञमेवास्ति । विचारसारसूत्रगाथा तथा मदावबोधशिष्य-जनोपकारायटबार्थ तथा यत्रकसर्वद्वारसूचक तच्चावृत्तिरितिसवा-भ्यास स्वोपज्ञएवज्ञातव्यइति ॥ १९८ ॥

टबार्थ—गुणठाणाना उदयथी तथा स्वामित्वथी उदयना ५ भागा मार्गणाये जाणवा । गोत्रकर्मना ७ भागा छे, तेपण मार्गणाए गुणठाणानी रीते जाणवा ए भगमर्व ए वर्णीकृत स-वेध प्रकरणथी जाणज्यो ॥ १९८ ॥

बारसपणसट्ठिभगा, भगामोहस्सतहयपयत्ता ।
चुलसीसयसत्तुत्तरि, भेयापरिणामभेएण ॥ १९९ ॥

टीका—बारसपणसट्ठियाइत्यादि ॥

टबाथ—बारसे पासठ मोहनीना भागा छे ५२ चोवीसी तेने चोवीसगुणा करता थया १२४८ तेमव्ये सत्तर भागा मेळीये तेवारे बारसेने पासठ थाय । तिमज पदवर्ण चोरासीसो सत्योत्तहरि थाये, दसने उदये चोवीसी १ भगा २४ तेहने दसगुणा करता २४० पदवर्ण थाये । नवने उदये चोवीसी ६ तेहना भगा १४४ तेहने नवगुणा करता १२९६ पदवर्ण थाये ए रीते सर्वत्र लेज्यो ए भगा एटला जे कह्या ते स्यामाटे

जे परिणामने भेदे जे परिणामनो तरतमयोगवश तोपिण तर तमवव तोपण तरतमता थाये ॥ १९९ ॥

तेरसहस्सानवसय, पणयालानामबंधभंगाय ।
सत्तसहस्सासगसय, इगनवईउदयभंगाय ॥२००॥

टीका—तेरसहस्सानवसयइत्यादि गाथाद्वयसुगमपूर्वभंगाधिकारयारयाया यारयातत्वात् इहन यारयानम् ॥ अथग्रंथोपसंहारार्थं भव्यजीवानायथार्थागमप्रतीतिबहुमानार्थंचाह ॥२००॥

टबार्थ—नामकर्मनी तेरहजार नवसे पीस्तालीस नामकर्मनाबंधना भंगा थाय छे २३ ने बंधे ४ भंगा २५ बंधे २५ भंगा २६ ने बंधे सोल भंगा २८ ने बंधे नव भंगा २९ ने बंधे त्राणूसो अडतीस भंगा छे ३० बंधे ४६ सो इकतालीस भंगा छे ३१ बंधे एक भंगो छे, एकने बंधे एक भंगो छे, ते मिल्या तेरहजार नवसोपेंतालीस भंगा छे, उदयना नामकर्मना उदयना भंगा २०॥२० ने उदये एक भंगो छे, २१ ने उदये ४२ भंगा छे, २४ ने उदये इग्यार भंगा छे, २५ ने उदये तेत्रीस भंगा छे, छवीसने उदये ६०० भंगा छे, २७ ने उदये ३३ भंगा छे, २८ ने उदये १२०२ भंगा छे २९ ने उदये १८८५ भंगा छे, ३० ने उदये २९१७ भंगा छे, ३१ ने उदये ११६९ भंगा छे, नवमे उदये १ भंगो छे आठमे उदये १ भंगो छे, सर्व मिल्या सातहजार सातसोनेउ भंगा उदयना छे ॥ २०० ॥

एवसुअउदहीओ, नेयव्वसवत्थुविन्नाण ।
जनाऊणसुविहिआ, सच्चधम्मपयासंति ॥२०१॥

टीका—एवमुअउदही ओइत्यादि ॥ एवममुनाप्रकारेणयथागमरीत्याकेवलिज्ञानावबोधवेदितसर्वतत्त्वानावचनप्रमाणेनश्रुत आचारागादिगणिपिटकलोकालोकगतसर्वभावयथार्थोपदेशकपरमतत्त्वमार्गदर्शनप्रदीपसूत्रनिर्युक्तिभाष्यचूर्णिटीकापरपराऽनुभवागबोधगम्य नयनिक्षेपभगगमागाउदधिरिवउदधि श्रुतमेवोदधि तस्मात्श्रुतोदधित अनोपमाअबाधानेकानयथायज्ञानजलसचयसपूर्णद्रव्यास्तिकपर्यास्तिकोभयतट अनेकोत्सर्गापवादमार्गप्रवृत्तक्रियाज्ञानध्यानसद्दीप स्याद्वादानतगुणपर्यायद्रव्यानुयोगचरणकरणानुयोगगणितानुयोगधर्मकथानुयोगमहाकलश अनेकमत्यादिज्ञानश्रुतज्ञाननयगमपरिपाटीसापेक्षनदीसमूहविवृद्धमानसलिलाव अनेकालापकगाथोक्तियुक्तिहेतुऊर्म्मिसहस्ररम्य अभिनवानवत्रविशुद्धा यवसायोत्कर्षवृहत्कल्लोल जीवाजीवादिनवपदार्थगुणस्थानवस्तुनोमस्वरूपावभासनाऽसर येयज्ञानाध्यवसायरूपविविधरत्नराशिस्थानमृत श्रुतसमुद्रस्तस्मान्ज्ञात यसर्ववस्तु धर्मवर्माकाशपुद्गलजीवाग्निकायादिकनम्यविज्ञानविशिष्टनिर्मलकुनयनयाभासादिदोषरहितज्ञानज्ञात यद्वतिसत्रत्र, यत्स्वरूपनित्यानित्येकानेकास्तिनास्तिभेदाऽभेद यक्त यरूपकारणकार्यकर्त्रादिकारकसाधनसाध्यसाधकबाधकादिक ज्ञात्वासुविहिता शुद्धकार्यसाधनोद्यतासत्यधर्मशुद्धात्मस्वभावसर्वजीवसत्तास्थितसम्यग्दृष्टिदेशविरतप्राणिगणअद्धागृहीतसाधुसाधुसाध्यआचार्योपाध्यायैर्गीयमानअर्हद्भिरास्वादितसिद्धै सपूर्ण प्रागमतधर्मप्रकाशयति ॥ २०१ ॥

टबार्थ—एवसुकहिता ए रीते श्रुतसमुद्रथी जाणवो, सर्व वस्तुनो विज्ञान विशिष्टज्ञान ते विज्ञान, जे जाणीने सुविहित उत्तम बहुश्रुतसत्ययथाय धर्म जे वस्तुनो सभाव ते प्रकाशे उपदेश करे ॥ २०१ ॥

कत्थविवहारनओ, कत्थविनिच्छियनओपहाणयरो।
कत्थविसतीसंता, कत्थवियोगत्तणमुरुक ॥ २०२ ॥

टीका—कत्थविवहारनओइत्यादि ॥ श्रीमदर्हन्प्रवचनस्य-यापरपराकुत्रचित् व्यवहारनय प्रधान कुत्रचिन्निश्चयनय प्रधान-तर कत्थविसतीसतीइतिकुत्रचित्सतीविद्यमानासत्ताजीवस्वरूपा, द्वौकत्रचित्योग्यत्वमसत्ताभुरयापुद्गलद्रव्यस्यवर्णादीना योग्य स्वरूपा-सत्तातथाजीवस्याऽनन्तसंसारित्वरूपायोग्य वसत्ताइत्यादिपरिपाट्या-वस्तुस्वरूपप्रकाशनीयइति ॥ २०२ ॥

टबार्थ—जिनमार्गनी एह रीति छे जे किहाक व्यवहार-नय मुख्य कहे छे। किहाक निश्चयनय मुख्य कहे छे, जिहा काण तथा प्रवृत्ति तिहा व्यवहारनी मुख्यता छे। किहाक उतीसत्ता तेहज गवेषे, किहाइक योग्यता सत्ता गवेषे जिम आऊखा ४ नी सत्ता एक जीवने होवेनहीं परयोग्यता गवेषी छे ॥ २०२ ॥

तसव्वपिपमाण, सुअविबुहेहिचजसुएभणीय।
जेहिंपरपरनाण, तेसिनाणप्पहाणयर ॥ २०३ ॥

टीका—तसव्वपिपमाण इत्यादि ॥ तत्सर्वमपिवीतरागवा-क्यानुसारिपद्वचनतत्प्रमाणरार्थनाऽनाद्यत्वात्। सर्वभावानाएकसम-येनज्ञानात्, यस्य समयान्तरज्ञान तस्यतत्समयेकिंचित्अज्ञानभवति। तस्यवाक्ययथार्थनभवति। श्रीमद्वीतरागकेवलज्ञानवनासर्वमपि-प्रमाणएकसमयेनैवप्रत्यक्षावयोधात्यस्यवाक्ययथार्थं तद्वाक्यानुया-यिसर्वमपिप्रमाणश्रुतविबुधैर्बहुश्रुतैर्यत्श्रुतेपचागलक्षणेभणित कथित तत्रापिपरपरपराश्रुतज्ञान श्रीमत्सुधर्मगणधरपरपरावच्छिन्नज्ञान

तत्ज्ञान प्रधानतरयत आगमस्यनेविव्यपचमागें अत्तागमे अणतरागमे परपरागमे अत्थओअरिहताण अनागमे नाणहराण अणनरागमे गणहरासासाण परपरागमे सुत्तओगणहराण अत्तागमे गणहरसासाण अणतरागमे तस्ससीसाण परपरागमे 'तओसव्वे सिंपरपरागमे एव परपरा आचार्यपरपरयाआगत ज्ञानप्रमाण इतिज्ञेयम् ॥ २०३ ॥

टबार्थ—इत्यादिक कयु जे सव प्रमाण छे आम्नायवतने आ भासनमध्ये छे, श्रुतने विबुध जे दक्ष तिणे जे श्रुत पचागीमध्ये कयु ते जे पचागी विना आगमना अर्थ कहे ते अज्ञाण छे, भगवती तथा नदीसूत्रे कयु छे अने आगमना ३ भेद छे आत्मागम, अननरागम, परपरागमतेमध्ये जबूस्वामी ते पछे सूत्रे परपरागम कह्यो छे ते माटे जे परपराये ज्ञानवन थया तेहनो ज्ञान प्रधानतर जाणवो, बीजा सर्वना ज्ञान ते अज्ञान छे ॥ २०३ ॥

नाणकिरियाहिमुक्खो, तत्थविनाणपहाणतरगच ।
तम्हानाणब्भासो, कायव्वोमुक्खअथ्थीहि ॥२०४॥

टीका—नाणकिरियाहिंमुक्खो इत्यादि ॥ ज्ञानक्रियाभ्यामोक्ष इत्यागमवचन प्रामाण्यात्ज्ञान एकातेननमोक्षसाधक यद्ज्ञान तदेवसत्य यदाश्रवत्यागोऽत तथा चावश्यकनिर्युक्तौजहाखरोचदणभार वाही, भारस्सभागीनहुसुग्गईए, एव खुनाणीचरणेणहीणो,नाणस्समागीनहुसुग्गईए(१) इत्यादि क्रियामुख्यवाक्य तथापि श्रीदशवैकालिकसूत्रे पढमनाणतओदयाएव चिट्ठइसव्वसजये अन्नाणिकिकाही किंवा गहीउच्छेपमीवगा ॥ १ ॥ जीवोविवियाणइ

अजीवोविवियाणइ, जीवाजीवेवियाणेइ सोयनाहीउसयम ॥ २ ॥ अत्रापिज्ञान मुख्य, श्रीभगवत्यासीलसयसुअसेय इतिचतुर्भंगी-व्याख्यानेश्रुतसपन्न विशेषतोमोक्षसाधक श्रीसूयगडागेअहगडा-इसुज्जाति, अणमण्णसकम्मुणा, उवलित्तेवियाणिज्जा, अणुवलित्तेवि-वापुणो ॥१॥ एतेहिंदोहिंठाणेहिं ववहारोनविज्जति एतेहिं दोहिं-ठाणेहिं अणायारतुजाणइ ॥ २ ॥ इत्यादि आगमवचनात्ज्ञान क्रियारुचियुक्त सत्यतत्रापिज्ञानप्रधानतर यत नाणाहिओ वरतर-हीणोविहुपवयणपभावतो, णयदुक्करकरतो, सुदृढविअप्पागमोपुरिसो इत्युपदेशमालावाक्यात् तथा उपदेशपदप्रकरणेक्रियाकृत कर्मक्षय मडूकचूर्णकल्प पुनरपिकारणात्प्रादुर्भवति ज्ञानभावनयाप्राप्तध्या-नानुभवबलात् कृतकर्मक्षय मडकचूर्णभस्मतुल्य सर्वथाअभावरूप भवति । तेनज्ञानप्रधानतर अत्यतमुख्यतन आत्मन स्वरूपे-ज्ञानप्रधान तेनसाध्येपिज्ञानप्रधान तम्हानाणभ्भासोतस्मात्-ज्ञानाभ्यास कर्तव्योमोक्षार्थिभि यथासूत्रोपयोगीसप्ताष्टभवेमुच्यत-एव ॥ अस्यविचारसारप्रकरणस्यकरणेकारणमाह ॥ २०४ ॥

टबार्थ ---तथा मोक्षमार्ग ज्ञानक्रियाये छे, तेमध्ये ज्ञान प्रधान छे दश विकालिके कह्यु छे जे पढमनाणतओदयाएव-चिठ्ठइसव्व सजए, अन्नाणीकिकाही किंवाहिओछेयपावग १ तथा उत्तराध्ययने नादसणस्सनाणनाणेणविणानहुति चरणगुणा, अगुण-स्सनत्थिमुक्खो नत्थिअमुक्कस्सनिव्वाण ॥ १ ॥ तेमाटे आत्मार्थी जीवे ज्ञानाभ्यास करवो, सर्व प्रकारे ते कारणे ज्ञान विना मोक्ष न निपजे, तथा आत्मानो मुख्य गुण ज्ञान छे ॥२०४॥

रायणपुरवत्थव्वो, सड्ढोनामेणसतिदासोत्ति ।
तेणगुणमग्गणासु, सव्वेभावायसगहिया ॥ २०५ ॥

टीका—राधणपुरवत्थव्वो इत्यादि ॥ राधनपुर वास्तव्य श्राद्ध श्रद्धायुक्त नाम्नाशातिदासइतिनाद्विजप्त्या गुणस्थानेषु तथा मार्गणास्थानेषु सर्वेभावा मूलोत्तरबंधादिरूपाद्वारशतसंख्याका प्रथमसंगृहीता सम्यक्प्रकारेणगृहीतागृहीयद्वाइति ॥२०५॥

टबार्थ—ए विचारसारप्रकरण तेहना अधिकार बे छे, तिहां पहिलो अधिकार गुणठाणानो छे बीजो अधिकार मार्गणानो छे ए ग्रंथ राधनपुरवासी श्रद्धावंत शातिदास नामे गृहस्थ तिणे ए द्वार सर्व गुणठाणे तथा मार्गणाइ ए भाव संगृह्या ॥ २०५ ॥

तस्साणुग्गहकज्जे, गाहारइआविचारसारस्स ।
आगमगमेणसुद्धा, सापमाणासुगुरुवाणी ॥२०६॥

टीका—तस्साणुग्गहकज्जे इत्यादि ॥ तस्यानुग्रहकार्ये तदनुग्रहार्थमित्यर्थं गाथारचिता विचारसारस्यआगमगमेणइति आगमगणधरपूर्वधरविरचितस्यगमज्ञान तेनशुद्धानिर्दोषायावाणीवाक्यपद्धति सासद्गुरुवाणीइतिज्ञेय आधुनिकजीवोपकारार्थं बंधादिद्वारशतप्रमाण तथाशतकमितिसंज्ञागुणस्थानशतकमार्गणास्थानशतक इत्यधिकारद्वयरूप विचारसारास्यप्रकरणनिर्मापितं पंडितदेवचंद्रगणिनाइति अथग्रंथकार स्वकीयपरंपरादर्शयन्नाह ॥ परशुद्धपरंपरागतस्यवचनप्रमाण तदर्थपरपरोदश तत्रश्रीमन्वर्द्धमानशासनाधार श्रीगणधर सुधर्मास्वामीतत्पट्टानुक्रमेण अविच्छिन्नपरपरायातएकोनचत्वारिंशत्तमोमहापुरुष श्रीमदुद्योतनसूरि तत्पट्टप्रभावकश्रीवर्द्धमानसूरि येनअनेकशोधनाप्तजिनपदावदात तत्प्रदत्तसूरिमंत्रप्रत्यक्षीकृते द्रादिदेवगण सर्वेश्वरगशा-

लादिशतशास्त्ररचनाप्रवण श्रीजिनेश्वरसूरि प्राप्तखरतरविरुद, तत्पट्टानुक्रमायात श्रीजिनचद्रसूरि, तत्पट्टेनवांगीवृत्तिउपपातिकोपाग पचाशकादिवृत्तिकरणप्रागाभास्करावदत, तत्पट्टाधनेककर्मग्रथभाष्यादिरचनारचितयथार्थक्रियामार्ग श्रीमज्जिनवल्लभसूरिस्तत्पट्टपूर्वाचलभानुकल्प गणधरसार्द्धशतकादि धर्मरहस्यादिग्रथविरचनारचितयथार्थमार्ग श्रीमद्जिनदत्तसूरि तत्पट्टे मणिधर श्रीजिनचद्रसूरि तत्पट्टसाठिसोप्रकरणकारक श्रीनेमिचद्रभट्टाक्कसुत श्रीवीतरागमार्गयथार्थपरीक्षाकपोपलोपमान षट्त्रिंशत् वादस्थलकारक श्रीजिनपतिसूरि तत्पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिस्तत्पट्टे श्रीजिनप्रबोधसूरि तत्पट्टे श्रीजिनचद्रसूरि तत्पट्टे श्रीसिद्धाचलखरतरवसहिनेमिप्रासादप्रतिष्ठापक श्रीजिनकुशलसूरि तत्पट्टे जिनपद्मसूरि तत्पट्टे जिनलब्धिसूरि तत्पट्टे श्रीजिनचद्रसूरि तत्पट्टे जिनोदयसूरि तत्पट्टे जिनराजसूरि तत्पट्टे जिनभद्रसूरि तत्पट्टे जिनचद्रसूरि तत्पट्टे जिनसमुद्रसूरि तत्पट्टे जिनहंससूरि तत्पट्टे जिनमाणिक्यसूरि तत्पट्टे इत्यादि दर्शयति ॥ २०६ ॥

टबार्थ —विचारि चोखा कर्या तेना अनुग्रहने अरथे गाथा रची विचारसारनी आगमनी रीते जे शुद्ध ते गुरुनी वाणी प्रमाण छे ॥ २०६ ॥

सुविहियखरयरगच्छे, युगवरजिणचदसूरिसाहाए ।
जिणवयणसारपवणा, उवज्जायाराजसारक्का ॥१०७॥

टीका—सुविहीखरतरगच्छे इत्यादि ॥ श्रीमत्वज्रस्वामिपरपरानुगतत्वात्सुविहित श्रीमच्चद्रकुलेवज्रस्वामिशाखायाकोटिगणान्वयेयथार्थमार्गप्रकाशनचैत्यवासवारणात् सम्प्राप्तखरतरविरुद-

द्यनेकतीर्थचैत्यप्रतिष्ठाप्राप्तयुगप्रधानाभिधान तस्यशाखायाश्रीमद्-
पुण्योपाध्यायशिष्यश्रीसुमतिसागरोपाध्यायशिष्यवाचकोत्तमसाधुरग-
वाचकशिष्य जिनवचनसारेप्रवणाइवप्रवणाउपाध्यायाजानुदयकी-
द्धागादिसद् ग्रथकरणअनेकचैत्यप्रतिष्ठास्थापितानेकजिनबिंबालया
श्रीराजसारारया ॥ २०७ ॥

टबार्थ—सुविहितयथथाय जिनआणाअनुसारी सामाचारी
जेहनी एहवो खरतरगछ छे, तिहा युगप्रधान श्रीसद्गुरु श्री
जिनचद्रसूरि थया, तेहना शीष्य परपरामध्ये श्रीजिनचद्रसूरिना
शिष्य महोपाध्याय पुण्यप्रधानजी, तेहना शिष्य श्रीसुमतिसारजी
तेहना शिष्य वाचकमुख्य श्रीसाधुरगजी तेहना शिष्य मुख्य
श्रीजिनवचननो जे सारतत्त्व तेहमे प्रवीण उपाध्याय श्रीराज-
सारजी एहव नामे थया ॥ १०७ ॥

तस्सीसनः[illegible] [illegible]रासिरिनाण वम्मनामेण ।
तेसिसीसाधीरा, दीपचदाउवज्झाया ॥ २०८ ॥

टीका—तस्सीस इत्यादि ॥ ततशिष्याज्ञानतत्त्वावबोध
धर्मचारित्रार्पनधोरावारमना श्रीमत्ज्ञानधर्मोपाध्याया तेषा-
शिष्या श्रीशत्रुजयेसमवसरणमेरुप्रमुखानेकचैत्यश्रीराजनगरेसहस्र
फणादिअनेकसत्तायप्रतिष्ठाकृतात्मसाफल्या श्रीदीपचद्रोपाध्याया
तेषाशिष्येणइदविरचितमितिसमाप्त ॥ १०८ ॥

टबार्थ—तेहना शिष्यज्ञानधर्म जे चारित्र तेहना धरण-
हार श्रीउपाध्यायज्ञानधर्म एहवे नामे थया, तेहना शिष्य धीर
उपाध्याय श्रीदेवचद्रना एहवे नामे शीष्य थया ॥ १०८ ॥

तेसिंसीसोअज्जत्थ, तत्तरसवायगोजिणाणरुई ।
गणिदेवचदनामा, तेणविहीयइमसुत्त ॥ १०९ ॥

टीका—तेसिंसीसोअज्जत्थ इत्यादि ॥ तेषाशिष्य अध्यात्मतत्त्वरसास्वादनरसिकजिनागमाभ्यासप्रमाणजिनाज्ञारुचि गणिदेवचद्रइतिनाम्नातेनविहितइदसूत्रम् ॥ २०९ ॥

टबार्थ—अध्यात्मतत्वनो रसिक जिनागम प्रमाणतत्व स्वरूपनो कथक आगमसार १ ज्ञानसारतत्वावबोध प्रमुखनो ग्रथनो रचवो आत्माने हित करतो जिनाज्ञारुचि देवचद्रगणि एहवे नामे तिणे ए सूत्र रच्यो गाथा त्रवभ यनी बने उपकार काजे ॥ २०९ ॥

रसनिहिसजमवरिसे, सिरिगोयमकेवलस्सवरदिवसे।
आयत्थउद्धरीयो, समयसमुद्दाओरुद्दाओ ॥ २१० ॥

टीका—रसनिहिसजमवरिसे इत्यादि गाथासुगमा ॥ अथात्रग्रथे मति यामोहातछद्मस्थदोषेणकिंचित् नावगत तत्गुणज्ञा स्वयसशोध्यकथयतु इतिप्रार्थना ॥नद्दर्शनार्थंगाथारचयति॥२१०

टबार्थ—रस ६ निधि ९ सयम १७ इटले १७९६ सत्तरसेछनुये वरसे श्रीगौतमकेवलज्ञान पाम्या ते दिवसे एटले कार्तिकसुदि एकम ज्ञुहारसटारीपर्व दिवसे आत्मानो बोध करवाने उपर्यो, समय कहेता सिद्धात जे समुद्र तेहथी सिद्धात समुद्रनो पार पामवा दुर्लभपर ए अभ्यासेज कल्याण छे ॥ २१० ॥

जिणसासणसमयन्नू, भवतिगुणगाहिणोयसव्वेसिं।
तेअपढतिसुणतिअ, लभ्भतिनाणलद्धीओ ॥२११॥

टीका—जिणसासनसमयन्नू इत्यादि ॥ जिनशासनसमय-आगमतत्त्वज्ञा वेदितजैनागमरहस्यास्तेगुणग्राहिण एव नदोषग्रह-णरसिका इत्यनेनयत्किंचित्मद्बालचापल्यमत्तेन प्रेक्षते इतितेच-जैनागमतत्त्वरसिका पठतिइतिस्वयपठतिपरपाठयति शृण्वतिचते लभन्तेज्ञानलब्धी इति तेनज्ञानार्थिन विचारसारग्रन्थप्रकरणअत्या-दरेणअभ्यस्यतुइतिप्रार्थनाएव ॥ अथनमयेदस्त्वमनीषयाविलसित-किंतुपूर्वाचार्यपरपराग्रथाऽऽज्ञयाननउद्धृत्यआधुनिकजीवानाहिताय-सगृहीत इति दर्शयन्नाह ॥ २११ ॥

टबार्थ—जे जिनशासनना समय आगम तेहना जे जाण छे तेह जीवसमुहो जीवना गुण गवेषे, परछिद्रग्राही न होवे, गुणग्राहीपणो ते आमाने हित, ते जीव जे मडरी न हुवे ज्ञान रसिया होस्ये, ए ग्रथ भणस्ये तथा सुणस्ये ते ज्ञानलब्धि निरमल पामशे ॥ २११ ॥

कम्मपयडीअसगह, सिवसम्मयसुजिणवल्लहोसूरी ।
देविंदसूरिपमुहाण, वयणदट्ठूणइयभणिय ॥२१२॥

टीका—कम्मपयडीअसगह इत्यादि ॥ तत्राग्रहणीयपूर्वात्-उद्धृत श्रीमत्भद्रबाहुस्वामिनाकम्मपयडीसूत्र तच्चूर्णिश्चकृताश्रीदेव-र्द्धिगणिक्षमाश्रमणैस्तट्टीकाचकृताश्रीमलयगिरिसूरिणा इतिसूक्ष्म-भावप्रकाशनपटुश्री कम्मपयडीसूत्र तथाचपुन सगहत्तिपचस-ग्रहाख्यप्रकरण श्रीचदमहत्तराचार्यकृत तथा श्रीशिवशर्मसूरिकृ-ताश्चबृहत्कर्मस्तवादयोजीर्णकर्मग्रथा तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृत-कर्मग्रथा तथा श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतकर्मविपाकप्रमुखा कर्मग्रथा इत्यादि सन्मुनीनावाक्यवचनदृष्ट्वाइयइतिइद विचारसाराख्यभ-

णितकथितनस्वमत्याश्रीमत्भगवतीप्रज्ञापनादिसदागमपरिपाट्या-निवेदितसर्वनाप्यागमवाक्यप्रमाण, आगमानुसारिमतय आराधका शेषाणास्वमतिकल्पितकल्पनाप्रत्तिमतानास्त्यागधकत्वम् ॥ अत वीतरागागमरहस्यज्ञानतत्त्वभावनाभ्यासतत्पराभवतु ॥ साम्रत-जिनागमस्यचिरकालाऽवस्थायित्व भवतुइत्याशीर्वाक्यपूर्वकउपदि-शन्नाह ॥ २१२ ॥

टबार्थ —कम्मपयडी, अग्राहणीय पूर्वनो उद्धार छे तथा पचसग्रह श्रीचदमहत्तरसूरिनो कीधो महाग्रथ छे तथा शिव सूरिकृतभाष्य छे तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृत कर्मग्रथ छे, तेहनी टीका मलयगिरिसूरिकृत छे तथा देवेन्द्रसूरिकृतकर्मग्रथ छे, तेहनी टीका पण श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत छे इत्यादि पूर्वसूरिना जे वचन ते सर्व जोइने तेहने अनुसारे ए विचारसारग्रथ रच्यो छे ॥ २१२ ॥

जाजिणवाणीविजयइ, तावथिरचिट्ठउइमवयण ।
नूतणपुरम्मिरइय, देवचदेणनाणट्ठ ॥ २१३ ॥

इतिश्रीविचारसारप्रकरणसमाप्तम्

टीका—जाजिणवाणीविजयइ इत्यादि ॥ यावत्जिनस्य वीतरागस्यवाणीवचनपद्धति विजयतितावत्इदवचनस्थिरत्वेनाति-ष्ठतु श्रीहरलारदेशेनूतनपुरेन यनगरेरचित ज्ञानप्रकाशकरणायवा-चनापृच्छनापरिवर्त्तनाधर्मकथानुप्रेक्षादिस्वाध्यायकरणेचसवरनिर्ज-रामाहात्म्यस्वाध्यायात्परिणामनैर्मल्यपरीणामनेर्मल्यात्यथार्थाऽनुभव यथार्थानुभवात्स्वरूपविश्रांति स्वरूपविश्रांत्याध्यानैकत्व, तेनच-

अभिनवकर्माऽग्रहणनापूर्वककर्मक्षय ताभ्याचपरमसिद्धि अव्याबाधसुखप्राप्ति इति ॥ सवणेनाणेविन्नाणेपच्चक्खाणेसयमे ॥ अणण्हवेतवेचेव । वोहाणेअकिरीयासिद्धा ॥ १ ॥ इतिभगवतीसूत्रप्रमाणनयाश्रुताभ्यास करणीय सर्वभव्यै, देवचद्रेणज्ञानार्थस्वपराबभासनार्थपचमकालाधकारमुग्धजनप्रबोधनभानुश्रीदीपचद्रसद्गुरुचरणचचरीकेणरचितगाथाबवेनयत्रकन्यासादिनाअक्षरविन्यासीकृत, इतिश्रीदेवचद्रगणिविरचितास्वोपज्ञविचारसारटीकासमाप्ता ॥ २१३ ॥

टबार्थ —जासीमाजिनवाणीजयवर्तीवर्ते, ता सीम थीरहो, ए ग्रथना वचननी रचना, ए ग्रथनी पूरणता नूतनपुर नवानगरमध्ये पडीत देवचद्रगणि पोताने तथा परने पण ज्ञान विशेषवृद्धिने अरथे करी ॥ २१३ ॥

जयतात्सच्चिदानद–महोदयसमाश्रित ।
वर्द्धमानजिनाधीशो, भव्येप्सितमहामणि ॥ १ ॥

सुदीप्तोज्ज्वलयश कीर्त्ति–प्रोज्ज्वलीकृतविष्टप ।
लब्धिसिंधुर्जगद्बधु पातुगौतमसद्गुरु ॥ २ ॥

श्रीमत्सुधर्म्मस्वामी, जबूप्रभवादयोमुनिवरिष्ठा ।
वाचकवशप्रभवा, भव्यानाश्रेयसेसतु ॥ ३ ॥

क्रमात्खरतरेगच्छे, कुलेचाद्रेगुणाकरा ।
श्रीजिनचद्रसूरीशा अभूवन्मुनिनायका ॥ ४ ॥

तदन्वयाब्धिसद्रत्ना, राजसाराह्ववाचका ।

जगज्जनितबोधाय, तेषामनेकगच्छिनाम् ।
विनेयानामनाथानां, देवचन्द्रा श्रुताढ्या ॥ ८ ॥
स्वान्यपोरपकाराय, देवचन्द्रेण भाषिता ।
विचारसारप्रकरणे, गुरोपदेशविनिर्मिते ॥ ७ ॥
मतिस्वल्पराजलाभाद्या, श्रुतान्यासवशाद्या ।
ज्ञानाद्दृशाद्दसाद्राज, प्रमोदविजयाय बोधाय ॥ ८ ॥
यद्यत्रिमन्दमतिना, सिद्धान्तविरुद्धमिह किमपि शास्त्रम् ।
विद्वद्भिस्तत्त्यज्यं, प्रसादमादाय तद्दशोध्यम् ॥ ९ ॥
यत्पुण्यप्रतिरचना, कृत्वेमामर्जितमुत्तमम् ।
तेनश्रीजिनधर्मे, दृढचित्ता सन्तु भव्यजना ॥ १० ॥
अर्हन्नोमंगलसिद्धा, साधवोधर्मआर्हतम् ।
रत्नाद्वादशसारस्थान, कल्याणमुत्तमंगलम् ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीविचारसारप्रकरणटीकासमाप्ता ॥

अर्थ—इतिश्रीविचारसार मूल टीका टबा सर्वे सम्पूर्ण थयो. ॥ मुकाम पेथापुरमध्ये आचार्य महाराज ॥ श्री ५ ॥ बुद्धिसागरजी महाराजना हस्तक हजुरमा रहीने छपाव्यो छे की० छगीया जेठालाल धनिलाल संवत् १९७३ प्रथम भाद्रव मास कृष्णपक्ष ९ दीने चन्द्रवासरे सम्पूर्ण लिख्यो छे ॥ श्लोक संख्या ॥ ४५०० ॥

श्रीमद् देवचंद्र द्वितीय भाग अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१	३	चतुदप	चतुदशु
,,	४	जिप	जीप
,,	१९	१६	∅
२	११	तिष्टत्य	तिष्ठन्त्य
,,	१४	शुद्धयकर्ष	शुद्धयपकर्ष
३	६	निश्रे	नि श्रे
,,	८	सहस्वा	सहआस्वा
,,	११	वर्त्तत	सहवर्त्तत
,,	१५	स्थानन	स्थान
,,	,,	सम्यग	सम्यग्
४	११	गठि	गठि
,,	१९	दवाल्न	दवानल
,,	२२	देश	देस
,,	,,	मिठस्स	मिच्छस्स
५	२	मुहूर्त्तक्या	मुहूर्त्तिक्या
,,	३	त्रिमिपे	त्रिमीप
,,	१८	समस्ती	समस्ति
६	२	इठतो	इच्छतो
,,	४	दिठी	दिट्ठी
,,	११	सच्छपति	सयच्छति
,,	१५	इत्पअ	इग

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि
"	१९	विशुद्ध	विशुद्धय
७	४	पुनवि	पुनर्वि
"	६	तारिस्य	तारितस्य
"	२३	पतणा	पतृणा
८	१	"	"
"	६	एतानिएतानि	एतानि
"	१२	नि,शत्ति	निशत्ति
९	२३	युगप	युगपद्
"	२४	माया	माया
"	"	युगप	युगपद्
१०	२४	दसनन	दत
११	२०	त्तिस्र	त्तिस्र
१२	९	सकासा	सकाशा
"	१६	ध्यान	ध्यानं
"	२३	ध्याययन्	ध्यायन्
१३	१	शैलेश	शीलेश
"	८	गच्छद्	गच्छन्
"	११	चूर्णो	चूर्णौ
१४	११	हेतुद्रा	हेतुद्वार
१५	१०	तन	तम
"	"	चतुपष्टि	चतु पष्टि
१६	१६	अपमत्तत्तासत्तठ	अपमत्तता सत्तष्ठ
"	१८	चवेत्ति	चेवेति
"	"	भेदा	भेद

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६	१८	भेदा	भेद
"	१९	"	"
"	२२	अमि	आमि
१७	२	निवेद्यते	निवेद्यन्ते
"	"	कर्मण	कर्मणाम्
"	३	जीव	जीव
"	८	प्रमनाना	प्रमत्ताना
"	१२	मति	मत्ति
१८	१३	सम्यक्त	सम्यक्त्व
"	१६	बध्नाति	बध्यते
१९	७	सख्या	सख्या
२०	२	ह्यस्सा	ह्यसा
"	३	दिठी	दिट्ठी
"	३	इति	इति
"	४	नरायुदे	नरायुर्दे
"	१९	तिर्यच	तिर्यच
"	२३	सगदिठ	सगसट्ठि
"	"	तेवट्ठि	तेसट्ठि
"	२४	वन्ना	वन्ना
२१	७	नरायुलक्षण	नरायुर्लक्षण
"	१६	एतावतेव	एतावनैव
२२	१	तेवठि	तेसट्ठि
"	८	देवायुबन्धन्	देवायुर्बन्धन्
"	२३	तेजस	तैजस
२३	१४	प्रचला	निद्रानिद्रा

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३	१७	तेजस	तैजस
२४	१	भवति	भवति
२५	१५	उच्चैगोत्र	उच्चैर्गोत्र
२६	९	सप्रराय	सपराय
२७	१	नीश्चै	नीचै
२८	१८	तिग	तिगे
,,	२३	आयुकर्म	आयु कर्म
३१	१९	ज्झा	जा
,,	२०	१६	१४
३२	१२	बन्यते	बन्यन्ते
३३	१	अटण्ह	अट्ठण
,,	६	सभान्यते	सभान्यन्ते
३४	१३	द्विक	द्विकम्
,	१५	उदयोभवति	भवति
,,	२३	पद्यत्ते	पद्यते
३५	२१	पद्यते	पद्यन्ते
३६	७	ब ग्या	बद्धा
,,	,,	चतुर्षु	चतसृषु
,,	१०	मनुजापूर्वी	मनुजाऽनुपूर्वी
,,	१२	दृष्टयातात्	दृष्टयन्तात्
३७	१	तस्तु	तास्तु
,,	२	इग	सग
,,	१९	सठि	सट्ठि
,,	,,	सठी	सट्ठी

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३८	३	नीपते	नीयन्ते
"	७	तिर्यगति	तिर्यग्गति
"	२१	प्रमादायत्वात्	प्रमादायत्तत्वात्
३९	६	भवति	वति
"	१५	सज्वल	सज्वलन
४०	१९	"	"
४१	२२	पञ्चशीति	पञ्चाशीति
४२	१५	नत्रय	नव
४३	५	स्त्यानद्धयुदये	स्त्यानद्धर्युदये
"	२१	अटार	अट्ठार
४४	२२	सहाय्यात्	साहाय्यात्
"	२३	साहायात्	"
४५	३	नव च न	न वचन
"	२१	वेयणीस्सय	वेयणीयस्स
४६	१	चतुर्ष्वपि	चतसृष्वपि
"	१७	सठी	सट्ठी
"	"	"	"
"	१९	"	"
४८	८	देसि	देस
"	१६	नामोदयो	नामुदयो
"	२१	नीश्चे	नीचे
"	२२	"	"
"	२३	एव	एव
"	२४	टीकाइय	टीकाया

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि.
४९	१९	दीयते	दीर्यते
५०	१०	वेदनी	वेदनीय
५१	१९	ओघत	ओघतो
,,	२१	थीणद्धी	थीणद्धी
५२	१०	उपशात	उपशान्त
,,	,,	अतुरया	अनुरया
,,	११	कयावत्	यावत्
,,	१५	चरिमद्विके	चरमद्विके
,,	१६	यु नाम	युर्नाम
५३	१	शमनात	शमनात्
,,	१४	पुण	गुण
,,	१५	सत्ता आठ कर्मनी छे	✓
५५	१	इगचत्तससय	इगचत्तसय
,,	७	चत्वारिंशशत	चत्वारिंशच्छत
,,	१३	,,	,,
,,	१५	बद्धायु	अद्धायु
,,	१६	चत्वारिंशशत	चत्वारिंशच्छत
,,	१७	कुल	कूल
,,	,,	माउ	मान
,,	२१	क्षयोपसमकित	क्षयोपशमसमकिती
५६	३	वज्या	वर्ज्या
५७	८	पट्क	पट्क
,,	१२	क्षयणा	क्षपणा
,,	१५	पचासीति	पचाशीति

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
५७	१६	पचासीति	पञ्चाशीति
,,	१७	सप्तति	सप्तनिं
५९	६	नवापि	नवानामपि
,,	१०	मैव	मेव
६०	८	उपसम	उपशम
६१	१	टा णाणि	ठाणाणि
,,	२	सुहुमज्ज	सुहुमजा
,,	१२	सज्वलनोमा	सज्वलनोमानखपोवेवेवारे
६२	६	युनव	युरेव
,,	७	माम्मिति	नामम्मित्ति
,,	११	सता	सत्ता
६३	७	केद्रिय	केन्द्रिय
,,	१६	सार	सारस
,,	१७	द्विधा	द्विधा
६४	२	पर्याति	पर्याप्ति
,,	३	येच	याच
,,	,,	पुद्गला	पुद्गलान्
,,	७	परिणामय्य	परिणमय्य
,,	१०	पट	षट्
,,	१५	सर्वानि	सर्वाणि
,,	१६	भवनि	भवन्ति
,,	,,	बादरे	बादरै
,,	२५	लक्ष्यय	लक्ष्यप
६६	३	विशेतर	विशेषतर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
६६	५	अप्प	अल्प
,,	१०	निजरा	निर्जरा
६७	३	दुगि	दुग
,,	५	मिच्छ	मिच्छि
,,	१८	समुग्वात	समुद्घात
,,	२१	वीर्यो	ॐ
,,	२२	त्रिविध	स्त्रिविध
६८	१	द्वीर्य	द्वीर्य
,,	२	स्तथा	तथा
,,	५	व्नवहारोतथा	व्यवहारस्तथा
,,	६	चर्यते	चर्यते
,,	१७	कर्मणोर्नपेक्ष	कर्मणाऽनपेक्ष
,,	२२	तिष्टति	तिष्ठति
६९	३	पुसामपि	पुसामपि
,,	१०	निवृ	निवृत्त
,,	१२	चतुर्विधो	श्चतुर्विधो
७०	१२	योगा	योगा
७१	८	वचनान्	वचनरा
,,	१६	विभग	विभगाऽ
७२	३	चक्षुअचक्षुअवधि	चक्षुरचक्षुरवधि
,,	५	दृष्टन्या	द्रष्टव्या
,,	८	सम्य	सम्यग्
,,	१०	प्रम	प्रमत्ताऽ
,,	१३	केवली	केवलि

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
७२	,,	केवली	केवलि
,,	१६	मत्त्यादीना	मत्यादीना
७३	२१	मारभते	मारभ्यते
,,	,,	वोचत्वार	वश्चत्वार
,,	२३	गृहेण	ग्रहेण
७४	३	माव्यस्था	माव्यस्थ्य
,,	४	गोष्टा	गोष्टा
,,	११	पन्नान	पादान
,,	१४	कप	कपस्य
७४	२०	हेतुन्	हेत्रन्
,,	२२	चतुभि	चतुर्भि
७६	७	हेतु	हेतू
,,	८	लक्षण	लक्षण
,,	९	द्वादश	द्वादशकम
७७	११	विंशतिर्वे	विंशतिर्वे
,,	,,	असत्या	असत्य
,,	,,	,,	,,
,,	१९	दशमे	दशे
७९	१	मिच्छना	मिच्छत्ता
,,	८	स्नाव	स्नावन्
,,	९	पावद्याग	पावद्योग
,,	१५	अ रति	अविरति
,,	२१	कपाया	कपायान्
८०	१४	लोभाख्य	लोभाख्य

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
८१	७	दृष्ट्य	द्रष्टव्य
"	१९	नियदि	नियट्टि
"	२०	किलाटा	किलट्ठा
८२	१२	व्रजति	व्रजन्ति
८४	१०	समुलिल्ला	समुल्लिल्ला
८५	१६	कषाय	कसाय
"	१८	सगृहीत	सगृहीत
"	२०	युषि	यूषि
"	"	त्हास्यादि	ह्रास्यादि
"	२३	पर्याप्तिनाम	पर्याप्तिनाम
८६	१	सगृहीत	सगृहीत
"	२	लेश्या	लेसा
"	४	गृहणेन	ग्रहणेन
८८	१०	सगठ	सगट्ठ
"	१५	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शन
८९	२२	भा	भाव
९४	२३	सम्यग	सम्यग्
९७	५	द्वदशम	द्वादश
९८	१०	ऊजय	अजय
"	१२	उपशातमोह	उपशाशान्तमोहक्षीणमोह
९९	१६	अयते	अयते
"	"	सम्यग्	सम्यग्
१००	१०	तिग	तिगतिग
"	११	इग	इगइग

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१००	१३	प_	पद
१०१	१५	सभवि	सभविसमवि
„	१६	तीसही	तीसहीया
„	१९	नव	नव,
१०२	१	रयणरय	रयणक्ख
„	२०	विंशन	विंशन्
१०३	४	मुहर्त्त	मुहूर्त्त
„	४	किंवसिया	किंचिसिया
„	७	अपज्झत्ता	अपज्जत्ता
„	२२	तदेव	तहेव
१०४	२	पर्याप्ताअ	पर्याप्ताऽ
„	„	मिथ्यात्वे	मिथ्यात्वे
„	„	पृथ्वि	पृथ्वि
१०५	१	वशान्	वशान्
„	४	वस्थनो	वस्थातो
„	७	अजयत्त	अपज्जत्त
„	„	भवन्ति	भवति
१०६	११	दुविहा	दुविहो
„	२२	तिरिस्का	तिरिक्खा
१०७	३	ना	नो
१०८	१३	गामि	गमि
„	२०	दशमे	दशे
१०९	१३	अद्द	अद्द
„	१७	द्वार	द्वार,

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
११०	३	अतमुह	अन्तर्मुहू
"	७	शुक्ल	सुक्क
"	८	मट्ट	मद्द
"	२२	अट्टम्मि	अट्टम्मि
१११	१	"	"
"	११	शासो	सासो
"	१८	वेरग्ग	वैरग्ग
११२	३	दोप	दोस
११३	२०	देश	देस
"	२२	चउज्झेओ	चउज्भेओ
११४	२१	व्युछिन्न	व्युच्छिन्न
११५	१२	चतुर्विंशरपि	चतुर्विंशतिरपि
११६	१२	सामायेन	समायेन
"	१६	श्रद्दधत	श्रद्दधत
"	"	छेदा	छेदो
११७	१२	मोकृष्ट	मोत्कृष्ट
११८	२		
११९	६	ख्यातो	ख्यात
"	१५	दडक	दटक
१२१	८	दीना	दीना
"	१४	चतुशीति	चतुरशीति
"	१५	तेजो	तेज
१२२	१	पचेदि	पचेंदि
"	२	नराणा	नराण

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१२३	५	कुठा	कुच्छ
„	१२	शन	शत्
„	१३	„	„
१२४	४	सुहुम्म	सुहुम
„	२१	पशाशत्	पञ्चाशत्
१२६	५	उन्वीस	उन्वीस
„	१८	गृहि	गृही
१२७	१७	भावत्	भावात्
१२८	७	हीयसय	हियसय
„	१८	धुवत्वाधिशेषेति	धुवत्वधिसेसेति
„	२१	हुजुअल	दुजुअल
१२९	४	नीचे	नीचे
„	„	शन	शन
„	१५	रूपो	रूप
१३०	११	नामकर्मनी	नामकर्मनी ८२
„	१२	४	१
„	„	१	७
१३१	७	ज्ञान	ज्ञाना
१३३	४	इति	इत्ति
१३४	७	दश	दस
१३५	६	धुव धुवो	धुवो
„	१९	गृह	ग्रह
„	„	क्रम	क्रम
१३६	१	देवायु	देवायू

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१३६	२४	त्तिग	त्रिग
१३७	१	विषये	विषये
"	२१	अनि त्ति,	अनिवृत्ति
१४३	१४	रुकृष्टा	रुत्कृष्टा
१४४	१५	गृहणेन	ग्रहणेन
"	२०	योध्रुवो	योर्ध्रुवो
१४७	१५	स्वगति	खगति
"	१९	गृह	ग्रह
१४९	२	मोऽहेपि	मोहेऽपि
"	१८	विवृण	विवृण्व
१५१	२०	अनेका	अनैका
१५२	१५	युगपत्म	युगपत्म
१५३	२२	द्वयैक	द्वयेक
१५४	२	भगकाम्	भगकानाम्
"		भवति,	भवति, तेषुसप्तदशमीलनेपञ्चषष्ट्यधिका द्वादशशतीभवति, मिथ्यात्वेद्विनवत्यधिक शतम्
"	१८	षड्विंशति	षण्णवति
"	"	"	"
"	२०	२४८	१२४८
१५७	२०	१	छनोवप
"	"	नवनवनी	नवनी
१५९	२१	उचै	उच्चै
१६०	७	उच्चैनीचै	उच्चनीचै

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६०	१०	गोत्र	गोत्र
"	"	अय	अंय
"	१२	सना	सत्ता
१६२	२४	प्राप्यते	प्राप्यन्ते
१६३	२५	नचार्य	टचार्य
१६७	३	द्वादश	द्वादश
१६९	२१	द्विकृत्यधि	धिकृत्यद्वि
१७०	१३	भवात्	⊘
१७१	१६	तद्विषयो	तद्विषय
"	२०	अर्यासेषु	अपर्यासेषु
१७२	११	मुहूर्त्ते	मुहूर्त्ते
"	२१	द्वादशानि	द्वादशाधिकानि
"	१२	प्राप्यत	प्राप्येते
१७३	२१	तिम	तिग
१७४	२५	ततो	तत
१७५	८	सम्य	सम्यग्
१७६	६	पष्ठतु	पष्ठतु
१७७	१४	बन्ध ने	बन्धस्थाने
"	१६	विंशन्	विंशन्
"	१७	वन्त्रिय	वैक्रिय
१७९	११	मष्टा	मष्टा
१८३	१४	मृषा	मृषावा
"	१७	बलायु	बलायू
१८४	१	गुणपर्यायण्य	गुणपर्याय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
”	५	धन्य	धन
”	१२	गृह	ग्रह
”	१४	परायत्त	परायत्त
”	१६	चतुरर्विंशति	चतुर्विंशति
”	१८	इर्या	ईर्या
”	१९	निवृत्ता	निर्वृत्ता
”	२०	द्रव्यनो	द्रव्यत
”	”	कारग	करण
१८६	२०	सकल्पयो	सकल्पो
१८७	६	इर्या	ईर्या
”	”	उम	उप
”	२९	इर्या	ईर्या
१८८	७	सकलायी	सकपायी
”	१३	अपच	अपच्च
”	१६	प्रयोगिकी	मायोगिकी
१९०	६	श्रव	स्रव
”	१९	”	”
”	२०	समाससादित	समासादित
”	२३	आसूयते	आसूयते
१९१	४	मेदे	मेदे
”	१४	विहारा	विहार
१९२	१६	विकल्य	विकल्प
१९३	१७	भावत्रा	भावाऽव
१९४	५	म्यान्तर	म्यन्तर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१४	चर्व	चर्प
,,	२५	अन	अन
१९५	१	जनादयो	जनादय
,,	४	एव	एव
,,	५	मशरण	मशरण
,,	८	चवरणा	वरणा
१९६	३	रूप	रूप
,,	४	ग्रथादयोन	ग्रन्थादयस्त
,,	९	वसवर	सवर
,,	२०	स्थानेषु	स्थानेषुनान्
१९७	१८	शेषा	शेषा
१९८	१०	गुणु	गुण
,,	२०	पष्टान्	षष्ठान्
१९९	१	मणाना	पणाना
,,	१५	ऊत्कच	उत्कच
,,	१७	हाति	हुत्ति
२००	१	बच छे,	नव छे, प्रकृति नव
,,	८	१००	१०७
,,	११	श्रीमत्स	श्रीमत्सु
,,	१६	प्रधाना	प्रधानास्त
,,	१९	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
,,	२१	सहस्त्र	सहस्र
,,	,,	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
,,	२२	द्वीप	दीप

प	प	अशुद्धि	शुद्धि
२००	२३	शिष्येन	शिष्येण
"	२४	विरचित	विरचित
२०१	६	श्रीमति?वीर	श्रीमतीचिर
"	७	वाचकोत्तम	वाचकोत्तम
"	९	साराद्धक	साराद्ध
"	१०	ज्ज्वाला	ज्ज्वला
"	१३	तद	तद्
"	१४	विचार	विचारसार
२०३	५	गुरुन्	गुरून्
"	७	इहा	ईहा
"	१०	जिनेद्र	जिनेन्द्र
"	१३	सहस्त्र	सहस्र
"	१४	त्यापि	त्यादि
"	"	सहस्त्रा	सहस्रा
"	१५	वार वेरि	वैरि
"	१६	परमा	परमा
"	१७	कदनक	कदम्बक
२०४	१	कथयामित्यर्थ	कथयामीत्यर्थ
"	२	परय	परा
"	"	रसिका	रसिका
"	१४	सचिवै	सचिवै
"	१६	इद्रनादींद्र	इन्दनादिन्द्र
"	१६	मार्गणा	मार्गणा
"	"	द्रीन्दिय	द्रीन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	२२	कथ्यतेहिंस्यते	कथ्यन्तेहिंस्यन्ते
२०५	२	विशेष	विशेष
,,	१०	शुशोभना	सुशोभना
,,	१३	विरति	विरति
,,	१५	सामान्यमको	सामान्यात्मको
,,	१६	इत्यर्थ	मित्यर्थ
,,	२२	लेश्यानु	लेश्यातु
,,	२३	धारिणोनत्तद	धारिणस्तत्तद्
,,	,,	णामिति	ण मिति
,,	२५	योगे	योग्यो
,,	२५	सिद्ध	सिद्धि
२०६	१	अविरुद्धाथो	अविरुद्धार्थ
,,	९	विपाकनो	विपाकन
,,	१०	सम्यक्त्वास्यदीनय	सम्यक्त्वस्योदीयमानस्य
,,	१६	युक्ता	युक्ता
,,	१८	अयोगी	अयोगि
२०७	१०	स्थानका	स्थानका
,,	१६	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व
,,	१९	नस	नसा
२०८	११	कदश	दशक
,,	१२	अभय	अजय
,,	१८	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शने
,,	,,	,,	,,
,,	१९	पद	पद

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	२१	अचक्षुचक्षुदर्शने	अचक्षुश्चक्षुर्दर्शने
२०९	२	अयोगी	अयोगि
,,	१७	सगति	सगत्ति
२१०	१	दशम	दश
२११	३	समि	समि
,,	१३	स्थानि	स्थानानि
२१२	११	आराव्या	आराध्य
,,	१४	तेजो	तेज
,,	१६	,,	,,
,,	१७	कमित्याह	कथमित्याह
२१३	६	५।	५। ६।
,,	७	अविरतिक०	अविरति
,,	१२	दस	दस
,,	१३	दारे	आहारे
,,	१६	दर्श	दर्शन
,,	१७	सज्ञा	सज्ञी
२१४	९	त्रिणि	त्रीणि
२१५	९	एक	एकाऽ
,,	२४	नीच्चै	नीचै
,,	,,	दुभग	दुर्भग
२१६	१	तासप्तति	तासप्तति
,,	२५	रुपभ	ऋषभ
२१७	५	एत	एतद्
,,	७	चतुरा	चतुर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१२	त्ताप	ऽऽतप
,,	१३	विंशती	विंशति
२१९	४	ए कोन	एकोना
,,	११	तथा	स्तथा
२२०	४	पष्ठी	पष्ठी
२२१	१	नोघ	नोघ
,,	,,	अजयति	अजयत्ति
,,	४	प्रमते	प्रमत्ते
,,	११	द्यन	द्योत
,,	१३	द्विक	द्विक
,,	१५	विगमे	विगमे
,,	२०	लेश्या	लेश्याये नरक
,,	,,	२	३
२२२	७	चउदर्शन	चक्षुर्दर्शन
,,	९	वक्तव्य	वक्तव्य
,,	२१	त्यादि	इत्यादि
२२३	१	लक्षणा	लक्षणा
,,	३	गा	गा
,,	,,	कर्त्तार	कर्त्रर्थ
२२४	४	नीचै	नीचे
,,	५	सम्यग	सम्यग्
,,	१६	गोत्रनीच	गोत्रनीचे
,,	,,	मोह	मोहे
,,	२३	नपुसक	नपुसक

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२२५	९	हखाए	हक्खाए
"	११	"	"
२२६	६	समवाओ	सभवाओ
"	७	देवगते	देवगतौ
"	१९	देवारूपा	देवरूपा
"	२०	प्रकृति	प्रकृतिं
२२७	१७	सठी	सट्ठी
"	१८	चतुर्षु	चतसृषु
२२७	२४	बन्यते	बध्यन्ते
"	"	एके	रेके
२२८	१४	२१	२२
२२८	१५	मगाणा	मग्गणा
"	२०	बधन्ति	बद्ध्यते
"	"	मिच्छतगियासु	मिच्छत्तठियासु
२२९	५	स्थाननीय	स्थापनीय
"	८	आहारकर	आहारक २
"	११	हखाय	हक्खाय
"	१३	प्राप्यने	प्राप्यन्ते
"	१६	केवलद्विक	केवलद्विक
"	"	प्रकृति	प्रकृतिं
"	१७	अजयति	अर्जयति
"	"	तयति	बध्नाति
२३०	७	सज्ञी	सज्ञि
२३१	१६	पचेन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१८	चउ	चउ
,,	२०	चतु	चतू
२३३	३	नाम्र	नाम्न
,,	८	प्रेक्षया	ऽपेक्षया
,,	१२	मोहनीउ	मोहनीयो
,,	१४	सप्तति	सप्ततिं
,,	२१	चतुस्र	चतुरस्र
,,	२५	इच्छन्ति	मिच्छन्ति
२३४	४	ग्रर्थीके	ग्रथिके
,,	,,	पत्रना	पज्जना
,,	,,	,,	,,
,,	,,	रति	इति
,,	२१	पदक्दुम्बर	पदक्दु स्वर
,,	२३	ग्रर्थीकैर्ग	ग्रथिकैर्ग
,,	२४	दुर्द्धर	दुर्द्धर
,,	,,	द्वाशीति	द्वयशीति
,,	२५	प्यन्ये	प्यन्यें
२३५	९	मोह	मोह
,,	१०	द्वयाधिक	द्वयधिक
,,	१७	शपो	शय
,,	१८	राधिक	रधिक
२३६	४	यश	यशो
,,	६	ऽनीचे	नीचे
,,	१३	दुसइ	दुसीई

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३६	१५	ईत्यादि	इत्यादि
"	१६	द्वाशीति	द्व्यशीति
"	२२	सयमि	सयमि
२३७	६	दश	दस
"	१९	पदक	पद्क
"	"	दुस्वर	दु स्वर
"	२०	गीरस्तु	गीकारस्तु
"	२१	एकाना	एकोना
२३८	४	मेच	मेच
"	"	अप	अप्
"	७	दुस्वरनिक	दु स्वरनिक
"	९	चतु	चतु
"	"	लक्षणा	लक्षण
"	"	सप्तति	सप्तति
"	१३	षष्ट	षट्
"	"	लक्षणा	लक्षण
"	२०	चखू	चक्खू
२३९	११	नथि	नार्थि
"	१३	योगति	योगत्ति
"	१९	नेद्यो	नादेयाऽ
"	२२	सप्तति	सप्तति
२४०	१	प्येय	ऽप्येव
"	२	तेचक्षुद	स्तेचक्षुर्द
"	४	चक्षुद	चक्षुर्द

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२४०	५	बवी	नन्धि
„	१३	„	„
२४३	९	पच	पञ्चक
„	„	पडधिक	पटधिक
„	१४	नीश्चे	नीचे
„	१९	पूँ या	पूर्वी
२४३	२०	एव	एव
२४८	९३	आहार	∅
„	१४	मार्गणामे	मार्गणामे चार आनु-पूर्वीना ११८ नो उदय छे
२५०	१	सेपासु	शेपासु
„	१२	नीश्चे	नीचे
„	१७	„	„
२५१	४	दय	दय प्राप्यते
„	५	प्राप्यते	∅
„	२२	तेजो	तजो लेश्या
२५४	२२	सम्प	सम्य
२५५	१६	रगति	इगत्ति
२५६	८	अढार	अट्ठार
„	९	देस	देश
„	१४	६५	४५
२५८	१४	३८	३९
२६१		सड	सग
२७४	३	लक्षणासु	लक्षणेषु

प	प	अशुद्धि	शुद्धि
२७५	२९	लम्यते	लभ्यते
२७६	१२	सम्क्त्व	सम्यक्त्व
"	२५	कर्य	कर्म
२७७	१२	अपज्जअ	अपज्जजुअ
२७८	६	पर्याप्ता	पर्याप्त
"	९	यदाहु	यदाह
२७९	१३	मवि	भव्वि
२८०	१६	चक्षुद	चक्षुर्द
२८२	२०	मोस	मौस
२८४	६	मृत्वा	मृत्वा
२८६	३	आहरो	आहारो
२८८	१	एव	एव
२८९	१८	पर्याप्ता क्षक्ष्मा	पर्याप्त सूक्ष्म
"	२३	भवोचरम	भवश्चरम
२९०	२३	मना	मनो
२९२	११	ब्विति	ष्विति
२९२	२२	जिअलख	जिअलक्ख
२९३	४	लक्क	लक्ख
२९४	१५	लेश्यायु	लेश्यासु
२९६	१	अदखोए	अहक्खाए
२९७	४	चषु	चक्खु
"	६	नाण	नाण
२९९	१	अहकार	अहक्खा
"	६	करण	करण

पृ	प.	अशुद्धि	शुद्धि
२९९	१८	१	गति,
„	१९	गतिनेंद्री	पश्चेंद्रि जाति
„	२०	२	१ अनाहारक १
„	२०	भव्य	भव्य १ अभव्य १
३००	१	हेतवोमूलोत्तरा	हेतू मूलोत्तर
„	३	कपया	कषाय
३०५	११	मिश्र	मिश्र
„	१३	ओदारिक	मोदारिक
„	१७	२	१
„	१८	छवीस	ए छवीस
„	१९	विषे	विषे, ए छवीस माहेयी
„	„	स्त्रीवेद	स्त्रीवेद, १ वैक्रिय, २ विना
„	„	२३	२१
„	२०	छे	छे परिहारविशुद्धि चारित्रमें
३०६	१२	छे	छे मन पर्यवज्ञानमध्ये छठा गुणठाणावाला इहा वचन विरोध टाले छे.
„	१६	३	१३
„	२०	योगा	योग
३०७	२२	सपरा	सापरा
३०८	१९	मार्यणा	मार्गणा
३१०	९	हीना	हीना
३१२	११	व्यापारतो	व्यापारवतो
„	„	सच्छी	नेसत्यी १

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३१२	११	साहच्छी	साहत्थी
"	"	विदीरणा	विदारणा
३१३	९	ज्ञान	ज्ञाना
३१४	१६	पाउग्गी	पाउग्गी
३१५	३	भवति	∅
३१६	१०	उक्त"च	उक्तच"
३१७	४	परीषह	परिसह
"	१८	तत्र	तत्त्व
"	१९	मित्र	मित्र
"	२३	तेच	ताँश्च
"	,	रूपा	रूपान्
३२०	१८	दमि	दमि
३२१	५	कथ्या	कथ्या
३२२	२०	वाउका	वा
३२५	१	मर्पा	मर्पा
"	६	तिर्यक	तिर्यक
"	२४	केवलिन	केवलिनोऽनन्तगुणास्तेषां
३२७	१	समई	समईय
३२८	१२	वन्तोऽत्र	वतामत्र
"	४	पुसेसु	पुसेषु
३३०	२३	६२	४१
३३२	८	मेवा	मेवा
३३३	३	एमिभावै	एमिर्भावै
३३४	१४	रूत्र	रूप

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३३७	१२	२ अचक्षु	१ अचक्षु
„	१३	पुरुषवेद २	पुरुषवेद
„	१७	जूआ	जुआ
३३८	१२	ते मध्ये	ते २५ मध्ये
„	„	लेश्या	लेश्या विना
„	१५	तथा	तथा ज्ञान वे विकलने सूत्रे कह्या छे सास्वादनने सम्यक्त्व माने छे ते माटे
„	१७	छे,	छे, इहा आम्ना ए जे मिथ्यात्वनो उदय नहि ते माटे ज्ञान माने छे अने कर्मग्रंथ करवा माड्यो ते थयो ए नये अज्ञान माने छे
३४१	४	जीव	जीवत्व
„	१९	भव्यने	अभव्यने
३४२	७	उपशम	उपशम
३४३	१	मासे	मीसे
„	१८	शत्सु	शति
„	२३	तून	तन
३४४	१९	एपोपशम	उपशम
३४६	३	जयि	जह, यथा
३५०	२३	क्रिय	क्रिया
३५१	२४	कारणा	कर्णी
३५२	२३	प्रमते	प्रमत्ते

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अद्द
३५५	२	कैक	कैको
"	८	पचेंद्रीय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
"	६	"	"
३६१	९	अस	नस
३६३	९	नरगतौ १९	नरकगतो ७९
"	१६	विशति	विंशति
"	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
"	२३	नरक	नरक, १
"	"	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरानु	नरकानु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्व	तद्व
३७३	५	उप	उव
"	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	द्व्यशीति	द्वयशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	"	"
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सर्व	सर्व
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	मगा	भगा
३९४	१	मिश्रे	मिश्रे
३९७	८	सम्यक्त्वा	सम्यक्त्वा
„	१६	उम	उव
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणास्थान	गुणस्थान
४०३	८	वन्नतो	वनतो
„	२१	विंशानि	विंशानि
४०५	६	भवन्ति	भवति
„	७	गतव्यो	गन्तव्यो
„	१७	एव	एव
„	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	क्रम	नम
४०९	१३	पर्याप्त्यस्य	पर्याप्तस्य
„	१६	सन	स
„	१९	तिर्यंग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहननाना
„	४	पङ्क	पङ्क
„	१७	विंश	विंशद्
४१२	१२	पयाप्तस्व	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	उच्छ्वासे	उच्छ्वासे
„	७	भगा	भङ्गो

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अद्द
३५५	२	कैक	कैको
"	८	पचेंद्रीय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
"	६	"	"
३६१	९	अस	त्रस
३६३	९	नरगनौ १९	नरकगनौ ७९
"	१६	विशति	विंशति
"	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
"	२३	नरक	नरक, १
"	"	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरानु	नरकानु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्व	तद्व
३७३	५	उप	उव
"	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	द्व्यशीति	द्वयशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	"	"
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सर्व	सर्व
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	मगा	भंगा
३९४	१	मिश्रे	मिश्रे
३९७	८	सम्प्रत्वा	सम्यक्त्वा
,,	१६	उम	उव
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणास्थान	गुणस्थान
४०३	८	बन्नतो	नन्नतो
,,	२१	विंशतिं	विंशतिं
४०५	६	भवन्ति	भवति
,,	७	गन्तव्यो	गन्तव्यो
,,	१७	एव	एव
,,	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	क्रम	नम
४०९	१३	पर्यात्प्यस्य	पर्याप्तस्य
,,	१६	सन	स
,,	१९	तिर्यग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहननाना
,,	४	पड्क	पट्क
,,	१७	निंश	निंशद्
४१२	१२	पयाप्तस्व	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	छन्द्रामे	च्छ्वासे
,,	७	भगा	भङ्गो

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
४१५	१६	अष्टौ	अष्टो
४१६	८	पर्याप्त	पर्याप्त्य
४१८	२०	सख्यानायनायागा	सख्यानायगाथा
४२०	४	१७	२७
"	२०	प्रायोग्या	प्रायोग्यान्
४२१	४	भगा	भङ्गा
"	९	१९	२९
४२२	१५	अहारक	आहारक
४२३	१५	सट्ठि	सट्ठिसया
४२४	११	अडतीस	अटताळीस
"	१८	१८८५	१७८५
"	२०	नेउ	एकाणु
४२५	११	अमि	अमि
"	१३	मू	मूत
"	१४	धर्म	धर्माऽ
"	२२	सु	सुअ
"	१६	व्यक्त	वक्त
४२७	९	पचागी	पचागी
"	२१	मागी	भागी
४२८	१८	चिटइ	चिट्ठइ
"	२०	आत्मायी	आत्मार्थी
४३०	७	नें	ने
"	२१	हीय	हिय
४३१	२३	देव	दीप